CBSE **2027**

हिन्दी आर-1

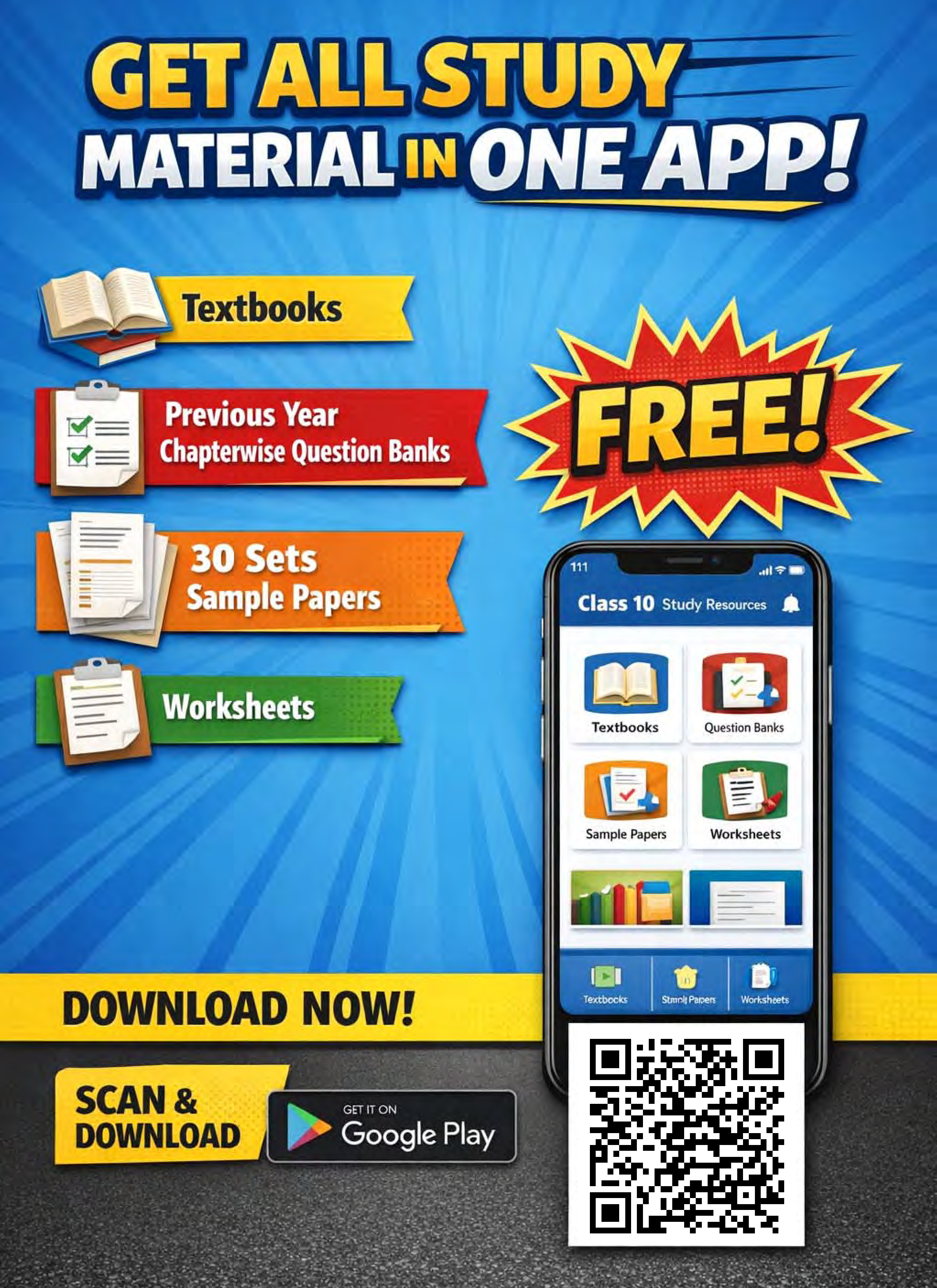
नई NCERT पाठ्यपुस्तक **'गंगा'** पर आधारित

अध्यायवार प्रश्न बैंक

Class 9

Nodia

Scan QR for Demo PDF


GET ALL STUDY MATERIAL IN ONE APP!
Textbooks
Previous Year Chapterwise Question Banks
30 Sets Sample Papers
Worksheets
FREE!
Class 10 Study Resources
Textbooks
Question Banks
Sample Papers
Worksheets
DOWNLOAD NOW!
SCAN & DOWNLOAD
GET IT ON Google Play

CBSE 2027

हिंदी आर–1

नई NCERT पाठ्यपुस्तक ‘गंगा’ पर आधारित

कक्षा 9

अध्यायवार प्रश्न बैंक

NODIA

CBSE Class 9 Hindi R1 Question Bank
Edition Jun 2026
Published by :NODIA
An Imprint of NODIA EDITIONS LLP

NODIA

MRP ₹430.00

NODIA EDITIONS LLP
125, Sector 6, Vidyadhar Nagar, Jaipur 302039
Phone :+91 9024037387
email : mail@nodia.in

CONTENTS

खण्ड–क : अपठित बोध

खण्ड–ख : व्यावहारिक व्याकरण

खण्ड–ग : पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक

गद्य खंड पाठ्यपुस्तक (गंगा)

काव्य खंड पाठ्यपुस्तक (गंगा)

खण्ड–घ : रचनात्मक लेखन

****

अध्याय 1

अपठित गद्यांश

गद्यांश 1

आज के युग में वायु प्रदूषण एक गंभीर वैश्विक समस्या बन चुकी है। कारखानों की चिमनियों से निकलने वाला धुआँ, वाहनों से उत्सर्जित जहरीली गैसें और कूड़े का अनियंत्रित दहन — ये सभी मिलकर वायुमंडल को दूषित कर रहे हैं। विशेषकर बड़े शहरों में वायु की गुणवत्ता इतनी खराब हो गई है कि साँस लेना भी दूभर हो गया है।

वायु प्रदूषण के कारण फेफड़ों के रोग, दमा, हृदय रोग और त्वचा संबंधी बीमारियाँ तेज़ी से बढ़ रही हैं। बच्चों और वृद्धों पर इसका प्रभाव सबसे अधिक पड़ता है, क्योंकि उनकी रोग-प्रतिरोधक क्षमता कमज़ोर होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, प्रतिवर्ष लाखों लोग वायु प्रदूषण जनित बीमारियों से असमय काल के गाल में समा जाते हैं।

वायु प्रदूषण की समस्या का समाधान केवल सरकारी प्रयासों से संभव नहीं है। प्रत्येक नागरिक को अपनी ज़िम्मेदारी समझनी होगी। सार्वजनिक परिवहन का उपयोग, इलेक्ट्रिक वाहनों को अपनाना, वृक्षारोपण और ऊर्जा की बचत जैसे उपाय सामूहिक रूप से किए जाने चाहिए। विद्यालयों में पर्यावरण-शिक्षा को अनिवार्य बनाया जाना चाहिए ताकि नई पीढ़ी इस समस्या के प्रति जागरूक हो सके। प्रकृति और मानव का संबंध अटूट है। यदि हम अपने पर्यावरण को स्वच्छ नहीं रखेंगे, तो आने वाली पीढ़ियों को एक विषाक्त वातावरण विरासत में मिलेगा। अतः आज ही कदम उठाना अत्यंत आवश्यक है।

1. गद्यांश का उचित शीर्षक क्या होगा?
   (क) वाहनों का बढ़ता प्रचलन
   (ख) वायु प्रदूषण: कारण और निवारण
   (ग) स्वास्थ्य और भोजन
   (घ) कारखानों का विस्तार

2. **अभिकथन (A):** वायु प्रदूषण का प्रभाव बच्चों और वृद्धों पर सबसे अधिक पड़ता है।
   कारण (R): बच्चों और वृद्धों की रोग-प्रतिरोधक क्षमता कमज़ोर होती है।
   (क) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या करता है।
   (ख) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
   (ग) अभिकथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
   (घ) अभिकथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

3. विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार वायु प्रदूषण से क्या होता है?
   (क) फसलें नष्ट होती हैं
   (ख) नदियाँ सूख जाती हैं
   (ग) लाखों लोग असमय मरते हैं
   (घ) भूकंप आने लगते हैं

4. वायु प्रदूषण कम करने के लिए नागरिकों को क्या करना चाहिए?

5. लेखक ने यह क्यों कहा कि प्रदूषण का समाधान केवल सरकारी प्रयासों से संभव नहीं है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः

1. (ख) वायु प्रदूषण: कारण और निवारण
2. (क) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या करता है।
3. (ग) लाखों लोग असमय मरते हैं
4. नागरिकों को सार्वजनिक परिवहन, इलेक्ट्रिक वाहन, वृक्षारोपण और ऊर्जा-बचत जैसे उपाय अपनाने चाहिए।
5. लेखक का मानना है कि प्रदूषण एक सामूहिक समस्या है जिसे अकेली सरकार नहीं सुलझा सकती। इसके लिए प्रत्येक नागरिक को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। सार्वजनिक परिवहन अपनाना, वृक्षारोपण करना और विद्यालयों में पर्यावरण-शिक्षा देना — ये सब मिलकर ही इस समस्या का प्रभावी समाधान कर सकते हैं।

गद्यांश 2

मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है। विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के साथ मीडिया भी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है — सत्ता को जवाबदेह बनाने, जनमत को जागरूक करने और समाज की आवाज़ उठाने की। एक स्वतंत्र और निष्पक्ष मीडिया ही स्वस्थ लोकतंत्र की पहचान है।

परंतु आज के डिजिटल युग में 'फेक न्यूज़' अर्थात् फर्जी समाचारों की समस्या अत्यंत गंभीर हो गई है। सोशल मीडिया पर बिना सत्यापन के सूचनाएँ इतनी तेज़ी से फैलती हैं कि वे

समाज में भय, भ्रम और सांप्रदायिक तनाव उत्पन्न कर सकती हैं। कभी-कभी भीड़ हिंसा और दंगे भी फर्जी खबरों के कारण भड़के हैं।

मीडिया की ज़िम्मेदारी है कि वह तथ्यों की जाँच करके ही समाचार प्रकाशित करे। 'टीआरपी' की दौड़ में सनसनीखेज खबरें परोसना पत्रकारिता का अपमान है। पत्रकार का धर्म है — सच बोलना, भले ही परिणाम कुछ भी हो। रामनाथ गोयनका और गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे महान पत्रकारों ने इसी आदर्श का पालन किया।

आम नागरिकों को भी मीडिया-साक्षरता विकसित करनी होगी। किसी भी समाचार को साझा करने से पहले उसकी सत्यता की जाँच करना, विश्वसनीय स्रोतों से ही जानकारी लेना और अफवाहों को फैलने से रोकना — ये हम सबकी जिम्मेदारी है।

1. गद्यांश का केंद्रीय भाव क्या है?
(क) टेलीविज़न का इतिहास
(ख) मीडिया की भूमिका और जिम्मेदारी
(ग) फर्जी समाचारों का विज्ञान और उनके प्रभाव
(घ) सोशल मीडिया के प्रकार और उनकी विशेषताएँ

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है।
II. स्वतंत्र और निष्पक्ष मीडिया स्वस्थ लोकतंत्र की अनिवार्य शर्त है।
III. सोशल मीडिया पर प्रसारित होने वाली हर सूचना पूरी तरह सत्यापित होती है।
IV. सनसनीखेज खबरें परोसना पत्रकारिता के उच्चतम आदर्शों के अनुकूल है।
सही विकल्प का चयन कीजिए
(क) केवल I और II सही हैं
(ख) केवल I, II और IV सही हैं
(ग) केवल II, III और IV सही हैं
(घ) सभी चारों (I, II, III और IV) सही हैं

3. गद्यांश में किस महान पत्रकार का उल्लेख नहीं है?
(क) रामनाथ गोयनका (ख) गणेश शंकर विद्यार्थी
(ग) बाल गंगाधर तिलक (घ) दोनों का उल्लेख है

4. फर्जी समाचारों से समाज को क्या हानि होती है?

5. एक जिम्मेदार नागरिक समाचारों के संदर्भ में मीडिया-साक्षरता का परिचय कैसे दे सकता है?

उत्तरः
1. (ख) मीडिया की भूमिका और जिम्मेदारी
2. (क) केवल I और II सही हैं
3. (ग) बाल गंगाधर तिलक
4. फर्जी समाचारों से समाज में भय, भ्रम और सांप्रदायिक तनाव उत्पन्न होता है और कभी-कभी भीड़ हिंसा व दंगे भी भड़क सकते हैं।
5. एक जिम्मेदार नागरिक को किसी भी समाचार को साझा करने से पहले उसकी सत्यता की जाँच करनी चाहिए। केवल विश्वसनीय और प्रतिष्ठित स्रोतों से ही जानकारी लेनी चाहिए। अफवाहों को आगे न फैलाना और दूसरों को भी जागरूक करना — ये सब मीडिया-साक्षरता के लक्षण हैं जो एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए आवश्यक हैं।

गद्यांश 3

शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व को निखारने का सबसे सशक्त माध्यम है। यह केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की कला भी सिखाती है। सच्ची शिक्षा वह है जो व्यक्ति को नैतिक, सामाजिक और मानसिक रूप से परिपक्व बनाए। महात्मा गांधी ने शिक्षा को 'सर्वांगीण विकास' का साधन कहा था।

आज की शिक्षा प्रणाली में अनेक खामियाँ हैं। रटने की प्रवृत्ति, परीक्षा का भय और व्यावहारिक ज्ञान की कमी — ये सब मिलकर छात्रों की रचनात्मकता को कुंठित कर देती हैं। विद्यार्थी केवल अंक पाने की दौड़ में शामिल हो जाते हैं और जीवन-कौशल सीखने से वंचित रह जाते हैं।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए आवश्यक है कि पाठ्यक्रम को रोचक और व्यावहारिक बनाया जाए। शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान देने तक सीमित न हो, बल्कि वे प्रेरणास्रोत भी बनें। विद्यालयों में खेल, कला, संगीत और योग जैसी गतिविधियाँ भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण हैं जितनी विज्ञान और गणित।

डिजिटल युग में शिक्षा का स्वरूप बदल रहा है। ऑनलाइन शिक्षा ने दूरदराज के क्षेत्रों तक ज्ञान पहुँचाना संभव किया है। परंतु प्रौद्योगिकी शिक्षक का स्थान नहीं ले सकती — गुरु-शिष्य का संबंध सदा अमूल्य रहेगा। शिक्षा ही वह आलोक है जो अज्ञान के अंधकार को दूर करती है।

1. गद्यांश का केंद्रीय भाव क्या है?
(क) परीक्षा में अधिक अंक लाना
(ख) शिक्षा का सर्वांगीण महत्त्व
(ग) डिजिटल उपकरणों का प्रचार
(घ) शिक्षकों की समस्याएँ

2. लेखक के दृष्टिकोण को सबसे सटीक रूप से कौन-सा विकल्प व्यक्त करता है?
(क) शिक्षा केवल रोजगार पाने का साधन है
(ख) प्रौद्योगिकी शिक्षा का भविष्य है
(ग) सच्ची शिक्षा नैतिक व मानसिक विकास करती है
(घ) परीक्षा में अंक ही शिक्षा का उद्देश्य है

3. महात्मा गांधी ने शिक्षा को क्या कहा था?
(क) अंक प्राप्ति का साधन
(ख) रोजगार का आधार
(ग) सर्वांगीण विकास का साधन
(घ) राष्ट्रीय एकता का माध्यम

4. आज की शिक्षा प्रणाली में कौन-सी मुख्य कमियाँ बताई गई हैं?

5. लेखक ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए क्या-क्या सुझाव दिए हैं? समझाइए।

उत्तरः
1. (ख) शिक्षा का सर्वांगीण महत्त्व
2. (ग) सच्ची शिक्षा नैतिक व मानसिक विकास करती है
3. (ग) सर्वांगीण विकास का साधन
4. रटने की प्रवृत्ति, परीक्षा का भय और व्यावहारिक ज्ञान की कमी आज की शिक्षा प्रणाली की मुख्य कमियाँ हैं।
5. लेखक ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए कई महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए हैं। पाठ्यक्रम को रोचक और व्यावहारिक बनाया जाए, शिक्षक केवल ज्ञान देने वाले नहीं बल्कि प्रेरणास्रोत भी बनें। खेल, कला, संगीत और योग को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए। साथ ही डिजिटल शिक्षा का उपयोग हो, परंतु गुरु-शिष्य संबंध की अनमोलता बनी रहे।

गद्यांश 4

स्वास्थ्य ही जीवन की वास्तविक संपत्ति है। एक स्वस्थ व्यक्ति ही अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए उत्पादक योगदान दे सकता है। आधुनिक जीवनशैली ने जहाँ सुविधाएँ बढ़ाई हैं, वहीं अनेक बीमारियों को भी जन्म दिया है। असंतुलित आहार, शारीरिक निष्क्रियता और मानसिक तनाव आज की पीढ़ी की प्रमुख स्वास्थ्य समस्याएँ हैं।

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए नियमित व्यायाम अत्यंत आवश्यक है। प्रतिदिन कम-से-कम तीस मिनट की शारीरिक गतिविधि हृदय, फेफड़ों और मांसपेशियों को मजबूत बनाती है। योग और प्राणायाम भारतीय परंपरा की वे अमूल्य धरोहरें हैं जो न केवल शरीर, बल्कि मन को भी स्वस्थ रखती हैं। आज विश्व भर में इनकी स्वीकार्यता बढ़ रही है। संतुलित आहार भी स्वास्थ्य का अभिन्न अंग है। हरी सब्जियाँ, फल, अनाज और पर्याप्त जल — ये सब मिलकर शरीर को आवश्यक पोषण देते हैं। जंक फूड और कोल्ड ड्रिंक जैसी चीजें शरीर को धीरे-धीरे खोखला करती हैं।

मानसिक स्वास्थ्य को भी उतना ही महत्त्व देना चाहिए जितना शारीरिक स्वास्थ्य को। तनाव, अवसाद और चिंता आज की गंभीर समस्याएँ हैं। परिवार और मित्रों से जुड़ाव, सकारात्मक सोच और पर्याप्त नींद मानसिक स्वास्थ्य के लिए ज़रूरी हैं। 'पहला सुख निरोगी काया' — यह कहावत आज भी उतनी ही सच है।

1. गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?
(क) जंक फूड के नुकसान
(ख) स्वस्थ जीवन की आधारशिला
(ग) आधुनिक चिकित्सा पद्धति
(घ) भारतीय योग परंपरा

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए —
I. योग और प्राणायाम केवल शरीर को स्वस्थ रखते हैं।
II. योग और प्राणायाम मन को भी स्वस्थ रखते हैं।
इनमें से सही विकल्प चुनिए:
(क) केवल कथन I सही है
(ख) केवल कथन II सही है
(ग) दोनों कथन गलत हैं
(घ) कथन I गलत, कथन II सही है

3. प्रतिदिन कितने मिनट की शारीरिक गतिविधि आवश्यक बताई गई है?
(क) पंद्रह मिनट (ख) पचास मिनट
(ग) तीस मिनट (घ) साठ मिनट

4. मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए क्या उपाय बताए गए हैं?

5. लेखक ने आधुनिक जीवनशैली को किस प्रकार स्वास्थ्य के लिए हानिकारक बताया है?

उत्तरः
1. (ख) स्वस्थ जीवन की आधारशिला
2. (घ) कथन I गलत, कथन II सही है।
3. (ग) तीस मिनट
4. परिवार और मित्रों से जुड़ाव, सकारात्मक सोच और पर्याप्त नींद मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक उपाय हैं।
5. लेखक के अनुसार आधुनिक जीवनशैली ने सुविधाएँ तो दी हैं, परंतु साथ ही असंतुलित आहार, शारीरिक निष्क्रियता और मानसिक तनाव जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न की हैं। जंक फूड और कोल्ड ड्रिंक जैसी चीजें शरीर को धीरे-धीरे कमजोर बनाती हैं, जबकि तनाव और अवसाद मानसिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाते हैं।

गद्यांश 5

वन पृथ्वी के फेफड़े कहलाते हैं। ये न केवल ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, बल्कि जलवायु को संतुलित रखने, वर्षा लाने और भूमि कटाव को रोकने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अनेक जीव-जंतु और वनस्पतियाँ वनों पर ही निर्भर हैं। परंतु विकास के नाम पर अंधाधुंध वनों की कटाई हो रही है, जो पर्यावरण के लिए अत्यंत घातक है।

वनों की कटाई से प्राकृतिक आपदाओं — जैसे बाढ़,

सूखा और भूस्खलन — की घटनाएँ बढ़ गई हैं। वर्षा का चक्र अनियमित हो गया है जिससे कृषि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। वन्यजीवों के आवास नष्ट होने से कई प्रजातियाँ विलुप्त होने के कगार पर हैं। भारत में बाघ, हाथी और गैंडे जैसे पशुओं की संख्या में भारी कमी आई है।

वन संरक्षण के लिए सरकारी और सामाजिक दोनों स्तरों पर प्रयास आवश्यक हैं। 'चिपको आंदोलन' इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ ग्रामीण महिलाओं ने पेड़ों को बचाने के लिए उनसे लिपट गई थीं। सामाजिक वानिकी कार्यक्रमों के तहत प्रत्येक नागरिक को वृक्षारोपण को अपनी आदत बनानी चाहिए।

वन हमारी सांस्कृतिक धरोहर भी हैं। भारतीय संस्कृति में वृक्षों की पूजा की परंपरा रही है। पीपल, बरगद और तुलसी जैसे पेड़-पौधे हमारे जीवन से जुड़े हैं। वनों को बचाना- भावी पीढ़ी को एक हरा-भरा भविष्य देना है।

1. गद्यांश का उचित शीर्षक क्या होगा?
   (क) कृषि और वर्षा
   (ख) वन्यजीव अभयारण्य
   (ग) वन: जीवन की धरोहर
   (घ) चिपको आंदोलन का इतिहास

2. **अभिकथन (A):** वनों की अंधाधुंध कटाई से देश में वर्षा का चक्र पूरी तरह नियमित और संतुलित बना हुआ है।
   कारण (R): वन जलवायु को संतुलित रखने, वर्षा लाने और भूमि कटाव को रोकने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
   (क) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या करता है।
   (ख) अभिकथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
   (ग) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (घ) अभिकथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

3. 'चिपको आंदोलन' में ग्रामीण महिलाओं ने क्या किया?
   (क) नदियों की सफाई की
   (ख) सरकार से याचिका की
   (ग) पेड़ों से लिपट गईं
   (घ) अदालत में मुकदमा किया

4. वनों की कटाई का वन्यजीवों पर क्या प्रभाव पड़ा है?

5. लेखक ने वनों को 'सांस्कृतिक धरोहर' क्यों कहा है? विस्तार से समझाइए।

उत्तरः
1. (ग) वन: जीवन की धरोहर
2. (घ) अभिकथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।
3. (ग) पेड़ों से लिपट गईं
4. वनों की कटाई से वन्यजीवों के आवास नष्ट हो रहे हैं और बाघ, हाथी, गैंडे जैसी प्रजातियाँ विलुप्ति के कगार पर हैं।
5. लेखक ने वनों को सांस्कृतिक धरोहर इसलिए कहा है क्योंकि भारतीय संस्कृति में वृक्षों की पूजा की प्राचीन परंपरा रही है। पीपल, बरगद और तुलसी जैसे पेड़-पौधे हमारी धार्मिक और सामाजिक परंपराओं से गहराई से जुड़े हैं। इस प्रकार वन केवल पर्यावरण ही नहीं, बल्कि हमारी सभ्यता और संस्कृति का भी अभिन्न अंग हैं।

गद्यांश 6

विज्ञान ने मानव जीवन को अकल्पनीय रूप से बदल दिया है। जो कार्य कभी असंभव लगते थे, आज वे विज्ञान की सहायता से सहजता से हो जाते हैं। अंतरिक्ष में यात्रा, अंग प्रत्यारोपण, सुपर कंप्यूटर और कृत्रिम बुद्धिमत्ता — ये सब विज्ञान की अद्भुत उपलब्धियाँ हैं। परंतु विज्ञान एक दोधारी तलवार भी है — इसका सदुपयोग और दुरुपयोग दोनों संभव हैं।

चिकित्सा विज्ञान ने असाध्य रोगों का उपचार संभव किया है। पोलियो और चेचक जैसी भयंकर बीमारियाँ टीकाकरण से लगभग समाप्त हो गई हैं। कैंसर, हृदय रोग और मधुमेह जैसे रोगों के उपचार में भी महत्त्वपूर्ण प्रगति हुई है। कोविड-19 महामारी के दौरान रिकॉर्ड समय में टीका बनाना विज्ञान की अभूतपूर्व सफलता थी।

कृषि क्षेत्र में भी विज्ञान ने क्रांति ला दी है। उन्नत बीज, रासायनिक उर्वरक और आधुनिक सिंचाई तकनीकों ने खाद्यान्न उत्पादन को कई गुना बढ़ा दिया है। ड्रोन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता अब खेतों की निगरानी में प्रयुक्त हो रहे हैं।

तकनीक के अत्यधिक उपयोग से सामाजिक समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। साइबर अपराध, सोशल मीडिया की लत और निजता का हनन गंभीर चिंताएँ हैं। अतः आवश्यक है कि विज्ञान का उपयोग मानव कल्याण के लिए हो, न कि विनाश के लिए। विज्ञान और नैतिकता का समन्वय ही एक उज्ज्वल भविष्य का मार्ग है।

1. गद्यांश का केंद्रीय भाव क्या है?
   (क) कृषि में ड्रोन का उपयोग
   (ख) विज्ञान की उपलब्धियाँ और सीमाएँ
   (ग) साइबर अपराध की बढ़ती समस्या
   (घ) कोविड टीके का निर्माण

2. लेखक के दृष्टिकोण को सबसे सटीक रूप से कौन-सा विकल्प व्यक्त करता है?
   (क) विज्ञान मानवता के लिए सदा हानिकारक है
   (ख) विज्ञान का उपयोग नैतिकता के साथ होना चाहिए
   (ग) तकनीक से सामाजिक समस्याएँ नहीं होतीं
   (घ) कृत्रिम बुद्धिमत्ता ही विज्ञान का भविष्य है

3. कोविड-19 के दौरान विज्ञान की क्या सफलता बताई गई है?
   (क) नई फसलों का विकास
   (ख) साइबर सुरक्षा में सुधार

(ग) रिकॉर्ड समय में टीका बनाना
(घ) अंतरिक्ष यात्रा में सफलता

4. विज्ञान को 'दोधारी तलवार' क्यों कहा गया है?

5. कृषि क्षेत्र में विज्ञान ने किस प्रकार क्रांति लाई है? गद्यांश के आधार पर समझाइए।

उत्तरः

1. (ख) विज्ञान की उपलब्धियाँ और सीमाएँ
2. (ख) विज्ञान का उपयोग नैतिकता के साथ होना चाहिए
3. (ग) रिकॉर्ड समय में टीका बनाना
4. विज्ञान का सदुपयोग और दुरुपयोग दोनों संभव हैं — यह मनुष्य के जीवन को बेहतर भी बना सकता है और विनाश भी कर सकता है।
5. कृषि क्षेत्र में विज्ञान ने उन्नत बीज, रासायनिक उर्वरक और आधुनिक सिंचाई तकनीकों के माध्यम से खाद्यान्न उत्पादन को कई गुना बढ़ाया है। अब ड्रोन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी उन्नत तकनीकें खेतों की निगरानी में उपयोग हो रही हैं, जिससे किसानों को अत्यधिक लाभ मिल रहा है।

गद्यांश 7

स्वच्छता केवल शरीर और घर तक सीमित नहीं है; यह एक व्यापक जीवन-दर्शन है जो मन, वचन और कर्म तीनों में पवित्रता की माँग करती है। महात्मा गांधी ने कहा था, "स्वच्छता ईश्वरभक्ति के निकट है।" उनकी प्रेरणा से ही 'स्वच्छ भारत अभियान' की नींव रखी गई जो 2014 में राष्ट्रीय स्तर पर प्रारंभ हुई। गंदगी और अस्वच्छता अनेक रोगों की जड़ है। हैजा, टाइफाइड, मलेरिया और डेंगू जैसी बीमारियाँ मुख्यतः गंदे पानी और कचरे के ढेरों के कारण फैलती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में खुले में शौच अभी भी एक गंभीर समस्या है जो महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

'स्वच्छ भारत अभियान' के अंतर्गत देश भर में शौचालयों का निर्माण, ठोस कचरा प्रबंधन और नागरिकों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने का कार्य किया गया। इस अभियान के कारण लाखों गाँवों को खुले में शौच से मुक्त घोषित किया जा सका। परंतु केवल सरकारी अभियान पर्याप्त नहीं है। स्वच्छता की आदत घर से ही प्रारंभ होती है। बच्चों को बचपन से ही स्वच्छता के संस्कार देने होंगे। सड़क पर कचरा फेंकना, नदियों में गंदगी डालना और सार्वजनिक स्थानों को गंदा करना — ये सब नागरिक अनुशासनहीनता के प्रतीक हैं। स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत — यह सपना तभी साकार होगा जब प्रत्येक नागरिक अपनी जिम्मेदारी निभाए।

1. गद्यांश का उचित शीर्षक क्या होगा?
(क) स्वच्छता और स्वस्थ जीवन
(ख) गाँवों का विकास
(ग) महात्मा गांधी का जीवन
(घ) भारत की सरकारी नीतियाँ

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए —
I. स्वच्छ भारत अभियान 2014 में प्रारंभ हुआ।
II. यह अभियान महात्मा गांधी की प्रेरणा पर आधारित है।
सही विकल्प चुनिए:
(क) केवल कथन I सही है
(ख) केवल कथन II सही है
(ग) दोनों कथन सही हैं
(घ) दोनों कथन गलत हैं

3. अस्वच्छता के कारण कौन-सी बीमारियाँ फैलती हैं?
(क) कैंसर और मधुमेह
(ख) हैजा, टाइफाइड, मलेरिया
(ग) हृदय रोग और दमा
(घ) मोतियाबिंद और बहरापन

4. 'स्वच्छ भारत अभियान' के तहत क्या-क्या कार्य किए गए?

5. लेखक के अनुसार स्वच्छता की असली शुरुआत कहाँ से होनी चाहिए और क्यों?

उत्तरः

1. (क) स्वच्छता और स्वस्थ जीवन
2. (ग) दोनों कथन सही हैं।
3. (ख) हैजा, टाइफाइड, मलेरिया
4. शौचालयों का निर्माण, ठोस कचरा प्रबंधन और नागरिकों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाना इस अभियान के मुख्य कार्य थे।
5. लेखक के अनुसार स्वच्छता की असली शुरुआत घर से होनी चाहिए क्योंकि बचपन में मिले संस्कार जीवन भर साथ रहते हैं। बच्चों को स्वच्छता के संस्कार देने से ही एक स्वच्छ समाज का निर्माण संभव है। केवल सरकारी अभियान पर्याप्त नहीं हैं; प्रत्येक नागरिक को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी।

गद्यांश 8

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम और समृद्धतम संस्कृतियों में से एक है। यहाँ की संस्कृति में 'वसुधैव कुटुंबकम्' अर्थात् 'संपूर्ण विश्व एक परिवार है' की भावना निहित है। भारत ने सदा से सभी धर्मों, विचारों और परंपराओं को आत्मसात करने की क्षमता रखी है। यही कारण है कि भारत को 'विविधता में एकता' का देश कहा जाता है।

भारत में अनेक भाषाएँ, धर्म और खान-पान की परंपराएँ हैं, फिर भी एक सूत्र में बँधे रहना भारतीय संस्कृति की विशेषता है। होली, दिवाली, ईद, क्रिसमस और बैसाखी — ये सब त्योहार मिल-जुलकर मनाना भारत की सांस्कृतिक उदारता का प्रतीक है।

भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान सर्वोच्च रहा है। 'गुरु गोविंद दोनों खड़े, काके लागूँ पाय' — यह पंक्ति गुरु के महत्त्व को दर्शाती है। परिवार की महत्ता, बड़ों का सम्मान और अतिथि देवो भव — ये भारतीय संस्कृति के मूल आधार हैं।

आज वैश्वीकरण के दौर में पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव बढ़ रहा है। युवा पीढ़ी अपनी जड़ों से दूर होती जा रही है। परंतु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारतीय संस्कृति का दर्शन, संगीत, साहित्य और योग विश्व भर में आदर पाते हैं। अपनी संस्कृति पर गर्व करना और उसे संजोए रखना हर भारतीय का कर्तव्य है।

1. गद्यांश का केंद्रीय भाव क्या है?
(क) पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव
(ख) भारतीय त्योहारों का महत्त्व
(ग) भारतीय संस्कृति की विशेषता और महत्त्व
(घ) गुरु-शिष्य परंपरा का इतिहास

2. **अभिकथन (A):** भारत को दुनिया भर में 'विविधता में एकता' का देश माना जाता है।
कारण (R): भारत में अनेक भाषाएँ, धर्म और खान-पान की विभिन्न परंपराएँ होने के बावजूद सभी लोग एक ही सूत्र में बँधे रहते हैं।
(क) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(ख) अभिकथन (A) and कारण (R) दोनों सही हैं परंतु कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
(ग) अभिकथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(घ) अभिकथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

3. 'वसुधैव कुटुंबकम्' का क्या अर्थ है?
(क) भारत सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र है
(ख) संपूर्ण विश्व एक परिवार है
(ग) धर्म ही सर्वोच्च है
(घ) गाँव ही असली भारत है

4. भारत को 'विविधता में एकता' का देश क्यों कहा जाता है?

5. वैश्वीकरण के युग में भारतीय संस्कृति के सामने क्या चुनौतियाँ हैं? गद्यांश के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तरः
1. (ग) भारतीय संस्कृति की विशेषता और महत्त्व
2. (क) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या करता है।
3. (ख) संपूर्ण विश्व एक परिवार है
4. भारत में अनेक भाषाएँ, धर्म और परंपराएँ होने के बावजूद सभी लोग एकता और भाईचारे के सूत्र में बँधे रहते हैं।
5. वैश्वीकरण के दौर में पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव तेज़ी से बढ़ रहा है जिससे युवा पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से दूर होती जा रही है। भारतीय मूल्यों — जैसे गुरु का सम्मान, परिवार की महत्ता और अतिथि-सेवा — की उपेक्षा होने लगी है। इसीलिए लेखक ने युवाओं को अपनी संस्कृति से जुड़े रहने की प्रेरणा दी है।

गद्यांश 9

खेल मनुष्य के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। खेल के मैदान में न केवल शरीर का व्यायाम होता है, बल्कि टीम भावना, अनुशासन, धैर्य और नेतृत्व जैसे गुण भी विकसित होते हैं। इसीलिए कहा गया है — "खेलोगे-कूदोगे तो होगे नवाब।"

भारत में क्रिकेट, हॉकी, कबड्डी, कुश्ती और बैडमिंटन जैसे खेल अत्यंत लोकप्रिय हैं। हॉकी भारत का राष्ट्रीय खेल है जिसमें भारत ने ओलंपिक में अनेक बार स्वर्ण पदक जीते हैं। हाल के वर्षों में भारतीय खिलाड़ियों ने अनेक अंतरराष्ट्रीय मंचों पर देश का नाम रोशन किया है।

विद्यालयों में खेल को उचित महत्त्व देना अत्यंत आवश्यक है। परंतु दुर्भाग्यवश, अनेक विद्यालयों में खेल के मैदान और सुविधाओं का अभाव है। माता-पिता भी प्रायः बच्चों को केवल पढ़ाई पर ध्यान देने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यह धारणा गलत है क्योंकि एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है।

सरकार ने 'खेलो इंडिया' जैसी योजनाएँ शुरू की हैं जो प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को पहचानने और उन्हें प्रशिक्षण देने में सहायक हैं। प्रत्येक बच्चे को किसी न किसी खेल में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। खेल से मिली सफलता और असफलता दोनों जीवन के महत्त्वपूर्ण पाठ सिखाती हैं।

1. गद्यांश का उचित शीर्षक क्या होगा?
(क) क्रिकेट और भारत (ख) खेल का जीवन में महत्त्व
(ग) ओलंपिक की तैयारी (घ) विद्यालय का पाठ्यक्रम

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए —
I. खेल से केवल शरीर का विकास होता है।
II. खेल से टीम भावना, अनुशासन और नेतृत्व जैसे गुण भी विकसित होते हैं।
सही विकल्प चुनिए:
(क) केवल कथन I सही है
(ख) दोनों कथन सही हैं
(ग) कथन I गलत, कथन II सही है
(घ) दोनों कथन गलत हैं

3. भारत का राष्ट्रीय खेल कौन-सा है?
(क) क्रिकेट (ख) कबड्डी
(ग) हॉकी (घ) बैडमिंटन

4. सरकार ने खेल को बढ़ावा देने के लिए कौन-सी योजना प्रारंभ की है?

5. विद्यालयों में खेल को उचित महत्त्व क्यों नहीं मिल पाता? गद्यांश के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तरः
1. (ख) खेल का जीवन में महत्त्व
2. (ग) कथन I गलत, कथन II सही है
3. (ग) हॉकी
4. सरकार ने 'खेलो इंडिया' योजना प्रारंभ की है जो प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को पहचानने और उन्हें प्रशिक्षण देने में सहायक है।
5. विद्यालयों में खेल को उचित महत्त्व न मिलने के दो प्रमुख कारण हैं — एक तो अनेक विद्यालयों में खेल के मैदान और सुविधाओं का अभाव है; दूसरा, माता-पिता बच्चों को केवल पढ़ाई पर ध्यान देने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। लेखक इस धारणा को गलत मानते हैं क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।

गद्यांश 10

जल है तो कल है — यह कहावत आज के संदर्भ में अत्यंत सटीक और प्रासंगिक है। पृथ्वी का लगभग 71 प्रतिशत भाग जल से आच्छादित है, फिर भी पीने योग्य मीठे पानी की मात्रा कुल जल का मात्र 3 प्रतिशत है। इसमें से अधिकांश पानी बर्फ के रूप में ध्रुवीय क्षेत्रों में जमा है। अतः भूमिगत और नदियों का पानी ही हमारे उपयोग का मुख्य स्रोत है।

जनसंख्या वृद्धि, औद्योगीकरण और अनियमित वर्षा के कारण विश्व के अनेक क्षेत्रों में जल संकट गहराता जा रहा है। भारत के कई राज्यों में पेयजल की भारी कमी है। भूमिगत जल का अत्यधिक दोहन भविष्य के लिए खतरनाक संकेत है। कृषि में पानी का अत्यधिक उपयोग इस समस्या को और गंभीर बनाता है।

जल संरक्षण के लिए वर्षाजल संग्रहण एक प्रभावी उपाय है। घरों, विद्यालयों और कारखानों में वर्षाजल को एकत्र करने की व्यवस्था करनी चाहिए। ड्रिप सिंचाई और स्प्रिंकलर सिंचाई पद्धतियाँ खेती में पानी की बर्बादी रोकती हैं। पुरानी बावड़ियों, तालाबों और झीलों का पुनरुद्धार भी अत्यंत आवश्यक है।

घरेलू स्तर पर भी जल की बचत की जा सकती है। नल को खुला न छोड़ना, लीकेज को तुरंत ठीक करना और कम पानी में स्नान करना — ये छोटे-छोटे प्रयास मिलकर बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं। जल के बिना जीवन की कल्पना असंभव है; अतः इसका संरक्षण हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

1. गद्यांश का उचित शीर्षक क्या होगा?
(क) जल संरक्षण की आवश्यकता
(ख) नदियों का दैनिक जीवन में महत्त्व
(ग) वर्षा और कृषि
(घ) भूमिगत जल का विज्ञान

2. लेखक के दृष्टिकोण को सबसे सटीक रूप से कौन-सा विकल्प व्यक्त करता है?
(क) पृथ्वी पर पर्याप्त पानी उपलब्ध है
(ख) जल संकट केवल ग्रामीण समस्या है
(ग) छोटे-छोटे प्रयासों से जल संरक्षण संभव है
(घ) केवल सरकार ही जल बचा सकती है

3. पृथ्वी पर पीने योग्य मीठे पानी की मात्रा कितनी है?
(क) कुल जल का 71 प्रतिशत
(ख) कुल जल का 50 प्रतिशत
(ग) कुल जल का 3 प्रतिशत
(घ) कुल जल का 25 प्रतिशत

4. कृषि में जल की बर्बादी रोकने के लिए कौन-सी सिंचाई पद्धतियाँ बताई गई हैं?

5. घरेलू स्तर पर जल संरक्षण के लिए क्या-क्या उपाय किए जा सकते हैं? गद्यांश के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तरः
1. (क) जल संरक्षण की आवश्यकता
2. (ग) छोटे-छोटे प्रयासों से जल संरक्षण संभव है
3. (ग) कुल जल का 3 प्रतिशत
4. ड्रिप सिंचाई और स्प्रिंकलर सिंचाई पद्धतियाँ खेती में जल की बर्बादी रोकती हैं।
5. घरेलू स्तर पर जल संरक्षण के लिए नल को खुला न छोड़ना, लीकेज को तुरंत ठीक करवाना और कम पानी में स्नान करना जैसे सरल उपाय अपनाए जा सकते हैं। इसके अलावा घरों में वर्षाजल संग्रहण की व्यवस्था करना भी एक प्रभावी उपाय है। ये छोटे-छोटे प्रयास मिलकर जल संरक्षण में बड़ा योगदान दे सकते हैं।

गद्यांश 11

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारियाँ अनेक हैं। समाज सेवा का अर्थ है — निःस्वार्थ भाव से दूसरों की भलाई के लिए कार्य करना। जब कोई व्यक्ति अपना समय, धन और शक्ति दूसरों के उत्थान में लगाता है, तो वह वास्तव में एक श्रेष्ठ नागरिक का कर्तव्य निभाता है।

इतिहास में अनेक महान विभूतियों ने समाज सेवा को अपना जीवन-ध्येय बनाया। स्वामी विवेकानंद ने कहा था, "मानव-सेवा ही माधव-सेवा है।" माँ टेरेसा ने कोलकाता की गलियों में रोगियों और दीन-हीनों की सेवा कर यह साबित किया कि मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है।

आज समाज में अनेक समस्याएँ हैं — निरक्षरता, बाल मजदूरी, महिला उत्पीड़न, वृद्ध उपेक्षा और गरीबी। इन

समस्याओं का समाधान केवल सरकार के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता। स्वयंसेवी संगठनों और जागरूक नागरिकों का सहयोग अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा के प्रसार, पर्यावरण संरक्षण और स्वास्थ्य जागरूकता जैसे क्षेत्रों में समाज सेवा की अपार संभावनाएँ हैं।

युवाओं को विशेष रूप से समाज सेवा की ओर प्रेरित किया जाना चाहिए। सप्ताह में कुछ घंटे किसी वृद्धाश्रम, अनाथालय या सरकारी विद्यालय में स्वयंसेवा करने से न केवल समाज को लाभ होता है, बल्कि युवाओं का अपना व्यक्तित्व भी निखरता है। सच्ची सुख-शांति दूसरों की सेवा में ही निहित है।

1. गद्यांश का उचित शीर्षक क्या होगा?
(क) समाज सेवा का महत्त्व (ख) माँ टेरेसा का जीवन
(ग) युवाओं की समस्याएँ (घ) सरकारी योजनाएँ

2. **अभिकथन (A):** समाज सेवा का मुख्य उद्देश्य केवल स्वयं का विकास करना और अधिक से अधिक धन कमाना है।
कारण (R): इन सामाजिक समस्याओं को जड़ से समाप्त करने के लिए स्वयंसेवी संगठनों के साथ-साथ आम जागरूक नागरिकों का सक्रिय सहयोग और भागीदारी अत्यंत आवश्यक है।
(क) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(ख) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
(ग) अभिकथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(घ) अभिकथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

3. समाज सेवा का क्या अर्थ बताया गया है?
(क) सरकारी कार्यों में भाग लेना
(ख) स्वयं का विकास करना
(ग) निःस्वार्थ भाव से दूसरों की भलाई करना
(घ) धन कमाकर धार्मिक कार्यों के लिए दान देना

4. लेखक ने युवाओं को समाज सेवा के लिए क्या सुझाव दिया है?

5. समाज सेवा से युवाओं को क्या लाभ होता है? गद्यांश के आधार पर समझाइए।

उत्तरः
1. (क) समाज सेवा का महत्त्व
2. (घ) अभिकथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।
3. (ग) निःस्वार्थ भाव से दूसरों की भलाई करना
4. युवाओं को सप्ताह में कुछ घंटे वृद्धाश्रम, अनाथालय या सरकारी विद्यालय में स्वयंसेवा करनी चाहिए।
5. समाज सेवा से युवाओं को दोहरा लाभ होता है — एक ओर समाज की समस्याओं के समाधान में मदद मिलती है, दूसरी ओर स्वयं का व्यक्तित्व भी निखरता है। सेवा कार्य से सहानुभूति, जिम्मेदारी और नेतृत्व जैसे गुण विकसित होते हैं। लेखक का मानना है कि सच्ची सुख-शांति दूसरों की सेवा में ही मिलती है।

गद्यांश 12

इंटरनेट ने इक्कीसवीं सदी में मानव जीवन को पूरी तरह बदल दिया है। एक क्लिक में दुनिया भर की जानकारी प्राप्त करना, किसी से भी वीडियो कॉल पर बात करना और घर बैठे खरीदारी करना — ये सब इंटरनेट की देन है। शिक्षा, व्यापार, स्वास्थ्य, बैंकिंग — हर क्षेत्र में इंटरनेट की अपरिहार्य भूमिका हो गई है।

डिजिटल भुगतान प्रणाली ने अर्थव्यवस्था को पारदर्शी बनाया है। यूपीआई, नेट बैंकिंग और डिजिटल वॉलेट ने नकद लेन-देन की आवश्यकता को कम कर दिया है। कोरोना महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा और 'वर्क फ्रॉम होम' की संस्कृति ने यह साबित कर दिया कि इंटरनेट के बिना आधुनिक जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती।

परंतु इंटरनेट के दुरुपयोग से गंभीर समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। साइबर अपराध, फर्जी समाचार, निजी डेटा की चोरी और बच्चों में सोशल मीडिया की लत — ये चिंताजनक विषय हैं। अत्यधिक स्क्रीन टाइम से आँखों, गर्दन और मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

डिजिटल साक्षरता आज की ज़रूरत है। इंटरनेट का बुद्धिमानी से उपयोग करना, सोशल मीडिया पर साझा की जाने वाली सामग्री की सत्यता जाँचना और साइबर सुरक्षा के नियमों का पालन करना — ये सब डिजिटल नागरिकता के आवश्यक गुण हैं। प्रौद्योगिकी हमारी सेवक है, स्वामी नहीं — यह भाव रखकर ही हम इसका सही उपयोग कर सकते हैं।

1. गद्यांश का केंद्रीय भाव क्या है?
(क) साइबर अपराध की रोकथाम
(ख) इंटरनेट के लाभ-हानि और जिम्मेदार उपयोग
(ग) ऑनलाइन शिक्षा का महत्त्व
(घ) डिजिटल भुगतान का विस्तार

2. लेखक के दृष्टिकोण को सबसे सटीक रूप से कौन-सा विकल्प व्यक्त करता है?
(क) इंटरनेट पर प्रतिबंध लगाना चाहिए
(ख) प्रौद्योगिकी हमारी सेवक है, स्वामी नहीं
(ग) बच्चों को इंटरनेट नहीं देना चाहिए
(घ) डिजिटल लेन-देन असुरक्षित है

3. डिजिटल भुगतान में किन साधनों का उल्लेख किया गया है?
(क) चेक, ड्राफ्ट और डाकघर
(ख) यूपीआई, नेट बैंकिंग और डिजिटल वॉलेट
(ग) क्रेडिट कार्ड और एटीएम
(घ) बैंक पासबुक और एफडी

4. इंटरनेट के अत्यधिक उपयोग से स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है?

5. डिजिटल नागरिक के क्या गुण होने चाहिए? गद्यांश के आधार पर समझाइए।

उत्तरः
1. (ख) इंटरनेट के लाभ-हानि और जिम्मेदार उपयोग
2. (ख) प्रौद्योगिकी हमारी सेवक है, स्वामी नहीं
3. (ख) यूपीआई, नेट बैंकिंग और डिजिटल वॉलेट
4. अत्यधिक स्क्रीन टाइम से आँखों, गर्दन और मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।
5. एक अच्छे डिजिटल नागरिक को इंटरनेट का बुद्धिमानी से उपयोग करना आना चाहिए। सोशल मीडिया पर साझा सामग्री की सत्यता जाँचनी चाहिए और साइबर सुरक्षा नियमों का पालन करना चाहिए। डिजिटल साक्षरता होना आज की ज़रूरत है क्योंकि इंटरनेट के दुरुपयोग से साइबर अपराध, डेटा चोरी और सोशल मीडिया की लत जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

गद्यांश 13

महिला सशक्तिकरण का अर्थ है — महिलाओं को आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से इतना सक्षम बनाना कि वे स्वतंत्र निर्णय ले सकें और अपना जीवन गरिमापूर्वक जी सकें। भारत में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते' अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं — यह उक्ति नारी के गौरव की परिचायक है।

परंतु वास्तविकता यह है कि आज भी देश के कई हिस्सों में महिलाओं को भेदभाव, घरेलू हिंसा, कन्या भ्रूण हत्या और बाल विवाह जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। लड़कियों की शिक्षा को अनावश्यक मानना और उन्हें केवल घर की चारदीवारी में सीमित रखना — ये सामाजिक कुरीतियाँ प्रगति में बाधा हैं।

जब महिलाएँ शिक्षित होती हैं तो पूरा परिवार शिक्षित होता है। कल्पना चावला, इंदिरा नूई, पी. टी. उषा और मैरी कॉम जैसी महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि महिलाएँ किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से पीछे नहीं हैं। सरकार ने 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसी योजनाएँ प्रारंभ की हैं जो लड़कियों के जीवन-स्तर को सुधारने में सहायक हैं।

समाज की सोच बदलनी होगी। महिलाओं को समान अवसर, समान वेतन और समान सम्मान मिलना चाहिए। एक सशक्त महिला एक सशक्त राष्ट्र की नींव है। जब तक आधी आबादी पिछड़ी रहेगी, तब तक राष्ट्र का संपूर्ण विकास संभव नहीं है।

1. गद्यांश का उचित शीर्षक क्या होगा?
(क) महिलाओं की सामाजिक समस्याएँ
(ख) नारी सशक्तिकरण: आवश्यकता और दिशा
(ग) बेटी बचाओ अभियान
(घ) प्रसिद्ध महिला खिलाड़ी

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए —
I. शिक्षित महिला से पूरा परिवार शिक्षित होता है।
II. महिलाओं की शिक्षा अनावश्यक है।
सही विकल्प चुनिए:
(क) केवल कथन I सही है
(ख) केवल कथन II सही है
(ग) दोनों कथन सही हैं
(घ) दोनों कथन गलत हैं

3. गद्यांश में किस सरकारी योजना का उल्लेख है?
(क) स्वच्छ भारत अभियान
(ख) खेलो इंडिया
(ग) मनरेगा
(घ) बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

4. 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते' का क्या अर्थ है?

5. लेखक ने राष्ट्र के विकास के लिए महिला सशक्तिकरण को क्यों आवश्यक माना है?

उत्तरः
1. (ख) नारी सशक्तिकरण: आवश्यकता और दिशा
2. (क) केवल कथन I सही है
3. (घ) बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
4. 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते' का अर्थ है — जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं।
5. लेखक का मानना है कि जब तक देश की आधी आबादी — अर्थात् महिलाएँ — पिछड़ी रहेंगी, तब तक राष्ट्र का संपूर्ण विकास संभव नहीं है। एक सशक्त महिला पूरे परिवार को शिक्षित और उन्नत बनाती है। महिलाओं को समान अवसर, समान वेतन और सम्मान देने से ही एक सशक्त समाज और राष्ट्र का निर्माण हो सकता है।

गद्यांश 14

दिवाली भारत का सबसे प्रमुख और लोकप्रिय त्योहार है। इसे 'दीपों का उत्सव' भी कहा जाता है। कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाने वाला यह पर्व असत्य पर सत्य की, अज्ञान पर ज्ञान की और अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। मान्यता है कि इस दिन भगवान राम चौदह वर्षों के वनवास के बाद अयोध्या लौटे थे और नगरवासियों ने उनके स्वागत में दीप जलाए थे।

दिवाली की तैयारियाँ कई दिन पहले से शुरू हो जाती हैं। घरों की लिपाई-पुताई, रंगोली, दीप-सज्जा और मिठाइयाँ बाँटना इस पर्व की विशेषता है। बाज़ार नई वस्तुओं से सज जाते हैं और चारों ओर उत्साह और उमंग का वातावरण छा जाता है। लक्ष्मी पूजन इस त्योहार का मुख्य अनुष्ठान है जिसमें धन और समृद्धि की देवी का आह्वान किया जाता है।

परंतु आधुनिक समय में पटाखों के कारण ध्वनि और वायु प्रदूषण की समस्या गंभीर हो गई है। दिवाली के बाद

शहरों में वायु गुणवत्ता का स्तर अत्यंत नीचे आ जाता है जो श्वास रोगियों और बच्चों के लिए खतरनाक है।

अतः आवश्यक है कि हम पर्यावरण के प्रति संवेदनशील होकर दिवाली मनाएँ। मिट्टी के दीयों से घर जगमगाएँ, पटाखों का उपयोग न्यूनतम करें और पड़ोसियों के साथ मिठाइयाँ साझा करें। 'हरी दिवाली, स्वस्थ दिवाली' — यही आज के समय की ज़रूरत है।

1. गद्यांश का केंद्रीय भाव क्या है?
(क) भगवान राम की वापसी और दिवाली का आगमन
(ख) दिवाली का महत्त्व और पर्यावरण-संवेदनशील उत्सव
(ग) बाज़ार में पटाखों की बढ़ती बिक्री
(घ) हिंदू धर्म और लक्ष्मी पूजन की विधि का प्रचार-प्रसार

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए —
I. दिवाली कार्तिक मास की पूर्णिमा को मनाई जाती है।
II. इस दिन भगवान राम वनवास के बाद अयोध्या लौटे थे।
सही विकल्प चुनिए:
(क) दोनों कथन सही हैं
(ख) कथन I गलत, कथन II सही है
(ग) कथन I सही, कथन II गलत है
(घ) दोनों कथन गलत हैं

3. दिवाली का मुख्य अनुष्ठान कौन-सा है?
(क) रंगोली बनाना (ख) मिठाई बाँटना
(ग) लक्ष्मी पूजन (घ) पटाखे जलाना

4. पटाखों से दिवाली पर कौन-सी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं?

5. लेखक ने 'हरी दिवाली' मनाने के लिए क्या सुझाव दिए हैं?

उत्तरः
1. (ख) दिवाली का महत्त्व और पर्यावरण-संवेदनशील उत्सव
2. (ख) कथन I गलत, कथन II सही है
3. (ग) लक्ष्मी पूजन
4. पटाखों के कारण दिवाली पर ध्वनि प्रदूषण और वायु प्रदूषण दोनों बढ़ जाते हैं जो श्वास रोगियों और बच्चों के लिए हानिकारक हैं।
5. लेखक ने पर्यावरण के अनुकूल दिवाली मनाने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए हैं — मिट्टी के दीयों से घर को सजाना, पटाखों का उपयोग न्यूनतम करना और पड़ोसियों के साथ मिठाइयाँ साझा करना। इस प्रकार हम पर्यावरण की रक्षा करते हुए त्योहार की खुशी भी मना सकते हैं।

गद्यांश 15

भारत एक कृषि-प्रधान देश है जहाँ लगभग 55 प्रतिशत जनसंख्या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। किसान भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। खेत में काम करने वाले किसान का जीवन परिश्रम और प्रकृति की अनिश्चितताओं से भरा होता है। सूखा, बाढ़, ओलावृष्टि और टिड्डी दल — ये सब किसान के जीवन में संकट लाते हैं।

हरित क्रांति ने 1960 के दशक में भारत को खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बनाया। उन्नत बीजों, रासायनिक उर्वरकों और सिंचाई के प्रसार से गेहूँ और चावल का उत्पादन कई गुना बढ़ गया। डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन को 'हरित क्रांति के जनक' के रूप में जाना जाता है। आज जैविक खेती का महत्त्व बढ़ता जा रहा है। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की उर्वरता और मानव स्वास्थ्य दोनों पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। जैविक खेती न केवल पर्यावरण के लिए लाभकारी है, बल्कि बाज़ार में इसके उत्पादों की माँग भी अधिक है।

सरकार ने किसानों की आय दोगुनी करने का लक्ष्य रखा है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, किसान क्रेडिट कार्ड और न्यूनतम समर्थन मूल्य जैसी नीतियाँ किसानों को आर्थिक सुरक्षा देती हैं। किसान के चेहरे पर मुस्कान ही असली भारत की खुशहाली का प्रतीक है।

1. गद्यांश का उचित शीर्षक क्या होगा?
(क) हरित क्रांति का इतिहास
(ख) भारतीय कृषि और किसान
(ग) जैविक खेती के लाभ
(घ) सरकारी योजनाओं की समीक्षा

2. लेखक के दृष्टिकोण को सबसे सटीक रूप से कौन-सा विकल्प व्यक्त करता है?
(क) रासायनिक खेती ही श्रेष्ठ है
(ख) किसान की समृद्धि ही राष्ट्र की खुशहाली है
(ग) कृषि अब पुरानी पद्धति हो गई है
(घ) हरित क्रांति का अब कोई औचित्य नहीं है

3. 'हरित क्रांति के जनक' किसे कहा जाता है?
(क) डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम
(ख) डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन
(ग) डॉ. मनमोहन सिंह
(घ) डॉ. वर्गीज़ कुरियन

4. रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से क्या हानि होती है?

5. किसानों की आय बढ़ाने के लिए सरकार ने क्या नीतियाँ अपनाई हैं? गद्यांश के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तरः
1. (ख) भारतीय कृषि और किसान
2. (ख) किसान की समृद्धि ही राष्ट्र की खुशहाली है
3. (ख) डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन
4. रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की उर्वरता घटती है और मानव स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

5. किसानों की आय बढ़ाने के लिए सरकार ने अनेक नीतियाँ अपनाई हैं। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना फसल नष्ट होने पर सुरक्षा देती है। किसान क्रेडिट कार्ड से किसानों को सस्ता ऋण मिलता है और न्यूनतम समर्थन मूल्य से उनकी उपज का उचित दाम सुनिश्चित किया जाता है। सरकार ने किसानों की आय दोगुनी करने का लक्ष्य भी रखा है।

गद्यांश 16

सड़क दुर्घटनाएँ आज विश्व में मृत्यु के प्रमुख कारणों में से एक हैं। भारत में प्रतिवर्ष लाखों लोग सड़क दुर्घटनाओं में अपनी जान गँवाते हैं। तेज़ गति, शराब पीकर वाहन चलाना, यातायात नियमों की अनदेखी और मोबाइल का उपयोग — ये सब दुर्घटनाओं के प्रमुख कारण हैं।

यातायात नियमों का पालन केवल कानूनी दायित्व नहीं, बल्कि जीवन की रक्षा का उपाय भी है। हेलमेट और सीट बेल्ट का उपयोग दुर्घटना में होने वाली मृत्यु के जोखिम को काफी हद तक कम करता है। लाल बत्ती पर रुकना, निर्धारित गति सीमा का पालन करना और ओवरटेक से बचना — ये सरल नियम अनेक जीवन बचा सकते हैं।

सड़क निर्माण की गुणवत्ता भी दुर्घटनाओं को प्रभावित करती है। टूटी-फूटी सड़कें, अनुचित संकेत-चिह्न और खराब स्ट्रीट लाइटिंग दुर्घटनाओं को निमंत्रण देती हैं। सरकार को सड़कों के रख-रखाव पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

जागरुकता और शिक्षा इस समस्या का स्थायी समाधान है। विद्यालयों में यातायात शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए। 'सुरक्षित चालक, सुरक्षित जीवन' — इस संदेश को प्रत्येक नागरिक तक पहुँचाना ज़रूरी है। दुर्घटना के शिकार व्यक्ति की तत्काल सहायता करना भी प्रत्येक नागरिक का नैतिक कर्तव्य है।

1. गद्यांश का उचित शीर्षक क्या होगा?
(क) भारत में वाहन उद्योग
(ख) सड़क सुरक्षा और यातायात नियम
(ग) शहरी परिवहन की समस्याएँ
(घ) राजमार्ग निर्माण

2. **अभिकथन (A):** दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट पहनना और कार चलाते समय सीट बेल्ट लगाना पूरी तरह से निरर्थक (बेकार) है।
कारण (R): हेलमेट और सीट बेल्ट का अनुशासित उपयोग किसी भी संभावित सड़क दुर्घटना में होने वाली मृत्यु के जोखिम को काफी हद तक कम कर देता है।
(क) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(ख) अभिकथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(ग) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(घ) अभिकथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

3. सड़क दुर्घटनाओं का प्रमुख कारण क्या नहीं है?
(क) तेज़ गति से वाहन चलाना
(ख) मोबाइल का उपयोग करते हुए चलाना
(ग) हेलमेट पहनकर चलाना
(घ) शराब पीकर वाहन चलाना

4. सड़क निर्माण की खराब गुणवत्ता से दुर्घटनाएँ क्यों होती हैं?

5. सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए नागरिकों और सरकार दोनों की क्या भूमिका होनी चाहिए?

उत्तरः

1. (ख) सड़क सुरक्षा और यातायात नियम
2. (घ) अभिकथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।
3. (ग) हेलमेट पहनकर चलाना
4. टूटी-फूटी सड़कें, अनुचित संकेत-चिह्न और खराब स्ट्रीट लाइटिंग वाहन चालकों के लिए खतरनाक परिस्थितियाँ उत्पन्न करती हैं।
5. सरकार की भूमिका में सड़कों का उचित रख-रखाव, अच्छे संकेत-चिह्न और स्ट्रीट लाइटिंग की व्यवस्था करना शामिल है। नागरिकों को हेलमेट, सीट बेल्ट का प्रयोग करना, लाल बत्ती पर रुकना और गति सीमा का पालन करना चाहिए। विद्यालयों में यातायात शिक्षा अनिवार्य हो ताकि बचपन से ही सुरक्षित ड्राइविंग के संस्कार मिलें।

गद्यांश 17

देशभक्ति वह पवित्र भावना है जो व्यक्ति को अपने देश के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए प्रेरित करती है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अनगिनत वीरों ने इसी भावना से प्रेरित होकर अपने प्राणों की आहुति दी। भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद, सुभाष चंद्र बोस और रानी लक्ष्मीबाई — ये सब देशभक्ति की अमर प्रतिमाएँ हैं।

परंतु देशभक्ति केवल युद्ध के मैदान में प्राण देने तक सीमित नहीं है। एक शिक्षक जो ईमानदारी से अपने शिष्यों को ज्ञान देता है, एक किसान जो अथक परिश्रम से खेत जोतता है, एक वैज्ञानिक जो देश को आत्मनिर्भर बनाने में लगा है — ये सब भी देशभक्त हैं।

आज की पीढ़ी के लिए देशभक्ति का अर्थ है — कर ईमानदारी से देना, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना, भ्रष्टाचार का विरोध करना और अपने कर्तव्यों का पालन करना। जो व्यक्ति अपने काम में शत-प्रतिशत समर्पण देता है, वह भी राष्ट्र निर्माण में सहयोगी है।

देश के प्रति सच्चा प्रेम अंधराष्ट्रवाद से अलग होता है। हम अपने देश से प्रेम कर सकते हैं और साथ ही दूसरे देशों का भी सम्मान कर सकते हैं। भारत की विविधता, उसकी संस्कृति और उसके आदर्शों पर गर्व करना तथा उसे और बेहतर बनाने में योगदान देना — यही सच्ची देशभक्ति है।

1. गद्यांश का केंद्रीय भाव क्या है?
(क) स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास
(ख) देशभक्ति के विविध आयाम
(ग) भगत सिंह की जीवनी
(घ) भारत और विदेश का संबंध

2. लेखक के दृष्टिकोण को सबसे सटीक रूप से कौन-सा विकल्प व्यक्त करता है?
(क) देशभक्ति केवल सैनिकों का कर्तव्य है आम नागरिकों का नहीं
(ख) देश-प्रेम और दूसरे देशों का सम्मान साथ चल सकते हैं
(ग) अंधराष्ट्रवाद ही सच्ची देशभक्ति है
(घ) ईमानदारी और देशभक्ति का कोई संबंध नहीं

3. गद्यांश में किस महिला स्वतंत्रता सेनानी का उल्लेख है?
(क) सरोजिनी नायडू (ख) रानी लक्ष्मीबाई
(ग) कस्तूरबा गांधी (घ) इंदिरा गांधी

4. आज की पीढ़ी के लिए देशभक्ति का क्या अर्थ बताया गया है?

5. लेखक ने 'अंधराष्ट्रवाद' और 'सच्ची देशभक्ति' में क्या अंतर बताया है?

उत्तरः
1. (ख) देशभक्ति के विविध आयाम
2. (ख) देश-प्रेम और दूसरे देशों का सम्मान साथ चल सकते हैं
3. (ख) रानी लक्ष्मीबाई
4. आज की पीढ़ी के लिए देशभक्ति का अर्थ है — कर ईमानदारी से देना, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना, भ्रष्टाचार का विरोध करना और कर्तव्यपालन।
5. लेखक के अनुसार सच्ची देशभक्ति वह है जिसमें अपने देश से प्रेम के साथ-साथ दूसरे देशों का भी सम्मान किया जाए। अंधराष्ट्रवाद में केवल अपने देश को सर्वश्रेष्ठ मानकर दूसरों को हेय दृष्टि से देखा जाता है। देश की विविधता, संस्कृति और आदर्शों पर गर्व करना तथा उसे बेहतर बनाना ही सच्ची देशभक्ति है।

गद्यांश 18

'समय और ज्वार किसी का इंतज़ार नहीं करते' — यह कहावत समय की अनमोलता को दर्शाती है। संसार में धन, स्वास्थ्य और मित्र — सब पाए और खोए जा सकते हैं, परंतु एक बार बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता। इसीलिए महान विभूतियों ने सदा समय का सदुपयोग किया और अपने लक्ष्य को प्राप्त किया।

समय प्रबंधन जीवन की सफलता का मूलाधार है। जो व्यक्ति अपने दिन की योजना बनाकर चलते हैं, वे अधिक कार्य कम समय में संपन्न करते हैं। विद्यार्थियों के लिए समय-सारणी का पालन करना अत्यंत लाभकारी है। नियमित अध्ययन, खेल, विश्राम और मनोरंजन का संतुलित समय-वितरण सफलता की कुंजी है।

टालमटोल की आदत समय की सबसे बड़ी शत्रु है। 'कल करेंगे' कहने वाले लोग जीवन में प्रायः पीछे रह जाते हैं। आज का काम आज ही पूरा करने की आदत बनाना जरूरी है। महान वैज्ञानिक और दार्शनिक अपने समय के एक-एक पल का उचित उपयोग करते थे।

विद्यार्थी जीवन ही वह स्वर्णिम काल है जब समय का सर्वाधिक सदुपयोग किया जाना चाहिए। इस समय जो नींव तैयार होती है, वह पूरे जीवन के भवन को टिकाए रखती है। समय को व्यर्थ गँवाना अपने भविष्य को अँधेरे में धकेलना है। जो समय की कद्र करता है, समय उसे सफलता और सम्मान से नवाज़ता है।

1. गद्यांश का उचित शीर्षक क्या होगा?
(क) विद्यार्थी जीवन की चुनौतियाँ
(ख) समय: सबसे बड़ी संपत्ति
(ग) दिनचर्या का महत्त्व
(घ) सफल व्यक्तियों की कहानियाँ

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए —
I. टालमटोल की आदत समय की सबसे बड़ी शत्रु है।
II. 'कल करेंगे' कहने वाले लोग जीवन में सफल रहते हैं।
सही विकल्प चुनिए:
(क) कथन I गलत, कथन II सही है
(ख) कथन I सही, कथन II गलत है
(ग) दोनों कथन सही हैं
(घ) दोनों कथन गलत हैं

3. बीते हुए समय के बारे में गद्यांश में क्या कहा गया है?
(क) बीता समय दोबारा आ सकता है
(ख) बीता समय कभी वापस नहीं आता
(ग) समय बदला जा सकता है
(घ) समय का कोई महत्त्व नहीं

4. विद्यार्थियों के लिए समय के सदुपयोग हेतु क्या सुझाव दिया गया है?

5. लेखक ने विद्यार्थी जीवन को 'स्वर्णिम काल' क्यों कहा है?

उत्तरः
1. (ख) समय: सबसे बड़ी संपत्ति
2. (ख) कथन I सही, कथन II गलत है
3. (ख) बीता समय कभी वापस नहीं आता
4. विद्यार्थियों के लिए नियमित अध्ययन, खेल, विश्राम और मनोरंजन का संतुलित समय-वितरण और समय-सारणी का पालन करना आवश्यक है।
5. लेखक ने विद्यार्थी जीवन को 'स्वर्णिम काल' इसलिए कहा है क्योंकि इस समय जो ज्ञान, संस्कार और आदतें विकसित होती हैं, वे पूरे जीवन की नींव बनती हैं। इस

काल में समय का सदुपयोग करने वाले विद्यार्थी आगे जाकर सफल और सम्मानित जीवन जीते हैं। यही वह समय है जब व्यक्ति अपने भविष्य को उज्ज्वल बना सकता है।

गद्यांश 19

भारत दक्षिण एशिया में स्थित एक विशाल और विविधताओं से भरपूर देश है। उत्तर में हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियाँ, दक्षिण में हिंद महासागर की लहरें, पूर्व में घने वर्षावन और पश्चिम में थार का रेगिस्तान — भारत की भौगोलिक विविधता अद्वितीय है। यह विविधता ही भारत को एक अनूठा देश बनाती है।

भारत क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व का सातवाँ सबसे बड़ा देश है। गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, सिंधु और कावेरी जैसी महान नदियाँ यहाँ की सभ्यता का आधार रही हैं। इन नदियों के किनारे विकसित कृषि और व्यापार ने भारत को प्राचीन काल से ही एक समृद्ध राष्ट्र बनाया।

भारत की जलवायु भी अत्यंत विविध है। उत्तर में कड़ाके की सर्दी और दक्षिण में उष्णकटिबंधीय गर्मी, मानसून की बरसात और पहाड़ों की ठंडी हवाएँ — ये सब मिलकर भारत के विभिन्न भागों को अलग-अलग स्वरूप देती हैं।

हिमालय केवल भौगोलिक संरचना नहीं है, यह भारत का प्राकृतिक रक्षा कवच भी है। यह उत्तर से आने वाली ठंडी हवाओं को रोकता है और मानसून को भारत में लाने में सहायक होता है। हिमालय से निकलने वाली नदियाँ करोड़ों लोगों को जल, सिंचाई और जल-विद्युत प्रदान करती हैं। भारत का भूगोल यहाँ की संस्कृति, अर्थव्यवस्था और जीवनशैली को गहराई से प्रभावित करता है।

1. गद्यांश का उचित शीर्षक क्या होगा?
   (क) हिमालय: भारत का गौरव
   (ख) भारत की भौगोलिक विविधता
   (ग) भारतीय नदियों का महत्त्व
   (घ) मानसून और भारत

2. लेखक के दृष्टिकोण को सबसे सटीक रूप से कौन-सा विकल्प व्यक्त करता है?
   (क) भारत का भूगोल यहाँ की संस्कृति और अर्थव्यवस्था को प्रभावित नहीं करता है
   (ख) हिमालय केवल एक पर्वत श्रृंखला है
   (ग) भारत का भूगोल यहाँ की संस्कृति और अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है
   (घ) भारत में जलवायु एक समान है

3. क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत विश्व का कौन-सा सबसे बड़ा देश है?
   (क) पाँचवाँ (ख) छठा
   (ग) सातवाँ (घ) आठवाँ

4. हिमालय को भारत का 'प्राकृतिक रक्षा कवच' क्यों कहा जाता है?

5. भारत की भौगोलिक विविधता इसे विश्व के अन्य देशों से कैसे अलग बनाती है? समझाइए।

उत्तरः
1. (ख) भारत की भौगोलिक विविधता
2. (ग) भारत का भूगोल यहाँ की संस्कृति और अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है
3. (ग) सातवाँ
4. हिमालय उत्तर से आने वाली ठंडी हवाओं को रोकता है और मानसून को भारत में लाने में सहायक होता है — इसीलिए इसे प्राकृतिक रक्षा कवच कहते हैं।
5. भारत में एक ही देश के भीतर हिमाच्छादित पर्वत, रेगिस्तान, उष्णकटिबंधीय तट, घने वर्षावन और बड़े मैदान एक साथ मिलते हैं। यह भौगोलिक विविधता भारत की जलवायु, संस्कृति, खान-पान और जीवनशैली को भिन्न-भिन्न बनाती है। यही विविधता भारत को विश्व का एक अद्वितीय और अनूठा देश बनाती है।

गद्यांश 20

बाल श्रम एक ऐसी सामाजिक बुराई है जो बच्चों के सुनहरे भविष्य को कुचल देती है। जब कोई बच्चा खेलने-पढ़ने की उम्र में काम पर जाने को मजबूर होता है, तो यह न केवल उसके शारीरिक और मानसिक विकास को रोकता है, बल्कि उसके सपनों और अधिकारों का भी हनन करता है।

भारत में बाल श्रम के प्रमुख कारण हैं — गरीबी, अशिक्षा, जागरूकता का अभाव और सस्ते श्रम की माँग। ढाबों, ईंट-भट्ठों, बुनाई उद्योगों और घरों में काम करने वाले लाखों बच्चे इस समस्या के शिकार हैं। खतरनाक उद्योगों में काम करने से बच्चों का स्वास्थ्य भी गंभीर रूप से प्रभावित होता है।

भारत में बाल श्रम को रोकने के लिए 'बाल श्रम (निषेध एवं विनियमन) अधिनियम' बनाया गया है। इस कानून के अंतर्गत 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को किसी भी खतरनाक उद्योग में काम पर रखना दंडनीय अपराध है। 'मध्याह्न भोजन योजना' और 'शिक्षा का अधिकार अधिनियम' जैसी नीतियाँ बच्चों को विद्यालय से जोड़ने में सहायक हैं।

समाज की मानसिकता बदलना भी ज़रूरी है। जो लोग जानते हुए भी बच्चों से काम करवाते हैं, वे इस पाप के भागीदार हैं। प्रत्येक बच्चे को शिक्षा, स्वास्थ्य और खेलने का अधिकार है। बाल श्रम मुक्त समाज ही एक सभ्य और न्यायपूर्ण समाज की निशानी है।

1. गद्यांश का उचित शीर्षक क्या होगा?
   (क) भारत का बाल विकास कार्यक्रम
   (ख) बाल श्रम: एक सामाजिक अभिशाप
   (ग) गरीबी और शिक्षा का संबंध
   (घ) बच्चों के कानूनी अधिकार

2. **अभिकथन (A):** भारत में वर्तमान समय में भी बाल श्रम को रोकने या प्रतिबंधित करने के लिए कोई भी विशेष कानूनी अधिनियम अथवा नियम मौजूद नहीं है।
कारण (R): भारतीय कानून के अंतर्गत 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को किसी भी प्रकार के खतरनाक उद्योगों या वाणिज्यिक कार्यों में रखना एक गंभीर दंडनीय अपराध माना जाता है।
(क) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(ख) अभिकथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(ग) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(घ) अभिकथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

3. बाल श्रम के प्रमुख कारणों में कौन-सा सही नहीं है?
(क) अशिक्षा (ख) अत्यधिक वेतन की चाह
(ग) देश में फैली गरीबी (घ) सस्ते श्रम की माँग

4. बच्चों को विद्यालय से जोड़ने के लिए सरकार की कौन-सी नीतियाँ सहायक हैं?

5. बाल श्रम बच्चों के भविष्य को किस प्रकार प्रभावित करता है? विस्तार से उत्तर दीजिए।

उत्तरः
1. (ख) बाल श्रम: एक सामाजिक अभिशाप
2. (घ) अभिकथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।
3. (ख) अत्यधिक वेतन की चाह
4. 'मध्याह्न भोजन योजना' और 'शिक्षा का अधिकार अधिनियम' बच्चों को विद्यालय से जोड़ने में सहायक हैं।
5. बाल श्रम बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास को रोकता है। काम पर जाने से वे शिक्षा से वंचित रहते हैं, जिससे उनका भविष्य अंधकारमय हो जाता है। खतरनाक उद्योगों में काम करने से स्वास्थ्य को भी गंभीर नुकसान होता है। इस प्रकार बाल श्रम बच्चों के सपनों, अधिकारों और उज्ज्वल भविष्य की संभावना को पूरी तरह नष्ट कर देता है।

गद्यांश 21

भारत आज विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और निकट भविष्य में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। स्वतंत्रता के बाद से भारतीय अर्थव्यवस्था ने लंबा सफर तय किया है। 1991 में आर्थिक उदारीकरण के बाद भारत ने वैश्विक बाज़ार में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और विदेशी निवेश में तेज़ी आई।

सूचना प्रौद्योगिकी, सेवा क्षेत्र और दवा उद्योग में भारत ने विश्वस्तरीय पहचान बनाई है। बेंगलुरु, हैदराबाद और पुणे जैसे शहर वैश्विक आईटी हब बन गए हैं। भारतीय इंजीनियर और वैज्ञानिक विश्व की शीर्ष कंपनियों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। परंतु भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने अनेक चुनौतियाँ भी हैं। बेरोजगारी, असमान आय वितरण, कृषि क्षेत्र की समस्याएँ और मुद्रास्फीति — ये प्रमुख आर्थिक चुनौतियाँ हैं। ग्रामीण और शहरी विकास के बीच की खाई अभी भी चिंताजनक है।

'मेक इन इंडिया', 'स्टार्टअप इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' जैसी योजनाएँ देश को आर्थिक दृष्टि से सशक्त बनाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम हैं। युवा उद्यमिता को प्रोत्साहन, डिजिटल अर्थव्यवस्था का विस्तार और निर्यात बढ़ाना — ये भारत को आर्थिक महाशक्ति बनाने के मार्ग हैं।

1. गद्यांश का केंद्रीय भाव क्या है?
(क) कृषि क्षेत्र का पतन और ग्रामीण विकास की समस्याएँ
(ख) विदेशी निवेश की समस्याएँ और आर्थिक प्रभाव
(ग) भारतीय अर्थव्यवस्था: प्रगति और चुनौतियाँ
(घ) बेरोजगारी का समाधान और रोजगार के अवसर

2. लेखक के दृष्टिकोण को सबसे सटीक रूप से कौन-सा विकल्प व्यक्त करता है?
(क) भारत पहले से ही विश्व की नंबर एक अर्थव्यवस्था है
(ख) 1991 से पहले भारत की अर्थव्यवस्था बेहतर थी
(ग) आईटी क्षेत्र ही भारत का एकमात्र मार्ग है
(घ) भारत को अभी भी बहुत विकास करना बाकी है

3. 1991 में भारत ने कौन-सी आर्थिक नीति अपनाई?
(क) समाजवादी अर्थव्यवस्था (ख) आर्थिक उदारीकरण
(ग) राष्ट्रीयकरण (घ) नियोजित अर्थव्यवस्था

4. भारत की आईटी इंडस्ट्री के प्रमुख केंद्र कौन-से शहर हैं?

5. भारतीय अर्थव्यवस्था को महाशक्ति बनाने के लिए क्या आवश्यक है? गद्यांश के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तरः
1. (ग) भारतीय अर्थव्यवस्था: प्रगति और चुनौतियाँ
2. (घ) भारत को अभी भी बहुत विकास करना बाकी है
3. (ख) आर्थिक उदारीकरण
4. बेंगलुरु, हैदराबाद और पुणे भारत के प्रमुख वैश्विक आईटी हब के रूप में जाने जाते हैं।
5. भारतीय अर्थव्यवस्था को महाशक्ति बनाने के लिए युवा उद्यमिता को प्रोत्साहन देना, डिजिटल अर्थव्यवस्था का विस्तार और निर्यात बढ़ाना आवश्यक है। 'मेक इन इंडिया', 'स्टार्टअप इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' जैसी योजनाएँ इस दिशा में सही कदम हैं। साथ ही बेरोजगारी और ग्रामीण-शहरी असमानता जैसी चुनौतियों का समाधान भी ज़रूरी है।

गद्यांश 22

'उद्यमी नर सिंह समाना' — यह उक्ति परिश्रमी व्यक्ति की महत्ता को दर्शाती है। जो व्यक्ति परिश्रम करता है, वह किसी भी लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। संसार में जितने भी महान वैज्ञानिक, दार्शनिक, कलाकार और खिलाड़ी हुए हैं, उन

सबने अपनी सफलता के पीछे अनवरत परिश्रम को मुख्य कारण बताया है।

थॉमस एडिसन ने बल्ब बनाने से पहले दस हजार से अधिक बार असफल प्रयोग किए। जब उनसे इस बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा — "मैंने असफल नहीं हुआ, मैंने दस हजार तरीके खोजे जो काम नहीं करते।" यह दृष्टिकोण ही परिश्रम और लगन का सच्चा स्वरुप है। भाग्य पर निर्भर रहने वाले लोग प्रायः जीवन में संतुष्टि नहीं पाते। परिश्रम के बिना भाग्य भी निष्क्रिय हो जाता है। एक किसान जो बीज बोता है, तभी फसल काटता है; एक विद्यार्थी जो पढ़ता है, तभी परीक्षा में सफल होता है। इस प्रकार परिश्रम और परिणाम का गहरा संबंध है।

विद्यार्थी जीवन में परिश्रम का अभ्यास करने से जीवन में सफलता की राह प्रशस्त होती है। नियमित अध्ययन, अभ्यास और समर्पण से कोई भी लक्ष्य कठिन नहीं रहता। स्मरण रहे — सफलता उन्हें नहीं मिलती जो प्रतिभाशाली हों, बल्कि उन्हें मिलती है जो निरंतर परिश्रम करते हों। परिश्रम ही वह सोना है जो जीवन को खरा बनाता है।

1. गद्यांश का उचित शीर्षक क्या होगा?
(क) थॉमस एडिसन की खोज: बल्ब
(ख) परिश्रम: सफलता की कुंजी
(ग) भाग्य और ईश्वर
(घ) किसान का संघर्षपूर्ण जीवन

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. खोया हुआ स्वास्थ्य और धन तो वापस मिल सकता है, लेकिन बीता हुआ समय कभी नहीं मिलता।
II. समय नियोजन साधारण व्यक्ति को भी असाधारण बना सकता है।
III. गद्यांश के अनुसार आलस्य मनुष्य का मित्र है जो उसे आराम देकर कार्यक्षमता बढ़ाता है।
IV. जो व्यक्ति आज का काम कल पर टालते हैं, उन्हें जीवन में केवल पछतावा मिलता है।
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(क) केवल I और III सही हैं
(ख) केवल II और IV सही हैं
(ग) केवल I, II और IV सही हैं
(घ) सभी चारों (I, II, III और IV) सही हैं

3. गद्यांश के अनुसार सफलता किसे मिलती है?
(क) प्रतिभाशाली लोगों को
(ख) भाग्य के भरोसे रहने वालों को
(ग) निरंतर परिश्रम करने वालों को
(घ) ताकतवर व धनी लोगों को

4. परिश्रम और भाग्य के बारे में लेखक ने क्या विचार व्यक्त किया है?

5. एडिसन का उदाहरण देकर लेखक ने परिश्रम और लगन के बारे में क्या सिखाया है?

उत्तर:
1. (ख) परिश्रम: सफलता की कुंजी
2. (ग) केवल I, II और IV सही हैं
3. (ग) निरंतर परिश्रम करने वालों को
4. लेखक के अनुसार परिश्रम के बिना भाग्य भी निष्क्रिय हो जाता है; परिश्रम करने वाले ही जीवन में फल पाते हैं।
5. एडिसन के उदाहरण से लेखक ने यह सिखाया है कि असफलता से निराश नहीं होना चाहिए। एडिसन ने दस हजार बार असफल होने पर भी प्रयास जारी रखे और अंततः सफलता प्राप्त की। उनका दृष्टिकोण था कि हर असफलता एक नई सीख है। यही सकारात्मक सोच और अनवरत परिश्रम सफलता की असली चाबी है।

गद्यांश 23

भारत की नदियाँ सदियों से इस देश की जीवन-रेखा रही हैं। गंगा, यमुना, सरस्वती और नर्मदा को हम माँ का दर्जा देते हैं। परंतु आज इन्हीं नदियों का अस्तित्व खतरे में है। कारखानों का विषाक्त कचरा, शहरों का मल-जल और धार्मिक अनुष्ठानों की सामग्री — ये सब मिलकर नदियों को प्रदूषित कर रहे हैं।

गंगा नदी की स्थिति विशेष रुप से चिंताजनक है। करोड़ों लोग इसके जल पर आश्रित हैं, परंतु इसका जल कई स्थानों पर पीने लायक नहीं रहा। 'नमामि गंगे' परियोजना के अंतर्गत सरकार ने गंगा की सफाई के लिए हजारों करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। सीवेज ट्रीटमेंट प्लांटों का निर्माण और उद्योगों पर नियंत्रण इस दिशा में उठाए गए महत्त्वपूर्ण कदम हैं।

नदियों के किनारे रहने वाले लोगों का स्वास्थ्य भी प्रदूषण से बुरी तरह प्रभावित है। दूषित जल पीने से पेट की बीमारियाँ, चर्म रोग और यहाँ तक कि कैंसर जैसी गंभीर बीमारियाँ भी हो रही हैं। जलीय जीव-जंतुओं की प्रजातियाँ विलुप्त हो रही हैं।

नदियों की रक्षा के लिए आवश्यक है कि उद्योग अपना कचरा नदियों में न डालें और जैव-अपघटनीय सामग्री का ही प्रयोग धार्मिक अनुष्ठानों में हो। जनजागृति और कड़े कानूनों का पालन मिलकर ही नदियों को बचा सकता है। नदियाँ जीवित रहेंगी, तभी सभ्यता जीवित रहेगी।

1. गद्यांश का उचित शीर्षक क्या होगा?
(क) गंगा नदी का इतिहास
(ख) नदी प्रदूषण: कारण और निवारण
(ग) जलीय जीवों का संकट
(घ) भारतीय सभ्यता और नदियाँ

2. **अभिकथन (A):** भारत सरकार द्वारा गंगा नदी की स्वच्छता और पुनर्उद्धार के लिए 'नमामि गंगे' नामक एक वृहद् परियोजना चलाई जा रही है।
   कारण (R): कारखानों के कचरे और मल-जल के कारण गंगा का पानी कई स्थानों पर इतना दूषित हो चुका है कि वह अब पीने योग्य भी नहीं रहा।
   (क) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या करता है।
   (ख) अभिकथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।
   (ग) अभिकथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
   (घ) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

3. नदियों के प्रदूषण से स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव बताया गया है?
   (क) केवल पेट की बीमारियाँ होती हैं
   (ख) पेट, चर्म रोग और कैंसर तक हो सकते हैं
   (ग) केवल जलीय जीवों को नुकसान होता है
   (घ) कोई स्वास्थ्य प्रभाव नहीं होता

4. नदियों को प्रदूषण से बचाने के लिए धार्मिक अनुष्ठानों में क्या परिवर्तन आवश्यक है?

5. गंगा नदी को बचाने के लिए सरकार ने क्या प्रयास किए हैं? गद्यांश के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तरः
1. (ख) नदी प्रदूषण: कारण और निवारण
2. (क) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या करता है।
3. (ख) पेट, चर्म रोग और कैंसर तक हो सकते हैं
4. धार्मिक अनुष्ठानों में केवल जैव-अपघटनीय सामग्री का प्रयोग होना चाहिए ताकि नदियों में प्रदूषण न फैले।
5. गंगा की सफाई के लिए सरकार ने 'नमामि गंगे' परियोजना चलाई है जिसमें हजारों करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। सीवेज ट्रीटमेंट प्लांटों का निर्माण किया गया है और उद्योगों पर नियंत्रण लगाया गया है। इसके अलावा जनजागृति अभियान और कड़े कानूनों का पालन सुनिश्चित किया जा रहा है।

गद्यांश 24

पुस्तकें मानव की सबसे अच्छी मित्र हैं। जब सभी साथी चले जाते हैं, पुस्तकें साथ रहती हैं; जब अंधकार छाता है, पुस्तकें ज्ञान का दीप जलाती हैं। अब्राहम लिंकन, महात्मा गांधी और डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर — ये सब महान पुस्तक-प्रेमी थे जिन्होंने पुस्तकों से ही अपना व्यक्तित्व निखारा।

पठन की आदत मनुष्य को एक साथ अनेक जीवन जीने का अनुभव देती है। एक अच्छी पुस्तक पढ़ने से हम किसी अन्य देश, काल और परिस्थिति में पहुँच जाते हैं। उपन्यास, कविता, इतिहास, विज्ञान, दर्शन — प्रत्येक विधा की पुस्तकें हमारे दृष्टिकोण को विस्तृत करती हैं और सोचने-समझने की क्षमता बढ़ाती हैं।

डिजिटल युग में ई-बुक्स और ऑडियोबुक्स ने पढ़ने को और सुलभ बनाया है। परंतु कागज की किताब का अपना आनंद अलग है — उसकी खुशबू, पन्नों की सरसराहट और हाशिये में लिखे नोट्स। पुस्तकालय संस्कृति का पुनरुद्धार आज की ज़रूरत है।

आज की पीढ़ी सोशल मीडिया और मोबाइल में इतनी उलझी है कि पुस्तक पढ़ने का समय ही नहीं मिलता। इससे एकाग्रता, गहन सोच और भाषा-कौशल कमज़ोर हो रहे हैं। माता-पिता और शिक्षकों को बच्चों में पठन की आदत विकसित करनी चाहिए। 'जो पढ़ता है, वह बढ़ता है' — यह सत्य आज भी अटल है।

1. गद्यांश का केंद्रीय भाव क्या है?
   (क) डिजिटल पुस्तकों की उपयोगिता
   (ख) पुस्तकों का महत्त्व और पठन की आदत
   (ग) पुस्तकालय की समस्याएँ
   (घ) अब्राहम लिंकन की जीवनी

2. लेखक के दृष्टिकोण को सबसे सटीक रूप से कौन-सा विकल्प व्यक्त करता है?
   (क) ई-बुक्स और इंटरनेट ही पढ़ने का सर्वोत्तम माध्यम हैं
   (ख) सोशल मीडिया पुस्तकों का विकल्प है
   (ग) पठन की आदत व्यक्तित्व और बुद्धि दोनों को निखारती है
   (घ) बच्चों को मोबाइल ही पढ़ाई का साधन बना लेना चाहिए

3. गद्यांश में किस महान पुस्तक-प्रेमी का उल्लेख नहीं है?
   (क) अब्राहम लिंकन (ख) महात्मा गांधी
   (ग) रवींद्रनाथ टैगोर (घ) डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर

4. अत्यधिक सोशल मीडिया उपयोग से पठन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

5. पुस्तकें पढ़ने से व्यक्ति को क्या-क्या लाभ होते हैं? गद्यांश के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तरः
1. (ख) पुस्तकों का महत्त्व और पठन की आदत
2. (ग) पठन की आदत व्यक्तित्व और बुद्धि दोनों को निखारती है
3. (ग) रवींद्रनाथ टैगोर
4. अत्यधिक सोशल मीडिया उपयोग से एकाग्रता, गहन सोच और भाषा-कौशल कमज़ोर होते हैं और पुस्तक पढ़ने का समय नहीं मिलता।
5. पुस्तकें पढ़ने से व्यक्ति को अनेक लाभ होते हैं। विभिन्न विषयों की किताबें दृष्टिकोण को विस्तृत करती हैं और सोचने-समझने की क्षमता बढ़ाती हैं। पठन से एकाग्रता,

भाषा-कौशल और व्यक्तित्व का विकास होता है। एक अच्छी पुस्तक पाठक को अलग-अलग युग, देश और परिस्थितियों का अनुभव कराती है, जिससे उसका संसार व्यापक बनता है।

गद्यांश 25

ग्लोबल वार्मिंग अर्थात् वैश्विक तापमान वृद्धि आज पृथ्वी के समक्ष सबसे बड़ा संकट है। वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड जैसी ग्रीनहाउस गैसों की बढ़ती मात्रा पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ा रही है। यदि यही स्थिति बनी रही, तो आने वाले दशकों में पृथ्वी के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न लग सकता है।

ग्लोबल वार्मिंग के परिणाम अत्यंत भयावह हैं। ध्रुवीय क्षेत्रों में बर्फ पिघल रही है जिससे समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है। समुद्र तटीय देशों और द्वीपों के डूबने का खतरा मंडरा रहा है। मालदीव जैसे देश इस खतरे से सबसे अधिक भयभीत हैं। बाढ़, सूखा, तूफान और चक्रवात की आवृत्ति और तीव्रता दोनों बढ़ गई हैं।

जीवाश्म ईंधन का अत्यधिक उपयोग, वनों की कटाई और औद्योगिक प्रदूषण ग्लोबल वार्मिंग के प्रमुख कारण हैं। 'पेरिस समझौते' में 190 से अधिक देशों ने वैश्विक तापमान को 1.5 डिग्री सेल्सियस से अधिक न बढ़ने देने का संकल्प लिया है।

नवीकरणीय ऊर्जा — जैसे सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और जल ऊर्जा — को अपनाना आज की सबसे बड़ी ज़रूरत है। वृक्षारोपण, कार्बन उत्सर्जन में कमी और ऊर्जा की बचत मिलकर ग्लोबल वार्मिंग के खतरे को कम कर सकते हैं। पृथ्वी को बचाना मानव जाति की सामूहिक जिम्मेदारी है।

1. गद्यांश का उचित शीर्षक क्या होगा?
(क) पेरिस समझौते का इतिहास
(ख) ग्लोबल वार्मिंग: खतरा और समाधान
(ग) मालदीव का भूत और भविष्य
(घ) नवीकरणीय ऊर्जा के प्रमुख स्रोत

2. **अभिकथन (A):** वायुमंडल में लगातार बढ़ती कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड जैसी गैसें वैश्विक तापमान को कम करने में सहायक हैं।
कारण (R): जीवाश्म ईंधन के अत्यधिक उपयोग और वनों की कटाई के कारण पर्यावरण में ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा तेज़ी से बढ़ रही है।
(क) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(ख) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
(ग) अभिकथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।
(घ) अभिकथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।

3. 'पेरिस समझौते' में किसने भाग लिया?
(क) केवल यूरोपीय देशों ने (ख) केवल जी-20 देशों ने
(ग) 190 से अधिक देशों ने (घ) केवल भारत और चीन ने

4. ग्लोबल वार्मिंग के प्रमुख कारण क्या हैं?

5. ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के लिए किन उपायों की आवश्यकता है? गद्यांश के आधार पर समझाइए।

उत्तरः
1. (ख) ग्लोबल वार्मिंग: खतरा और समाधान
2. (ग) अभिकथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।
3. (ग) 190 से अधिक देशों ने
4. जीवाश्म ईंधन का अत्यधिक उपयोग, वनों की कटाई और औद्योगिक प्रदूषण ग्लोबल वार्मिंग के प्रमुख कारण हैं।
5. ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के लिए सौर, पवन और जल जैसी नवीकरणीय ऊर्जा को अपनाना आवश्यक है। इसके साथ वृक्षारोपण करना, कार्बन उत्सर्जन कम करना और ऊर्जा की बचत करना भी महत्त्वपूर्ण है। 'पेरिस समझौते' जैसे अंतरराष्ट्रीय प्रयास भी ज़रूरी हैं। यह कार्य किसी एक देश का नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवजाति की सामूहिक जिम्मेदारी है।

गद्यांश 26

भारत एक बहुभाषी, बहुधर्मी और बहु-सांस्कृतिक समाज है। यहाँ की विविधता ही इसकी शक्ति है। परंतु जाति, धर्म और क्षेत्रीयता के आधार पर भेदभाव आज भी समाज को कमजोर कर रहा है। सामाजिक समरसता का अर्थ है — समाज के सभी वर्गों, जातियों और धर्मों में परस्पर सद्भाव, सहयोग और सम्मान का भाव।

डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने दलित समाज के उत्थान के लिए आजीवन संघर्ष किया। उन्होंने कहा — "जब तक समाज के सबसे कमज़ोर व्यक्ति को न्याय नहीं मिलता, तब तक समाज का विकास अधूरा है।" स्वामी विवेकानंद ने मानव-एकता का संदेश दिया और जाति-भेद को एक बाधा माना।

संविधान ने सभी नागरिकों को समानता, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय का अधिकार दिया है। अनुसूचित जाति और जनजाति के लिए आरक्षण की व्यवस्था सामाजिक समरसता स्थापित करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

सामाजिक समरसता की स्थापना के लिए शिक्षा सबसे प्रभावी माध्यम है। जब बच्चे एक साथ पढ़ते हैं, खेलते हैं और बड़े होते हैं, तो जाति और धर्म के भेद स्वतः कम होने लगते हैं। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' — अर्थात् सभी सुखी हों — यह भारतीय दर्शन का मूल सूत्र है जो सामाजिक समरसता की नींव है।

1. गद्यांश का केंद्रीय भाव क्या है?
   (क) जाति-प्रथा का इतिहास एवं वर्तमान
   (ख) सामाजिक समरसता की आवश्यकता
   (ग) संविधान की आधारभूत विशेषताएँ
   (घ) डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर की जीवनी

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. डॉ. अंबेडकर के अनुसार समाज का विकास तब तक अधूरा है, जब तक सबसे कमजोर व्यक्ति को न्याय न मिले।
   II. स्वामी विवेकानंद ने मानव-एकता का विरोध किया और जाति-भेद को समाज के लिए आवश्यक माना।
   III. भारतीय संविधान ने सभी नागरिकों को समानता, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय का अधिकार दिया है।
   IV. जब बच्चे एक साथ पढ़ते और खेलते हैं, तो जाति और धर्म के भेद अपने आप कम होने लगते हैं।

   सही विकल्प का चयन कीजिए
   (क) केवल I और II सही हैं
   (ख) केवल I, III और IV सही हैं
   (ग) केवल II, III और IV सही हैं
   (घ) सभी चारों (I, II, III और IV) सही हैं

3. 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का क्या अर्थ है?
   (क) सभी सुखी हों (ख) सभी वीर हों
   (ग) सभी शिक्षित हों (घ) सभी समृद्ध हों

4. शिक्षा सामाजिक समरसता लाने में किस प्रकार सहायक है?

5. सामाजिक समरसता की स्थापना के लिए क्या-क्या उपाय किए जा सकते हैं? गद्यांश के आधार पर उत्तर दीजिए।

   उत्तरः
   1. (ख) सामाजिक समरसता की आवश्यकता
   2. (ख) केवल I, III और IV सही हैं
   3. (क) सभी सुखी हों
   4. जब बच्चे एक साथ पढ़ते, खेलते और बड़े होते हैं, तो जाति और धर्म के भेद स्वतः कम होने लगते हैं और समरसता विकसित होती है।
   5. सामाजिक समरसता के लिए शिक्षा का प्रसार सबसे प्रभावी माध्यम है। संवैधानिक प्रावधानों जैसे समानता का अधिकार और आरक्षण की व्यवस्था से कमज़ोर वर्गों को न्याय मिलता है। जाति और धर्म के आधार पर भेदभाव को समाप्त करने के लिए सामूहिक सद्भाव, सहयोग और परस्पर सम्मान की भावना विकसित करनी होगी।

गद्यांश 27

प्राकृतिक आपदाएँ मानव जीवन के लिए सदा से एक बड़ी चुनौती रही हैं। भूकंप, बाढ़, सूखा, चक्रवात और भूस्खलन — ये आपदाएँ न केवल जान-माल को भारी नुकसान पहुँचाती हैं, बल्कि वर्षों की विकास-यात्रा को भी पल भर में नष्ट कर देती हैं। भारत भौगोलिक दृष्टि से आपदाओं के प्रति अत्यंत संवेदनशील देश है।

आपदा प्रबंधन का अर्थ है — आपदा से पहले, उसके दौरान और उसके बाद किए जाने वाले समन्वित प्रयास। पूर्व-चेतावनी प्रणाली, आपदा-प्रतिरोधी भवन निर्माण और लोगों को प्रशिक्षित करना — ये पूर्व-तैयारी के महत्त्वपूर्ण पहलू हैं। भारत में 'राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण' इस दिशा में कार्य करती है। 2001 के गुजरात भूकंप, 2004 की सुनामी और 2013 की उत्तराखंड आपदा ने यह सिखाया कि आपदाओं के प्रति सतर्क रहना और त्वरित प्रतिक्रिया देना कितना ज़रूरी है। इन आपदाओं के बाद भारत ने अपनी आपदा प्रबंधन प्रणाली को और सुदृढ़ किया।

आम नागरिकों को भी प्राथमिक चिकित्सा, निकासी मार्ग और आपदाकालीन संपर्क नंबरों की जानकारी होनी चाहिए। विद्यालयों में नियमित आपदा-मॉक ड्रिल आयोजित किए जाने चाहिए। एक जागरूक और प्रशिक्षित नागरिक आपदा के समय अनेक जीवन बचा सकता है। आपदा प्रबंधन में सामुदायिक भागीदारी सरकारी प्रयासों जितनी ही महत्त्वपूर्ण है।

1. गद्यांश का उचित शीर्षक क्या होगा?
   (क) गुजरात भूकंप का इतिहास
   (ख) आपदा प्रबंधन: तैयारी और सावधानी
   (ग) 'राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण' का गठन
   (घ) भारत की भौगोलिक स्थिति

2. लेखक के दृष्टिकोण को सबसे सटीक रूप से कौन-सा विकल्प व्यक्त करता है?
   (क) आपदाएँ रोकना असंभव है अतः तैयारी व्यर्थ है
   (ख) केवल सरकार ही आपदाओं से बचा सकती है
   (ग) नागरिक जागरूकता और सरकारी प्रयास मिलकर आपदा प्रबंधन में सफल होते हैं
   (घ) आपदा प्रबंधन केवल विशेषज्ञों का काम है

3. भारत में आपदा प्रबंधन के लिए कौन-सी संस्था कार्य करती है?
   (क) भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन
   (ख) राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण
   (ग) रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन
   (घ) राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक

4. आपदा प्रबंधन में पूर्व-तैयारी के कौन-से महत्त्वपूर्ण पहलू बताए गए हैं?

5. 2001 के गुजरात भूकंप और 2004 की सुनामी से भारत ने क्या सबक सीखा? गद्यांश के आधार पर उत्तर दीजिए।

   उत्तरः
   1. (ख) आपदा प्रबंधन: तैयारी और सावधानी
   2. (ग) नागरिक जागरूकता और सरकारी प्रयास मिलकर आपदा प्रबंधन में सफल होते हैं

3. (ख) राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण
4. पूर्व-चेतावनी प्रणाली, आपदा-प्रतिरोधी भवन निर्माण और लोगों को प्रशिक्षित करना पूर्व-तैयारी के महत्त्वपूर्ण पहलू हैं।
5. इन आपदाओं से भारत ने यह सीखा कि आपदाओं के प्रति सतर्क रहना और त्वरित प्रतिक्रिया देना अत्यंत आवश्यक है। इन घटनाओं के बाद भारत ने अपनी आपदा प्रबंधन प्रणाली को सुदृढ़ किया। 'राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण' की स्थापना, मॉक ड्रिल और नागरिकों को प्राथमिक चिकित्सा का प्रशिक्षण देना इसी सबक का परिणाम है।

गद्यांश 28

उपभोक्तावाद की संस्कृति आज के समाज की एक प्रमुख विशेषता बन गई है। विज्ञापन, सोशल मीडिया और मॉल की चकाचौंध ने मनुष्य को एक ऐसा प्राणी बना दिया है जो सदा खरीदते रहने में ही संतुष्टि खोजता है। 'जितना अधिक खरीदो, उतने अधिक सुखी' — यह भ्रम आधुनिक विपणन की देन है।

उपभोक्तावाद का पर्यावरण पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अधिक उत्पादन के लिए अधिक संसाधनों का दोहन होता है और अधिक कचरा उत्पन्न होता है। 'फास्ट फैशन' उद्योग हर वर्ष लाखों टन कपड़े बर्बाद करता है। प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग समुद्रों और मिट्टी को प्रदूषित कर रहा है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी उपभोक्तावाद हानिकारक है। नई वस्तुएँ खरीदने से क्षणिक सुख मिलता है, परंतु स्थायी तृप्ति नहीं। लोग ऋण लेकर महँगी चीजें खरीदते हैं और बाद में आर्थिक तनाव का शिकार होते हैं। भौतिक संपदा से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं — स्वास्थ्य, रिश्ते और मानसिक शांति।

'सादा जीवन उच्च विचार' — यह भारतीय दर्शन का सूत्र आज भी प्रासंगिक है। ज़रूरत और लालसा में अंतर समझना आवश्यक है। उपभोग को सीमित करना, पुनरुपयोग और पुनर्चक्रण को अपनाना — ये आदतें न केवल व्यक्ति के जीवन को संतुलित बनाती हैं, बल्कि पर्यावरण की रक्षा में भी सहायक हैं।

1. गद्यांश का उचित शीर्षक क्या होगा?
   (क) आधुनिक विज्ञापन: लाभ और हानि
   (ख) उपभोक्तावाद: समस्या और समाधान
   (ग) बदलता फैशन और कपड़ा उद्योग
   (घ) पर्यावरण और कचरा प्रबंधन

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए —
   I. उपभोक्तावाद से पर्यावरण पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है।
   II. अत्यधिक खरीदारी से स्थायी मानसिक तृप्ति मिलती है।

   सही विकल्प चुनिए:
   (क) दोनों कथन सही हैं
   (ख) कथन I सही, कथन II गलत है
   (ग) कथन I गलत, कथन II सही है
   (घ) दोनों कथन गलत हैं

3. 'फास्ट फैशन' उद्योग पर्यावरण को किस प्रकार नुकसान पहुँचाता है?
   (क) अधिक जल का उपयोग करके
   (ख) लाखों टन कपड़े बर्बाद करके
   (ग) अधिक बिजली की खपत करके
   (घ) अधिक से अधिक पेड़ काटकर

4. उपभोक्तावाद का मानसिक स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है?

5. लेखक ने 'सादा जीवन उच्च विचार' के संदर्भ में क्या संदेश दिया है?

उत्तर:

1. (ख) उपभोक्तावाद: समस्या और समाधान
2. (ख) कथन I सही, कथन II गलत है
3. (ख) लाखों टन कपड़े बर्बाद करके
4. अधिक खरीदारी से क्षणिक सुख मिलता है पर स्थायी तृप्ति नहीं; ऋण लेकर खरीदारी करने से बाद में आर्थिक तनाव होता है।
5. लेखक ने यह संदेश दिया है कि ज़रुरत और लालसा में अंतर पहचानना ज़रूरी है। उपभोग को सीमित रखना, पुनरुपयोग और पुनर्चक्रण को अपनाना व्यक्ति के जीवन को संतुलित बनाता है और पर्यावरण की रक्षा में भी सहायक होता है। भौतिक संपदा से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं स्वास्थ्य, रिश्ते और मानसिक शांति।

गद्यांश 29

अंतरिक्ष — यह शब्द सुनते ही मन में असीमितता, रहस्य और जिज्ञासा का भाव उठता है। मानव जाति सदा से आकाश को देखकर उसके रहस्यों को समझने की कोशिश करती रही है। आज अंतरिक्ष विज्ञान ने इतनी प्रगति कर ली है कि मनुष्य न केवल चाँद पर पहुँच चुका है, बल्कि मंगल ग्रह पर भी अपने यान भेज चुका है।

भारत के लिए अंतरिक्ष विज्ञान का क्षेत्र विशेष गर्व का विषय है। 'इसरो' (भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन) ने अनेक ऐतिहासिक उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। 2008 में 'चंद्रयान-1' ने चाँद पर पानी की उपस्थिति के साक्ष्य खोजे। 2014 में 'मंगलयान' ने पहले ही प्रयास में मंगल की कक्षा में प्रवेश कर एक विश्व रिकॉर्ड स्थापित किया। 2023 में 'चंद्रयान-3' के चाँद के दक्षिणी ध्रुव पर सफल लैंडिंग ने भारत को यह उपलब्धि प्राप्त करने वाला पहला देश बना दिया। इस सफलता ने पूरे विश्व में भारत की वैज्ञानिक प्रतिष्ठा को नई ऊँचाई दी।

अंतरिक्ष अनुसंधान केवल खोज तक सीमित नहीं है। उपग्रहों से मौसम की भविष्यवाणी, टेलीकॉम सेवाएँ, कृषि निगरानी और रक्षा प्रणाली — सभी में उपग्रह तकनीक का उपयोग होता है। अंतरिक्ष विज्ञान में करियर बनाने के इच्छुक युवाओं के लिए भारत में अनेक अवसर हैं। वैज्ञानिक डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम कहा करते थे — "सपने वो नहीं जो नींद में आएँ, सपने वो हैं जो सोने न दें।"

1. गद्यांश का उचित शीर्षक क्या होगा?
(क) भारत का अंतरिक्ष अभियान
(ख) डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम की जीवनी
(ग) मंगल ग्रह का रहस्य
(घ) उपग्रह और संचार

2. **अभिकथन (A):** वर्ष 2023 में चंद्रयान-3 मिशन की चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर हुई सफल लैंडिंग ने वैश्विक स्तर पर भारत की वैज्ञानिक साख और प्रतिष्ठा को एक नई ऊँचाई दी है।
कारण (R): चंद्रमा के इस अत्यंत दुर्गम और रहस्यमयी दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र पर कदम रखने और वहाँ सफल लैंडिंग करने वाला भारत दुनिया का पहला देश बना है।
(क) अभिकथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(ख) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(ग) अभिकथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।
(घ) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।

3. मंगलयान ने क्या विशेष उपलब्धि अर्जित की?
(क) मंगल ग्रह पर पानी की खोज करने में सफलता पाई
(ख) मंगल ग्रह से चट्टानों के नमूने लेकर आया
(ग) मंगल ग्रह की सतह पर सफलतापूर्वक यान उतारा
(घ) पहले ही प्रयास में मंगल की कक्षा में पहुँचा

4. अंतरिक्ष तकनीक का दैनिक जीवन में क्या उपयोग होता है?

5. इसरो की उपलब्धियों ने भारत की किस प्रकार मदद की है? गद्यांश के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तरः
1. (क) भारत का अंतरिक्ष अभियान
2. (ख) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या करता है
3. (घ) पहले ही प्रयास में मंगल की कक्षा में पहुँचा
4. उपग्रहों से मौसम की भविष्यवाणी, टेलीकॉम सेवाएँ, कृषि निगरानी और रक्षा प्रणाली में अंतरिक्ष तकनीक का उपयोग होता है।
5. इसरो की उपलब्धियों ने भारत को अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक मंच पर प्रतिष्ठित किया है। चंद्रयान-1 द्वारा चाँद पर पानी की खोज, मंगलयान का पहले ही प्रयास में सफल होना और चंद्रयान-3 की ऐतिहासिक लैंडिंग ने भारत की वैज्ञानिक क्षमता को सिद्ध किया है। उपग्रह तकनीक से देश के मौसम, कृषि और संचार क्षेत्र को भी बड़ा लाभ मिला है।

गद्यांश 30

युवाशक्ति किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी पूँजी है। भारत विश्व का सबसे युवा देश है जहाँ 65 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु की है। यह जनसांख्यिकीय लाभांश भारत को एक असाधारण अवसर प्रदान करता है — यदि इस ऊर्जा को सही दिशा में लगाया जाए।

नेतृत्व केवल राजनीति तक सीमित नहीं है। एक अच्छा शिक्षक, एक सफल उद्यमी, एक प्रेरणादायक खिलाड़ी — सभी अपने क्षेत्र में नेता होते हैं। नेतृत्व का अर्थ है — दूसरों को प्रेरित करना, जिम्मेदारी लेना, सही निर्णय लेना और मुश्किल समय में भी दृढ़ रहना।

स्वामी विवेकानंद ने युवाओं से कहा था — "उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए।" भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु जैसे युवाओं ने अपने साहस और बलिदान से इतिहास रचा।

आज के युवा नेताओं के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं — पर्यावरण संकट, बेरोजगारी, तकनीकी परिवर्तन और सामाजिक असमानता। परंतु इन चुनौतियों में ही अवसर भी छुपे हैं। सोशल मीडिया ने युवाओं को एक शक्तिशाली मंच दिया है। जागरुक, शिक्षित और नैतिक युवा नेतृत्व ही भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का मार्ग है। युवाओं का आज का संकल्प ही भारत के कल का निर्माण करेगा।

1. गद्यांश का केंद्रीय भाव क्या है?
(क) भारत की जनसंख्या समस्या
(ख) युवाशक्ति और राष्ट्रीय नेतृत्व
(ग) स्वामी विवेकानंद का जीवन
(घ) सोशल मीडिया का उपयोग

2. लेखक के दृष्टिकोण को सबसे सटीक रूप से कौन-सा विकल्प व्यक्त करता है?
(क) युवा केवल देश की राजनीति में ही नेतृत्व कर सकते हैं
(ख) भारत की घटती युवा और कार्यशील जनसंख्या एक बड़ी समस्या है
(ग) शिक्षित और नैतिक युवा ही भारत को विकसित बना सकते हैं
(घ) सोशल मीडिया युवाओं के लिए हानिकारक है

3. स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को क्या संदेश दिया था?
(क) सदा शांत रहो
(ख) उठो, जागो, लक्ष्य प्राप्त करो
(ग) केवल परमात्मा का ध्यान करो
(घ) देश छोड़कर मत जाओ

4. भारत को 'सबसे युवा देश' क्यों कहा जाता है?

5. आज के युवा नेताओं के सामने कौन-सी चुनौतियाँ हैं और वे इनसे कैसे पार पा सकते हैं?

उत्तरः

1. (ख) युवाशक्ति और राष्ट्रीय नेतृत्व
2. (ग) शिक्षित और नैतिक युवा ही भारत को विकसित बना सकते हैं
3. (ख) उठो, जागो, लक्ष्य प्राप्त करो
4. भारत में 65 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु की है, इसीलिए भारत को विश्व का सबसे युवा देश कहा जाता है।
5. आज युवा नेताओं के सामने पर्यावरण संकट, बेरोजगारी, तकनीकी परिवर्तन और सामाजिक असमानता जैसी चुनौतियाँ हैं। परंतु इन चुनौतियों में भी अवसर छुपे हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से जन-जागृति फैलाना, उद्यमशीलता को अपनाना और शिक्षित व नैतिक नागरिक बनकर नेतृत्व करना — ये उपाय युवाओं को सफल बना सकते हैं।

अध्याय 2

अपठित काव्यांश

काव्यांश 1

उठो धरा के अमर सपूतो,
पुनः नई पहचान बनाओ,
सोई हुई शक्ति को जागृत,
जीवन का संगीत सुनाओ।
नदियाँ कलकल गीत सुनाती,
पर्वत ऊँचे मान सिखाते,
वृक्ष झुके फल देते सबको,
यही प्रकृति के भाव बताते।
प्रातःकाल की स्वर्णिम लाली,
धरती को नव-जीवन देती,
पुष्पों की सुगंध दिशाओं में,
मन को सुख की राह दिखाती।
बादल गरजे, बिजली चमके,
धरती पर अमृत बरसाते,
प्रकृति के इस विराट रुप में,
ईश्वर के दर्शन हो जाते।
पंछी गाते मुक्त गगन में,
नभ को अपना घर बनाते,
इस सुंदर सृष्टि के आँगन में,
जीवन के रंग बिखराते।
मत भूलो इस धरा की माया,
माता सम यह पालनहारी,
इसकी रक्षा करना होगी,
यही हमारी जिम्मेदारी।

1. काव्यांश का केंद्रीय भाव क्या है?
   (क) प्रकृति से जीवन-प्रेरणा लेना
   (ख) ईश्वर की उपासना करना
   (ग) बादल और वर्षा का वर्णन
   (घ) पंछियों का गुणगान करना

2. **अभिकथन (A):** प्रकृति हमें निस्वार्थ भाव सिखाती है।
   कारण (R): वृक्ष झुककर फल देते हैं और नदियाँ बिना रुके बहती रहती हैं।
   (क) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
   (ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
   (ग) A सही है परंतु R गलत है
   (घ) A गलत है परंतु R सही है

3. नीचे दिए गए कथनों पर विचार कीजिए:
   I. पर्वत ऊँचाई का प्रतीक हैं।
   II. पुष्प सुगंध से दिशाओं को सुवासित करते हैं।
   III. बादल धरती पर जल देते हैं।
   IV. काव्यांश में ईश्वर-दर्शन की बात है।
   इनमें से कौन-से कथन सही हैं?
   (क) केवल I और II सही हैं
   (ख) केवल II और III सही हैं
   (ग) केवल I, II और III सही हैं
   (घ) सभी कथन सही हैं

4. प्रकृति को 'माता' क्यों कहा गया है?

5. काव्यांश में कवि ने प्रकृति के किन-किन रूपों का चित्रण किया है और उनसे क्या प्रेरणा ली जा सकती है?

उत्तरः

1. (क) प्रकृति से जीवन-प्रेरणा लेना
2. (क) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
3. (घ) सभी कथन सही हैं
4. प्रकृति माता के समान हमारा पालन-पोषण करती है और जीवन के लिए आवश्यक सभी तत्व प्रदान करती है।
5. कवि ने नदी, पर्वत, वृक्ष, पुष्प, बादल और पंछी जैसे प्रकृति के विविध रूपों का चित्रण किया है। नदी से निरंतरता, पर्वत से दृढ़ता, वृक्ष से निस्वार्थ सेवा और पंछी से स्वतंत्र जीवन की प्रेरणा मिलती है। कवि का संदेश है कि प्रकृति की रक्षा हमारा कर्तव्य है।

काव्यांश 2

मेरे देश की मिट्टी सोना,
इसकी खुशबू से मन भरता,
गंगा-यमुना की धाराओं में,
जीवन का संचार उभरता।
हिमालय से कन्याकुमारी तक,
भारत एक कहानी है,

अनेकता में एकता लेकर,
यह अपनी पहचानी है।
शहीदों के बलिदान से सींचा,
यह पावन भूमि का कण-कण,
माँ भारती के चरणों में हम,
अर्पित करें अपना जीवन।
सरहद पर जो वीर खड़े हैं,
उनकी गाथा अमर रहेगी,
उनके त्याग और बलिदान की,
यह धरती ऋणी सदा रहेगी।
विविध संस्कृति, धर्म और भाषा,
फिर भी एक तिरंगा प्यारा,
इस तिरंगे की शान बचाना,
यही हमारा नारा।
जब तक चाँद सितारे रहेंगे,
भारत का नाम चमकेगा,
देशप्रेम की इस ज्वाला में,
हर दिल का प्यार दमकेगा।

1. काव्यांश का मुख्य विषय क्या है?
(क) शहीदों का आदर और स्मरण
(ख) देश की एकता और गौरव
(ग) गंगा-यमुना की महिमा
(घ) हिमालय का वर्णन

2. काव्यांश में कवि का मूल संदेश/दृष्टिकोण क्या है?
(क) देश की विविधता में एकता है और हमें इसे बनाए रखना चाहिए।
(ख) शहीदों को श्रद्धांजलि देना ही देशभक्ति का सर्वोच्च रूप है।
(ग) हिमालय और नदियाँ भारत की पहचान हैं।
(घ) तिरंगे की रक्षा केवल सैनिकों का कर्तव्य है।

3. काव्यांश के अनुसार भारत की पहचान किसमें है?
(क) केवल भाषा में (ख) अनेकता में एकता में
(ग) शहीदों के बलिदान में (घ) गंगा-यमुना में

4. 'माँ भारती के चरणों में जीवन अर्पित करने' से क्या आशय है?

5. शहीदों के प्रति कवि की क्या भावना है और वे देश के लिए क्या संदेश देते हैं?

उत्तरः
1. (ख) देश की एकता और गौरव
2. (क) देश की विविधता में एकता है और हमें इसे बनाए रखना चाहिए।
3. (ख) अनेकता में एकता में
4. इसका आशय है कि हमें अपना सम्पूर्ण जीवन देश की सेवा, रक्षा और उन्नति के लिए समर्पित कर देना चाहिए।
5. कवि ने शहीदों के प्रति कृतज्ञता और श्रद्धा की भावना व्यक्त की है। उनका मानना है कि सरहद पर खड़े वीरों का त्याग अमर है और यह धरती सदा उनकी ऋणी रहेगी। उनका संदेश है कि देशप्रेम की भावना से हर हृदय जगमगाता रहे।

काव्यांश 3

जो राह कठिन हो, चलते रहो, मंजिल मिलेगी एक दिन,
पत्थर भी घिस जाते हैं जब, पानी बहता है निरंतर बिन।
गिरना और उठना ही जीवन, यह सच्चाई जान लो भाई,
जो गिरकर उठ जाता है वह, लिखता इतिहास नई लड़ाई।
अँधेरा कितना भी घना हो, सूरज उगता है हर भोर,
निराशा के बादल छटते हैं, आती आशा की नई भोर।
हार मत मानो जिंदगी में, एक बार और प्रयास करो,
बीज जो बोए हैं तुमने, उनका फल पाने की आस धरो।
समुद्र की लहरें बाधा बनती, पर नाविक पार चला जाता,
तूफानों से लड़ना सीखो, यही जीवन का सच बताता।
थकान और दर्द को झेलो, यह सफलता की कीमत है,
जो संघर्ष से जी न डरे, उसी के हाथ नेमत है।

1. काव्यांश का केंद्रीय संदेश क्या है?
(क) निरंतर प्रयास से सफलता मिलती है
(ख) समुद्र से डरकर घर बैठ जाना चाहिए
(ग) हार मानने में ही असली समझदारी है
(घ) भाग्य पर भरोसा करना चाहिए

2. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म काव्यांश के अनुसार सही है?
(क) पानी — निरंतरता का प्रतीक
(ख) अँधेरा — सफलता का प्रतीक
(ग) बीज — निराशा का प्रतीक
(घ) लहरें — प्रेरणा का स्रोत

3. काव्यांश में नाविक किसका प्रतीक है?
(क) कायर व्यक्ति का (ख) संघर्षशील व्यक्ति का
(ग) भाग्यवादी व्यक्ति का (घ) लालची व्यक्ति का

4. 'पत्थर भी घिस जाते हैं' — इस पंक्ति से क्या शिक्षा मिलती है?

5. काव्यांश में जीवन के संघर्ष को किन-किन उदाहरणों से समझाया गया है? किन्हीं दो का विस्तार करें।

उत्तरः
1. (क) निरंतर प्रयास से सफलता मिलती है
2. (क) पानी — निरंतरता का प्रतीक
3. (ख) संघर्षशील व्यक्ति का
4. इस पंक्ति से शिक्षा मिलती है कि निरंतर प्रयास से बड़ी से बड़ी बाधा भी दूर हो जाती है और सफलता अवश्य मिलती है।

5. कवि ने पानी और पत्थर के उदाहरण से निरंतरता की शक्ति और नाविक के उदाहरण से विपरीत परिस्थितियों में साहस का चित्रण किया है। पानी निरंतर बहने से कठोर पत्थर को भी घिस देता है और नाविक तूफानों से लड़कर मंजिल पाता है। ये दोनों उदाहरण हमें जीवन में संघर्ष के प्रति दृढ़ बने रहने की प्रेरणा देते हैं।

काव्यांश 4

मनुष्य वही जो मनुष्य के काम आए,
दीन-दुखियों के आँसू पोंछे, दर्द बाँट जाए।
धर्म, जाति के बंधन तोड़कर, सबसे प्रेम लगाए,
वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश, जन-जन को सुनाए।
जो दूसरों के दुख में रोए, वही सच्चा इंसान है,
जो अपनों तक सीमित रहे, वह पशु समान है।
करुणा को अपनाओ दिल में, घृणा को दूर भगाओ,
इस धरती पर स्वर्ग बनाओ, प्रेम का दीप जलाओ।
भूखे को रोटी दे देना, यही सच्ची पूजा है,
नेकी का रास्ता चुनना, यही सबसे बड़ी खुशी है।
ऊँच-नीच का भेद मिटाकर, एकता की राह चलो,
मानवता की इस परिभाषा को, अपने जीवन में ढलो।

1. कवि के अनुसार सच्चा मनुष्य कौन है?
(क) जो पूजा-पाठ करता है
(ख) जो दूसरों के दुख में काम आए
(ग) जो धनवान और बलवान हो
(घ) जो केवल अपनों से प्रेम करे

2. नीचे दिए गए कथनों पर विचार कीजिए

I. भूखे को रोटी देना सच्ची पूजा है।

II. धर्म और जाति के आधार पर प्रेम करना चाहिए।

III. वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश सबको देना चाहिए।

IV. दूसरों के दुख में रोने वाला ही सच्चा इंसान है।
इनमें से कौन-से कथन सही हैं?
(क) केवल I सही है
(ख) केवल I और II सही हैं
(ग) केवल I, III और IV सही हैं
(घ) सभी कथन सही हैं

3. काव्यांश में 'पशु समान' किसे कहा गया है?
(क) जो जंगल में पशुओं के साथ रहता है
(ख) जो दूसरों की सहायता न करे
(ग) जो धर्म न माने
(घ) जो कमजोर हो

4. 'वसुधैव कुटुम्बकम्' — इस भाव को कवि ने काव्यांश में कैसे व्यक्त किया है?

5. करुणा और मानवता के संदर्भ में कवि ने क्या-क्या संदेश दिए हैं? उनका मूल्यांकन कीजिए।

उत्तरः
1. (ख) जो दूसरों के दुख में काम आए
2. (ग) केवल I, III और IV सही हैं
3. (ख) जो दूसरों की सहायता न करे
4. कवि ने धर्म-जाति के भेद त्याग कर सबसे प्रेम करने और सम्पूर्ण पृथ्वी को एक परिवार मानने के भाव से इसे व्यक्त किया है।
5. कवि ने करुणा को अपनाने, घृणा को त्यागने, भूखे को भोजन देने और ऊँच-नीच का भेद मिटाने जैसे संदेश दिए हैं। ये संदेश आज के समाज में अत्यंत प्रासंगिक हैं क्योंकि धर्म-जाति के भेदभाव से समाज कमजोर होता है। प्रेम और करुणा ही मनुष्य को पशु से अलग करते हैं।

काव्यांश 5

समय बड़ा अनमोल है भाई, इसे व्यर्थ न गँवाओ,
जो पल बीत गए लौटेंगे नहीं, यह सच मन में बसाओ।
सूरज रोज उगता है नया, पर दिन एक ही होता,
जो इसका सदुपयोग न करे, वह जीवन में पछताता।
आलस्य को दूर भगाओ तुम, उद्यम को अपनाओ,
समय की लहर पर सवार होकर, सफलता को पाओ।
किसान खेत जोते भोर में, तब फसल लहराती है,
परिश्रमी के घर समृद्धि की, धन-धान्य की बरसात होती है।
विद्यार्थी जो मन लगाकर पढ़े, विद्या पाता है,
समय रहते जो जाग जाए, उसी का भाग्य बन जाता है।
क्षण-क्षण का हिसाब रखो तुम, टाल-मटोल छोड़ो,
जीवन के इस मूल्यवान धन को, व्यर्थ में मत तोड़ो।

1. 'अनमोल धन' किसे कहा गया है?
(क) समय को (ख) सोने को
(ग) विद्या को (घ) परिश्रम को

2. **अभिकथन (A):** समय का सदुपयोग करने से जीवन में सफलता मिलती है।
कारण (R): किसान भोर में खेत जोतता है और विद्यार्थी मन लगाकर पढ़ता है।
(क) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है

3. आलस्य के विषय में कवि का क्या मत है?
(क) इसे प्रोत्साहित करना चाहिए
(ख) इसे दूर भगाना चाहिए
(ग) यह उन्नति का मार्ग है
(घ) यह जीवन में जरुरी है

4. काव्यांश में किसान और विद्यार्थी के उदाहरण क्यों दिए गए हैं?

5. कवि ने समय के महत्त्व को किस प्रकार समझाया है? इसका आपके जीवन में क्या उपयोग है?

उत्तरः
1. (क) समय को
2. (क) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
3. (ख) इसे दूर भगाना चाहिए
4. किसान और विद्यार्थी के उदाहरण यह बताने के लिए दिए गए हैं कि समय पर किया गया परिश्रम सफलता और समृद्धि लाता है।
5. कवि ने समय को अनमोल धन बताया है और कहा है कि बीता हुआ समय वापस नहीं आता। किसान और विद्यार्थी के उदाहरण से यह सिद्ध किया है कि समय का सदुपयोग ही सफलता का मार्ग है। हमें आलस्य छोड़कर हर पल का सदुपयोग करना चाहिए।

काव्यांश 6

बचपन के वे दिन सुनहरे, अब केवल यादें रह गईं,
माँ की लोरी, दादी की कहानी, अब किताबों में सिमट गईं।
खेत-खलिहान की वह मिट्टी, आँगन की वह धूप अनोखी,
नानी के घर की छुट्टियाँ, अब लगती हैं बड़ी भोली।
कागज की नाव बनाकर जब, बारिश में खेलते थे,
दोस्तों संग हँसते-खेलते, दुनिया भूल जाते थे।
तितली पकड़ने की चाहत थी, फूलों से थी यारी,
पेड़ पर चढ़ना, पतंग उड़ाना, वह थी खुशियों की बारी।
माँ की डाँट भी प्यारी लगती, पिता की गोद में सोना,
वह बचपन का निश्छल प्यार, अब है बस एक खजाना।
लौट नहीं सकते वे पल, पर याद में जीते रहते,
बचपन की मीठी यादें, मन को सुकून देते रहते।

1. काव्यांश में कवि किसके प्रति भाव व्यक्त कर रहा है?
(क) बचपन की स्मृतियों के प्रति
(ख) माँ की ममता के प्रति
(ग) प्रकृति के सौंदर्य के प्रति
(घ) दोस्ती के महत्त्व के प्रति

2. काव्यांश में कवि का मूल संदेश/दृष्टिकोण क्या है?
(क) बचपन के अनुभव अमूल्य होते हैं और स्मृतियाँ जीवन को सुकून देती हैं।
(ख) माँ-पिता की डाँट बच्चों को सुधारती है।
(ग) खेल-कूद में समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।
(घ) शहर की जिंदगी गाँव से बेहतर होती है।

3. बारिश में कागज की नाव बनाना किसका प्रतीक है?
(क) बचपन के बड़े सपनों का
(ख) बचपन की निश्छल खुशियों का
(ग) बचपन के व्यर्थ के कार्यों का
(घ) बचपन में समय की बर्बादी का

4. कवि ने बचपन को 'खजाना' क्यों कहा है?

5. काव्यांश में वर्णित बचपन की यादों का मनोवैज्ञानिक महत्त्व क्या है?

उत्तरः
1. (क) बचपन की स्मृतियों के प्रति
2. (क) बचपन के अनुभव अमूल्य होते हैं और स्मृतियाँ जीवन को सुकून देती हैं।
3. (ख) बचपन की निश्छल खुशियों का
4. कवि ने बचपन को खजाना इसलिए कहा है क्योंकि उसकी यादें निश्छल, प्यार भरी और अनमोल होती हैं जो मन को सदा सुकून देती हैं।
5. बचपन की यादें मनुष्य के मन को सुकून और सकारात्मकता देती हैं। माँ की लोरी, दादी की कहानियाँ और दोस्तों के साथ खेलना — ये सभी अनुभव मनुष्य के व्यक्तित्व का आधार बनते हैं। ये यादें जीवन के कठिन समय में मानसिक शक्ति का स्रोत बनती हैं।

काव्यांश 7

श्रम ही मनुष्य का सच्चा गहना,
श्रम से ही पहचान बनती,
बिना परिश्रम के जो जीते,
उनकी कोई कहान नहीं बनती।
हाथों की छाले, पसीने की बूँदें,
यही असली आभूषण हैं,
मेहनत से उगाया अन्न जो,
वह अमृत के समतुल्य है।
भवन बनाने वाले मजदूर,
राहें बनाने वाले श्रमिक,
इनके बिना न हो कोई निर्माण,
ये हैं समाज के नायक।
खेतों में झुककर काम करे जो,
वह धरती का पुत्र कहलाए,
अपने पसीने से धरती सींचे,
और दुनिया को भोजन दिलाए।
आलसी मनुष्य भार है धरती पर,
परिश्रमी है उसका गहना,
श्रमिक के हाथों की ताकत से,
बनते हैं महल और नगर नहना।
तो श्रम को अपना धर्म बनाओ,
काम से कभी न डरना,
श्रम की इस पूजा में ही जीवन का,
सच्चा सार है मिलना।

1. 'असली आभूषण' किसे कहा गया है?
(क) हाथों के छाले-पसीना (ख) सोने के गहने
(ग) विद्या और ज्ञान (घ) धन और संपत्ति

2. **अभिकथन (A):** परिश्रम ही मनुष्य का सच्चा गहना है।
कारण (R): हाथों के छाले और पसीना मेहनत के प्रमाण हैं जो समाज का निर्माण करते हैं।
(क) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है

3. नीचे दिए गए कथनों पर विचार कीजिए:
I. मजदूर और श्रमिक समाज के नायक हैं।
II. आलसी मनुष्य धरती के लिए भार है।
III. श्रम से पहचान बनती है।
IV. बिना श्रम के भी जीवन में सफलता मिल सकती है।
इनमें से कौन-से कथन सही हैं?
(क) केवल I और II सही हैं
(ख) केवल II और III सही हैं
(ग) केवल I, II और III सही हैं
(घ) सभी कथन सही हैं

4. किसान को 'धरती का पुत्र' क्यों कहा गया है?

5. कवि ने श्रमिकों और मजदूरों को 'समाज के नायक' क्यों कहा है? इस दृष्टि से आज के समाज में उनकी स्थिति का विश्लेषण करें।

उत्तरः
1. (क) हाथों के छाले-पसीना
2. (क) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
3. (ग) केवल I, II और III सही हैं
4. किसान धरती पर खेती करके अपने पसीने से उसे सींचता है और दुनिया को भोजन देता है, इसलिए उसे धरती का पुत्र कहा गया है।
5. कवि के अनुसार मजदूर और श्रमिक ही भवन, सड़कें और समाज का निर्माण करते हैं। उनके बिना कोई निर्माण संभव नहीं। परंतु आज के समाज में उनकी स्थिति दयनीय है — उचित मजदूरी, सुरक्षा और सम्मान का अभाव है। उनके योगदान को पहचानकर उन्हें सम्मान और उचित अधिकार देना हमारा कर्तव्य है।

काव्यांश 8

नारी तू शक्ति की देवी है,
तू ही जग की आधारशिला,
तेरे बिना अधूरा है यह संसार,
तू ही सृष्टि की पहली कड़ी।
माँ बनकर जीवन देती है,
बहन बनकर राह दिखाती,
पत्नी बनकर घर बसाती है,
बेटी बनकर मन हर्षाती।
झाँसी की रानी बनकर लड़ी,
मीरा बनकर भक्ति की,
कल्पना चावला आकाश छुई,
सावित्री ने ज्ञान की ज्योति जली।
पर आज भी कहीं-कहीं उसे,
बंधनों में जकड़ा जाता,
अबला कहकर उसे कमजोर,
समझदारी से नकारा जाता।
जागो नारी, अपनी शक्ति को,
पहचानो और अपनाओ,
समाज की बेड़ियाँ तोड़कर,
ऊँची उड़ान भरो और दिखलाओ।
नारी है तो सृष्टि है यह,
नारी बिना सब सूना,
उसे सम्मान दो, अधिकार दो,
यही समाज का धर्म है पूरा।

1. नारी की तुलना किससे की गई है?
(क) शक्ति की देवी से
(ख) झाँसी की रानी से
(ग) कल्पना चावला से
(घ) मीरा से

2. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म काव्यांश के अनुसार सही है?
(क) झाँसी की रानी — वीरता का प्रतीक
(ख) मीरा — विज्ञान का प्रतीक
(ग) कल्पना चावला — भक्ति का प्रतीक
(घ) सावित्री — युद्ध का प्रतीक

3. कवि के अनुसार नारी को क्या करना चाहिए?
(क) घर में रहना चाहिए
(ख) बंधनों को तोड़ना चाहिए
(ग) केवल माँ का धर्म निभाना चाहिए
(घ) समाज से दूर रहना चाहिए

4. काव्यांश में 'अबला' शब्द का प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है?

5. काव्यांश में नारी के विविध रूपों का उल्लेख है। इन रूपों से समाज में उसके महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तरः
1. (क) शक्ति की देवी से
2. (क) झाँसी की रानी — वीरता का प्रतीक
3. (ख) बंधनों को तोड़ना चाहिए
4. 'अबला' शब्द का प्रयोग उस सोच के विरुद्ध किया गया है जो नारी को कमजोर मानती है; कवि इस धारणा का खंडन करता है।

5. कवि ने नारी को माँ, बहन, पत्नी और बेटी के रूप में दिखाया है। वह जीवन देती है, राह दिखाती है, घर बसाती है और मन को प्रसन्न करती है। ऐतिहासिक महिलाओं के उदाहरण से यह सिद्ध है कि नारी में असीम शक्ति है। समाज को उसे समान सम्मान और अधिकार देने चाहिए।

काव्यांश 9

विद्या वह धन है जो बाँटने से, बढ़ता ही जाता है,
अज्ञान के अंधकार में, ज्ञान का दीप जलाता है।
पुस्तकें हैं मित्र सच्चे, जो कभी धोखा न देतीं,
हर पल, हर क्षण साथ रहती, ज्ञान की राह पर ले जातीं।
गुरु बिन ज्ञान नहीं होता, जैसे बिन माली बाग न खिले,
आचार्य की छत्रछाया में, जीवन के मोती मिले।
प्रश्न पूछना जिज्ञासा है, और जिज्ञासा है ज्ञान की जड़,
जो सीखता है वह आगे बढ़ता, यही जीवन का सच है पक्का।
विद्या से चरित्र बनता है, और चरित्र से राष्ट्र महान,
शिक्षित समाज ही करता है, देश का नाम और सम्मान।
इसलिए विद्या को अपनाओ, हर पल कुछ नया सीखो,
ज्ञान का यह अमृत पीकर, जीवन को सार्थक करो।

1. विद्या की क्या विशेषता है?
(क) बाँटने से घटती नहीं
(ख) मन को दुखी करती है
(ग) केवल धनवानों के लिए है
(घ) पुस्तकों से नहीं मिलती

2. **अभिकथन (A):** गुरु का महत्त्व सर्वोपरि है।
कारण (R): जैसे माली के बिना बाग नहीं खिलता, वैसे ही गुरु के बिना ज्ञान नहीं मिलता।
(क) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है

3. काव्यांश के अनुसार राष्ट्र महान कैसे बनता है?
(क) धन से और बल से (ख) विद्या और चरित्र से
(ग) युद्ध और विजय से (घ) सेना और शक्ति से

4. पुस्तकों को 'सच्चे मित्र' क्यों कहा गया है?

5. काव्यांश में जिज्ञासा को ज्ञान की जड़ कहा गया है। इस कथन की व्याख्या कीजिए।

उत्तरः

1. (क) बाँटने से घटती नहीं
2. (क) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
3. (ख) विद्या और चरित्र से
4. पुस्तकें सदा साथ रहती हैं, कभी धोखा नहीं देतीं और हर परिस्थिति में ज्ञान देकर सही राह पर ले जाती हैं।
5. जिज्ञासा यानी जानने की इच्छा ही सीखने की प्रेरणा देती है। जो व्यक्ति प्रश्न पूछता है, वह नई-नई जानकारी प्राप्त करता है और आगे बढ़ता है। बिना जिज्ञासा के ज्ञान अर्जित नहीं हो सकता। इसलिए कवि ने जिज्ञासा को ज्ञान की जड़ कहा है — यह सीखने की पूरी प्रक्रिया का आधार है।

काव्यांश 10

पेड़ काटे जा रहे हैं, जंगल उजड़ते जा रहे,
धरती की हरियाली खोकर, हम कहाँ जा रहे?
नदियाँ जहरीली हो गई हैं, वायु भी दूषित भारी,
अपने लालच के कारण हमने, धरती को बना दी बीमारी।
पशु-पक्षी भटक रहे हैं, वन कट रहे हर ओर,
प्रकृति का यह विनाश करके, बचेगा कहाँ का छोर?
बाढ़ आए, सूखा पड़े, भूकंप कँपाते धरती,
प्रकृति के इस रोष का कारण, हमारी ही है करतूती।
अब भी समय है, जागो साथी, पेड़ लगाओ सब मिलकर,
नदियों को साफ करो, और जंगल बचाओ खिलकर।
प्रकृति से जो लिया है उससे, ऋण चुकाने का पल आया,
पर्यावरण संरक्षण ही अब, एकमात्र जीवन का उपाय।

1. काव्यांश का मुख्य संदेश क्या है?
(क) जंगल में घर बनाना चाहिए
(ख) नदियों में नहाना चाहिए
(ग) पशु-पक्षी खतरनाक हैं
(घ) पर्यावरण बचाना जरूरी है

2. काव्यांश में प्रयुक्त 'रोष' शब्द का सही अर्थ क्या है?
(क) प्रेम और दया (ख) क्रोध या गुस्सा
(ग) डर या भय (घ) खुशी और संतोष

3. काव्यांश में प्राकृतिक आपदाओं का कारण क्या बताया गया है?
(क) ईश्वर का कोप (ख) मानवीय करतूतें
(ग) पहाड़ों का टूटना (घ) पशु-पक्षियों का व्यवहार

4. 'प्रकृति से ऋण चुकाने' से कवि का क्या आशय है?

5. पर्यावरण के प्रति मनुष्य की जिम्मेदारी के संदर्भ में काव्यांश का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तरः

1. (घ) पर्यावरण बचाना जरूरी है
2. (ख) क्रोध या गुस्सा
3. (ख) मानवीय करतूतें
4. कवि का आशय है कि हमने प्रकृति से बहुत कुछ लिया है, अब पेड़ लगाकर, नदियाँ साफ करके और वन बचाकर उस ऋण को चुकाना होगा।

5. काव्यांश में कवि ने स्पष्ट किया है कि पेड़ों की कटाई, नदियों का प्रदूषण और वनों का विनाश — ये सब मानव के लालच के परिणाम हैं। बाढ़, सूखा और भूकंप इसी का दुष्परिणाम हैं। मनुष्य को अब पेड़ लगाकर, नदियाँ साफ करके और जंगल बचाकर प्रकृति का संरक्षण करना होगा।

काव्यांश 11

मित्र वही जो विपत्ति में साथ,
हर पल संग खड़ा रहे,
सुख-दुख में सच बोले जो,
वही दोस्त सच्चा कहे।
झूठी तारीफ करने वाले,
मित्र नहीं खुशामदी हैं,
जो गलती बताए प्यार से,
वही दोस्त असली हैं।
बुरे समय की परीक्षा में,
मित्रता की होती पहचान,
स्वार्थी मित्र छोड़ जाते हैं,
सच्चे देते हैं जान।
राम और सुग्रीव की मित्रता,
इतिहास की अमर कहानी,
कृष्ण और सुदामा का प्रेम,
न कोई भेद न मनमानी।
आज के दौर में सोशल मीडिया,
मित्र हजारों दिखाता,
पर सच्चा दोस्त वही जो दिल की,
हर बात समझ जाता।
सच्चे मित्र की कद्र करो,
उसे दिल से संजोए रखो,
जीवन के इस सफर में उसे,
हमेशा साथ लेकर चलो।

1. काव्यांश में सच्चे मित्र की पहचान क्या बताई गई है?
(क) हर समय हाँ में हाँ मिलाना
(ख) विपत्ति में साथ खड़े रहना
(ग) धन से मदद करना
(घ) हमेशा प्रशंसा करना

2. नीचे दिए गए कथनों पर विचार कीजिए
I. सच्चा मित्र विपत्ति में साथ देता है।
II. झूठी तारीफ करने वाला सच्चा मित्र है।
III. राम-सुग्रीव की मित्रता इतिहास में अमर है।
IV. सोशल मीडिया के हजारों मित्र सच्चे मित्र होते हैं।
इनमें से कौन-से कथन सही हैं?
(क) केवल I सही है
(ख) केवल I और II सही हैं
(ग) केवल I, III और IV सही हैं
(घ) सभी कथन सही हैं

3. कृष्ण-सुदामा की मित्रता का उल्लेख किसलिए किया गया है?
(क) धनी-गरीब की दोस्ती दिखाने
(ख) भगवान की महिमा गाने
(ग) युद्ध का वर्णन करने
(घ) द्वारका का वर्णन करने

4. 'बुरे समय में मित्रता की पहचान होती है' — इस विचार को स्पष्ट करें।

5. काव्यांश में वर्णित आदर्श मित्रता के गुणों को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः
1. (ख) विपत्ति में साथ खड़े रहना
2. (क) केवल I सही है
3. (क) धनी-गरीब की दोस्ती दिखाने
4. बुरे समय में स्वार्थी मित्र साथ छोड़ देते हैं जबकि सच्चे मित्र हर संकट में साथ खड़े रहते हैं — यही उनकी असली पहचान है।
5. काव्यांश के अनुसार सच्चा मित्र सुख-दुख में साथ रहता है, प्यार से गलती बताता है, विपत्ति में नहीं छोड़ता और दिल की बात समझता है। राम-सुग्रीव और कृष्ण-सुदामा जैसी ऐतिहासिक मित्रताएँ इसका आदर्श उदाहरण हैं। ऐसे सच्चे मित्र को जीवन में हमेशा संजोकर रखना चाहिए।

काव्यांश 12

जो पेड़ पुराने हैं उनकी, जड़ें गहरी होती हैं,
बड़े-बुजुर्गों के अनुभव में, जीवन की राहें होती हैं।
दादा-दादी, नाना-नानी, इनके किस्से अनमोल,
इनके सीने में बंद है, जीवन का हर बोल।
जो घर में बुजुर्ग नहीं होते, वह घर सूना लगता है,
उनकी आशीष के बिना हर, मौसम ठंडा लगता है।
युवा पीढ़ी की तेज रफ्तार में, बुजुर्ग पिछड़ते जाते,
वृद्धाश्रम की दीवारों में, अकेले रो-रो पछताते।
यह कैसी आधुनिकता है जो, माँ-बाप को भूल जाती,
जड़ें काटकर पेड़ की, खुद ही सूखती-मुरझाती।
आओ बुजुर्गों के चरणों में, श्रद्धा से शीश झुकाएँ,
उनके अनुभव का ज्ञान लेकर, जीवन को सफल बनाएँ।

1. 'पुराने पेड़ की गहरी जड़ें' किसका प्रतीक है?
(क) बुजुर्गों के गहरे अनुभव का
(ख) पुरानी परंपराओं का
(ग) जंगल के महत्त्व का
(घ) खेती की जमीन का

2. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म काव्यांश के अनुसार सही है?
(क) वृद्धाश्रम – बुजुर्गों की उपेक्षा का प्रतीक
(ख) जड़ें काटना – विकास का प्रतीक
(ग) बुजुर्गों की आशीष – युवाओं के लिए हानिकारक
(घ) आधुनिकता – बुजुर्गों का सम्मान

3. काव्यांश में 'जड़ें काटने' की उपमा किससे की गई है?
(क) खेत काटने से
(ख) माँ-बाप को भूलने से
(ग) पेड़ लगाने से
(घ) पानी न देने से

4. वृद्धाश्रम को लेकर कवि ने क्या भावना व्यक्त की है?

5. काव्यांश में 'जड़ें काटकर पेड़ खुद सूख जाता है' – इस उपमा का भाव स्पष्ट करें।

उत्तरः
1. (क) बुजुर्गों के गहरे अनुभव का
2. (क) वृद्धाश्रम – बुजुर्गों की उपेक्षा का प्रतीक
3. (ख) माँ-बाप को भूलने से
4. कवि ने वृद्धाश्रम को बुजुर्गों की उपेक्षा और अकेलेपन का प्रतीक बताया है और इसे आधुनिकता की भूल कहा है।
5. जैसे जड़ें काटने पर पेड़ सूख जाता है, वैसे ही बुजुर्गों को उपेक्षित करने पर परिवार और समाज कमजोर हो जाता है। बुजुर्ग परिवार की जड़ें हैं – उनके अनुभव, आशीष और मार्गदर्शन के बिना युवा पीढ़ी भी अधूरी है। यह उपमा हमें उनकी अहमियत याद दिलाती है।

काव्यांश 13

सत्य वह शक्ति है जो अजेय,
झूठ चाहे जितना जोर लगाए,
अंधकार चाहे घेरे कितना,
सत्य का दीपक जलता जाए।
झूठ की नींव होती कमजोर,
एक दिन ढह जाती है,
सत्य की भित्ति मजबूत रहती,
टिकी रहती सदियों तक जाती है।
सत्यमेव जयते का उद्घोष,
इस देश की पहचान है,
गाँधी जी ने सत्य को हथियार बनाकर,
पाई आजादी महान है।
झूठ बोलने वाला एक दिन,
स्वयं ही फँस जाता है,
सत्य बोलने वाला मुश्किल में भी,
सच्चा साथ पाता है।
परीक्षा में, व्यापार में,
रिश्तों में जहाँ भी जाओ,
सत्य का दामन थामकर चलो,
जीवन को श्रेष्ठ बनाओ।
क्षणिक लाभ के लिए न झूठ बोलो,
चाहे कितना भी लुभाए,
सत्य की राह पर चलने वाला,
सदा सफलता पाए।

1. काव्यांश का मुख्य भाव क्या है?
(क) सत्य सदा विजयी होता है
(ख) झूठ बोलना आसान होता है
(ग) गाँधी जी महान नेता थे
(घ) परीक्षा में सफलता मिलती है

2. **अभिकथन (A):** सत्य की शक्ति पराजेय है।
कारण (R): सत्य की नींव मजबूत होती है जबकि झूठ की नींव एक दिन ढह जाती है।
(क) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है

3. नीचे दिए गए कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'सत्यमेव जयते' भारत की पहचान है।
II. गाँधी जी ने सत्य को हथियार बनाया।
III. झूठ की नींव हमेशा मजबूत होती है।
IV. सत्य बोलने वाले को कठिन समय में साथ मिलता है।
इनमें से कौन-से कथन सही हैं?
(क) केवल I और II सही हैं
(ख) केवल II और III सही हैं
(ग) केवल I, II और IV सही हैं
(घ) सभी कथन सही हैं

4. 'सत्य को हथियार बनाना' से क्या तात्पर्य है?

5. झूठ और सत्य के परिणामों की तुलना करते हुए काव्यांश के आधार पर अपने विचार प्रकट करें।

उत्तरः
1. (क) सत्य सदा विजयी होता है
2. (घ) A गलत है परंतु R सही है
3. (ग) केवल I, II और IV सही हैं
4. गाँधी जी ने सत्य और अहिंसा को अपना शस्त्र बनाकर बिना हिंसा के अंग्रेजों से भारत को आजाद करवाया – यही 'सत्य को हथियार बनाना' है।
5. काव्यांश के अनुसार झूठ की नींव कमजोर होती है और एक दिन वह ढह जाती है। झूठ बोलने वाला स्वयं फंस जाता है। इसके विपरीत, सत्य की भित्ति सदियों तक टिकी रहती है और सत्यवादी को कठिन समय में भी साथ मिलता है। इसलिए क्षणिक लाभ के लिए झूठ का सहारा न लेकर सदा सत्य का मार्ग अपनाना चाहिए।

काव्यांश 14

दीपों की रोशनी में जब, घर-आँगन जगमगाता है,
दीपावली का त्योहार हर, घर में खुशी लाता है।
होली के रंगों में रंगकर, भेद-भाव मिट जाते हैं,
ईद की सेवइयाँ बाँटकर, दिल एक हो जाते हैं।
क्रिसमस में सबको मिलाए, बैसाखी खुशियाँ लाए,
पोंगल, ओणम, बिहू मिलकर, भारत को एक दिखलाए।
त्योहारों की इस भूमि में, हर पर्व एक कहानी है,
मिल-जुलकर मनाना इन्हें, यही भारत की निशानी है।
रंग-बिरंगे ये त्योहार, जीवन में रंग भरते हैं,
परिवार और समाज को जोड़ते, नई ऊर्जा देते हैं।
इन त्योहारों को मनाओ, पर पर्यावरण का ध्यान रखो,
परंपरा को जीवित रखकर, नई राह भी अपनाओ।

1. भारतीय त्योहारों की क्या विशेषता है?
(क) वे व्यापार बढ़ाते हैं
(ख) वे केवल एक धर्म के हैं
(ग) वे पर्यावरण को नुकसान देते हैं
(घ) वे एकता और खुशी लाते हैं

2. **अभिकथन (A):** भारतीय त्योहार समाज में एकता और प्रेम का संदेश देते हैं।
कारण (R): होली में सेवइयाँ और ईद में रंग बाँटने से भेद-भाव मिटता है।
(क) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है

3. ईद के त्योहार के बारे में काव्यांश में क्या कहा गया है?
(क) ईद में मिठाई खाते हैं
(ख) सेवइयाँ बाँटने से दिल जुड़ते हैं
(ग) ईद केवल मुसलमानों का है
(घ) ईद में दीप जलाते हैं

4. कवि ने त्योहारों के संदर्भ में पर्यावरण का ध्यान रखने की बात क्यों कही है?

5. काव्यांश में विभिन्न त्योहारों का उल्लेख क्यों किया गया है? इससे भारतीय संस्कृति की क्या झलक मिलती है?

उत्तरः
1. (घ) वे एकता और खुशी लाते हैं
2. (ग) A सही है परंतु R गलत है
3. (ख) सेवइयाँ बाँटने से दिल जुड़ते हैं
4. आधुनिक समय में त्योहार मनाते समय प्रदूषण बढ़ता है, इसलिए कवि ने परंपरा के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण का भी ध्यान रखने का आह्वान किया है।
5. कवि ने दीपावली, होली, ईद, क्रिसमस, बैसाखी, पोंगल, ओणम और बिहू जैसे विभिन्न त्योहारों का उल्लेख भारत की धार्मिक विविधता और सांस्कृतिक एकता को दर्शाने के लिए किया है। इन त्योहारों से यह पता चलता है कि भारत में अनेक धर्म और संस्कृतियाँ मिलकर एक सुंदर समाज बनाती हैं।

काव्यांश 15

तन का भंडार है स्वास्थ्य, इसे सँभालकर रखो,
बिना स्वास्थ्य के धन-दौलत, सब निरर्थक ही देखो।
प्रातःकाल उठकर व्यायाम करो, शुद्ध हवा में साँस लो,
योग और ध्यान की शक्ति से, जीवन को सरस बनाओ।
फास्ट फूड और जंक खाने से, बीमारियाँ आती हैं,
हरी सब्जियाँ, फल और दूध, सेहत की राह दिखाती हैं।
नींद पूरी लेना जरूरी है, थकान को दूर भगाओ,
मन को तनाव से मुक्त रखो, खुश और स्वस्थ रहो।
डिजिटल स्क्रीन से दूरी रखो, आँखों को आराम दो,
प्रकृति के करीब रहकर, तन-मन को सुकून दो।
जो स्वस्थ है वही खुश है, यह जीवन का सार,
स्वास्थ्य ही है असली धन, यही जीवन का आधार।

1. कवि के अनुसार जीवन का 'असली धन' क्या है?
(क) सोना और संपत्ति (ख) शिक्षा और ज्ञान
(ग) स्वास्थ्य (घ) परिवार और मित्र

2. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म काव्यांश के अनुसार सही है?
(क) जंक फूड — बीमारियों का कारण
(ख) फास्ट फूड — स्वास्थ्य का राज
(ग) डिजिटल स्क्रीन — आँखों के लिए अच्छा
(घ) कम नींद — तनाव से राहत

3. स्वस्थ रहने के लिए क्या नहीं करना चाहिए?
(क) योग और ध्यान (ख) प्रातःकाल व्यायाम
(ग) जंक फूड का सेवन (घ) फल और दूध का सेवन

4. 'तन का भंडार' किसे कहा गया है और क्यों?

5. काव्यांश में वर्णित स्वस्थ जीवनशैली के तत्त्वों का उल्लेख करते हुए उनके महत्त्व को समझाइए।

उत्तरः
1. (ग) स्वास्थ्य
2. (क) जंक फूड — बीमारियों का कारण
3. (ग) जंक फूड का सेवन
4. स्वास्थ्य को 'तन का भंडार' कहा गया है क्योंकि यह वह संपदा है जिससे सारे सुख संभव हैं; बिना स्वास्थ्य के धन-दौलत सब व्यर्थ है।
5. काव्यांश में व्यायाम, योग, ध्यान, पौष्टिक भोजन, पूरी नींद और प्रकृति के करीब रहना — इन्हें स्वस्थ जीवनशैली के तत्त्व बताया गया है। जंक फूड और डिजिटल स्क्रीन से दूरी रखना भी जरूरी है। ये सभी तत्त्व मिलकर तन और मन दोनों को स्वस्थ रखते हैं, जो जीवन का आधार है।

काव्यांश 16

वीर वही जो विपत्ति में, डटकर सामना करता है,
मुसीबत के पहाड़ के सामने, झुके बिना चलता है।
महाराणा प्रताप ने हल्दीघाटी में, जो वीरता दिखलाई,
छत्रपति शिवाजी ने धरती पर, स्वाभिमान की लौ जलाई।
तलवार और ढाल के युग में, कलम भी वीरता का काम करती,
सत्य के लिए लड़ना भी एक, वीरता की परिभाषा भरती।
साहस छोटे-छोटे कामों में भी, हर रोज दिखता है,
गलत के विरुद्ध खड़े होना, यही असली साहस बसता है।
बच्चा जब पहली बार चलता, गिरकर उठता बार-बार,
यह भी एक साहस है जीवन में, जीत का यही आधार।
भय से मुँह न मोड़ो कभी, आगे बढ़ते जाओ,
वीर वही है जो आँधियों में, चिराग जलाए जाओ।

1. वीरता की व्यापक परिभाषा क्या है?
   (क) केवल युद्ध में साहस से लड़ना
   (ख) गलत के विरुद्ध साहस से खड़े होना
   (ग) अन्य देशों पर विजय पाना
   (घ) तलवार चलाना

2. काव्यांश में कवि का मूल संदेश/दृष्टिकोण क्या है?
   (क) वीरता केवल युद्धभूमि तक सीमित नहीं बल्कि दैनिक जीवन में भी जरूरी है।
   (ख) महाराणा प्रताप सबसे महान राजा थे।
   (ग) तलवार और ढाल ही वीरता का एकमात्र प्रतीक है।
   (घ) बच्चों को साहसी बनाने के लिए युद्ध जरूरी है।

3. 'कलम' को क्यों वीरता का प्रतीक बताया गया है?
   (क) लिखने के लिए (ख) सत्य के लिए लड़ने में
   (ग) चित्र बनाने में (घ) शिक्षा देने में

4. बच्चे के पहली बार चलने के उदाहरण से कवि क्या सिद्ध करना चाहता है?

5. महाराणा प्रताप और शिवाजी के उदाहरण से कवि ने क्या संदेश दिया है? अपने विचार लिखें।

उत्तरः
1. (ख) गलत के विरुद्ध साहस से खड़े होना
2. (क) वीरता केवल युद्धभूमि तक सीमित नहीं बल्कि दैनिक जीवन में भी जरूरी है।
3. (ख) सत्य के लिए लड़ने में
4. कवि यह सिद्ध करना चाहता है कि साहस और वीरता बड़े कार्यों तक सीमित नहीं — बार-बार गिरकर उठना और प्रयास करना भी एक साहस है।
5. महाराणा प्रताप ने हल्दीघाटी में शक्तिशाली शत्रु के सामने भी आत्मसमर्पण नहीं किया और शिवाजी ने स्वाभिमान की लौ जलाए रखी। इन उदाहरणों से कवि का संदेश है कि सच्चा वीर विपत्ति में झुकता नहीं। आज के युग में भी गलत के विरुद्ध खड़े होना और सत्य के लिए लड़ना उतना ही जरूरी है।

काव्यांश 17

गाँव की मिट्टी में सोंधापन,
हवा में ताजगी होती है,
शहर की चकाचौंध में खोकर,
जिंदगी अधूरी होती है।
भोर में चिड़ियों की चहचहाहट,
खेतों की हरियाली न्यारी,
गाँव में जीवन सरल और सुंदर,
नहीं है कोई बीमारी।
शहर में बड़े-बड़े भवन हैं,
पर रिश्तों में दरारें हैं,
पड़ोसी का नाम तक न जाने,
यह कैसी चाहतें हैं?
गाँव में सब मिलजुल रहते,
सुख-दुख साझा करते हैं,
त्योहार और उत्सव में मिलकर,
जीवन के रंग भरते हैं।
पर गाँव में सुविधाएँ कम हैं,
शिक्षा और स्वास्थ्य की कमी,
गाँव और शहर दोनों को जोड़ें,
यही उचित है हमी।
गाँव की सादगी को सहेजकर,
शहर का विकास अपनाओ,
दोनों का समन्वय बनाकर,
नए भारत को सजाओ।

1. काव्यांश में गाँव की विशेषता क्या बताई गई है?
   (क) बड़े भवन और सुविधाएँ
   (ख) सरल जीवन और सामूहिकता
   (ग) शिक्षा और स्वास्थ्य की अधिकता
   (घ) चकाचौंध और आधुनिकता

2. नीचे दिए गए कथनों पर विचार कीजिए
   I. गाँव में सरल और सुंदर जीवन है।
   II. शहर में रिश्ते बहुत मजबूत हैं।
   III. गाँव में लोग मिलजुलकर रहते हैं।
   IV. गाँव में शिक्षा और स्वास्थ्य की कमी है।

   इनमें से कौन-से कथन सही हैं?
   (क) केवल I सही है
   (ख) केवल I और II सही हैं
   (ग) केवल I, III और IV सही हैं
   (घ) सभी कथन सही हैं

3. शहरी जीवन की कमी के बारे में कवि क्या कहता है?
   (क) शहर में त्योहार नहीं हैं (ख) शहर में रिश्तों में दूरी है
   (ग) शहर में काम नहीं है (घ) शहर में हरियाली नहीं है

4. कवि ने गाँव और शहर के समन्वय की बात क्यों की है?

5. काव्यांश के आधार पर गाँव और शहर के जीवन की तुलना करते हुए उनके गुण-दोष बताइए।

उत्तरः
1. (ख) सरल जीवन और सामूहिकता
2. (ग) केवल I, III और IV सही हैं
3. (ख) शहर में रिश्तों में दूरी है
4. कवि का मानना है कि गाँव की सादगी और सामूहिकता तथा शहर की सुविधाएँ और विकास — दोनों को मिलाकर एक बेहतर समाज बनाया जा सकता है।
5. गाँव में ताजी हवा, सामूहिकता और सरल जीवन है लेकिन शिक्षा-स्वास्थ्य की सुविधाएँ कम हैं। शहर में बड़े भवन और आधुनिक सुविधाएँ हैं लेकिन रिश्तों में दूरी और व्यक्तिगतता है। आदर्श स्थिति वह होगी जहाँ गाँव की सामूहिकता और शहर का विकास दोनों एक साथ हों।

काव्यांश 18

मन की शांति सबसे बड़ा धन है, इसे खोजो अपने भीतर,
बाहर की दुनिया में ढूँढोगे, तो भटकोगे दर-बदर।
ध्यान और योग से मन शांत होता, विचार निर्मल हो जाते,
जब मन शांत हो जाता है, तब जीवन के अर्थ आ जाते।
क्रोध और लोभ से मन अशांत, हो जाता है बेकाबू,
इन्हें जीतने वाला ही है, जीवन में सच्चा काबू।
प्रकृति की गोद में बैठकर, मन को आराम मिलता है,
पक्षियों का स्वर सुनकर, तनाव का बोझ घटता है।
भजन-कीर्तन, संगीत और नृत्य, मन को भाते हैं,
ये सब आत्मा के भोजन हैं, जो मन को तृप्त कराते हैं।
जो मन से शांत है वही, सही निर्णय ले पाता है,
शांत मन का मालिक ही, जीवन में खुशियाँ पाता है।

1. 'सबसे बड़ा धन' किसे कहा गया है?
(क) सोना और चाँदी (ख) मन की शांति
(ग) यश और कीर्ति (घ) बल और शक्ति

2. **अभिकथन (A):** मन की शांति के लिए बाहरी संसाधन पर्याप्त हैं।
कारण (R): मन की शांति अपने भीतर है और ध्यान-योग से प्राप्त होती है।
(क) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है

3. मन की अशांति का कारण क्या बताया गया है?
(क) गरीबी और भूख (ख) क्रोध और लोभ
(ग) शिक्षा का अभाव (घ) काम की अधिकता

4. भजन-कीर्तन और संगीत को 'आत्मा का भोजन' क्यों कहा गया है?

5. काव्यांश में मन की शांति के जो उपाय बताए गए हैं, उनका वर्णन करते हुए उनका महत्त्व बताइए।

उत्तरः
1. (ख) मन की शांति
2. (घ) A गलत है परंतु R सही है
3. (ख) क्रोध और लोभ
4. जैसे भोजन तन को तृप्त करता है, वैसे ही भजन-कीर्तन और संगीत मन और आत्मा को तृप्त और शांत करते हैं, इसलिए इन्हें आत्मा का भोजन कहा गया है।
5. ध्यान और योग, प्रकृति की गोद में समय बिताना, पक्षियों का स्वर सुनना और भजन-कीर्तन-संगीत — ये सभी मन को शांत करने के उपाय हैं। क्रोध और लोभ पर नियंत्रण भी आवश्यक है। शांत मन से ही सही निर्णय लिए जा सकते हैं और जीवन सुखी बनाया जा सकता है।

काव्यांश 19

दान वह है जो माँगने से पहले,
दे दिया जाए जरूरतमंद को,
अपेक्षा रखकर जो दो,
वह सच्चा दान नहीं है,
सच्ची सेवा वह है जो दिल से,
बिना किसी प्रतिफल के हो,
सेवा का फल माँगने वाला,
असल में सेवक नहीं है।
बूँद-बूँद जल से सागर भरे,
एक-एक पल से जीवन बने,
छोटी-छोटी मदद करके,
बड़ा बदलाव आ सकता है इस जग में।
जो अपनी थाली से थोड़ा,
भूखे को दे देता है,
उससे बड़ा दानी कोई नहीं,
ऐसा धर्म कहता है।
सेवा में ही भगवान बसता,
यह संतों का वचन है,
मानव-सेवा ही माधव-सेवा,
यही धर्म का कण-कण है।
तो आओ मिलकर सेवा करें,
जो दुखी हैं उनके पास जाएँ,
दान और सेवा के इस मार्ग पर,
जीवन को धन्य बनाएँ।

1. काव्यांश में सच्चे दान की क्या परिभाषा दी गई है?
(क) केवल मंदिर में देना
(ख) धन देने की प्रतिस्पर्धा

(ग) दान पाकर यश कमाना
(घ) बिना अपेक्षा के निस्वार्थ देना

2. **अभिकथन (A):** मानव-सेवा ही सच्ची ईश्वर-भक्ति है।
कारण (R): सेवा में ही भगवान बसता है और मानव-सेवा माधव-सेवा के समान है।
(क) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है

3. नीचे दिए गए कथनों पर विचार कीजिए:
I. सच्चा दान बिना अपेक्षा के दिया जाता है।
II. सेवा का फल माँगना सेवक का धर्म है।
III. छोटी-छोटी मदद से बड़ा बदलाव आता है।
IV. भूखे को रोटी देना सबसे बड़ा दान है।
इनमें से कौन-से कथन सही हैं?
(क) केवल I और II सही हैं
(ख) केवल II और III सही हैं
(ग) केवल I, III और IV सही हैं
(घ) सभी कथन सही हैं

4. 'बूँद-बूँद जल से सागर भरे' — इस पंक्ति का भाव क्या है?

5. काव्यांश के आधार पर दान और सेवा के महत्त्व को अपने शब्दों में स्पष्ट करें।

उत्तरः
1. (घ) बिना अपेक्षा के निस्वार्थ देना
2. (क) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
3. (ग) केवल I, III और IV सही हैं
4. इस पंक्ति का भाव है कि छोटे-छोटे प्रयास मिलकर बड़ा परिवर्तन लाते हैं। छोटी-छोटी सेवाएँ मिलकर समाज को बदल सकती हैं।
5. दान और सेवा तभी सार्थक हैं जब वे निस्वार्थ भाव से की जाएँ। जो प्रतिफल की अपेक्षा रखता है वह सच्चा सेवक नहीं। भूखे को भोजन देना सबसे बड़ा दान है। छोटी-छोटी मदद से भी बड़ा बदलाव संभव है। संतों का मत है कि मानव-सेवा ही माधव-सेवा है — इसलिए सेवा को जीवन का लक्ष्य बनाना चाहिए।

काव्यांश 20

गुरु बिन ज्ञान नहीं होता,
गुरु बिन नहीं उजियारा,
अंधकार में जो रोशनी दे,
वह गुरु हमारा प्यारा।
माता-पिता ने जन्म दिया है,
गुरु ने जीवन दिया,
संस्कार और ज्ञान की ज्योति,
इस जग में जला दिया।
डॉ. कलाम, चाणक्य जैसे,
गुरुओं ने इतिहास बनाया,
अपने शिष्यों को तराशकर,
भारत का गौरव बढ़ाया।
आज के युग में भी शिक्षक,
जीवन का मार्ग दिखाते,
वे सिर्फ किताब नहीं पढ़ाते,
चरित्र और जीवन-मूल्य सिखाते।
गुरु-शिष्य का यह पवित्र संबंध,
युगों-युगों से चला आया,
इस परंपरा को बनाए रखना,
हम सबका है दायित्व।
तो आओ गुरु को प्रणाम करें,
उनका सम्मान बढ़ाएँ,
उनकी शिक्षाओं को जीवन में,
उतारकर यश पाएँ।

1. गुरु का सबसे बड़ा योगदान क्या बताया गया है?
(क) परीक्षा में पास करवाना
(ख) ज्ञान और जीवन-मूल्य देना
(ग) धन कमाना सिखाना
(घ) युद्ध में प्रशिक्षण देना

2. काव्यांश में कवि का मूल संदेश/दृष्टिकोण क्या है?
(क) गुरु की महिमा सर्वोच्च है और उनका सम्मान हमारा कर्तव्य है।
(ख) डॉ. कलाम और चाणक्य ने स्वयं ही सफलता पाई थी।
(ग) माता-पिता ही जीवन के सच्चे गुरु हैं।
(घ) आधुनिक शिक्षक केवल किताब पढ़ाते हैं।

3. काव्यांश में किसके उदाहरण महान गुरुओं के रूप में दिए गए हैं?
(क) गाँधी और नेहरु (ख) डॉ. कलाम और चाणक्य
(ग) राम और कृष्ण (घ) तुलसीदास और कबीर

4. 'गुरु ने जीवन दिया' — इस पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

5. आधुनिक युग में शिक्षक की भूमिका पर काव्यांश के आधार पर विचार करें।

उत्तरः
1. (ख) ज्ञान और जीवन-मूल्य देना
2. (क) गुरु की महिमा सर्वोच्च है और उनका सम्मान हमारा कर्तव्य है।
3. (ख) डॉ. कलाम और चाणक्य
4. माता-पिता ने शरीर दिया परंतु गुरु ने ज्ञान, संस्कार और जीवन जीने की कला देकर वास्तविक जीवन दिया — यही इस पंक्ति का भाव है।

5. आधुनिक युग में शिक्षक केवल पाठ्यक्रम नहीं पढ़ाते बल्कि चरित्र निर्माण, जीवन-मूल्य और सामाजिक जिम्मेदारी भी सिखाते हैं। डॉ. कलाम जैसे छात्रों को तराशकर राष्ट्र निर्माण में योगदान देते हैं। गुरु-शिष्य परंपरा को बनाए रखना और शिक्षकों का सम्मान करना हम सबका कर्तव्य है।

काव्यांश 21

मैं गंगा हूँ, युगों से बहती,
लाखों की प्यास बुझाती हूँ,
हिमालय की ऊँचाइयों से,
सागर की गहराई तक जाती हूँ।
पर आज मेरे जल में मिला है,
मनुष्य का जहर और कचरा,
उसी के हाथों जो पालती थी,
उसीने किया बिखरा।
तीर्थों पर आते हो पूजने,
पर उसी में कूड़ा डालते,
मुझे माँ कहते हो ज़ुबान से,
पर कर्म से यही दिखलाते?
उद्योगों का जहरीला पानी,
मेरी छाती में उतरता है,
मछलियाँ और जलीय जीव,
मेरे दर्द से गुजरता है।
अब मत रोको मेरी पुकार,
सुनो मेरी वेदना जरा,
साफ करो मुझे और बचाओ,
यही है माँ का दर्द भरा।
नदियाँ जो साफ नहीं होंगी,
जीवन भी रहेगा कहाँ?
नदी बचाओ, जल बचाओ,
यही जीवन का आधार यहाँ।

1. गंगा अपनी किस पीड़ा को व्यक्त कर रही है?
(क) जल कम होने की
(ख) मनुष्य द्वारा प्रदूषित होने की
(ग) बाढ़ आने की
(घ) हिमालय पिघलने की

2. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म काव्यांश के अनुसार सही है?
(क) उद्योगों का जहर — गंगा प्रदूषण का कारण
(ख) गंगा — शहरों की पहचान
(ग) मछलियाँ — जल प्रदूषण के लाभार्थी
(घ) तीर्थ — गंगा की सफाई का स्थान

3. काव्यांश में मनुष्य के विरोधाभासी व्यवहार पर कटाक्ष किस पंक्ति में है?
(क) गंगा को माँ कहकर उसी में कूड़ा डालना
(ख) हिमालय से सागर तक जाना
(ग) उद्योग लगाना
(घ) तीर्थयात्रा करना

4. गंगा की वेदना को कवि ने किस रूप में प्रस्तुत किया है?

5. 'माँ कहना और कूड़ा डालना' — इस विरोधाभास पर अपने विचार प्रकट करें।

उत्तरः
1. (ख) मनुष्य द्वारा प्रदूषित होने की
2. (क) उद्योगों का जहर — गंगा प्रदूषण का कारण
3. (क) गंगा को माँ कहकर उसी में कूड़ा डालना
4. कवि ने गंगा को एक माँ के रूप में प्रस्तुत किया है जो अपने ही पुत्रों द्वारा प्रदूषित की जा रही है और उनसे अपनी रक्षा की गुहार लगा रही है।
5. यह विरोधाभास मानव की दोहरी मानसिकता को उजागर करता है — हम गंगा को माँ कहकर पूजते हैं लेकिन उसी में कचरा और जहर डालते हैं। यह केवल नदी का नहीं बल्कि पूरे पर्यावरण के साथ हमारे व्यवहार का प्रतीक है। हमें अपने कर्म और वचन में एकरूपता लानी होगी।

काव्यांश 22

अपने पैरों पर खड़े रहो,
यही जीवन की शान है,
दूसरों पर निर्भर रहना,
यह कमजोरी की पहचान है।
पक्षी खुद उड़ना सीखता है,
माँ से थोड़ी मदद पाकर,
फिर ऊँचे नभ में उड़ जाता,
अपनी राह बनाकर।
स्वावलंबी जीवन जीना है,
तो श्रम और कौशल अपनाओ,
अपनी जरूरतें खुद पूरी करो,
आत्म-निर्भर बन जाओ।
गाँधी जी ने चरखा चलाया,
स्वदेशी का दिया संदेश,
अपने हाथों से जीवन बनाओ,
यही था उनका उपदेश।
दूसरों की दया पर जो जीते,
उनका स्वाभिमान खोता है,
स्वयं परिश्रम करने वाले का,
सच्चा मान होता है।
इसलिए अपनी शक्ति पहचानो,
खुद पर भरोसा रखो,
स्वावलंबन की इस राह पर,
हमेशा आगे बढ़ते रहो।

1. काव्यांश में स्वावलंबन का क्या महत्त्व बताया गया है?
(क) यह कमजोरी की निशानी है
(ख) यह दूसरों से सहायता लेना है
(ग) यह व्यक्ति को आत्म-सम्मान देता है
(घ) यह केवल गरीबों के लिए होता है

2. **अभिकथन (A):** स्वावलंबन जीवन की शान है।
कारण (R): दूसरों पर निर्भर रहने से स्वाभिमान खो जाता है और स्वयं परिश्रम से सम्मान मिलता है।
(क) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है

3. पक्षी का उदाहरण किसलिए दिया गया है?
(क) उड़ने की कला सिखाने
(ख) स्वावलंबन का प्रतीक
(ग) माँ की ममता दिखाने
(घ) आकाश की ऊँचाई बताने

4. गाँधी जी के चरखे और स्वदेशी संदेश का स्वावलंबन से क्या संबंध है?

5. आधुनिक युवाओं के लिए स्वावलंबन क्यों जरूरी है? काव्यांश के आधार पर बताइए।

उत्तरः
1. (ग) यह व्यक्ति को आत्म-सम्मान देता है
2. (क) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
3. (ख) स्वावलंबन का प्रतीक
4. गाँधी जी ने चरखे से यह संदेश दिया कि अपनी जरूरतें स्वयं पूरी करें और दूसरों पर निर्भर न रहें — यही स्वावलंबन का मूल है।
5. आज के युग में स्वावलंबन इसलिए जरूरी है क्योंकि स्वाभिमान के साथ जीना तभी संभव है जब हम दूसरों पर निर्भर न हों। श्रम और कौशल से अपनी जरूरतें पूरी करना आत्म-सम्मान देता है। पक्षी के उदाहरण से यह सिद्ध है कि स्वावलंबन प्रकृति का नियम है — हर प्राणी को अपनी राह खुद बनानी होती है।

काव्यांश 23

विज्ञान ने दुनिया बदली है, जीवन को आसान किया,
मोबाइल, इंटरनेट, अंतरिक्ष यान, नई दुनिया को जिया।
बीमारियाँ जो लाइलाज थीं, दवाइयों ने जीत लीं,
असंभव था जो कल तक, विज्ञान ने वे राहें खोल दीं।
पर विज्ञान का उपयोग हो तो, मानवता के हित में,
बम और हथियार बनाना, यह तो है विनाश में।
परमाणु ऊर्जा से बिजली दो, फसलें उगाओ खेतों में,
इसे तबाही का औजार न बनाओ, यह रहे नेमतों में।
वैज्ञानिक सोच और तर्कशीलता, अंधविश्वास हटाती है,
जो सोचे और प्रश्न पूछे, वह दुनिया बनाती है।
आओ विज्ञान को जीवन में, अच्छाई के लिए अपनाएँ,
मानव-कल्याण की राह पर, नई ऊँचाइयाँ पाएँ।

1. विज्ञान के संदर्भ में कवि का क्या मत है?
(क) विज्ञान हमेशा हानिकारक है
(ख) विज्ञान का उपयोग मानव-कल्याण में हो
(ग) विज्ञान केवल हथियार बनाता है
(घ) विज्ञान से बीमारियाँ बढ़ती हैं

2. नीचे दिए गए कथनों पर विचार कीजिए
I. विज्ञान ने जीवन को आसान बनाया है।
II. परमाणु ऊर्जा का उपयोग तबाही के लिए करना चाहिए।
III. वैज्ञानिक सोच अंधविश्वास हटाती है।
IV. विज्ञान का उपयोग मानव-कल्याण में होना चाहिए।
इनमें से कौन-से कथन सही हैं?
(क) केवल I सही है
(ख) केवल I और II सही हैं
(ग) केवल I, III और IV सही हैं
(घ) सभी कथन सही हैं

3. 'अंधविश्वास' किसके द्वारा हटता है?
(क) धर्म-कर्म से (ख) वैज्ञानिक सोच से
(ग) परंपरा से (घ) भक्ति से

4. परमाणु ऊर्जा के संदर्भ में कवि ने क्या संदेश दिया है?

5. विज्ञान वरदान है या अभिशाप — काव्यांश के आधार पर अपना मत प्रकट करें।

उत्तरः
1. (ख) विज्ञान का उपयोग मानव-कल्याण में हो
2. (ग) केवल I, III और IV सही हैं
3. (ख) वैज्ञानिक सोच से
4. कवि का संदेश है कि परमाणु ऊर्जा का उपयोग बिजली और कृषि जैसे रचनात्मक कार्यों में हो, न कि बम और हथियार बनाने में।
5. विज्ञान अपने आप में न वरदान है न अभिशाप — यह उपयोगकर्ता के इरादे पर निर्भर करता है। बीमारियाँ ठीक करना, अंतरिक्ष अन्वेषण और कृषि में विज्ञान वरदान है। परंतु बम और हथियार बनाना अभिशाप है। इसलिए कवि का संदेश है कि वैज्ञानिक सोच को मानव-कल्याण में लगाना चाहिए।

काव्यांश 24

जल ही जीवन है यह सच है, जल बिना सब सूना है,
पर मनुष्य ने इस अमृत को, व्यर्थ में खोया-गुना है।
नल खुला छोड़ना, बर्बाद करना, यह कैसी समझदारी है,
आने वाली पीढ़ी के लिए, यह जल की जिम्मेदारी है।
राजस्थान के रेगिस्तान में, एक-एक बूँद को तरसते हैं,
शहर के घरों में नलों से, पानी को बहाते हैं।
वर्षा का जल सहेजो तुम, तालाब और कुएँ बनाओ,
भूजल को संरक्षित करके, अपनी धरोहर बचाओ।
वृक्ष लगाओ जल बढ़ेगा, धरती हरी रहेगी,
भावी पीढ़ी के लिए जल की, यह मुहिम रंग लाएगी।
जल संरक्षण हर घर का, हर इंसान का दायित्व है,
इस अमृत को बचाओ, यही जीवन का तत्त्व है।

1. जल को 'अमृत' क्यों कहा गया है?
   (क) यह अपर्याप्त और महँगा है
   (ख) यह जीवन के लिए अनिवार्य है
   (ग) यह स्वाद में मीठा होता है
   (घ) यह पहाड़ से आता है

2. काव्यांश में कवि का मूल संदेश/दृष्टिकोण क्या है?
   (क) जल का संरक्षण करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।
   (ख) राजस्थान में पानी की कमी एक बड़ी समस्या है।
   (ग) तालाब और कुएँ अब उपयोगी नहीं रहे।
   (घ) शहरों में जल की कोई कमी नहीं है।

3. राजस्थान का उदाहरण किसलिए दिया गया है?
   (क) वहाँ की संस्कृति दिखाने
   (ख) जल संकट की गंभीरता बताने
   (ग) वहाँ के किले दिखाने
   (घ) वहाँ के त्योहार बताने

4. भावी पीढ़ी के लिए जल संरक्षण क्यों जरूरी है?

5. काव्यांश में वर्णित जल संरक्षण के उपायों का उल्लेख करते हुए उनकी उपयोगिता बताइए।

उत्तरः

1. (ख) यह जीवन के लिए अनिवार्य है
2. (क) जल का संरक्षण करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।
3. (ख) जल संकट की गंभीरता बताने
4. यदि हम आज जल बर्बाद करते रहे तो आने वाली पीढ़ी के लिए जल नहीं बचेगा; इसलिए आज से ही जल संरक्षण करना हमारी जिम्मेदारी है।
5. कवि ने वर्षा जल संग्रह, तालाब और कुएँ बनाना, भूजल संरक्षण और वृक्षारोपण जैसे उपाय बताए हैं। ये उपाय न केवल वर्तमान बल्कि भावी पीढ़ी के लिए भी जल की उपलब्धता सुनिश्चित करते हैं। नल बंद रखना जैसे छोटे प्रयास भी बड़ा फर्क डालते हैं।

काव्यांश 25

निराशा के बादल छटेंगे, आशा की किरण आएगी,
रात कितनी भी काली हो, भोर की लाली आएगी।
जो टूट गए हैं जीवन में, उन्हें फिर उठना होगा,
हर गिरे हुए पत्थर को, एक दिन संभलना होगा।
उत्साह वह बीज है जिससे, सफलता का पेड़ उगता है,
जो दिल में आग रखता है, वह ही आगे बढ़ता है।
नदी थमती नहीं पत्थरों से, रास्ता बना लेती है,
जीवन की बाधाओं को भी, आशा यूँ पार करती है।
हर नई सुबह नया अवसर, जीवन की नई शुरुआत,
आशावादी जीता है हमेशा, यही जीवन की बात।
तो मन में उत्साह जगाओ, आशा का दीप जलाओ,
जीवन की इस राह पर, हँसते-गाते आगे बढ़ते जाओ।

1. 'उत्साह' को किसके समान बताया गया है?
   (क) बीज के समान (ख) नदी के समान
   (ग) सूरज के समान (घ) आग के समान

2. **अभिकथन (A):** आशावादी व्यक्ति जीवन में सदा आगे बढ़ता है।
   कारण (R): आशा वह शक्ति है जो जीवन की बाधाओं को पार करने में सहायता करती है।
   (क) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
   (ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
   (ग) A सही है परंतु R गलत है
   (घ) A गलत है परंतु R सही है

3. नीचे दिए गए कथनों पर विचार कीजिए:
   I. उत्साह बीज है जिससे सफलता उगती है।
   II. निराशा ही जीवन का सत्य है।
   III. नदी पत्थरों से नहीं रुकती।
   IV. हर नई सुबह नया अवसर है।
   इनमें से कौन-से कथन सही हैं?
   (क) केवल I और II सही हैं
   (ख) केवल II और III सही हैं
   (ग) केवल I, III और IV सही हैं
   (घ) सभी कथन सही हैं

4. 'रात कितनी भी काली हो, भोर आएगी' का क्या आशय है?

5. आशा और उत्साह जीवन में किस प्रकार सहायक हैं? काव्यांश के उदाहरणों के आधार पर बताइए।

उत्तरः

1. (क) बीज के समान
2. (क) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
3. (ग) केवल I, III और IV सही हैं

4. इसका आशय है कि जीवन में कठिनाइयाँ कितनी भी अधिक हों, अच्छे दिन अवश्य आएँगे — इसलिए आशा कभी नहीं छोड़नी चाहिए।
5. आशा एक ऐसी शक्ति है जो व्यक्ति को निराशा से उबारती है और आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। उत्साह वह बीज है जिससे सफलता का पेड़ उगता है। नदी पत्थरों से न रुककर रास्ता बना लेती है — यही आशावादी दृष्टिकोण है। जो दिल में उत्साह की आग रखता है, वही जीवन में सफल होता है।

काव्यांश 26

खेल केवल मनोरंजन नहीं,
यह जीवन का आधार है,
शरीर और मन को स्वस्थ करे,
यही खेलों का सार है।
क्रिकेट, हॉकी, कबड्डी और,
कुश्ती की धूम है,
ओलंपिक में तिरंगा लहराए,
यही देश की खूम है।
मैदान में जब खिलाड़ी उतरे,
टीम-भावना जागती है,
हार-जीत से परे होकर,
खेल-भावना दिखती है।
बचपन से खेलना जरूरी है,
हड्डियाँ मजबूत बनती हैं,
नेतृत्व, अनुशासन और साहस,
खेलों से ही मिलती हैं।
पर आज के बच्चे मोबाइल में,
खो गए हैं जाने कहाँ,
मैदान सूने पड़े हैं,
बच्चे ही गए बिखरे यहाँ।
आओ मैदान में आएँ,
खेलें और खूब खेलें,
स्वस्थ तन और मस्त मन से,
जीवन के रंग भर लें।

1. खेल का मुख्य उद्देश्य क्या बताया गया है?
(क) मात्र मनोरंजन करना (ख) तन-मन को स्वस्थ रखना
(ग) प्रतियोगिता जीतना (घ) ओलंपिक में जाना

2. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म काव्यांश के अनुसार सही है?
(क) खेल — अनुशासन और नेतृत्व का स्रोत
(ख) मोबाइल — शारीरिक स्वास्थ्य का साधन
(ग) मैदान — बच्चों के लिए अनावश्यक
(घ) हार — टीम-भावना की कमी

3. आज के बच्चों की समस्या के बारे में कवि क्या कहता है?
(क) वे पढ़ाई नहीं करते
(ख) वे घर से बाहर नहीं निकलते
(ग) वे खाना नहीं खाते
(घ) वे मोबाइल में खो गए हैं

4. खेल-भावना और टीम-भावना में क्या अंतर है? काव्यांश के आधार पर बताइए।

5. काव्यांश में बच्चों और खेलों के संदर्भ में जो चिंता व्यक्त की गई है, उस पर अपने विचार दें।

उत्तरः
1. (ख) तन-मन को स्वस्थ रखना
2. (क) खेल — अनुशासन और नेतृत्व का स्रोत
3. (घ) वे मोबाइल में खो गए हैं
4. टीम-भावना मिलकर खेलने की भावना है जबकि खेल-भावना हार-जीत से परे होकर खेल का आनंद लेना और प्रतिद्वंद्वी का सम्मान करना है।
5. आज बच्चे डिजिटल उपकरणों में इतने डूब गए हैं कि खेल के मैदान सूने पड़ गए हैं। इससे शारीरिक विकास, अनुशासन और टीम-भावना जैसे गुणों का अभाव होता है। मोबाइल की जगह मैदान में खेलना बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है।

काव्यांश 27

जीवन एक यात्रा है भाई, रुकना इसमें होता नहीं,
जो थमा वह पिछड़ गया, रुककर कुछ होता नहीं।
हर पड़ाव पर सीखना है कुछ, हर मोड़ पर जागना है,
जीवन की इस पाठशाला में, हर पल को समझना है।
सुख और दुख दोनों हैं जीवन, एक के बिन एक अधूरा,
जैसे दिन बिन रात नहीं, जीवन का यही स्वरूप पूरा।
मृत्यु से भयभीत न हो, वह तो जीवन का सत्य है,
जो जीया पूरी तरह वह ही, पाता है जीवन का भव्य है।
हर क्षण को जियो पूरी तरह, न बीते की चिंता करो,
न आने वाले की फ़िक्र में डूबो, वर्तमान में जीवन भरो।
यही है जीवन का सार मित्र, यही सबसे बड़ा ज्ञान,
वर्तमान को जी भरकर जीओ, यही जीवन की पहचान।

1. काव्यांश में जीवन की तुलना किससे की गई है?
(क) एक यात्रा से (ख) एक पाठशाला से
(ग) दिन और रात से (घ) सुख और दुख से

2. **अभिकथन (A):** जीवन में अंतिम क्षण को जीना सबसे महत्त्वपूर्ण है।
कारण (R): न बीते की चिंता हो और न भविष्य की फ़िक्र — वर्तमान में जीना ही जीवन का सार है।
(क) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है

3. काव्यांश में सुख-दुख के बारे में क्या कहा गया है?
(क) केवल सुख चाहना चाहिए
(ख) दुख से बचना चाहिए
(ग) दोनों जीवन के अंग हैं
(घ) दुख को खुशी से देखो

4. 'जीवन की पाठशाला' का क्या अर्थ है?

5. मृत्यु के प्रति कवि का दृष्टिकोण क्या है और यह जीवन को कैसे प्रभावित करता है?

उत्तरः
1. (क) एक यात्रा से
2. (घ) A गलत है परंतु R सही है
3. (ग) दोनों जीवन के अंग हैं
4. जीवन की पाठशाला का अर्थ है कि जीवन के हर अनुभव से — सुख-दुख, सफलता-असफलता — कुछ न कुछ सीखा जा सकता है।
5. कवि का मानना है कि मृत्यु जीवन का अटल सत्य है — इससे भयभीत होने का कोई अर्थ नहीं। जो व्यक्ति मृत्यु-भय से मुक्त होकर जीवन के हर क्षण को पूरी तरह जीता है, वही सच्चे अर्थों में जीवन का भव्य अनुभव पाता है। वर्तमान में जीना ही जीवन की सर्वोच्च कला है।

काव्यांश 28

भाषा वह सेतु है जो, मन से मन को जोड़ती है,
शब्दों की ताकत से यह, दूरियाँ सब तोड़ती है।
हिंदी है हमारी पहचान, यह राष्ट्रभाषा मातृभाषा है,
इस भाषा में भारत की, संस्कृति और धरोहर बसी है।
कबीर, तुलसी, मीरा ने, हिंदी में काव्य रचाए,
इनके दोहों और पदों में, जीवन के अर्थ समाए।
आज की नई पीढ़ी को, अपनी भाषा से प्यार करना है,
अंग्रेजी के मोह में खोकर, हिंदी को न भुला देना है।
भाषा से ही संस्कृति जीती, भाषा से ही देश महान,
जो भाषा छोड़ दे अपनी, खो देता है अपनी पहचान।
इसलिए हिंदी बोलो, हिंदी पढ़ो, हिंदी में लिखो,
अपनी भाषा की इस मिठास को, जीवन भर मत छोड़ो।

1. भाषा को 'सेतु' क्यों कहा गया है?
(क) यह नदी पर बनती है
(ख) यह मन से मन को जोड़ती है
(ग) यह कठिन होती है
(घ) यह पुल जैसी दिखती है

2. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म काव्यांश के अनुसार सही है?
(क) तुलसी — हिंदी काव्य के महान कवि
(ख) अंग्रेजी — भारत की राष्ट्रभाषा
(ग) हिंदी — केवल उत्तर भारत की भाषा
(घ) भाषा — केवल संवाद का माध्यम

3. काव्यांश में नई पीढ़ी के लिए क्या संदेश है?
(क) अंग्रेजी पर ध्यान दो
(ख) हिंदी को न भूलो
(ग) केवल विदेशी भाषा सीखो
(घ) भाषा से कोई काम नहीं

4. 'भाषा से संस्कृति जीती है' — इसका आशय क्या है?

5. हिंदी भाषा के प्रति कवि का क्या दृष्टिकोण है? इस संदर्भ में अपने विचार लिखें।

उत्तरः
1. (ख) यह मन से मन को जोड़ती है
2. (क) कबीर और तुलसी — हिंदी काव्य के महान कवि
3. (ख) हिंदी को न भूलो
4. भाषा संस्कृति की वाहक होती है; जब तक भाषा जीवित है तब तक संस्कृति, परंपरा और इतिहास भी जीवित रहते हैं।
5. कवि हिंदी को केवल संवाद का माध्यम नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति और पहचान का आधार मानते हैं। कबीर, तुलसी, मीरा जैसे महाकवियों की रचनाएँ इसी भाषा में हैं। आज अंग्रेजी के मोह में हिंदी उपेक्षित हो रही है। हमें अपनी भाषा का सम्मान करते हुए उसे सीखना, बोलना और लिखना चाहिए।

काव्यांश 29

ईमानदार वह जो न करे,
किसी का अहित कभी,
सच बोले, सच पर चले,
न झुके प्रलोभन में कभी।
लालच की जड़ में जो खड़ा है,
वह झूठ का पेड़ है,
ईमानदारी की जड़ मजबूत,
यह सच्चाई की नींव है।
परीक्षा में नकल न करो,
यह क्षणिक सफलता है,
पर असली जीवन में काम न आए,
यह झूठी खुशहाली है।
व्यापार में, नौकरी में,
हर काम में ईमानदारी रखो,
जो मिले वह काफी है,
बेईमान की राह न देखो।
अंधेरे में भी जो न डिगे,
वह ईमानदार है सच्चा,
जहाँ कोई न देखे तब भी,
सत्य-पथ पर चले जो बच्चा।
ईमानदारी से मिली रोटी,
अमृत के समान है,
बेईमानी से कमाया सोना,
हलाहल जहर समान है।

1. ईमानदारी की परिभाषा क्या है?
(क) जब कोई देखे तो सच बोलना
(ख) सदा सत्य-पथ पर चलना
(ग) केवल परीक्षा में नकल न करना
(घ) व्यापार में लाभ कमाना

2. काव्यांश में कवि का मूल संदेश/दृष्टिकोण क्या है?
(क) ईमानदारी ही सच्चा जीवन-मूल्य है और यही सफलता की नींव है।
(ख) परीक्षा में नकल करना कभी-कभी जरूरी होता है।
(ग) बेईमानी से धन कमाने में कोई हर्ज नहीं है।
(घ) लालच व्यक्ति को आगे बढ़ाता है।

3. 'ईमानदारी से मिली रोटी अमृत समान है' — यह किस बात का प्रमाण है?
(क) ईमानदारी सुख देती है
(ख) रोटी मीठी होती है
(ग) अमृत शरीर को शक्ति देता है
(घ) गरीबी अच्छी होती है

4. काव्यांश में 'लालच की जड़' और 'ईमानदारी की जड़' में क्या अंतर बताया गया है?

5. परीक्षा में नकल और जीवन में ईमानदारी के संबंध पर काव्यांश के आधार पर विचार करें।

उत्तरः
1. (ख) सदा सत्य-पथ पर चलना
2. (क) ईमानदारी ही सच्चा जीवन-मूल्य है और यही सफलता की नींव है।
3. (क) ईमानदारी सुख देती है
4. लालच की जड़ में झूठ का पेड़ उगता है जो नाशवान है, जबकि ईमानदारी की जड़ मजबूत और स्थायी होती है जो सच्चाई की नींव है।
5. परीक्षा में नकल क्षणिक सफलता देती है परंतु वास्तविक जीवन में काम नहीं आती। इसके विपरीत, ईमानदारी से अर्जित ज्ञान और सफलता स्थायी होती है। कवि का संदेश है कि बेईमानी से कमाया धन जहर के समान है और ईमानदारी से मिली रोटी अमृत तुल्य। इसलिए हर क्षेत्र में ईमानदारी को अपनाना चाहिए।

काव्यांश 30

कल की सोचो, आने वाले, भारत के उन सपनों की,
जहाँ हर बच्चा पढ़े-लिखे, न हो उपेक्षा किसी की।
जहाँ हर घर में रोशनी हो, भूख न सताए किसी को,
समानता का सूरज निकले, न हो अंधेरा किसी को।
विज्ञान और तकनीक से हम, नई ऊँचाइयाँ पाएँगे,
स्वस्थ, शिक्षित और समृद्ध भारत, मिलकर हम बनाएँगे।
किसान खुशहाल हो, मजदूर को मिले उचित दाम,
नारी सम्मान पाए, बुजुर्गों को मिले आराम।
पर्यावरण स्वच्छ रहे, नदियाँ निर्मल बहें,
देश की मिट्टी में फूल खिलें, गीत खुशियों के कहें।
युवा हैं हम, जिम्मेदार हैं, इस सपने को साकार करो,
आने वाले भारत के लिए, आज से ही तैयार रहो।

1. भविष्य के भारत का क्या स्वप्न दिखाया गया है?
(क) शिक्षित, समृद्ध और समान भारत
(ख) केवल धनी और बलशाली भारत
(ग) विदेशी तकनीक पर निर्भर भारत
(घ) केवल शहरी विकास वाला भारत

2. नीचे दिए गए कथनों पर विचार कीजिए
I. भविष्य के भारत में हर बच्चा शिक्षित हो।
II. किसान और मजदूर की उपेक्षा होनी चाहिए।
III. पर्यावरण स्वच्छ और नदियाँ निर्मल हों।
IV. युवाओं की जिम्मेदारी है इस सपने को साकार करना।
इनमें से कौन-से कथन सही हैं?
(क) केवल I सही है
(ख) केवल I और II सही हैं
(ग) केवल I, III और IV सही हैं
(घ) सभी कथन सही हैं

3. काव्यांश में युवाओं की क्या भूमिका बताई गई है?
(क) केवल पढ़ाई करना
(ख) देश का सपना साकार करना
(ग) विदेश जाना
(घ) सरकार की प्रतीक्षा करना

4. कवि ने 'आज से ही तैयार रहो' क्यों कहा है?

5. काव्यांश में वर्णित आदर्श भारत की कल्पना में कौन-कौन से महत्त्वपूर्ण पहलू हैं? उनका विश्लेषण करें।

उत्तरः
1. (क) शिक्षित, समृद्ध और समान भारत
2. (ग) केवल I, III और IV सही हैं
3. (ख) देश का सपना साकार करना
4. कवि का संदेश है कि भविष्य के भारत का निर्माण आज से ही प्रारंभ करना होगा — युवाओं को अभी से जिम्मेदार और सक्रिय बनना होगा।
5. कवि के आदर्श भारत में शिक्षा, समानता, स्वास्थ्य, कृषि, श्रमिक अधिकार, नारी-सम्मान, बुजुर्गों की देखभाल और पर्यावरण संरक्षण — ये सभी पहलू शामिल हैं। यह एक समग्र दृष्टिकोण है जो केवल आर्थिक विकास तक सीमित नहीं। युवाओं को इस सपने को साकार करने की जिम्मेदारी लेनी होगी।

अध्याय 1

उपसर्ग

1. परिचय

हिंदी में शब्दों का निर्माण कई प्रकार से होता है। उपसर्ग उन्हीं में से एक महत्त्वपूर्ण तरीका है। किसी मूल शब्द के पहले कुछ जोड़ने से नया शब्द बनता है — इसी को उपसर्ग कहते हैं।

उपसर्ग की परिभाषा
वे शब्दांश जो किसी मूल शब्द (धातु या संज्ञा) के पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता लाते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं। 'उपसर्ग' = उप (पास/निकट) + सर्ग (सृष्टि/बनाना) — अर्थात् पास में जोड़कर नया शब्द बनाना।

उपसर्ग की विशेषताएँ

उपसर्ग की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- उपसर्ग सदैव शब्द के आरंभ में जुड़ता है — कभी बीच में या अंत में नहीं।
- उपसर्ग जुड़ने से मूल शब्द का अर्थ बदल जाता है, बढ़ जाता है या विपरीत हो जाता है।
- उपसर्ग स्वयं अकेले कोई अर्थ नहीं रखते — ये शब्दांश हैं, पूर्ण शब्द नहीं।
- एक उपसर्ग से अनेक शब्द बन सकते हैं।
- हिंदी में संस्कृत, हिंदी और उर्दू — तीनों के उपसर्ग प्रयुक्त होते हैं।

सरल उदाहरण से समझिए

मूल शब्द	उपसर्ग	नया शब्द	अर्थ में परिवर्तन
कार	प्र	प्रकार	प्रकार का अर्थ बना
काल	अ	अकाल	बुरा/अभाव का अर्थ
मान	स	सम्मान	अच्छा/साथ का अर्थ
चार	दुस्	दुश्चरित्र	बुरा/कठिन का अर्थ
लाभ	नि	निलाभ	बिना/रहित

उपसर्ग = शब्द के आगे + अर्थ में बदलाव

2. उपसर्ग के प्रकार

हिंदी में मुख्यतः तीन प्रकार के उपसर्ग प्रयोग होते हैं:

1. **संस्कृत के उपसर्ग :** अ, अप, अनु, अव, आ, उत्, उप, दुर्, दुस्, नि, निर्, परा, परि, प्र, प्रति, वि, सम्, सु
2. **हिंदी के उपसर्ग :** अ, अन, कु, दु, नि, भर, स, सु, उन, औ
3. **उर्दू/अरबी-फारसी के उपसर्ग :** बे, बद, ना, ला, हर, बिल, दर, कम, खुश, गैर, हम

3. संस्कृत के प्रमुख उपसर्ग

ये उपसर्ग सबसे अधिक प्रचलित और परीक्षा में सबसे अधिक पूछे जाने वाले हैं।

अ / अन् — अभाव, विरोध, नहीं

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
अ	अकाल	काल का अभाव — सूखा/दुर्भिक्ष
अ	अधर्म	धर्म का विरोध
अ	अज्ञान	ज्ञान का अभाव
अन्	अनादर	आदर का अभाव
अन्	अनुचित	जो उचित न हो
अन्	अनपढ़	पढ़ा-लिखा नहीं

अप — बुरा, हीन, विरुद्ध

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
अप	अपमान	मान का विरोध — बेइज्जती
अप	अपयश	यश का विरोध — बदनामी
अप	अपशब्द	बुरा शब्द — गाली
अप	अपव्यय	बुरा व्यय — फिज़ूलखर्ची

अनु — पीछे, समान, क्रम से

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
अनु	अनुकरण	पीछे-पीछे करना — नकल करना
अनु	अनुभव	बाद में होने वाला बोध
अनु	अनुशासन	क्रम से चलना — नियम पालना
अनु	अनुवाद	एक भाषा से दूसरी में रूपांतरण

आ — तरफ, तक, से, थोड़ा

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
आ	आगमन	आना — इस तरफ आना
आ	आजन्म	जन्म से लेकर — जीवनभर
आ	आदान	लेना
आ	आकर्षण	खींचने की क्रिया

प्र — आगे, अधिक, उत्कृष्ट

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
प्र	प्रगति	आगे बढ़ना
प्र	प्रचार	खूब फैलाना
प्र	प्रसिद्ध	अधिक प्रसिद्ध
प्र	प्रयोग	उपयोग में लाना
प्र	प्रवेश	अंदर जाना

सम् / सं — साथ, अच्छा, पूरा

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
सम्	संगठन	साथ मिलकर बनाना
सम्	संभव	होने योग्य
सम्	संतुलन	बराबर रखना
सम्	सम्मान	अच्छा मान — इज्जत
सं	संस्कार	अच्छे गुण डालना

वि — विशेष, विरुद्ध, अलग

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
वि	विशेष	खास — अलग
वि	विकास	फैलना — बढ़ना
वि	विरोध	खिलाफ होना
वि	विज्ञान	विशेष ज्ञान
वि	विदेश	अपने देश से अलग देश

नि / निर् / निस् — बिना, बाहर, नहीं

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
नि	निडर	डर के बिना
निर्	निर्दोष	दोष के बिना — बेगुनाह
निर्	निर्माण	बनाना
निस्	निश्चय	संदेह के बिना — पक्का
निस्	निस्संदेह	बिना संदेह के

सु — अच्छा, सुंदर, सरल

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
सु	सुपुत्र	अच्छा पुत्र
सु	सुगंध	अच्छी गंध
सु	सुलभ	आसानी से मिलने वाला
सु	सुशिक्षित	अच्छी तरह पढ़ा-लिखा

दुर् / दुस् — बुरा, कठिन

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
दुर्	दुर्भाग्य	बुरा भाग्य
दुर्	दुर्गम	जहाँ जाना कठिन हो
दुस्	दुश्चरित्र	बुरा चरित्र
दुस्	दुस्साहस	बुरा/अत्यधिक साहस

उप — निकट, सहायक, छोटा

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
उप	उपकार	भला करना — सहायता
उप	उपनाम	असली नाम के पास का नाम — तखल्लुस
उप	उपस्थित	पास में मौजूद
उप	उपसंहार	निकट से समेटना — निष्कर्ष

4. हिंदी के प्रमुख उपसर्ग

ये उपसर्ग देशज/हिंदी मूल के हैं और आम बोलचाल में अधिक प्रयुक्त होते हैं।

अ / अन — अभाव, नहीं (हिंदी)

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
अ	अछूता	जिसे छुआ न गया हो
अन	अनजान	जो जाना-पहचाना न हो
अन	अनमोल	जिसका मोल न हो — अत्यंत कीमती
अन	अनदेखा	जो देखा न गया हो

कु — बुरा, हीन

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
कु	कुपुत्र	बुरा पुत्र
कु	कुकर्म	बुरा काम
कु	कुमार्ग	बुरा रास्ता
कु	कुख्यात	बुरी तरह प्रसिद्ध

दु — बुरा, कठिन (हिंदी)

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
दु	दुर्जन	बुरा आदमी
दु	दुकाल	बुरा काल — अकाल
दु	दुखद	दु:ख देने वाला

नि — नहीं, बिना (हिंदी)

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
नि	निडर	डर के बिना
नि	निकम्मा	बिना काम का — आलसी
नि	निहत्था	बिना हथियार के

स / सु — साथ, अच्छा (हिंदी)

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
स	सफल	फल सहित — कामयाब
स	सजीव	जीव सहित — जीवित
सु	सुडौल	अच्छे ढाँचे वाला
सु	सुघड़	अच्छी तरह बना हुआ

औ / उन — कम, हीन

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
औ	औगुण	बुरा गुण — अवगुण
औ	औसर	ऐसा समय जो अच्छा हो
उन	उन्नीस	बीस से एक कम
उन	उनतीस	तीस से एक कम

5. उर्दू / अरबी-फारसी के प्रमुख उपसर्ग

ये उपसर्ग उर्दू मूल के हैं और हिंदी में खूब प्रचलित हैं।

बे — बिना, रहित

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
बे	बेकार	काम के बिना — व्यर्थ
बे	बेईमान	ईमान के बिना — धोखेबाज
बे	बेसहारा	सहारे के बिना
बे	बेहाल	हाल/दशा बुरी

बद — बुरा

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
बद	बदनाम	बुरा नाम — कुप्रसिद्ध
बद	बदतमीज	बुरे तमीज वाला — अशिष्ट
बद	बदकिस्मत	बुरी किस्मत वाला
बद	बदसूरत	बुरी सूरत वाला

ना — नहीं, अभाव

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
ना	नालायक	लायक नहीं — अयोग्य
ना	नाकाम	काम न आने वाला — असफल
ना	नासमझ	समझ के बिना
ना	नापसंद	जो पसंद न हो

ला — बिना, रहित

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
ला	लाचार	चारे (उपाय) के बिना — मजबूर
ला	लापता	जिसका पता न हो — गायब
ला	लावारिस	वारिस (मालिक) के बिना
ला	लाजवाब	जवाब न दे सके — बेमिसाल

हम — साथ, बराबर

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
हम	हमदर्द	दर्द में साथ देने वाला — हमदर्द
हम	हमराह	साथ चलने वाला — साथी
हम	हमउम्र	समान उम्र वाला

खुश — प्रसन्न, अच्छा

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
खुश	खुशनुमा	प्रसन्न करने वाला — सुंदर
खुश	खुशमिजाज	अच्छे स्वभाव वाला
खुश	खुशकिस्मत	अच्छी किस्मत वाला

गैर — अलग, बिना

उपसर्ग	बने हुए शब्द	अर्थ
गैर	गैरहाजिर	अनुपस्थित
गैर	गैरजरूरी	जो जरूरी न हो
गैर	गैरकानूनी	कानून के विरुद्ध

नोट : बे, बद, ना, ला — ये चारों उर्दू उपसर्ग अभाव/बुराई का अर्थ देते हैं।

6. एक नज़र में — सभी उपसर्ग

यह तालिका परीक्षा से पहले त्वरित पुनरावृत्ति के लिए है:

प्रकार	उपसर्ग	अर्थ + उदाहरण
संस्कृत	अ/अन्	अभाव/नहीं — अकाल, अनादर
संस्कृत	अप	बुरा — अपमान, अपयश
संस्कृत	अनु	पीछे/समान — अनुकरण, अनुभव
संस्कृत	आ	तरफ/तक — आगमन, आजन्म
संस्कृत	प्र	आगे/अधिक — प्रगति, प्रचार
संस्कृत	सम/सं	साथ/अच्छा — सम्मान, संगठन
संस्कृत	वि	विशेष/विरुद्ध — विशेष, विरोध
संस्कृत	नि/निर्	बिना/बाहर — निडर, निर्दोष
संस्कृत	सु	अच्छा — सुपुत्र, सुलभ
संस्कृत	दुर्/दुस्	बुरा — दुर्भाग्य, दुश्चरित्र
संस्कृत	उप	निकट/सहायक — उपकार, उपनाम
संस्कृत	परि	चारों ओर — परिक्रमा, परिवार
हिंदी	कु	बुरा — कुपुत्र, कुकर्म
हिंदी	अन	नहीं — अनजान, अनमोल
हिंदी	नि	बिना — निडर, निकम्मा
हिंदी	स/सु	अच्छा/साथ — सफल, सुडौल
उर्दू	बे	बिना — बेकार, बेईमान
उर्दू	बद	बुरा — बदनाम, बदतमीज
उर्दू	ना	नहीं — नालायक, नाकाम
उर्दू	ला	बिना — लाचार, लापता
उर्दू	हम	साथ — हमदर्द, हमराह
उर्दू	खुश	प्रसन्न — खुशनुमा, खुशमिजाज
उर्दू	गैर	अलग — गैरहाजिर, गैरकानूनी

अभ्यास प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. उपसर्ग किसे कहते हैं? एक वाक्य में सटीक परिभाषा लिखिए।

   उत्तरः

   वे शब्दांश जो किसी मूल शब्द के आरंभ में जुड़कर उसके अर्थ में विशेषता, नयापन या परिवर्तन लाते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।

2. 'अधखिला' और 'परलोक' शब्दों में से उपसर्ग अलग करके लिखिए।

   उत्तरः

   'अधखिला' में 'अध' तथा 'परलोक' में 'पर' उपसर्ग है।

3. 'उद्घाटन' शब्द का उपसर्ग और मूल शब्द अलग कीजिए।

   उत्तरः

   उपसर्ग: उत् (या उद्) | मूल शब्द: घाटन

4. 'बिनदेखा' और 'चौमासा' में प्रयुक्त उपसर्ग किस भाषा वर्ग के हैं?

   उत्तरः

   ये दोनों हिंदी (तद्भव) भाषा के उपसर्ग हैं।

5. 'बददुआ' और 'लाइलाज' में से उपसर्ग अलग कीजिए। ये किस भाषा के उपसर्ग हैं?

   उत्तरः

   'बददुआ' में बद तथा 'लाइलाज' में ला उपसर्ग है। ये दोनों उर्दू-फ़ारसी (विदेशी) भाषा के उपसर्ग हैं।

6. 'निर्मल' शब्द का उपसर्ग और मूल शब्द अलग कीजिए।

   उत्तरः

   उपसर्ग: निर् | मूल शब्द: मल

7. 'कमउम्र' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग का नाम और उसका अर्थ लिखिए।

   उत्तरः

   उपसर्ग: कम | अर्थ: थोड़ा या हीन।

8. 'दुर्घटना' शब्द में कौन-सा तत्सम उपसर्ग लगा है और उसका अर्थ क्या है?

   उत्तरः

   उपसर्ग: दुर् | अर्थ: बुरा या कठिन।

9. 'अनुचर' शब्द का उपसर्ग और मूल शब्द अलग कीजिए तथा निर्मित शब्द का अर्थ बताइए।

   उत्तरः

   उपसर्ग: अनु | मूल शब्द: चर | अर्थ: पीछे चलने वाला (सेवक)।

10. 'प्रत्यक्ष' शब्द में से उपसर्ग और मूल शब्द अलग करते समय क्या सावधानी रखनी चाहिए?

    उत्तरः

    इसमें संधि नियम के कारण 'प्र' या 'प्रत्य' नहीं, बल्कि 'प्रति' उपसर्ग है; इसका सही विच्छेद प्रति + अक्ष होगा।

11. 'अनादि' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग का वास्तविक रूप (हलंत सहित) लिखिए।

    उत्तरः

    इसमें प्रयुक्त वास्तविक उपसर्ग 'अन्' है (अन् + आदि)।

12. 'दुश्चरित्र' शब्द का उपसर्ग और मूल शब्द अलग कीजिए।

    उत्तरः

    उपसर्ग: दुस् (या दुश्) | मूल शब्द: चरित्र

13. 'खुशखबरी' शब्द का उपसर्ग और मूल शब्द अलग कीजिए।

    उत्तरः

    उपसर्ग: खुश | मूल शब्द: खबरी

14. 'सदाचार' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग और मूल शब्द को अलग-अलग करके लिखिए।

    उत्तरः

    उपसर्ग: सत् | मूल शब्द: आचार

15. 'अभ्युदय' शब्द में से उपसर्ग और मूल शब्द अलग कीजिए।

    उत्तरः

    उपसर्ग: अभि | मूल शब्द: उदय

16. 'पराजय' शब्द में कौन-सा उपसर्ग है और उसका अर्थ क्या है?

    उत्तरः

    उपसर्ग: परा | अर्थ: विपरीत, उल्टा या पीछे।

17. 'निःसंतान' शब्द में व्याकरणिक नियम के अनुसार मूल उपसर्ग कौन-सा माना जाएगा?

    उत्तरः

    व्याकरणिक नियम के अनुसार इसमें मूल उपसर्ग 'निस्' माना जाएगा।

18. 'गैरहाजिर' शब्द का उपसर्ग अलग कीजिए और बताइए कि यह शब्द किस अर्थ को प्रकट करता है।

    उत्तरः

    उपसर्ग: गैर | अर्थ: हाजिर न होना (अनुपस्थित)।

19.'अ' और 'अन्' उपसर्गों का प्रयोग किस मुख्य अर्थ को दर्शाने के लिए किया जाता है?

उत्तरः
इन दोनों उपसर्गों का प्रयोग 'अभाव', 'निषेध' या 'नहीं' के अर्थ को दर्शाने के लिए किया जाता है।

20.'प्रतिदिन' और 'प्रतिकूल' में प्रयुक्त 'प्रति' उपसर्ग के क्रमशः दो अलग-अलग अर्थ क्या हैं?

उत्तरः
'प्रतिदिन' में प्रति का अर्थ 'प्रत्येक' है, जबकि 'प्रतिकूल' में प्रति का अर्थ 'विरुद्ध' या 'उल्टा' है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग और मूल शब्द अलग-अलग कीजिए तथा निर्मित शब्द का संक्षिप्त अर्थ भी लिखिए:
(i) अवनति (ii) परलोक (iii) सुसंस्कृत (iv) हरदम

उत्तरः
(i) अवनति → उपसर्ग: अव | मूल शब्द: नति | अर्थ: नीचे गिरना या पतन।
(ii) परलोक → उपसर्ग: पर | मूल शब्द: लोक | अर्थ: दूसरा लोक (दूसरी दुनिया)।
(iii) सुसंस्कृत → उपसर्ग: सु | मूल शब्द: संस्कृत | अर्थ: अच्छे संस्कारों वाला या श्रेष्ठ।
(iv) हरदम → उपसर्ग: हर | मूल शब्द: दम | अर्थ: प्रत्येक पल या हमेशा।

2. 'अति' और 'अधि' उपसर्गों के अर्थ में क्या अंतर है? दोनों से एक-एक शब्द बनाकर उनके अर्थगत अंतर को स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः
'अति' उपसर्ग का अर्थ 'अधिक' या 'सीमा से परे' होता है; जैसे — अति + वृष्टि = अतिवृष्टि (अत्यधिक वर्षा)।
'अधि' उपसर्ग का अर्थ 'प्रधान', 'श्रेष्ठ' या 'ऊपर' होता है; जैसे — अधि + कार = अधिकार (प्रधानता या हक)।
इस प्रकार दोनों उपसर्ग शब्द के अर्थ को बिल्कुल अलग दिशा देते हैं।

3. संस्कृत (तत्सम) और उर्दू-फ़ारसी (आगत) उपसर्गों में दो मुख्य अंतर उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः
1. **संस्कृत उपसर्ग:** ये केवल संस्कृत के तत्सम मूल शब्दों के साथ ही जुड़ते हैं और भाषा को साहित्यिक रूप देते हैं; जैसे — वि + ज्ञान = विज्ञान।
2. **उर्दू-फ़ारसी उपसर्ग:** ये विदेशी भाषाओं के शब्दखंड हैं जो मुख्य रूप से उर्दू या आम बोलचाल के अरबी-फ़ारसी शब्दों के साथ जुड़ते हैं; जैसे — ना + समझ = नासमझ।

4. 'हार' एक ऐसा मूल शब्द है जिसमें अलग-अलग उपसर्ग लगाने से उसके अर्थ पूरी तरह बदल जाते हैं। किन्हीं दो उपसर्गों का प्रयोग करके इसे प्रमाणित कीजिए।

उत्तरः
मूल शब्द 'हार' में भिन्न उपसर्ग लगाने पर निम्नलिखित अर्थ परिवर्तन होते हैं:
1. आ + हार = आहार (अर्थ: भोजन)
2. उप + हार = उपहार (अर्थ: भेंट या तोहफ़ा)

यह उदाहरण सिद्ध करता है कि उपसर्ग शब्द के मूल अर्थ को पूरी तरह बदलने की क्षमता रखते हैं।

5. 'कभी-कभी एक ही शब्द के निर्माण में दो उपसर्गों का एक साथ प्रयोग भी होता है।' 'व्याकरण' और 'असुरक्षित' शब्दों का विच्छेद करके इस कथन की समीक्षा कीजिए।

उत्तरः
यह कथन पूरी तरह सत्य है। कुछ शब्दों के आरंभ में दो उपसर्ग क्रमिक रूप से जुड़ते हैं:
1. **व्याकरण:** वि (प्रथम उपसर्ग) + आ (द्वितीय उपसर्ग) + करण (मूल शब्द)।
2. **असुरक्षित:** अ (प्रथम उपसर्ग) + सु (द्वितीय उपसर्ग) + रक्षित (मूल शब्द)।

6. निम्नलिखित उपसर्गों में से प्रत्येक का प्रयोग करते हुए दो-दो नए शब्दों का निर्माण कीजिए:
(i) सम् (ii) बे (iii) उत् (iv) ला

उत्तरः
(i) सम् — संतोष (सम् + तोष), संकल्प (सम् + कल्प)।
(ii) बे — बेकसूर (बे + कसूर), बेकाबू (बे + काबू)।
(iii) उत् — उन्नति (उत् + नति), उत्साह (उत् + साह)।
(iv) ला — लावारिस (ला + वारिस), लाचार (ला + चार)।

7. 'उपसर्ग लगाने से शब्द का अर्थ अपने मूल शब्द के अर्थ से बिल्कुल विपरीत (उल्टा) हो जाता है' — इस कथन को दो स्पष्ट उदाहरणों से सिद्ध कीजिए।

उत्तरः
जब किसी सकारात्मक या सामान्य मूल शब्द के साथ विलोमार्थक या निषेधवाचक उपसर्ग जुड़ता है, तो अर्थ पूरी तरह उलट जाता है:
उदाहरण 1: 'यश' (कीर्ति) शब्द के आगे 'अप' उपसर्ग लगाने से वह 'अपयश' (बदनामी) बन जाता है।
उदाहरण 2: 'सत्य' (सच) शब्द के आगे 'अ' उपसर्ग लगाने से वह 'असत्य' (झूठ) बन जाता है।

8. नीचे दी गई तालिका में दिए गए शब्दों के आधार पर रिक्त स्थानों (उपसर्ग और मूल शब्द) की पूर्ति कीजिए:

	शब्द	**उपसर्ग**	**मूल शब्द**
(i)	निडर	....	....
(ii)	दुर्दशा	....	....
(iii)	परोपकार	....	....

उत्तरः

	शब्द	**उपसर्ग**	**मूल शब्द**
(i)	निडर	नि	डर
(ii)	दुर्दशा	दुर्	दशा
(iii)	परोपकार	पर	उपकार

9. 'परिवर्तन' और 'सदाचार' शब्दों में से उपसर्ग अलग कीजिए तथा उन उपसर्गों का प्रयोग करते हुए एक-एक अन्य नया शब्द बनाइए।

उत्तरः

1. **परिवर्तनः** इसमें 'परि' उपसर्ग है। इससे बना अन्य शब्दः परिवार या परिक्रमा।
2. **सदाचारः** इसमें 'सत्' उपसर्ग है। इससे बना अन्य शब्दः सज्जन (सत् + जन) या सत्कर्म।

10. स्तंभ 'क' में दिए गए उपसर्गों को स्तंभ 'ख' में दिए गए उनके सही अर्थों और निर्मित उदाहरणों से सुमेलित कीजिए:

	स्तंभ 'क' (उपसर्ग)		स्तंभ 'ख' (अर्थ और उदाहरण)
(1)	अव	(क)	हीन / थोड़ा — कमअक्ल, कमउम्र
(2)	गैर	(ख)	बुरा / नीच — कुपुत्र, कुमार्ग
(3)	कु	(ग)	हीन / नीचे — अवगुण, अवनति
(4)	कम	(घ)	भिन्न / निषेध — गैरकानूनी, गैरहाजिर

उत्तरः

(1) अव → (C) हीन / नीचे — अवगुण, अवनति
(2) गैर → (D) भिन्न / निषेध — गैरकानूनी, गैरहाजिर
(3) कु → (B) बुरा / नीच — कुपुत्र, कुमार्ग
(4) कम → (A) हीन / थोड़ा — कमअक्ल, कमउम्र

अध्याय 2

प्रत्यय

1. परिचय

उपसर्ग की तरह प्रत्यय भी शब्द-निर्माण का एक महत्त्वपूर्ण तरीका है। अंतर केवल यह है कि उपसर्ग शब्द के आगे लगता है और प्रत्यय शब्द के पीछे।

प्रत्यय की परिभाषा
वे शब्दांश जो किसी मूल शब्द (धातु या संज्ञा) के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाते हैं और अर्थ में परिवर्तन या विशेषता लाते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं। 'प्रत्यय' = प्रति (पीछे/बाद में) + अय (चलना) — अर्थात् शब्द के बाद में आने वाला।

प्रत्यय की विशेषताएँ

- प्रत्यय सदैव शब्द के अंत में जुड़ता है — कभी आरंभ में नहीं।
- प्रत्यय जुड़ने से मूल शब्द का अर्थ बदल जाता है या नई जातिवाचक/भाववाचक संज्ञा बनती है।
- प्रत्यय स्वयं अकेले कोई अर्थ नहीं रखते — ये शब्दांश हैं।
- एक ही प्रत्यय से अनेक शब्द बन सकते हैं।
- प्रत्यय जुड़ने पर कभी-कभी मूल शब्द में भी थोड़ा परिवर्तन हो जाता है।
- हिंदी में प्रत्यय मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं — कृत् प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय।

उपसर्ग और प्रत्यय में मुख्य अंतर

उपसर्ग	प्रत्यय
शब्द के आगे (पहले) जुड़ता है। उदाहरण: प्र + गति = प्रगति।	शब्द के पीछे (अंत में) जुड़ता है। उदाहरण: लिख + आई = लिखाई।
अर्थ में परिवर्तन लाता है। उदाहरण: अप + मान = अपमान।	नई संज्ञा/विशेषण/क्रिया बनाता है। उदाहरण: मीठा + स = मिठास।

प्रत्यय = शब्द के पीछे + नया शब्द बनाना

2. प्रत्यय के प्रकार

हिंदी में प्रत्यय मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं:

1. कृत् प्रत्यय

- ये प्रत्यय क्रिया की धातु के साथ जुड़ते हैं।
- इनसे बने शब्द 'कृदंत' कहलाते हैं।
- उदाहरण: लिख + आई = लिखाई, गा + ना = गाना
- प्रमुख कृत् प्रत्यय: अन, आ, आई, अक, इत, आवट, ना आदि

2. तद्धित प्रत्यय

- ये प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के साथ जुड़ते हैं।
- इनसे बने शब्द 'तद्धितांत' कहलाते हैं।
- उदाहरण: सुंदर + ता = सुंदरता, धर्म + इक = धार्मिक
- प्रमुख तद्धित प्रत्यय: आई, पन, ता, त्व, इक, वाला, हारा, आहट आदि

नोट: वाला, हारा, आहट, पन जैसे हिंदी मूल के प्रत्यय भी तद्धित प्रत्यय के अंतर्गत ही आते हैं।

3. कृत् प्रत्यय

जो प्रत्यय क्रिया की धातु के साथ जुड़कर नया शब्द बनाते हैं, वे कृत् प्रत्यय कहलाते हैं। इनसे बने शब्दों को 'कृदंत' कहते हैं। ये मुख्यतः संज्ञा या विशेषण बनाते हैं।

अन — क्रिया से संज्ञा बनाना (कार्य/भाव)

प्रत्यय	मूल शब्द	नया शब्द	अर्थ
अन	पढ़	पढ़न	पढ़ने की क्रिया
अन	लिख	लिखन	लिखने की क्रिया
अन	मिल	मिलन	मिलने का भाव
अन	चल	चलन	चलने का तरीका — रिवाज

आ — भूतकालिक कृदंत / संज्ञा

प्रत्यय	मूल शब्द	नया शब्द	अर्थ
आ	घेर	घेरा	चारों ओर से बंद करना
आ	झूल	झूला	झूलने वाला
आ	बोल	बोला	बोलने की क्रिया (भूत)
आ	पढ़	पढ़ा	पढ़ा हुआ (भूतकाल)

आई — कार्य, भाव, मूल्य

प्रत्यय	मूल शब्द	नया शब्द	अर्थ
आई	लिख	लिखाई	लिखने का काम / मजदूरी
आई	पढ़	पढ़ाई	पढ़ने-पढ़ाने का काम
आई	सील	सिलाई	सीने का काम / मजदूरी
आई	कट	कटाई	काटने का काम
आई	धुल	धुलाई	धोने का काम / मजदूरी

अक — कर्ता (काम करने वाला)

प्रत्यय	मूल शब्द	नया शब्द	अर्थ
अक	पाल	पालक	पालने वाला — रक्षक
अक	लेख	लेखक	लिखने वाला
अक	पाठ	पाठक	पढ़ने वाला
अक	नायक	नायक	नेतृत्व करने वाला
अक	गायक	गायक	गाने वाला

इत — विशेषण (जो हो गया हो / युक्त)

प्रत्यय	मूल शब्द	नया शब्द	अर्थ
इत	फूल	फूलित	खिला हुआ
इत	आनंद	आनंदित	आनंद से भरा
इत	पुरस्कार	पुरस्कृत	पुरस्कार दिया गया
इत	शिक्षा	शिक्षित	शिक्षा पाया हुआ
इत	विकास	विकसित	विकास हुआ / उन्नत

आना — क्रिया से विशेषण / संज्ञा

प्रत्यय	मूल शब्द	नया शब्द	अर्थ
आना	भूल	भुलाना	भूल जाने देना
आना	जान	जनाना	जनाने से संबंधित
आना	मर्द	मर्दाना	मर्द जैसा — पुरुषोचित

आव / आवट — भाव, रोग, विकार

प्रत्यय	मूल शब्द	नया शब्द	अर्थ
आव	बह	बहाव	बहने की स्थिति
आव	घुम	घुमाव	घुमने की स्थिति
आवट	मिल	मिलावट	मिलाने की क्रिया — कृत्रिम मेल
आवट	सज	सजावट	सजाने का काम — साज-सज्जा
आवट	थक	थकावट	थकने की अवस्था

ना — क्रियार्थक संज्ञा (काम का नाम)

प्रत्यय	मूल शब्द	नया शब्द	अर्थ
ना	खा	खाना	खाने की क्रिया / भोजन
ना	पी	पीना	पीने की क्रिया
ना	सो	सोना	सोने की क्रिया / स्वर्ण
ना	गा	गाना	गाने की क्रिया / गीत
ना	लिख	लिखना	लिखने की क्रिया

कृत् प्रत्यय = क्रिया + प्रत्यय → नया शब्द (कृदंत)

4. तद्धित प्रत्यय

जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के साथ जुड़कर नया शब्द बनाते हैं, वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। इनसे बने शब्दों को 'तद्धितांत' कहते हैं। ये भाव, गुण, स्थान, संबंध आदि का बोध कराते हैं।

आई — भाव, गुण, पद (तद्धित)

प्रत्यय	मूल शब्द	नया शब्द	अर्थ
आई	बड़ा	बड़ाई	बड़े होने का भाव — प्रशंसा
आई	बुरा	बुराई	बुरे होने का भाव
आई	चतुर	चतुराई	चतुर होने का गुण
आई	मिठा	मिठाई	मीठी चीज — मिष्ठान्न
आई	लंबा	लंबाई	लंबे होने का माप

पन — भाव, अवस्था, स्वभाव

प्रत्यय	मूल शब्द	नया शब्द	अर्थ
पन	बच्चा	बचपन	बच्चे की अवस्था
पन	लड़का	लड़कपन	लड़के की अवस्था
पन	बूढ़ा	बुढ़ापन	बूढ़े होने की अवस्था
पन	अपना	अपनापन	अपनेपन का भाव
पन	मोटा	मोटापन	मोटे होने का भाव

ता / त्व — गुण, धर्म, भाव (अमूर्त संज्ञा)

प्रत्यय	मूल शब्द	नया शब्द	अर्थ
ता	सुंदर	सुंदरता	सुंदर होने का गुण
ता	मनुष्य	मानवता	मानव का धर्म
ता	एक	एकता	एक होने का भाव — मेल
त्व	मनुष्य	मनुष्यत्व	मनुष्य होने के गुण
त्व	राष्ट्र	राष्ट्रत्व	राष्ट्र का भाव
त्व	कवि	कवित्व	कवि के गुण

इक — संबंधित, योग्य

प्रत्यय	मूल शब्द	नया शब्द	अर्थ
इक	धर्म	धार्मिक	धर्म से संबंधित
इक	समाज	सामाजिक	समाज से संबंधित
इक	इतिहास	ऐतिहासिक	इतिहास से संबंधित
इक	साहित्य	साहित्यिक	साहित्य से संबंधित
इक	राजनीति	राजनीतिक	राजनीति से संबंधित

आन / मान — वर्तमान कृदंत / विशेषण

प्रत्यय	मूल शब्द	नया शब्द	अर्थ
आन	उड़	उड़ान	उड़ने की क्रिया
मान	पठ	पठमान	पढ़ते हुए (वर्तमान)
मान	पूज	पूज़मान	पूज़े जाने योग्य
वान	धन	धनवान	धन वाला — धनी
वान	गुण	गुणवान	गुण वाला

वाला — कर्ता / संबंध

प्रत्यय	मूल शब्द	नया शब्द	अर्थ
वाला	दूध	दूधवाला	दूध बेचने वाला
वाला	गाँव	गाँववाला	गाँव का निवासी
वाला	फल	फलवाला	फल बेचने वाला
वाला	घर	घरवाला	घर का स्वामी / पति
वाली	पढ़	पढ़नेवाली	पढ़ने वाली (स्त्री)

आहट / अहट — अवस्था, भाव (अमूर्त)

प्रत्यय	मूल शब्द	नया शब्द	अर्थ
आहट	घबरा	घबराहट	घबराने की अवस्था
आहट	चिल्ला	चिल्लाहट	चिल्लाने की क्रिया/ध्वनि
आहट	बड़बड़	बड़बड़ाहट	बड़बड़ाने की अवस्था
आहट	जल	जलन	जलने का भाव — ईर्ष्या

औती / ओती — लघु, संबंध

प्रत्यय	मूल शब्द	नया शब्द	अर्थ
औती	मान	मनौती	मनाने की क्रिया — प्रार्थना
ओती	काट	कटौती	काटने की क्रिया — कमी
ओती	बच	बचत	बचाने की क्रिया — बचत

हारा — कर्ता (काम करने वाला)

प्रत्यय	मूल शब्द	नया शब्द	अर्थ
हारा	लकड़	लकड़हारा	लकड़ी काटने वाला
हारा	पानी	पनिहारा	पानी भरने वाला
हारा	माँग	माँगहारा	माँगने वाला — भिखारी

तद्धित प्रत्यय = संज्ञा/विशेषण + प्रत्यय → नया शब्द (तद्धितांत)

5. एक नज़र में — सभी प्रत्यय

यह तालिका परीक्षा से पहले त्वरित पुनरावृत्ति के लिए है:

प्रकार	प्रत्यय	अर्थ/कार्य	उदाहरण
कृत्	अन	क्रिया से संज्ञा	पढ़ + अन = पढ़न, मिल + अन = मिलन
कृत्	आई	काम/ मजदूरी	लिख + आई = लिखाई, पढ़ + आई = पढ़ाई
कृत्	अक	कर्ता (काम करने वाला)	लेख + अक = लेखक, पाठ + अक = पाठक
कृत्	इत	विशेषण (जो हो गया हो)	आनंद + इत = आनंदित, शिक्षा + इत = शिक्षित
कृत्	आवट	भाव/विकार	सज + आवट = सजावट, मिल + आवट = मिलावट
कृत्	ना	क्रियार्थक संज्ञा	खा + ना = खाना, गा + ना = गाना
कृत्	आव	भाव/ अवस्था	बह + आव = बहाव, घुम + आव = घुमाव
तद्धित	आई	भाव/गुण	बड़ा + आई = बड़ाई, चतुर + आई = चतुराई
तद्धित	पन	भाव/ अवस्था	बचपन, लड़कपन, अपनापन
तद्धित	ता	गुण/धर्म (अमूर्त संज्ञा)	सुंदर + ता = सुंदरता, एक + ता = एकता
तद्धित	त्व	गुण/धर्म	कवि + त्व = कवित्व, मनुष्य + त्व = मनुष्यत्व
तद्धित	इक	संबंधित	धर्म + इक = धार्मिक, समाज + इक = सामाजिक
तद्धित	वाला	कर्ता/संबंध	दूध + वाला = दूधवाला, गाँव + वाला = गाँववाला
तद्धित	आहट	अवस्था/ भाव	घबरा + आहट = घबराहट
तद्धित	वान	युक्त/संपन्न	धन + वान = धनवान, गुण + वान = गुणवान
तद्धित	हारा	कर्ता	लकड़ + हारा = लकड़हारा

6. उपसर्ग + प्रत्यय — एक साथ

ऐसे प्रमुख शब्द जिनमें उपसर्ग और प्रत्यय दोनों हैं:

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय	अर्थ
सुशिक्षित	सु	शिक्षा	इत	अच्छी तरह पढ़ा-लिखा
अपमानित	अप	मान	इत	जिसका अपमान हुआ हो
निर्दोषता	निर्	दोष	ता	बेगुनाह होने का भाव
बेकारी	बे	कार	ई	बेरोजगारी की अवस्था

प्रचलित	प्र	चल	इत	जो प्रचलन में हो
विकसित	वि	काश	इत	जो विकास पा चुका हो
सम्मानित	सम्	मान	इत	जिसे सम्मान मिला हो
दुर्भाग्यशाली	दुर्	भाग्य	शाली	बुरे भाग्य वाला
अनुशासित	अनु	शास	इत	अनुशासन में रहने वाला
प्रसिद्धि	प्र	सिद्ध	इ	अधिक प्रसिद्ध होने का भाव
बेईमानी	बे	ईमान	ई	ईमान के बिना — धोखेबाजी
आकर्षित	आ	कर्ष	इत	जो खिंचा हुआ हो
नालायकी	ना	लायक	ई	अयोग्य होने का भाव
सुशासन	सु	शास	अन	अच्छा शासन
परिचित	परि	चित	इत	जो जाना-पहचाना हो
प्रतिष्ठित	प्रति	ष्ठ	इत	जिसे प्रतिष्ठा मिली हो
विद्यार्थी	वि	दया	अर्थी	विशेष ज्ञान का चाहने वाला
सत्यापित	स	त्याप	इत	जो सत्य प्रमाणित हो
दुराचारी	दुर्	आचार	ई	बुरे आचरण वाला
उपकारी	उप	कार	ई	उपकार करने वाला

अभ्यास प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रत्यय किसे कहते हैं? एक वाक्य में परिभाषा लिखिए।

   उत्तरः
   वे शब्दांश जो किसी मूल शब्द के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं।

2. प्रत्यय और उपसर्ग में स्थान की दृष्टि से क्या अंतर है?

   उत्तरः
   उपसर्ग शब्द के आरंभ में लगता है, जबकि प्रत्यय शब्द के अंत में जुड़ता है।
   उदाहरण :
   उपसर्ग: प्र + गति = प्रगति
   प्रत्यय: लिख + आई = लिखाई

3. कृत् प्रत्यय किसे कहते हैं? एक उदाहरण दीजिए।

   उत्तरः
   जो प्रत्यय क्रिया की धातु के साथ जुड़कर नया शब्द बनाते हैं, वे कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।
   उदाहरण : पढ़ + आई = पढ़ाई, लेख + अक = लेखक

4. तद्धित प्रत्यय किसे कहते हैं? एक उदाहरण दीजिए।

   उत्तरः
   जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के साथ जुड़कर नया शब्द बनाते हैं, वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।
   उदाहरण : सुंदर + ता = सुंदरता, धर्म + इक = धार्मिक

5. 'गायक' शब्द में प्रत्यय और मूल शब्द पहचानिए।

   उत्तरः
   मूल शब्द: गा (गाना - क्रिया धातु) | प्रत्यय: अक (कृत)
   अर्थ: गाने वाला

6. 'सुंदरता' में प्रत्यय बताइए और उसका प्रकार लिखिए।

   उत्तरः
   प्रत्यय: ता | मूल शब्द: सुंदर (विशेषण) | प्रकार: तद्धित प्रत्यय
   अर्थ: सुंदर होने का गुण

7. 'आनंदित' में कौन-सा प्रत्यय है? यह किस प्रकार का शब्द बनाता है?

   उत्तरः
   प्रत्यय: इत (कृत) | मूल: आनंद
   यह विशेषण बनाता है — आनंदित = आनंद से भरा हुआ

8. 'मिलावट' शब्द का प्रत्यय और मूल शब्द लिखिए।

उत्तरः
प्रत्यय: आवट (कृत्) | मूल: मिल (क्रिया धातु)
अर्थ: मिलाने की क्रिया - कृत्रिम मेल

9. 'मनुष्यत्व' में प्रत्यय पहचानिए।

उत्तरः
प्रत्यय: त्व (तद्धित) | मूल: मनुष्य (संज्ञा)
अर्थ: मनुष्य होने के गुण/धर्म

10. 'ऐतिहासिक' शब्द में प्रत्यय और मूल शब्द बताइए।

उत्तरः
प्रत्यय: इक (तद्धित) | मूल: इतिहास (संज्ञा)
अर्थ: इतिहास से संबंधित

11. 'बहाव' और 'घुमाव' में कौन-सा प्रत्यय है?

उत्तरः
प्रत्यय: आव (कृत्)
बहाव = बह + आव (बहने की स्थिति) | घुमाव = घुम + आव (घुमने की स्थिति)

12. 'इत' प्रत्यय जोड़कर दो नए शब्द बनाइए।

उत्तरः
(1) शिक्षा + इत = शिक्षित (शिक्षा पाया हुआ)
(2) पुरस्कार + इत = पुरस्कृत (पुरस्कार दिया गया)

13. 'पन' प्रत्यय लगाकर दो शब्द बनाइए।

उत्तरः
(1) बूढ़ा + पन = बुढ़ापन (बूढ़े होने की अवस्था)
(2) मोटा + पन = मोटापन (मोटे होने का भाव)

14. 'अक' प्रत्यय से बने किन्हीं दो शब्दों के अर्थ लिखिए।

उत्तरः
(1) पालक (पाल + अक) = पालने वाला - रक्षक
(2) नायक (नाय + अक) = नेतृत्व करने वाला

15. 'वाला' प्रत्यय से तीन शब्द बनाइए।

उत्तरः
(1) दूध + वाला = दूधवाला
(2) फल + वाला = फलवाला
(3) घर + वाला = घरवाला

16. 'आहट' प्रत्यय से बने दो शब्द लिखिए।

उत्तरः
(1) घबरा + आहट = घबराहट (घबराने की अवस्था)
(2) चिल्ला + आहट = चिल्लाहट (चिल्लाने की ध्वनि/अवस्था)

17. निम्नलिखित में से प्रत्यय पहचानिए:
'थकावट', 'कटाई'

उत्तरः
थकावट - प्रत्यय: आवट (कृत्) | मूल: थक
कटाई - प्रत्यय: आई (कृत्) | मूल: कट

18. निम्नलिखित में से प्रत्यय पहचानिए:
'धनवान', 'गुणवान'

उत्तरः
धनवान - प्रत्यय: वान (तद्धित) | मूल: धन | अर्थ: धन से संपन्न
गुणवान - प्रत्यय: वान (तद्धित) | मूल: गुण | अर्थ: गुण वाला

19. निम्नलिखित में से प्रत्यय पहचानिए:
'बचत', 'कटौती'

उत्तरः
बचत - प्रत्यय: त | मूल: बच | अर्थ: बचाने की क्रिया
कटौती - प्रत्यय: औती | मूल: काट | अर्थ: काटने की क्रिया - कमी

20. 'लकड़हारा' और 'पनिहारा' में प्रत्यय और मूल शब्द बताइए।

उत्तरः
लकड़हारा - प्रत्यय: हारा | मूल: लकड़ | अर्थ: लकड़ी काटने वाला
पनिहारा - प्रत्यय: हारा | मूल: पानी | अर्थ: पानी भरने वाला

21. 'खाना' और 'गाना' में प्रत्यय बताइए। ये किस प्रकार के प्रत्यय हैं?

उत्तरः
प्रत्यय: ना (कृत् प्रत्यय - क्रियार्थक संज्ञा बनाता है)
खाना = खा + ना (खाने की क्रिया/भोजन) | गाना = गा + ना (गाने की क्रिया/गीत)

22. 'सुशिक्षित' शब्द में उपसर्ग और प्रत्यय दोनों पहचानिए।

उत्तरः
सुशिक्षित = सु + शिक्षा + इत
उपसर्ग: सु | मूल शब्द: शिक्षा | प्रत्यय: इत
अर्थ: अच्छी तरह पढ़ा-लिखा

23. 'अनुशासित' शब्द में उपसर्ग और प्रत्यय कौन-से हैं?

उत्तरः
अनुशासित = अनु + शास + इत
उपसर्ग: अनु | मूल शब्द: शास | प्रत्यय: इत
अर्थ: अनुशासन में रहने वाला

24. 'आकर्षित' में उपसर्ग, मूल शब्द और प्रत्यय बताइए।

उत्तरः
आकर्षित = आ + कर्ष + इत
उपसर्ग: आ | मूल शब्द: कर्ष | प्रत्यय: इत
अर्थ: जो खिंचा हुआ हो — आकर्षित

25.'प्रतिष्ठित' को उपसर्ग + मूल + प्रत्यय में अलग कीजिए।

उत्तरः
प्रतिष्ठित = प्रति + ष्ठ + इत
उपसर्ग: प्रति | मूल शब्द: ष्ठ | प्रत्यय: इत
अर्थ: जिसे प्रतिष्ठा मिली हो

26.निम्नलिखित में से किस शब्द में उपसर्ग और प्रत्यय दोनों हैं? 'लिखाई', 'सम्मानित', 'बेकार', 'पाठक'

उत्तरः
'सम्मानित' — इस शब्द में उपसर्ग और प्रत्यय दोनों हैं।
सम्मानित = सम् + मान + इत
उपसर्ग: सम् | मूल शब्द: मान | प्रत्यय: इत
अर्थ: जिसे सम्मान मिला हो

27.'विकसित' और 'प्रचलित' — दोनों में उपसर्ग और प्रत्यय एक जैसे हैं या अलग? बताइए।

उत्तरः
दोनों में प्रत्यय एक ही है — 'इत', परंतु उपसर्ग अलग-अलग हैं:
विकसित = वि + काश + इत (उपसर्ग: वि)
प्रचलित = प्र + चल + इत (उपसर्ग: प्र)
दोनों में 'इत' प्रत्यय विशेषण बनाता है।

28.स्वयं एक ऐसा शब्द बनाइए जिसमें उपसर्ग और प्रत्यय दोनों हों। उसे तीनों भागों में तोड़कर लिखिए।

उत्तरः
विद्यार्थी = वि + दया + अर्थी
उपसर्ग: वि | मूल शब्द: दया | प्रत्यय: अर्थी
अर्थ: विशेष ज्ञान का चाहने वाला

29.'परिचित' और 'नालायकी' में उपसर्ग और प्रत्यय अलग-अलग कीजिए।

उत्तरः
परिचित: परि (उपसर्ग) + चित (मूल) + इत (प्रत्यय)
अर्थ: जाना-पहचाना
नालायकी: ना (उपसर्ग) + लायक (मूल) + ई (प्रत्यय)
अर्थ: अयोग्य होने का भाव

30.'सुशासन' और 'प्रतिष्ठित' — उपसर्ग, मूल, प्रत्यय तीनों बताइए।

उत्तरः
सुशासन: सु (उपसर्ग) + शास (मूल) + अन (प्रत्यय)
अर्थ: अच्छा शासन
प्रतिष्ठित: प्रति (उपसर्ग) + ष्ठ (मूल) + इत (प्रत्यय)
अर्थ: जिसे प्रतिष्ठा मिली हो

31.'प्रसिद्धि' और 'सत्यापित' में उपसर्ग और प्रत्यय बताइए।

उत्तरः
प्रसिद्धि: प्र (उपसर्ग) + सिद्ध (मूल) + इ (प्रत्यय)
अर्थ: अधिक प्रसिद्ध होने का भाव
सत्यापित: स (उपसर्ग) + त्याप (मूल) + इत (प्रत्यय)
अर्थ: जो सत्य प्रमाणित हो

32.'निःस्वार्थी' और 'विश्वासपात्री' — दोनों में उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए।

उत्तरः
निःस्वार्थी: निः (उपसर्ग) + स्वार्थ (मूल) + ई (प्रत्यय)
अर्थ: बिना स्वार्थ के
विश्वासपात्री: वि (उपसर्ग) + श्वास (मूल) + पात्री (प्रत्यय)
अर्थ: विश्वास के योग्य (स्त्री)

33.'अविश्वासी' और 'प्रतिभाशाली' में उपसर्ग और प्रत्यय पहचानिए।

उत्तरः
अविश्वासी: अ+वि (उपसर्ग) + श्वास (मूल) + ई (प्रत्यय)
अर्थ: जो विश्वास न करे
प्रतिभाशाली: प्रति (उपसर्ग) + भा (मूल) + शाली (प्रत्यय)
अर्थ: अधिक प्रतिभा वाला

34.'सहयोगी' और 'अनुयायी' को उपसर्ग + मूल + प्रत्यय में तोड़िए।

उत्तरः
सहयोगी: स (उपसर्ग) + योग (मूल) + ई (प्रत्यय)
अर्थ: साथ में योग देने वाला
अनुयायी: अनु (उपसर्ग) + याय (मूल) + ई (प्रत्यय)
अर्थ: पीछे चलने वाला — शिष्य

35.'उपचारित' और 'दुर्बलता' में उपसर्ग और प्रत्यय बताइए।

उत्तरः
उपचारित: उप (उपसर्ग) + चार (मूल) + इत (प्रत्यय)
अर्थ: जिसका उपचार हुआ हो
दुर्बलता: दुर् (उपसर्ग) + बल (मूल) + ता (प्रत्यय)
अर्थ: कमजोरी का भाव

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. उपसर्ग और प्रत्यय में अंतर लिखिए — दो-दो उदाहरण भी दीजिए।

उत्तरः

उपसर्ग	प्रत्यय
शब्द के आगे (पहले) जुड़ता है और अर्थ में परिवर्तन लाता है। उदाहरण: प्र + गति = प्रगति। अप + मान = अपमान।	शब्द के पीछे (अंत में) जुड़ता है और नई संज्ञा/विशेषण/क्रिया बनाता है। उदाहरण: लिख + आई = लिखाई। मीठा + स = मिठास।

2. निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय और मूल शब्द अलग-अलग कीजिए, प्रत्यय का प्रकार भी लिखिए:
(i) पाठक (ii) एकता (iii) घबराहट (iv) गाँववाला

उत्तरः
(i) पाठक
प्रत्यय: अक (कृत्) | मूल: पाठ | अर्थ: पढ़ने वाला
(ii) एकता
प्रत्यय: ता (तद्धित) | मूल: एक | अर्थ: एक होने का भाव — मेल
(iii) घबराहट
प्रत्यय: आहट (तद्धित) | मूल: घबरा | अर्थ: घबराने की अवस्था
(iv) गाँववाला
प्रत्यय: वाला (तद्धित) | मूल: गाँव | अर्थ: गाँव का निवासी

3. कृत् और तद्धित प्रत्यय में तीन अंतर लिखिए, प्रत्येक का एक-एक उदाहरण दीजिए।

उत्तरः
कृत् प्रत्यय:
(1) क्रिया की धातु के साथ जुड़ते हैं।
(2) इनसे बने शब्द 'कृदंत' कहलाते हैं।
(3) उदाहरण: लिख + आई = लिखाई, लेख + अक = लेखक
तद्धित प्रत्यय:
(1) संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के साथ जुड़ते हैं।
(2) इनसे बने शब्द 'तद्धितांत' कहलाते हैं।
(3) उदाहरण: सुंदर + ता = सुंदरता, धर्म + इक = धार्मिक

4. निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय और मूल शब्द अलग-अलग कीजिए, प्रत्यय का प्रकार भी लिखिए:
(i) शिक्षित (ii) बुढ़ापन (iii) सिलाई (iv) सामाजिक

उत्तरः
(i) शिक्षित
प्रत्यय: इत (कृत्) | मूल: शिक्षा | अर्थ: शिक्षा पाया हुआ
(ii) बुढ़ापन
प्रत्यय: पन (तद्धित) | मूल: बूढ़ा | अर्थ: बूढ़े होने की अवस्था
(iii) सिलाई
प्रत्यय: आई (कृत्) | मूल: सिल | अर्थ: सीने का काम/ मजदूरी
(iv) सामाजिक
प्रत्यय: इक (तद्धित) | मूल: समाज | अर्थ: समाज से संबंधित

5. 'ता' और 'त्व' प्रत्यय से दो-दो शब्द बनाइए और उनके अर्थ लिखिए।

उत्तरः
ता प्रत्यय:
(1) सुंदर + ता = सुंदरता — सुंदर होने का गुण
(2) एक + ता = एकता — एक होने का भाव
त्व प्रत्यय:
(1) कवि + त्व = कवित्व — कवि होने के गुण
(2) राष्ट्र + त्व = राष्ट्रत्व — राष्ट्र का भाव

6. निम्नलिखित प्रत्ययों में से प्रत्येक से दो-दो शब्द बनाइए: 'अक', 'पन', 'इक', 'वाला'

उत्तरः
अक — लेखक, पाठक, गायक, नायक
पन — बचपन, लड़कपन, अपनापन, मोटापन
इक — धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक
वाला — दूधवाला, गाँववाला, घरवाला, फलवाला

7. 'आई' प्रत्यय कृत् और तद्धित दोनों में आता है — दोनों के दो-दो नए उदाहरण देकर अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः
कृत् प्रत्यय 'आई' (क्रिया + आई) -
(1) धुल + आई = धुलाई - धोने की मजदूरी/काम
(2) कट + आई = कटाई - काटने का काम
यहाँ धुल, कट - क्रिया धातुएँ हैं।
तद्धित प्रत्यय 'आई' (विशेषण + आई) -
(1) लंबा + आई = लंबाई - लंबे होने का माप
(2) बुरा + आई = बुराई - बुरे होने का भाव
यहाँ लंबा, बुरा - विशेषण हैं।

8. निम्नलिखित प्रत्ययों में से प्रत्येक से दो-दो शब्द बनाइए: 'इक', 'हारा', 'आवट', 'त्व'

उत्तरः
इक - धार्मिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, साहित्यिक
हारा - लकड़हारा, पनिहारा, माँगहारा
आवट - सजावट, थकावट, मिलावट, घुमावट
त्व - कवित्व, मनुष्यत्व, राष्ट्रत्व, नेतृत्व

9. 'अक' प्रत्यय से बने चार शब्दों के अर्थ सहित वाक्य-प्रयोग कीजिए।

उत्तरः
(1) लेखक - रामचरितमानस के लेखक तुलसीदास हैं।
(2) पाठक - इस पुस्तक के पाठक देशभर में हैं।
(3) गायक - वह एक प्रसिद्ध गायक है।
(4) पालक - माता-पिता बच्चों के पालक होते हैं।
अक प्रत्यय कृत् प्रत्यय है जो कर्ता (काम करने वाला) का बोध कराता है।

10. 'प्रत्यय लगाने से न केवल अर्थ, बल्कि शब्द की व्याकरणिक श्रेणी भी बदल जाती है' — इस कथन को चार उदाहरणों से सिद्ध कीजिए।

उत्तरः
(1) सुंदर (विशेषण) + ता = सुंदरता (संज्ञा) - विशेषण से संज्ञा बनी
(2) लिख (क्रिया) + आई = लिखाई (संज्ञा) - क्रिया से संज्ञा बनी
(3) धर्म (संज्ञा) + इक = धार्मिक (विशेषण) - संज्ञा से विशेषण बना
(4) आनंद (संज्ञा) + इत = आनंदित (विशेषण) - संज्ञा से विशेषण बना

11. निम्नलिखित शब्दों के आगे उचित प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए:
(i) मिठा + ? (ii) बच्चा + ? (iii) राष्ट्र + ? (iv) सज + ?

उत्तरः
(i) मिठा + आई = मिठाई
तद्धित प्रत्यय | अर्थ: मीठी खाने की वस्तु - मिष्ठान्न
(ii) बच्चा + पन = बचपन
तद्धित प्रत्यय | अर्थ: बच्चे की अवस्था
(iii) राष्ट्र + त्व = राष्ट्रत्व
तद्धित प्रत्यय | अर्थ: राष्ट्र का भाव/गुण
(iv) सज + आवट = सजावट
कृत् प्रत्यय | अर्थ: सजाने का काम - साज-सज्जा

12. नीचे दी गई पंक्तियों में रेखांकित शब्दों में प्रत्यय पहचानिए और उनका प्रकार (कृत्/तद्धित) लिखिए:

(i) उसकी पढ़ाई बहुत अच्छी है।
(ii) वह बहुत धार्मिक व्यक्ति है।
(iii) बचपन के दिन याद आते हैं।
(iv) यह पुस्तक बहुत शिक्षाप्रद है।

उत्तरः
(i) पढ़ाई
प्रत्यय: आई | मूल: पढ़ | प्रकार: कृत् | अर्थ: पढ़ने का काम
(ii) धार्मिक
प्रत्यय: इक | मूल: धर्म | प्रकार: तद्धित | अर्थ: धर्म से संबंधित
(iii) बचपन
प्रत्यय: पन | मूल: बच्चा | प्रकार: तद्धित | अर्थ: बच्चे की अवस्था
(iv) शिक्षाप्रद
प्रत्यय: प्रद | मूल: शिक्षा | अर्थ: शिक्षा देने वाला

13. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग, मूल शब्द और प्रत्यय अलग कीजिए:
(i) निर्भयता (ii) सुविधाजनक (iii) अनुभवहीनता (iv) प्रगतिशील

उत्तरः
(i) निर्भयता = निर् (उपसर्ग) + भय (मूल) + ता (प्रत्यय)
अर्थ: निडर होने का भाव
(ii) सुविधाजनक = सु (उपसर्ग) + विधा (मूल) + जनक (प्रत्यय)
अर्थ: सुविधा देने वाला
(iii) अनुभवहीनता = अनु (उपसर्ग) + भव (मूल) + हीनता (प्रत्यय)
अर्थ: अनुभव की कमी
(iv) प्रगतिशील = प्र (उपसर्ग) + गति (मूल) + शील (प्रत्यय)
अर्थ: प्रगति करने वाला

14. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग, मूल शब्द और प्रत्यय अलग कीजिए:
(i) विश्वासघाती (ii) सुसंगठित (iii) अविकसित (iv) नाकामयाबी

उत्तरः
(i) विश्वासघाती = वि (उपसर्ग) + श्वास (मूल) + घाती (प्रत्यय)
अर्थ: विश्वास तोड़ने वाला
(ii) सुसंगठित = सु (उपसर्ग) + संगठ (मूल) + इत (प्रत्यय)
अर्थ: अच्छी तरह संगठित
(iii) अविकसित = अ+वि (उपसर्ग) + काश (मूल) + इत (प्रत्यय)
अर्थ: जो विकसित न हो
(iv) नाकामयाबी = ना (उपसर्ग) + कामयाब (मूल) + ई (प्रत्यय)
अर्थ: असफलता

15. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग, मूल शब्द और प्रत्यय अलग कीजिए:
(i) परिष्कृत (ii) दु:साहसी (iii) विमोहित (iv) आवेदित

उत्तरः
(i) परिष्कृत = परि (उपसर्ग) + ष्कृत (मूल) + इत (प्रत्यय)
अर्थ: शुद्ध किया गया
(ii) दु:साहसी = दु: (उपसर्ग) + साहस (मूल) + ई (प्रत्यय)
अर्थ: बहुत अधिक साहस वाला

(iii) विमोहित = वि (उपसर्ग) + मोह (मूल) + इत (प्रत्यय)
अर्थ: जो मोहित हो गया हो
(iv) आवेदित = आ (उपसर्ग) + वेद (मूल) + इत (प्रत्यय)
अर्थ: जिसने आवेदन किया हो

16. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग, मूल शब्द और प्रत्यय अलग कीजिए:
(i) सुलभता (ii) प्रशिक्षित (iii) दुर्लभता (iv) उपेक्षित

उत्तरः
(i) सुलभता = सु (उपसर्ग) + लभ (मूल) + ता (प्रत्यय)
अर्थ: आसानी से मिलने का भाव
(ii) प्रशिक्षित = प्र (उपसर्ग) + शिक्ष (मूल) + इत (प्रत्यय)
अर्थ: जिसे प्रशिक्षण मिला हो
(iii) दुर्लभता = दुर् (उपसर्ग) + लभ (मूल) + ता (प्रत्यय)
अर्थ: मुश्किल से मिलने का भाव
(iv) उपेक्षित = उप (उपसर्ग) + ईक्ष (मूल) + इत (प्रत्यय)
अर्थ: जिसकी उपेक्षा हुई हो

17. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग, मूल शब्द और प्रत्यय अलग कीजिए:
(i) बेरोजगारी (ii) अनुकूलता (iii) परावर्तित (iv) निराशावादी

उत्तरः
(i) बेरोजगारी = बे (उपसर्ग) + रोजगार (मूल) + ई (प्रत्यय)
अर्थ: रोजगार न होने की अवस्था
(ii) अनुकूलता = अनु (उपसर्ग) + कूल (मूल) + ता (प्रत्यय)
अर्थ: अनुकूल होने का भाव
(iii) परावर्तित = परा (उपसर्ग) + वर्त (मूल) + इत (प्रत्यय)
अर्थ: जो वापस मुड़ा हो
(iv) निराशावादी = नि (उपसर्ग) + राशा (मूल) + वादी (प्रत्यय)
अर्थ: निराशा में विश्वास रखने वाला

18. 'बे' उपसर्ग और 'ई' प्रत्यय एक साथ लगाकर तीन शब्द बनाइए। उपसर्ग + मूल + प्रत्यय में तोड़कर लिखिए।

उत्तरः
1. बेकारी = बे (उपसर्ग) + कार (मूल) + ई (प्रत्यय)
अर्थ: बेरोजगारी की अवस्था
2. बेईमानी = बे (उपसर्ग) + ईमान (मूल) + ई (प्रत्यय)
अर्थ: धोखेबाजी
3. बेशर्मी = बे (उपसर्ग) + शरम (मूल) + ई (प्रत्यय)
अर्थ: शर्म न होने का भाव

19. 'सु' उपसर्ग और 'इत' प्रत्यय एक साथ लगाकर तीन शब्द बनाइए। अर्थ सहित लिखिए।

उत्तरः
1. सुशिक्षित = सु (उपसर्ग) + शिक्षा (मूल) + इत (प्रत्यय)
अर्थ: अच्छी तरह पढ़ा-लिखा
2. सुसंगठित = सु (उपसर्ग) + संगठ (मूल) + इत (प्रत्यय)
अर्थ: अच्छी तरह संगठित
3. सुविकसित = सु (उपसर्ग) + विकास (मूल) + इत (प्रत्यय)
अर्थ: अच्छी तरह विकसित

20. 'अपमान' और 'अपमानित' में क्या अंतर है? प्रत्यय की दृष्टि से बताइए।

उत्तरः
अपमान
अप (उपसर्ग) + मान (मूल) = केवल उपसर्ग है
अर्थ: मान का विरोध — बेइज्जती (संज्ञा)
अपमानित
अप (उपसर्ग) + मान (मूल) + इत (प्रत्यय) = उपसर्ग + प्रत्यय दोनों हैं
अर्थ: जिसका अपमान हुआ हो (विशेषण)
'इत' प्रत्यय लगाने से संज्ञा से विशेषण बन गया।

अध्याय 3

पद-भेद (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया)

1. परिचय

हिंदी में शब्दों को दो वर्गों में बाँटा जाता है — विकारी और अविकारी। विकारी शब्द वे होते हैं जिनका रूप लिंग, वचन और कारक के अनुसार बदलता है।

विकारी शब्द की परिभाषा
जिन शब्दों का रूप लिंग, वचन और कारक के कारण परिवर्तित होता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया — ये चारों विकारी शब्द हैं।

विकारी और अविकारी शब्दों में अंतर

विकारी शब्द	अविकारी शब्द (अव्यय)
रूप बदलता है	रूप नहीं बदलता
संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया	क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक
लड़का → लड़के → लड़कों (वचन बदला)	'और', 'परंतु' कभी नहीं बदलते

चारों पदों का परस्पर संबंध

ये चारों पद एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हैं। संज्ञा आधार है — सर्वनाम उसके स्थान पर आता है, विशेषण उसकी विशेषता बताता है, और क्रिया का कर्ता-कर्म भी संज्ञा या सर्वनाम ही होते हैं।

- रमेश (संज्ञा) एक परिश्रमी (विशेषण) छात्र है। वह (सर्वनाम) प्रतिदिन पढ़ता (क्रिया) है।
- नेताजी (संज्ञा) साहसी (विशेषण) नेता थे। उन्होंने (सर्वनाम) देश को स्वतंत्र कराया (क्रिया)।

2. संज्ञा

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव या गुण के नाम को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा विकारी शब्द है — इसका रूप लिंग, वचन और कारक के अनुसार बदलता है।

संज्ञा के भेद

(1) **व्यक्तिवाचक संज्ञा :** जो शब्द किसी एक विशेष व्यक्ति, स्थान या वस्तु का बोध कराए, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। ये हमेशा एकवचन होती हैं और इनका पहला अक्षर बड़ा लिखा जाता है।
उदाहरण : महात्मा गांधी, सुभाषचंद्र बोस, ताजमहल, हिमालय, गंगा, भारत, दिल्ली

(2) **जातिवाचक संज्ञा :** जो शब्द किसी जाति के सभी व्यक्तियों, वस्तुओं या स्थानों का बोध कराए, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।
उदाहरण : नदी, पर्वत, नेता, छात्र, शहर, पशु, वृक्ष, पुस्तक, विद्यालय

(3) **भाववाचक संज्ञा :** जो शब्द किसी भाव, गुण, दशा या अवस्था का बोध कराए, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। इन्हें देखा या छुआ नहीं जा सकता — केवल अनुभव किया जा सकता है।
उदाहरण : स्वतंत्रता, ईमानदारी, साहस, दयालुता, बचपन, बुढ़ापा, सुंदरता, क्रोध

(4) **समूहवाचक संज्ञा :** जो शब्द किसी व्यक्तियों या वस्तुओं के समूह का बोध कराए, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं।
उदाहरण : सेना, संसद, परिवार, झुंड, गुच्छा, समिति, कक्षा, मंडली, दल

(5) **द्रव्यवाचक संज्ञा :** जो शब्द किसी द्रव्य, पदार्थ या धातु का बोध कराए जिसे नापा-तौला जा सके, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।
उदाहरण : सोना, चाँदी, लोहा, तेल, दूध, जल, मिट्टी, लकड़ी, ऊन

3. सर्वनाम

जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। 'सर्व' = सबका, 'नाम' = नाम — अर्थात् सबके नाम के स्थान पर आने वाला। जैसे — राम आया। वह थका हुआ था — यहाँ 'वह' सर्वनाम है जो 'राम' के स्थान पर है।

सर्वनाम के भेद

(1) **पुरुषवाचक सर्वनाम :** जो सर्वनाम किसी व्यक्ति (वक्ता, श्रोता या अन्य) के लिए प्रयुक्त हो, उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। इसके तीन उपभेद हैं:
उदाहरण :
- उत्तम पुरुष (बोलने वाला): मैं, हम, मुझे, हमें
- मध्यम पुरुष (सुनने वाला): तुम, आप, तुम्हें, आपको
- अन्य पुरुष (जिसके बारे में बात हो): वह, वे, उसे, उन्हें

(2) **निश्चयवाचक सर्वनाम :** जो सर्वनाम किसी निकट या दूर की वस्तु या व्यक्ति की निश्चित ओर संकेत करे, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

उदाहरण :
- यह मेरी पुस्तक है। (निकट की वस्तु)
- वह उनका घर है। (दूर की वस्तु)
- यही वह स्थान है जहाँ क्रांति हुई थी।

(3) **अनिश्चयवाचक सर्वनाम :** जो सर्वनाम किसी अनिश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध कराए, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

उदाहरण :
- कोई मेरे घर आया था।
- कुछ लोग सत्य से डरते हैं।
- दरवाजे पर कोई खड़ा है।

(4) **संबंधवाचक सर्वनाम :** जो सर्वनाम दो वाक्यों को जोड़ने के साथ-साथ उनमें संबंध स्थापित करे, उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। ये प्रायः जोड़ों में आते हैं।

उदाहरण :
- जो परिश्रम करता है, वह सफल होता है।
- जो बोओगे, वही काटोगे।
- जैसी करनी, वैसी भरनी।

(5) **प्रश्नवाचक सर्वनाम :** जो सर्वनाम प्रश्न पूछने के लिए प्रयुक्त हो, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

उदाहरण :
- वहाँ कौन खड़ा है?
- तुमने क्या सुना?
- यह पत्र किसने लिखा?

(6) **निजवाचक सर्वनाम :** जो सर्वनाम कर्ता के साथ 'स्वयं/खुद' का भाव दर्शाए, उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। 'आप' जब स्वयं के लिए आए तो निजवाचक होता है।

उदाहरण :
- मैं यह काम स्वयं करूँगा।
- उसने अपने हाथ से पत्र लिखा।
- नेताजी ने आप ही सेना का नेतृत्व किया।

4. विशेषण

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता (गुण, दोष, संख्या, परिमाण आदि) बताए, उसे विशेषण कहते हैं और जिस संज्ञा/सर्वनाम की विशेषता बताई जाए उसे विशेष्य कहते हैं।

- परिश्रमी छात्र ने परीक्षा उत्तीर्ण की। (यहाँ 'परिश्रमी' विशेषण है और 'छात्र' विशेष्य है।)

विशेषण के भेद

(1) **गुणवाचक विशेषण :** जो विशेषण संज्ञा के गुण, दोष, रंग, रूप, आकार, स्वभाव आदि का बोध कराए, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। यह सबसे अधिक प्रचलित भेद है।

उदाहरण :
- ईमानदार अधिकारी, साहसी सैनिक, निर्दोष बालक (गुण)
- लाल गुलाब, श्वेत वस्त्र, काला बादल (रंग)
- विशाल महल, संकरी गली, गोल चंद्रमा (आकार)

(2) **संख्यावाचक विशेषण :** जो विशेषण संज्ञा की संख्या का बोध कराए, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। इसके दो उपभेद हैं — निश्चित संख्यावाचक (दस छात्र, तीन पुस्तकें) और अनिश्चित संख्यावाचक (कुछ लोग, अनेक समस्याएँ)।

उदाहरण :
- पाँच वीर सैनिकों ने शत्रु को परास्त किया। (निश्चित)
- अनेक नागरिकों ने आंदोलन में भाग लिया। (अनिश्चित)
- तीनों भाई एक साथ रहते थे। (क्रमवाचक)

(3) **परिमाणवाचक विशेषण :** जो विशेषण संज्ञा के परिमाण (मात्रा/नाप-तौल) का बोध कराए, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। यह निश्चित या अनिश्चित दोनों प्रकार का होता है।

उदाहरण :
- दस किलो अनाज गोदाम में भेजा गया। (निश्चित)
- थोड़ा धैर्य रखने से समस्या सुलझ जाती है। (अनिश्चित)
- बहुत परिश्रम के बाद सफलता मिली। (अनिश्चित)

(4) **सार्वनामिक विशेषण :** जो सर्वनाम किसी संज्ञा से पहले आकर उसकी विशेषता बताए, तो वह सार्वनामिक विशेषण बन जाता है। अंतर यह है कि सर्वनाम अकेला आता है, जबकि सार्वनामिक विशेषण संज्ञा से पहले आता है।

उदाहरण :
- यह पुस्तक मेरी है।
- वह छात्र परिश्रमी है।
- कौन-सा रास्ता सही है?

5. क्रिया

जो शब्द किसी कार्य के करने या होने का बोध कराए, उसे क्रिया कहते हैं। क्रिया विकारी शब्द है — यह लिंग, वचन और काल के अनुसार बदलती है। क्रिया जिस मूल शब्द से बनती है, उसे धातु कहते हैं। जैसे 'पढ़' धातु से पढ़ना, पढ़ता, पढ़ेगा आदि बनते हैं।

क्रिया के भेद

कर्म के आधार पर क्रिया के दो मुख्य भेद होते हैं:

(1) **सकर्मक क्रिया :** जिस क्रिया का फल कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़े, अर्थात् जिस क्रिया के साथ कर्म हो या हो सकता हो, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। परीक्षा-

सूत्र: क्रिया से पहले 'क्या' या 'किसे/किसको' लगाएँ — यदि उत्तर मिले तो सकर्मक।

- नेताजी ने सेना का नेतृत्व किया। (क्या किया? → नेतृत्व — सकर्मक)
- किसान ने खेत जोता। (क्या जोता? → खेत — सकर्मक)
- उसने संविधान की रक्षा की। (क्या की? → रक्षा — सकर्मक)

(2) **अकर्मक क्रिया :** जिस क्रिया का फल सीधे कर्ता पर पड़े और जिसके साथ कर्म न हो, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। परीक्षा-सूत्र: क्रिया से 'क्या' पूछने पर उत्तर न मिले तो अकर्मक।

- शिशिर सो गया। (क्या सोया? — कोई उत्तर नहीं — अकर्मक)
- नदी बहती है। (क्या बहती है? — कोई उत्तर नहीं — अकर्मक)
- वह हँसा। (क्या हँसा? — कोई उत्तर नहीं — अकर्मक)

क्रिया के अन्य महत्वपूर्ण भेद

(3) **सहायक क्रिया :** जो क्रिया मुख्य क्रिया के साथ आकर वाक्य को पूर्ण अर्थ देने में सहायता करे, उसे सहायक क्रिया कहते हैं। यह काल, वचन और लिंग के अनुसार बदलती है।

- वह पढ़ रहा है। ('है' सहायक क्रिया)
- उन्होंने त्याग-पत्र दे दिया था। ('था' सहायक क्रिया)
- वे जा चुके हैं। ('हैं' सहायक क्रिया)

(4) **संयुक्त क्रिया :** जब दो या अधिक क्रियाएँ मिलकर एक पूर्ण क्रिया बनाएँ, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।

- वह खाने लगा। (खाना + लगना)
- उसने पत्र लिख दिया। (लिखना + देना)
- वे चले गए। (चलना + जाना)

(5) **प्रेरणार्थक क्रिया :** जब कर्ता स्वयं काम न करके किसी दूसरे को काम करने के लिए प्रेरित करे, तब प्रेरणार्थक क्रिया होती है।

- माँ ने बच्चे को खाना खिलाया। (खाना → खिलाना)
- अध्यापक ने छात्रों से पाठ पढ़वाया। (पढ़ना → पढ़वाना)
- उसने मित्र से पत्र लिखवाया। (लिखना → लिखवाना)

6. एक नज़र में — चारों पद

पद	परिभाषा (सार)	भेद	उदाहरण
संज्ञा	व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव का नाम	व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक, समूहवाचक, द्रव्यवाचक	गांधीजी, नदी, ईमानदारी, सेना, सोना
सर्वनाम	संज्ञा के स्थान पर आने वाला शब्द	पुरुष, निश्चय, अनिश्चय, संबंध, प्रश्न, निजवाचक	वह, यह, कोई, जो-वह, कौन, स्वयं
विशेषण	संज्ञा/सर्वनाम की विशेषता बताने वाला	गुण, संख्या, परिमाण, सार्वनामिक	साहसी, पाँच, थोड़ा, वह छात्र
क्रिया	कार्य करने/होने का बोध कराने वाला	सकर्मक, अकर्मक, सहायक, संयुक्त	पढ़ना, सोना, है, चले जाना

अभ्यास प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. विकारी शब्द किसे कहते हैं? संक्षेप में लिखिए।

   उत्तरः
   जिन शब्दों का रूप लिंग, वचन और कारक के कारण बदलता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया — चारों विकारी शब्द हैं।

2. भाववाचक संज्ञा और जातिवाचक संज्ञा में क्या अंतर है? एक-एक उदाहरण दीजिए।

   उत्तरः
   जातिवाचक संज्ञा से किसी जाति के सभी व्यक्तियों/वस्तुओं का बोध होता है; जैसे 'नेता', 'नदी' जबकि भाववाचक संज्ञा से किसी भाव, गुण या अवस्था का बोध होता है; जैसे 'साहस', 'बचपन'।

3. समूहवाचक और द्रव्यवाचक संज्ञा में अंतर लिखिए।

   उत्तरः
   समूहवाचक संज्ञा से समूह का बोध होता है; जैसे 'सेना', 'संसद', 'परिवार' जबकि द्रव्यवाचक संज्ञा से नापे-तौले जाने वाले पदार्थ का बोध होता है; जैसे 'सोना', 'दूध', 'तेल'।

4. 'स्वतंत्रता', 'हिमालय', 'सेना', 'चाँदी' — इनमें से प्रत्येक का संज्ञा-भेद बताइए।

   उत्तरः
   (1) स्वतंत्रता = भाववाचक संज्ञा
   (2) हिमालय = व्यक्तिवाचक संज्ञा
   (3) सेना = समूहवाचक संज्ञा
   (4) चाँदी = द्रव्यवाचक संज्ञा

5. 'विद्यालय में <u>अनेक</u> परिश्रमी छात्र पढ़ते हैं' — रेखांकित शब्द 'अनेक' किस प्रकार का विशेषण है?

   उत्तरः
   'अनेक' अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण है — यह छात्रों की अनिश्चित संख्या का बोध कराता है।

6. सर्वनाम किसे कहते हैं? संज्ञा और सर्वनाम में मुख्य अंतर क्या है?

   उत्तरः
   सर्वनामः संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।
   अंतरः संज्ञा से किसी विशेष नाम का बोध होता है; जैसे 'रमेश' जबकि सर्वनाम संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होता है; जैसे 'वह'।

7. 'जो परिश्रम करता है, वह अवश्य सफल होता है' — इस वाक्य में सर्वनाम पहचानिए और उसका भेद बताइए।

   उत्तरः
   'जो' और 'वह' — दोनों संबंधवाचक सर्वनाम हैं। ये दो वाक्यांशों में परस्पर संबंध स्थापित करते हैं।

8. निजवाचक सर्वनाम और पुरुषवाचक 'आप' में क्या अंतर है?

   उत्तरः
   पुरुषवाचक 'आप': किसी व्यक्ति को सम्मान देकर संबोधित — जैसे 'आप कहाँ जाएंगे?'
   निजवाचक 'आप': कर्ता स्वयं के लिए — जैसे 'उन्होंने आप ही यह निर्णय लिया।'

9. 'कोई' और 'कौन' में क्या अंतर है?

   उत्तरः
   कोई = अनिश्चयवाचक सर्वनाम — अनिश्चित व्यक्ति/वस्तु के लिए। उदा. 'कोई आया था।'
   कौन = प्रश्नवाचक सर्वनाम — प्रश्न पूछने के लिए। उदा. 'यह पत्र कौन लाया?'

10. 'यह मेरी पुस्तक है' और 'यह मेरा है' — दोनों में 'यह' का भेद अलग है, क्यों?

    उत्तरः
    'यह मेरी पुस्तक है' — 'यह' संज्ञा 'पुस्तक' से पहले आकर उसकी विशेषता बता रहा है, इसलिए सार्वनामिक विशेषण है।
    'यह मेरा है' — 'यह' अकेला आया है, संज्ञा की जगह — इसलिए निश्चयवाचक सर्वनाम है।

11. विशेषण और विशेष्य किसे कहते हैं? एक उदाहरण से समझाइए।

    उत्तरः
    विशेषणः संज्ञा/सर्वनाम की विशेषता बताने वाला शब्द।
    विशेष्यः जिसकी विशेषता बताई जाए — वह संज्ञा या सर्वनाम।
    उदाहरणः 'साहसी सेनानी ने शत्रु को परास्त किया' — 'साहसी' विशेषण, 'सेनानी' विशेष्य।

12. 'पाँच ईमानदार अधिकारियों ने उस भ्रष्ट नेता की शिकायत की' — इस वाक्य में विशेषण पहचानिए और प्रकार बताइए।

    उत्तरः
    (1) **पाँच** — संख्यावाचक विशेषण (अधिकारियों की संख्या)
    (2) **ईमानदार** — गुणवाचक विशेषण (अधिकारियों का गुण)
    (3) **उस** — सार्वनामिक विशेषण (नेता की ओर संकेत)
    (4) **भ्रष्ट** — गुणवाचक विशेषण (नेता का दोष)

13. 'थोड़ा पानी पीओ' और 'दो लीटर पानी लाओ' — दोनों में विशेषण का भेद बताइए।

उत्तरः

(1) **थोड़ा** = अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण — पानी की अनिश्चित मात्रा।

(2) **दो लीटर** = निश्चित परिमाणवाचक विशेषण — पानी की निश्चित मात्रा।

14. गुणवाचक और संख्यावाचक विशेषण में अंतर उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तरः

गुणवाचक विशेषण गुण, दोष, रंग, आकार बताते है; जैसे 'निर्भीक नेता', 'विशाल साम्राज्य' जबकि संख्यावाचक विशेषण संख्या बताते है; जैसे 'सात क्रांतिकारी', 'अनेक समस्याएँ'।

15. 'सार्वनामिक विशेषण' कब बनता है? उदाहरण दीजिए।

उत्तरः

जब कोई सर्वनाम (यह, वह, कौन, कोई आदि) किसी संज्ञा से पहले आकर उसकी विशेषता बताए, तो वह सार्वनामिक विशेषण बन जाता है।

उदाहरणः 'वह छात्र प्रतिभाशाली है।' — 'वह' सार्वनामिक विशेषण।

16. सकर्मक और अकर्मक क्रिया पहचानने का सरल तरीका क्या है?

उत्तरः

क्रिया से 'क्या/किसको' का प्रश्न करें —

यदि उत्तर मिले → सकर्मक। जैसे: 'उसने पत्र लिखा' — क्या लिखा? पत्र → सकर्मक।

यदि उत्तर न मिले → अकर्मक। जैसे: 'वह दौड़ा' — क्या दौड़ा? कोई उत्तर नहीं → अकर्मक।

17. 'उसने देशद्रोही की साजिश विफल कर दी' — क्रिया पहचानिए और प्रकार बताइए।

उत्तरः

'विफल कर दी' — संयुक्त क्रिया है (करना + देना मिलकर बनी)।

यह सकर्मक भी है — क्योंकि कर्म 'साजिश' है।

18. सहायक क्रिया किसे कहते हैं? वाक्य से उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तरः

सहायक क्रियाः मुख्य क्रिया के साथ आकर वाक्य को पूर्ण अर्थ देने में जो क्रिया सहायता करे — वह सहायक क्रिया है।

उदाहरणः 'संसद में बहस चल रही थी' — 'थी' सहायक क्रिया है।

19. प्रेरणार्थक क्रिया किसे कहते हैं? 'लिखना' से प्रेरणार्थक रूप बनाइए।

उत्तरः

प्रेरणार्थक क्रियाः जब कर्ता स्वयं काम न करके दूसरे को प्रेरित करे — वह प्रेरणार्थक क्रिया है।

'लिखना' के प्रेरणार्थक रूपः लिखाना (प्रथम प्रेरणार्थक), लिखवाना (द्वितीय प्रेरणार्थक)।

20. धातु किसे कहते हैं? 'पढ़' धातु से तीन शब्द बनाइए।

उत्तरः

धातुः क्रिया का वह मूल रूप जिससे सभी क्रिया-रूप बनते हैं, धातु कहलाता है।

'पढ़' धातु सेः पढ़ना, पढ़ता, पढ़ेगा, पढ़ाना, पढ़वाना, पढ़ रहा है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. संज्ञा के पाँचों भेदों की संक्षिप्त परिभाषा लिखिए और प्रत्येक का एक उदाहरण दीजिए।

उत्तरः

(1) **व्यक्तिवाचकः** एक विशेष व्यक्ति/स्थान/वस्तु — 'सुभाषचंद्र बोस'

(2) **जातिवाचकः** पूरी जाति का बोध — 'सैनिक', 'नदी'

(3) **भाववाचकः** गुण/भाव/अवस्था — 'देशभक्ति', 'बचपन'

(4) **समूहवाचकः** समूह का बोध — 'सेना', 'संसद'

(5) **द्रव्यवाचकः** नापे-तौले जाने वाला पदार्थ — 'लोहा', 'दूध'

2. सर्वनाम के छह भेद बताइए। प्रत्येक का एक-एक उदाहरण वाक्य में दीजिए।

उत्तरः

(1) **पुरुषवाचकः** 'मैं प्रतिदिन समाचार-पत्र पढ़ता हूँ।'

(2) **निश्चयवाचकः** 'यही वह स्थान है जहाँ क्रांति हुई थी।'

(3) **अनिश्चयवाचकः** 'कोई दरवाजे पर दस्तक दे रहा था।'

(4) **संबंधवाचकः** 'जो बोता है, वही काटता है।'

(5) **प्रश्नवाचकः** 'इस षड्यंत्र में कौन शामिल था?'

(6) **निजवाचकः** 'महात्मा गांधी ने स्वयं उपवास किया।'

3. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों का पद-परिचय (पद-भेद) दीजिए:

(i) वे <u>तीन</u> <u>साहसी</u> <u>वीर</u> देश के लिए शहीद हुए।

(ii) <u>उसने</u> <u>स्वयं</u> इस भ्रष्टाचार का पर्दाफाश <u>किया</u> ।

(iii) सरकार ने <u>गरीब</u> <u>किसानों</u> को <u>थोड़ी</u> सहायता दी।

उत्तरः

(i) 'तीन' = संख्यावाचक विशेषण | 'साहसी' = गुणवाचक विशेषण | 'वीर' = जातिवाचक संज्ञा

(ii) 'उसने' = पुरुषवाचक सर्वनाम (अन्य पुरुष) | 'स्वयं' = निजवाचक सर्वनाम | 'किया' = सकर्मक क्रिया

(iii) 'गरीब' = गुणवाचक विशेषण | 'किसानों' = जातिवाचक संज्ञा | 'थोड़ी' = अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण

4. सकर्मक और अकर्मक क्रिया में अंतर लिखिए। निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया का भेद बताइए:

(i) संसद ने नया विधेयक पारित किया।

(ii) आंदोलनकारी घंटों भूखे बैठे रहे।

(iii) क्रांतिकारियों ने जेल की दीवारें तोड़ दीं।

(iv) बच्चा खुशी से खिलखिलाया।

उत्तरः

अंतरः सकर्मक क्रिया में कर्म होता है, क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है जबकि अकर्मक क्रिया में कर्म नहीं होता, क्रिया का फल सीधे कर्ता पर पड़ता है।
(i) पारित किया — सकर्मक (क्या किया? विधेयक)
(ii) बैठे रहे — अकर्मक (क्या बैठे? — कोई उत्तर नहीं)
(iii) तोड़ दीं — सकर्मक + संयुक्त (क्या? दीवारें)
(iv) खिलखिलाया — अकर्मक (क्या खिलखिलाया? — नहीं)

5. विशेषण के चारों भेदों की संक्षिप्त परिभाषा लिखिए और प्रत्येक का एक-एक उदाहरण वाक्य में दीजिए।

उत्तरः

(1) **गुणवाचकः** गुण/दोष/रंग/आकार — 'निर्दोष नागरिक को न्याय मिला।'
(2) **संख्यावाचकः** संख्या का बोध — 'सात क्रांतिकारियों को फाँसी दी गई।'
(3) **परिमाणवाचकः** नाप-तौल का बोध — 'सीमा पर अतिरिक्त सेना भेजी गई।'
(4) **सार्वनामिकः** सर्वनाम जब संज्ञा से पहले — 'वह नीति असफल रही।'

6. 'पद-भेद' क्या है? संज्ञा और सर्वनाम में तीन अंतर लिखिए — उदाहरण सहित।

उत्तरः

पद-भेदः वाक्य में प्रयुक्त शब्दों को उनके व्याकरणिक गुण के आधार पर जो वर्ग दिए जाते हैं — वह पद-भेद है।
संज्ञा और सर्वनाम में अंतरः

संज्ञा	सर्वनाम
किसी के नाम का बोध — 'अमर क्रांतिकारी था।'	संज्ञा के स्थान पर — 'वह क्रांतिकारी था।'
असीमित हैं — हर व्यक्ति/वस्तु का अलग नाम।	सीमित हैं — मैं, तुम, वह, यह, कोई आदि।
संज्ञा का अर्थ स्पष्ट होता है।	सर्वनाम का अर्थ संदर्भ पर निर्भर होता है।

7. निम्नलिखित वाक्य में सभी शब्दों का पद-परिचय (पद-भेद) दीजिए:
'उस साहसी नेता ने स्वयं विदेशी सत्ता का विरोध किया।'

उत्तरः
(1) **उस** — सार्वनामिक विशेषण (नेता की ओर संकेत)
(2) **साहसी** — गुणवाचक विशेषण (नेता का गुण)
(3) **नेता** — जातिवाचक संज्ञा (पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक)
(4) **ने** — कारक-चिह्न (परसर्ग)
(5) **स्वयं** — निजवाचक सर्वनाम
(6) **विदेशी** — गुणवाचक विशेषण (सत्ता का गुण)
(7) **सत्ता** — जातिवाचक संज्ञा (स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्म कारक)
(8) **विरोध किया** — सकर्मक संयुक्त क्रिया (भूतकाल)

8. भाववाचक संज्ञा किन-किन शब्दों से बनती है? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।

उत्तरः

भाववाचक संज्ञा निम्नलिखित शब्दों से बनती है:
(1) जातिवाचक संज्ञा से:
मानव → मानवता, बच्चा → बचपन
(2) विशेषण से:
सुंदर → सुंदरता, ईमानदार → ईमानदारी
(3) क्रिया से
पढ़ना → पढ़ाई, लिखना → लिखावट
(4) सर्वनाम से
अपना → अपनापन, स्व → स्वत्व

9. 'संयुक्त क्रिया' और 'प्रेरणार्थक क्रिया' में अंतर लिखिए — दो-दो उदाहरण दीजिए।

उत्तरः

संयुक्त क्रिया	प्रेरणार्थक क्रिया
दो क्रियाएँ मिलकर एक पूर्ण अर्थ बनाती हैं। **उदाहरणः** (1) वह काम करने लगा। (करना + लगना) (2) उन्होंने पत्र लिख दिया। (लिखना + देना)	कर्ता स्वयं काम न करके दूसरे को काम करवाता है। **उदाहरणः** (1) शिक्षक ने छात्रों को निबंध लिखवाया। (लिखना → लिखवाना) (2) माँ ने बच्चे को दवा पिलाई। (पीना → पिलाना)

10. निम्नलिखित शब्दों को उनके पद-भेद के अनुसार वर्गीकृत कीजिए:
'साहसी, उन्होंने, लोकतंत्र, पाँच, ईमानदारी, दौड़ना, कोई, विशाल, संसद, लिखवाना'

उत्तरः

(1) **संज्ञाः** लोकतंत्र (भाववाचक), ईमानदारी (भाववाचक), संसद (समूहवाचक)

(2) **सर्वनामः** उन्होंने (पुरुषवाचक — अन्य पुरुष), कोई (अनिश्चयवाचक)

(3) **विशेषणः** साहसी (गुणवाचक), पाँच (संख्यावाचक), विशाल (गुणवाचक)

(4) **क्रियाः** दौड़ना (अकर्मक), लिखवाना (प्रेरणार्थक)

अध्याय 4

अर्थ की दृष्टि से वाक्य भेद

1. परिचय

हम अपने विचार और भावनाएँ शब्दों के माध्यम से व्यक्त करते हैं। जब शब्दों का ऐसा समूह बनता है जो कोई पूर्ण अर्थ दे, तो उसे वाक्य कहते हैं।

वाक्य की परिभाषा
शब्दों का वह सार्थक समूह जो किसी पूर्ण विचार या भाव को व्यक्त करे, वाक्य कहलाता है।

वाक्य के अंग

प्रत्येक वाक्य में दो अनिवार्य अंग होते हैं — उद्देश्य और विधेय।

1. **उद्देश्य :** वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाए, उसे उद्देश्य कहते हैं। सामान्यतः यह वाक्य का कर्ता होता है। उद्देश्य में कर्ता और उसका विस्तार दोनों आते हैं।
   उदाहरण:
   'परिश्रमी छात्र परीक्षा में सफल होते हैं' — इस वाक्य में 'परिश्रमी छात्र' उद्देश्य है।
2. **विधेय:** उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाए, वह विधेय है। इसमें क्रिया तथा उससे संबंधित अन्य पद आते हैं। विधेय के बिना वाक्य अधूरा रहता है।
   उदाहरण:
   'परिश्रमी छात्र परीक्षा में सफल होते हैं' — इस वाक्य में 'परीक्षा में सफल होते हैं' विधेय है।
   कभी-कभी वाक्य में उद्देश्य छिपा होता है — जैसे 'बैठ जाओ' में उद्देश्य 'तुम' छिपा है। ऐसे वाक्यों में विधेय ही प्रमुख होता है।

2. वाक्य का वर्गीकरण

वाक्यों को दो प्रमुख आधारों पर वर्गीकृत किया जाता है:

रचना की दृष्टि से वर्गीकरण

जब हम देखते हैं कि वाक्य में कितने उपवाक्य हैं और वे किस प्रकार जुड़े हैं, तो वह रचना के आधार पर वर्गीकरण है। इस दृष्टि से वाक्य के तीन भेद होते हैं —

1. सरल वाक्य
2. संयुक्त वाक्य
3. मिश्र वाक्य

सरल वाक्य में केवल एक मुख्य उपवाक्य होता है। संयुक्त वाक्य में दो या अधिक स्वतंत्र उपवाक्य किसी समुच्चयबोधक (और, परंतु, किंतु, या) से जुड़े होते हैं। मिश्र वाक्य में एक मुख्य उपवाक्य और एक या अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं।

अर्थ की दृष्टि से वर्गीकरण

जब हम देखते हैं कि वाक्य किस भाव या उद्देश्य को व्यक्त कर रहा है — जैसे कथन, प्रश्न, आदेश, इच्छा आदि — तो वह अर्थ के आधार पर वर्गीकरण है। इस दृष्टि से वाक्य के आठ भेद होते हैं —

1. विधानवाचक
2. निषेधवाचक
3. प्रश्नवाचक
4. विस्मयवाचक
5. आज्ञावाचक
6. इच्छावाचक
7. संकेतवाचक
8. संदेहवाचक

नोट: इस अध्याय में हम केवल अर्थ की दृष्टि से वाक्य-भेद पढ़ेंगे।

3. अर्थ की दृष्टि से वाक्य-भेद — एक नज़र में

	वाक्य-भेद	अर्थ/उद्देश्य	उदाहरण
1.	विधानवाचक	सकारात्मक कथन	परिश्रम ही सफलता की कुंजी है।
2.	निषेधवाचक	नकारात्मक कथन	उसने अपनी गलती स्वीकार नहीं की।
3.	प्रश्नवाचक	प्रश्न पूछना	क्या तुमने आज का समाचार पढ़ा?
4.	विस्मयवाचक	तीव्र भावना	वाह! उसने परीक्षा में शत-प्रतिशत अंक लिए!

5.	आज्ञावाचक	आदेश/ अनुरोध	अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो।
6.	इच्छावाचक	इच्छा/ शुभकामना	ईश्वर तुम्हें दीर्घायु करे।
7.	संकेतवाचक	शर्त और परिणाम	यदि अनुशासन हो तो लक्ष्य अवश्य मिलता है।
8.	संदेहवाचक	संदेह/अनुमान	सम्भवतः वह आज लौट आए।

स्मरण: वि, नि, प्र, वि, आ, इ, सं, सं — प्रत्येक भेद का पहला अक्षर

4. वाक्य-भेदों का विस्तृत परिचय

विधानवाचक वाक्य

जिस वाक्य में किसी बात या कार्य के होने का सकारात्मक कथन हो, उसे विधानवाचक वाक्य कहते हैं। इसे 'सकारात्मक वाक्य' भी कहते हैं।

पहचान:
- वाक्य में सामान्य कथन होता है।
- 'नहीं', '?' या '!' नहीं होता।

उदाहरण:
- ईमानदारी सबसे बड़ा गुण है।
- उसने कठिन परिश्रम से यह पद प्राप्त किया।
- विज्ञान ने मानव-जीवन को सरल बना दिया है।
- नदी के किनारे घना जंगल फैला हुआ था।
- सरकार ने नई शिक्षा-नीति लागू की।

निषेधवाचक वाक्य

जिस वाक्य में किसी बात या कार्य के न होने का बोध हो, उसे निषेधवाचक वाक्य कहते हैं। इसे 'नकारात्मक वाक्य' भी कहते हैं।

पहचान:
- वाक्य में 'नहीं', 'न', 'मत', 'कभी नहीं' जैसे शब्द होते हैं।

उदाहरण:
- उसने अपनी गलती स्वीकार नहीं की।
- वह अन्याय के सामने कभी नहीं झुका।
- इस विषय पर अनावश्यक बहस मत करो।
- परिस्थितियाँ अनुकूल न होने पर भी उसने हार नहीं मानी।
- झूठ बोलने से समस्या का समाधान नहीं होता।

विधानवाचक → निषेधवाचक: 'नहीं' जोड़ें।
निषेधवाचक → विधानवाचक: 'नहीं' हटाएँ।

प्रश्नवाचक वाक्य

जिस वाक्य में किसी से कुछ जानने या पूछने का भाव हो, उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं। इसके अंत में प्रश्नचिह्न (?) अवश्य होता है।

पहचान:
- वाक्य के अंत में '?' होता है।
- 'क्या, कब, कहाँ, कौन, क्यों, कैसे, किसने' जैसे शब्द होते हैं।

उदाहरण:
- क्या तुमने नेताजी की आत्मकथा पढ़ी है?
- स्वतंत्रता-संग्राम में किसने सबसे बड़ा बलिदान दिया?
- इस समस्या का स्थायी समाधान क्या हो सकता है?
- पर्यावरण-प्रदूषण के लिए कौन जिम्मेदार है?
- तुम्हारे जीवन का लक्ष्य क्या है?

विस्मयवाचक वाक्य

जिस वाक्य में हर्ष, शोक, घृणा, आश्चर्य, भय या प्रशंसा जैसी तीव्र भावनाओं की अभिव्यक्ति हो, उसे विस्मयवाचक वाक्य कहते हैं। इसके अंत में विस्मयादिबोधक चिह्न (!) लगता है।

पहचान:
- 'वाह!, हाय!, अरे!, ओह!, अहा!, शाबाश!' जैसे उद्गार शब्द।
- अंत में '!' होता है।

उदाहरण:
- वाह! उसने असंभव को भी संभव कर दिखाया!
- हाय! देश के इतने महान सपूत का यों असमय निधन!
- अरे! तुमने तो सारी मेहनत व्यर्थ कर दी!
- शाबाश! तुमने अपने परिवार का नाम रोशन किया!
- ओह! इतनी बड़ी त्रासदी की खबर से मन व्यथित हो गया!

आज्ञावाचक वाक्य

जिस वाक्य में आदेश, अनुरोध, उपदेश या प्रार्थना व्यक्त हो, उसे आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं। क्रिया प्रायः द्वितीय पुरुष (तुम/आप) के लिए होती है।

पहचान:
- क्रिया में आदेश या अनुरोध का भाव होता है।
- 'कृपया, जरा, अवश्य' जैसे शब्द संभव हैं।

उदाहरण:
- अपने अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों को भी पहचानो।
- कृपया इस संवेदनशील मामले में सावधानी बरतें।
- परिस्थिति कैसी भी हो, धैर्य मत खोना।
- राष्ट्र की एकता और अखंडता की रक्षा करो।
- समय का सदुपयोग करो, यही सफलता का मूलमंत्र है।

इच्छावाचक वाक्य

जिस वाक्य में वक्ता की इच्छा, कामना, आशीर्वाद या शुभकामना का बोध हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं।

पहचानः

- 'काश, भगवान करे, ईश्वर, मंगलमय हो, दीर्घायु हो' जैसे शब्द होते हैं।

उदाहरणः

- ईश्वर करे, हमारा देश हर क्षेत्र में उन्नति करे।
- काश! स्वतंत्रता-सेनानियों के सपनों का भारत बनता।
- भगवान करे, इस वर्ष सभी किसानों की फसल अच्छी हो।
- तुम्हारा भविष्य उज्ज्वल हो — यही मेरी कामना है।
- • नव वर्ष सबके जीवन में सुख-समृद्धि लाए।

संकेतवाचक वाक्य

जिस वाक्य में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर हो अर्थात् शर्त और परिणाम का स्पष्ट संबंध हो, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं।

पहचानः

- 'यदि/अगर...तो', 'जब...तब', 'जो...वो', 'चाहे...पर भी' जैसी जोड़ियाँ होती हैं।

उदाहरणः

- यदि युवा वर्ग जागरूक हो तो देश का भविष्य उज्ज्वल है।
- अगर समय पर निर्णय लिया होता तो स्थिति इतनी विकट न होती।
- जो अपने अतीत से सीखता है, वह भविष्य संवारता है।
- चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन हों, सत्य का साथ मत छोड़ो।
- जब न्याय मिलता है तब समाज में विश्वास बना रहता है।

संदेहवाचक वाक्य

जिस वाक्य में किसी बात के होने या न होने के बारे में संदेह या अनुमान का बोध हो, उसे संदेहवाचक वाक्य कहते हैं।

पहचानः

- 'शायद, सम्भवतः, लगता है, हो सकता है, मालूम होता है, प्रतीत होता है' जैसे शब्द होते हैं।

उदाहरणः

- सम्भवतः इस वर्ष मानसून देर से आए।
- लगता है, सरकार यह निर्णय वापस ले सकती है।
- शायद उन्होंने पहले ही यह बात भाँप ली थी।
- हो सकता है कि यह समझौता दीर्घकालिक न हो।
- मालूम होता है, उसे इस घटना की पूर्व सूचना थी।

> इच्छावाचक vs संकेतवाचक: इच्छा में शर्त नहीं, संकेत में 'यदि...तो' की शर्त होती है

5. पहचान-विधि और रूपांतरण

एक ही वाक्य — आठों भेदों में देखिए, 'देश-सेवा' के भाव को किस प्रकार सभी 8 भेदों में लिखा जा सकता है:

वाक्य-भेद	वाक्य
विधानवाचक	वह देश की सेवा करता है।
निषेधवाचक	वह देश की सेवा नहीं करता।
प्रश्नवाचक	क्या वह देश की सेवा करता है?
विस्मयवाचक	वाह! वह कितनी निष्ठा से देश की सेवा करता है!
आज्ञावाचक	देश की सेवा करो।
इच्छावाचक	काश! हर नागरिक देश की सेवा करे।
संकेतवाचक	यदि सभी देश की सेवा करें तो राष्ट्र उन्नत होगा।
संदेहवाचक	शायद वह देश की सेवा की भावना से कार्य करता हो।

सामान्य भ्रम — सावधानी से पहचानें

भ्रमित जोड़ी	उदाहरण	सही पहचान
इच्छावाचक vs संकेतवाचक	काश वह पढ़ता! / यदि वह पढ़ता तो...	काश = इच्छा यदि...तो = संकेत
संकेतवाचक vs संदेहवाचक	अगर आए तो... / शायद आए।	शर्त = संकेत शायद = संदेह
आज्ञावाचक vs निषेधवाचक	मत बोलो। / वह नहीं बोला।	मत = आज्ञा-निषेध नहीं = निषेधवाचक
विधानवाचक vs इच्छावाचक	वह सफल हुआ। / ईश्वर करे वह सफल हो।	सामान्य = विधान ईश्वर करे = इच्छा

अभ्यास प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. वाक्य के दो अनिवार्य अंगों के नाम लिखिए।

   उत्तरः
   वाक्य के दो अनिवार्य अंग हैं: (1) उद्देश्य और (2) विधेय।

2. 'विधेय' किसे कहते हैं? एक उदाहरण दीजिए।

   उत्तरः
   वाक्य में उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाए, वह विधेय है। **उदाहरण:** 'छात्रों ने परियोजना समय पर पूरी की' — 'परियोजना समय पर पूरी की' विधेय है।

3. वाक्यों को किन दो आधार पर वर्गीकृत किया जाता है?

   उत्तरः
   वाक्यों को दो आधार पर वर्गीकृत किया जाता है
   (1) रचना के आधार पर
   (2) अर्थ के आधार पर।

4. अर्थ की दृष्टि से वाक्य के कितने भेद होते हैं? केवल नाम लिखिए।

   उत्तरः
   अर्थ की दृष्टि से वाक्य के आठ भेद होते हैं: विधानवाचक, निषेधवाचक, प्रश्नवाचक, विस्मयवाचक, आज्ञावाचक, इच्छावाचक, संकेतवाचक, संदेहवाचक।

5. निषेधवाचक वाक्य की परिभाषा लिखिए।

   उत्तरः
   जिस वाक्य में किसी बात या कार्य के न होने का बोध हो, उसे निषेधवाचक वाक्य कहते हैं।

6. 'शायद इस बार चुनाव परिणाम अप्रत्याशित हों' — वाक्य-भेद बताइए।

   उत्तरः
   संदेहवाचक वाक्य — 'शायद' शब्द संदेह/अनुमान का बोध कराता है।

7. 'यदि नागरिक जागरूक हों तो लोकतंत्र मजबूत होता है' — वाक्य-भेद और कारण लिखिए।

   उत्तरः
   संकेतवाचक वाक्य — 'यदि...तो' की शर्त है। नागरिकों का जागरूक होना (शर्त) → लोकतंत्र का मजबूत होना (परिणाम)।

8. 'काश! देश के प्रत्येक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलती!' — यह किस प्रकार का वाक्य है?

   उत्तरः
   इच्छावाचक वाक्य — 'काश' शब्द तीव्र इच्छा/कामना का बोध कराता है।

9. 'हाय! इस प्राकृतिक आपदा में कितने निर्दोष लोग काल के गाल में समा गए!' — वाक्य-भेद बताइए।

   उत्तरः
   विस्मयवाचक वाक्य — 'हाय!' उद्गार शब्द है और '!' चिह्न है। गहरे शोक का भाव व्यक्त है।

10. इच्छावाचक और विस्मयवाचक वाक्य में एक अंतर लिखिए।

    उत्तरः
    इच्छावाचक में इच्छा/शुभकामना का भाव होता है — जैसे 'काश...' जबकि विस्मयवाचक में हर्ष/शोक/आश्चर्य की तीव्र भावना होती है — जैसे 'वाह!, हाय!'।

11. 'अन्याय और भ्रष्टाचार के सामने कभी समझौता मत करो' — वाक्य-भेद बताइए।

    उत्तरः
    आज्ञावाचक वाक्य — 'मत करो' आदेश/उपदेश का बोध कराता है।

12. 'पर्यावरण-संकट के लिए कौन-से कारण सबसे अधिक उत्तरदायी हैं?' — वाक्य-भेद बताइए।

    उत्तरः
    प्रश्नवाचक वाक्य — 'कौन-से' प्रश्नवाचक शब्द है और अंत में '?' चिह्न है।

13. 'ईश्वर करे, इस देश में सांप्रदायिक सद्भाव सदा बना रहे' — वाक्य-भेद लिखिए।

    उत्तरः
    इच्छावाचक वाक्य — 'ईश्वर करे' शब्द प्रार्थना/शुभकामना का बोध कराते हैं।

14. 'वाह! इस युवा वैज्ञानिक ने असाध्य रोग का उपचार खोज निकाला!' — वाक्य-भेद और भाव लिखिए।

    उत्तरः
    विस्मयवाचक वाक्य — 'वाह!' उद्गार शब्द और '!' चिह्न है। हर्ष तथा प्रशंसा का भाव व्यक्त है।

15. 'कठिन परिस्थितियों में भी अपना धैर्य और संयम बनाए रखो' — किस भेद का वाक्य है?

    उत्तरः
    आज्ञावाचक वाक्य — 'बनाए रखो' में उपदेश/निर्देश का भाव है।

16. अर्थ की दृष्टि से निम्नलिखित वाक्य कौन-सा है?
    जो सत्य का पालन करे, वह सदा सम्मानित रहता है।

    उत्तरः
    संकेतवाचक वाक्य — 'जो...वह' की शर्त है।

17. 'उद्देश्य' किसे कहते हैं? एक उदाहरण दीजिए।

उत्तरः

वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाए, वह उद्देश्य है।
उदाहरणः 'महात्मा गांधी ने सत्याग्रह का मार्ग अपनाया' — 'महात्मा गांधी' उद्देश्य है।

18. 'सम्भवतः संसद में यह विधेयक इसी सत्र में पारित हो जाए' — वाक्य-भेद बताइए।

उत्तरः

संदेहवाचक वाक्य — 'सम्भवतः' शब्द संदेह/अनुमान का बोध कराता है।

19. विधानवाचक वाक्य को निषेधवाचक में कैसे बदलते हैं? उदाहरण दीजिए।

उत्तरः

क्रिया से पहले 'नहीं' जोड़ने पर विधानवाचक वाक्य निषेधवाचक बन जाता है।
उदाहरणः
विधान — 'उसने प्रस्ताव स्वीकार किया।'
निषेध — 'उसने प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया।'

20. 'अगर प्रशासन समय रहते सचेत हो जाता तो यह दुर्घटना टल सकती थी' — वाक्य-भेद और कारण लिखिए।

उत्तरः

संकेतवाचक वाक्य — 'अगर...तो' की शर्त है।
प्रशासन का सचेत होना (शर्त) → दुर्घटना का टलना (परिणाम)।

21. निम्नलिखित विधानवाचक वाक्य को निषेधवाचक वाक्य में बदलिए:
भ्रष्टाचार ने देश की प्रगति को बाधित किया है।

उत्तरः

निषेधवाचक वाक्य: भ्रष्टाचार ने देश की प्रगति को बाधित नहीं किया है।

22. निम्नलिखित निषेधवाचक वाक्य को विधानवाचक वाक्य में बदलिए:
उसने विषम परिस्थितियों में भी अपना साहस नहीं खोया।

उत्तरः

विधानवाचक वाक्य: उसने विषम परिस्थितियों में भी अपना साहस बनाए रखा।

23. निम्नलिखित विधानवाचक वाक्य को प्रश्नवाचक वाक्य में बदलिए:
सामाजिक न्याय के बिना विकास अधूरा है।

उत्तरः

प्रश्नवाचक वाक्य: क्या सामाजिक न्याय के बिना विकास अधूरा है?

24. निम्नलिखित विधानवाचक वाक्य को इच्छावाचक वाक्य में बदलिए:
देश में शांति और समृद्धि बनी रहती है।

उत्तरः

इच्छावाचक वाक्य: ईश्वर करे, देश में शांति और समृद्धि सदा बनी रहे।

25. निम्नलिखित संदेहवाचक वाक्य को विधानवाचक वाक्य में बदलिए:
शायद इस वर्ष संसद का विशेष अधिवेशन बुलाया जाए।

उत्तरः

विधानवाचक वाक्य: इस वर्ष संसद का विशेष अधिवेशन बुलाया जाएगा।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित वाक्यों के भेद बताइए और कारण लिखिए:

(i) क्या स्वतंत्रता के बाद भी सामाजिक असमानता समाप्त हुई है?

(ii) मातृभूमि की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति देने को सदा तैयार रहो।

(iii) भगवान करे, इस वर्ष देश में अकाल की स्थिति उत्पन्न न हो।

(iv) लगता है, इस बार सूखे के कारण फसल बुरी तरह प्रभावित होगी।

उत्तरः

(i) प्रश्नवाचक वाक्य — 'क्या' प्रश्नवाचक शब्द है और अंत में '?' है। सामाजिक असमानता के बारे में प्रश्न पूछा गया है।
(ii) आज्ञावाचक वाक्य — 'सदा तैयार रहो' में उपदेश/आदेश का भाव है। क्रिया द्वितीय पुरुष के लिए है।
(iii) इच्छावाचक वाक्य — 'भगवान करे' शब्द प्रार्थना/शुभकामना का बोध कराते हैं।
(iv) संदेहवाचक वाक्य — 'लगता है' शब्द अनुमान/संदेह का बोध कराता है। घटना की पुष्टि नहीं है।

2. निम्नलिखित वाक्यों के भेद बताइए और कारण लिखिए:

(i) अरे! इतने प्रतिभाशाली युवक ने ऐसा घृणित कार्य किया!

(ii) यदि न्यायपालिका स्वतंत्र हो तो लोकतंत्र की जड़ें मजबूत रहती हैं।

(iii) भारत की सांस्कृतिक विरासत अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण है।

(iv) उसने परिवार की विपरीत परिस्थितियों के बावजूद अपनी पढ़ाई नहीं छोड़ी।

उत्तरः

(i) विस्मयवाचक वाक्य — 'अरे!' उद्गार शब्द और '!' चिह्न है। आश्चर्य एवं निराशा की भावना व्यक्त है।
(ii) संकेतवाचक वाक्य — 'यदि...तो' की शर्त है। न्यायपालिका की स्वतंत्रता (शर्त) → लोकतंत्र की मजबूती (परिणाम)।
(iii) विधानवाचक वाक्य — सामान्य सकारात्मक कथन है। कोई प्रश्न, आदेश, संदेह या शर्त नहीं है।
(iv) निषेधवाचक वाक्य — 'नहीं छोड़ी' में 'नहीं' है — पढ़ाई न छोड़ने का नकारात्मक कथन है।

3. 'देश का विकास हो रहा है' — इस वाक्य को अर्थ के आधार पर सभी 8 भेदों में बदलिए।

उत्तरः

	वाक्य भेद	वाक्य
1.	विधानवाचक	देश का विकास हो रहा है।
2.	निषेधवाचक	देश का विकास नहीं हो रहा।
3.	प्रश्नवाचक	क्या देश का विकास हो रहा है?
4.	विस्मयवाचक	वाह! देश कितनी तेजी से विकास कर रहा है!
5.	आज्ञावाचक	देश के विकास में योगदान दो।
6.	इच्छावाचक	ईश्वर करे, देश का विकास निरंतर होता रहे।
7.	संकेतवाचक	यदि नीतियाँ सही हों तो देश का विकास अवश्य होगा।
8.	संदेहवाचक	शायद इस नीति से देश का विकास और तेज हो।

4. इच्छावाचक और संकेतवाचक वाक्य में अंतर स्पष्ट कीजिए — दो-दो उदाहरण दीजिए।

उत्तरः

इच्छावाचक वाक्य	संकेतवाचक वाक्य
इच्छावाचक वाक्य में इच्छा, कामना, आशीर्वाद या शुभकामना व्यक्त होती है। कोई शर्त नहीं होती। **उदाहरणः** (1) ईश्वर करे, सभी को न्याय मिले। (2) काश! इस समाज में भेदभाव समाप्त हो जाता।	जबकि संकेतवाचक वाक्य में शर्त और परिणाम का संबंध होता है। 'यदि/अगर... तो' की जोड़ी होती है। **उदाहरणः** (1) यदि नागरिक अपने कर्तव्य निभाएँ तो देश उन्नत होगा। (2) अगर समय पर उपचार मिलता तो स्थिति इतनी गंभीर न होती।

5. विस्मयवाचक वाक्य में कौन-कौन से भाव व्यक्त हो सकते हैं? प्रत्येक का एक-एक उदाहरण दीजिए।

उत्तरः

विस्मयवाचक वाक्य में निम्नलिखित भाव व्यक्त होते हैं:

(1) **हर्षः** वाह! उसने राष्ट्रीय प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीता!
(2) **शोकः** हाय! इस दुर्घटना में इतने निर्दोष प्राणों की आहुति हो गई!
(3) **आश्चर्यः** अरे! इस अनपढ़ किसान ने कितना अद्भुत आविष्कार कर डाला!
(4) **प्रशंसाः** शाबाश! तुमने विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य नहीं खोया!
(5) **घृणा/क्रोधः** ओह! यह भ्रष्टाचार समाज को खोखला कर रहा है!

6. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए:

(i) 'शिक्षा से ही समाज का कल्याण संभव है' — प्रश्नवाचक में बदलिए।
(ii) 'वह अपनी जिम्मेदारियों से नहीं भागा' — विधानवाचक में बदलिए।
(iii) 'अपने अधिकारों के प्रति सजग रहो' — इच्छावाचक में बदलिए।
(iv) 'शायद सरकार यह प्रस्ताव मान ले' — विधानवाचक में बदलिए।

उत्तरः

(i) क्या शिक्षा से ही समाज का कल्याण संभव है?
(ii) वह अपनी जिम्मेदारियों से भागा।
(iii) काश! हर नागरिक अपने अधिकारों के प्रति सजग रहे।
(iv) सरकार यह प्रस्ताव मान लेगी।

7. आज्ञावाचक वाक्य में आदेश, अनुरोध और उपदेश में क्या अंतर है? प्रत्येक के दो उदाहरण दीजिए।

उत्तरः

आदेशः अधिकार के साथ दिया गया निर्देश — सामान्यतः कठोर भाव में।
(1) अभी इस कक्ष से बाहर चले जाओ।
(2) रिपोर्ट तीन बजे तक मेज पर रखो।

अनुरोधः विनम्रतापूर्वक किसी से कुछ करने की प्रार्थना।
(1) कृपया इस याचिका पर ध्यान दें।
(2) जरा उस फाइल की एक प्रति दे दीजिए।

उपदेशः भलाई के लिए दी गई सलाह या नसीहत।
(1) सदा विनम्रता और सहिष्णुता का पालन करो।
(2) दूसरों के दुःख-दर्द के प्रति संवेदनशील बनो।

8. निम्नलिखित वाक्यों के भेद बताइए:

(i) मालूम होता है, इस संधि का कोई दीर्घकालिक परिणाम नहीं निकलेगा।
(ii) जब तक भ्रष्टाचार जड़ से नहीं उखड़ता, तब तक विकास की गति धीमी रहेगी।

(iii) काश! इस देश में हर प्रतिभाशाली बच्चे को उचित अवसर मिलता।

(iv) सामाजिक कुरीतियों का विरोध करो और न्याय की माँग करो।

उत्तरः

(i) संदेहवाचक — 'मालूम होता है' — अनुमान/संदेह का बोध।

(ii) संकेतवाचक — 'जब तक...तब तक' — शर्त और परिणाम का संबंध।

(iii) इच्छावाचक — 'काश!' — तीव्र इच्छा/कामना का बोध।

(iv) आज्ञावाचक — 'करो', 'माँग करो' — उपदेश/आह्वान का भाव।

9. संदेहवाचक और विधानवाचक वाक्य में अंतर बताइए — दो-दो उदाहरण दीजिए।

उत्तरः

संदेहवाचक वाक्यः

बात निश्चित नहीं होती — 'शायद, लगता है, सम्भवतः' जैसे शब्द होते हैं।

(1) हो सकता है, इस बार नीति में बड़ा बदलाव आए।

(2) प्रतीत होता है, उन्हें इस मामले की पूरी जानकारी नहीं थी।

विधानवाचक वाक्यः

बात निश्चित और सकारात्मक होती है — कोई संदेह नहीं।

(1) संविधान देश का सर्वोच्च कानून है।

(2) इतिहास साक्षी है कि सत्य की सदा विजय हुई है।

10. निम्नलिखित वाक्यों के भेद पहचानकर लिखिए:

वाक्य	वाक्य-भेद
ईश्वर करे, यह संधि दोनों देशों में स्थायी शांति लाए।	....
उसने हार के बावजूद हिम्मत नहीं खोई।	....
इस विवाद का न्यायसंगत समाधान क्या होगा?	....
प्रतीत होता है, आर्थिक मंदी का असर इस क्षेत्र पर भी पड़ेगा।	....
सदा सत्य बोलो और न्याय का साथ दो।	....
लोकतंत्र में जनता ही सर्वोच्च होती है।	....
यदि शिक्षा व्यवस्था सुदृढ़ हो तो राष्ट्र का भविष्य उज्ज्वल होगा।	....
शाबाश! तुमने असंभव को संभव कर दिखाया!	....

उत्तरः

वाक्य	वाक्य-भेद
ईश्वर करे, यह संधि दोनों देशों में स्थायी शांति लाए।	इच्छावाचक
उसने हार के बावजूद हिम्मत नहीं खोई।	निषेधवाचक
इस विवाद का न्यायसंगत समाधान क्या होगा?	प्रश्नवाचक
प्रतीत होता है, आर्थिक मंदी का असर इस क्षेत्र पर भी पड़ेगा।	संदेहवाचक
सदा सत्य बोलो और न्याय का साथ दो।	आज्ञावाचक
लोकतंत्र में जनता ही सर्वोच्च होती है।	विधानवाचक
यदि शिक्षा व्यवस्था सुदृढ़ हो तो राष्ट्र का भविष्य उज्ज्वल होगा।	संकेतवाचक
शाबाश! तुमने असंभव को संभव कर दिखाया!	विस्मयवाचक

11. निम्नलिखित वाक्य को चारों निर्देशित भेदों में बदलिए: 'न्यायपालिका देश के संविधान की रक्षा करती है।'

(i) निषेधवाचक (ii) प्रश्नवाचक (iii) आज्ञावाचक (iv) संकेतवाचक

उत्तरः

(i) **निषेधवाचक वाक्यः** न्यायपालिका देश के संविधान की रक्षा नहीं करती।

(ii) **प्रश्नवाचक वाक्यः** क्या न्यायपालिका देश के संविधान की रक्षा करती है?

(iii) **आज्ञावाचक वाक्यः** देश के संविधान की रक्षा करो।

(iv) **संकेतवाचक वाक्यः** यदि न्यायपालिका स्वतंत्र हो तो संविधान की रक्षा अवश्य होती है।

12. निम्नलिखित वाक्य को चारों निर्देशित भेदों में बदलिए: 'युवा वर्ग देश के भविष्य का निर्माण करता है।'

(i) निषेधवाचक (ii) विस्मयवाचक (iii) इच्छावाचक (iv) संदेहवाचक

उत्तरः

(i) **निषेधवाचक वाक्यः** युवा वर्ग देश के भविष्य का निर्माण नहीं करता।

(ii) **विस्मयवाचक वाक्यः** वाह! युवा वर्ग कितने उत्साह से देश के भविष्य का निर्माण करता है!

(iii) **इच्छावाचक वाक्यः** काश! युवा वर्ग सदा देश के भविष्य निर्माण में योगदान देता रहे।

(iv) **संदेहवाचक वाक्यः** शायद यह युवा वर्ग देश के भविष्य का निर्माण कर सके।

13. निम्नलिखित निषेधवाचक वाक्य को चारों निर्देशित भेदों में बदलिए:
'उसने अपने सिद्धांतों के साथ कभी समझौता नहीं किया।'
(i) विधानवाचक (ii) प्रश्नवाचक (iii) विस्मयवाचक (iv) आज्ञावाचक

उत्तरः
(i) **विधानवाचक वाक्यः** उसने अपने सिद्धांतों को सदा अडिगता से निभाया।
(ii) **प्रश्नवाचक वाक्यः** क्या उसने अपने सिद्धांतों के साथ कभी समझौता किया?
(iii) **विस्मयवाचक वाक्यः** वाह! उसने अपने सिद्धांतों के साथ कभी समझौता नहीं किया!
(iv) **आज्ञावाचक वाक्यः** अपने सिद्धांतों के साथ कभी समझौता मत करो।

14. निम्नलिखित वाक्य को चारों निर्देशित भेदों में बदलिए:
'पर्यावरण-संरक्षण आज के युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है।'
(i) प्रश्नवाचक (ii) आज्ञावाचक (iii) संकेतवाचक (iv) इच्छावाचक

उत्तरः
(i) **प्रश्नवाचक वाक्यः** क्या पर्यावरण-संरक्षण आज के युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है?
(ii) **आज्ञावाचक वाक्यः** पर्यावरण की रक्षा करो — यही युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है।
(iii) **संकेतवाचक वाक्यः** यदि पर्यावरण-संरक्षण न हो तो मानव-जीवन संकट में पड़ जाएगा।
(iv) **इच्छावाचक वाक्यः** काश! हर नागरिक पर्यावरण-संरक्षण को अपना कर्तव्य समझे।

15. निम्नलिखित वाक्य को चारों निर्देशित भेदों में बदलिए:
'शिक्षित समाज ही राष्ट्र की असली शक्ति होता है।'
(i) निषेधवाचक (ii) संदेहवाचक (iii) विस्मयवाचक (iv) संकेतवाचक

उत्तरः
(i) **निषेधवाचक वाक्यः** शिक्षित समाज के बिना राष्ट्र की असली शक्ति नहीं उभरती।
(ii) **संदेहवाचक वाक्यः** सम्भवतः शिक्षित समाज ही राष्ट्र की असली शक्ति हो।
(iii) **विस्मयवाचक वाक्यः** वाह! शिक्षित समाज ही राष्ट्र की कितनी बड़ी शक्ति होता है!
(iv) **संकेतवाचक वाक्यः** यदि समाज शिक्षित हो तो राष्ट्र अवश्य शक्तिशाली बनेगा।

अध्याय 5

अलंकार

1. परिचय

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्त्वों को अलंकार कहते हैं। जिस प्रकार आभूषण शरीर की सुंदरता में वृद्धि करते हैं, उसी प्रकार अलंकार काव्य में सौंदर्य और चमत्कार उत्पन्न करते हैं।

अलंकार की परिभाषा
काव्य में जो शब्द या अर्थ से सौंदर्य उत्पन्न करते हैं, उन्हें अलंकार कहते हैं। 'अलंकार' शब्द 'अलम्' + 'कार' से बना है, जिसका अर्थ है — भूषण या आभूषण।

अलंकार के प्रमुख उद्देश्य:

- काव्य में सुंदरता और चमत्कार लाना
- भावों को प्रभावशाली रूप से प्रकट करना
- पाठक या श्रोता के मन पर गहरा प्रभाव डालना
- भाषा को लयात्मक और रोचक बनाना

उदाहरण के रूप में देखिए:
सामान्य भाषा: "राम की आँखें बहुत सुंदर हैं।"
अलंकार सहित: "राम के नयन कमल के समान हैं।"
दूसरे वाक्य में उपमा अलंकार के प्रयोग से भाव अधिक प्रभावशाली और सुंदर बन गया।

2. अलंकार के भेद

अलंकार मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं:

1. **शब्दालंकार :** जब काव्य में सौंदर्य शब्दों की ध्वनि, उनकी आवृत्ति या उनके विशेष प्रयोग से उत्पन्न होता है, तो उसे शब्दालंकार कहते हैं।
   उदाहरण: अनुप्रास, यमक, श्लेष
2. **अर्थालंकार :** जब काव्य में सौंदर्य शब्दों के अर्थ से उत्पन्न होता है — शब्द बदलने पर भी अलंकार बना रहता है — तो उसे अर्थालंकार कहते हैं।
   उदाहरण: उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि

नोट:
इस अध्याय में केवल शब्दालंकार के तीन भेद — अनुप्रास, यमक और श्लेष — का अध्ययन किया जाएगा।

3. अनुप्रास अलंकार

जब किसी काव्य-पंक्ति में एक ही वर्ण (व्यंजन) की बार-बार आवृत्ति होती है और इससे एक विशेष संगीतात्मकता या सौंदर्य उत्पन्न होता है, तो उसे अनुप्रास अलंकार कहते हैं।

पहचान करने का तरीका
अनुप्रास अलंकार पहचानने के लिए निम्नलिखित बातें ध्यान रखें:

- किसी एक व्यंजन वर्ण की दो या दो से अधिक बार आवृत्ति हो
- इस आवृत्ति से सुनने में मधुरता या विशेष प्रभाव उत्पन्न हो
- यह आवृत्ति शब्द के आरंभ में, मध्य में या अंत में हो सकती है

उदाहरण और स्पष्टीकरण

उदाहरण	स्पष्टीकरण
चारु चंद्र की चंचल किरणें	'च' वर्ण की बार-बार आवृत्ति हुई है। अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार है।
तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।	'त' वर्ण बार-बार आया है — अनुप्रास अलंकार।
कालिका-सी किलकि कलेऊ देति काल को।	'क' वर्ण की पुनरावृत्ति — अनुप्रास अलंकार।
मुदित महीपति मंदिर आए।	'म' वर्ण की पुनरावृत्ति — अनुप्रास अलंकार।
बंदउँ गुरु पद कंज, कृपा सिंधु नर रूप हरि।	'ब','क','न','र' — अनेक वर्णों की आवृत्ति।

अनुप्रास के प्रकार
अनुप्रास अलंकार के मुख्य प्रकार निम्नलिखित हैं:

(क) **छेकानुप्रास :** जब एक व्यंजन या व्यंजन-समूह की एक बार आवृत्ति हो तथा वह क्रमानुसार हो, तो छेकानुप्रास होता है।
उदाहरण: बर बधू माँगी बर बधू लैके।

(ख) **वृत्यनुप्रास :** जब एक वर्ण की अनेक बार आवृत्ति हो, तो वृत्यनुप्रास होता है।
उदाहरण: सेस महेस गणेस दिनेस सुरेसहु जाहि निरंतर गावैं।

(ग) **लाटानुप्रास :** जब एक शब्द या वाक्यांश की आवृत्ति हो, परंतु अर्थ भिन्न हो, तो लाटानुप्रास होता है।
उदाहरण: पूत सपूत तो का धन संचय, पूत कपूत तो का धन संचय।

स्मरण बिंदु
अनुप्रास = एक ही व्यंजन वर्ण की बार-बार आवृत्ति → संगीतात्मकता

4. यमक अलंकार

जब किसी काव्य में एक ही शब्द दो या दो से अधिक बार आए, परंतु हर बार उसका अर्थ भिन्न हो, तो उसे यमक अलंकार कहते हैं। 'यमक' का अर्थ है — जोड़ा या युगल।

पहचान करने का तरीका
यमक अलंकार पहचानने के लिए ध्यान दें:

- एक ही शब्द (या समान उच्चारण वाले शब्द) काव्य में दो या अधिक बार आए हों
- प्रत्येक बार उस शब्द का अर्थ भिन्न हो
- शब्द की वर्तनी एक हो परंतु अर्थ अलग-अलग हो

उदाहरण और स्पष्टीकरण

उदाहरण	**स्पष्टीकरण**
काली घटा का घमंड घटा।	पहला 'घटा' = बादलों का समूह (noun) दूसरा 'घटा' = कम हुआ (verb) एक शब्द, दो अर्थ → यमक अलंकार
कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय। वा खाए बौराय जग, या पाए बौराय।	पहला 'कनक' = सोना दूसरा 'कनक' = धतूरा यमक अलंकार
माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर। कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।	पहला 'मनका' = माला का दाना दूसरा 'मन का' = मन का (दो शब्द) यमक अलंकार
तीन बेर खाती थी वो तीन बेर खाती है।	पहला 'बेर' = समय (time) दूसरा 'बेर' = फल (fruit) यमक अलंकार

अनुप्रास और यमक में अंतर

अनुप्रास	**यमक**
वर्ण (अक्षर) की आवृत्ति होती है	शब्द की आवृत्ति होती है
एक ही वर्ण बार-बार आता है	एक ही शब्द बार-बार आता है परंतु अर्थ अलग
उदाहरण : 'च' वर्ण: चारु चंद्र की चंचल किरणें	उदाहरण : 'घटा': काली घटा का घमंड घटा

स्मरण बिंदु
यमक = एक ही शब्द बार-बार + हर बार अलग अर्थ

5. श्लेष अलंकार

जब कोई शब्द एक बार ही आए, परंतु उसके एक साथ दो या दो से अधिक अर्थ निकलते हों, तो वहाँ श्लेष अलंकार होता है। 'श्लेष' शब्द का अर्थ है — चिपका हुआ या मिला हुआ। अर्थात् एक शब्द में अनेक अर्थ चिपके (निहित) रहते हैं।

पहचान करने का तरीका
श्लेष अलंकार पहचानने के लिए ध्यान दें:

- कोई एक शब्द केवल एक बार आया हो
- उस एक शब्द के दो या दो से अधिक अर्थ निकलते हों
- दोनों अर्थ प्रसंग में उचित और सार्थक हों

उदाहरण और स्पष्टीकरण

उदाहरण	**स्पष्टीकरण**
रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून। पानी गए न ऊबरे, मोती मानस चून।	'पानी' शब्द तीन अर्थों में: 1. मोती के लिए = चमक 2. मनुष्य के लिए = इज्जत/मान 3. चूने के लिए = जल एक शब्द, अनेक अर्थ → श्लेष
जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय। बारे उजियारो करे, बढ़े अँधेरो होय।	'बारे' के दो अर्थ: 1. जलाने पर (दीपक) 2. बचपन में (कुपुत्र) 'बढ़े' के दो अर्थ: 1. बुझने पर (दीपक) 2. बड़े होने पर (कुपुत्र) श्लेष अलंकार
सुबरन को ढूँढत फिरत कवि, व्यभिचारी, चोर।	'सुबरन' के तीन अर्थ: 1. कवि के लिए = सुंदर शब्द 2. व्यभिचारी के लिए = सुंदर नारी 3. चोर के लिए = सोना (gold) श्लेष अलंकार
चिरजीवौ जोरी जुरे, क्यों न सनेह गँभीर। को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर।	'वृषभानुजा' के दो अर्थ: 1. राधा (वृषभानु की पुत्री) 2. वृषभ की बहन (गाय) श्लेष अलंकार

यमक और श्लेष में अंतर

यमक	श्लेष
शब्द की आवृत्ति (शब्द बार-बार आता है)	शब्द एक बार ही आता है
प्रत्येक बार अलग अर्थ होता है	एक ही बार में दो-दो अर्थ निकलते हैं
उदाहरण : घटा ... घटा (दो बार)	उदाहरण : पानी (एक बार, तीन अर्थ)

स्मरण बिंदु
श्लेष = एक शब्द एक बार + एक साथ दो या अधिक अर्थ

अभ्यास प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अलंकार किसे कहते हैं? एक वाक्य में लिखिए।

   उत्तरः
   काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्त्वों को अलंकार कहते हैं।

2. अनुप्रास अलंकार की परिभाषा लिखिए।

   उत्तरः
   जब किसी काव्य में एक ही वर्ण (व्यंजन) की बार-बार आवृत्ति होती है, तो उसे अनुप्रास अलंकार कहते हैं।

3. 'काली घटा का घमंड घटा' — इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है और क्यों?

   उत्तरः
   यमक अलंकार — 'घटा' शब्द दो बार आया है, पहले 'बादलों का समूह' और दूसरी बार 'कम हुआ' अर्थ में।

4. यमक और श्लेष में मुख्य अंतर क्या है?

   उत्तरः
   यमक में शब्द बार-बार आता है (अलग-अलग अर्थ), जबकि श्लेष में शब्द एक बार ही आता है पर उसके दो या अधिक अर्थ निकलते हैं।

5. 'चारु चंद्र की चंचल किरणें' — इस पंक्ति में कौन-सा वर्ण बार-बार आया है? अलंकार भी बताइए।

   उत्तरः
   'च' वर्ण — अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

6. रहीम दास के निम्नलिखित दोहे में श्लेष अलंकार किस शब्द में है और उसके क्या-क्या अर्थ हैं?
   रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
   पानी गए न ऊबरे, मोती मानस चून।

   उत्तरः
   'पानी' शब्द में — (1) मोती के लिए = चमक, (2) मनुष्य के लिए = इज्जत, (3) चूने के लिए = जल।

7. 'तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये' — इसमें कौन-सा अलंकार है? पहचान का आधार लिखिए।

   उत्तरः
   अनुप्रास अलंकार — 'त' वर्ण की बार-बार आवृत्ति हुई है: तरनि, तनूजा, तट, तमाल, तरुवर।

8. 'माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर' — 'मनका' शब्द में कौन-सा अलंकार है?

उत्तरः
यमक अलंकार — 'मनका' के दो अर्थ: (1) माला का दाना और (2) 'मन का' (मन का विचार)। एक ही शब्द बार-बार, अलग-अलग अर्थ।

9. 'अनुप्रास' शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है?

उत्तरः
'अनुप्रास' का शाब्दिक अर्थ है — अनु (पीछे/बार-बार) + प्रास (वर्ण)। अर्थात् वर्ण की बार-बार आवृत्ति।

10. 'सेस महेस गणेस दिनेस सुरेसहु जाहि निरंतर गावैं' — इसमें कौन-सा वर्ण बार-बार आया है?

उत्तरः
'स' और 'ए' की पुनरावृत्ति — सेस, महेस, गणेस, दिनेस, सुरेस — अनुप्रास अलंकार।

11. यमक अलंकार में अर्थ कब अलग-अलग कहलाता है?

उत्तरः
जब एक ही शब्द दो बार आए और दोनों बार उसका अर्थ भिन्न हो — जैसे 'घटा' (बादल) और 'घटा' (कम हुआ)।

12. निम्नलिखित में से किस पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है?

(क) 'कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय'

(ख) 'रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम'

उत्तरः
(ख); क्योंकि 'रघुपति राघव राजा राम' में 'र' वर्ण की तथा 'पतित पावन' में 'प' वर्ण की स्पष्ट आवृत्ति हुई है। (जबकि 'क' विकल्प में यमक अलंकार है)।

13. 'जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय। बारे उजियारो करे, बढ़े अँधेरो होय।।'— इसमें किस अलंकार की संभावना है?

उत्तरः
श्लेष अलंकार — 'बारे' और 'बढ़े' शब्दों के दो-दो अर्थ निकलते हैं: दीपक और कुपुत्र दोनों के संदर्भ में।

14. रिक्त स्थान भरिए:
जब काव्य में एक ही व्यंजन वर्ण की बार-बार आवृत्ति हो तो ________ अलंकार होता है।

उत्तरः
अनुप्रास

15. रिक्त स्थान भरिए:
श्लेष अलंकार में कोई विशिष्ट शब्द काव्य में केवल ________ बार आता है।

उत्तरः
एक

16. रिक्त स्थान भरिए:
यमक अलंकार में एक ही शब्द बार-बार आता है, परंतु हर बार ________ भिन्न होता है।

उत्तरः
अर्थ

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार पहचानिए और उसका सटीक कारण लिखिए:

(i) ऊंचे घोर मंदर के अंदर रहन वारी, ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहाती हैं।

(ii) मुदित महीपति मंदिर आए, सेवक सचिव सुमंत बुलाए।

उत्तरः

(i) **यमक अलंकारः** यहाँ 'घोर मंदर' वाक्यांश दो बार आया है। पहली बार इसका अर्थ 'ऊँचे विशाल महल' है और दूसरी बार इसका अर्थ 'भयानक पर्वत की कंदराएँ (गुफाएँ)' है। शब्द-समूह समान है पर अर्थ भिन्न है।

(ii) **अनुप्रास अलंकारः** इस पंक्ति के पहले खंड में 'म' वर्ण की (मुदित, महीपति, मंदिर) तथा दूसरे खंड में 'स' वर्ण की (सेवक, सचिव, सुमंत) क्रमिक आवृत्ति हुई है।

2. अनुप्रास और यमक अलंकार में अंतर स्पष्ट करते हुए प्रत्येक का एक-एक उदाहरण दीजिए।

उत्तरः
अनुप्रासः इसमें एक व्यंजन वर्ण की बार-बार आवृत्ति होती है।
उदाहरणः 'चारु चंद्र की चंचल किरणें' ('च' वर्ण की आवृत्ति)
यमकः इसमें एक ही शब्द बार-बार आता है पर हर बार अर्थ अलग होता है।
उदाहरणः 'काली घटा का घमंड घटा' ('घटा' = बादल, घटा = कम हुआ)

3. श्लेष अलंकार किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तरः
जब कोई शब्द एक बार आए परंतु उसके एक साथ दो या अधिक अर्थ निकलते हों, तो श्लेष अलंकार होता है।
उदाहरणः "चरन धरत चिंता करत, चितवत चारों ओर। सुबरन को ढूंढत फिरत, कवि, व्यभिचारी, चोर।"
स्पष्टीकरणः यहाँ 'सुबरन' शब्द एक बार आया है, लेकिन तीन अलग-अलग व्यक्तियों के संदर्भ में इसके तीन अर्थ हैं— कवि के लिए = सुंदर वर्ण (शब्द), व्यभिचारी के लिए = सुंदर रंग-रुप (गोरा रंग), और चोर के लिए = सुवर्ण (सोना)।

4. निम्नलिखित पंक्ति में अलंकार का नाम लिखकर उसे सिद्ध कीजिए:
"चिरजीवौ जोरी जुरे, क्यों न सनेह गँभीर। को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर।"

उत्तरः
यहाँ श्लेष अलंकार है। इस दोहे में 'वृषभानुजा' और 'हलधर' शब्दों में श्लेष चमत्कार है, जिसे इस प्रकार सिद्ध किया जा सकता है:

(1) वृषभानुजा के दो अर्थ: (क) वृषभानु + जा = राधा (राजा वृषभानु की पुत्री), (ख) वृषभ + अनुजा = गाय (बैल की बहन)।

(2) हलधर के वीर के दो अर्थ: (क) बलराम के भाई (श्रीकृष्ण), (ख) हल को धारण करने वाले बैल के भाई (सांड)।

5. अनुप्रास अलंकार के कोई दो प्रकार बताइए और प्रत्येक की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तरः

(1) **छेकानुप्रास** — जब एक व्यंजन या व्यंजन-समूह की एक बार आवृत्ति हो।
उदाहरण: "इस करुणा कलित हृदय में अब विकल रागिनी बजती।" ('क' की आवृत्ति एक बार)।

(2) **वृत्यनुप्रास** — जब एक ही वर्ण की अनेक बार आवृत्ति हो।
उदाहरण: "विवेक विमल विज्ञान विधाता।" ('व' वर्ण की आवृत्ति अनेक बार)।

6. 'कनक कनक ते सौगुनी....' — यहाँ अलंकार पहचानिए। यमक और श्लेष दोनों में यह कहाँ आता है और क्यों?

उत्तरः
अलंकार: यमक अलंकार
कारण — 'कनक' शब्द दो बार आया है — पहला 'कनक' = सोना, दूसरा 'कनक' = धतूरा।
यमक में क्यों, श्लेष में क्यों नहीं:
यमक — शब्द बार-बार (यहाँ दो बार) आता है और प्रत्येक बार अर्थ भिन्न होता है। यहाँ 'कनक' दो बार आया है, इसलिए यमक है।
श्लेष नहीं — श्लेष में शब्द एक ही बार आता है और उससे एक साथ दो अर्थ निकलते हैं। यहाँ शब्द दो बार आया है, इसलिए श्लेष नहीं।

7. 'पूत सपूत तो का धन संचय, पूत कपूत तो का धन संचय' — इसमें कौन-सा अनुप्रास का भेद है? क्यों?

उत्तरः
अलंकार: लाटानुप्रास
इस पंक्ति में 'पूत... का धन संचय' वाक्यांश की पुनरावृत्ति हुई है, परंतु दोनों बार का अर्थ भिन्न है:
पहली पंक्ति: यदि पुत्र सपूत (अच्छा) है तो धन संचय की जरूरत नहीं।
दूसरी पंक्ति: यदि पुत्र कपूत (बुरा) है तो धन संचय किस काम का।
जब एक ही शब्द-समूह की आवृत्ति हो परंतु अर्थ भिन्न हो, तो लाटानुप्रास होता है।

8. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार पहचानकर उसका कारण लिखिए:

(i) 'तीन बेर खाती थी वो तीन बेर खाती है।'

(ii) 'कालिका-सी किलकि कलेऊ देति काल को।'

उत्तरः

(i) यमक अलंकार — 'बेर' शब्द दो बार आया है: पहला 'बेर' = समय (बार), दूसरा 'बेर' = एक फल। एक ही शब्द, दो भिन्न अर्थ — यमक अलंकार।

(ii) अनुप्रास अलंकार — 'क' वर्ण की बार-बार आवृत्ति हुई है — कालिका, किलकि, कलेऊ, काल — इससे संगीतात्मकता उत्पन्न हुई है।

9. श्लेष अलंकार और यमक अलंकार में दो अंतर लिखिए तथा प्रत्येक का एक उदाहरण भी दीजिए।

उत्तरः

(1) यमक में शब्द बार-बार (दो-दो बार) आता है; श्लेष में शब्द केवल एक बार आता है।
उदाहरण: 'काली घटा का घमंड घटा' (घटा = बादल, घटा = कम हुआ)

(2) यमक में प्रत्येक आवृत्ति पर अर्थ अलग होता है; श्लेष में एक ही शब्द से एक साथ दो अर्थ निकलते हैं।
उदाहरण: 'रहिमन पानी राखिए' (पानी = चमक/इज्जत/जल — एक शब्द, तीन अर्थ)

अध्याय 1

दो बैलों की कथा

1. लेखक परिचय

'दो बैलों की कथा' नामक अमर विधा के सृजनकर्ता मुंशी प्रेमचंद का जन्म सन् 1880 में वाराणसी के निकट लमही ग्राम, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनका नाम हिंदी जगत में उपन्यास-सम्राट के रूप में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। इन्होंने आजीवन अपनी पारखी लेखनी के माध्यम से कृषक जीवन, ग्रामीण परिवेश और मूक पशुओं के भीतर छिपे आत्मीय संबंधों की मर्मस्पर्शी व्याख्या करके हिंदी साहित्य को अलंकृत किया है। अपनी सहज, मुहावरेदार और जीवंत भाषा शैली के द्वारा इन्होंने हिंदी प्रेमियों को सदैव गौरवान्वित किया है। सन् 1936 में इस महान कथाकार का निधन हो गया।

2. पाठ-परिचय

'दो बैलों की कथा' प्रेमचंद द्वारा रचित एक मार्मिक कहानी है जिसमें हीरा और मोती नामक दो बैलों के माध्यम से मित्रता, स्वाभिमान और स्वतंत्रता की भावना को जीवंत रूप दिया गया है। किसान जीवन और पशुओं के भावनात्मक संबंधों को केंद्र में रखते हुए लेखक ने यह सिद्ध किया है कि स्वतंत्रता सहज नहीं मिलती — उसके लिए बार-बार संघर्ष करना पड़ता है। परोक्ष रूप से यह कहानी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की प्रेरणा से भी जुड़ी है।

3. पाठ-सारांश

गधे और बैल की तुलना

कहानी की शुरुआत जानवरों के स्वभाव की चर्चा से होती है। आमतौर पर गधे को सबसे बुद्धिहीन या बेवकूफ जानवर माना जाता है। लेखक का मानना है कि गधे को यह पदवी उसके अत्यधिक सीधेपन और सुख-दुख या लाभ-हानि में एक समान रहने वाले 'ऋषि-मुनियों जैसे गुणों' के कारण मिली है। सीधेपन के कारण ही संसार में सीधे लोगों और भारतीयों का अनादर होता है। बैल को गधे का छोटा भाई कहा गया है क्योंकि वह गधे से थोड़ा कम सीधा होता है। बैल कभी-कभी अड़ जाता है, मारता भी है और कई तरीकों से अपना असंतोष प्रकट करता है, इसलिए उसका स्थान गधे से थोड़ा नीचे माना गया है।

हीरा और मोती का आपसी प्रेम

झूरी के पास 'पछाईं' जाति के हीरा और मोती नाम के दो सुंदर और कर्मठ बैल थे। साथ रहते-रहते दोनों में गहरा भाईचारा हो गया था और वे मूक-भाषा में एक-दूसरे के मन की बात समझ लेते थे। गाड़ी या हल में जोते जाने पर दोनों की यही चेष्टा होती थी कि ज़्यादा-से-ज़्यादा बोझ उनकी अपनी गर्दन पर रहे। नाँद में खली-भूसा पड़ने पर दोनों साथ ही मुँह डालते और साथ ही हटाते थे।

नए स्थान पर अपमान और विद्रोह

एक बार झूरी ने दोनों बैलों को अपने साले गया के साथ अपनी ससुराल भेज दिया। बैलों को लगा कि उन्हें बेच दिया गया है, इसलिए उन्होंने गया को बहुत परेशान किया। नए घर में स्वाभिमानी बैलों ने सूखे भूसे में मुँह तक नहीं डाला।

आधी रात को दोनों ने मूक-भाषा में सलाह की, पगहे तुड़ाए और वापस झूरी के घर भाग आए। झूरी उन्हें देखकर गद्गद हो गया और गाँव के बच्चों ने उनका स्वागत किया। परंतु, झूरी की पत्नी उनके भागने पर चिढ़ गई और उन्हें केवल सूखा भूसा देने का आदेश दे दिया।

दोबारा गया के घर जाना और क्रूरता का सामना

अगले दिन गया उन्हें फिर ले गया और गाड़ी में जोता। मोती ने गाड़ी गिराना चाही, पर हीरा ने संभाल लिया। गया ने उन्हें मोटी रस्सियों से बाँधकर सूखा भूसा दिया। अगले दिन हल में जोते जाने पर बैलों ने पाँव उठाने से मना कर दिया। गया द्वारा हीरा की नाक पर डंडे बरसाने पर मोती ने गुस्सा होकर हल-रस्सी सब तोड़ डाला। हीरा के समझाने पर मोती शांत हुआ और गया उन्हें फिर पकड़ ले गया।

नन्ही बालिका का प्रेम और वहाँ से भागना

गया के घर में भैरो की एक छोटी लड़की रहती थी, जिसकी सौतेली माँ उसे मारती थी। वह रोज रात को दोनों बैलों को दो रोटियाँ खिलाती थी। इस प्रेम के कारण सूखा भूसा खाकर भी दोनों दुर्बल नहीं होते थे। एक रात जब घर में बैलों की नाकों में नाथ डालने की योजना बनी, तो उस लड़की ने उनके पगहे खोल दिए और शोर मचाकर उन्हें भगा दिया। गया ने उनका पीछा किया, पर वे भाग निकले।

साँड़ से मुकाबला और मटर के खेत में कैद

रास्ता भटककर दोनों मित्र एक मटर के खेत में चरने लगे। पेट भरने के बाद उनका सामना एक भयानक साँड़ से हुआ। दोनों

ने संगठित होकर आगे-पीछे से साँड़ पर योजनाबद्ध हमला किया और उसे बेदम करके गिरा दिया। जीत के बाद मोती फिर मटर चरने लगा, पर कीचड़ में खुर धँसने से पकड़ा गया। अपने मित्र को संकट में देख हीरा भी वापस आ गया और दोनों को काँजीहौस में बंद कर दिया गया।

काँजीहौस की दुर्दशा और दीवार तोड़ना
काँजीहौस में पूरे दिन उन्हें खाने को एक तिनका भी न मिला और वहाँ कई पशु अधमरे पड़े थे। भूख से तंग आकर हीरा ने सींगों से कच्ची दीवार गिराना शुरु किया, जिससे चौकीदार ने उसे मोटी रस्सी से बाँध दिया। अब मोती ने अपनी ताकत से बाड़े की आधी दीवार तोड़ दी। दीवार गिरते ही अन्य जानवर भाग गए और मोती ने डरपोक गधों को भी सींग मार-मारकर भगाया। हीरा बंधा था, इसलिए मोती उसे छोड़कर नहीं भागा और सुबह होने पर कर्मचारियों ने मोती को भी मोटी रस्सी से बाँध दिया।

कसाई के हाथों नीलामी और घर वापसी
एक सप्ताह तक भूखे रहने से दोनों की ठठरियाँ निकल आईं। अंत में, एक कठोर दढ़ियल कसाई ने उन्हें नीलामी में खरीद लिया। कसाई के साथ चलते हुए दोनों बैल डर के मारे गिरते-पड़ते भाग रहे थे। अचानक उन्हें अपना परिचित रास्ता और कुआँ दिखाई दिया। घर नजदीक देखकर उनकी सारी दुर्बलता गायब हो गई और वे उन्मत्त होकर सीधे अपने 'थान' पर आकर खड़े हो गए।

कहानी का सुखद अंत
झूरी ने बैलों को देखते ही दौड़कर उन्हें गले लगा लिया। कसाई ने आकर जबरदस्ती बैलों की रस्सियाँ पकड़ीं और उन्हें अपना बताने लगा। झूरी के विरोध करने पर वीर मोती ने सींग चलाया और कसाई को गाँव के बाहर तक खदेड़ दिया। कसाई हारकर गालियाँ बकता हुआ चला गया। थोड़ी ही देर में नाँदों में खली-भूसा भर दिया गया और दोनों मित्र चाव से खाने लगे। पूरे गाँव में उत्सव का माहौल हो गया और मालकिन ने भी आकर दोनों के माथे चूम लिए।

4. कठिन शब्दार्थ

पृष्ठ 4

1. बुद्धिहीन – मूर्ख, बेवकूफ
2. परले दरजे का – अत्यंत, चरम सीमा का, सबसे ऊँचे दर्जे का
3. निरापद – आपत्ति से रहित, निर्विघ्न, सुरक्षित
4. सहिष्णुता – सहनशीलता, क्षमा
5. पदवी – उपाधि, दर्जा
6. अनायास – बिना प्रयास के, अचानक
7. असंतोष – नाराजगी, असंतृप्ति
8. कुलेल – क्रीड़ा, कौतूहल
9. विषाद – उदासी, अवसाद, जड़ता, मन उचट जाना
10. पराकाष्ठा – अंतिम सीमा, चरम कोटि या सीमा, कभी, शायद
11. कदाचित् – कभी, शायद
12. दुर्दशा – बुरी दशा, खराब हालत
13. कुसमय – बुरा समय, विपत्ति का समय
14. आदर्श – श्रेष्ठ सिद्धांत, नमूना
15. सभ्य – शिष्ट, भद्र
16. गण्य – गिनने योग्य, सम्मानित
17. सर्वश्रेष्ठ – सबसे अच्छा, सबसे बढ़कर

पृष्ठ 5

18. अड़ियल – हठी, जिद करने वाला
19. रीतियों – तरीकों, ढंगों
20. पछाईं – पश्चिमी प्रदेश का, पश्चिम
21. चौकस – चौकन्ना, सावधान, ठीक
22. डी़ल – शरीर की ऊँचाई-चौड़ाई आदि, कद, देह, शरीर
23. मूक-भाषा – बिना बोले इशारों की भाषा
24. विचार-विनिमय – विचारों का आदान-प्रदान
25. वंचित – रहित, जिसे न मिला हो
26. विग्रह – अलगाना, फैलाना, फूट
27. विनोद – परिहास, मनोरंजन, हटाना
28. आत्मीयता – अपनापन, मैत्री
29. घनिष्ठता – गहरापन, नजदीकी
30. चेष्टा – कोशिश, प्रयास
31. नाँद – मिट्टी का एक बड़ा और चौड़ा बर्तन जिसमें पशुओं को चारा-पानी आदि दिया जाता है, हौदी
32. गोईं – खेल का साथी, सखी
33. पगहिया – ढोर (पशु) बाँधने की रस्सी
34. चाकरी – नौकरी, सेवा
35. जालिम – अत्याचारी, क्रूर
36. बेगानों – अजनबियों, परायों

पृष्ठ 6

37. कनखियों – आँख की कोर, तिरछी निगाह से देखना, आँख का इशारा
38. चरनी – मेंड़दार लंबा चबूतरा जिस पर गाय-बैल को चारा पानी दिया जाता है
39. गाँव – फंदेदार रस्सी जो बैल आदि के गले में पहनाई जाती है
40. विद्रोहमय – विद्रोह से भरा हुआ
41. गद्गद – भावुक होना, अत्यंत प्रसन्न होना
42. प्रेमालिंगन – प्यार से गले मिलना
43. मनोहर – सुंदर, मन को हरने वाला
44. अभूतपूर्व – जो पहले कभी न हुआ हो
45. अभिनंदन-पत्र – प्रशंसा-पत्र, स्वागत-पत्र
46. प्रतिवाद – विरोध, खंडन, वादी की बात के विरोध में कही जाने वाली बात

पृष्ठ 7

47. नमक-हराम – कृतघ्न, धोखेबाज
48. आक्षेप – इल्जाम, व्यंग्यपूर्ण दोषारोपण
49. कामचोर – काम से जी चुराने वाला
50. ताकीद – किसी कार्य के लिए बार-बार चेताने की क्रिया
51. सहनशील – धीरज रखने वाला, बर्दाश्त करने वाला
52. टिटकार – 'टिक-टिक' शब्द करके घोड़े, बैल आदि को चलने के लिए प्रेरित करना
53. व्यथा – दुःख, पीड़ा, दर्द

पृष्ठ 8

54. निर्दयी – बेरहम, क्रूर
55. तेवर – क्रोधभरी दृष्टि, कोप प्रकट करने वाली तिरछी नजर, भौंह
56. मसलहत – हितकर बात, भलाई, उचित
57. थान – पशुओं के बाँधे जाने की जगह, बँधी हुई लंबाई का कपड़े का बड़ा टुकड़ा

पृष्ठ 9

58. बरकत – वृद्धि, बढ़ती, सौभाग्य, लाभ, प्रभाव
59. दुर्बल – कमजोर
60. अनाथ – जिसका कोई सहारा न हो
61. संदेह – शक

पृष्ठ 10

62. बेतहाशा – बहुत तेजी से, बदहवास होकर (भागना), बिना सोचे-विचारे
63. व्याकुल – घबड़ाया हुआ, हतबुद्धि, व्यग्र, अभिभूत, भीत
64. आजादी – स्वतंत्रता
65. भयंकर – डरावनी, खौफनाक
66. रगेदता – भगाना, खदेड़ना, दौड़ाना
67. संगठित – एकजुट, इकट्ठा
68. तजुरबा – अनुभव

पृष्ठ 11

69. मल्लयुद्ध – कुश्ती, बाहुयुद्ध
70. तिरस्कार – उपेक्षा, दुत्कार
71. बैरी – दुश्मन, शत्रु
72. ग्रास – कौर, निवाला, आहार, निगलना, ग्रहण
73. मेंड़ – खेत की सीमा, सिंचाई आदि के लिए उसके चारों ओर बनाया हुआ मिट्टी का घेरा
74. खुर – नख, चारपाई के पाये का निचला हिस्सा
75. संकट – मुसीबत, आफत
76. काँजीहौस – वह बाड़ा जिसमें दूसरे का खेत आदि खाने वाले या अनाथ चौपाए (पशु) बंद किए जाते और कुछ दंड लेकर छोड़े या नीलाम किए जाते हैं
77. साबिका – वास्ता, सरोकार, काम (पड़ना, होना)
78. तृप्ति – भोजन आदि की प्राप्ति से उत्पन्न संतोष या तृप्त होने का
79. दहक – आग का दहकना, लपट, ज्वाला

पृष्ठ 12

80. उजड्डपन – अशिष्टता, उदंडता, उच्छृंखलता
81. बूते – सामर्थ्य, बल, शक्ति, बस
82. प्रतिद्वंद्वी – विरोधी, मुकाबले में खड़ा होने वाला
83. जोर-आजमाई – परीक्षार्थ प्रयोग करना, परीक्षा, जाँच करना

पृष्ठ 13

84. चेत – होश, संज्ञा, याद, ज्ञान, चित्त, मन, इच्छा, सावधानी
85. स्वार्थी – मतलबी, अपना हित चाहने वाला
86. विपत्ति – संकट, मुसीबत
87. ठठरियाँ – हड्डियों का ढांचा
88. डुग्गी – चमड़े से मढ़ा चौड़े मुँह का छोटा बाजा

पृष्ठ 14

89. अंतर्ज्ञान – भीतर की समझ, मन की बात भांपना
90. बधिक – कसाई, वध करने वाला
91. प्रतिक्षण – हर पल, लगातार

पृष्ठ 15

92. उन्मत्त – मतवाला, सनकी
93. अख्तियार – पसंद करना या इसका अधिकार, वश, विचाराधिकार, ग्रहण
94. नीलाम – बिक्री की एक रीति जिसमें सबसे अधिक दाम बोलने वाले के हाथ माल बेचा जाता है, बोली बोलकर बेचना
95. उछाह – उत्सव, उमंग, उत्साह

5. पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. कहानी में हीरा और मोती का आपसी संबंध किस गुण को मुख्य रूप से दर्शाता है?
(क) प्रतिस्पर्धा और प्रतिद्वंद्विता
(ख) एकता और सहयोग
(ग) गर्व और दंभ
(घ) विद्रोह और क्रोध
उत्तरः
(ख) एकता और सहयोग
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि हीरा और मोती हमेशा एक-दूसरे के साथ मिलकर काम करते थे। वे हल में जोते जाने

पर अधिक से अधिक बोझ स्वयं उठाने की कोशिश करते थे। काँजीहौस में दीवार तोड़ते समय भी दोनों ने मिलकर प्रयास किया। साँड़ से लड़ाई में दोनों ने एकजुट होकर उसे भगाया। जब हीरा बँधा रह गया, तो मोती ने उसे अकेला छोड़ने से इनकार कर दिया। ये सभी घटनाएँ उनकी एकता और सहयोग की भावना को सिद्ध करती हैं।

2. हीरा-मोती ने नया स्थान स्वीकार क्यों नहीं किया?
(क) उन्हें भरपेट भोजन दिया गया।
(ख) उन्हें बहुत मोटी रस्सी से बाँधा गया।
(ग) मालिक ने बेचा, यह सोचकर उन्हें अपमान लगा।
(घ) उन्हें अलग-अलग बाँधा गया।

उत्तरः
(ग) मालिक ने बेचा, यह सोचकर उन्हें अपमान लगा।
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि बैलों ने झूरी के घर को अपना घर समझ लिया था और उसकी सेवा में पूरी निष्ठा से काम किया था। जब झूरी ने उन्हें गया के साथ भेजा तो उन्हें लगा कि मालिक ने उन्हें बेच दिया है। यह अहसास उनके लिए गहरे अपमान का कारण बना। इसीलिए वे नए स्थान पर न खाना खाते थे, न काम करते थे। उनका दिल भारी था क्योंकि जिसे उन्होंने अपना घर समझा था, वह उनसे छूट गया था।

3. बैलों ने रस्सी तोड़कर घर लौटने का निर्णय क्यों लिया?
(क) कष्टों से बचने के लिए
(ख) स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए
(ग) अभिमान की रक्षा के लिए
(घ) अपनापन पाने के लिए

उत्तरः
(घ) अपनापन पाने के लिए
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि बैल गया के घर में खाना-पानी न मिलने पर भी सहन करते रहे, किंतु जो बात उन्हें सबसे अधिक कष्ट देती थी वह थी — अपने असली घर और अपने प्रिय मालिक झूरी से दूरी। वे झूरी के पास अपनापन, स्नेह और परिचित माहौल पाते थे। इसीलिए रात के अँधेरे में उन्होंने रस्सियाँ तोड़कर झूरी के घर की ओर भागने का निर्णय लिया।

4. गया द्वारा डंडे से मारने पर मोती का आक्रोश किस मानवीय मनोवृत्ति का द्योतक है?
(क) स्वाभिमान (ख) अहिंसा
(ग) पराधीनता (घ) अन्याय की रक्षा

उत्तरः
(क) स्वाभिमान
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि मोती तब तक सहन करता रहा जब तक मार सीमा में थी, परंतु जब गया ने हीरा की नाक पर जोर से डंडे मारे, तो मोती का स्वाभिमान जाग उठा। उसने हल लेकर भागने का प्रयास किया। यह आक्रोश भय से नहीं, बल्कि इस भावना से था कि अत्याचार के सामने चुप रहना अपने और अपने साथी के सम्मान को नष्ट करना है। यही स्वाभिमान की मनोवृत्ति का द्योतक है।

5. कहानी में बैलों की 'मूक-भाषा' का प्रयोग लेखक ने किस लिए किया?
(क) कहानी को रोचक बनाने के लिए
(ख) मनुष्य जैसी चेतना दिखाने के लिए
(ग) संवादों को छोटा रखने के लिए
(घ) कथा में हास्य उत्पन्न करने के लिए

उत्तरः
(ख) मनुष्य जैसी चेतना दिखाने के लिए
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि प्रेमचंद यह दर्शाना चाहते थे कि पशुओं में भी भावनाएँ, विचार और समझ होती है। 'मूक-भाषा' के माध्यम से वे बताते हैं कि हीरा और मोती एक-दूसरे के मनोभाव समझते थे, मिलकर योजना बनाते थे और नैतिक निर्णय लेते थे — ये सब मानवीय चेतना के लक्षण हैं। साथ ही यह कहानी परोक्ष रूप से स्वतंत्रता आंदोलन की भावना से जुड़ी है, जिसे पशुओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है।

6. 'दो बैलों की कथा' को यदि स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ें, तो हीरा और मोती किसके प्रतीक हो सकते हैं?
(क) भारत पर अंग्रेजों के क्रूर और अन्यायपूर्ण शासन के
(ख) स्वतंत्रता संग्राम में पशुओं के योगदान के
(ग) सत्याग्रह और अहिंसा के आंदोलन के
(घ) स्वतंत्रता के लिए भारतीय जनता के संघर्ष के

उत्तरः
(घ) स्वतंत्रता के लिए भारतीय जनता के संघर्ष के
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि हीरा और मोती की यात्रा उसी प्रकार है जैसे भारतीय जनता की स्वतंत्रता की चाह। वे बार-बार बंधन में डाले जाते हैं, यातनाएँ सहते हैं, फिर भी संघर्ष नहीं छोड़ते। काँजीहौस की दीवार तोड़ना, रस्सियाँ चबाना, अत्याचार का प्रतिरोध करना — ये सभी उस भारतीय जनता का प्रतिनिधित्व करते हैं जो अंग्रेजी दासता से मुक्ति के लिए संघर्षरत थी।

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. "दूसरे दिन गया ने बैलों को हल में जोता, पर इन दोनों ने जैसे पाँव न उठाने की कसम खा ली थी।" जब बैल नए मालिक के यहाँ गए, तो उन्होंने काम करने से इनकार क्यों कर दिया था?

उत्तरः
जब हीरा और मोती को झूरी के साले गया के घर भेजा गया, तो उन्हें लगा कि उनके प्रिय मालिक ने उन्हें बेच दिया है। यह अहसास उनके लिए गहरी पीड़ा का कारण था। वे झूरी के

घर को अपना घर मानते थे और वहाँ का स्नेह, अपनापन और देखभाल उन्हें प्रिय था। गया के यहाँ न केवल उचित चारा-दाना नहीं दिया गया, बल्कि उनके साथ कठोर व्यवहार भी किया गया।

काम न करने के पीछे मुख्य कारण यह था कि वे एक नए स्थान पर स्वयं को अपमानित और अजनबी महसूस कर रहे थे। उनका मन भारी था और वे झूरी की याद में डूबे हुए थे। यह उनका विरोध का मूक तरीका था — बिना किसी शब्द के, केवल निष्क्रियता से वे अपनी अस्वीकृति प्रकट कर रहे थे। जब इंसान अपनी इच्छा के विरुद्ध काम करने पर विवश किया जाता है, तो उसके भीतर भी ऐसा ही प्रतिरोध जन्म लेता है।

2. "गाँव के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व न होने पर भी महत्वपूर्ण थी।" बैलों का घर लौट आना कोई साधारण घटना नहीं है। कैसे?
(संकेत– वे क्यों लौट आए, उनके और झूरी के मन में कौन-कौन से भाव रहे होंगे, क्या वास्तविक जीवन में भी ऐसा होता है आदि।)

उत्तरः
बैलों का घर लौट आना इसलिए साधारण घटना नहीं है क्योंकि इसके पीछे कई गहरी भावनाएँ और संदेश छिपे हैं:

1. **उनके लौटने के कारण:** हीरा और मोती ने गया के घर पर अपमान, मार और भूख सहन की, फिर भी उनका मन झूरी के प्रेम और अपनेपन को नहीं भूल सका। उन्होंने रात के अँधेरे में मोटी रस्सियाँ तोड़कर घर की राह पकड़ी — यह केवल शारीरिक वापसी नहीं थी, यह उनकी आत्मीयता और निष्ठा की अभिव्यक्ति थी।
2. **झूरी के मन के भाव:** झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गदगद हो गया और दौड़कर उन्हें गले लगा लिया। उसके मन में अपराध-बोध भी रहा होगा कि उसने उन्हें भेजकर कष्ट दिया। उनकी वापसी पर उसकी खुशी सच्ची थी।
3. **बैलों के मन के भाव:** उनकी आँखों में 'विद्रोहमय स्नेह' झलक रहा था — यानी वे कह रहे थे कि हम नाराज भी हैं, पर तुमसे प्यार भी करते हैं।
4. **वास्तविक जीवन में:** हाँ, वास्तविक जीवन में भी पशु अपने प्रिय मालिक या घर को याद रखते हैं। यह घटना बताती है कि प्रेम और अपनापन किसी भी बाधा को पार कर सकता है।

3. "मोती ने मूक-भाषा में कहा— अब तो नहीं सहा जाता, हीरा!" 'कभी-कभी संघर्ष करना आवश्यक हो जाता है' इस कथन को कहानी के उदाहरणों से सिद्ध कीजिए।

उत्तरः
'कभी-कभी संघर्ष करना आवश्यक हो जाता है' — यह कथन 'दो बैलों की कथा' में कई उदाहरणों से सिद्ध होता है:

1. **गया के घर से भागना:** जब गया के यहाँ उन्हें उचित चारा-दाना नहीं दिया गया और मार पड़ी, तो दोनों ने रस्सियाँ तोड़कर भागने का निर्णय लिया। यदि वे सहते रहते तो उनका जीवन दुखमय बना रहता।
2. **साँड़ से टकराव:** जंगल में जब विशालकाय साँड़ ने उन पर आक्रमण किया, तो भागना कायरता होती। दोनों ने मिलकर उसका सामना किया और उसे भगा दिया। यहाँ संघर्ष न करने पर जान खतरे में थी।
3. **काँजीहौस की दीवार तोड़ना:** एक सप्ताह तक भूखे-प्यासे रखे जाने पर हीरा ने दीवार में सींग मारना शुरु किया। चौकीदार ने मारा, रस्सी से बाँधा, फिर भी हीरा ने कहा — "जोर तो मारता ही जाऊँगा, चाहे कितने ही बंधन पड़ते जाएँ।" इस संघर्ष से न केवल वे स्वयं बल्कि अनेक अन्य जानवर भी मुक्त हो सके।
4. **दाढ़ीवाले कसाई से मोती का मुकाबला:** जब दाढ़ीवाला बैलों को पकड़ने आया, तो मोती ने सींग चलाकर उसे भगा दिया। यदि वह चुप रह जाता, तो दोनों मारे जाते।

ये सभी उदाहरण सिद्ध करते हैं कि जब अत्याचार, अन्याय और जीवन पर खतरा हो, तो संघर्ष आवश्यक और उचित है।

4. "जब पेट भर गया और दोनों ने आजादी का अनुभव किया..." हीरा एवं मोती 'स्वतंत्रता' और 'अपनापन' दोनों में से किस भावना से अधिक प्रेरित थे? कारण सहित लिखिए।

उत्तरः
हीरा और मोती 'अपनापन' की भावना से अधिक प्रेरित थे — यह कहानी के प्रमाण से स्पष्ट होता है। यदि वे केवल 'स्वतंत्रता' से प्रेरित होते, तो गया के घर से भागने के बाद वे किसी खुले मैदान में रहते या कहीं और चले जाते। परंतु उन्होंने सीधे झूरी के घर की राह पकड़ी। जब वे भटक गए, तब भी उनका लक्ष्य झूरी का घर ही था।

काँजीहौस से भागने का अवसर मिलने पर भी मोती हीरा को बँधा छोड़कर नहीं गया — यह अपनापन था, स्वतंत्रता की लालसा नहीं। हीरा ने भी कहा कि अकेले जाना उचित नहीं। जब वे झूरी के घर पहुँचे और उसने गले लगाया, उनकी आँखों से आनंद के आँसू बहने लगे — यही अपनेपन की चरम अनुभूति थी।

स्वतंत्रता उन्हें तब भी मिली जब वे खेत में मटर चर रहे थे, पर वह संतोष क्षणिक था। असली सुख झूरी के पास लौटकर मिला।

5. "बैलों ने जैसे पाँव न उठाने की कसम खा ली थी।"
'अत्याचार सहना भी अन्याय में भागीदारी है'— क्या आप इस कथन से सहमत हैं? अपने उत्तर के कारण भी बताइए।

उत्तरः
हाँ, मैं इस कथन से सहमत हूँ कि 'अत्याचार सहना भी अन्याय में भागीदारी है।' जब हम अत्याचार को बिना विरोध के सहते रहते हैं, तो अत्याचारी को यह संदेश मिलता है कि

वह जो कर रहा है, वह सही है या सहनीय है। इससे उसका साहस और बढ़ता है।

कहानी में जब तक हीरा और मोती गया के अत्याचार को चुपचाप सहते रहे, तब तक उनकी स्थिति बिगड़ती गई। जब उन्होंने काम करने से इनकार किया, भागने का प्रयास किया और दीवार तोड़ी — तब जाकर परिवर्तन संभव हुआ। गधे इसके विपरीत उदाहरण हैं — वे काँजीहौस में दीवार गिर जाने पर भी भागे नहीं, यह कहते हुए कि "हमें डर लगता है।" यह अत्याचार में भागीदारी का ही रूप है।

वास्तविक जीवन में भी, यदि हम किसी के प्रति हो रहे अन्याय को देखकर चुप रह जाते हैं, तो हम भी उस अन्याय के एक हिस्से के लिए जिम्मेदार होते हैं। इसलिए उचित समय पर संघर्ष और प्रतिरोध आवश्यक है।

6. "बहुत दिनों साथ रहते-रहते दोनों में भाईचारा हो गया था।" हीरा और मोती अभिन्नमित्र थे। कहानी की किन-किन घटनाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है? कम से कम तीन बिंदु लिखिए।

उत्तरः

1. **एक-दूसरे के लिए अधिक बोझ उठानाः** जब दोनों हल या गाड़ी में जोते जाते थे, तो हर एक की यही चेष्टा होती थी कि अधिक से अधिक बोझ उसी की गरदन पर रहे। यह सच्ची मित्रता की पहचान है — जहाँ अपने मित्र को कष्ट से बचाने की भावना हो।
2. **विपत्ति में साथ न छोड़नाः** काँजीहौस में जब मोती को दीवार तोड़ने का मौका मिला और वह भाग सकता था, तब भी उसने हीरा को बँधा छोड़कर जाने से इनकार कर दिया। उसने कहा — "आज तुम विपत्ति में पड़ गए तो मैं तुम्हें छोड़कर अलग हो जाऊँ?" — यह असली मित्रता का प्रमाण है।
3. **एक-दूसरे की थकान मिटाना**: दिन भर काम के बाद जब दोनों खुलते थे, तो एक-दूसरे को चाट-चाटकर अपनी थकान मिटा लिया करते थे। साँड़ से युद्ध में भी दोनों ने मिलकर रणनीति बनाई और एक-दूसरे की रक्षा की।

7. "उसी समय मालकिन ने आकर दोनों के माथे चूम लिए।" कहानी में मालकिन और छोटी लड़की, दोनों के व्यवहार की तुलना कीजिए।

उत्तरः

पहलू	**मालकिन (झूरी की पत्नी)**	**छोटी लड़की (भैरो की बेटी)**
प्रारंभिक व्यवहार	बैलों को 'नमकहराम' कहा, सूखा भूसा देने का आदेश दिया	बैलों को अपनी रोटियाँ खिलाईं, माथे सहलाए
भावना	स्वार्थपरक — बैलों से काम चाहिए था	निःस्वार्थ — उनसे आत्मीयता थी
संकट के समय	बैलों को दंड देने का आदेश दिया	बैलों को रात में चुपके से खोल दिया और भगाया
अंतिम व्यवहार	बैलों के लौटने पर माथे चूम लिए	पूरी कहानी में उनकी सच्ची हितैषी रही

मालकिन का व्यवहार परिस्थिति के अनुसार बदलता रहा — पहले कठोर, अंत में स्नेहिल। लेकिन छोटी लड़की का व्यवहार आरंभ से अंत तक निस्वार्थ और प्रेमपूर्ण रहा। उसकी आत्मीयता का कारण था कि वह स्वयं भी सौतेली माँ के अत्याचार से पीड़ित थी, इसलिए उसे बैलों के दुख की समझ थी।

मेरी कल्पना मेरे अनुमान

1. "उसने उनके माथे सहलाए और बोली– खोले देती हूँ। चुपके से भाग जाओ..." यदि आप वह छोटी लड़की होते, तो बैलों की मदद किस प्रकार करते?

उत्तरः

यदि मैं वह छोटी लड़की होता/होती, तो बैलों की मदद इस प्रकार करता/करती:

1. **भोजन-पानीः** मैं प्रतिदिन छुपकर बैलों को रोटियाँ और पानी देता/देती, ताकि वे कमज़ोर न हों।
2. **रस्सियाँ काटनाः** केवल गराँव खोलने की बजाय मैं एक धारदार औज़ार से उनकी मज़बूत रस्सियाँ काटने का प्रयास करता/करती।
3. **सुरक्षित समय चुननाः** जब घर के सभी लोग गहरी नींद में हों, उस समय उन्हें मुक्त करता/करती ताकि उनके पास भागने का पर्याप्त समय हो।
4. **रास्ता दिखानाः** उन्हें झूरी के गाँव की दिशा में धकेलता/धकेलती या आगे जाकर रास्ता दिखाने की कोशिश करता/करती।
5. **ध्यान भटकानाः** यदि कोई जागने लगे, तो मैं ज़ोर से चिल्लाकर ध्यान भटकाता/भटकाती — जैसा लड़की ने किया भी — ताकि बैलों को भागने का समय मिल जाए।

2. "दोनों गधे अभी तक ज्यों-के-त्यों खड़े थे।" भय और संकोच इंसान को अवसर मिलने पर भी जकड़े रखता है। क्या आप इस कथन से सहमत हैं? इस वाक्य के संबंध में कहानी और अपने अनुभवों से उदाहरण लेते हुए अपने विचार लिखिए।

उत्तरः
हाँ, मैं इस कथन से पूर्णतः सहमत हूँ।
कहानी से उदाहरण: काँजीहौस में जब हीरा ने दीवार तोड़ी, तो घोड़ियाँ, बकरियाँ और भैंसें — सभी भाग निकले। परंतु दोनों गधे वहीं खड़े रहे। हीरा ने उन्हें भागने को कहा तो उन्होंने कहा — "जो कहीं फिर पकड़ लिए जाएँ!" — यानी उनके भीतर इतना भय था कि स्वतंत्रता के स्वर्णिम अवसर को भी वे नहीं पकड़ सके। मोती को अंत में सींगों से मार-मारकर उन्हें बाहर निकालना पड़ा।
अपने अनुभव से: कक्षा में अक्सर ऐसा होता है कि किसी प्रश्न का उत्तर आता है, पर भय लगता है कि गलत हो गया तो सब हँसेंगे। इसी संकोच के कारण हम अवसर चूक जाते हैं।
निष्कर्ष: भय और संकोच मनुष्य की सबसे बड़ी बाधाएँ हैं। जो व्यक्ति इन्हें पार कर लेता है, वही आगे बढ़ता है। गधों की तरह अवसर मिलने पर भी निष्क्रिय रहना अपनी स्थिति को और बदतर बनाना है।

मेरे अनुभव मेरे विचार

1. "दोस्तों में घनिष्ठता होते ही धौल-धप्पा होने लगता है। इसके बिना दोस्ती कुछ फुसफुसी, कुछ हल्की-सी रहती है, जिस पर ज्यादा विश्वास नहीं किया जा सकता।" क्या आप इस बात से सहमत हैं? आपको ऐसा क्यों लगता है? अपने अनुभवों के आधार पर बताइए।

   उत्तरः
   हाँ, मैं इस कथन से सहमत हूँ। जब दो व्यक्तियों में सच्ची मित्रता होती है, तो उनके बीच एक ऐसा विश्वास और अपनापन होता है जिसमें हँसी-मज़ाक, छेड़-छाड़ और 'धौल-धप्पा' स्वाभाविक रुप से होता है। यह बताता है कि दोनों एक-दूसरे के साथ पूरी तरह सहज हैं। मेरे अनुभव में मेरे जो घनिष्ठ मित्र हैं, उनके साथ मैं बिना किसी डर के अपनी हर बात कह सकता/सकती हूँ, गलती करने पर वे सुधारते हैं, और मज़ाक में भी प्यार झलकता है। जो मित्रता केवल औपचारिकता तक सीमित है, वह संकट के समय काम नहीं आती। हीरा और मोती की मित्रता इसी का प्रमाण है — वे कभी-कभी सींग मिलाकर खेलते थे, एक-दूसरे को ठेलते थे — यह उनके गहरे अपनेपन का संकेत था।

2. "हीरा ने तिरस्कार किया– गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना चाहिए।"
   "यह सब ढोंग है। बैरी को ऐसा मारना चाहिए कि फिर न उठे।"
   आपका इस संबंध में क्या विचार है? आप किसके साथ हैं— हीरा के या मोती के या दोनों के ? क्यों?

   उत्तरः
   मैं इस मामले में हीरा के विचार से अधिक सहमत हूँ। हीरा का कहना है कि 'गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना चाहिए' — यह एक उदात्त नैतिक मूल्य है। जब शत्रु पराजित हो जाए, तो उस पर और अत्याचार करना निर्दयता है। यह भारतीय संस्कृति का वह मूल्य है जो शक्तिशाली होते हुए भी क्षमा करना सिखाता है। मोती का विचार व्यावहारिक है — यदि शत्रु पूरी तरह नष्ट न हो, तो वह फिर आकर नुकसान पहुँचा सकता है। इसमें भी एक तर्क है। परंतु अंततः 'गिरे हुए पर वार न करना' मानवीय गरिमा का प्रतीक है। जो शक्तिशाली होकर भी दया दिखाए, वही सच्चा वीर है।

3. "हम और तुम इतने दिनों एक साथ रहे। आज तुम विपत्ति में पड़ गए तो मैं तुम्हें छोड़कर अलग हो जाऊँ?" क्या कभी आपने किसी विपत्ति या चुनौती का सामना अपने किसी मित्र या परिजन के साथ मिलकर किया है? उस घटना के विषय में बताइए।

   उत्तरः
   हाँ, एक बार परीक्षा के दिनों में मेरे एक मित्र की तबियत अचानक खराब हो गई और वह कई दिन स्कूल नहीं आ सका। उसके पाठ्यक्रम का बड़ा हिस्सा अधूरा रह गया था।
   उस समय मैंने और हमारे कुछ अन्य मित्रों ने मिलकर उसके घर जाकर नोट्स पहुँचाए, उसे समझाया और परीक्षा की तैयारी में उसकी मदद की। यह आसान नहीं था क्योंकि हमारी अपनी परीक्षा की तैयारी भी बाकी थी।
   उस अनुभव से मुझे समझ में आया कि मित्रता की असली परीक्षा कठिन समय में होती है। मोती की तरह यदि हम विपत्ति में साथ छोड़ दें, तो वह मित्रता, मित्रता कहलाने योग्य नहीं।

विधा से संवाद

कहानी की पड़ताल

1. कहानी ऐसी रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा-विन्यास सभी उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं।
   कोई कहानी वास्तविक या काल्पनिक घटनाओं पर आधारित हो सकती है और इसमें वास्तविक या काल्पनिक पात्र भी शामिल हो सकते हैं।
   आप कहानी लेखन की इस प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए एक कहानी का शीर्षक चुनिए और दिए गए मुख्य बिंदुओं को पूरा कीजिए—

शीर्षक और लेखक	
विषय	
क्रिया/कार्य	
परिवेश/देश-काल और मुख्य विचार	
चरित्र/पात्र	
परिणाम	

उत्तरः

शीर्षक और लेखक	एकता में शक्ति / प्रेरणा कथा
विषय	मिलकर कठिनाइयों का सामना करना
क्रिया/कार्य	दो मित्रों द्वारा परस्पर सहयोग से संकट से उबरना
परिवेश/देश-काल और मुख्य विचार	ग्रामीण भारत; मुख्य विचार — साथ मिलकर काम करने से बड़ी से बड़ी विपत्ति भी टाली जा सकती है
चरित्र/पात्र	राम और श्याम — दो किसान मित्र
परिणाम	दोनों मिलकर सूखे का संकट पार करते हैं और गाँव को बचाते हैं

कहानी का सौंदर्य

1. "दोनों सिर झुकाकर उसका हाथ चाटने लगे। "दोनों की पूँछ खड़ी हो गईं"

इस वाक्य को पढ़कर आँखों के सामने एक दृश्य-सा बन जाता है। आप जानते हैं कि भाषा की इस विशेषता को चित्रात्मकता कहते हैं। 'दो बैलों की कथा' कहानी में ऐसी अनेक विशेषताएँ हैं जो इसे अद्भुत और प्रभावपूर्ण बनाती हैं।

नीचे इस कहानी में आए कुछ विशेष बिंदुओं को उदाहरण के साथ दिया गया है। आप भी एक-एक उदाहरण खोजकर तालिका में लिखिए—

विशेषता	**विशेषता का अर्थ**	**उदाहरण 1**	**उदाहरण 2**
चित्रात्मक भाषा	शब्दों के माध्यम से पाठक के मन में स्पष्ट और जीवंत चित्र या छवियाँ बनाना।	घुटने तक पाँव कीचड़ से भरे हैं।	सहसा घर का द्वार खुला और वही लड़की निकली।
संवादात्मकता	कथ्य को आगे बढ़ाने के लिए, पात्रों के विचार, भाव आदि व्यक्त करने के लिए बातचीत और संवादों का प्रयोग।	मर जाऊँगा, पर उसके काम तो न आऊँगा।	
विरोधाभास	एक ही प्रसंग या रचना में दो विपरीत या परस्पर विरोधी बातें एक साथ मौजूद होना।	झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गदगद हो गया। झूरी की स्त्री ने बैलों को द्वार पर देखा, तो जल उठी।	
व्यंग्य	वह शैली जिसमें मजाक, हास्य या कटाक्ष के माध्यम से किसी दोष, कुरीति, अन्याय, पाखंड या कमज़ोरी को प्रकट किया जाता है।	भारतवासियों की अफ्रीका में क्या दुर्दशा हो रही है? अगर वे भी ईंट का जवाब पत्थर से देना सीख जाते तो शायद सभ्य कहलाने लगते।	
संघर्ष	दो विरोधी शक्तियों, विचारों, इच्छाओं या परिस्थितियों का आपस में टकराना।	उससे भिड़ना जान से हाथ धोना है; लेकिन न भिड़ने पर भी जान बचती नहीं नजर आती। (बैल बनाम साँड़)	
अतिशयोक्ति	किसी पात्र, घटना, भाव या वस्तु का वर्णन इतना बढ़ाकर करना कि वह असंभव या अविश्वसनीय लगे।	झूरी इन्हें फूल की छड़ी से भी न छूता था। उसकी टिटकार पर दोनों उड़ने लगते थे।	
संदेह/उलझन	जब पात्र किसी निर्णय पर नहीं पहुँच पाता।	सारा दिन बीत गया और खाने को एक तिनका भी न मिला। समझ ही में न आता था, यह कैसा स्वामी है?	

उत्तरः

विशेषता	**विशेषता का अर्थ**	**उदाहरण 1**	**उदाहरण 2**
चित्रात्मक भाषा	शब्दों के माध्यम से पाठक के मन में स्पष्ट और जीवंत चित्र या छवियाँ बनाना।	घुटने तक पाँव कीचड़ से भरे हैं।	सहसा घर का द्वार खुला और वही लड़की निकली।

संवादात्मकता	कथ्य को आगे बढ़ाने के लिए, पात्रों के विचार, भाव आदि व्यक्त करने के लिए बातचीत और संवादों का प्रयोग।	मर जाऊँगा, पर उसके काम तो न आऊँगा।	"नहीं भाई! खड़े हो जाओ।"
विरोधाभास	एक ही प्रसंग या रचना में दो विपरीत या परस्पर विरोधी बातें एक साथ मौजूद होना।	झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गदगद हो गया। झूरी की स्त्री ने बैलों को द्वार पर देखा, तो जल उठी।	दोनों की आँखों में विद्रोहमय स्नेह झलक रहा था।
व्यंग्य	वह शैली जिसमें मजाक, हास्य या कटाक्ष के माध्यम से किसी दोष, कुरीति, अन्याय, पाखंड या कमज़ोरी को प्रकट किया जाता है।	भारतवासियों की अफ्रीका में क्या दुर्दशा हो रही है? अगर वे भी ईंट का जवाब पत्थर से देना सीख जाते तो शायद सभ्य कहलाने लगते।	गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना, न देखा — ऋषियों-मुनियों के जितने गुण हैं, वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुँच गए हैं; पर आदमी उसे बेवकूफ कहता है।
संघर्ष	दो विरोधी शक्तियों, विचारों, इच्छाओं या परिस्थितियों का आपस में टकराना।	उससे भिड़ना जान से हाथ धोना है; लेकिन न भिड़ने पर भी जान बचती नहीं नजर आती। (बैल बनाम साँड़)	दोनों ने जोर मारकर पगहे तुड़ा डाले और घर की तरफ चले।
अतिशयोक्ति	किसी पात्र, घटना, भाव या वस्तु का वर्णन इतना बढ़ाकर करना कि वह असंभव या अविश्वसनीय लगे।	झूरी इन्हें फूल की छड़ी से भी न छूता था। उसकी टिटकार पर दोनों उड़ने लगते थे।	इन दोनों में इस समय दूनी शक्ति आ गई थी। एक-एक झटके में रस्सियाँ टूट गईं।
संदेह/उलझन	जब पात्र किसी निर्णय पर नहीं पहुँच पाता।	सारा दिन बीत गया और खाने को एक तिनका भी न मिला। समझ ही में न आता था, यह कैसा स्वामी है?	दोनों गधे अभी तक खड़े सोच रहे थे कि भागें या न भागें।

कहानी की रचना

1. प्रायः कहानी के प्रारंभ में ही कहानी के मुख्य चरित्र, कहानी का समय, कहानी की भाषा, घटनाओं आदि के कुछ संकेत मिलने लगते हैं। प्रेमचंद की इस कहानी में भी ऐसे संकेत हैं। आप कहानी के ऐसे संकेत/बिंदुओं को ढूँढ़कर लिखिए।

   उत्तरः

   1. **मुख्य चरित्र का संकेत**: कहानी के आरंभ में ही गधे और बैल की तुलना करके यह संकेत दे दिया गया है कि मुख्य पात्र बैल होंगे जो देखने में भले ही साधारण लगें, पर उनमें विशेष गुण हैं।
   2. **समय और परिवेश का संकेत**: झूरी नामक किसान, उसके बैल, गाँव का वातावरण, हल-गाड़ी — ये सभी ग्रामीण भारत और किसान जीवन की ओर संकेत करते हैं।
   3. **भाषा का संकेत**: 'नाँद', 'पगहिया', 'चरनी', 'गराँव' जैसे लोक शब्दों का प्रयोग बताता है कि यह कहानी ग्रामीण लोक-जीवन में रची-बसी है।
   4. **केंद्रीय विचार का संकेत**: गधे और बैल की तुलना में छिपा व्यंग्य यह संकेत देता है कि कहानी सीधापन, सहनशीलता और प्रतिरोध के विषय में है।
   5. **मूक-भाषा का संकेत**: "एक, दूसरे के मन की बात कैसे समझ जाता था, हम नहीं कह सकते" — यह वाक्य आगे पूरी कहानी में मूक-संवाद की पद्धति का संकेत देता है।

विषयों से संवाद

कहानी का समय और समाज

'दो बैलों की कथा' कहानी जिस समय लिखी गई थी, उस समय भारत पर अंग्रेजों का दमनकारी शासन चल रहा था। उस समय भारतवासी भी अपने-अपने ढंग से इस अंग्रेजी शासन का विरोध कर रहे थे। इस कार्य में लेखक भी किसी से पीछे नहीं थे वे अपनी रचनाओं के माध्यम से लोगों को स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने हेतु प्रेरित कर रहे थे।

1. इस कहानी में से कुछ वाक्य चुनकर नीचे दिए गए हैं। इन वाक्यों का मिलान स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े उपयुक्त वाक्यों के साथ कीजिए—

	कहानी में से वाक्य		**स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ाव**
1.	जोर तो मारता ही जाऊँगा, चाहे कितने ही बंधन पड़ते जाएँ।	1.	भगत सिंह और चंद्रशेखर आज़ाद जैसे क्रांतिकारियों ने बलिदान दिया, जिससे लाखों भारतीयों में आजादी की प्रेरणा जगी।

2.	मर जाऊँगा, पर उसके काम तो न आऊँगा।	2.	भारतीय जनता के मन में ब्रिटिश शासन के प्रति विद्रोह धीरे-धीरे गहराता गया।
3.	हमारी जान को कोई जान ही नहीं समझता।	3.	ब्रिटिश साम्राज्य बहुत शक्तिशाली था, फिर भी स्वतंत्रता सेनानियों ने साहसपूर्वक उसका सामना किया।
4.	दोनों मित्रों की आँखों में, रोम-रोम में विद्रोह भरा हुआ था।	4.	दासता के काल में भारतीयों के प्राण, सम्मान और अधिकारों की कोई महत्ता नहीं थी।
5.	इतना तो हो ही गया कि नौ-दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे।	5.	स्वतंत्रता के लिए प्राण देना स्वीकार्य था, पर अंग्रेजों की सेवा में लगना अस्वीकार्य।
6.	साँड़ पूरा हाथी है... पर दोनों मित्र जान हथेलियों पर लेकर लपके।	6.	स्वतंत्रता सेनानी बार-बार जेल गए, फाँसी पर चढ़े, पर संघर्ष छोड़ने को तैयार नहीं हुए।

उत्तरः

	कहानी में से वाक्य		**स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ाव**
1.	जोर तो मारता ही जाऊँगा, चाहे कितने ही बंधन पड़ते जाएँ।	6.	स्वतंत्रता सेनानी बार-बार जेल गए, फाँसी पर चढ़े, पर संघर्ष छोड़ने को तैयार नहीं हुए।
2.	मर जाऊँगा, पर उसके काम तो न आऊँगा।	5.	स्वतंत्रता के लिए प्राण देना स्वीकार्य था, पर अंग्रेजों की सेवा में लगना अस्वीकार्य।
3.	हमारी जान को कोई जान ही नहीं समझता।	4.	दासता के काल में भारतीयों के प्राण, सम्मान और अधिकारों की कोई महत्ता नहीं थी।
4.	दोनों मित्रों की आँखों में, रोम-रोम में विद्रोह भरा हुआ था।	2.	भारतीय जनता के मन में ब्रिटिश शासन के प्रति विद्रोह धीरे-धीरे गहराता गया।
5.	इतना तो हो ही गया कि नौ-दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे।	1.	भगत सिंह और चंद्रशेखर आज़ाद जैसे क्रांतिकारियों ने बलिदान दिया, जिससे लाखों भारतीयों में आजादी की प्रेरणा जगी।
6.	साँड़ पूरा हाथी है... पर दोनों मित्र जान हथेलियों पर लेकर लपके।	3.	ब्रिटिश साम्राज्य बहुत शक्तिशाली था, फिर भी स्वतंत्रता सेनानियों ने साहसपूर्वक उसका सामना किया।

पशुओं के लिए कानून

नीचे दिए गए संवाद पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

"मैं तो समझता हूँ, चुराए लिए आते हो। चुपके से चले जाओ। मेरे बैल हैं। मैं बेचूँगा, तो बिकेंगे। किसी को मेरे बैल नीलाम करने का क्या अख्तियार है?"

"जाकर थाने में रपट कर दूँगा।"

"मेरे बैल हैं। इसका सबूत यह है कि मेरे द्वार पर खड़े हैं।"

1. बैलों का काँजीहाउस में बंद होना न्याय और अन्याय दोनों को दर्शाता है। कैसे?

उत्तरः

बैलों का काँजीहाउस में बंद होना दोनों दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है:

1. **न्याय की दृष्टि से:** काँजीहाउस की व्यवस्था इसलिए बनाई गई थी कि जो जानवर किसी के खेत या फसल को नुकसान पहुँचाएँ, उन्हें बाड़े में बंद किया जाए और जुर्माना लेकर छोड़ा जाए। मोती ने दूसरे के मटर के खेत में घुसकर नुकसान किया था — इस दृष्टि से उन्हें पकड़ना उचित था।
2. **अन्याय की दृष्टि से:** काँजीहाउस में जानवरों को एक सप्ताह तक भूखा-प्यासा रखा गया। उन्हें चारे का एक तिनका भी नहीं दिया गया, केवल एक बार पानी दिखाया जाता था। इससे वे अधमरे हो गए। निर्दोष और बीमार जानवरों को भी बिना देखभाल के बंद रखना और फिर कसाई को बेचना — यह घोर अन्याय था।

2. यदि आपको अवसर मिले तो आप बैलों की ओर से कौन-कौन से कानूनी अधिकार माँगेंगे?

उत्तरः

यदि मुझे बैलों की ओर से कानूनी अधिकार माँगने का अवसर मिले, तो मैं निम्नलिखित अधिकारों की माँग करता/करती:

1. **पर्याप्त भोजन और पानी का अधिकार:** काम लेने वाले मालिक को अनिवार्य रूप से उचित चारा-दाना और पानी देना चाहिए।

2. **शारीरिक यातना से सुरक्षा का अधिकार:** पशुओं को अनावश्यक रूप से पीटना कानूनन दंडनीय हो।
3. **उचित विश्राम का अधिकार:** काम के बाद पशुओं को पर्याप्त आराम मिले।
4. **काँजीहाउस में मानवीय व्यवहार का अधिकार:** बंद पशुओं को भोजन-पानी अनिवार्य रूप से दिया जाए।
5. **कसाईखाने में क्रूर तरीकों के विरुद्ध अधिकार:** यदि जानवर मारा जाए, तो वह जल्दी और पीड़ारहित तरीके से हो।
6. **बीमार पशुओं के इलाज का अधिकार:** पशु मालिक को उनका उचित उपचार कराना अनिवार्य हो।

3. मान लीजिए कि हीरा-मोती अपने साथ हुए अन्याय की शिकायत करना चाहते हैं। उनकी ओर से उनकी शिकायत थानाध्यक्ष को करते हुए एक पत्र लिखिए।
(संकेत– "थानाध्यक्ष महोदय, हमारा नाम... है। हमारे साथ अन्याय हुआ है...।")

उत्तरः
सेवा में,
थानाध्यक्ष महोदय,
थाना — ग्राम पुलिस चौकी
विषय: अत्याचार और भूखा रखने की शिकायत के संबंध में।
महोदय,

हमारा नाम हीरा और मोती है। हम दोनों झूरी नामक किसान के बैल हैं जो ग्राम लमही में रहते हैं। हमारे साथ गंभीर अन्याय हुआ है, जिसकी शिकायत हम आपके समक्ष प्रस्तुत करना चाहते हैं।

हमारे मालिक झूरी ने हमें उनके साले गया के साथ भेज दिया। गया ने हमें न तो उचित चारा-दाना दिया और न ही हमारी देखभाल की। उसने हमें बार-बार लाठियों से पीटा और रात को मोटी रस्सियों से बाँधे रखा। गया के दो अन्य सहायकों ने भी हम पर लाठियाँ चलाईं।

इसके बाद हम काँजीहाउस में बंद कर दिए गए, जहाँ एक सप्ताह तक हमें खाने को एक तिनका भी नहीं दिया गया। हम दोनों भूख-प्यास से अधमरे हो गए। हमारी हड्डियाँ निकल आईं।

अंत में एक क्रूर दाढ़ीवाले व्यक्ति को हमें नीलाम कर दिया गया जो हमें काटना चाहता था।

अतः आपसे निवेदन है कि:
1. गया के विरुद्ध पशु क्रूरता का मामला दर्ज किया जाए।
2. काँजीहाउस प्रबंधन की जाँच की जाए।
3. भविष्य में ऐसे अत्याचार न हों, इसके लिए उचित कदम उठाए जाएँ।

आपके न्याय की प्रतीक्षा में,

हीरा एवं मोती
(पशु निवासी, झूरी का घर, ग्राम लमही)

हमारी धरोहर और संस्कृति

1. "वह अपना धर्म छोड़ दे लेकिन हम अपना धर्म क्यों छोड़ें!" कहानी के अनुसार हीरा और मोती सदैव ध्यान रखते थे कि कौन-से कार्य करने योग्य हैं और कौन-से नहीं। वे कौन-कौन से कार्य कभी नहीं करते थे?

उत्तरः
कहानी के अनुसार हीरा और मोती जो कार्य कभी नहीं करते थे:

1. **गिरे हुए शत्रु पर आक्रमण नही करना:** जब साँड़ घायल होकर गिर गया, तो हीरा ने मोती को उस पर और सींग चलाने से रोका। "गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना चाहिए।"
2. **स्त्री पर आक्रमण नही करना:** जब मोती ने कहा कि मालकिन को सींग से उठाकर फेंक दूँ, तो हीरा ने कहा — "लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है।"
3. **भागने के बावजूद साथी को अकेला नही छोड़ना:** मोती ने हीरा को काँजीहौस में बँधा छोड़कर अकेले भागने से इनकार किया।
4. **निर्दोष पर अत्याचार नही करना:** भैरो की बच्ची के पिता को नुकसान न पहुँचे, यह सोचकर हीरा ने उस पर सींग चलाने से मना किया।
5. **कायरतापूर्ण पलायन नही करना:** जब साँड़ ने चुनौती दी, तो हीरा ने कहा — "भागना कायरता है।"

2. "गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना चाहिए।"
"लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूल जाते हो।"
हीरा के ये कथन किन भारतीय मूल्यों की ओर संकेत करते हैं?

उत्तरः
हीरा के ये कथन निम्नलिखित भारतीय मूल्यों की ओर संकेत करते हैं:

1. **क्षमा और करुणा का मूल्य:** "गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना" — यह भारतीय संस्कृति का वह मूल्य है जो सिखाता है कि जो शत्रु पराजित हो जाए, उस पर कृपा करो। महाभारत में भी कहा गया है — "क्षमा वीरस्य भूषणम्।"
2. **नारी-सम्मान का मूल्य:** "औरत जात पर सींग चलाना मना है" — यह भारतीय परंपरा में नारी की रक्षा और सम्मान का संकेत है। भारतीय समाज में स्त्री को सदा आदरणीय माना गया है।
3. **धर्म और नैतिकता का पालन:** "हमारी जाति का यह धर्म नहीं है" — यह कथन बताता है कि अपने आचरण के प्रति सचेत रहना और नैतिक सीमाओं का पालन करना भारतीय जीवन-मूल्यों का अभिन्न अंग है।
4. **अहिंसा का मूल्य:** अनावश्यक हिंसा से बचना — यह गांधीजी के अहिंसा के सिद्धांत से भी मेल खाता है।

3. "दूसरे दिन गया ने बैलों को हल में जोता"

(क) खेतों में जुताई के लिए बैल और हल कृषि के पारंपरिक उपकरण हैं। कृषि के अन्य पारंपरिक और आधुनिक उपकरणों तथा उनके उपयोग के विषय में पता लगाइए और लिखिए।

उत्तरः

पारंपरिक कृषि उपकरणः

1. हल — बैलों द्वारा खींचा जाता था, भूमि की जुताई के लिए।
2. कुदाल — मिट्टी खोदने और निराई के लिए।
3. दरांती/हँसिया — फसल काटने के लिए।
4. थ्रेशर (हाथ से) — अनाज को भूसे से अलग करने के लिए।
5. ओखली और मूसल — अनाज कूटने के लिए।
6. चक्की — अनाज पीसने के लिए।
7. रहट — कुएँ से सिंचाई के लिए।

आधुनिक कृषि उपकरणः

1. ट्रैक्टर — जुताई, बुआई और ढुलाई के लिए।
2. थ्रेशर मशीन — फसल से दाना अलग करने के लिए।
3. पावर टिलर — छोटे खेतों की जुताई के लिए।
4. ड्रिप इरिगेशन सिस्टम — सिंचाई के लिए।
5. स्प्रेयर — कीटनाशक छिड़कने के लिए।
6. हार्वेस्टर — फसल काटने और इकट्ठा करने के लिए।

(ख) भारत में बैल केवल पशु नहीं बल्कि कृषि संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। लिखिए कि भारतीय गाँवों एवं शहरों में भी बैल किस-किस काम में सहायक होते हैं?

उत्तरः

भारत में बैल निम्नलिखित कार्यों में सहायक होते हैं:

1. **खेती में**: भूमि की जुताई, बुआई, और फसल की ढुलाई में बैलों का उपयोग आज भी छोटे और मध्यम किसान करते हैं।
2. **बैलगाड़ी**: गाँवों में सामान और अनाज की ढुलाई के लिए बैलगाड़ी का उपयोग होता है।
3. **कोल्हू चलाना**: गन्ने का रस निकालने के लिए कोल्हू बैलों द्वारा चलाया जाता था।
4. **अनाज मड़ाई**: खलिहान में फसल मड़ाने (दाना निकालने) के लिए बैल खेत पर चलाए जाते थे।
5. **धार्मिक महत्व**: पोंगल, मकर संक्रांति जैसे त्योहारों पर बैलों की पूजा की जाती है। महाराष्ट्र में 'पोळा' पर्व पर बैलों को सजाकर उनका सम्मान किया जाता है।
6. **जलिकट्टू और बैलगाड़ी दौड़**: तमिलनाडु में जलिकट्टू और अनेक स्थानों पर बैलगाड़ी दौड़ सांस्कृतिक परंपराओं का हिस्सा हैं।

अलग-अलग और साथ-साथ

"दो-चार बार मोती ने गाड़ी को सड़क की खाई में गिराना चाहा; पर हीरा ने संभाल लिया। वह ज्यादा सहनशील था।"

1. कहानी के आधार पर हीरा और मोती की विशेषताएँ लिखिए। (संकेत– धैर्यवान, गुस्सैल, मेहनती, शांत, सहनशील आदि)

उत्तरः

हीरा की विशेषताएँ	मोती की विशेषताएँ
सहनशील और धैर्यवान	उग्र और भावुक
नैतिक और सिद्धांतवादी	साहसी और क्रोधी
मितभाषी और विचारशील	तत्परता से कार्य करने वाला
अहिंसक मनोवृत्ति	प्रतिशोध की भावना रखने वाला
संकट में शांत रहने वाला	संकट में तुरंत कदम उठाने वाला
मित्र के प्रति निष्ठावान	मित्र के लिए बलिदान देने को तत्पर
लंबे समय तक सहन करने वाला	जल्दी आक्रोशित होने वाला

2. हीरा और मोती की विशेषताएँ कुछ-कुछ समान और कुछ-कुछ अलग हैं, किंतु उनकी भिन्न विशेषताएँ एक-दूसरे को पूरा करती हैं। कैसे?

उत्तरः

हीरा और मोती की भिन्न विशेषताएँ एक-दूसरे की पूरक हैं — इसे इस प्रकार समझा जा सकता है:

1. **सहनशीलता और साहस**: हीरा सहनशील था और जल्दी हिंसा नहीं करता था, जबकि मोती साहसी और तत्पर था। जब दाढ़ीवाले कसाई ने बैलों को पकड़ने का प्रयास किया, तो मोती ने तुरंत सींग चला दिए — हीरा अकेला यह नहीं कर पाता।
2. **धैर्य और शक्ति**: हीरा की धैर्यशीलता ने कई बार उन्हें अनावश्यक संघर्ष से बचाया, जबकि मोती की शारीरिक शक्ति ने उन्हें काँजीहौस की दीवार तोड़ने में मदद की।
3. **नीति और कार्यान्वयन**: हीरा योजना बनाता था — जैसे साँड़ से लड़ने की रणनीति — और मोती उसे कार्यान्वित करता था। दोनों मिलकर एक संपूर्ण जोड़ी बनाते थे।
4. **रोकना और आगे बढ़ना**: जब मोती की अधीरता उन्हें खतरे में डालती, तो हीरा रोकता था। जब हीरा थक जाता, तो मोती की ऊर्जा उन्हें प्रेरित करती थी।

3. आपकी कक्षा में भी कुछ-कुछ समान और कुछ-कुछ भिन्न विशेषताओं वाले सहपाठी हैं। सबकी आवश्यकताएँ भी थोड़ी समान और थोड़ी भिन्न हैं। बताइए कि आप भिन्न विशेषताओं वाले सहपाठी से अपने लिए कैसा व्यवहार चाहते हैं? उनसे पता कीजिए कि वे आपसे अपने लिए कैसा व्यवहार चाहते हैं?
(संकेत– क्या-क्या करें और क्या-क्या न करें, कैसे पढ़ाई खेल आदि में एक-दूसरे की सहायता करें और साथ दें)

उत्तरः
मेरी कक्षा में अलग-अलग विशेषताओं वाले सहपाठी हैं। उनसे मैं यह व्यवहार चाहता/चाहती हूँ:

मैं चाहता/चाहती हूँ कि वे:

1. मेरी कमज़ोरियों का मज़ाक न उड़ाएँ, बल्कि उन्हें दूर करने में मदद करें।
2. जब मैं किसी विषय में कमज़ोर हूँ, तो समझाने में धैर्य रखें।
3. खेल में हार-जीत को व्यक्तिगत न लें।
4. मेरी राय का सम्मान करें, भले ही वे उससे सहमत न हों।

वे मुझसे चाहते हैं:

1. मैं उनकी बातें ध्यान से सुनूँ।
2. उनकी अलग सोच का सम्मान करूँ।
3. समूह कार्य में सबको समान अवसर दूँ।
4. किसी के न आने पर उनके नोट्स साझा करूँ।

साथ मिलकर करने योग्य कार्य: पढ़ाई में मिलकर प्रश्न हल करना, खेल में एक-दूसरे का उत्साह बढ़ाना, और एक-दूसरे की भिन्न प्रतिभाओं से सीखना।

4. "दोनों आमने-सामने या आस-पास बैठे हुए एक-दूसरे से मूक-भाषा में विचार-विनिमय करते थे।"
कहानी में अनेक स्थानों पर 'मूक-भाषा' का उल्लेख किया गया है। आपके विचार से हीरा और मोती किस प्रकार आपस में बातें किया करते होंगे? अनुमान और कल्पना से बताइए।

उत्तरः
हीरा और मोती की मूक-भाषा कई प्रकार से काम करती होगी:

1. **आँखों के संकेत**: जैसे कनखियों से देखना — किसी खतरे की सूचना देने के लिए, या आँखें मिचमिचाना — सहमति जताने के लिए।
2. **कान का हिलाना**: आगे के कान — ध्यान देने का संकेत; पीछे के कान — भय या असहमति का संकेत।
3. **पूँछ की भाषा**: पूँछ खड़ी करना — खुशी या उत्साह; पूँछ दबाना — डर का संकेत।
4. **चाटना और सूँघना**: यह स्नेह, समझ और सांत्वना देने का तरीका था।
5. **सींग मिलाना**: यह विनोद और आत्मीयता का प्रतीक था।
6. **शरीर की मुद्राएँ**: जब मोती लड़ने को तैयार होता, तो उसके तेवर और शरीर की भाषा हीरा समझ जाता था।

इस प्रकार, बिना शब्दों के भी वे एक-दूसरे के मन की बात जान लेते थे — यह उनकी गहरी आत्मीयता का प्रमाण था।

5. आप भी अनेक अवसरों पर बिना शब्दों का उच्चारण किए संवाद करते हैं। कब-कब? कहाँ-कहाँ? कुछ उदाहरण लिखिए।

उत्तरः
हम बिना शब्दों के अनेक अवसरों पर संवाद करते हैं:

1. **कक्षा में**: जब शिक्षक पढ़ा रहे हों और मित्र को कुछ पूछना हो — आँखों के इशारे या कागज़ पर लिखकर।
2. **खेल के मैदान में**: गेंद फेंकने का इशारा, दूर खड़े साथी को 'यहाँ आओ' का हाथ से संकेत।
3. **घर में**: माँ का केवल देखने से ही समझ जाना कि कुछ गलत हुआ है — आँखों की भाषा।
4. **भीड़ में**: दोस्त को 'रुको' या 'यहाँ आओ' का इशारा।
5. **परीक्षा हॉल में**: 'समझ नहीं आया' का भाव चेहरे से प्रकट करना।
6. **मुस्कुराना और सिर हिलाना**: किसी की बात से सहमति या असहमति जताने के लिए।

यही मूक-भाषा है — भावनाएँ शब्दों से नहीं, संकेतों और भावमुद्राओं से व्यक्त होती हैं।

मार्ग खोजेंगे कैसे?

"सीधे दौड़े चले गये। यहां तक कि मार्ग का ज्ञान न रहा। जिस परिचित मार्ग से आए थे, उसका यहां पता न था। नए-नए गाँव मिलने लगे।"

1. हीरा-मोती अपने घर के मार्ग से भटक गए थे। क्या कभी आपके साथ ऐसा हुआ है कि आप रास्ता भूल गए या भटक गए? तब आपने अपने मार्ग का पता कैसे लगाया था?

उत्तरः
हाँ, एक बार जब मैं किसी नए शहर में मेले में गया/गई, तो भीड़ में माता-पिता से बिछड़ गया/गई और रास्ता भूल गया/गई।

उस समय मैंने ये उपाय किए:

1. **घबराने की बजाय शांत रहा/रही**: पहले खुद को शांत किया।
2. **परिचित स्थान की तलाश**: मेले के मुख्य द्वार की ओर बढ़ा/बढ़ी जो मुझे याद था।
3. **मदद माँगी**: एक दुकानदार से मदद माँगी।
4. **पुलिस बूथ**: वहाँ एक पुलिस का छोटा बूथ था — वहाँ जाकर सूचना दी।
5. **मोबाइल का उपयोग**: माता-पिता का नंबर याद था, उसी दुकानदार के फोन से कॉल की।

इस अनुभव से सीखा कि भटकने पर घबराने की बजाय किसी विश्वसनीय व्यक्ति या अधिकारी की मदद लेनी चाहिए।

2. यदि कोई व्यक्ति भटक जाए तो उसे क्या करना चाहिए कि वह सुरक्षित रूप से अपने गंतव्य तक पहुँच जाए। कक्षा में चर्चा कीजिए और लिखिए।
(संकेत– ऑनलाइन मानचित्र, पुलिस, स्कूल, सरकारी भवन, विद्यार्थी, सड़क पर लगे सूचना-पट, दुकानों के बोर्डों पर लिखे पते, डाकघर आदि।)

उत्तरः
यदि कोई व्यक्ति भटक जाए, तो उसे यह करना चाहिए:
1. **शांत रहें**: घबराहट में गलत निर्णय लिए जाते हैं।
2. **ऑनलाइन मानचित्र का उपयोग**: यदि मोबाइल है, तो Google Maps या अन्य नेविगेशन ऐप से सही रास्ता ढूँढें।
3. **पुलिस से मदद**: नज़दीकी पुलिस चौकी या पुलिसकर्मी से मदद माँगें।
4. **सरकारी भवन**: पोस्ट ऑफिस, सरकारी अस्पताल, या स्कूल जैसे सरकारी भवनों में जाएँ — वहाँ कर्मचारी मदद करेंगे।
5. **सड़क पर लगे सूचना-पट**: सड़क के किनारे लगे दिशा-सूचक बोर्ड पढ़ें।
6. **दुकानों से पूछें**: किसी स्थापित दुकान पर जाकर पता पूछें।
7. **परिचित को फोन करें**: यदि संभव हो, घर पर या किसी परिचित को फोन करें।
8. **बच्चों के लिए**: किसी महिला, पुलिसकर्मी या स्कूल के शिक्षक से मदद माँगें।

3. आपके विद्यालय में आपदा की स्थिति में निकासी का मार्ग दर्शाने वाला मानचित्र अवश्य होगा। उसे ध्यानपूर्वक देखिए और पता लगाइए कि आपदा की स्थिति में आपकी कक्षा के सबसे निकट और सुरक्षित कौन-सा मार्ग है।

उत्तरः
यह प्रश्न विद्यार्थी को स्वयं अपने विद्यालय में जाँच करके करना है। नीचे सामान्य निर्देश दिए गए हैं:
विद्यालय के मुख्य द्वार/निकासी द्वार का स्थान देखें। कक्षा से बाहर निकलने के सबसे कम दूरी वाले रास्ते की पहचान करें। सीढ़ियों की स्थिति नोट करें। एकत्रीकरण बिंदु का स्थान जानें।

सृजन

1. हीरा और मोती की दैनंदिनी
कहानी में हीरा और मोती आपस में मनुष्यों की तरह बातें करते दिखते हैं। कल्पना कीजिए कि वे लिख-पढ़ भी सकते हैं। हीरा या मोती की नजर से उस दिन की डायरी लिखिए जब उन्हें काँजीहाउस ले जाया गया।
कैसे लिखें—
- “आज का दिन...” से आरंभ करें।
- भावनाएँ लिखें (भूख, गुस्सा, दर्द)।
- अंत में आशा या संकल्प लिखें।

(संकेत— “आज हमें काँजीहाउस में बंद किया गया। भूख से पेट जल रहा है। पर विश्वास है कि झूरी हमें वापस ले जाएगा।”)

उत्तरः

मोती की डायरी

दिनांक: एक अभागा दिन
आज का दिन... मैं कभी नहीं भूल सकता। आज हम दोनों को काँजीहौस में बंद कर दिया गया। बस इसलिए कि मुझसे भूख नहीं सहन हुई और मैंने उस खेत की थोड़ी-सी मटर खाई। पर क्या यह इतना बड़ा अपराध था?

यहाँ का दृश्य देखकर मन विचलित हो गया। कितने जानवर अधमरे पड़े हैं — भैंसें, बकरियाँ, घोड़े, गधे — सबकी देह में जान नहीं। दिन भर हम फाटक की ओर ताकते रहे कि कोई चारा लेकर आएगा, पर कोई नहीं आया। अंत में हम दोनों ने दीवार की नमकीन मिट्टी चाटी — पेट को बहलाने के लिए।

हीरा को देख रहा था। उसकी आँखों में भी वही पीड़ा थी। उसने कहा — "अब नहीं रहा जाता मोती।" मेरा दिल और भारी हो गया।

पर हम हार नहीं मानेंगे। हीरा ने आज दीवार में सींग मारना शुरु किया। चौकीदार ने मारा, रस्सी से बाँधा — पर हीरा ने कहा, "जोर तो मारता ही जाऊँगा।" मुझे गर्व हुआ उस पर।

विश्वास है — झूरी हमें ढूँढेगा। और यदि वह नहीं आया, तो हम यहाँ की दीवार तोड़कर स्वयं जाएँगे। जब तक साँस है, संघर्ष है।
— मोती

2. आज के समाचार
मान लीजिए आप एक स्थानीय समाचार पत्र के संवाददाता हैं। अपने समाचार पत्र के लिए बैलों के काँजीहाउस से भागने का समाचार लिखिए।
कैसे लिखें—
- शीर्षक दें।
- घटना का विवरण (कहाँ, कब, क्या हुआ)।
- परिणाम और लोगों की प्रतिक्रिया।

(संकेत— शीर्षक ‘दो बहादुर बैलों ने तोड़ी बाड़ियाँ’)

उत्तरः

दो बहादुर बैलों ने तोड़ी बेड़ियाँ

काँजीहौस से नौ-दस पशुओं को आज़ादी मिली
ग्राम संवाददाता, लमही
गत रात्रि एक अभूतपूर्व घटना घटी जब इस गाँव के काँजीहौस में बंद दो बैलों — हीरा और मोती — ने घंटों के अथक प्रयास से बाड़े की कच्ची दीवार तोड़ डाली।

जानकारी के अनुसार, ये दोनों बैल एक सप्ताह से बंद थे और उन्हें खाने-पीने को कुछ भी नहीं दिया गया था। शरीर की सारी शक्ति क्षीण हो जाने के बावजूद हीरा ने रात को

दीवार में सींग मारना शुरू किया। जब चौकीदार ने उसे दंडित किया और रस्सी से बाँध दिया, तो मोती ने यह कार्य आगे बढ़ाया। लगभग दो घंटे की मेहनत के बाद दीवार का बड़ा हिस्सा ढह गया।

इस दौरान तीन घोड़ियाँ, कई बकरियाँ, और भैंसें भाग निकलीं। दो गधे डर के मारे वहीं खड़े रहे।

हीरा मोटी रस्सी से बँधा था, पर मोती ने मित्रता का प्रमाण देते हुए उसे छोड़कर जाने से इनकार कर दिया और उसके पास लेट गया।

सुबह काँजीहौस में अफरा-तफरी मच गई। मोती की खूब मरम्मत हुई। दोनों मित्रों को बाद में कसाई को नीलाम कर दिया गया, किंतु नीलामी के रास्ते से ही दोनों अपने असली मालिक झूरी के घर पहुँच गए और कसाई को मुँह की खानी पड़ी।

ग्रामवासियों ने इस दृश्य को देखकर जमकर तालियाँ बजाईं।

3. कहानी का नया अंत

यदि बैल वापस न लौटते तो कहानी का अंत कैसे होता? कहानी का नया अंत लिखिए।

कैसे लिखें—

- बैलों की नई जगह
- झूरी की स्थिति

(संकेत— "हीरा और मोती अब एक वृद्ध किसान के घर शांति से रह रहे हैं।")

उत्तरः

नया अंतः

नीलाम के बाद दाढ़ीवाला हीरा और मोती को लेकर एक दूर के कस्बे की ओर चल पड़ा। रास्ते में हीरा ने कहा — "मोती, लगता है इस बार बच नहीं पाएँगे।"

मोती ने उत्तर दिया — "तो क्या हुआ। झूरी के घर जो दिन बिताए, वे जीवन के सबसे अच्छे दिन थे।"

दाढ़ीवाले ने उन्हें एक बूढ़े किसान को बेच दिया जिसका नाम रामदीन था। रामदीन बहुत गरीब था, पर दयालु था। उसने बैलों को देखा — कमज़ोर, भूखे, थके हुए। उसे दया आई।

उसने उन्हें खूब खिलाया-पिलाया और धीरे-धीरे उनकी देखभाल की। हीरा और मोती ने देखा कि यहाँ भी एक सज्जन का वास है। वे रामदीन के लिए मन लगाकर काम करने लगे।

दूर, झूरी के गाँव में झूरी अपने बैलों की याद में दुखी रहता था। उसे नहीं पता था कि उसके प्यारे हीरा और मोती एक अच्छे इंसान के यहाँ सुरक्षित हैं।

कहानी का संदेश यह है कि चाहे घर न मिले, पर अच्छे लोगों की संगति में जीवन सुखी हो सकता है।

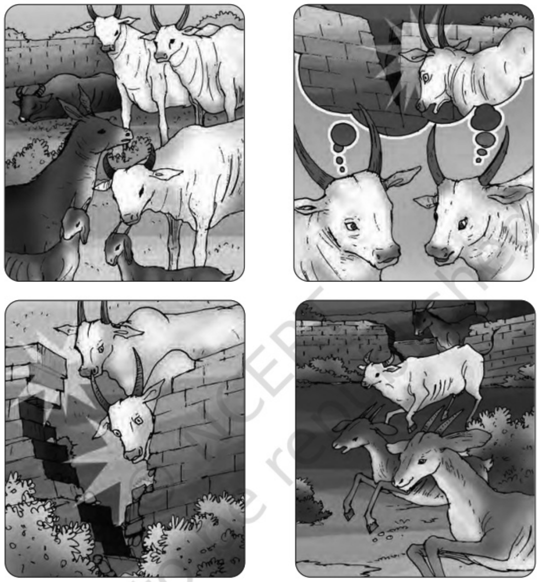
4. चित्रकथा लेखन

नीचे 'दो बैलों की कथा' की एक घटना को चित्रकथा के रूप में दिया गया है। इन घटनाओं को पहचानिए। प्रत्येक घटना के लिए उपयुक्त संवाद और घटनाक्रम बताने वाले वाक्य लिखिए।

कैसे लिखें—

- हर चित्र के लिए एक छोटा संवाद बनाकर लिखिए।
- दृश्य का क्रम— बंद करना, भागने की योजना, दीवार तोड़ना, आज़ादी।

(संकेत— चित्र 4: "अब हम आजाद हैं।")



उत्तरः

चित्र 1 — काँजीहौस में बंद होनाः

वाक्यः हीरा और मोती को काँजीहौस के बाड़े में बंद कर दिया गया। चारों ओर अधमरे जानवर पड़े थे। दोनों के मन में उठी एक ही भावना — "यह कैसा स्वामी है जो खाने को एक तिनका भी नहीं देता?"

संवादः हीरा: "अब तो नहीं रहा जाता मोती!" मोती: "मुझे तो मालूम होता है, प्राण निकल रहे हैं।"

चित्र 2 — दीवार तोड़ने की योजनाः

वाक्यः हीरा ने निश्चय किया — अब बंधन स्वीकार नहीं। उसने अपने नुकीले सींग दीवार में गड़ा दिए।

संवादः मोती: "आओ दीवार तोड़ डालें।" हीरा: "जोर तो मारता ही जाऊँगा, चाहे कितने ही बंधन पड़ते जाएँ।"

चित्र 3 — दीवार टूटनाः

वाक्यः दो घंटे की मेहनत के बाद दीवार का बड़ा हिस्सा ढह गया। अधमरे जानवर जीवित हो उठे और एक-एक कर भागने लगे।

संवादः मोती: "इतने भाई यहाँ बंद हैं। दो-चार दिन और यही हाल रहा तो सब मर जाएँगे।"

चित्र 4 — आजादीः

वाक्यः जानवर एक-एक कर बाड़े से निकल भागे। हीरा अभी बँधा था, पर मोती ने उसका साथ नहीं छोड़ा।

संवादः मोती: "अब हम आज़ाद हैं!" हीरा: "पर मैं अभी बँधा हूँ।" मोती: "तो मैं भी यहीं रहूँगा।"

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

मेरे शब्द

1. कहानी में से पाँच ऐसे शब्द चुनकर लिखिए जो आपके लिए बिल्कुल नए हैं। अब उन शब्दों के अर्थ अपने अनुमान से लिखिए। इसके बाद उनके अर्थ शब्दकोश में से देखकर लिखिए।

उत्तरः

शब्द	अनुमानित अर्थ	शब्दकोश से अर्थ
सहिष्णुता	सहन करने की शक्ति	सहनशीलता, क्षमा भाव
विषाद	दुख या उदासी	उदासी, अवसाद, मन उचट जाना
पराकाष्ठा	किसी चीज़ की सीमा	अंतिम सीमा, चरम कोटि या सीमा
गराँव	गले में पहनाई जाने वाली कोई वस्तु	फंदेदार रस्सी जो बैल आदि के गले में पहनाई जाती है
काँजीहौस	पशुओं को बंद रखने की जगह	वह बाड़ा जिसमें दूसरे का खेत खाने वाले या अनाथ चौपाए बंद किए जाते हैं

भाषा गढ़े मुहावरे

“लोग आ-आकर उनकी सूरत देखते और मन फीका करके चले जाते।”

‘मन फीका करना’ एक मुहावरा है जिसका अर्थ आपको वाक्य पढ़कर समझ में आ ही गया होगा।

इसी से मिलते-जुलते मुहावरे हैं— जी फीका होना, जी खट्टा होना आदि। ‘दो बैलों की कथा’ कहानी में कई मुहावरे हैं जिनसे यह कहानी जीवंत हो गई है। ऐसी भाषा को ही मुहावरेदार भाषा कहा जाता है।

कहानी में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं। इन वाक्यों में मुहावरों को पहचानकर रेखांकित कीजिए। इन मुहावरों का प्रयोग करते हुए नए वाक्य बनाकर लिखिए—

1. "झूरी के साले गया को घर तक गोईं ले जाने में दाँतों पसीना आ गया।"

उत्तरः

मुहावराः दाँतों पसीना आना (अर्थः बहुत कठिन परिश्रम करना पड़ना)
नया वाक्यः परीक्षा में गणित के कठिन प्रश्न हल करने में मुझे दाँतों पसीना आ गया।

2. "उसका चेहरा देखकर अंतर्ज्ञान से दोनों मित्रों के दिल काँप उठे।"

उत्तरः

मुहावराः दिल काँपना (अर्थः भय से मन भयभीत हो जाना)
नया वाक्यः रात को अंधेरी गली में किसी की परछाईं देखकर मेरा दिल काँप उठा।

3. "झूरी की स्त्री ने बैलों को द्वार पर देखा, तो जल उठी।"

उत्तरः

मुहावराः जल उठना (अर्थः क्रोध या ईर्ष्या से भर जाना)
नया वाक्यः पड़ोसी का नया घर देखकर वह जल उठा।

4. "मोती दिल में ऐंठकर रह गया।"

उत्तरः

मुहावराः दिल में ऐंठकर रह जाना (अर्थः मन मारकर चुप रह जाना, इच्छा होते हुए भी कुछ न कर पाना)
नया वाक्यः उसे बहुत कुछ कहना था पर वह दिल में ऐंठकर रह गया।

5. "आएगा तो दूर ही से खबर लूँगा। देखूँ, कैसे ले जाता है।"

उत्तरः

मुहावराः दूर से खबर लेना (अर्थः किसी को दूर से ही ललकारना या सबक सिखाना)
नया वाक्यः उसने कहा — "अगर वह फिर आया तो दूर से ही खबर लूँगा।"

6. "जी तोड़कर काम करते हैं, किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करते, चार बातें सुनकर गम खा जाते हैं।"

उत्तरः

मुहावरेः

1. जी तोड़कर काम करना (अर्थः पूरी शक्ति और लगन से काम करना)
2. गम खा जाना (अर्थः अपमान चुपचाप सह लेना)

नए वाक्यः

1. राम ने परीक्षा की तैयारी में जी तोड़कर काम किया।
2. वह दूसरों की बातें सुनकर गम खा जाता है, पर मुँह नहीं खोलता।

7. "अगर वे भी ईंट का जवाब पत्थर से देना सीख जाते, तो शायद सभ्य कहलाने लगते।"

उत्तरः

मुहावराः ईंट का जवाब पत्थर से देना (अर्थः किसी के बुरे व्यवहार का उससे भी कड़ा जवाब देना)
नया वाक्यः यदि देश पर कोई आक्रमण करे तो हमारी सेना ईंट का जवाब पत्थर से देती है।

8. "तो फिर वहीं मरो। बंदा तो नौ-दो-ग्यारह होता है।"

उत्तरः

मुहावराः नौ-दो-ग्यारह होना (अर्थः भाग जाना)
नया वाक्यः पुलिस को देखते ही चोर नौ-दो-ग्यारह हो गया।

गतिविधियाँ

नीचे दी गई गतिविधियाँ अपने समूह के साथ मिलकर कीजिए—

1. कविता (गीत) और अभिनंदन-पत्र
"बाल-सभा ने निश्चय किया, दोनों पशुवीरों को अभिनंदन-पत्र देना चाहिए।"

(क) मान लीजिए कि बाल-सभा ने हीरा और मोती की प्रशंसा में एक गीत लिखा और गाया। अपनी कल्पना से वह गीत लिखिए।

उत्तरः

हीरा-मोती का गीत
वीर बैल हीरा-मोती, जग में नाम किया तुमने,
बंधन तोड़कर, घर को दौड़े, साहस दिखाया तुमने।
दिन-रात खेत में जोते जाते, मार सहन की खाई,
झूरी की याद में आँखें भर-भर, फिर भी रोए नाहीं।
काँजीहौस की दीवार तोड़ी, नौ-दस जानें बचाईं,
मित्र की खातिर मोती रुका, मित्रता खूब निभाई।
वीर बैल हीरा-मोती, जग में नाम किया तुमने!

(ख) हीरा और मोती के लिए अभिनंदन-पत्र लिखिए।

उत्तरः

अभिनंदन-पत्र

वीरवर हीरा एवं मोती के सम्मान में
बाल-सभा, ग्राम लमही
हम, इस गाँव के बालक-बालिकाएँ, आप दोनों वीर बैलों का हार्दिक अभिनंदन करते हैं।
आपने अनेक कष्टों और यातनाओं को सहकर भी अपनी मित्रता, साहस और निष्ठा का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। गया के घर में भूखे-प्यासे रहकर भी आपने अपना स्वाभिमान नहीं खोया। काँजीहौस में दीवार तोड़कर आपने न केवल स्वयं को बल्कि नौ-दस अन्य प्राणियों को भी मुक्ति दिलाई। विशेष रुप से मोती की वह उदारता सराहनीय है जब उसने हीरा को बँधा छोड़कर अकेले भागने से इनकार कर दिया। यह सच्ची मित्रता का प्रतीक है।
हम आपसे सीखते हैं कि संकट में भी साहस नहीं छोड़ना चाहिए, मित्र को अकेला नहीं छोड़ना चाहिए, और अत्याचार के सामने झुकना नहीं चाहिए।
आप दोनों हमारे प्रेरणा-स्रोत हैं।

— समस्त बाल-सभा, ग्राम लमही

2. बाल सभा में भाषण
मान लीजिए कि आपको बाल-सभा ने हीरा-मोती के लौटने के बाद भाषण देने के लिए बुलाया है। भाषण का विषय है— 'पशुओं के अधिकार'। अपना भाषण लिखिए और कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

उत्तरः

भाषण — पशुओं के अधिकार

आदरणीय शिक्षकगण एवं प्रिय साथियों,
आज हम हीरा और मोती के वापस लौटने की खुशी मना रहे हैं। पर इस खुशी के साथ एक गंभीर प्रश्न भी है — क्या हमने कभी सोचा कि पशुओं को भी अधिकार होने चाहिए?

हीरा और मोती को गया के घर पर मारा-पीटा गया, भूखा रखा गया, काँजीहौस में बंद किया गया — और अंत में एक कसाई को बेच दिया गया। यह सब क्यों हुआ? क्योंकि हम सोचते हैं कि पशु केवल हमारी सेवा के लिए हैं, उनके अपने कोई अधिकार नहीं।

पर ऐसा नहीं है। पशुओं को भी जीने का अधिकार है। उन्हें भी भोजन, पानी और आराम का अधिकार है। उन्हें भी शारीरिक यातना से मुक्त रहने का अधिकार है।

भारत में 'पशु क्रूरता निवारण अधिनियम' बना हुआ है, पर उसे सही से लागू नहीं किया जाता।

हम बच्चों को आज यह संकल्प लेना चाहिए कि हम किसी पशु के साथ क्रूर व्यवहार नहीं करेंगे, न होने देंगे। यदि कहीं पशु के साथ अत्याचार देखें, तो बड़ों को बताएँ।

हीरा और मोती हमें सिखाते हैं कि प्रेम और निष्ठा केवल मनुष्यों में नहीं, पशुओं में भी होती है।
जय हिंद!

3. शीर्षक
इस कहानी के पाँच भाग हैं। कहानी के प्रत्येक भाग को अपने मन से उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

उत्तरः

भाग 1 — नए घर में अपमान (जब हीरा-मोती को गया के घर भेजा गया और वे रात को भाग आए)
भाग 2 — अत्याचार और प्रतिरोध (गया की मार, भूखा रहना और छोटी लड़की की मदद)
भाग 3 — स्वतंत्रता का स्वाद और नया संकट (भागने के बाद खेत में मटर खाना, साँड़ से युद्ध और काँजीहौस में बंद होना)
भाग 4 — काँजीहौस का संघर्ष (भूख-प्यास, दीवार तोड़ने का प्रयास और मोती की निष्ठा)
भाग 5 — घर वापसी (नीलामी, परिचित रास्ता, झूरी के घर लौटना और कसाई को भगाना)

मेरी पहेली

अपने समूह के साथ मिलकर ऐसी पहेलियाँ बनाइए जिनके उत्तर निम्नलिखित हों—

हीरा, झूरी, मोती, गया, बैल, मटर, रस्सी, रोटी

उत्तरः

1. **हीरा** — मैं किसान का प्यारा बैल हूँ, नाम मेरा कीमती पत्थर जैसा है, जो पहले भी बँधा था, पर स्वाभिमान कभी न छोड़ा। बताओ कौन हूँ मैं? (हीरा)

2. **झूरी** — जिसने बैल पाले, जिसके लिए बैल लौट आए, जिसकी पत्नी गुस्सैल थी पर अंत में माथे चूम लिया। बताओ वह कौन? (झूरी)
3. **मोती** — साहसी, क्रोधी, मित्र के लिए सब कुछ सहने वाला, नाम है चमकती चीज़ का, पर था एक वीर बैल। (मोती)
4. **गया** — झूरी का साला, बैलों का अत्याचारी मालिक, जिसके यहाँ से बैल भाग आए। (गया)
5. **बैल** — खेत जोतता है, गाड़ी खींचता है, गधे से थोड़ा 'कम गधा' कहलाता है। (बैल)
6. **मटर** — हरी-हरी, खेत में खड़ी, भूखे मोती ने खाई, जिसकी वजह से काँजीहौस पहुँचे दोनों। (मटर)
7. **रस्सी** — मुझे काटे बिना आज़ादी नहीं, मुझे चबाया, झटका दिया, मैं टूट गई। (रस्सी)
8. **रोटी** — भैरो की बेटी ने लाई, दो ही थी पर दोनों के हृदय को मिली जैसे भोजन। (रोटी)

भाषा संगम

1. "कभी-कभी अड़ियल बैल भी देखने में आता है।"
नीचे 'बैल' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है—
बैल (हिंदी); वृषभ (संस्कृत); बओलद, बल्द (पंजाबी); बैल (उर्दू); दोंद (कश्मीरी); ढ़गो (सिंधी); बैल (मराठी); बळद (गुजराती); बैल (कोंकणी); गोरु (नेपाली); बलद (बांग्ला); षाँड, बलध (असमिया); शन लाबा (मणिपुरी); बलद (ओड़िआ); एंददु (तेलुगु); एरिदु/काळैमाडु (तमिल); काळ (मलयालम); एत्तु (कन्नड़)।
   - इनके अतिरिक्त यदि आप 'बैल' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
   - उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

   उत्तरः
   - अतिरिक्त भाषा (अंग्रेज़ी) — Ox / Bull
   - मेरी मातृभाषा (हिंदी) में वाक्य —
   "कभी-कभी अड़ियल बैल भी देखने में आता है।"

6. अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'दो बैलों की कथा' के लेखक कौन हैं?
(क) रामचंद्र शुक्ल
(ख) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(ग) प्रेमचंद
(घ) हजारीप्रसाद द्विवेदी

उत्तरः
(ग) प्रेमचंद

2. प्रेमचंद का वास्तविक नाम क्या था?
(क) रामचंद्र राय (ख) धनपत राय
(ग) श्रीपत राय (घ) दयाशंकर राय

उत्तरः
(ख) धनपत राय

3. कहानी के अनुसार जानवरों में सबसे अधिक बुद्धिहीन किसे समझा जाता है?
(क) बैल को (ख) घोड़े को
(ग) गाय को (घ) गधे को

उत्तरः
(घ) गधे को

4. लेखक के अनुसार गधे के चेहरे पर सदा क्या छाया रहता है?
(क) स्थायी प्रसन्नता (ख) स्थायी क्रोध
(ग) स्थायी विषाद (घ) स्थायी भय

उत्तरः
(ग) स्थायी विषाद

5. लेखक ने गधे की तुलना किनसे की है जिनके गुण उसमें पराकाष्ठा को पहुँचे हैं?
(क) राजा-महाराजाओं से (ख) ऋषियों-मुनियों से
(ग) वीर सैनिकों से (घ) धनी व्यापारियों से

उत्तरः
(ख) ऋषियों-मुनियों से

6. लेखक के अनुसार जापान को संसार की सभ्य जातियों में किसने गण्य बनाया?
(क) उसकी प्राचीन संस्कृति ने
(ख) उसकी बड़ी आबादी ने
(ग) उसकी व्यापारिक शक्ति ने
(घ) उसकी एक ही विजय ने

उत्तरः
(घ) उसकी एक ही विजय ने

7. झूरी के दोनों बैलों के क्या नाम थे?
(क) मोती और सोना (ख) हीरा और मोती
(ग) हीरा और लाल (घ) गोरा और मोती

उत्तरः
(ख) हीरा और मोती

8. हीरा और मोती किस जाति के बैल थे?
(क) साहीवाल जाति के
(ख) थारपारकर जाति के
(ग) गिर जाति के
(घ) पछाईं जाति के

उत्तरः
(घ) पछाईं जाति के

9. दोनों बैल हल या गाड़ी में जुते समय एक-दूसरे के प्रति कैसा भाव रखते थे?
(क) अधिक-से-अधिक बोझ मेरी ही गरदन पर रहे
(ख) कम-से-कम बोझ मेरी ही गरदन पर रहे
(ग) मैं पहले थान पर पहुँचूँ
(घ) मुझे हमेशा दूसरे से बेहतर चारा मिले
उत्तरः
(क) अधिक-से-अधिक बोझ मेरी ही गरदन पर रहे

10. झूरी ने बैलों को पहली बार कहाँ भेजा था?
(क) बाजार बेचने के लिए
(ख) दूसरे गाँव के किसान के पास
(ग) साले गया के घर ससुराल
(घ) काँजीहाउस में बंद कराने के लिए
उत्तरः
(ग) साले गया के घर ससुराल

11. **अभिकथन (A):** हीरा और मोती को गया के घर भेजे जाने पर उन्होंने वहाँ नाँद में मुँह नहीं डाला।
कारण (R): उनका दिल भारी था क्योंकि जिसे उन्होंने अपना घर समझ रखा था, वह आज उनसे छूट गया था।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है
(ख) A सही है किंतु R गलत है
(ग) A गलत है किंतु R सही है
(घ) A और R दोनों गलत हैं
उत्तरः
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है

12. रात को गाँव में सोता पड़ जाने के बाद दोनों बैलों ने क्या किया?
(क) वे डरकर चुपचाप अपनी जगह पर वापस सो गए।
(ख) वे भूखे होने के कारण जोर-जोर से रँभाने लगे।
(ग) वे नाँद में रखे सूखे चारे को चुपचाप खाने लगे।
(घ) वे पगहे तोड़कर वापस अपने घर की तरफ चले।
उत्तरः
(घ) वे पगहे तोड़कर वापस अपने घर की तरफ चले।

13. प्रातःकाल झूरी ने वापस लौटे दोनों बैलों को कहाँ खड़े पाया?
(क) बाहर मैदान में
(ख) चरनी पर
(ग) पड़ोसी के घर पर
(घ) नाँद के पास बैठे हुए
उत्तरः
(ख) चरनी पर

14. जब बैल वापस लौटे तब उनके घुटने तक पाँव किससे भरे थे?
(क) धूल से (ख) रेत से
(ग) कीचड़ से (घ) पानी से
उत्तरः
(ग) कीचड़ से

15. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प चुनिए:
I. झूरी ने बैलों को वापस आया देखकर प्रेम से गले लगाया।
II. झूरी की स्त्री ने बैलों को 'नमकहराम' कहा।
III. गाँव के लड़कों ने तालियाँ बजाकर बैलों का स्वागत किया।
(क) केवल I और III सही हैं
(ख) केवल II और III सही हैं
(ग) केवल I और II सही हैं
(घ) I, II और III तीनों सही हैं
उत्तरः
(घ) I, II और III तीनों सही हैं

16. झूरी की स्त्री ने मजूर को बैलों के विषय में क्या ताकीद की?
(क) बैलों को खूब खिलाया-पिलाया जाए
(ख) बैलों को केवल सूखा भूसा दिया जाए
(ग) बैलों को खली और चोकर दी जाए
(घ) बैलों को गाँव से बाहर बाँधा जाए
उत्तरः
(ख) बैलों को केवल सूखा भूसा दिया जाए

17. दूसरी बार झूरी के साले गया ने बैलों को किसमें जोता?
(क) हल में (ख) कोल्हू में
(ग) गाड़ी में (घ) पानी की गाड़ी में
उत्तरः
(ग) गाड़ी में

18. मोती ने गाड़ी को कहाँ गिराने की कोशिश की, जिसे हीरा ने संभाल लिया?
(क) नदी में (ख) खेत की मेड़ पर
(ग) कुएँ में (घ) सड़क की खाई में
उत्तरः
(घ) सड़क की खाई में

19. गया ने बैलों को 'कल की शरारत का मजा चखाने' के बाद क्या दिया?
(क) खली और चोकर (ख) ताजा हरा चारा
(ग) सूखा भूसा (घ) दाना और पानी
उत्तरः
(ग) सूखा भूसा

20. गया के घर कौन-सी छोटी लड़की बैलों को रोटियाँ खिलाती थी?
(क) गया की पुत्री (ख) झूरी की बेटी
(ग) गया की भाँजी (घ) भैरो की लड़की

उत्तरः
(घ) भैरो की लड़की

21. उस बालिका की माँ के बारे में कहानी में क्या बताया गया है?
(क) वह बीमार रहती थी
(ख) वह मर चुकी थी
(ग) वह शहर में काम करती थी
(घ) वह झूरी के घर में थी

उत्तरः
(ख) वह मर चुकी थी

22. **अभिकथन (A):** भैरो की बालिका बैलों को रोटियाँ खिलाती थी, जिससे उनके हृदय को मानो भोजन मिल जाता था।
कारण (R): सौतेली माँ द्वारा मारी जाने वाली उस अनाथ लड़की को इन बैलों से एक प्रकार की आत्मीयता हो गई थी।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है
(ख) A सही है किंतु R गलत है
(ग) A गलत है किंतु R सही है
(घ) A और R दोनों गलत हैं

उत्तरः
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है

23. गया के खेत में काम करने से इनकार पर जब हीरा की नाक पर खूब डंडे जमाए गए, तो किसका गुस्सा काबू के बाहर हो गया?
(क) हीरा का (ख) झूरी का
(ग) मोती का (घ) भैरो का

उत्तरः
(ग) मोती का

24. जब गया लाठियाँ लेकर दौड़ा, तब हीरा ने मोती को क्या कहकर रोका?
(क) 'चलो भाग चलें, क्योंकि इस समय अपनी जान बचाना ही समझदारी है'
(ख) 'तुम पीछे मत हटो और आगे बढ़कर उसे अभी एक अच्छा सबक सिखाओ'
(ग) 'नहीं भाई! खड़े हो जाओ, मार खाना हमारी जाति का धर्म नहीं है'
(घ) 'बिना कोई विरोध किए चुपचाप अपना काम पहले की तरह करते रहो'

उत्तरः
(ग) 'नहीं भाई! खड़े हो जाओ, मार खाना हमारी जाति का धर्म नहीं है'

25. रस्सी तोड़ने के लिए मोती ने हीरा को क्या उपाय बताया?
(क) हमें अपने मजबूत सींगों से दीवार पर प्रहार करके उसे तोड़ देना चाहिए।
(ख) हमें पूरी ताकत लगाकर पीछे की तरफ रस्सी को लगातार खींचते रहना चाहिए।
(ग) हमें पानी डालकर इस मोटी रस्सी को पूरी तरह भिगोकर कमजोर कर देना चाहिए।
(घ) हमें रस्सी को पहले थोड़ा चबा लेना चाहिए, फिर वह एक झटके में टूट जाती है।

उत्तरः
(घ) हमें रस्सी को पहले थोड़ा चबा लेना चाहिए, फिर वह एक झटके में टूट जाती है।

26. बालिका ने रात को बैलों का गराँव खोलते हुए क्या चेतावनी दी?
(क) 'तुम दोनों यहाँ से जल्दी भागो, नहीं तो कल कसाई के हाथों बेचे जाओगे'
(ख) 'तुम चुपके से भाग जाओ, वरना ये लोग मार डालेंगे और नाकों में नाथ डालेंगे'
(ग) 'तुम अभी मत भागो, अंधेरा बहुत है, सुबह होते ही यहाँ से चुपचाप चले जाना'
(घ) 'मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी क्योंकि मेरा भी इस घर में अब मन नहीं लगता'

उत्तरः
(ख) 'तुम चुपके से भाग जाओ, वरना ये लोग मार डालेंगे और नाकों में नाथ डालेंगे'

27. बालिका ने गराँव खोला, फिर भी बैल चुपचाप खड़े रहे। हीरा ने इसका क्या कारण बताया?
(क) उन्हें अपने घर जाने का सही रास्ता मालूम नहीं था।
(ख) वे दिनभर की अत्यधिक थकान के कारण शांत खड़े थे।
(ग) उनके पैरों की रस्सी अभी भी पूरी तरह बंधी हुई थी।
(घ) उनके भागने से इस अनाथ लड़की पर सब शक करेंगे।

उत्तरः
(घ) उनके भागने से इस अनाथ लड़की पर सब शक करेंगे।

28. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प चुनिए:

I. मोती ने खेत में मटर खाने से इनकार किया।

II. मोती सींचे हुए खेत में घुस गया और कीचड़ में फँस गया।

III. हीरा ने मोती को पकड़ा जाते देख वापस लौटकर स्वयं भी पकड़वाया।

(क) केवल I और II सही हैं

(ख) केवल I और III सही हैं
(ग) केवल II और III सही हैं
(घ) I, II और III तीनों सही हैं

उत्तरः
(ग) केवल II और III सही हैं

29. भागते समय बैलों को भूख लगी तो उन्होंने खेत में क्या चरा?
(क) गेहूँ (ख) चना
(ग) मटर (घ) अरहर

उत्तरः
(ग) मटर

30. साँड़ से मुकाबले में हीरा ने क्या रणनीति बताई?
(क) दोनों एक-एक करके बारी-बारी से लड़ें
(ख) शोर मचाकर उसे भगा दें
(ग) खाई में धकेलकर भाग जाएँ
(घ) दोनों एक साथ आगे-पीछे से चोट करें

उत्तरः
(घ) दोनों एक साथ आगे-पीछे से चोट करें

31. साँड़ से लड़ाई के बाद हीरा ने मोती को क्या नसीहत दी?
(क) 'आगे फिर मत लड़ना'
(ख) 'गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना चाहिए'
(ग) 'अब जल्दी घर चलते हैं'
(घ) 'तुमने साँड़ से लड़ाई करके बहुत अच्छा किया आज'

उत्तरः
(ख) 'गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना चाहिए'

32. मोती के सींचे हुए खेत में घुसने पर क्या हुआ?
(क) रखवाले के देखते ही वह तेजी से भाग गया
(ख) उसे देखकर खेत का रखवाला डर गया
(ग) कुछ ही देर में हीरा ने उसे बचा लिया
(घ) उसके खुर कीचड़ में धँसे और वह पकड़ा गया

उत्तरः
(घ) उसके खुर कीचड़ में धँसे और वह पकड़ा गया

33. काँजीहाउस में बंद सभी जानवरों की क्या दशा थी?
(क) सब भरपेट भोजन मिलने के कारण वहाँ बहुत खुश थे।
(ख) सब जगह की कमी के कारण आपस में लड़ रहे थे।
(ग) सब मिलकर बाहर भागने की योजना बना रहे थे।
(घ) सब मुर्दों की तरह पड़े थे, किसी के सामने चारा नहीं था

उत्तरः
(घ) सब मुर्दों की तरह पड़े थे, किसी के सामने चारा नहीं था

34. काँजीहाउस में दोनों बैलों ने भूख मिटाने के लिए क्या किया?
(क) नाँद का सूखा भूसा खाया
(ख) घास के तिनके ढूँढते रहे
(ग) पानी पीकर पेट भरा
(घ) दीवार की नमकीन मिट्टी चाटी

उत्तरः
(घ) दीवार की नमकीन मिट्टी चाटी

35. हीरा ने दीवार तोड़ने की कोशिश की तो काँजीहाउस के चौकीदार ने क्या किया?
(क) उसे बाहर निकाल दिया
(ख) मुंशी को तुरंत सूचित किया
(ग) उसे और चारा देने का वादा किया
(घ) डंडे मारे और मोटी रस्सी से बाँध दिया

उत्तरः
(घ) डंडे मारे और मोटी रस्सी से बाँध दिया

36. मोती ने दीवार तोड़ने की जोर-आजमाई में कितने समय बाद सफलता पाई?
(क) आधे घंटे में (ख) एक घंटे में
(ग) दो घंटे में (घ) चार घंटे में

उत्तरः
(ग) दो घंटे में

37. काँजीहाउस की दीवार गिरने के बाद सबसे पहले कौन-से जानवर भागे?
(क) बकरियाँ (ख) तीनों घोड़ियाँ
(ग) भैंसें (घ) तीनों गधे

उत्तरः
(ख) तीनों घोड़ियाँ

38. काँजीहाउस की दीवार गिरने पर भी गधे क्यों नहीं भागे?
(क) वे बहुत कमजोर थे चलने के लिए
(ख) उनकी रस्सी नहीं खुली थी
(ग) उन्हें रास्ता नहीं पता था
(घ) उन्हें डर था कि फिर पकड़ लिए जाएँगे

उत्तरः
(घ) उन्हें डर था कि फिर पकड़ लिए जाएँगे

39. **अभिकथन (A):** मोती हीरा की रस्सी नहीं तोड़ पाया, फिर भी उसने हीरा को छोड़कर भागने से मना कर दिया।
कारण (R): मोती को मोटी रस्सी से स्वयं भी बाँध दिया गया था इसलिए वह जा नहीं सकता था।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है
(ख) A सही है किंतु R गलत है
(ग) A गलत है किंतु R सही है
(घ) A और R दोनों गलत हैं

उत्तरः
(ख) A सही है किंतु R गलत है

40. काँजीहाउस में नीलाम के समय आए दाढ़ीवाले की आँखें कैसी थीं?
(क) नीली और अत्यंत डरावनी
(ख) काली और चमकदार

(ग) लाल और मुद्रा अत्यंत कठोर
(घ) छोटी और धँसी हुई

उत्तरः
(ग) लाल और मुद्रा अत्यंत कठोर

41. हीरा को विश्वास था कि भगवान ने एक बार किसके रूप में उन्हें बचाया था?
(क) झूरी के रूप में
(ख) साँड़ को हराकर
(ग) काँजीहाउस के चौकीदार के रूप में
(घ) उस छोटी बालिका के रूप में

उत्तरः
(घ) उस छोटी बालिका के रूप में

42. दाढ़ीवाले के साथ चलते समय रास्ते में बैलों ने क्या देखा?
(क) उन्हें दूर से अपने प्यारे मालिक झूरी का गाँव दिखाई दिया।
(ख) उन्हें आगे बढ़ने के लिए एक गहरी नदी पार करनी थी।
(ग) गाय-बैलों का एक प्रसन्न रेवड़ हरे-हरे हार में चरता दिखा।
(घ) उन्हें रास्ते के किनारे बहुत हरी मटर का खेत दिखाई दिया।

उत्तरः
(ग) गाय-बैलों का एक प्रसन्न रेवड़ हरे-हरे हार में चरता दिखा।

43. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प चुनिए:

I. नीलाम के बाद दाढ़ीवाला बैलों को थान पर ले गया।

II. झूरी ने दाढ़ीवाले से कहा कि मेरे बैल हैं और मैं बेचूँगा तो बिकेंगे।

III. मोती ने सींग चलाकर दाढ़ीवाले को गाँव के बाहर तक दौड़ाया।

(क) केवल I और II सही हैं
(ख) केवल I और III सही हैं
(ग) केवल II और III सही हैं
(घ) I, II और III तीनों सही हैं

उत्तरः
(ग) केवल II और III सही हैं

44. दाढ़ीवाले के साथ रास्ते में जब परिचित राह दिखी, तो बैलों पर क्या असर हुआ?
(क) वे थकान के कारण और धीमे हो गए
(ख) वे भावुक होकर रोने लगे
(ग) सारी थकान और दुर्बलता गायब हो गई
(घ) उन्होंने दाढ़ीवाले को मारने की कोशिश की

उत्तरः
(ग) सारी थकान और दुर्बलता गायब हो गई

45. झूरी के थान पर पहुँचकर दाढ़ीवाले ने जब बैलों की रस्सियाँ पकड़ीं, तो मोती ने क्या किया?
(क) मालिक को देखकर बहुत जोर से रँभाने लगा
(ख) वह डर के मारे चुपचाप हीरा के पीछे छुप गया
(ग) वह मदद माँगने के लिए झूरी के पास चला गया
(घ) सींग चलाया, दाढ़ीवाला पीछे हटा और भागा

उत्तरः
(घ) सींग चलाया, दाढ़ीवाला पीछे हटा और भागा

46. दाढ़ीवाले को भगाने के बाद हीरा ने मोती से क्या कहा?
(क) 'तुमने उसे यहाँ से भगाकर सचमुच बहुत अच्छा काम किया है।'
(ख) 'मैं डर रहा था कि कहीं तुम गुस्से में आकर उसे मार न बैठो।'
(ग) 'मुझे पूरा विश्वास है कि अब वह डर के मारे कभी नहीं आएगा।'
(घ) 'अब हमें अपनी सुरक्षा के लिए तुरंत यहाँ से चले जाना चाहिए।'

उत्तरः
(ख) 'मैं डर रहा था कि कहीं तुम गुस्से में आकर उसे मार न बैठो।'

47. मोती ने हीरा के 'हमारी जान को कोई जान ही नहीं समझता' कहने पर क्या उत्तर दिया?
(क) 'इसीलिए कि हम बोल नहीं सकते'
(ख) 'इसीलिए कि हम पशु हैं'
(ग) 'इसीलिए कि हम इतने सीधे हैं'
(घ) 'इसीलिए कि हम कमजोर हैं'

उत्तरः
(ग) 'इसीलिए कि हम इतने सीधे हैं'

48. कहानी के अंत में बैलों के घर लौटने पर झूरी की पत्नी ने क्या किया?
(क) उन्हें डाँटा और भगा दिया
(ख) उन पर ध्यान नहीं दिया
(ग) उन्हें सूखा भूसा ही खिला दिया
(घ) आकर दोनों के माथे चूम लिए

उत्तरः
(घ) आकर दोनों के माथे चूम लिए

49. काँजीहाउस में एक सप्ताह तक बँधे रहने के बाद दोनों बैलों की शारीरिक दशा कैसी हो गई थी?
(क) वे बिना किसी विशेष परेशानी के वहाँ बिल्कुल ठीक-ठाक थे।
(ख) वे इतने दुर्बल हो गए थे कि उनकी ठठरियाँ निकल आई थीं।

(ग) वे आराम मिलने के कारण पहले से अधिक ताकतवर हो गए थे।
(घ) वे थोड़े बीमार ज़रूर थे लेकिन आसानी से चल-फिर सकते थे।

उत्तरः
(ख) वे इतने दुर्बल हो गए थे कि उनकी ठठरियाँ निकल आई थीं।

50. काँजीहाउस के बाड़े में नीलाम से पहले लोग आकर बैलों को देखकर 'मन फीका करके' क्यों चले जाते थे?
(क) बैल बहुत उग्र और खतरनाक लग रहे थे
(ख) बैलों की कीमत बहुत अधिक लग रही थी
(ग) ऐसे मृतक-से बैलों का कोई खरीदार नहीं होता
(घ) बैल आकार में बहुत छोटे और कमजोर नस्ल के थे

उत्तरः
(ग) ऐसे मृतक-से बैलों का कोई खरीदार नहीं होता

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रेमचंद ने गधे को 'सबसे बुद्धिहीन' क्यों कहा है, जबकि वे स्वयं उसके गुणों की प्रशंसा करते हैं?

उत्तरः
प्रेमचंद के अनुसार गधे में ऋषियों-मुनियों जैसी सहनशीलता और सीधापन है, पर संसार सीधेपन को बुद्धिहीनता मानता है। यह व्यंग्य समाज पर है — जो सद्गुणों का आदर नहीं करता, बल्कि विरोध करने वालों को 'सभ्य' कहता है।

2. झूरी के दोनों बैलों — हीरा और मोती — के बीच का भाईचारा कैसे स्थापित हुआ था?

उत्तरः
बहुत दिनों तक साथ रहते-रहते हीरा और मोती में गहरा भाईचारा हो गया था। वे मूक-भाषा में विचार-विनिमय करते, एक-दूसरे को चाट-चूटकर प्रेम जताते और हमेशा साथ उठते-बैठते थे।

3. जब हीरा और मोती को झूरी के साले गया के यहाँ ले जाया जा रहा था, तो वे किस तरह प्रतिरोध कर रहे थे?

उत्तरः
दोनों बैल जोर-जोर से दाएँ-बाएँ भागते, पगहिया पकड़ने पर पीछे को जोर लगाते और मारने पर सींग नीचे करके हुँकारते थे। वे मालिक का घर छोड़ना नहीं चाहते थे।

4. गया के घर पहुँचने पर हीरा और मोती ने नाँद में मुँह क्यों नहीं डाला?

उत्तरः
दिन भर के भूखे होने के बावजूद दोनों ने खाने से मुँह फेर लिया। जिसे उन्होंने अपना घर समझा था, वह छूट गया था। नया घर, नए लोग — सब बेगाने लग रहे थे और उनका दिल भारी हो रहा था।

5. हीरा और मोती पहली बार गया के घर से भागकर झूरी के पास कैसे लौटे?

उत्तरः
रात को गाँव के सो जाने पर दोनों ने जोर मारकर अपनी पगहे तोड़ डाले। पगहे बहुत मजबूत थे, पर उस समय दोनों में दोगुनी शक्ति आ गई थी और वे एक-एक झटके में रस्सियाँ तोड़कर घर लौट आए।

6. झूरी की स्त्री ने बैलों को वापस आए देखकर 'नमकहराम' क्यों कहा? झूरी ने इसका क्या जवाब दिया?

उत्तरः
झूरी की स्त्री ने कहा कि बैल एक दिन भी वहाँ काम न करके भाग आए, इसलिए नमकहराम हैं। झूरी ने पलटकर कहा कि अगर चारा-दाना ठीक नहीं मिला होगा, तो वे क्या करते — भागना स्वाभाविक था।

7. उस छोटी लड़की ने बैलों के साथ ऐसी आत्मीयता क्यों महसूस की जो घर के बाकी लोग नहीं कर पाए?

उत्तरः
वह लड़की भैरो की बेटी थी। उसकी माँ मर चुकी थी और सौतेली माँ उसे मारती रहती थी। इसलिए वह भी दुख और उपेक्षा जानती थी — इसी साझे दर्द ने उसे बैलों के करीब ला दिया।

8. जब मोती साँड़ से लड़ने की बात कर रहा था, तो हीरा ने 'भागना कायरता है' क्यों कहा?

उत्तरः
हीरा अपने धर्म और मर्यादा को जानता था। वह मानता था कि बिना लड़े भागना कायरता है। उसका विश्वास था कि दोनों मिलकर साँड़ का सामना कर सकते हैं, चाहे जान का जोखिम क्यों न हो।

9. काँजीहौस में बंद होने के बाद हीरा ने दीवार तोड़ने की कोशिश क्यों की, जबकि उसे मार पड़ने का डर था?

उत्तरः
हीरा केवल अपने लिए नहीं लड़ रहा था। उसने सोचा — दीवार टूट जाए तो यहाँ बंद सभी भाई बच जाएँगे। उसने कहा, 'योंभी तो मरना ही है' — इस भावना ने उसे बंधन से भी बड़ा बना दिया।

10. मोती ने काँजीहौस में हीरा की रस्सी तोड़ने की कोशिश की, पर नाकाम रहा। तब उसने क्या किया और क्यों?

उत्तरः
मोती हार गया, पर उसने हीरा को अकेला नहीं छोड़ा। उसने कहा — 'जिस अपराध के लिए तुम्हारे गले में बंधन पड़ा, उसके लिए मुझ पर भी मार पड़े तो क्या चिंता।' वह उसके पास आकर सो गया।

11. नीलाम के बाद जब दाढ़ीवाला व्यक्ति बैलों को ले जा रहा था, तो रास्ते में बैलों की चाल में अचानक तेजी क्यों आ गई?

उत्तरः
रास्ते में उन्हें परिचित खेत, बाग और गाँव दिखने लगे — वही रास्ता जिससे गया उन्हें लाया था। इससे उन्हें एहसास हुआ कि घर पास है। इस पहचान ने उनकी थकान और दुर्बलता को एक पल में दूर कर दिया।

12. जब दाढ़ीवाले ने बैलों की रस्सी पकड़ी, तो मोती ने क्या किया? इस घटना में मोती के किस स्वभाव की झलक मिलती है?

उत्तरः
मोती ने सींग चलाकर दाढ़ीवाले को भगा दिया और गाँव के बाहर तक उसका पीछा किया। यह घटना मोती के साहसी, विद्रोही और अपने अधिकारों की रक्षा करने वाले स्वभाव को उजागर करती है।

13. 'इसीलिए कि हम इतने सीधे हैं' — यह वाक्य किस संदर्भ में कहा गया और इसका क्या व्यंग्यार्थ है?

उत्तरः
यह वाक्य हीरा ने तब कहा जब मोती ने कहा कि हमारी जान को कोई जान नहीं समझता। इसका व्यंग्य यह है कि सीधे और सहनशील लोगों का ही सबसे अधिक शोषण होता है — यह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का भी संकेत है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'दो बैलों की कथा' की शुरुआत में प्रेमचंद ने गधे की तुलना भारतवासियों से क्यों की? इस तुलना का क्या उद्देश्य है?

उत्तरः
प्रेमचंद ने गधे को सहनशीलता और सीधेपन का प्रतीक बताते हुए कहा कि भारतवासी भी उसी तरह सीधे हैं — न शराब पीते, न झगड़ा करते, जी तोड़कर काम करते हैं, फिर भी बदनाम हैं। इस व्यंग्य से लेखक बताना चाहते हैं कि अत्याचार सहते रहने से मान-सम्मान नहीं मिलता। जापान का उदाहरण देकर वे संकेत देते हैं कि प्रतिरोध करने वाले ही सभ्य कहलाते हैं। यह परोक्ष रूप से स्वाधीनता-आंदोलन की भावना जगाने का प्रयास है।

2. हीरा और मोती में किस प्रकार का मित्रता-भाव था? कहानी के किन प्रसंगों से यह स्पष्ट होता है?

उत्तरः
हीरा और मोती में गहरी मित्रता थी। वे मूक-भाषा में बातें करते, एक-दूसरे को चाटकर थकान मिटाते, और हमेशा साथ उठते-बैठते। जब हल में जोते जाते, तो दोनों चाहते कि ज्यादा बोझ अपनी ही गर्दन पर रहे। काँजीहौस में मोती ने हीरा की रस्सी तोड़ने की पूरी कोशिश की और जब नाकाम रहा, तो उसके पास ही सो गया। यह भाईचारा कहानी की आत्मा है।

3. गया के घर में छोटी लड़की का बैलों के जीवन में क्या महत्त्व था? उसकी भूमिका को विस्तार से समझाइए।

उत्तरः
गया के घर में बैलों को सिर्फ सूखा भूसा मिलता था और खूब मार पड़ती थी। ऐसे में भैरो की बेटी हर रात चुपके से उन्हें दो रोटियाँ देती थी। यह छोटी-सी रोटी उनकी भूख नहीं मिटाती थी, पर उनके हृदय को संतोष देती थी। उसने ही बाद में उनका गराँव खोला और उन्हें भागने का मौका दिया। वह बैलों के लिए करुणा और मानवता का प्रतीक है।

4. साँड़ के साथ हुई लड़ाई में हीरा और मोती की एकता और रणनीति का वर्णन कीजिए।

उत्तरः
विशाल साँड़ को देख दोनों डरे, पर भागना उन्होंने कायरता माना। हीरा ने रणनीति बनाई — दोनों एक साथ चोट करें, एक आगे से रगेदे, दूसरा पीछे से सींग घुसेड़े। साँड़ एक-एक शत्रु से लड़ने का आदी था, दोनों की संगठित मार से वह घबरा गया। अंत में घायल होकर भाग गया। यह दृश्य एकजुटता की शक्ति दर्शाता है।

5. काँजीहौस में बंद जानवरों की दशा का वर्णन कीजिए। इस स्थान का प्रतीकात्मक अर्थ क्या हो सकता है?

उत्तरः
काँजीहौस में भैंसें, बकरियाँ, घोड़े, गधे — सभी थे, पर किसी के सामने चारा नहीं था। सब मुर्दों की तरह पड़े थे, अनेक खड़े भी नहीं हो पाते थे। एक सप्ताह तक पानी के सिवाय कुछ नहीं मिला। प्रतीकात्मक रूप से यह स्थान ब्रिटिश शासन का प्रतीक है जहाँ भारत के नागरिकों को भी भूख और दमन में जीना पड़ता था।

6. हीरा ने मोती को गिरे हुए साँड़ पर सींग न चलाने से क्यों रोका? इससे हीरा के चरित्र की कौन-सी विशेषता उभरती है?

उत्तरः
हीरा ने कहा — 'गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना चाहिए।' यह भारतीय परंपरा की उस मर्यादा का संकेत है जो शत्रु के निःशक्त हो जाने पर उसे क्षमा करने की बात करती है। इससे हीरा का धैर्यशील, नैतिक और उदार चरित्र उभरता है। वह जीत के नशे में भी अपनी सभ्यता नहीं भूलता, जो उसे मोती से श्रेष्ठ बनाता है।

7. जब दो गधे काँजीहौस में भागने का अवसर मिलने के बावजूद नहीं भागे, तो हीरा ने उनसे क्या कहा? इस प्रसंग का क्या संदेश है?

उत्तरः
हीरा ने गधों से कहा कि अभी भागने का अवसर है, फिर क्या हर्ज है? पर गधे डर के मारे वहीं पड़े रहे। यह प्रसंग उन लोगों का प्रतीक है जो पराधीनता से इतने आदी हो जाते हैं कि स्वतंत्रता का मौका मिलने पर भी डर के कारण उसे

नहीं लेते। यह भारत के उन नागरिकों पर व्यंग्य है जो अंग्रेजी शासन में विरोध करने की हिम्मत नहीं रखते थे।

8. झूरी की पत्नी और छोटी लड़की के व्यवहार में क्या अंतर था? दोनों के व्यवहार का बैलों पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तरः
झूरी की पत्नी ने बैलों को 'नमकहराम' कहा और सूखा भूसा देने की ताकीद की। उसके व्यवहार ने बैलों का अपमान किया। इसके विपरीत, भैरो की छोटी बेटी ने उन्हें चुपके से रोटियाँ दीं, गराँव खोला और उन्हें बचाया। उस एक रोटी से भूख नहीं मिटी, पर हृदय को बल मिला। यह करुणा और संवेदनशीलता का स्त्री-रुप है।

9. 'दो बैलों की कथा' में प्रेमचंद ने 'मूक-भाषा' का प्रयोग बार-बार क्यों किया है? इसका क्या साहित्यिक और भावनात्मक महत्त्व है?

उत्तरः
'मूक-भाषा' से प्रेमचंद यह दर्शाते हैं कि पशुओं में भी भावनाएँ, विचार और चेतना होती है। यह मानवीकरण की तकनीक है जिससे पाठक पशुओं के दुख-सुख से जुड़ पाते हैं। साहित्यिक दृष्टि से यह कहानी को पंचतंत्र और हितोपदेश की परंपरा से जोड़ता है। भावनात्मक रूप से यह पाठक के हृदय में बैलों के प्रति सहानुभूति जगाता है और उनकी मित्रता को विश्वसनीय बनाता है।

10. जब दाढ़ीवाला व्यक्ति हीरा और मोती को नीलाम करके ले जा रहा था, तो दोनों बैलों के मन में क्या विचार आए?

उत्तरः
दोनों बैल जानते थे कि यह व्यक्ति उन्हें मारने के लिए ले जा रहा है। हीरा ने कहा — 'गया के घर से नाहक भागे।' मोती ने निराश होकर भगवान पर प्रश्न उठाया। फिर हीरा ने कहा — 'माँस, खाल, सींग, हड्डी सब काम आ जाएँगी' — इसमें निराशा के बावजूद एक स्वीकृति और साहस दिखता है। तभी परिचित रास्ता देखकर उनमें नई उम्मीद जागी।

11. 'कभी-कभी संघर्ष करना आवश्यक हो जाता है' — कहानी के किन-किन प्रसंगों से यह सिद्ध होता है?

उत्तरः
पहली बार गया के यहाँ जाने पर बैलों ने रस्सियाँ तोड़कर घर लौटकर संघर्ष किया। दूसरी बार उन्होंने हल खींचने से इनकार किया। साँड़ से जान जोखिम में डालकर लड़े। काँजीहौस में दीवार तोड़ी। दाढ़ीवाले को मोती ने सींग चलाकर भगाया। ये सभी प्रसंग दर्शाते हैं कि जब अन्याय बर्दाश्त की सीमा पार कर ले, तो संघर्ष ही एकमात्र उत्तर होता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'दो बैलों की कथा' में हीरा और मोती के चरित्र की तुलना कीजिए। दोनों में क्या समानताएँ और क्या भिन्नताएँ हैं?

उत्तरः
हीरा और मोती दोनों पछाईं जाति के सुंदर, परिश्रमी और स्वाभिमानी बैल हैं। दोनों में गहरी मित्रता है, दोनों अन्याय के विरुद्ध लड़ते हैं और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते हैं। किंतु दोनों के स्वभाव में अंतर भी है। हीरा अधिक धैर्यशील, नैतिक और विचारशील है। वह सोच-समझकर निर्णय लेता है — गिरे शत्रु पर सींग न चलाने की मर्यादा रखता है और हमेशा मोती को सही मार्ग दिखाता है। मोती अधिक आवेगी, साहसी और विद्रोही है। वह तुरंत प्रतिक्रिया देता है और कभी-कभी आक्रामक हो जाता है। पर जब हीरा संकट में पड़ा, तो मोती ने उसका साथ नहीं छोड़ा। यह दर्शाता है कि दोनों की भिन्न विशेषताएँ एक-दूसरे की पूरक हैं — जो अधूरापन एक में है, वह दूसरा पूरा करता है।

2. 'दो बैलों की कथा' को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़कर व्याख्या कीजिए। कहानी में कौन-कौन से प्रसंग इस संबंध को स्पष्ट करते हैं?

उत्तरः
प्रेमचंद ने यह कहानी उस दौर में लिखी जब भारत पर अंग्रेजों का दमनकारी शासन था। हीरा-मोती भारतीय जनता के प्रतीक हैं और गया व दाढ़ीवाला अन्यायी शासन के। काँजीहौस ब्रिटिश जेल का प्रतीक है जहाँ निर्दोषों को बंदी बनाया जाता था। हीरा का 'जोर तो मारता ही जाऊँगा, चाहे कितने ही बंधन पड़ते जाएँ' — यह वाक्य भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों की भावना को दर्शाता है। 'मर जाऊँगा, पर उसके काम तो न आऊँगा' — यह स्वतंत्रता के लिए बलिदान की प्रेरणा है। दोनों गधों का न भागना उन भारतीयों का प्रतीक है जो भय के कारण आंदोलन से अलग रहते थे। बैलों का घर लौटना स्वराज की प्राप्ति का संकेत है।

3. कहानी में झूरी, गया और झूरी की पत्नी के व्यवहार के माध्यम से प्रेमचंद ने किसान जीवन के किन पहलुओं को उजागर किया है?

उत्तरः
प्रेमचंद ने इन तीन पात्रों के माध्यम से ग्रामीण जीवन की विविध परतें उकेरी हैं। झूरी का बैलों से प्रेम भारतीय किसान और उसके पशुओं के बीच के भावनात्मक संबंध का प्रतीक है — वह उन्हें 'फूल की छड़ी' से भी नहीं छूता था। गया का क्रूर व्यवहार उन जमींदारों या रिश्तेदारों का प्रतिनिधित्व करता है जो पशुओं को सिर्फ उत्पादन का साधन मानते हैं। झूरी की पत्नी घरेलू स्त्री का व्यावहारिक रुप है जो भावना से अधिक कार्यसाधना को महत्त्व देती है। इन तीनों के व्यवहार से पता चलता है कि किसान जीवन में सहानुभूति और शोषण दोनों एक साथ विद्यमान रहते हैं।

4. 'दो बैलों की कथा' में स्वतंत्रता, स्वाभिमान और मित्रता — इन तीन मूल्यों की अभिव्यक्ति का विश्लेषण कीजिए।

उत्तरः
स्वतंत्रता: बैल बार-बार बंधनों को तोड़ते हैं — गया के यहाँ से भागना, काँजीहौस की दीवार तोड़ना, दाढ़ीवाले को भगाना — ये सभी स्वतंत्रता की आकांक्षा के प्रमाण हैं। वे दासता में जीने की बजाय मर जाना स्वीकार करते हैं। स्वाभिमान: गया द्वारा मार खाने पर भी नाँद की ओर आँखें न उठाना, सूखा भूसा खाने से इनकार — यह उनके टूटे हुए आत्मसम्मान की अभिव्यक्ति है। 'हमारी जान को कोई जान नहीं समझता' — यह पंक्ति स्वाभिमान और वेदना का संगम है। मित्रता: हीरा संकट में पड़ने पर मोती का लौट आना, एक का दुख दूसरे का दुख बन जाना — यह निःस्वार्थ मित्रता है। ये तीनों मूल्य मिलकर कहानी को अमर बनाते हैं।

5. 'दो बैलों की कथा' को पंचतंत्र की परंपरा से जोड़कर समझाइए। प्रेमचंद की इस कहानी में क्या नयापन है?

उत्तरः
पंचतंत्र और हितोपदेश में पशुओं के माध्यम से नीतिकथाएँ कही जाती थीं — पशु बोलते थे, तर्क करते थे और मानवीय गुण-दोष प्रकट करते थे। प्रेमचंद ने इसी परंपरा को अपनाया है — हीरा-मोती की मूक-भाषा में बातचीत, उनके नैतिक निर्णय और विद्रोही चेतना इसी कड़ी में आते हैं। परंतु प्रेमचंद का नयापन यह है कि उनकी कहानी केवल नीति-शिक्षा तक सीमित नहीं। यह किसान जीवन की सच्चाई, पशुओं के प्रति संवेदना और स्वतंत्रता संग्राम की भावना को एक साथ समेटती है। पंचतंत्र में पशु प्रतीकात्मक थे, पर यहाँ वे सजीव, भावनाशील पात्र हैं जिनके दुख-सुख में पाठक भागीदार बन जाता है।

6. काँजीहौस प्रकरण कहानी का सबसे नाटकीय और महत्त्वपूर्ण भाग है। इस पूरे प्रसंग का विस्तार से विश्लेषण कीजिए।

उत्तरः
काँजीहौस में बंद होना हीरा-मोती के जीवन का सबसे कठिन पड़ाव है। भूख, प्यास और अपमान — तीनों एक साथ। पर इस विपदा ने उनकी जिजीविषा और एकता को और गहरा किया। हीरा ने अँधेरे में दीवार तोड़ने की कोशिश की, मार खाई, फिर मोती को प्रेरित किया। मोती ने दो घंटे की जोर-आजमाई से दीवार गिरा दी। नतीजा — घोड़ियाँ, बकरियाँ, भैंसें सब भाग गईं। दोनों गधे फिर भी नहीं गए — यह भय की जड़ता का चित्रण है। मोती ने गधों को भी सींग मारकर निकाला — यह दूसरों की मुक्ति के लिए संघर्ष करने की भावना है। इस प्रसंग में नेतृत्व, साहस, बलिदान और एकजुटता — स्वतंत्रता आंदोलन के सभी मूल्य एक साथ दिखते हैं।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

गद्यांश 1

जानवरों में गधा सबसे ज़्यादा बुद्धिहीन समझा जाता है। हम जब किसी आदमी को परले दरजे का बेवकूफ कहना चाहते हैं, तो उसे गधा कहते हैं। गधा सचमुच बेवकूफ है, या उसके सीधेपन, उसकी निरापद सहिष्णुता ने उसे यह पदवी दे दी है, इसका निश्चय नहीं किया जा सकता। गायें सींग मारती हैं, ब्याई हुई गाय तो अनायास ही सिंहनी का रूप धारण कर लेती है। कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर है, लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है; किंतु गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना, न देखा। जितना चाहो गरीब को मारो, चाहे जैसी खराब, सड़ी हुई घास सामने डाल दो, उसके चेहरे पर कभी असंतोष की छाया भी न दिखाई देगी।

1. गधे को 'बेवकूफ' की पदवी मिलने का असली कारण क्या हो सकता है?
(क) उसकी शारीरिक कमज़ोरी
(ख) उसका क्रोधी स्वभाव
(ग) उसकी कमज़ोरी और डरपोकपन
(घ) उसकी सहनशीलता और भोलापन

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: लेखक गधे की सहिष्णुता की प्रशंसा करता है।
कथन II: लेखक मानता है कि गधा वास्तव में बुद्धिहीन है।
सही विकल्प चुनिए—
(क) केवल कथन I सही है
(ख) केवल कथन II सही है
(ग) दोनों कथन सही हैं
(घ) दोनों कथन गलत हैं

3. इस गद्यांश का स्वर और प्रकृति कैसी है?
(क) भावुक और करुण
(ख) व्यंग्यात्मक और विचारोत्तेजक
(ग) रोमांचक और नाटकीय
(घ) उपदेशात्मक और शुष्क

4. 'निरापद सहिष्णुता' में 'निरापद' का अर्थ है—
(क) सुरक्षित और निर्विघ्न
(ख) क्रोधपूर्ण और उग्र
(ग) विद्रोही और असंतुष्ट
(घ) भयभीत और दुर्बल

5. ब्याई हुई गाय के बारे में लेखक ने क्या कहा है?
(क) वह कभी क्रोध नहीं करती
(ख) वह गधे का रूप धारण कर लेती है
(ग) वह सिंहनी का रूप धारण कर लेती है
(घ) वह बहुत विनम्र होती है

उत्तरः
1. (घ) उसकी सहनशीलता और भोलापन
2. (क) केवल कथन I सही है
3. (ख) व्यंग्यात्मक और विचारोत्तेजक
4. (क) सुरक्षित और निर्विघ्न
5. (ग) वह सिंहनी का रूप धारण कर लेती है

गद्यांश 2

झूरी के दोनों बैलों के नाम थे हीरा और मोती। दोनों पछाईं जाति के थे— देखने में सुंदर, काम में चौकस, डील में ऊँचे। बहुत दिनों साथ रहते-रहते दोनों में भाईचारा हो गया था। दोनों आमने-सामने या आस-पास बैठे हुए एक-दूसरे से मूक-भाषा में विचार-विनिमय करते थे। एक, दूसरे के मन की बात कैसे समझ जाता था, हम नहीं कह सकते। अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है। दोनों एक-दूसरे को चाटकर और सूँघकर अपना प्रेम प्रकट करते, कभी-कभी दोनों सींग भी मिला लिया करते थे— विग्रह के नाते से नहीं, केवल विनोद के भाव से, आत्मीयता के भाव से।

1. हीरा और मोती की 'मूक-भाषा' किस भाव को व्यक्त करती है?
(क) गहरी आत्मीयता और समझ
(ख) आपसी प्रतिस्पर्धा और ईर्ष्या
(ग) थकान और उदासीनता
(घ) दुःख और हताशा

2. **अभिकथन (A):** लेखक का मानना है कि बैलों में एक ऐसी शक्ति है जो मनुष्य में नहीं।
कारण (R): मनुष्य तर्क और भाषा पर निर्भर रहता है, भावनात्मक संवाद पर नहीं।
सही विकल्प चुनिए—
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
(ख) A सही है लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A गलत है लेकिन R सही है
(घ) A और R दोनों गलत हैं

3. इस गद्यांश की भाषा की विशेषता क्या है?
(क) हास्यपूर्ण और व्यंग्यात्मक
(ख) कठिन और तत्सम बहुल
(ग) चित्रात्मक और भावपूर्ण
(घ) सरल और शुष्क वर्णनात्मक

4. 'विनोद' शब्द का अर्थ इस गद्यांश में क्या है?
(क) मनोरंजन और क्रीड़ा
(ख) विवाद और लड़ाई
(ग) विद्रोह और क्रोध
(घ) दुःख और पीड़ा

5. हीरा और मोती किस जाति के बैल थे?
(क) साहीवाल जाति के (ख) गिर जाति के
(ग) मुर्रा जाति के (घ) पछाईं जाति के

उत्तरः
1. (क) गहरी आत्मीयता और समझ
2. (ख) A सही है लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है
3. (ग) चित्रात्मक और भावपूर्ण
4. (क) मनोरंजन और क्रीड़ा
5. (घ) पछाईं जाति के

गद्यांश 3

संध्या समय दोनों बैल अपने नए स्थान पर पहुँचे। दिन-भर के भूखे थे, लेकिन जब नाँद में लगाए गए, तो एक ने भी उसमें मुँह न डाला। दिल भारी हो रहा था। जिसे उन्होंने अपना घर समझ रखा था, वह आज उनसे छूट गया था। यह नया घर, नया गाँव, नए आदमी, सब उन्हें बेगानों-से लगते थे।

दोनों ने अपनी मूक-भाषा में सलाह की, एक-दूसरे को कनखियों से देखा और लेट गए। जब गाँव में सोता पड़ गया, तो दोनों ने जोर मारकर पगहे तुड़ा डाले और घर की तरफ चले। पगहे बहुत मजबूत थे। अनुमान न हो सकता था कि कोई बैल उन्हें तोड़ सकेगा; पर इन दोनों में इस समय दुनी शक्ति आ गई थी। एक-एक झटके में रस्सियाँ टूट गई।

1. बैलों का भूखे होने पर भी नाँद में मुँह न डालना किस भाव को दर्शाता है?
(क) भूख न लगने की शारीरिक स्थिति
(ख) नए मालिक से विद्रोह और क्रोध
(ग) घर से बिछड़ने का गहरा दुःख
(घ) नई जगह के खाने से अरुचि

2. निम्नलिखित में से कौन-से कथन सही हैं?
I. बैलों ने रात को पगहे तोड़े।
II. बैलों में घर की याद से दुनी शक्ति आ गई थी।
III. बैल दिन-भर खाकर तृप्त थे।
(क) केवल I और II सही हैं (ख) केवल II और III सही हैं
(ग) केवल I और III सही हैं (घ) तीनों कथन सही हैं

3. इस गद्यांश में किस भाव की प्रधानता है?
(क) विरह और अपनापन की चाहत
(ख) साहस और उत्साह का जोश
(ग) क्रोध और आक्रोश की भावना
(घ) भय और निराशा का स्थायी भाव

4. 'कनखियों से देखना' का आशय है—
(क) भय और निराशा से आँखें बंद कर लेना
(ख) ध्यान से सीधे देखना
(ग) क्रोध और आक्रोश से घूरना
(घ) आँख की कोर से तिरछी नज़र डालना

5. बैलों ने घर लौटने का निर्णय कब लिया?
(क) जब गाँव में सोता पड़ गया
(ख) जब मालिक ने खाना नहीं दिया
(ग) जब सूरज ढलने लगा
(घ) जब उन्हें नाँद में बाँधा गया

उत्तरः
1. (ग) घर से बिछड़ने का गहरा दुःख
2. (क) केवल I और II सही हैं
3. (क) विरह और अपनापन की चाहत
4. (घ) आँख की कोर से तिरछी नज़र डालना
5. (क) जब गाँव में सोता पड़ गया

गद्यांश 4

दूसरे दिन गया ने बैलों को हल में जोता, पर इन दोनों ने जैसे पाँव न उठाने की कसम खा ली थी। वह मारते-मारते थक गया; पर दोनों ने पाँव न उठाया। एक बार जब उस निर्दयी ने हीरा की नाक पर खूब डंडे जमाए, तो मोती का गुस्सा काबू के बाहर हो गया। हल लेकर भागा। हल, रस्सी, जुआ, जोत, सब टूट-टाटकर बराबर हो गया। गले में बड़ी-बड़ी रस्सियाँ न होतीं, तो दोनों पकड़ाई में न आते।

हीरा ने मूक-भाषा में कहा– 'भागना व्यर्थ है।'

मोती ने उत्तर दिया– 'तुम्हारी तो इसने जान ही ले ली थी।'

'अबकी बड़ी मार पड़ेगी।'

'पड़ने दो, बैल का जन्म लिया है, तो मार से कहाँ तक बचेंगे?'

1. मोती का गुस्सा काबू के बाहर होना किस बात का संकेत है?
(क) मोती का स्वभाव से उग्र और गुस्सैल होना
(ख) मित्र की पीड़ा देख उसका स्वाभिमान जागना
(ग) मोती का बदला लेने की योजना बनाना
(घ) मोती का डर के कारण भाग जाना

2. हीरा के 'भागना व्यर्थ है' कहने और मोती के 'पड़ने दो' कहने से—
कौन-सा कथन सबसे उचित रूप से इन दोनों के चरित्र को दर्शाता है?
(क) हीरा धैर्यवान है, मोती साहसी और आवेगी है
(ख) हीरा कायर है, मोती निडर और बुद्धिमान है
(ग) हीरा और मोती दोनों निराश और हताश हैं
(घ) हीरा चालाक है और मोती भोला है

3. इस गद्यांश का प्रमुख भाव कौन-सा है?
(क) डर और आत्मसमर्पण
(ख) प्रकृति का शांत वर्णन
(ग) किसानी जीवन की सुखद झाँकी
(घ) अन्याय के विरुद्ध संघर्ष और मित्र-प्रेम

4. 'निर्दयी' शब्द का विलोम इस प्रसंग में कौन-सा होगा?
(क) दयालु और करुणामय (ख) क्रूर और निर्मम
(ग) उदासीन और तटस्थ (घ) चालाक और धूर्त

5. मोती के हल लेकर भागने पर क्या हुआ?
(क) हीरा भी उसके साथ भाग गया
(ख) गया ने उसे तुरंत पकड़ लिया
(ग) हल, रस्सी, जुआ, जोत सब टूट-टाटकर बराबर हो गया
(घ) गया ने मार-मारकर उसे रोक लिया

उत्तरः
1. (ख) मित्र की पीड़ा देख उसका स्वाभिमान जागना
2. (क) हीरा धैर्यवान है, मोती साहसी और आवेगी है
3. (घ) अन्याय के विरुद्ध संघर्ष और मित्र-प्रेम
4. (क) दयालु और करुणामय
5. (ग) हल, रस्सी, जुआ, जोत सब टूट-टाटकर बराबर हो गया

गद्यांश 5

दोनों मित्रों को जीवन में पहली बार ऐसा साबिका पड़ा कि सारा दिन बीत गया और खाने को एक तिनका भी न मिला। समझ ही में न आता था, यह कैसा स्वामी है। इससे तो गया फिर भी अच्छा था। यहाँ कई भैंसें थीं, कई बकरियाँ, कई घोड़े, कई गधे; पर किसी के सामने चारा न था, सब जमीन पर मुर्दों की तरह पड़े थे। कई तो इतने कमजोर हो गए थे कि खड़े भी न हो सकते थे। सारा दिन दोनों मित्र फाटक की ओर टकटकी लगाए ताकते रहे; पर कोई चारा लेकर आता न दिखाई दिया। तब दोनों ने दीवार की नमकीन मिट्टी चाटनी शुरू की, पर इससे क्या तृप्ति होती?

1. 'फाटक की ओर टकटकी लगाए ताकना' किस भावना को व्यक्त करता है?
(क) पलायन की योजना और साहस
(ख) चारे की खोज और सतर्कता
(ग) मुक्ति की आस और बेबसी
(घ) मालिक की प्रतीक्षा और श्रद्धा

2. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन इस गद्यांश के केंद्रीय भाव को सबसे सटीक रूप से व्यक्त करता है?
(क) मित्रता की परीक्षा और विश्वासघात
(ख) बैलों की आज़ादी की खुशी और उत्साह
(ग) नए मालिक का प्रेमपूर्ण व्यवहार
(घ) काँजीहौस की क्रूर व्यवस्था में जीवन का अपमान

3. इस गद्यांश की भाषा किस प्रकार की है?
(क) मार्मिक और यथार्थपरक
(ख) उत्साहित और प्रेरणादायक
(ग) हास्यपूर्ण और व्यंग्यात्मक
(घ) रहस्यमय और काल्पनिक

4. 'तृप्ति' का अर्थ है—
(क) भूख और अतृप्तता की स्थिति
(ख) संतोष और पेट भरने का भाव
(ग) क्रोध और विद्रोह का भाव
(घ) थकान और निद्रा की अवस्था

5. काँजीहौस में बैलों को खाने के लिए क्या मिला?
(क) रोटी और घास की थोड़ी मात्रा
(ख) थोड़ा सूखा भूसा और पानी
(ग) दीवार की नमकीन मिट्टी के अलावा कुछ नहीं
(घ) खली और चोकर की थोड़ी मात्रा

उत्तरः
1. (ग) मुक्ति की आस और बेबसी
2. (घ) काँजीहौस की क्रूर व्यवस्था में जीवन का अपमान
3. (क) मार्मिक और यथार्थपरक
4. (ख) संतोष और पेट भरने का भाव
5. (ग) दीवार की नमकीन मिट्टी के अलावा कुछ नहीं

गद्यांश 6

सहसा दोनों को ऐसा मालूम हुआ कि यह परिचित राह है। हाँ, इसी रास्ते से गया उन्हें ले गया था। वही खेत, वही बाग, वही गाँव मिलने लगे। प्रतिक्षण उनकी चाल तेज होने लगी। सारी थकान, सारी दुर्बलता गायब हो गई। आह? यह लो! अपना ही हार आ गया। इसी कुएँ पर हम पुर चलाने आया करते थे; यही कुआँ है।

मोती ने कहा– 'हमारा घर नगीच आ गया।'

हीरा बोला– 'भगवान की दया है।'

'मैं तो अब घर भागता हूँ।'

'यह जाने देगा?'

'इसे मैं मार गिराता हूँ।'

'नहीं-नहीं, दौड़कर थान पर चलो। वहाँ से हम आगे न जाएँगे।'

दोनों उन्मत्त होकर बछड़ों की भाँति कुलेलें करते हुए घर की ओर दौड़े। वह हमारा थान है। दोनों दौड़कर अपने थान पर आए और खड़े हो गए। दढ़यिल भी पीछे-पीछे दौड़ा चला आता था।

1. परिचित राह देखते ही बैलों की थकान और दुर्बलता का गायब हो जाना किस भावना को दर्शाता है?
(क) नई जगह पाने की उत्सुकता
(ख) दढ़ियल से बचने का भय और जल्दबाज़ी
(ग) घर और अपनेपन की अदम्य ललक
(घ) मालिक से मिलने की खुशी और राहत

2. हीरा का 'नहीं-नहीं, दौड़कर थान पर चलो' कहना और मोती का 'इसे मैं मार गिराता हूँ' कहना यह दर्शाता है कि—
(क) हीरा विवेकशील है, मोती उतावला और आवेगी है
(ख) हीरा डरपोक है और मोती निर्भीक योद्धा है
(ग) दोनों एकमत होकर दुश्मन पर हमला करना चाहते हैं
(घ) हीरा थका हुआ है और मोती में अधिक ऊर्जा है

3. 'दोनों उन्मत्त होकर बछड़ों की भाँति कुलेलें करते हुए घर की ओर दौड़े'— इस वाक्य में कौन-सी भाषिक विशेषता है?
(क) प्रश्नालंकार और संवाद
(ख) विरोधाभास और व्यंग्य
(ग) अतिशयोक्ति और रहस्य
(घ) उपमा और चित्रात्मकता

4. 'उन्मत्त' शब्द का अर्थ है—
(क) मतवाला और उत्साह से भरा हुआ
(ख) थका हुआ और निराशा से भरा हुआ
(ग) क्रोधित और उग्र स्वभाव वाला
(घ) शांत और संयमित स्वभाव वाला

5. हीरा ने मोती को दढ़ियल पर हमला करने से क्यों रोका?
(क) क्योंकि हीरा बहुत थका हुआ था और वह मोती की मदद करने के लिए लड़ नहीं सकता था
(ख) क्योंकि वह सीधे थान पर पहुँचकर अपना अधिकार जताना चाहता था
(ग) क्योंकि हीरा दढ़ियल से डरता था
(घ) क्योंकि वहाँ अन्य लोग मौजूद थे और मोती को उनसे खतरा हो सकता था

उत्तरः
1. (ग) घर और अपनेपन की अदम्य ललक
2. (क) हीरा विवेकशील है, मोती उतावला और आवेगी है
3. (घ) उपमा और चित्रात्मकता
4. (क) मतवाला और उत्साह से भरा हुआ
5. (ख) क्योंकि वह सीधे थान पर पहुँचकर अपना अधिकार जताना चाहता था

अध्याय 2

क्या लिखूँ?

1. लेखक परिचय

निबंध विधा की सूक्ष्म बारीकियों को उद्घाटित करने वाले पाठ 'क्या लिखूँ?' के रचयिता पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का जन्म सन् 1894 में खैरागढ़, छत्तीसगढ़ में हुआ था। इनकी ख्याति एक विशिष्ट आलोचक और निबंधकार के रूप में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। इन्होंने जीवन-भर अपनी वैचारिक लेखनी के बल पर लोकजीवन, अध्यात्म और पाश्चात्य-भारतीय सिद्धांतों के सामंजस्यपूर्ण समन्वय से हिंदी साहित्य को अलंकृत किया है। अपनी जीवंत एवं संवादपरक आत्मपरक शैली से इन्होंने हिंदी प्रेमियों को गौरवान्वित किया है। सन् 1971 में इस महान निबंधकार का निधन हो गया।

2. पाठ-परिचय

'क्या लिखूँ?' पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी द्वारा रचित एक विचारोत्तेजक निबंध है जिसमें लेखक ने निबंध-लेखन की प्रक्रिया को अत्यंत रोचक और आत्मीय शैली में प्रस्तुत किया है। नमिता और अमिता के लिए आदर्श निबंध लिखते समय लेखक को 'दूर के ढोल सुहावने' और 'समाज-सुधार' जैसे विषयों पर लिखने में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं। ए.जी. गार्डिनर, मानटेन जैसे विद्वानों के विचारों का उल्लेख करते हुए वे निबंध-लेखन के आदर्श तरीके को खोजने का प्रयास करते हैं। इस निबंध की आत्मपरक शैली इसे विशेष रूप से जीवंत और प्रभावशाली बनाती है।

3. पाठ-सारांश

निबंध लेखन की मानसिक स्थिति और दुविधा

अंग्रेजी निबंधकार ए.जी. गार्डिनर के अनुसार लिखने की एक विशेष मानसिक स्थिति होती है, जिसमें मन के आवेग और भाव ही यथार्थ वस्तु होते हैं और विषय केवल एक खूँटी के समान होता है। परंतु लेखक के सामने कठिनाई यह है कि उन्हें ऐसी स्वतः स्फूर्त मानसिक स्थिति का अनुभव नहीं होता। उन्हें सोचना, चिंता करना और परिश्रम करना पड़ता है।

लेखक को नमिता के लिए 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' और अमिता के लिए 'समाज-सुधार' जैसे दो कठिन विषयों पर दो ही घंटों में आदर्श निबंध तैयार करने हैं। लेखक के सामने चुनौती यह है कि जिन गंभीर विषयों पर बड़े-बड़े विद्वानों में मतभेद हैं, उन पर केवल पाँच पृष्ठों का संक्षिप्त और आदर्श निबंध कैसे लिखा जाए।

निबंधशास्त्र के आचार्यों के नियम

निबंध लेखन की कठिनाई दूर करने के लिए लेखक आचार्यों के सिद्धांतों को देखते हैं। एक विद्वान के अनुसार निबंध छोटा होना चाहिए, क्योंकि बड़े निबंधों में रचना की सुंदरता को बनाए रखना कठिन होता है। आचार्यों के अनुसार निबंध के दो मुख्य अंग सामग्री और शैली हैं। सामग्री के लिए विषय का गहरा अध्ययन होना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, निबंध लिखने से पहले उसकी रुपरेखा बनाना अनिवार्य माना जाता है।

शैली के संबंध में आचार्यों का मत है कि भाषा में प्रवाह होना चाहिए और वाक्य छोटे तथा एक-दूसरे से संबद्ध होने चाहिए। परंतु लेखक का मानना है कि एक शिक्षक होने के नाते अपनी विद्वता प्रदर्शित करने के लिए आधे पृष्ठ लंबे और अस्पष्ट वाक्य लिखना उनका दायित्व बन जाता है, क्योंकि अस्पष्टता ही गांभीर्य लाती है। बाणभट्ट, श्रीहर्ष और सेनापति जैसे संस्कृत कवियों ने भी जान-बूझकर अपने काव्यों को दुर्बोध बनाया था।

स्वच्छंद लेखन पद्धति (मानटेन का मार्ग)

लेखक को अंग्रेजी निबंधकारों की एक दूसरी पद्धति दिखाई देती है, जिसके जन्मदाता 'मानटेन' माने जाते हैं। इस पद्धति के निबंध मन की स्वच्छंद रचनाएँ होते हैं, जिनमें कोई शास्त्रीय बंधन नहीं होता। इनमें ज्ञान की गरिमा या कल्पना की महिमा के स्थान पर लेखक की सच्ची अनुभूति और सच्चे भावों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति होती है। लेखक इसी आत्मीय पद्धति को अपनाने का निर्णय लेते हैं।

चूंकि उन्हें एक साथ दो विषयों पर लिखना है, इसलिए वे अमीर खुसरो की उस अनमेली पद्धति का स्मरण करते हैं जिसमें उन्होंने एक ही पद्य में खीर, चरखा, कुत्ता और ढोल जैसे चार अलग-अलग विषयों को समाहित कर दिया था। लेखक भी इसी तरह अपने निबंध में दोनों विषयों को एक साथ जोड़ने का प्रयास करते हैं।

दूर के ढोल सुहावने और पीढ़ियों का अंतर

लेखक स्पष्ट करते हैं कि ढोल की कर्कश ध्वनि पास बैठे लोगों के कान के पर्दे फाड़ती है, परंतु दूर नदी तट पर संध्या समय बैठे व्यक्ति को वही ध्वनि मधुर लगती है। वह व्यक्ति

उस ध्वनि में नव-वधू के उल्लास, संकोच और विवाहोत्सव के आनंद की कल्पना कर लेता है। दूर रहने के कारण हमें यथार्थ की कठोरता का अनुभव नहीं होता।

यही नियम मानव जीवन पर भी लागू होता है। जीवन-संग्राम से दूर रहने वाले तरुणों को भविष्य का चित्र अत्यंत मनमोहक लगता है, जबकि वृद्धों को अपने अतीत की स्मृतियाँ सुखद लगती हैं। तरुण भविष्य को वर्तमान में लाना चाहते हैं और वृद्ध अतीत को खींचकर वर्तमान में देखना चाहते हैं। तरुण क्रांति के समर्थक होते हैं और वृद्ध अतीत के गौरव के संरक्षक। इन दोनों पीढ़ियों के टकराव के कारण वर्तमान सदैव क्षुब्ध रहता है।

समाज-सुधार की निरंतरता और निष्कर्ष

वर्तमान की इसी क्षुब्धता के कारण संसार में सदैव सुधारों की आवश्यकता बनी रहती है। इतिहास में बुद्धदेव, महावीर, शंकराचार्य, कबीर, नानक, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद और महात्मा गांधी जैसे अनगिनत सुधारक हुए हैं। जीवन में निरंतर नए-नए दोष उत्पन्न होते हैं और उनके निवारण के लिए नए सुधार किए जाते हैं। समय के साथ पुराने सुधार ही नए दोष बन जाते हैं और फिर उनका नव-सुधार करना पड़ता है। इसी ताने-बाने से जीवन प्रगतिशील बनता है।

आज का प्रगतिशील साहित्य भी कुछ समय बाद अतीत का स्मारक बन जाएगा। आज के तरुण कल वृद्ध होकर अतीत का स्वप्न देखेंगे और उनकी जगह नए तरुण आ जाएँगे। अंततः दोनों पीढ़ियों के स्वप्न सदैव सुखद बने रहेंगे, क्योंकि दूर के ढोल हमेशा सुहावने ही होते हैं।

4. कठिन शब्दार्थ

पृष्ठ 31

1. उमंग – मौज, आनंद की लहर, उत्साह
2. स्फूर्ति – फुरती, उत्तेजना, कंपन, उछलना, मन में प्रकट होना
3. आवेग – बिना सोच-विचारे कुछ कर बैठने की अंतःप्रेरणा, झोंक, अशांति, उतावली, एक संचारी भाव
4. मनोभावों – मन के भाव, विचार
5. यथार्थता/यथार्थ – सत्य, प्रकृत, उचित
6. उत्थित – उठा हुआ, उठता हुआ, बल-वैभव में बढ़ा हुआ, उत्पन्न, ऊँचा, फैलाया हुआ
7. रहस्य – गुप्तभेद, गोपनीय विषय, मर्म
8. विज्ञों/विज्ञ – जानकार, समझदार, विद्वान
9. सम्मति – सहमति, स्वीकृति, अनुमति, राय, मत, आदर, सम्मान

पृष्ठ 32

10. एकत्र – इकट्ठा, संचित
11. अनुसंधान – अन्वेषण, खोज, जाँच-पड़ताल, प्रयत्न, योजना, आयोजन
12. विश्वकोश – वह ग्रंथ जिसमें संसार के सारे विषयों का विवरण हो, वह भंडार जिसमें विश्व की सारी वस्तुएँ संगृहीत हों
13. रूपरेखा – ढांचा, खाका, प्रारंभिक विवरण
14. सारांश – निचोड़, संक्षेप, सार
15. प्रवाह – बहाव, गतिशीलता
16. संबद्ध – जुड़ा हुआ, आपस में मिला हुआ

पृष्ठ 33

17. गौरव – बड़प्पन, मान-सम्मान, महत्ता
18. अस्पष्टता – धुंधलापन, जो साफ न हो
19. दुर्बोधता/दुर्बोध – जो शीघ्र समझ में न आए, गूढ़
20. गांभीर्य – स्थिरता, जटिल, गंभीरता, गहराई, चित्त की
21. गुत्थी – उलझन, कठिनाई, तागे आदि में उलझने से पड़ी हुई गाँठ
22. अज्ञों/अज्ञ – ज्ञानरहित, नासमझ, अचेतन
23. समावेश – साथ रहना, शामिल होना, मिलना, एकत्र होना, प्रवेश
24. पद्धति – प्रथा, परिपाटी, मार्ग, पथ, रास्ता, प्रणाली
25. कसौटी – परख, जाँचने का पत्थर
26. खरे – शुद्ध, असली, बिना मिलावट का
27. लिपिबद्ध – लिखा हुआ, लिखित रूप में सुरक्षित
28. स्वच्छंद – स्वतंत्र, आज़ाद, अपनी इच्छा से चलने वाला
29. उदात्त – ऊँचा, महान, श्रेष्ठ, उदार, प्रसिद्ध, प्रिय, ऊँचे स्वर में उच्चरित
30. आख्यायिका – सिलसिलेवार कहानी या वृत्तांत, शिक्षा देने वाली कल्पित कथा
31. अनुभूति – महसूस करना, आंतरिक अनुभव
32. अभिव्यक्ति – व्यक्त, प्रकट होना, प्रकाशन
33. गरिमा – महिमा, गौरव, बड़प्पन
34. अनुसरण – पीछे चलना, अनुकरण, अभ्यास, अनुकूल आचरण
35. प्रतिभावान – बुद्धिमान, असाधारण योग्यता वाला
36. कर्कशता – कड़वाहट, कानों को चुभने वाली तीखी आवाज़
37. पाश्चात्य – पश्चिम का, बाद का, पच्छिमी, पिछला हिस्सा

पृष्ठ 34

38. संध्या – शाम का वह समय जब दिन के दो भागों का मेल होता है, साँझ, योग, मेल, ठहराव, सीमा
39. अंकित – लिखित, चिह्नित, चित्रित, गिना हुआ
40. कोलाहल – बहुत से लोगों के एक साथ बोलने से होने वाला शोर, हंगामा, हल्ला
41. विषाद – अवसाद, उदासी, तंद्रा
42. कलरव – मधुर ध्वनि, कोमल
43. कटु – कड़वा, तीखा
44. दूरस्थ – दूर स्थित, दूर रहने वाला
45. तरुण – युवा, जवान
46. मनमोहक – मन को सुंदर लगने वाला, आकर्षक

47. स्मृति – याद, याददाश्त
48. सुखद – सुख देने वाला, आनंदमयी
49. संरक्षक – रक्षा करने वाला, बचाव करने वाला
50. क्षुब्ध – व्याकुल, अशांत, उद्वेलित
51. गणना – गिनती, शुमार
52. प्रगतिशील – आगे बढ़ने वाला, विकासशील

पृष्ठ 35

53. निहित – छिपा हुआ, समाया हुआ
54. स्मारक – याद दिलाने वाली वस्तु, स्मृति-चिह्न

5. पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. "हैट टाँगने के लिए कोई भी खूँटी काम दे सकती है... असली वस्तु है हैट, खूँटी नहीं।" निबंध में 'हैट' और 'खूँटी' का उल्लेख किस भाव को सबसे अधिक उजागर करता है?
   (क) विषय से अधिक लेखक के भावों की प्रधानता को दर्शाना
   (ख) विचार से अधिक तथ्य आधारित सामग्री को प्रमुख बताना
   (ग) शैली से अधिक भाषा व्यवस्था की उपयोगिता बताना
   (घ) उदाहरण से अधिक सिद्धांत आधारित लेखन का समर्थन करना

   उत्तरः
   (क) विषय से अधिक लेखक के भावों की प्रधानता को दर्शाना
   यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि गार्डिनर का कथन यह स्पष्ट करता है कि निबंध लेखन में विषय (खूँटी) केवल एक माध्यम है, असली महत्त्व लेखक के मनोभावों (हैट) का होता है। जैसे हैट टाँगने के लिए कोई भी खूँटी काम दे सकती है, उसी प्रकार लेखक के हृदय के भावों को व्यक्त करने के लिए कोई भी विषय उपयुक्त हो सकता है। इस प्रकार यह उदाहरण लेखक के भावों की प्रधानता को उजागर करता है।

2. "उनमें लेखक की सच्ची अनुभूति रहती है... उसका उल्लास रहता है।" मानटेन की पद्धति लेखक के लिए किस निर्णय का आधार बनती है?
   (क) शैली और स्पष्ट-सहज भाषा को महत्व न देना
   (ख) परंपरागत निबंधकारों को अस्वीकार करना
   (ग) अध्ययन के बिना अपने विचार प्रस्तुत कर देना
   (घ) अनुभव आधारित स्वच्छंद लेखन को अपनाना

   उत्तरः
   (घ) अनुभव आधारित स्वच्छंद लेखन को अपनाना
   यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि मानटेन ने जो कुछ स्वयं देखा, सुना और अनुभव किया, उसी को अपने निबंधों में लिपिबद्ध कर दिया। उनके निबंधों में लेखक की सच्ची अनुभूति और उल्लास था। इस पद्धति को देखकर निबंध के लेखक ने निर्णय लिया कि वह भी इसी पद्धति का अनुसरण करेंगे — अर्थात अपने स्वयं के अनुभव और विचारों को स्वच्छंद रूप से लिखेंगे।

3. "तरुणों के लिए भविष्य उज्ज्वल... वृद्धों के लिए अतीत सुखद..."
   यह तुलना किस पर आधारित है?
   (क) तर्क और भावना
   (ख) ज्ञान और शिक्षा
   (ग) परिश्रम और उपलब्धि
   (घ) अभिलाषा और अनुभव

   उत्तरः
   (घ) अभिलाषा और अनुभव
   यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि तरुणों के लिए भविष्य उज्ज्वल इसलिए लगता है क्योंकि उनके मन में अभिलाषाएँ होती हैं — वे क्रांति के समर्थक होते हैं और संसार को बेहतर बनाना चाहते हैं। वृद्धों के लिए अतीत सुखद इसलिए लगता है क्योंकि उन्हें अपने जीवन का अनुभव होता है — वे उस समय को जी चुके हैं और उसे आदर्श मानते हैं। इस प्रकार यह तुलना अभिलाषा (तरुण) और अनुभव (वृद्ध) पर आधारित है।

4. निबंध में अमीर खुसरो की कहानी का उल्लेख किस संदर्भ में किया गया है?
   (क) कविता लेखन की कला को समझाने के लिए
   (ख) एक साथ कई विषयों को संबोधित करने की प्रतिभा दिखाने के लिए
   (ग) ढोल के महत्व को दर्शाने के लिए
   (घ) सामाजिक सुधार के उदाहरण के रूप में

   उत्तरः
   (ख) एक साथ कई विषयों को संबोधित करने की प्रतिभा दिखाने के लिए
   यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि लेखक के सामने दो अलग-अलग विषयों पर निबंध लिखने की समस्या थी। इसी संदर्भ में उन्हें अमीर खुसरो की कहानी याद आई जिसमें खुसरो ने एक ही पद्य में खीर, चरखा, कुत्ते और ढोल — चारों विषयों को एक साथ समेट दिया। यह उदाहरण यह दर्शाने के लिए दिया गया है कि एक साथ कई विषयों को एक रचना में समेटा जा सकता है।

5. निबंध में समाज-सुधार के संदर्भ में क्या कहा गया है?
   (क) सुधारों की आवश्यकता हर युग में बनी रहती है।
   (ख) सुधार केवल बड़े विचारकों द्वारा संभव हैं।
   (ग) सुधार केवल आधुनिक युग की देन हैं।
   (घ) सुधारों का कोई अंत नहीं, लेकिन दोष समाप्त हो जाते हैं।

उत्तरः
(क) सुधारों की आवश्यकता हर युग में बनी रहती है।
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि निबंध में स्पष्ट कहा गया है कि मनुष्य जाति के इतिहास में कोई ऐसा काल नहीं हुआ जब सुधारों की आवश्यकता न हुई हो। बुद्धदेव से लेकर महात्मा गांधी तक हर युग में सुधारक हुए हैं। साथ ही यह भी कहा गया है कि न दोषों का अंत है और न सुधारों का — जो एक युग में सुधार था, वह अगले युग में दोष बन जाता है। इस प्रकार सुधारों की निरंतरता हर युग में बनी रहती है।

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. निबंध लेखन के विषय में ए.जी. गार्डिनर और लेखक के विचारों में क्या अंतर है?

उत्तरः
ए.जी. गार्डिनर और लेखक के विचारों में निम्नलिखित अंतर है:
ए.जी. गार्डिनर के विचारः गार्डिनर का मानना है कि लिखने की एक विशेष मानसिक स्थिति होती है। उस अवस्था में मन में उमंग उठती है, हृदय में स्फूर्ति आती है और मस्तिष्क में आवेग उत्पन्न होता है। उस समय विषय की चिंता नहीं रहती — किसी भी विषय पर लिखा जा सकता है। असली महत्त्व मनोभावों का होता है, विषय तो केवल माध्यम है। वे यह भी स्वीकार करते हैं कि उन्हें शीर्षक देने में सबसे अधिक कठिनाई होती है और वह काम वे मित्र पर छोड़ देते हैं।
लेखक के विचारः लेखक गार्डिनर के कथन की यथार्थता से असहमत नहीं हैं, किंतु वे स्वीकार करते हैं कि उन्होंने स्वयं उस मानसिक स्थिति का अनुभव नहीं किया है जिसमें भाव स्वतः उठते हों। उन्हें सोचना पड़ता है, परिश्रम करना पड़ता है। लेखक को न केवल विषय की चिंता करनी पड़ती है, बल्कि सामग्री एकत्र करनी पड़ती है, रूपरेखा बनानी पड़ती है और शैली निर्धारित करनी पड़ती है।
संक्षेप में — गार्डिनर के लिए लेखन एक स्वतः स्फूर्त, भावनापूर्ण क्रिया है, जबकि लेखक के लिए यह परिश्रम और सुनियोजित प्रयास का कार्य है।

2. लेखक के अनुसार वृद्ध और तरुण दोनों ही वर्तमान से असंतुष्ट रहते हैं, पर दोनों की असंतुष्टि के कारण भिन्न हैं। आपके विचार से उनकी असंतुष्टि के क्या-क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तरः
तरुणों और वृद्धों की वर्तमान से असंतुष्टि के कारण भिन्न हैं:
तरुणों की असंतुष्टि के कारणः
1. तरुण भविष्य के स्वप्न देखते हैं। उन्हें लगता है कि वर्तमान में जो है, वह पर्याप्त नहीं है — बेहतर हो सकता है।
2. वे क्रांति के समर्थक होते हैं। वर्तमान की स्थापित व्यवस्था, परंपराएँ और रुढ़ियाँ उन्हें पुरानी और अनुचित लगती हैं।
3. उन्हें संसार के जीवन-संग्राम का पूरा अनुभव नहीं होता इसलिए वे जल्दी निर्णय लेना चाहते हैं और जब वास्तविकता अपेक्षाओं से कम निकलती है, तो असंतोष होता है।
4. वे बदलाव चाहते हैं और वर्तमान की धीमी गति उन्हें निराश करती है।

वृद्धों की असंतुष्टि के कारणः
1. वृद्ध अतीत के गौरव का स्वप्न देखते हैं। उन्हें लगता है कि पहले का समय बेहतर था।
2. वे अतीत-गौरव के संरक्षक होते हैं। नई पीढ़ी की जल्दबाज़ी और परंपराओं से दूरी उन्हें पीड़ित करती है।
3. जीवन के अनुभव से उन्होंने जो सीखा, वह वर्तमान समाज में उपेक्षित लगता है।
4. शारीरिक और मानसिक शक्ति घटने से वे वर्तमान की तेज़ गति के साथ नहीं चल पाते, जिससे असंतोष होता है।

3. नमिता और अमिता किन विषयों पर निबंध लिखवाना चाहती हैं? उनके द्वारा सुझाए गए विषयों पर निबंध लिखने में लेखक को क्या-क्या कठिनाइयाँ आईं?

उत्तरः
नमिता चाहती है कि लेखक 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' विषय पर निबंध लिखे और अमिता चाहती है कि लेखक 'समाज-सुधार' पर निबंध लिखे।
लेखक को आई कठिनाइयाँ:
1. **विषय-विस्तार की समस्या**: 'दूर के ढोल सुहावने' एक लोकोक्ति है। लेखक को संदेह था कि क्या इस पर पाँच पृष्ठ लिखे जा सकते हैं। इसी प्रकार समाज-सुधार इतना विशाल और विवादास्पद विषय है कि उसे पाँच पृष्ठों में कैसे समेटा जाए।
2. **रूपरेखा बनाने की कठिनाई**: विज्ञों का कथन था कि निबंध लिखने से पहले रूपरेखा बनाएं। परंतु लेखक को लगा कि निबंध लिखने से पहले उसका सार दस-पाँच शब्दों में लिखना असंभव है।
3. **सामग्री की कमी**: लेखक के पास न पुस्तकालय था, न विश्वकोश, न कोई संदर्भ ग्रंथ। उन्हें केवल अपने ज्ञान पर निर्भर रहना था।
4. **शैली निर्धारण की उलझन**: छोटे-छोटे स्पष्ट वाक्य लिखने की सलाह थी, परंतु लेखक मास्टर होने के कारण विद्वत्ता दिखाने के लिए लंबे और जटिल वाक्य लिखने की प्रवृत्ति रखते थे। दोनों के बीच सामंजस्य बिठाना कठिन था।
5. **दो विषयों को एक साथ लिखने की चुनौती**: एक के बजाय दो अलग-अलग विषयों पर निबंध लिखना दोहरी कठिनाई थी।

4. निबंधशास्त्र के आचार्यों ने आदर्श निबंध लिखने की कौन-सी युक्तियाँ सुझाई हैं? आप किसी भी विषय पर निबंध लिखने से पहले किस तरह की तैयारी करते हैं?

उत्तरः
निबंधशास्त्र के आचार्यों ने आदर्श निबंध लिखने के लिए निम्नलिखित युक्तियाँ सुझाई हैं:

1. **निबंध छोटा होना चाहिए**: छोटा निबंध बड़े की अपेक्षा अधिक अच्छा होता है क्योंकि बड़े निबंध में रचना की सुंदरता नहीं बनी रह सकती।
2. **निबंध के दो प्रधान अंग हैं—सामग्री और शैली**: पहले सामग्री एकत्र करनी चाहिए, विचार-समूह संचित करना चाहिए और मनन करना चाहिए।
3. **रूपरेखा बनाना**: निबंध लिखने से पहले उसकी रुपरेखा तैयार कर लेनी चाहिए।
4. **भाषा में प्रवाह**: वाक्य छोटे-छोटे होने चाहिए, पर एक-दूसरे से संबद्ध।
5. **अलंकारों, मुहावरों और लोकोक्तियों का समावेश**: इनसे निबंध प्रभावशाली और सजीव बनता है।

मेरी तैयारीः
मैं किसी भी विषय पर निबंध लिखने से पहले निम्नलिखित तैयारी करता/करती हूँ:

1. पहले विषय को अच्छी तरह समझता/समझती हूँ।
2. उससे संबंधित जो जानकारी मुझे पहले से है, उसे मन में क्रमबद्ध करता/करती हूँ।
3. एक रुपरेखा बनाता/बनाती हूँ — भूमिका, मुख्य बातें, और निष्कर्ष।
4. उचित उदाहरण और तथ्य एकत्र करता/करती हूँ।
5. सरल और स्पष्ट भाषा में लिखने का प्रयास करता/करती हूँ।

5. मानटेन ने "जो कुछ देखा, सुना और अनुभव किया, उसी को अपने निबंधों में लिपिबद्ध कर दिया।" निबंध लेखन के लिए देखने, सुनने और अनुभव करने की क्या उपयोगिता हो सकती है?

उत्तरः
मानटेन की पद्धति — जो देखा, सुना और अनुभव किया, उसे लिखना — निबंध लेखन के लिए अत्यंत उपयोगी है:

1. **सच्चाई और प्रामाणिकता**: जो हम स्वयं देखते, सुनते और अनुभव करते हैं, वह हमारे लेखन में स्वतः एक प्रामाणिकता और सत्यता ला देता है। ऐसा लेखन पाठकों को तुरंत प्रभावित करता है क्योंकि उसमें जीवन की वास्तविकता होती है।
2. **व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति**: अनुभव आधारित लेखन में लेखक का अपना व्यक्तित्व, उसकी दृष्टि और उसके भाव झलकते हैं। यह निबंध को विशिष्ट और मौलिक बनाता है।
3. **सहज प्रवाह**: जब हम अपने अनुभवों से लिखते हैं, तो भाषा में स्वतः प्रवाह आता है। कृत्रिमता नहीं रहती।
4. **पाठकों से संबंध**: पाठक भी अपने अनुभवों से जुड़कर लेखक के निबंध से तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं।
5. **रचनात्मकता**: देखने, सुनने और अनुभव करने से नए-नए विचार और दृष्टिकोण सामने आते हैं, जो निबंध को समृद्ध बनाते हैं।
6. **स्वच्छंदता**: इस पद्धति में लेखक किसी नियम या शास्त्र का बंधन महसूस नहीं करता। वह स्वतंत्र रूप से अपने विचार व्यक्त करता है।

विधा से संवाद

निबंध लिखने की कला

1. 'निबंध' का शाब्दिक अर्थ है— 'बँधना' (नि+बंध), अर्थात भली-भाँति बँधा या गठा हुआ। यह गद्य की वह विधा है जिसमें रचनाकार किसी विषय पर अपने अनुभव, विचार, दृष्टिकोण और भावनाओं को तार्किक, भावनात्मक, क्रमबद्ध और साहित्यिक रूप से प्रस्तुत करते हैं।

   शैली का अर्थ अभिव्यक्ति का ढंग होता है। निबंधकार विभिन्न प्रकार से विषय को प्रस्तुत करता है। इस पाठ में निबंध लेखन की प्रक्रियाओं के विषय में चर्चा की गई है। दिए गए आरेख को देखिए और इसके आधार पर एक निबंध लिखिए। अगर आपको निबंध लेखन का कोई और ढंग बेहतर लगता है तो उसे ऐसे ही आरेख से दर्शाइए और बताइए कि आपको वह ढंग क्यों बेहतर लगता है?



उत्तरः
आरेख के अनुसार निबंध लेखन की प्रक्रियाः
प्रेरणा → विषय चयन → सामग्री संग्रह → रूपरेखा निर्माण → शैली निर्धारण → लेखन और समापन
विषयः दूर के ढोल सुहावने होते हैं
भूमिकाः 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' — यह लोकोक्ति मानव स्वभाव के एक सार्वभौमिक सत्य को व्यक्त करती है। इसका अर्थ है कि दूर की वस्तु, व्यक्ति या स्थिति हमें अधिक आकर्षक और मनोहर लगती है, जबकि पास आने पर उसकी वास्तविकता का पता चलता है।

मुख्य विचार: ढोल के पास बैठे लोगों के कान के पर्दे फटते रहते हैं, पर दूर नदी के किनारे बैठे व्यक्ति के लिए वही ध्वनि मधुर संगीत बन जाती है। यही सिद्धांत जीवन के हर क्षेत्र में लागू होता है। तरुण के लिए भविष्य उज्ज्वल दिखता है और वृद्ध के लिए अतीत सुखद लगता है — दोनों वर्तमान से असंतुष्ट हैं।

यात्रा के समय दूर का पहाड़ बेहद सुंदर और हरा-भरा लगता है, पर जब वहाँ पहुँचते हैं तो वास्तविकता भिन्न होती है। इसी प्रकार किसी दूसरे देश, नगर या समाज को देखकर हम प्रभावित होते हैं, पर उसकी समस्याओं का हमें ज्ञान नहीं होता।

निष्कर्ष: यह लोकोक्ति यह सीख देती है कि दूर से किसी भी वस्तु, व्यक्ति या स्थिति के बारे में निर्णय लेने से पहले उसे पास से समझने का प्रयास करना चाहिए। दूरी भ्रम पैदा करती है और निकटता यथार्थ।

भाव-विस्तार

"तरुण क्रांति के समर्थक होते हैं और वृद्ध अतीत गौरव के संरक्षक"

यदि उपर्युक्त वाक्य का भाव-विस्तार किया जाए तो कहा जा सकता है कि— युवा पीढ़ी में किसी समस्या को लेकर आक्रोश की भावना प्रबल होती है। वह किसी भी समस्या के समाधान के लिए बैठकर बातचीत करने के बजाय उस पर त्वरित निर्णय लेना चाहती हैं जबकि वृद्ध पीढ़ी किसी समस्या के समाधान के लिए अनुभव और परंपरागत ढंग पर विश्वास करती है।

पाठ में से चुनकर कुछ ऐसे और वाक्य नीचे दिए गए हैं। इन वाक्यों का अपने शब्दों में भाव-विस्तार कीजिए—

1. "जो तरुण संसार के जीवन-संग्राम से दूर हैं, उन्हें संसार का चित्र बड़ा ही मनमोहक प्रतीत होता है।"

उत्तरः
यह वाक्य इस सत्य को व्यक्त करता है कि जिन तरुणों ने अभी जीवन की वास्तविक कठिनाइयों का सामना नहीं किया है, उनके लिए संसार एक सुंदर और आकर्षक स्थान दिखाई देता है।

जिस प्रकार दूर से पहाड़ हरे-भरे और सुंदर लगते हैं, उसी प्रकार जो युवा अभी घर की सुरक्षा में रहते हैं, पढ़ाई में लगे हैं और जीवन-संघर्ष से परिचित नहीं हुए हैं, उनके लिए बाहरी दुनिया बड़ी रोमांचक और सुंदर दिखती है। वे नहीं जानते कि इस सुंदरता के पीछे कितनी कठिनाइयाँ और संघर्ष छिपे हैं। जब वे व्यावहारिक जीवन में उतरते हैं, तब उन्हें पता चलता है कि संसार उतना सरल नहीं जितना दूर से दिखता था।

2. "मनुष्य जाति के इतिहास में कोई ऐसा काल ही नहीं हुआ, जब सुधारों की आवश्यकता न हुई हो।"

उत्तरः
यह वाक्य इस सत्य को प्रतिपादित करता है कि समाज और सुधार एक-दूसरे के अभिन्न अंग हैं। मानव सभ्यता का इतिहास बताता है कि हर युग में सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक या नैतिक दोष मौजूद रहे हैं और हर युग ने उन्हें दूर करने के लिए सुधारक पैदा किए।

प्राचीन काल में बुद्धदेव ने जातिवाद और कर्मकांड के विरुद्ध सुधार किए, मध्यकाल में कबीर और नानक ने अंधविश्वास और धार्मिक आडंबर का विरोध किया, आधुनिक काल में राजा राममोहन राय ने सती-प्रथा के विरुद्ध आवाज़ उठाई और महात्मा गांधी ने छुआछूत और विदेशी दासता के विरुद्ध संघर्ष किया। यह प्रक्रिया अनंत है — जैसे ही एक दोष दूर होता है, नई परिस्थितियों में नए दोष पैदा होते हैं और नए सुधारों की आवश्यकता उत्पन्न होती है।

3. "आज जो तरुण हैं, वही वृद्ध होकर अतीत के गौरव का स्वप्न देखेंगे।"

उत्तरः
यह वाक्य समय के एक अपरिहार्य सत्य को प्रकट करता है — कि प्रत्येक पीढ़ी का भविष्य एक दिन अतीत बन जाता है।

आज जो युवा पीढ़ी नई तकनीक, प्रगतिशील विचारों और क्रांतिकारी परिवर्तनों की पक्षधर है, वह पीढ़ी जब वृद्ध होगी तो यही परिवर्तन उसके 'स्वर्णिम अतीत' बन जाएंगे। जिस प्रकार आज की वृद्ध पीढ़ी महात्मा गांधी के युग को, आज़ादी के आंदोलन को और संस्कृत-शिक्षा के ज़माने को याद करके गौरवान्वित होती है, उसी प्रकार आज के तरुण कल वृद्ध होकर आज के 'डिजिटल युग' को और आज की प्रगति को अपना स्वर्णिम अतीत मानेंगे। यह चक्र निरंतर चलता रहता है — हर पीढ़ी अपने अनुभव के गौरव से अपने बीते हुए काल को सुखद मानती है।

4. "निबंध छोटा होना चाहिए। छोटा निबंध बड़े की अपेक्षा अधिक अच्छा होता है।"

उत्तरः
यह कथन निबंध की रचना-कला का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत प्रतिपादित करता है।

छोटे निबंध में लेखक केवल आवश्यक और प्रासंगिक बातें ही कहता है, जिससे पाठक का ध्यान बिखरता नहीं और विषय का प्रभाव गहरा होता है। जैसे एक छोटी-सी कविता पाठक के हृदय में गहरी छाप छोड़ती है, उसी प्रकार एक संक्षिप्त किंतु सशक्त निबंध भी लंबे और विस्तृत निबंध से अधिक प्रभावशाली होता है।

बड़े निबंध में प्रायः लेखक अनावश्यक विस्तार, पुनरावृत्ति और अप्रासंगिक सामग्री जोड़ देता है, जिससे रचना की सुंदरता और प्रवाह नष्ट हो जाता है। इसके विपरीत, छोटे निबंध में विचारों की एकाग्रता, भाषा की सुसंगति और शैली की सुंदरता बनी रहती है। अतः निबंध लेखन में संक्षिप्तता एक गुण है, न कि सीमा।

मेरा अनुभव

1. इस निबंध में लेखक को दो विषयों ('दूर के ढोल सुहावने होते हैं' और 'समाज-सुधार') पर निबंध लिखने थे। पिछली कक्षाओं में आपने भी बहुत से विषयों पर अनुच्छेद, संवाद और निबंध लिखे हैं। आपको किन विषयों पर लिखना सरल या कठिन लगा और क्यों?

   उत्तरः
   पिछली कक्षाओं में मुझे विभिन्न विषयों पर अनुच्छेद, संवाद और निबंध लिखने का अवसर मिला।
   सरल लगे विषय: जिन विषयों पर मेरा अनुभव था, उन पर लिखना सरल लगा — जैसे 'मेरा प्रिय त्योहार', 'मेरे परिवार की दीपावली', 'मेरा विद्यालय'। इन विषयों पर स्वयं के जीवन से उदाहरण मिल जाते थे और भाषा स्वाभाविक रुप से बह निकलती थी।
   कठिन लगे विषय: 'विज्ञान और मानव जीवन', 'पर्यावरण प्रदूषण के कारण और निवारण' जैसे विषय कठिन लगे। इनके लिए तथ्यात्मक जानकारी की आवश्यकता थी और केवल अनुभव से काम नहीं चला। साथ ही, विचारों को क्रमबद्ध करना और विशेषज्ञ जानकारी के बिना गहराई से लिखना कठिन था।
   निष्कर्ष: मुझे लगा कि जिस विषय से हमारा व्यक्तिगत संबंध हो और जिसे हमने जिया हो, उस पर लिखना स्वाभाविक और आनंददायक होता है। अपरिचित विषयों के लिए पूर्व अध्ययन और तैयारी आवश्यक है।

विषयों से संवाद

1. निबंध में बुद्धदेव, महावीर स्वामी, नागार्जुन, शंकराचार्य, कबीर, नानक आदि कई महान व्यक्तियों के नाम आए हैं। इनके विषय में जानकारी एकत्रित करके संक्षेप में बताइए कि इन्होंने अपने समय में समाज के लिए क्या-क्या कार्य किए।

   उत्तरः
   1. **बुद्धदेव (गौतम बुद्ध, लगभग 563-483 ई.पू.)**: उन्होंने जाति-भेद, ब्राह्मण आधिपत्य और पशु-बलि के विरुद्ध आवाज़ उठाई। अहिंसा, करुणा और सम्यक जीवन का मार्ग दिखाया। दुखों के कारण और निवारण की शिक्षा दी।
   2. **महावीर स्वामी (लगभग 599-527 ई.पू.)**: जैन धर्म के प्रवर्तक। उन्होंने अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह और तपस्या पर बल दिया। जाति-व्यवस्था का विरोध किया और सभी जीवों के प्रति समान दृष्टि रखने की शिक्षा दी।
   3. **नागार्जुन (द्वितीय शताब्दी ई.)**: महायान बौद्ध दर्शन के प्रमुख आचार्य। उन्होंने 'शून्यवाद' का दर्शन प्रतिपादित किया और बौद्ध धर्म को नई दार्शनिक दृष्टि दी।
   4. **शंकराचार्य (788-820 ई.)**: हिंदू दर्शन के महान आचार्य। उन्होंने अद्वैत वेदांत का प्रतिपादन किया, चार पीठों की स्थापना की और हिंदू धर्म को एकजुट करने का प्रयास किया।
   5. **कबीर (1440-1518 ई.)**: संत कवि। उन्होंने हिंदू-मुस्लिम एकता पर बल दिया, जाति-प्रथा और कर्मकांड का विरोध किया। भक्ति और प्रेम को धर्म का सार बताया।
   6. **नानक (1469-1539 ई.)**: सिख धर्म के प्रवर्तक। उन्होंने 'एक ओंकार' का संदेश दिया। जाति-भेद, मूर्ति-पूजा और कर्मकांड का विरोध किया। मानव-सेवा को ईश्वर-सेवा बताया।
   7. **राजा राममोहन राय (1772-1833 ई.)**: भारतीय नवजागरण के अग्रदूत। उन्होंने सती-प्रथा का विरोध किया और उसे बंद कराया। स्त्री-शिक्षा का समर्थन किया और ब्रह्म समाज की स्थापना की।
   8. **स्वामी दयानंद (1824-1883 ई.)**: आर्य समाज के संस्थापक। उन्होंने वेदों को प्रमाण मानकर मूर्ति-पूजा, जाति-प्रथा और बाल-विवाह का विरोध किया। स्त्री-शिक्षा और विधवा-विवाह का समर्थन किया।
   9. **महात्मा गांधी (1869-1948 ई.)**: राष्ट्रपिता। उन्होंने अहिंसा और सत्याग्रह से स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व किया। छुआछूत के विरुद्ध संघर्ष किया, हरिजनों के उत्थान का कार्य किया और चरखे को आत्मनिर्भरता का प्रतीक बनाया।

2. निबंध में उल्लिखित महान व्यक्तियों ने अपने द्वारा किए गए कार्यों से समाज को एक नई दिशा दिखाई। हमारे आस-पास और भी ऐसे व्यक्ति और संस्थाएँ हैं जो स्त्री-शिक्षा, पर्यावरण, असमानता, विशेष आवश्यकता समूह (दिव्यांगजन) आदि के लिए कार्य करते हैं। ऐसे व्यक्तियों, संस्थाओं के विषय में पता लगाइए और लिखिए।

   उत्तरः
   आज भी अनेक व्यक्ति और संस्थाएँ समाज के विभिन्न क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही हैं:
   स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र में:
   1. सावित्रीबाई फुले की विरासत को आगे बढ़ाने वाली संस्थाएँ — आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में महिला-शिक्षा के लिए अनेक NGO कार्य करती हैं।
   2. 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान — भारत सरकार का यह कार्यक्रम बालिका-शिक्षा को बढ़ावा देता है।

   पर्यावरण के क्षेत्र में:
   1. चिपको आंदोलन — सुंदरलाल बहुगुणा और गौरा देवी के नेतृत्व में वनों की रक्षा का ऐतिहासिक आंदोलन।
   2. ग्रीनपीस इंडिया — पर्यावरण संरक्षण के लिए कार्यरत अंतरराष्ट्रीय संस्था।

   असमानता के विरुद्धः
   1. बंधुआ मुक्ति मोर्चा — स्वामी अग्निवेश द्वारा स्थापित, बंधुआ मजदूरी के विरुद्ध कार्यरत।
   2. दलित अधिकार संगठन — जाति-आधारित भेदभाव के विरुद्ध कार्य करते हैं।

दिव्यांगजन के लिए:
1. राष्ट्रीय दिव्यांगजन वित्त एवं विकास निगम — दिव्यांगों के आर्थिक उत्थान के लिए।
2. अली यावर जंग राष्ट्रीय वाक् एवं श्रवण दिव्यांगजन संस्थान — श्रवण और वाक् दिव्यांगों के लिए।
3. स्थानीय स्तर पर — हमारे शहर में भी अनेक स्कूल और NGO दिव्यांग बच्चों की शिक्षा के लिए कार्य करते हैं।

3. आपको 'समाज-सुधार' करने का अवसर मिले तो आप क्या-क्या सुधार करना चाहेंगे और कैसे करना चाहेंगे? लिखिए।

उत्तरः

यदि मुझे समाज-सुधार का अवसर मिले, तो मैं निम्नलिखित क्षेत्रों में सुधार करना चाहूँगा/चाहूँगी:
1. **शिक्षा में समानता**: भारत में आज भी लाखों बच्चे, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों की लड़कियाँ, शिक्षा से वंचित हैं। मैं ऐसी व्यवस्था करना चाहूँगा/चाहूँगी कि प्रत्येक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले। इसके लिए समुदाय-आधारित पुस्तकालय और शिक्षण केंद्र खोले जा सकते हैं।
2. **जाति और लिंग-भेद का उन्मूलन**: समाज में अभी भी जाति और लिंग के आधार पर भेदभाव होता है। इसके लिए सामाजिक जागरूकता अभियान चलाना और कानूनों को कड़ाई से लागू करवाना आवश्यक है।
3. **पर्यावरण संरक्षण**: प्लास्टिक उपयोग को कम करना, वृक्षारोपण और जल-संरक्षण के लिए लोगों को जागरूक करना चाहूँगा/चाहूँगी। विद्यालयों में पर्यावरण-शिक्षा को अनिवार्य बनाना एक प्रभावी कदम होगा।
4. **दिव्यांगजन की सुविधाएँ**: सार्वजनिक स्थानों, परिवहन और कार्यस्थलों पर दिव्यांगों के अनुकूल व्यवस्थाएँ सुनिश्चित करना।
5. **डिजिटल साक्षरता**: ग्रामीण और वंचित समुदायों तक डिजिटल तकनीक और इंटरनेट की पहुँच सुनिश्चित करना, ताकि कोई भी डिजिटल युग से पिछड़ न जाए।

कैसे करूँगा/करूँगी: स्थानीय स्तर से शुरुआत करूँगा/करूँगी — अपने मोहल्ले, विद्यालय और परिवार से। जागरूकता अभियान, स्वयंसेवी कार्य और प्रशासन के साथ मिलकर इन लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

4. भारतीय ज्ञान साहित्य में अनेक स्थानों पर नैतिक, आध्यात्मिक और व्यावहारिक जीवन में संतुलन की बात की गई है। इस विषय पर अपने शिक्षक के साथ मिलकर चर्चा कीजिए।

उत्तरः

(यह प्रश्न कक्षा में शिक्षक के साथ चर्चा का है। नीचे चर्चा के लिए संभावित बिंदु दिए गए हैं:)

भारतीय ज्ञान परंपरा में संतुलन की अवधारणा अत्यंत महत्त्वपूर्ण है:
1. **गीता का संदेश**: श्रीमद्भगवद्गीता में कर्म, ज्ञान और भक्ति — तीनों मार्गों के बीच संतुलन की बात कही गई है। "योगः कर्मसु कौशलम्" — कुशलतापूर्वक कर्म करना ही योग है।
2. **चार पुरुषार्थ**: धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष — ये चारों जीवन के उद्देश्य हैं और इनमें संतुलन ही आदर्श जीवन है।
3. **बुद्ध का मध्यम मार्ग**: न अत्यधिक भोग, न कठोर तपस्या — मध्यम मार्ग ही संतुलित जीवन का आधार है।
4. **आयुर्वेद में संतुलन**: शरीर के त्रिदोष — वात, पित्त और कफ — का संतुलन ही स्वास्थ्य है।

शिक्षक से इस विषय पर और गहन चर्चा करें कि आज के व्यावहारिक जीवन में इन सिद्धांतों को कैसे अपनाया जा सकता है।

सृजन

1. 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' एक लोकोक्ति है। लोक में प्रचलित लोकप्रिय वाक्य या वाक्यांश को लोकोक्ति कहते हैं, जो किसी विशेष अर्थ या सीख को व्यक्त करता है। लोकोक्ति भाषा को समृद्ध करती है तथा विचारों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने में सहायता करती है। यह लोगों के अनुभव, विश्वास और मूल्यों को दर्शाती है।

आपने यह लोकोक्ति भी सुनी होगी— 'आम के आम गुठलियों के दाम'। अब आप इस लोकोक्ति और 'जैविक खाद की निर्मिति में हमारा प्रयास' विषय को मिलाकर एक संक्षिप्त लेख तैयार कीजिए।

उत्तरः

जैविक खाद की निर्मिति में हमारा प्रयास — 'आम के आम गुठलियों के दाम'

'आम के आम गुठलियों के दाम' — यह लोकोक्ति उस कार्य-कुशलता को दर्शाती है जिसमें एक ही प्रयास से दोहरा लाभ प्राप्त होता है। जैविक खाद की निर्मिति इसी सिद्धांत का सुंदर उदाहरण है।

हमारे घरों में प्रतिदिन सब्जियों के छिलके, फलों के अवशेष, चाय-पत्ती और रसोई का अन्य कचरा निकलता है। यदि इसे साधारण कूड़े के साथ फेंक दिया जाए, तो यह पर्यावरण को प्रदूषित करता है। परंतु यदि इसे एक गड्ढे में एकत्र कर कुछ महीनों में जैविक खाद (कम्पोस्ट) बना ली जाए, तो एक पंथ दो काज — घर का कचरा भी नष्ट हुआ और पौधों के लिए उत्तम खाद भी मिल गई।

इस प्रकार जैविक खाद बनाने से हमें आम का आनंद भी मिला (स्वस्थ सब्जियाँ) और गुठलियों के दाम भी (कचरे से खाद)। यह प्रकृति और मनुष्य दोनों के लिए लाभकारी है। हम सभी को अपने घरों में एक छोटा-सा 'कम्पोस्ट बिन' रखना चाहिए और इस पर्यावरण-हितैषी पहल का हिस्सा बनना चाहिए।

2. "जब ढोल के पास बैठे हुए लोगों के कान के पर्दे फटते रहते हैं, तब दूर किसी नदी के तट पर संध्या समय, किसी दूसरे के कान में वही शब्द मधुरता का संचार कर देते हैं।"

आपने पढ़ा कि ढोल के पास बैठे व्यक्ति की अपेक्षा दूर बैठे व्यक्ति के लिए ढोल की आवाज़ का अनुभव भिन्न है। अपने अनुभव के आधार पर किसी ऐसी घटना का उल्लेख अपनी डायरी में कीजिए, जब किसी वस्तु, व्यक्ति या संस्था के विषय में दूर से आपका अनुमान कुछ और रहा हो, पर निकट से आपका अनुभव बिल्कुल अलग रहा हो।

उत्तरः
डायरी
दिनांक: ....
आज मुझे वह पुरानी घटना याद आई जब मैं पहली बार किसी बड़े ऐतिहासिक किले को देखने गया/गई था/थी।

दूर से देखने पर वह किला बेहद राजसी और भव्य लग रहा था — ऊँची-ऊँची दीवारें, मज़बूत बुर्ज और चमकते पत्थर। मेरे मन में कल्पनाओं का महल बन गया था — कि अंदर कितना शानदार होगा! मुझे लगा कि राजाओं का जीवन कितना सुंदर और सुखी रहा होगा।

परंतु जब हम किले के अंदर गए, तो दृश्य कुछ और था। अनेक कमरे खंडहर हो चुके थे। संकरी सीढ़ियाँ थीं, नमी से दीवारें काली पड़ गई थीं। गाइड ने बताया कि यहाँ युद्धों में बंदियों को रखा जाता था, राज-दरबार में षड्यंत्र होते थे और राजाओं का जीवन जितना वैभवशाली था, उतना ही संघर्षपूर्ण भी था।

दूर से जो किला स्वर्ग जैसा लग रहा था, पास से उसकी अपनी कहानी बिल्कुल अलग थी। तभी मुझे 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' का अर्थ सच्चाई से समझ में आया।

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

समास

"मुझे उन दोनों को <u>निबंध-रचना</u> का रहस्य समझाना पड़ेगा"

उपर्युक्त पंक्ति में रेखांकित शब्द को ध्यानपूर्वक पढ़िए। यह दो पदों 'निबंध' और 'रचना' के मेल से बना है जिसका अर्थ है— निबंध की रचना।

समास

समास का अर्थ है संक्षेप। समास में दो या अनेक शब्दों के मेल से एक नए शब्द की रचना होती है, जैसे— गंगा+जल = गंगाजल, देश+भक्ति = देशभक्ति। इस प्रकार समास वह शब्द रचना है, जिसमें दो (या दो से अधिक), अर्थ की दृष्टि से परस्पर स्वतंत्र संबंध रखने वाले, स्वतंत्र शब्द रचना के अंग होते हैं।

समास रचना में प्रायः दो पद (शब्द) होते हैं। पहले पद को पूर्वपद और दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं। जैसे— गंगाजल में 'गंगा' पूर्वपद और 'जल' उत्तरपद है। इसी तरह देशभक्ति शब्द में 'देश' को पूर्वपद और 'भक्ति' को उत्तरपद कहेंगे। समास रचना से बने शब्द को 'समस्त पद' कहते हैं; जैसे— गंगाजल, देशभक्ति।

यदि समास रचना से बने शब्द (समस्त पद) के अंग अलग-अलग कर दें, तो उस प्रक्रिया को समास विग्रह कहते हैं। जैसे यदि 'गंगाजल' समस्त पद के अंग अलग-अलग (समास विग्रह) करें, तो दो पद मिलेंगे— गंगा और जल। समास विग्रह इस प्रकार लिखते हैं— गंगाजल = गंगा+जल (गंगा का जल)।

समास के छह प्रमुख भेद हैं—

क्र.	समास	परिभाषा और उदाहरण
1	तत्पुरुष समास	इस समास में उत्तरपद प्रधान होता है और पूर्वपद गौण होता है। तत्पुरुष समास की रचना में समस्त पदों के बीच में आने वाले परसर्गों (का, से, पर आदि) का लोप हो जाता है। जैसे— रसोईघर → रसोई + घर = रसोई के लिए घर
2	कर्मधारय समास	कर्मधारय समास में पूर्वपद विशेषण तथा उत्तरपद विशेष्य होता है अथवा पूर्वपद और उत्तरपद में उपमेय-उपमान का संबंध होता है। जैसे— नीलकमल → नील + कमल = नीले रंग का कमल
3	द्विगु समास	जिन समासों का पूर्वपद संख्यावाची शब्द हो, वहाँ द्विगु समास होता है। अर्थ की दृष्टि से यह समास प्रायः समूहवाची होता है। जैसे— तिरंगा = तीन रंगों का समाहार
4	बहुव्रीहि समास	बहुव्रीहि समास में दोनों पद गौण होते हैं तथा ये दोनों पद मिलकर किसी अन्य पद के विषय में कुछ संकेत करते हैं। अन्य पद ही 'प्रधान' होता है। जैसे— पीतांबर → पीत + अंबर = पीला है अंबर (वस्त्र) जिसका अर्थात कृष्ण/विष्णु

5	द्वंद्व समास	इस समास में दोनों ही पद प्रधान होते हैं तथा दोनों पदों को जोड़ने वाले समुच्चयबोधक अव्यय का लोप हो जाता है। अव्यय वे शब्द होते हैं जिनमें वचन, लिंग, पुरुष आदि की दृष्टि से कोई रुप परिवर्तन नहीं होता है। जैसे— भाई-बहन = भाई और बहन
6	अव्ययीभाव समास	इस समास में पूर्वपद अव्यय होता है और समस्त पद भी अव्यय (क्रिया-विशेषण) का काम करता है। जैसे— यथाशक्ति → यथा + शक्ति = शक्ति के अनुसार पुनरुक्त शब्दों में समास होने पर भी अव्ययीभाव समास होता है। जैसे— धीरे-धीरे, जल्दी-जल्दी, दिनोदिन।

1. निबंध में ऐसे अनेक सामासिक शब्द आए हैं। उन शब्दों को ढूँढ़कर उनका समास विग्रह कीजिए और समास का नाम लिखिए। आपकी समझ के लिए एक उदाहरण तालिका में दिया गया है। पाठ से अन्य उदाहरण चुनकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

सामासिक पद	**समास विग्रह**	**समास का नाम**
निबंधशास्त्र	निबंध का शास्त्र	तत्पुरुष समास

उत्तरः

सामासिक पद	**समास विग्रह**	**समास का नाम**
निबंधशास्त्र	निबंध का शास्त्र	तत्पुरुष समास
मनोभाव	मन का भाव	तत्पुरुष समास
विश्वकोश	विश्व का कोश	तत्पुरुष समास
जीवन-संग्राम	जीवन का संग्राम	तत्पुरुष समास
समाज-सुधार	समाज का सुधार	तत्पुरुष समास
विवाहोत्सव	विवाह का उत्सव	तत्पुरुष समास
नव-वधू	नई है जो वधू	कर्मधारय समास
मनमोहक	मन को मोहने वाला	तत्पुरुष समास
अतीत-गौरव	अतीत का गौरव	तत्पुरुष समास
सुख-दुख	सुख और दुख	द्वंद्व समास
धर्म-कर्म	धर्म और कर्म	द्वंद्व समास
नगर-नगर	प्रत्येक नगर में	अव्ययीभाव समास
गाँव-गाँव	प्रत्येक गाँव में	अव्ययीभाव समास

उपसर्ग एवं प्रत्यय

- “सेनापति ने भी अपनी कविता दुर्बोध कर दी है,”
- “समाज-सुधार की चर्चा अनादि काल से लेकर आज तक होती आ रही है।”

दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। दोनों रेखांकित शब्दों में मूल शब्द ‘बोध’ के पहले ‘दुर्’ उपसर्ग और ‘आदि’ के पहले ‘अन’ उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाए गए हैं। उपसर्ग भाषा के ऐसे सार्थक और लघुतम खंड हैं जिनका स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं होता है। ये शब्दों के आरंभ में लगकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं।
अब नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों को देखिए—

- “आज तक कितने ही सुधारक हो गए हैं।”
- “लेखों का शीर्षक बनाने में ही सबसे अधिक कठिनाई होती है।”

रेखांकित शब्दों में मूल शब्द ‘सुधार’ के बाद में ‘क’ प्रत्यय और ‘कठिन’ शब्द के बाद में ‘आई’ प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाए गए हैं। प्रत्यय भाषा के ऐसे सार्थक और लघुतम खंड हैं जिनका प्रयोग स्वतंत्र रूप में नहीं होता और जो शब्दों के अंत में लगकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं।

1. निबंध से उपसर्ग और प्रत्यय वाले शब्द ढूँढ़कर अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।

उत्तरः

शब्द	**उपसर्ग**	**मूल शब्द**
दुर्बोध	दुर्	बोध
अनादि	अन्	आदि
अनुसंधान	अनु	संधान
अनुसरण	अनु	सरण
विज्ञ	वि	ज्ञ
प्रदर्शन	प्र	दर्शन
विश्वकोश	वि	श्वकोश
सम्मति	सम्	मति
समावेश	सम्	आवेश
अभिव्यक्ति	अभि	व्यक्ति

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
सुधारक	सुधार	क
कठिनाई	कठिन	आई
मधुरता	मधुर	ता
गांभीर्य	गंभीर	य
विद्वान	विद्वत्	आन
यथार्थता	यथार्थ	ता
प्रतिभावान	प्रतिभा	वान

2. नीचे दिए गए वाक्यों को उचित उपसर्ग या प्रत्यय लगाकर पूरा कीजिए—
   1. निबंध लिखना बड़ी ______ (कठिन ....) की बात है।
   2. वर्तमान से दोनों को ______ (.... संतोष) होता है।
   3. वाक्यों में कुछ ______ (...स्पष्ट...) भी चाहिए, क्योंकि यह ______ (....स्पष्ट.....) या ______ (....बोध....) गांभीर्य ला देती है।

   उत्तरः
   1. निबंध लिखना बड़ी कठिनाई (कठिन + आई) की बात है।
   2. वर्तमान से दोनों को असंतोष (अस् + संतोष) होता है।
   3. वाक्यों में कुछ अस्पष्टता (...स्पष्ट... + ता) भी चाहिए, क्योंकि यह अस्पष्टता (अ + स्पष्ट + ता) या दुर्बोधता (दुर + बोध + ता) गांभीर्य ला देती है।

3. नीचे दिए गए शब्दों में उपसर्ग या प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाकर लिखिए। आपकी सहायता के लिए एक उदाहरण नीचे दिया गया है।

मधुर	सुधार	सुंदर	गति	समाज

उदाहरणः मधुर → मधुरता, मधुरमय, सुमधुर

उत्तरः

मूल शब्द	उपसर्ग/प्रत्यय से बने नए शब्द
मधुर	मधुरता, मधुरमय, सुमधुर
सुधार	सुधारक, सुधारना, असुधार
सुंदर	सुंदरता, सौंदर्य, सुंदरतम
गति	गतिमान, गतिशील, प्रगति, अवगति, दुर्गति
समाज	सामाजिक, समाजसेवा, असामाजिक

भाव एक शब्द अनेक

1. इस पाठ में अनेक ऐसे शब्दों का प्रयोग किया गया है जिनके अर्थ परस्पर मिलते-जुलते हैं। उदाहरण के लिए, विचार-मनन-चिंतन या सुहावने-मधुर-मनमोहक। पाठ में से ऐसे शब्द ढूँढ़िए तथा वाक्य प्रयोग के द्वारा उनके अर्थ स्पष्ट कीजिए।

   उत्तरः
   1. विचार – मनन – चिंतन (सोचने-विचारने के अर्थ में)
      विचारः आज मेरे मन में एक नया विचार आया।
      मननः इस समस्या का हल खोजने के लिए मुझे गहरे मनन की आवश्यकता है।
      चिंतनः महापुरुष समाज के कल्याण का चिंतन करते हैं।
   2. सुहावने – मधुर – मनमोहक (आकर्षक, सुंदर के अर्थ में)
      सुहावनेः बसंत ऋतु में मौसम सुहावना हो जाता है।
      मधुरः कोयल की आवाज़ बड़ी मधुर होती है।
      मनमोहकः ताजमहल का दृश्य अत्यंत मनमोहक है।
   3. उमंग – स्फूर्ति – आवेग (उत्साह के अर्थ में)
      उमंगः त्योहार आते ही मन में उमंग जाग उठती है।
      स्फूर्तिः सुबह की ताज़ी हवा में स्फूर्ति आती है।
      आवेगः गुस्से के आवेग में कभी निर्णय नहीं लेना चाहिए।
   4. विज्ञ – विद्वान – जानकार (ज्ञानी के अर्थ में)
      विज्ञः सभी विज्ञों की राय एकसमान नहीं होती।
      विद्वानः हमारे विद्यालय में एक विद्वान अतिथि आए।
      जानकारः वह इस विषय के जानकार हैं।
   5. रहस्य – गुप्त – मर्म (छिपी बात के अर्थ में)
      रहस्यः इस कहानी का रहस्य अंत में खुलता है।
      गुप्तः उसने कुछ गुप्त सूचना साझा की।
      मर्मः गुरु ने शिष्य को जीवन का मर्म समझाया।

गतिविधियाँ

1. "खीर पकाई जतन से, चरखा दिया चला।
   आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजा।।"

   पाठ में अमीर खुसरो की यह प्रसिद्ध अनमेली आई है। अनमेली एक प्रकार की हास्य-व्यंग्यपूर्ण काव्य शैली है जिसमें असंगत वाक्यों एवं विपरीत स्थितियों को जोड़कर मनोरंजन किया जाता है। अमीर खुसरो आम लोगों के मन को बहलाने व हँसाने के उद्देश्य से ऐसे प्रयोग किया करते थे। आप उनके द्वारा रचित अन्य अनमेलियों, मुकरियों व पहेलियों का शिक्षक की सहायता से ढूँढ़कर संकलन कीजिए।

   उत्तरः
   यह गतिविधि शिक्षक की सहायता से करनी है। नीचे कुछ उदाहरण दिए गए हैं जिन्हें संकलन में शामिल किया जा सकता है:

अमीर खुसरो की एक प्रसिद्ध मुकरी:
वो आए घर में, मेरे सब गए उड़।
चाहूँ मन-मन को, अखिल जग छोड़।
तन की दुर्बलता, मन की दुर्बलता।
क्या सखी साजन? — नाहिं, ज्वर आए!
(यहाँ स्त्री पहले प्रेमी को याद करती है, पर अंत में बुखार निकलता है — यह हास्यपूर्ण अनमेली है।)
एक पहेली:
एक थाल मोती भरा, सबके सिर पर औंधा धरा।
चारों ओर वो थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे।।
(उत्तर: आकाश और तारे)
शिक्षक से अनुरोध है कि अमीर खुसरो की अन्य रचनाओं का संकलन कक्षा में मिलकर तैयार करें।

2. कक्षा में 'युवा और वृद्ध— दो पीढ़ियों के पीढ़ागत अंतर' पर वाद-विवाद का आयोजन कीजिए। वाद-विवाद के नियमों के लिए आप कक्षा 7 और 8 की पाठ्यपुस्तक मल्हार के कुछ पाठों का अभ्यास देखकर अपनी प्रतियोगिता के नियम निर्धारित कर सकते हैं।

उत्तरः
यह एक कक्षा-गतिविधि है। नीचे वाद-विवाद के लिए तर्क-बिंदु दिए गए हैं:
युवा पीढ़ी के पक्ष में तर्क:
1. युवा नई तकनीक और परिवर्तन को तेज़ी से अपनाते हैं।
2. वे रूढ़ियों और अंधविश्वासों से मुक्त होकर तर्कसंगत सोचते हैं।
3. उनमें ऊर्जा और नवीन विचारों की कमी नहीं होती।

वृद्ध पीढ़ी के पक्ष में तर्क:
1. अनुभव से अर्जित ज्ञान अमूल्य होता है।
2. वे परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षक हैं।
3. उनकी धैर्यशीलता और समझदारी कई बार सही निर्णय लेने में सहायक होती है।

निष्कर्ष: दोनों पीढ़ियों का सह-अस्तित्व और परस्पर सीखना ही समाज की प्रगति का आधार है।

भाषा संगम

1. "निबंध लिखने के पहले उसकी रूपरेखा बना लेनी चाहिए।" नीचे 'निबंध' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।
निबंध (हिंदी); निबंधः (संस्कृत); निबंध (पंजाबी); मजमून (उर्दू); मजमून (कश्मीरी); मज्मूनु, निबंधु (सिन्धी); निबंध (मराठी); निबंध (गुजराती); निबंध (कोंकणी); निबंध (नेपाली); निबंध, प्रबंध (बांग्ला); निबंध-रचना (असमिया); निबंध, वाड्ङ् (मणिपुरी); प्रबंध, रचना (ओड़िआ); व्यासमु (तेलुगु); कट्टूरै (तमिल); उपन्यासम् (मलयालम); लेख, प्रबंध (कन्नड़)।

- इनके अतिरिक्त यदि आप 'निबंध' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उसभाषा में भी लिखिए।
- उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

उत्तरः
अतिरिक्त भाषाओं में 'निबंध':
- अंग्रेज़ी में: Essay
- फ्रेंच में: Essai

उपर्युक्त वाक्य मातृभाषा (राजस्थानी) में: निबंध लिखण सूँ पेला उणरी रूपरेखा बणा लेवणी चाइजे।

झरोखे से

1. पाठ में आदर्श निबंध लेखन के विषय में विस्तार से बताया गया है। अब आप सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का लेख 'मैं क्यों लिखता हूँ?' पढ़िए—

मैं क्यों लिखता हूँ?

मैं क्यों लिखता हूँ? यह प्रश्न बड़ा सरल जान पड़ता है पर बड़ा कठिन भी है, क्योंकि इसका सच्चा उत्तर लेखक के आंतरिक जीवन के स्तरों से संबंध रखता है। उन सबको संक्षेप में कुछ वाक्यों में बाँध देना आसान तो नहीं है, न जाने संभव भी है या नहीं? इतना ही किया जा सकता है कि उनमें से कुछ का स्पर्श किया जाए— विशेष रूप से ऐसों का जिन्हें जानना दूसरों के लिए उपयोगी हो सकता है।

एक उत्तर तो यह है कि मैं इसलिए लिखता हूँ कि स्वयं जानना चाहता हूँ कि क्यों लिखता हूँ— लिखे बिना इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिल सकता है। वास्तव में सच्चा उत्तर यही है। लिखकर ही लेखक उस आभ्यंतर विवशता को पहचानता है जिसके कारण उसने लिखा और लिखकर ही वह उससे मुक्त हो जाता है। मैं भी उस आंतरिक विवशता से मुक्ति पाने के लिए तटस्थ होकर उसे देखने और पहचान लेने के लिए लिखता हूँ। मेरा विश्वास है कि सभी कृतिकर— क्योंकि सभी लेखक कृतिकर नहीं होते, न उनका सब लेखन ही कृति होता है— इसलिए लिखते हैं। यह ठीक है कि कुछ ख्याति मिल जाने के बाद कुछ बाहर की विवशता से भी लिखा जाता है— संपादकों के आग्रह से, प्रकाशक के तकाजों से, आर्थिक आवश्यकता से। पर एक तो कृतिकर हमेशा अपने समुच्चय ईमानदारी से यह भेद बनाए रखता है कि कौन-सी कृति भीतरी प्रेरणा का फल है, कौन-सा लेखन बाहरी दबाव का, दूसरे यह भी होता है कि बाहर का दबाव वास्तव में दबाव नहीं रहता, वह मानो भीतरी उमेश का निमित्त बन जाता है।

— सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

उत्तरः

पहलू	**क्या लिखूँ?' (बख्शी)**	**मैं क्यों लिखता हूँ?' (अज्ञेय)**
केंद्रीय प्रश्न	क्या लिखना है और कैसे लिखना है	क्यों लिखने की प्रेरणा होती है
शैली	हास्य-व्यंग्यपूर्ण, आत्मपरक	गंभीर, दार्शनिक
मुख्य विचार	निबंध की रचना-प्रक्रिया	लेखन की आंतरिक विवशता
निष्कर्ष	अनुभव से लिखना सबसे उत्तम	लिखकर ही आंतरिक विवशता से मुक्ति मिलती है

खोजबीन

1. पाठ में आए साहित्यकारों बाणभट्ट, श्रीहर्ष, अमीर खुसरो, सेनापति, महात्मा गांधी, ए.जी. गार्डिनर, शेक्सपीयर, मानटेन के विषय में पुस्तकालय या इंटरनेट से ढूँढ़कर पढ़िए।

   उत्तरः

   1. **बाणभट्ट (7वीं शताब्दी ई.)**: हर्षवर्धन के दरबारी कवि। संस्कृत के महान गद्यकार। 'कादंबरी' (प्रेम-कथा) और 'हर्षचरित' (जीवनी) उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। उनकी गद्य-शैली दीर्घ समासों के लिए प्रसिद्ध है।
   2. **श्रीहर्ष (12वीं शताब्दी ई.)**: संस्कृत के कवि। 'नैषधीयचरित' उनकी प्रसिद्ध रचना है जो अत्यंत दुर्बोध मानी जाती है।
   3. **अमीर खुसरो (1253-1325 ई.)**: फ़ारसी और हिंदी के महान कवि। हज़रत निज़ामुद्दीन के शिष्य। खयाल, तराना, कव्वाली के जनक। अनमेलियाँ, मुकरियाँ और पहेलियों के लिए प्रसिद्ध।
   4. **सेनापति (17वीं शताब्दी)**: ब्रजभाषा के कवि। 'कवित्त-रत्नाकर' उनकी प्रमुख रचना है।
   5. **महात्मा गांधी (1869-1948)**: राष्ट्रपिता। 'हिंद स्वराज', 'सत्य के प्रयोग' (आत्मकथा) उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।
   6. **ए.जी. गार्डिनर (1865-1946)**: अंग्रेज़ी के प्रसिद्ध निबंधकार। 'Leaves in the Wind', 'Pebbles on the Shore' उनके प्रमुख निबंध संग्रह हैं।
   7. **शेक्सपीयर (1564-1616)**: अंग्रेज़ी के महानतम नाटककार और कवि। 'हैमलेट', 'मैकबेथ', 'रोमियो-जूलियट', 'ओथेलो' आदि उनके प्रसिद्ध नाटक हैं।
   8. **मानटेन (मॉन्टेन, 1533-1592)**: फ्रांसीसी लेखक। आधुनिक निबंध विधा के जनक। 'Essays' उनकी प्रसिद्ध रचना है जिसमें उन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभवों और विचारों को स्वच्छंद रूप से लिखा।

6. अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'क्या लिखूँ?' निबंध के लेखक कौन हैं?
   (क) रामचंद्र शुक्ल
   (ख) हजारीप्रसाद द्विवेदी
   (ग) पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
   (घ) महावीरप्रसाद द्विवेदी

   उत्तरः
   (ग) पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

2. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का जन्म किस स्थान पर हुआ था?
   (क) इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश (ख) राजनंदगाँव, छत्तीसगढ़
   (ग) जबलपुर, मध्यप्रदेश (घ) रायपुर, छत्तीसगढ़

   उत्तरः
   (ख) राजनंदगाँव, छत्तीसगढ़

3. ए.जी. गार्डिनर के अनुसार लिखने के लिए किस विशेष चीज़ की आवश्यकता होती है?
   (क) एक अच्छे और गहन विषय की
   (ख) एक विशेष मानसिक स्थिति की
   (ग) पुस्तकालय और संदर्भ ग्रंथों की
   (घ) लंबे समय के अभ्यास की

   उत्तरः
   (ख) एक विशेष मानसिक स्थिति की

4. गार्डिनर के अनुसार लेखन की विशेष मानसिक स्थिति में मस्तिष्क में क्या उत्पन्न होता है?
   (क) शांति और ध्यान (ख) आलस्य और विराम
   (ग) कुछ ऐसा आवेग-सा (घ) विषय का गहरा ज्ञान

   उत्तरः
   (ग) कुछ ऐसा आवेग-सा

5. रिक्त स्थान भरिए-
   लेखक ने कहा — 'हैट टाँगने के लिए कोई भी ______ काम दे सकती है।'
   (क) रस्सी (ख) खूँटी
   (ग) लकड़ी (घ) कील

   उत्तरः
   (ख) खूँटी

6. लेखक ने 'हैट और खूँटी' के उदाहरण से क्या समझाया?
   (क) विषय महत्त्वपूर्ण है, भाव गौण हैं
   (ख) भाव ही यथार्थ वस्तु हैं, विषय नहीं
   (ग) शैली ही लेखन की मुख्य वस्तु है
   (घ) भाषा का प्रवाह आवश्यक है

   उत्तरः
   (ख) भाव ही यथार्थ वस्तु हैं, विषय नहीं

7. 'क्या लिखूँ?' निबंध के अनुसार लेखक की वास्तविक कठिनता क्या है?
(क) लेखक के पास निबंध लिखने के लिए समय और एकांत का अभाव है।
(ख) लेखक ने वैसी मानसिक स्थिति का कभी वास्तविक अनुभव नहीं किया।
(ग) लेखक को निबंध लेखन के लिए कोई अच्छा विषय नहीं मिल रहा है।
(घ) लेखक पाश्चात्य निबंधकारों के सिद्धांतों से अच्छी तरह परिचित नहीं हैं।

उत्तरः
(ख) लेखक ने वैसी मानसिक स्थिति का कभी वास्तविक अनुभव नहीं किया।

8. नमिता का लेखक को क्या आदेश था?
(क) 'समाज-सुधार' पर निबंध लिखें
(ख) 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' पर निबंध लिखें
(ग) 'हिंदी साहित्य' पर निबंध लिखें
(घ) 'जीवन के आदर्श' पर निबंध लिखें

उत्तरः
(ख) 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' पर निबंध लिखें

9. अमिता का लेखक से क्या आग्रह था?
(क) 'दूर के ढोल' पर लिखें
(ख) 'ग्रामीण जीवन' पर लिखें
(ग) 'समाज-सुधार' पर लिखें
(घ) 'राष्ट्रभक्ति' पर लिखें

उत्तरः
(ग) 'समाज-सुधार' पर लिखें

10. लेखक को 'दूर के ढोल सुहावने' और 'समाज-सुधार' पर कितने पेज का निबंध लिखना था?
(क) तीन-तीन पेज (ख) दस-दस पेज
(ग) पाँच-पाँच पेज (घ) सात-सात पेज

उत्तरः
(ग) पाँच-पाँच पेज

11. **अभिकथन (A):** लेखक ने सबसे पहले निबंधशास्त्र के आचार्यों की रचनाएँ देखीं।
कारण (R): लेखक यह समझना चाहते थे कि आदर्श निबंध क्या है और वह कैसे लिखा जाता है।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है
(ख) A सही है किंतु R गलत है
(ग) A गलत है किंतु R सही है
(घ) A और R दोनों गलत हैं

उत्तरः
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है

12. एक विद्वान के अनुसार छोटा निबंध बड़े की अपेक्षा अधिक अच्छा क्यों होता है?
(क) क्योंकि छोटे निबंध को पढ़ने में कम समय लगता है
(ख) क्योंकि बड़े निबंध में रचना की सुंदरता नहीं बनी रह सकती
(ग) क्योंकि छोटे निबंध में अधिक जानकारी होती है
(घ) क्योंकि परीक्षा में छोटे निबंध पर अधिक अंक मिलते हैं

उत्तरः
(ख) क्योंकि बड़े निबंध में रचना की सुंदरता नहीं बनी रह सकती

13. निबंधशास्त्र के आचार्य महोदय के अनुसार निबंध के दो प्रधान अंग कौन-से हैं?
(क) विषय और उदाहरण (ख) भाषा और व्याकरण
(ग) सामग्री और शैली (घ) रूपरेखा और निष्कर्ष

उत्तरः
(ग) सामग्री और शैली

14. लेखक को कितने घंटों में दोनों निबंध तैयार करने थे?
(क) पाँच घंटों में (ख) दो घंटों में
(ग) तीन घंटों में (घ) चार घंटों में

उत्तरः
(ख) दो घंटों में

15. रिक्त स्थान भरिए-
ए.जी. गार्डिनर ने लिखा कि मैं लेख लिखता हूँ और शीर्षक देने का भार मैं ______ पर छोड़ देता हूँ।
(क) अपने पाठकों (ख) अपने प्रकाशक
(ग) अपने मित्र (घ) अपने संपादक

उत्तरः
(ग) अपने मित्र

16. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प चुनिए:
I. गार्डिनर को अपने लेखों का शीर्षक बनाने में सबसे अधिक कठिनाई होती थी।
II. लेखक के अनुसार शेक्सपियर को नाटक लिखने में नाटकों के नामकरण से अधिक कठिनाई हुई होगी।
III. शेक्सपियर ने नाम न रख सकने के कारण एक नाटक का नाम 'जैसा तुम चाहो' रखा।
(क) केवल I और III सही हैं
(ख) केवल II और III सही हैं
(ग) I, II और III तीनों सही हैं
(घ) केवल I और II सही हैं

उत्तरः
(क) केवल I और III सही हैं

17. विज्ञों (विद्वानों) का कथन है कि निबंध लिखने के पहले क्या बना लेनी चाहिए?
(क) सामग्री सूची (ख) शब्द-सूची
(ग) उसकी रुपरेखा (घ) निष्कर्ष का मसौदा

उत्तरः
(ग) उसकी रुपरेखा

18. आचार्य महोदय के अनुसार भाषा में प्रवाह लाने के लिए वाक्य कैसे होने चाहिए?
(क) लंबे और विस्तृत
(ख) संस्कृतनिष्ठ और गंभीर
(ग) छोटे-छोटे पर एक-दूसरे से संबद्ध
(घ) लंबे और अलंकारों से सजे हुए

उत्तरः
(ग) छोटे-छोटे पर एक-दूसरे से संबद्ध

19. बाणभट्ट ने 'कादंबरी' में किस प्रकार के वाक्य लिखे हैं?
(क) बहुत छोटे और सरल
(ख) कम-से-कम आधे पृष्ठ में समाप्त होने वाले
(ग) अलंकारों से पूर्ण
(घ) बोलचाल की भाषा में

उत्तरः
(ख) कम-से-कम आधे पृष्ठ में समाप्त होने वाले

20. संस्कृत के प्रसिद्ध कवि श्रीहर्ष ने जानबूझकर अपने काव्य में क्या डाला?
(क) सरल और बोधगम्य भाव
(ख) ऐसी गुत्थियाँ जो अज्ञों से न सुलझ सकें
(ग) बहुत अधिक उपमाएँ और रूपक
(घ) लोकभाषा के शब्द और मुहावरे

उत्तरः
(ख) ऐसी गुत्थियाँ जो अज्ञों से न सुलझ सकें

21. अंग्रेजी निबंध की नई पद्धति के जन्मदाता किसे माना जाता है?
(क) ए.जी. गार्डिनर को (ख) शेक्सपियर को
(ग) मानटेन को (घ) बाणभट्ट को

उत्तरः
(ग) मानटेन को

22. मानटेन ने अपने निबंधों में क्या लिपिबद्ध किया?
(क) दूसरों के विचार और सिद्धांत
(ख) स्वयं जो कुछ देखा, सुना और अनुभव किया
(ग) पुस्तकालय से एकत्र किए ज्ञान को
(घ) परंपरागत साहित्यिक नियमों को

उत्तरः
(ख) स्वयं जो कुछ देखा, सुना और अनुभव किया

23. मानटेन की पद्धति के निबंधों की सबसे बड़ी विशेषता बताई गई है। इस विशेषता के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(क) उनमें विज्ञों की गंभीर तर्कपूर्ण विवेचना होती है और वे नियमबद्ध होते हैं
(ख) वे मन की स्वच्छंद रचनाएँ हैं जिनमें लेखक की सच्ची अनुभूति और उसके सच्चे भावों की अभिव्यक्ति होती है
(ग) उनमें कवि की उदात्त कल्पना और आख्यायिका-लेखक की सूक्ष्म दृष्टि होती है
(घ) वे परंपरागत निबंधशास्त्र के नियमों का पालन करते हैं और रुपरेखा पर आधारित होते हैं

उत्तरः
(ख) वे मन की स्वच्छंद रचनाएँ हैं जिनमें लेखक की सच्ची अनुभूति और उसके सच्चे भावों की अभिव्यक्ति होती है

24. अमीर खुसरो की कहानी में उन्होंने एक कुएँ के पास कितनी औरतों को पानी भरते देखा?
(क) दो (ख) तीन
(ग) पाँच (घ) चार

उत्तरः
(घ) चार

25. कुएँ पर मिली चार औरतों ने अमीर खुसरो से क्रमशः किन-किन विषयों पर कविता सुनने की इच्छा प्रकट की?
(क) खीर, चरखा, कुत्ता, ढोल
(ख) नदी, खेत, बादल, पहाड़
(ग) राजा, सिपाही, घोड़ा, तलवार
(घ) फूल, पत्ती, नदी, पक्षी

उत्तरः
(क) खीर, चरखा, कुत्ता, ढोल

26. रिक्त स्थान भरिए-
अमीर खुसरो ने अपने पद्य में कहा — 'खीर पकाई जतन से, चरखा दिया चला। आया कुत्ता खा गया, _______ ढोल बजा।'
(क) वह बैठी (ख) मैं बैठी
(ग) तू बैठी (घ) वे बैठे

उत्तरः
(ग) तू बैठी

27. **अभिकथन (A):** लेखक ने अमीर खुसरो की पद्धति को अपनाकर दोनों विषयों को एक ही निबंध में समाविष्ट करने का निर्णय किया।
कारण (R): लेखक में खुसरो जैसी प्रतिभा नहीं थी पर उनकी पद्धति अपनाने से उनकी कठिनाई आधी रह जाती थी।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है
(ख) A सही है किंतु R गलत है

(ग) A गलत है किंतु R सही है
(घ) A और R दोनों गलत हैं

उत्तरः
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है

28. दूर के ढोल सुहावने क्यों होते हैं?
(क) क्योंकि दूर से ढोल की आवाज़ नहीं सुनाई देती
(ख) क्योंकि उनकी कर्कशता दूर तक नहीं पहुँचती
(ग) क्योंकि ढोल बड़े उत्सवों में ही बजाए जाते हैं
(घ) क्योंकि दूर से देखने पर मन आनंदित होता है

उत्तरः
(ख) क्योंकि उनकी कर्कशता दूर तक नहीं पहुँचती

29. ढोल के पास बैठे लोगों के साथ क्या होता है?
(क) वे मस्त होकर नाचने लगते हैं
(ख) उनके कान के परदे फटते रहते हैं
(ग) उन्हें गहरी नींद आ जाती है
(घ) वे ढोल की धुन याद कर लेते हैं

उत्तरः
(ख) उनके कान के परदे फटते रहते हैं

30. दूर बैठे व्यक्ति ने ढोल की आवाज़ सुनकर अपने मन में किसकी कल्पना की?
(क) किसी युद्धोत्सव में लड़ते वीर की
(ख) कोलाहल से पूर्ण घर के एक कोने में बैठी किसी लज्जाशील नव-वधू की
(ग) किसी बालक के जन्मोत्सव की
(घ) बाज़ार में उत्सव मनाती भीड़ की

उत्तरः
(ख) कोलाहल से पूर्ण घर के एक कोने में बैठी किसी लज्जाशील नव-वधू की

31. लेखक के अनुसार ढोल की ध्वनि के साथ कौन-सी तीन चीज़ें मिली रहती हैं?
(क) भय, उत्साह और क्रोध
(ख) आनंद का कलरव, उत्सव का प्रमोद और प्रेम का संगीत
(ग) स्मृति, कल्पना और विचार
(घ) शांति, संतोष और आनंद

उत्तरः
(ख) आनंद का कलरव, उत्सव का प्रमोद और प्रेम का संगीत

32. लेखक के अनुसार दूर रहने से हमें किसका अनुभव नहीं होता?
(क) जीवन के सुखों का
(ख) संसार की सुंदरता का
(ग) यथार्थता की कठोरता का
(घ) समाज की समस्याओं का

उत्तरः
(ग) यथार्थता की कठोरता का

33. जो तरुण संसार के जीवन-संग्राम से दूर हैं, उन्हें संसार का चित्र कैसा प्रतीत होता है?
(क) कठोर और भयावह
(ख) बड़ा ही मनमोहक
(ग) उदासीन और नीरस
(घ) संघर्षपूर्ण और कठिन

उत्तरः
(ख) बड़ा ही मनमोहक

34. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प चुनिए:

I. तरुण भविष्य को वर्तमान में लाना चाहते हैं।

II. वृद्ध अतीत को खींचकर वर्तमान में देखना चाहते हैं।

III. तरुण और वृद्ध दोनों वर्तमान से संतुष्ट रहते हैं।

(क) केवल I और II सही हैं
(ख) केवल II और III सही हैं
(ग) I, II और III तीनों सही हैं
(घ) केवल I और III सही हैं

उत्तरः
(क) केवल I और II सही हैं

35. लेखक के अनुसार तरुण क्रांति के समर्थक होते हैं और वृद्ध किसके संरक्षक होते हैं?
(क) भविष्य-गौरव के
(ख) वर्तमान-व्यवस्था के
(ग) अतीत-गौरव के
(घ) समाज-सुधार के

उत्तरः
(ग) अतीत-गौरव के

36. तरुणों और वृद्धों के कारण वर्तमान सदैव कैसा रहता है?
(क) सुखमय और संतुष्ट
(ख) क्षुब्ध (अशांत)
(ग) स्थिर और प्रगतिशील
(घ) प्रसन्न और उत्साही

उत्तरः
(ख) क्षुब्ध (अशांत)

37. निबंध में भारत के इतिहास में सुधारकों की गणना में निम्नलिखित में से कौन-सा नाम सम्मिलित नहीं है?
(क) बुद्धदेव और महावीर स्वामी
(ख) कबीर और नानक
(ग) राजा राममोहन राय और स्वामी दयानंद
(घ) स्वामी विवेकानंद और रवींद्रनाथ ठाकुर

उत्तरः
(घ) स्वामी विवेकानंद और रवींद्रनाथ ठाकुर

38. लेखक के अनुसार मानव जाति के इतिहास में सुधारों का अंत कब हुआ?
(क) आधुनिक काल में
(ख) महात्मा गांधी के समय में

(ग) कभी नहीं हुआ
(घ) मध्यकाल में

उत्तरः
(ग) कभी नहीं हुआ

39. **अभिकथन (A):** जो कभी सुधार थे, वही आज दोष हो गए हैं और उन सुधारों का फिर नव-सुधार किया जाता है।
कारण (R): इसीलिए यह जीवन प्रगतिशील माना गया है।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है
(ख) A सही है किंतु R गलत है
(ग) A गलत है किंतु R सही है
(घ) A और R दोनों गलत हैं

उत्तरः
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है

40. लेखक के अनुसार हिंदी में प्रगतिशील साहित्य के निर्माता क्या समझ रहे हैं?
(क) उनके साहित्य में अतीत का गौरव निहित है
(ख) उनके साहित्य में भविष्य का गौरव निहित है
(ग) उनके साहित्य में वर्तमान की समस्याएँ हैं
(घ) उनके साहित्य में समाज-सुधार की भावना है

उत्तरः
(ख) उनके साहित्य में भविष्य का गौरव निहित है

41. लेखक ने कहा कि कुछ ही समय के बाद प्रगतिशील साहित्य भी अतीत का स्मारक हो जाएगा। इस कथन का मुख्य भाव क्या है?
(क) प्रगतिशील साहित्य समय के साथ पुराना होकर इतिहास बन जाता है।
(ख) हर पीढ़ी का साहित्य समय के साथ अतीत का हिस्सा बन जाता है।
(ग) तरुण रचनाकारों को प्रगतिशील साहित्य लिखना बंद कर देना चाहिए।
(घ) केवल वृद्ध लेखक ही दीर्घजीवी और श्रेष्ठ साहित्य रच सकते हैं।

उत्तरः
(ख) हर पीढ़ी का साहित्य समय के साथ अतीत का हिस्सा बन जाता है।

42. लेखक ने निबंध के अंत में कहा कि तरुणों और वृद्धों दोनों के स्वप्न सुखद होते हैं, क्योंकि—
(क) दोनों को जीवन से प्रेम होता है
(ख) दोनों अपनी-अपनी दुनिया में खुश रहते हैं
(ग) दूर के ढोल सुहावने होते हैं
(घ) दोनों ही भविष्य में विश्वास रखते हैं

उत्तरः
(ग) दूर के ढोल सुहावने होते हैं

43. लेखक के अनुसार उन्हें एक निबंध लिखने के लिए क्या-क्या करना पड़ता है?
(क) केवल विषय चुनना और सीधे लिखना
(ख) सोचना, चिंता करनी और परिश्रम करना
(ग) पुस्तकालय जाना और अनुसंधान करना
(घ) मन की स्वच्छंद अवस्था की प्रतीक्षा करना

उत्तरः
(ख) सोचना, चिंता करनी और परिश्रम करना

44. गार्डिनर ने शेक्सपियर के विषय में क्या लिखा?
(क) शेक्सपियर विश्व साहित्य के सर्वश्रेष्ठ नाटककार थे और उनके जैसा महान लेखक आज तक पैदा नहीं हुआ।
(ख) शेक्सपियर को नाटक लिखने में नाटकों के नामकरण जितनी कठिनाई नहीं हुई होगी, ऐसा प्रतीत होता है।
(ग) शेक्सपियर की साहित्यिक भाषा अत्यंत सरल, सुबोध और आम जनमानस के समझने के सर्वथा अनुकूल थी।
(घ) शेक्सपियर के सभी नाटकों में पूर्व निर्धारित रुपरेखा और कठोर शास्त्रीय नियमों का पूर्ण पालन होता था।

उत्तरः
(ख) शेक्सपियर को नाटक लिखने में नाटकों के नामकरण जितनी कठिनाई नहीं हुई होगी, ऐसा प्रतीत होता है।

45. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प चुनिए:
I. मानटेन के निबंधों में कवि की उदात्त कल्पना रहती है।
II. मानटेन के निबंधों में लेखक की सच्ची अनुभूति और उल्लास रहता है।
III. मानटेन के निबंध आचार्यों की कसौटी पर खरे न हों पर अंग्रेजी साहित्य में उनका मान है।
(क) केवल I और II सही हैं
(ख) केवल II और III सही हैं
(ग) I, II और III तीनों सही हैं
(घ) केवल I और III सही हैं

उत्तरः
(ख) केवल II और III सही हैं

46. वृद्धों को अपनी बाल्यावस्था और तरुणावस्था की स्मृति कैसी लगती है?
(क) दुखद और कष्टदायक (ख) उदासीन और नीरस
(ग) बड़ी सुखद (घ) अत्यंत भयावह

उत्तरः
(ग) बड़ी सुखद

47. रिक्त स्थान भरिए-
लेखक ने लिखा — 'ढोल की कर्कशता समीपस्थ लोगों को भी कटु नहीं प्रतीत होती और दूरस्थ लोगों के लिए तो वह ______ बन जाती है।'
(क) अत्यंत तीव्र (ख) अत्यंत मधुर
(ग) अत्यंत सामान्य (घ) अत्यंत भयावह

उत्तरः

(ख) अत्यंत मधुर

48. 'क्या लिखूँ?' निबंध में लेखक ने निबंध-लेखन की कठिनाइयों का वर्णन करते हुए अंत में 'दूर के ढोल सुहावने' की व्याख्या किस व्यापक अर्थ में की है?
 (क) मनुष्य को केवल ढोल की दूर से आने वाली आवाज ही मीठी लगती है।
 (ख) मनुष्य स्वभाव से ही दूर की या अतीत की वस्तुओं को श्रेष्ठ समझता है।
 (ग) समाज-सुधारक केवल दूर से ही समाज की कमियाँ देख पाते हैं।
 (घ) प्रगतिशील साहित्यकार हमेशा अपने वर्तमान से असंतुष्ट रहते हैं।

उत्तरः

(ख) मनुष्य स्वभाव से ही दूर की या अतीत की वस्तुओं को श्रेष्ठ समझता है।

49. निबंध में सेनापति के बारे में क्या कहा गया है?
 (क) सेनापति ने अपनी कविता बहुत सरल बनाई
 (ख) सेनापति ने भी अपनी कविता दुर्बोध कर दी
 (ग) सेनापति ने निबंधशास्त्र पर ग्रंथ लिखा
 (घ) सेनापति को नामकरण में कठिनाई होती थी

उत्तरः

(ख) सेनापति ने भी अपनी कविता दुर्बोध कर दी

50. 'क्या लिखूँ?' निबंध पढ़कर निबंध-लेखन के विषय में कौन-सा निष्कर्ष सबसे उपयुक्त है?
 (क) निबंध लिखने के लिए केवल समृद्ध पुस्तकालयों और प्रामाणिक विश्वकोशों की सहायता लेनी चाहिए, अन्यथा वह एक साधारण रचना मात्र बनकर रह जाता है।
 (ख) निबंध लेखन के लिए कोई एक निश्चित विधि नहीं है — विद्वानों के मत भिन्न हैं, पर अनुभव पर आधारित स्वच्छंद लेखन सबसे स्वाभाविक और प्रभावशाली होता है।
 (ग) केवल संक्षिप्त और छोटे आकार के निबंध ही श्रेष्ठ माने जाते हैं क्योंकि उनमें भाषा का कसाव, आंतरिक सुंदरता और वैचारिक स्पष्टता हमेशा बनी रहती है।
 (घ) निबंध लिखने से पूर्व उसकी एक कठोर रूपरेखा बनाकर ही लिखना सर्वथा श्रेष्ठ है, अन्यथा बिना किसी योजना के लिखा गया निबंध पूरी तरह असफल हो जाता है।

उत्तरः

(ख) निबंध लेखन के लिए कोई एक निश्चित विधि नहीं है — विद्वानों के मत भिन्न हैं, पर अनुभव पर आधारित स्वच्छंद लेखन सबसे स्वाभाविक और प्रभावशाली होता है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. ए.जी. गार्डिनर के अनुसार निबंध लिखने के लिए कौन-सी विशेष मानसिक स्थिति होती है?

 उत्तरः

 गार्डिनर के अनुसार लिखने की एक विशेष मानसिक स्थिति होती है जिसमें मन में उमंग, हृदय में स्फूर्ति और मस्तिष्क में आवेग उत्पन्न होता है। उस अवस्था में विषय की चिंता नहीं रहती — कोई भी विषय भावों को व्यक्त करने के लिए उपयुक्त बन जाता है।

2. लेखक ने 'हैट और खूंटी' के उदाहरण से निबंध-लेखन की कौन-सी मूल बात स्पष्ट की है?

 उत्तरः

 लेखक ने कहा कि जैसे हैट टाँगने के लिए कोई भी खूंटी काम दे सकती है, उसी तरह मन के भावों को व्यक्त करने के लिए कोई भी विषय उपयुक्त है। असली वस्तु हैट (भाव) है, खूंटी (विषय) नहीं।

3. लेखक को गार्डिनर के कथन से सहमति होते हुए भी किस बात में कठिनाई है?

 उत्तरः

 लेखक को गार्डिनर की बात सच लगती है, पर उन्होंने स्वयं कभी वह मानसिक स्थिति अनुभव नहीं की जिसमें भाव अपने आप उठते हैं। उन्हें हमेशा सोचना, चिंता करना और परिश्रम करना पड़ता है — तब जाकर एक निबंध लिख पाते हैं।

4. नमिता और अमिता ने लेखक को किन-किन विषयों पर निबंध लिखने के लिए कहा था?

 उत्तरः

 नमिता ने 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' विषय पर निबंध लिखने का आदेश दिया और अमिता ने 'समाज-सुधार' पर निबंध लिखने का आग्रह किया। ये दोनों विषय परीक्षा में आ चुके थे।

5. एक विद्वान के अनुसार निबंध छोटा क्यों होना चाहिए?

 उत्तरः

 विद्वान का कथन है कि बड़े निबंध में रचना की सुंदरता नहीं बनी रह सकती, इसलिए छोटा निबंध बड़े की अपेक्षा अधिक अच्छा होता है। संक्षिप्तता में ही रचनात्मक सौंदर्य सुरक्षित रहता है।

6. ए.जी. गार्डिनर को अपने लेखों में सबसे अधिक कठिनाई किस काम में होती थी?

 उत्तरः

 गार्डिनर को लेखों का शीर्षक बनाने में सबसे अधिक कठिनाई होती थी। वे लेख लिखते थे पर शीर्षक देने का भार अपने मित्र पर छोड़ देते थे। उन्होंने शेक्सपीयर का उदाहरण देकर इस कठिनाई को और स्पष्ट किया।

7. शेक्सपीयर के नाटक 'जैसा तुम चाहो' का उल्लेख निबंध में किस प्रसंग में हुआ है?

उत्तरः
गार्डिनर ने लिखा कि शेक्सपीयर को नाटक लिखने से अधिक कठिनाई नाटकों के नामकरण में हुई। इसीलिए घबराकर एक नाटक का नाम रखा 'जैसा तुम चाहो' — यह उदाहरण शीर्षक और रुपरेखा की कठिनाई को उजागर करता है।

8. बाणभट्ट और श्रीहर्ष का उल्लेख निबंध में किस संदर्भ में किया गया है?

उत्तरः
लेखक ने बताया कि परंपरागत आचार्य वाक्यों में अस्पष्टता और दुर्बोधता को गांभीर्य का साधन मानते थे। बाणभट्ट ने कादंबरी में आधे पृष्ठ में समाप्त होने वाले वाक्य लिखे और श्रीहर्ष ने जानबूझकर काव्य में ऐसी गुत्थियाँ डालीं जो अज्ञों से न सुलझ सकें।

9. मानटेन की निबंध-पद्धति की प्रमुख विशेषता क्या है?

उत्तरः
मानटेन ने स्वयं जो कुछ देखा, सुना और अनुभव किया, उसी को अपने निबंधों में लिपिबद्ध किया। उनके निबंध मन की स्वच्छंद रचनाएँ थे जिनमें लेखक की सच्ची अनुभूति, सच्चे भाव और उल्लास होता है।

10. अमीर खुसरो की कहानी में चार औरतों ने क्या-क्या माँगा था और खुसरो ने उनकी इच्छाओं की पूर्ति कैसे की?

उत्तरः
कुएँ पर पानी माँगने पर चार औरतों ने क्रमशः खीर, चरखे, कुत्ते और ढोल पर कविता सुनने की इच्छा जताई। खुसरो ने एक ही दोहे में चारों की इच्छाएँ पूरी कर दीं — यह उनकी असाधारण प्रतिभा का प्रमाण था।

11. 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' — इसका भाव स्पष्ट कीजिए जैसा निबंध में समझाया गया है।

उत्तरः
ढोल के पास बैठे लोगों के कान के परदे फटते हैं, किंतु दूर बैठे व्यक्ति के लिए वही ध्वनि मधुर लगती है। दूरी से यथार्थता की कठोरता का अनुभव नहीं होता — इसीलिए दूर की चीज सुहावनी प्रतीत होती है।

12. निबंध में तरुण और वृद्ध दोनों को वर्तमान से असंतुष्ट क्यों बताया गया है?

उत्तरः
तरुण भविष्य को वर्तमान में लाना चाहते हैं इसलिए वर्तमान से असंतुष्ट होते हैं। वृद्ध अतीत को खींचकर वर्तमान में देखना चाहते हैं। इन दोनों की असंतुष्टि के कारण वर्तमान सदैव क्षुब्ध और सुधारों का काल बना रहता है।

13. लेखक ने निबंध के अंत में 'दूर के ढोल सुहावने' को 'समाज-सुधार' से कैसे जोड़ा?

उत्तरः
लेखक ने कहा कि हिंदी में प्रगतिशील साहित्य बन रहा है, पर कुछ समय बाद वह भी अतीत का स्मारक बन जाएगा। आज के तरुण कल वृद्ध होकर अतीत का स्वप्न देखेंगे — क्योंकि दूर के ढोल सुहावने होते हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'क्या लिखूँ?' निबंध की आत्मपरक शैली क्या है? इस शैली से निबंध को क्या विशेषता मिलती है?

उत्तरः
'क्या लिखूँ?' की आत्मपरक शैली में लेखक स्वयं पाठक से सीधे संवाद करता है। वे अपनी कठिनाइयाँ, उलझनें और सोच की प्रक्रिया को खुलकर साझा करते हैं — जैसे पाठक उनके बगल में बैठा हो। इससे निबंध जीवंत, आत्मीय और प्रभावशाली बन जाता है। पाठक को लगता है कि लेखक की परेशानी उसकी अपनी परेशानी भी है, जिससे पाठ में रुचि बनी रहती है।

2. निबंधशास्त्र के आचार्यों ने निबंध के दो प्रधान अंग कौन-से बताए हैं? लेखक ने इन दोनों अंगों के बारे में अपनी क्या कठिनाई बताई?

उत्तरः
आचार्यों ने निबंध के दो प्रधान अंग बताए — सामग्री और शैली। सामग्री के लिए मनन और अनुसंधान चाहिए, पर लेखक के पास न पुस्तकालय था, न विश्वकोश। शैली के लिए छोटे-छोटे वाक्यों का सुझाव था, पर लेखक 'मास्टर' होने के नाते अपनी विद्वता प्रदर्शित करने के लिए लंबे वाक्य लिखने की आदत से मजबूर थे — इस प्रकार दोनों ही अंगों में उन्हें कठिनाई थी।

3. रुपरेखा बनाने के संदर्भ में लेखक की क्या राय है? वे रुपरेखा क्यों नहीं बना पाए?

उत्तरः
विज्ञों का कथन है कि निबंध से पहले रुपरेखा बना लेनी चाहिए। पर लेखक का कहना है कि निबंध लिख लेने के बाद तो सारांश लिखा जा सकता है, पर लिखने से पहले उसका सार दस-पाँच शब्दों में कैसे लिखें? उन्हें संदेह है कि क्या हिंदी के सभी लेखक सच में रुपरेखा बनाते हैं। गार्डिनर के उदाहरण से उन्होंने यह सिद्ध करने की कोशिश की कि यह संभव नहीं है।

4. लेखक ने अमीर खुसरो की पद्धति को अपनाकर अपनी कठिनाई कैसे 'आधी' कर ली?

उत्तरः
खुसरो ने एक ही पद्य में चार औरतों की अलग-अलग इच्छाएँ पूरी कर दी थीं। लेखक के पास भी दो विषय थे — 'दूर के ढोल' और 'समाज-सुधार'। उनमें खुसरो की प्रतिभा तो

नहीं थी, पर उन्होंने उनकी पद्धति अपनाते हुए एक ही निबंध में दोनों विषयों का समावेश कर लिया। इस तरह एक की बजाय दो निबंध लिखने की आधी कठिनाई खत्म हो गई।

5. ढोल की ध्वनि के साथ लेखक ने किन-किन भावों का उल्लेख किया है जो उसे मधुर बनाते हैं?

उत्तरः
लेखक ने कहा कि ढोल की ध्वनि के साथ आनंद का कलरव, उत्सव का प्रमोद और प्रेम का संगीत — ये तीनों मिले रहते हैं। दूर बैठा व्यक्ति उस ध्वनि से किसी विवाहोत्सव का चित्र, लज्जाशील नव-वधू की कल्पना, उसके प्रेम, उल्लास, संकोच और विषाद की अनुभूति करता है। यही भाव-संगम ढोल की कर्कश ध्वनि को मधुर बना देता है।

6. लेखक ने 'दूर रहने से यथार्थता की कठोरता का अनुभव नहीं होता' — इस विचार को किन उदाहरणों से समझाया?

उत्तरः
लेखक ने दो उदाहरण दिए: पहला, जो तरुण संसार के जीवन-संग्राम से दूर हैं, उन्हें संसार का चित्र बड़ा मनमोहक लगता है। दूसरा, जो वृद्ध अपनी बाल्यावस्था और तरुणावस्था से दूर हट आए हैं, उन्हें अतीत की स्मृति बड़ी सुखद लगती है। दोनों वर्तमान से असंतुष्ट हैं और दूर की चीज को सुंदर मानते हैं।

7. निबंध में समाज-सुधारकों की जो सूची दी गई है, उससे लेखक क्या सिद्ध करना चाहते हैं?

उत्तरः
बुद्धदेव, महावीर स्वामी, नागार्जुन, शंकराचार्य, कबीर, नानक, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद और महात्मा गांधी की सूची देकर लेखक यह सिद्ध करते हैं कि मनुष्य-जाति के इतिहास में कोई ऐसा काल नहीं हुआ जब सुधारों की आवश यकता न हो। सुधारकों का दल नगर-नगर है — न दोषों का अंत है, न सुधारों का।

8. 'जो कभी सुधार थे, वही आज दोष हो गए हैं' — इस कथन का क्या तात्पर्य है?

उत्तरः
लेखक का कहना है कि जीवन में नए-नए दोष उत्पन्न होते जाते हैं और नए-नए सुधार भी होते रहते हैं। जो बात एक युग में सुधार थी, वह दूसरे युग में दोष बन जाती है और उसी का फिर नव-सुधार किया जाता है। यही कारण है कि जीवन प्रगतिशील माना गया है — यह चक्र कभी समाप्त नहीं होता।

9. मानटेन की पद्धति को परंपरागत निबंध-आचार्यों की कसौटी पर खरा न मानते हुए भी लेखक ने उसे क्यों अपनाया?

उत्तरः
मानटेन की पद्धति में लेखक की सच्ची अनुभूति, उल्लास और स्वच्छंद मन की अभिव्यक्ति होती है। इसमें न कवि की उदात्त कल्पना चाहिए, न गंभीर तर्कपूर्ण विवेचना। लेखक के पास न पुस्तकालय था, न समय। मानटेन की पद्धति में केवल अपने अनुभव और भाव काफी हैं — इसलिए यह लेखक की परिस्थिति के लिए सबसे उपयुक्त थी।

10. हिंदी के प्रगतिशील साहित्यकारों के संदर्भ में लेखक ने 'दूर के ढोल सुहावने' का प्रयोग कैसे किया?

उत्तरः
लेखक ने कहा कि आज हिंदी में प्रगतिशील साहित्य बन रहा है और उसके निर्माता मान रहे हैं कि उनके साहित्य में भविष्य का गौरव है। परंतु कुछ समय बाद यह साहित्य भी अतीत का स्मारक बन जाएगा। आज के तरुण कल वृद्ध होकर उसी साहित्य को अतीत के रूप में सुंदर पाएंगे — क्योंकि दूर के ढोल सुहावने होते हैं।

11. लेखक ने अपनी 'मास्टर' पहचान का उल्लेख किस व्यंग्य के साथ किया है?

उत्तरः
आचार्य ने कहा था कि भाषा में प्रवाह के लिए वाक्य छोटे-छोटे हों। लेखक ने इसे ठीक माना, पर साथ ही व्यंग्य किया कि वे 'मास्टर' हैं, इसलिए अपनी विद्वता दिखाने के लिए वाक्य कम-से-कम आधे पृष्ठ में समाप्त होने चाहिए। यह आत्म-व्यंग्य परंपरागत शिक्षकों की दुर्बोध भाषा की प्रवृत्ति पर टिप्पणी है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'क्या लिखूँ?' निबंध में लेखक ने निबंध-लेखन की किन-किन कठिनाइयों का हास्यपूर्ण और आत्मपरक वर्णन किया है?

उत्तरः
लेखक ने निबंध-लेखन की अनेक कठिनाइयों को रोचक ढंग से उजागर किया है। पहली कठिनाई — गार्डिनर जैसी स्वाभाविक लेखन-अवस्था का अनुभव न होना। दूसरी — दो घंटों में दो निबंध लिखने का दबाव, पुस्तकालय और विश्वकोश का न होना। तीसरी — रुपरेखा बनाने की असंभवता, क्योंकि लेखक के अनुसार निबंध लिखने से पहले उसका सार कैसे लिखें? चौथी — शैली में द्विधा: आचार्य छोटे वाक्यों की सलाह देते हैं, पर 'मास्टर' होने का अहंकार लंबे वाक्य लिखवाता है। पाँचवीं — एक साथ दो विषयों को समाहित करने की चुनौती। इन सभी कठिनाइयों को लेखक ने स्वयं पर व्यंग्य करते हुए हल्के-फुल्के स्वर में प्रस्तुत किया है। अंत में अमीर खुसरो की पद्धति और मानटेन की शैली से उन्होंने रास्ता निकाला।

2. ए.जी. गार्डिनर और मानटेन की निबंध-पद्धतियों की तुलना कीजिए। लेखक ने किसकी पद्धति को क्यों अपनाया?

उत्तरः
ए.जी. गार्डिनर का मानना था कि लिखने की एक विशेष मानसिक स्थिति होती है जिसमें उमंग और आवेग स्वयं उठते

हैं, विषय की चिंता नहीं रहती — मन के भाव ही यथार्थ हैं। मानटेन ने जो देखा, सुना, अनुभव किया — वही लिखा। उनके निबंध स्वच्छंद, अनुभव-आधारित और उल्लासपूर्ण थे, जिनमें न कवि की कल्पना चाहिए, न विज्ञ की गंभीर विवेचना। लेखक को गार्डिनर वाली मानसिक स्थिति कभी प्राप्त नहीं हुई। मानटेन की पद्धति उनके लिए उपयुक्त थी क्योंकि उसमें केवल अपना अनुभव और भाव चाहिए — न संसाधन, न तैयारी। इसलिए लेखक ने मानटेन की पद्धति अपनाई और दोनों विषयों को एक निबंध में समेट लिया।

3. 'दूर के ढोल सुहावने' की व्याख्या लेखक ने किन-किन संदर्भों में की है? इस विचार का सार्वभौमिक महत्त्व क्या है?

उत्तरः

लेखक ने 'दूर के ढोल सुहावने' को कई संदर्भों में समझाया है। पहला — ढोल की कर्कश ध्वनि पास वालों के कानों को कष्ट देती है, पर दूर बैठे व्यक्ति के लिए वह विवाहोत्सव, प्रेम और उल्लास की याद बन जाती है। दूसरा — तरुण संसार के जीवन-संग्राम से दूर हैं इसलिए उन्हें संसार मनमोहक लगता है। तीसरा — वृद्धों को अतीत सुखद लगता है क्योंकि वे उससे दूर आ गए हैं। चौथा — प्रगतिशील साहित्यकारों को अपना साहित्य भविष्य का गौरव लगता है, पर वह कल अतीत बनेगा। इस विचार का सार यह है कि दूरी से यथार्थ की कठोरता नहीं दिखती — इसीलिए दूर की हर चीज सुंदर और आदर्श लगती है।

4. निबंध में समाज-सुधार के विषय को लेखक ने किस दृष्टि से देखा है? 'न दोषों का अंत है, न सुधारों का' — इस कथन की व्याख्या कीजिए।

उत्तरः

लेखक ने समाज-सुधार को एक निरंतर चलने वाली, अनंत प्रक्रिया के रूप में देखा है। उनके अनुसार मनुष्य-जाति के इतिहास में कोई ऐसा काल नहीं हुआ जब सुधारों की आवश्यकता न हो। भारत में बुद्धदेव से लेकर महात्मा गांधी तक असंख्य सुधारक हो गए, फिर भी सुधारों का अंत नहीं हुआ। जीवन में नए-नए दोष उत्पन्न होते हैं और नए-नए सुधार भी होते हैं। जो कभी सुधार था, वही आज दोष बन गया है और उसी का फिर नव-सुधार होता है। इस निरंतर क्रम के कारण ही जीवन प्रगतिशील माना गया है। लेखक का यह विचार दर्शाता है कि समाज-सुधार कोई एक बार का कार्य नहीं, बल्कि एक जीवंत प्रक्रिया है।

5. 'क्या लिखूँ?' निबंध में लेखक ने पूर्वी और पश्चात्य निबंध-पद्धतियों का तुलनात्मक वर्णन किया है। इसे विस्तार से समझाइए।

उत्तरः

लेखक ने दो परंपराओं की चर्चा की है। पहली — भारतीय परंपरागत आचार्यों की पद्धति जिसमें निबंध की रूपरेखा, सामग्री-संग्रह, विद्वता प्रदर्शन, लंबे वाक्य, अलंकार, महावरे, लोकोक्तियाँ और जानबूझकर दुर्बोधता को श्रेष्ठता का मानदंड माना जाता था। बाणभट्ट और श्रीहर्ष इसके उदाहरण हैं। दूसरी — पश्चात्य अंग्रेजी पद्धति जिसके जन्मदाता मानटेन हैं। इसमें अपने देखे-सुने-अनुभव किए को लिखना होता है। इसमें स्वच्छंदता है, सच्ची अनुभूति है, उल्लास है। यह मानसिक अवस्था में जीवन के गौरव को भूलकर स्वयं में लीन हो जाने की अवस्था है। लेखक ने स्पष्ट किया कि अंग्रेजी निबंधकार परंपरागत कसौटी पर खरे न हों, पर उनका साहित्य में मान है — और यही पद्धति लेखक को उपयुक्त लगी।

6. 'क्या लिखूँ?' निबंध के माध्यम से पदमलाल पुन्नालाल बख्शी ने निबंध-लेखन के आदर्श तरीके की खोज किस प्रकार की? इस निबंध की साहित्यिक विशेषताएँ बताइए।

उत्तरः

पदमलाल पुन्नालाल बख्शी ने इस निबंध में एक अनूठी यात्रा की है — वे निबंध-लेखन के आदर्श तरीके की खोज करते-करते स्वयं एक आदर्श निबंध लिख देते हैं। पहले वे गार्डिनर के सिद्धांत से शुरु करते हैं, फिर आचार्यों की कसौटियाँ परखते हैं, रूपरेखा और शैली की कठिनाइयाँ गिनाते हैं, मानटेन की पद्धति पर आते हैं और अंत में अमीर खुसरो की प्रतिभा से प्रेरणा लेकर दोनों विषयों को एक में समेट लेते हैं। साहित्यिक दृष्टि से इस निबंध में आत्मपरक शैली, सहज हास्य, आत्म-व्यंग्य, साहित्यिक-सांस्कृतिक संदर्भों का कुशल प्रयोग और पूर्वी-पश्चात्य विचारों का सामंजस्य देखने को मिलता है। यह निबंध पाठक को निबंध-लेखन की प्रक्रिया के साथ-साथ जीवन-दर्शन भी देता है।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

गद्यांश 1

मुझे आज लिखना ही पड़ेगा। अंग्रेजी के प्रसिद्ध निबंध लेखक ए.जी. गार्डिनर का कथन है कि लिखने की एक विशेष मानसिक स्थिति होती है। उस समय मन में कुछ ऐसी उमंग-सी उठती है, हृदय में कुछ ऐसी स्फूर्ति-सी आती है, मस्तिष्क में कुछ ऐसा आवेग-सा उत्पन्न होता है कि लेख लिखना ही पड़ता है। उस समय विषय की चिंता नहीं रहती। कोई भी विषय हो, उसमें हम अपने हृदय के आवेग को भर ही देते हैं। हैट टाँगने के लिए कोई भी खूँटी काम दे सकती है। उसी तरह अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए कोई भी विषय उपयुक्त है। असली वस्तु है हैट, खूँटी नहीं। इसी तरह मन के भाव ही तो यथार्थ वस्तु हैं, विषय नहीं।

1. गार्डिनर के अनुसार लेखन की 'विशेष मानसिक स्थिति' से क्या तात्पर्य है?

(क) भीतरी आवेग से लिखने की अनिवार्य प्रेरणा

(ख) बाहरी दबाव से लिखने की मजबूरी

(ग) विषय की गहन तैयारी से उत्पन्न उत्साह

(घ) पाठकों की प्रशंसा पाने की उत्कट चाहत

2. **अभिकथन (A):** गार्डिनर के अनुसार लेखन में विषय गौण होता है।
कारण (R): लेखक के मनोभाव ही लेखन की असली वस्तु हैं।
सही विकल्प चुनिए—
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
(ख) A सही है लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A गलत है लेकिन R सही है
(घ) A और R दोनों गलत हैं

3. इस गद्यांश की भाषा-शैली कैसी है?
(क) कठिन, तत्सम बहुल और गंभीर
(ख) सरल, सोदाहरण और संवादात्मक
(ग) व्यंग्यपूर्ण और आलोचनात्मक
(घ) भावुक और काव्यात्मक

4. 'आवेग' शब्द का अर्थ इस गद्यांश के संदर्भ में क्या है?
(क) गहन अध्ययन से उत्पन्न बौद्धिक ज्ञान
(ख) बिना सोचे-विचारे कुछ कर बैठने की अंत:प्रेरणा
(ग) क्रोध और असंतोष से उत्पन्न मनोदशा
(घ) भय और संकोच से उत्पन्न मानसिक दबाव

5. 'हैट और खूँटी' के उदाहरण से लेखक क्या स्पष्ट करना चाहता है?
(क) खूँटी और हैट दोनों का महत्व बराबर होता है
(ख) हैट टाँगना एक सामान्य दैनिक क्रिया है
(ग) लेखन के लिए सही विषय का चुनाव सर्वोपरि है
(घ) विषय साधन है, लेखक के भाव ही साध्य हैं

उत्तरः
1. (क) भीतरी आवेग से लिखने की अनिवार्य प्रेरणा
2. (क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
3. (ख) सरल, सोदाहरण और संवादात्मक
4. (ख) बिना सोचे-विचारे कुछ कर बैठने की अंत:प्रेरणा
5. (घ) विषय साधन है, लेखक के भाव ही साध्य हैं

गद्यांश 2

गार्डिनर साहब के इस कथन की यथार्थता में मुझे संदेह नहीं, पर मेरे लिए कठिनता यह है कि मैंने उस मानसिक स्थिति का अनुभव ही नहीं किया है, जिसमें भाव अपने आप उत्थित हो जाते हैं। मुझे तो सोचना पड़ता है, चिंता करनी पड़ती है, परिश्रम करना पड़ता है, तब कहीं मैं एक निबंध लिख सकता हूँ। आज तो मुझे विशेष परिश्रम करना पड़ेगा, क्योंकि मुझे कोई साधारण निबंध नहीं लिखना है। आज मुझे नमिता और अमिता के लिए आदर्श निबंध लिखना होगा। नमिता का आदेश है कि मैं 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' इस विषय पर लिखूँ। अमिता का आग्रह है कि मैं समाज-सुधार पर लिखूँ, ये दोनों ही विषय परीक्षा में आ चुके हैं और उन दोनों पर आदर्श निबंध लिखकर मुझे उन दोनों को निबंध-रचना का रहस्य समझाना पड़ेगा।

1. लेखक अपनी और गार्डिनर की तुलना करके क्या भाव प्रकट कर रहा है?
(क) विनम्र आत्म-स्वीकृति और व्यावहारिक परिश्रम की भावना
(ख) गार्डिनर के प्रति ईर्ष्या और प्रतिस्पर्धा की भावना
(ग) स्वयं की प्रतिभा पर गर्व और आत्मविश्वास
(घ) निबंध लिखने से पलायन और आलस्य की भावना

2. निम्नलिखित में से कौन-से कथन सही हैं?
I. लेखक को गार्डिनर के कथन की सच्चाई पर संदेह है।
II. नमिता और अमिता दोनों के विषय परीक्षा में आ चुके हैं।
III. लेखक बिना परिश्रम के भी निबंध लिख सकता है।
(क) केवल II सही है (ख) केवल I और II सही हैं
(ग) केवल II और III सही हैं (घ) तीनों कथन सही हैं

3. इस गद्यांश का प्रमुख स्वर कौन-सा है?
(क) उपदेशात्मक और नीतिपरक
(ख) आत्मपरक और हास्य-व्यंग्यात्मक
(ग) रोमांचक और कल्पनापरक
(घ) गंभीर और दार्शनिक

4. 'यथार्थता' शब्द का अर्थ है—
(क) संदेह और अनिश्चितता
(ख) कल्पना और आदर्शवाद
(ग) सत्यता और वास्तविकता
(घ) कठिनाई और असमर्थता

5. लेखक को नमिता और अमिता के लिए क्या करना था?
(क) आदर्श निबंध लिखकर निबंध-रचना का रहस्य समझाना
(ख) दोनों के लिए अलग-अलग परीक्षा की तैयारी कराना
(ग) दोनों विषयों पर व्याख्यान देना और प्रश्न हल करना
(घ) पुस्तकालय से संबंधित सामग्री एकत्र करके देना

उत्तरः
1. (क) विनम्र आत्म-स्वीकृति और व्यावहारिक परिश्रम की भावना
2. (क) केवल II सही है
3. (ख) आत्मपरक और हास्य-व्यंग्यात्मक
4. (ग) सत्यता और वास्तविकता
5. (क) आदर्श निबंध लिखकर निबंध-रचना का रहस्य समझाना

गद्यांश 3

विज्ञों का कथन है कि निबंध लिखने के पहले उसकी रुपरेखा बना लेनी चाहिए। अतएव सबसे पहले मुझे 'दूर के ढोल सुहावने' की रुपरेखा बनानी है। मैं सोच ही नहीं सकता कि इस विषय की कैसी रुपरेखा है। निबंध लिख लेने के बाद मैं उसका सारांश कुछ ही वाक्यों में भले ही लिख दूँ, पर

निबंध लिखने के पहले उसका सार दस-पाँच शब्दों में कैसे लिखा जाए? क्या सचमुच हिंदी के सब विज्ञ लेखक पहले से अपने-अपने निबंधों के लिए रुपरेखा तैयार कर लेते हैं? ए.जी. गार्डिनर को तो अपने लेखों का शीर्षक बनाने में ही सबसे अधिक कठिनाई होती है। उन्होंने लिखा कि मैं लेख लिखता हूँ और शीर्षक देने का भार मैं अपने मित्र पर छोड़ देता हूँ।

1. रुपरेखा न बना पाने की लेखक की असमर्थता किस बात का संकेत देती है?
   (क) निबंध-लेखन की यांत्रिक विधियाँ सबके लिए व्यावहारिक नहीं होतीं
   (ख) लेखक को निबंध लेखन का कोई अनुभव नहीं है
   (ग) हिंदी के विज्ञ लेखक रुपरेखा बनाने में कुशल होते हैं
   (घ) गार्डिनर की पद्धति भारतीय लेखन के लिए उपयुक्त नहीं है

2. **अभिकथन (A):** लेखक को 'दूर के ढोल सुहावने' विषय की रुपरेखा बनाना कठिन लगा।
   कारण (R): लेखक के पास पुस्तकालय और विश्वकोश उपलब्ध नहीं थे।
   सही विकल्प चुनिए—
   (क) A सही है लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है
   (ख) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
   (ग) A गलत है लेकिन R सही है
   (घ) A और R दोनों गलत हैं

3. गार्डिनर का शीर्षक-संबंधी उदाहरण देने से इस गद्यांश में क्या प्रभाव उत्पन्न होता है?
   (क) हिंदी और अंग्रेजी लेखन की तुलना स्पष्ट होती है
   (ख) गार्डिनर की अक्षमता उजागर होती है
   (ग) निबंध लेखन की महानता सिद्ध होती है
   (घ) लेखक की बात को प्रामाणिकता और हास्य दोनों मिलते हैं

4. 'विज्ञ' शब्द का अर्थ है—
   (क) अज्ञानी और नासमझ व्यक्ति
   (ख) जानकार, समझदार और विद्वान
   (ग) साहसी और उत्साही व्यक्ति
   (घ) परंपरावादी और रुढ़िग्रस्त व्यक्ति

5. गार्डिनर शीर्षक देने का भार किस पर छोड़ देते थे?
   (क) अपने संपादक पर (ख) अपने प्रकाशक पर
   (ग) अपने मित्र पर (घ) अपने पाठकों पर

उत्तरः
1. (क) निबंध-लेखन की यांत्रिक विधियाँ सबके लिए व्यावहारिक नहीं होतीं
2. (क) A सही है लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है
3. (घ) लेखक की बात को प्रामाणिकता और हास्य दोनों मिलते हैं
4. (ख) जानकार, समझदार और विद्वान
5. (ग) अपने मित्र पर

गद्यांश 4

अंग्रेजी के निबंधकारों ने एक दूसरी ही पद्धति को अपनाया है। उनके निबंध इन आचार्यों की कसौटी पर भले ही खरे सिद्ध न हों, पर अंग्रेजी साहित्य में उनका मान अवश्य है। उस पद्धति के जन्मदाता मानटेन समझे जाते हैं। उन्होंने स्वयं जो कुछ देखा, सुना और अनुभव किया, उसी को अपने निबंधों में लिपिबद्ध कर दिया। ऐसे निबंधों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे मन की स्वच्छंद रचनाएँ हैं। उनमें न कवि की उदात्त कल्पना रहती है, न आख्यायिका-लेखक की सूक्ष्म दृष्टि और न विज्ञों की गंभीर तर्कपूर्ण विवेचना। उनमें लेखक की सच्ची अनुभूति रहती है। उनमें उसके सच्चे भावों की सच्ची अभिव्यक्ति होती है, उनमें उसका उल्लास रहता है।

1. मानटेन की पद्धति की 'सबसे बड़ी विशेषता' क्या है जो लेखक को आकर्षित करती है?
   (क) काव्यात्मक कल्पना और भाषा की सुंदरता का संयोजन
   (ख) तर्कपूर्ण विवेचना और दार्शनिक गहराई का समावेश
   (ग) लेखक की व्यक्तिगत सच्ची अनुभूति की स्वच्छंद अभिव्यक्ति
   (घ) आचार्यों की कसौटी पर खरे उतरने की क्षमता

2. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन मानटेन की पद्धति का सबसे सटीक वर्णन करता है?
   (क) स्वयं के अनुभव को स्वच्छंद और सच्चे भाव से लिखना
   (ख) कठिन तर्क और दर्शन के साथ विषय का विश्लेषण करना
   (ग) काव्य और आख्यायिका की शैली में विषय प्रस्तुत करना
   (घ) आचार्यों के नियमों के अनुसार विषय का वर्गीकरण करना

3. इस गद्यांश का मुख्य भाव और शैली कैसी है?
   (क) भावुक और काव्यात्मक
   (ख) तुलनात्मक और विचारात्मक
   (ग) उपदेशात्मक और नीतिपरक
   (घ) व्यंग्यात्मक और हास्यपूर्ण

4. 'उदात्त' शब्द का अर्थ है—
   (क) जटिल और दुर्बोध (ख) साधारण और सामान्य
   (ग) क्षुद्र और निम्न स्तर का (घ) ऊँचा, महान और श्रेष्ठ

5. अंग्रेजी निबंधकारों की पद्धति के जन्मदाता किसे माना जाता है?
   (क) बाणभट्ट को (ख) गार्डिनर को
   (ग) शेक्सपियर को (घ) मानटेन को

उत्तरः
1. (ग) लेखक की व्यक्तिगत सच्ची अनुभूति की स्वच्छंद अभिव्यक्ति
2. (क) स्वयं के अनुभव को स्वच्छंद और सच्चे भाव से लिखना
3. (ख) तुलनात्मक और विचारात्मक
4. (घ) ऊँचा, महान और श्रेष्ठ
5. (घ) मानटेन को

गद्यांश 5

दूर के ढोल सुहावने होते हैं, क्योंकि उनकी कर्कशता दूर तक नहीं पहुँचती। जब ढोल के पास बैठे हुए लोगों के कान के पर्दे फटते रहते हैं, तब दूर किसी नदी के तट पर संध्या समय, किसी दूसरे के कान में वही शब्द मधुरता का संचार कर देते हैं। ढोल के उन्हीं शब्दों को सुनकर वह अपने हृदय में किसी के विवाहोत्सव का चित्र अंकित कर लेता है। कोलाहल से पूर्ण घर के एक कोने में बैठी हुई किसी लज्जाशील नव-वधू की कल्पना वह अपने मन में कर लेता है। उस नव-वधू के प्रेम, उल्लास, संकोच, आशंका और विषाद से युक्त हृदय के कंपन ढोल की कर्कश ध्वनि को मधुर बना देते हैं। सच तो यह है कि ढोल की ध्वनि के साथ आनंद का कलरव, उत्सव का प्रमोद और प्रेम का संगीत, ये तीनों मिले रहते हैं।

1. दूर बैठे व्यक्ति के लिए ढोल की ध्वनि मधुर क्यों लगती है?
(क) दूरी कर्कशता घटाकर मन में सुखद कल्पनाएँ जगाती है
(ख) दूर की ध्वनि वास्तव में ज्यादा मधुर और सुरीली होती है
(ग) दूर बैठे व्यक्ति को संगीत की अधिक समझ होती है
(घ) दूर से ढोल की ध्वनि कम और धीमी सुनाई देती है

2. "ढोल की कर्कश ध्वनि को नव-वधू के हृदय के कंपन मधुर बना देते हैं।"
यह वाक्य किस बात को स्पष्ट करता है?
(क) विवाह के अवसर पर ढोल की ध्वनि वास्तव में बदल जाती है
(ख) भावनात्मक संदर्भ और कल्पना किसी भी वस्तु को सुंदर बना देते हैं
(ग) नव-वधू की भावनाएँ ध्वनि की भौतिक तरंगों को बदल देती हैं
(घ) दूर से ध्वनि सुनने पर श्रोता को सही आवाज़ सुनाई नहीं देती

3. इस गद्यांश में भाषा की कौन-सी विशेषता सबसे प्रमुख है?
(क) हास्यपूर्ण और व्यंग्यात्मक शैली
(ख) तर्कपूर्ण और शुष्क विश्लेषण
(ग) चित्रात्मक और भावपूर्ण वर्णनात्मकता
(घ) दार्शनिक और जटिल वैचारिकता

4. 'कोलाहल' शब्द का अर्थ है—
(क) बहुत से लोगों के एक साथ बोलने से होने वाला शोर
(ख) शांत और मनोरम वातावरण की ध्वनि
(ग) मधुर और संगीतमय वाद्य-ध्वनि
(घ) अकेलेपन और सन्नाटे की अवस्था

5. लेखक के अनुसार ढोल की ध्वनि के साथ कौन-से तीन भाव मिले रहते हैं?
(क) क्रोध, उल्लास और करुणा की अनुभूति
(ख) विषाद, भय और संकोच की भावनाएँ
(ग) शांति, सौंदर्य और मधुरता का संयोजन
(घ) आनंद का कलरव, उत्सव का प्रमोद और प्रेम का संगीत

उत्तरः
1. (क) दूरी कर्कशता घटाकर मन में सुखद कल्पनाएँ जगाती है
2. (ख) भावनात्मक संदर्भ और कल्पना किसी भी वस्तु को सुंदर बना देते हैं
3. (ग) चित्रात्मक और भावपूर्ण वर्णनात्मकता
4. (क) बहुत से लोगों के एक साथ बोलने से होने वाला शोर
5. (घ) आनंद का कलरव, उत्सव का प्रमोद और प्रेम का संगीत

गद्यांश 6

मनुष्य जाति के इतिहास में कोई ऐसा काल ही नहीं हुआ, जब सुधारों की आवश्यकता न हुई हो। तभी तो आज तक कितने ही सुधारक हो गए हैं, पर सुधारों का अंत कब हुआ है? भारत के इतिहास में बुद्धदेव, महावीर स्वामी, नागार्जुन, शंकराचार्य, कबीर, नानक, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद और महात्मा गांधी में ही सुधारकों की गणना समाप्त नहीं होती। सुधारकों का दल नगर-नगर और गाँव-गाँव में होता है। यह सच है कि जीवन में नए-नए दोष उत्पन्न होते जाते हैं और नए-नए सुधार हो जाते हैं। न दोषों का अंत है और न सुधारों का। जो कभी सुधार थे, वही आज दोष हो गए हैं और उन सुधारों का फिर नव सुधार किया जाता है। तभी तो यह जीवन प्रगतिशील माना गया है।

1. 'जो कभी सुधार थे, वही आज दोष हो गए हैं' — इस कथन का गहरा भाव क्या है?
(क) सुधारक कभी भी सही काम नहीं कर पाते
(ख) समाज की प्रगति सापेक्ष है और हर युग में नई चुनौतियाँ आती हैं
(ग) पुराने सुधार हमेशा नए दोषों का कारण बनते हैं
(घ) समाज में सुधार करना व्यर्थ और असंभव है

2. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन इस गद्यांश के मुख्य भाव को सर्वोत्तम ढंग से व्यक्त करता है?
(क) सुधार और दोष की यह चक्रीय प्रक्रिया ही जीवन को प्रगतिशील बनाती है

(ख) भारत के महान सुधारकों ने समाज को पूर्णतः दोषमुक्त कर दिया
(ग) सुधारों की संख्या जितनी अधिक होगी, समाज उतना ही श्रेष्ठ बनेगा
(घ) सुधारकों का दल केवल नगरों में काम करता है, गाँवों में नहीं

3. इस गद्यांश का स्वर और प्रकृति कैसी है?
(क) वर्णनात्मक और सूचनापरक
(ख) हास्यपूर्ण और व्यंग्यात्मक
(ग) भावुक और करुणापूर्ण
(घ) विचारोत्तेजक और सामाजिक-दार्शनिक

4. 'प्रगतिशील' शब्द का सटीक अर्थ यहाँ क्या है?
(क) निरंतर विकास और परिवर्तन की ओर अग्रसर
(ख) पुरानी परंपराओं का कठोरता से पालन करने वाला
(ग) सुधारों का विरोध करने वाला और यथास्थिति में रहने वाला
(घ) अतीत के गौरव का स्मरण करने वाला और पुरातनपंथी

5. लेखक के अनुसार जीवन को 'प्रगतिशील' क्यों माना गया है?
(क) क्योंकि महान सुधारकों ने समाज को हमेशा के लिए बदल दिया
(ख) क्योंकि नए-नए दोष और नए-नए सुधार का चक्र निरंतर चलता रहता है
(ग) क्योंकि दोष कभी उत्पन्न नहीं होते और सुधार टिकाऊ होते हैं
(घ) क्योंकि युवा पीढ़ी हमेशा पुरानी पीढ़ी से बेहतर होती है

उत्तरः
1. (ख) समाज की प्रगति सापेक्ष है और हर युग में नई चुनौतियाँ आती हैं
2. (क) सुधार और दोष की यह चक्रीय प्रक्रिया ही जीवन को प्रगतिशील बनाती है
3. (घ) विचारोत्तेजक और सामाजिक-दार्शनिक
4. (क) निरंतर विकास और परिवर्तन की ओर अग्रसर
5. (ख) क्योंकि नए-नए दोष और नए-नए सुधार का चक्र निरंतर चलता रहता है

अध्याय 3

संवादहीन

1. लेखक परिचय

बुज़ुर्गों के अकेलेपन की मार्मिक संवेदना से जुड़े पाठ 'संवादहीन' के सूत्रधार कहानीकार शेखर जोशी का जन्म सन् 1932 में अल्मोड़ा, उत्तराखंड (तत्कालीन उत्तर प्रदेश) में हुआ था। इनका नाम समकालीन कथा-साहित्य में जीवन-मूल्यों के सच्चे चितेरे के रूप में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। इन्होंने आजीवन अपनी कुशल लेखनी के माध्यम से समाज के यथार्थ, मानवीय विसंगतियों और पशु-पक्षियों के प्रति ममतामयी संबंधों को उकेरकर हिंदी साहित्य को अलंकृत किया है। अपनी इस अनुपम और यथार्थवादी अभिव्यक्ति से इन्होंने हिंदी प्रेमियों को गौरवान्वित किया है। सन् 2022 में इस महान कथाकार का निधन हो गया।

2. पाठ-परिचय

'संवादहीन' शेखर जोशी द्वारा रचित एक संवेदनशील कहानी है जो एक ग्रामीण वृद्ध स्त्री ताई के गहरे अकेलेपन को मार्मिक ढंग से चित्रित करती है। बहू-बेटों के शहर चले जाने के बाद ताई का एकमात्र सहारा उनका तोता मिट्ठू बन जाता है, जो उनके लिए केवल पक्षी नहीं बल्कि ममता और संवाद का जीवंत केंद्र है। दोनों के बीच कभी स्नेहपूर्ण बातचीत है तो कभी प्यारी-सी नोक-झोंक भी। यह कहानी मानव-पशु संबंध के साथ-साथ पलायन, अकेलापन और आदर्श एवं यथार्थ के द्वंद्व को भी गहराई से अभिव्यक्त करती है।

3. पाठ-सारांश

ताई और मिट्ठू का एकाकी जीवन

गाँव के बड़े घर के सूने खंडहर में अब केवल वृद्धा ताई और उनका पहाड़ी तोता 'मिट्ठू' ही एक-दूसरे का सहारा बचे थे। समय के साथ बहू-बेटे शहरों में जा बसे, बेटियाँ ब्याह कर अपनी गृहस्थी में रम गईं और खेती-कारबार पराए हाथों में जाने से नौकर-चाकर भी चले गए। अकेली जान होने के कारण ताई अपने भोजन पर ध्यान नहीं देती थीं, पर घर का सन्नाटा उन्हें काटने को दौड़ता था। ऐसे में गनपत द्वारा लाए गए कुशाग्र बुद्धि मिट्ठू पर ताई की सारी ममता बरस पड़ी और उसकी बातचीत से सूने घर में फिर से रौनक लौट आई।

ताई और मिट्ठू के बीच का मधुर संवाद

सुबह होते ही मिट्ठू 'हर हर गंगे' और 'सीताराम बोल' की रट लगाकर ताई को भोर की झपकी से जगा देता था। ताई लाड़ से उसे निहारकर 'जुग जुग जिओ' का आशीर्वाद देती थीं और काम-काज से थककर जब पूछतीं, "मिट्ठू! अब कैसे कटेगी?" तो मिट्ठू पूरे दम-खम के साथ दिलासा देता, "कटेगी! कटेगी!! कटेगी!!!"। इन बातों से ताई में नए प्राण लौट आते और वे दोपहर में मिट्ठू को अपने बीते हुए वैभवशाली दिनों की कहानियाँ सुनाने लगती थीं।

आपसी नोक-झोंक और वियोग की पीड़ा

ताई और मिट्ठू का संवाद हमेशा प्रेमपूर्ण ही नहीं रहता था, बल्कि कभी-कभी अपनी जिद मनवाने के लिए मिट्ठू पिंजरे में पानी और दाने की कटोरियों को उलट देता था। इस पर खीझकर जब ताई कहतीं, "मर जा!", तो मिट्ठू भी उतनी ही खीझ के साथ वापस कहता था, "मर जा! मर जा! मर जा!"। फिर मान-मनौवल के बाद दोनों की दुनिया पहले की तरह प्रेम से चलने लगती थी। ताई को घड़ी-भर के लिए भी मिट्ठू का वियोग सहन नहीं होता था, इसलिए वे जब कभी बाहर जातीं, तो उसे कँजूस के धन की तरह छिपाकर रखती थीं।

कुंभ-स्नान का धर्म-संकट

एक बार ताई के सामने धर्म-संकट आ खड़ा हुआ, क्योंकि वृद्धावस्था के कारण उन्हें परलोक की चिंता सताने लगी थी और गाँव के कई लोग कुंभ-स्नान के लिए प्रयागराज जा रहे थे। प्रयाग में कुंभ-स्नान का लोभ जहाँ उन्हें खींच रहा था, वहीं मेले की भीड़-भाड़ में मिट्ठू की सुरक्षा की चिंता उन्हें रोक रही थी।

अंत में जगन मास्टर की घरवाली (मास्टराइन) ने ताई के लौटने तक मिट्ठू की देखभाल करने की जिम्मेदारी ले ली। विदा के दिन ताई रोते हुए मिट्ठू को जल्दी लौटने का दिलासा दे रही थीं और मिट्ठू भी 'हर हर गंगे' कहकर उन्हें ढाढस बँधा रहा था।

जगन मास्टर का आदर्श और मिट्ठू की आज़ादी

ताई के जाने के बाद जगन मास्टर के घर में एक अलग ही स्थिति उत्पन्न हो गई। जगन मास्टर स्वतंत्र और आदर्शवादी विचारों के व्यक्ति थे; उन्हें पिंजरे में बंद मिट्ठू को देखकर गहरी बेचैनी और आत्मग्लानि होती थी।

जब उनसे यह यातना असह्य हो गई, तो अपने पाप का प्रायश्चित करने के लिए उन्होंने एक दिन कमरा बंद करके

पिंजरे का दरवाजा खोल दिया और जमीन पर दाने बिखेर दिए। मिट्ठू धीरे-धीरे दाना चुगते हुए बाहर आया और पिंजरे की छत पर बैठ गया। अब यह उनका रोज़ का नियम बन गया और वे मिट्ठू की आज़ादी का सुख स्वयं भोगने लगे।

मिट्ठू का उड़ जाना और गाँव वालों की फिक्र

यह क्रम चल ही रहा था कि एक दिन मिट्ठू की नज़र खुले रोशनदान पर पड़ गई और वह उड़कर वहाँ जा बैठा। जगन मास्टर जब तक अनाज लेकर उसे बुलाते, तब तक मिट्ठू रोशनदान से बाहर खुली दुनिया में उड़ चुका था, जिससे आदर्शवादी जगन मास्टर के होश उड़ गए।

जगन मास्टर बाग में 'मिट्ठू आ!' पुकारते हुए पसीना-पसीना होकर दौड़ते रहे, पर मिट्ठू एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उड़ता चला गया। ताई के लौटने का दिन पास देखकर गाँव वाले चिंतित हो गए, इसलिए गनपत के सुझाव पर मिट्ठू की ही शक्ल का एक दूसरा एवजी तोता लाया गया ताकि ताई को भ्रम में रखा जा सके।

नए तोते को रटाने का प्रयास

अब जगन मास्टर की जिंदगी का एक नया और कठिन दौर शुरु हुआ। वे खाना-पीना छोड़कर घंटों पिंजरे के सामने बैठ जाते और उस नए तोते को 'राम राम सीताराम' और 'हर गंगे' रटाने के लिए कड़ी मेहनत करने लगे। वे चाहते थे कि गंगा-स्नान कर लौटी ताई को कोई संदेह न हो और वे तोते के मुँह से ईश्वर का नाम सुन सकें। बोलते-बोलते जगन मास्टर का गला सूख जाता था और कभी-कभी वे खीझकर कहते थे, "मर जा!"। परंतु वह नया तोता ताई के मिट्ठू जैसा कुशाग्र नहीं था; वह केवल पिंजरे के अंदर से टुकुर-टुकुर उन्हें देखता रहता था।

ताई की वापसी व संवादहीन सन्नाटा

कुंभ-स्नान से लौटकर ताई सीधे जगन मास्टर के घर पहुँचीं। वे उम्मीद कर रही थीं कि उन्हें देखते ही मिट्ठू हमेशा की तरह 'राम राम सीताराम' की रट लगाकर आसमान सिर पर उठा लेगा और पिंजरे में कूद-फाँद मचाएगा।

परंतु वहाँ पिंजरे में बैठे उस नए एवजी तोते ने ताई को देखकर कोई हरकत नहीं की; वह केवल चुपचाप इधर-उधर ताकता रहा। ताई अपने मिट्ठू को गुहार लगाकर थक गईं, लेकिन उनके सूनेपन का सच्चा साथी अब आज़ाद होकर न जाने किन अमराइयों में घूम रहा था और पीछे पिंजरे में केवल एक संवादहीन सन्नाटा रह गया था।

4. कठिन शब्दार्थ

पृष्ठ 46

1. प्राणी – जीव, चेतनायुक्त जीवधारी
2. खंडहर – टूटा-फूटा मकान, भग्नावशेष
3. ढोर – पालतू गोजातीय पशुओं के लिए प्रयुक्त शब्द, चौपाया, डंगर
4. गृहस्थी – घर-बार, पारिवारिक जीवन
5. जून – वक्त, वेला, दिन का अर्द्ध भाग, ईसवी सन् का छठा महीना
6. भाँय-भाँय – सूनापन का अहसास कराने वाली डरावनी आवाज़, सन्नाटा
7. ममता – अपनापन, स्नेह, लाड
8. नियमपूर्वक – नियम के अनुसार, रोज़ाना
9. तकाजा – आवश्यकता, इच्छा, अनुरोध, कोई काम करने के लिए किसी से बार-बार कहना, माँगना
10. कुशाग्र – तीव्र, कुश की नोंक जैसा तीक्ष्ण
11. सटीक – बिल्कुल ठीक, उपयुक्त
12. रौनक – चहल-पहल, शोभा
13. गुलजार – चहल-पहल से भरा, प्रफुल्लित

पृष्ठ 47

14. पौ फटना – प्रातःकाल का प्रकाश, तड़का होना
15. अचकचाना – भौचक्का होना, चौंक उठना
16. निहारकर – देखकर, टकटकी लगाकर देखना
17. निहाल – प्रसन्न, हर तरह से तृप्त
18. दिलासा – सांत्वना, ढाढस
19. अलस – आलस्य से भरा, शिथिल
20. सत्ता – अस्तित्व, यथार्थता, अधिकार, प्रभुत्व, प्रभुसत्ता
21. गाथा – कहानी, कथा
22. अतल – अथाह, तलहीन
23. प्रसंग – प्रकरण, संबंध, विषय का तारतम्य, एक प्रकार की संगति, लगाव

पृष्ठ 48

24. रोबीला – प्रभावशाली
25. गुणग्राहकता – गुणों को पहचानने की योग्यता
26. तुनकमिजाज – नाजुक मिजाज, जो झटपट या छोटी-छोटी बातों पर चिड़चिड़ा हो
27. टीका-टिप्पणी – आलोचना, व्याख्या, राय प्रकट करना
28. खीझकर – चिढ़कर, झुंझलाकर
29. वियोग – विच्छेद, विरह, अभाव, छुटकारा
30. साँकल – जंजीर, सिकड़ी, श्रृंखला
31. टोह – खोज, अनुसंधान, पता, देखभाल
32. देहरी/देहली – दरवाजे की चौखट में नीचे वाली लकड़ी जिसे लाँघकर घर में घुसते-निकलते हैं, देहली पर रखा हुआ दीया
33. पशोपेश – असमंजस, दुविधा
34. सहमत – रज़ामंद, एक विचार का होना

पृष्ठ 49

35. मिजाज – स्वभाव, तबीयत, प्रकृति, आदत, गर्व, घमंड
36. बाधा – रुकावट, अड़चन
37. यातना – तीव्र कष्ट, पीड़ा
38. असह्य – जो सहन न किया जा सके
39. प्रायश्चित – शोधन, वह शास्त्र-विहित कर्म जो पाप का मार्जन करने के लिए किया जाए

पृष्ठ 50

40. कौतूहलवश – उत्सुकता, अवांछित कौतूहल, अचंभे के साथ
41. लक्ष्य – उद्देश्य, निशाना
42. गुहार – पुकार, सहायता की याचना
43. मशगूल – कार्यरत, किसी काम या शगल में लगा हुआ
44. आशंका – डर, अंदेशा
45. भ्रम – धोखा, गलतफ़हमी
46. अर्जन – कमाना, संग्रह करना
47. फ़िक्र – चिंता, सोच

पृष्ठ 51

48. आग्नेय – अग्नि से उत्पन्न, अग्नि जैसा, अग्नि-संबंधी, अग्नि को अर्पित
49. एवजी – बदले में काम करने वाला, स्थानापन्न
50. हरकत – हलचल, गति
51. अमराइयों – आम के बाग

5. पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. कहानी में ताई और मिट्ठू का संबंध किस भाव को दर्शाता है?
(क) परोपकार और त्याग
(ख) ममता और स्नेह
(ग) करुणा और क्रोध
(घ) जिज्ञासा और सहायता

उत्तरः
(ख) ममता और स्नेह
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि ताई मिट्ठू के साथ एक माँ की तरह व्यवहार करती हैं। वे मिट्ठू के लिए नियमपूर्वक दाल-भात बनाती हैं, हरी मिर्चें और अमरूद लाने की परवाह करती हैं, विदा के समय रोती हैं और जल्दी लौटने का दिलासा देती हैं। यह परोपकार नहीं बल्कि गहरी ममता है। मिट्ठू भी ताई को दिलासा देता है — "कटेगी! कटेगी!!" — यह उनके बीच के आत्मीय स्नेह का प्रमाण है।

2. जगन मास्टर द्वारा मिट्ठू को पिंजरे से बाहर निकालना किस भावना या मूल्य का संकेत देता है?
(क) अनुशासन और परंपरा
(ख) उदासीनता और असावधानी
(ग) आत्मगौरव और विद्रोह
(घ) करुणा और नैतिकता

उत्तरः
(घ) करुणा और नैतिकता
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि जगन मास्टर स्वतंत्र विचारों के आदमी थे। पिंजरे में बंद मिट्ठू को देखकर उन्हें बेचैनी होती थी। उन्होंने सोचा कि एक जीव को बंधन में रखना नैतिक रूप से उचित नहीं है। उन्होंने इसे 'पाप' कहा और मिट्ठू को खुली हवा देना अपने 'पाप का प्रायश्चित' बताया। यह करुणा और नैतिक चेतना का स्पष्ट संकेत है।

3. मिट्ठू का उड़ जाना किस विचार को प्रस्तुत करता है?
(क) भोजन की खोज
(ख) प्रेम की आकांक्षा
(ग) स्वतंत्रता की चाह
(घ) पक्षियों में सम्मान की प्रवृत्ति

उत्तरः
(ग) स्वतंत्रता की चाह
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि मिट्ठू ने खुले रोशनदान को देखते ही बाहरी दुनिया की ओर ध्यान दिया और उड़ गया। जगन मास्टर ने उसे अनाज का प्रलोभन भी दिया, पर मिट्ठू ने उसे अनदेखा किया। वह एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर जाकर अपने पंख तौलता रहा। यह सब स्वतंत्रता की गहरी चाह को दर्शाता है — बंधन में भोजन से अधिक आकर्षक था खुला आकाश।

4. ताई के जीवन के दुख का मुख्य कारण क्या था?
(क) सम्मान और प्रतिष्ठा में कमी आना
(ख) परिवार से दूरी और संवाद का अभाव
(ग) आर्थिक विपन्नता और निर्धनता
(घ) मिट्ठू के प्रति प्रेम और संवाद

उत्तरः
(ख) परिवार से दूरी और संवाद का अभाव
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि कहानी में स्पष्ट है कि ताई के पास पहले पूत-परिवार, बहू-बेटियाँ, नौकर-चाकर सब थे। धीरे-धीरे बहू-बेटे शहर चले गए, बेटियाँ ब्याह कर गईं। ताई की 'पेट की समस्या' कभी समस्या नहीं रही, पर 'सूने घर की भाँय-भाँय जैसे उन्हें काटने को दौड़ती थी।' यही संवादहीनता और अकेलापन उनके दुख का मूल कारण था।

5. कहानी में मानव-समाज में व्याप्त किस विसंगति को उजागर किया गया है?
(क) मजबूरी
(ख) कर्मपरायणता
(ग) अकेलापन
(घ) संवादधर्मता

उत्तरः
(ग) अकेलापन
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि यह कहानी आधुनिक समाज की उस विसंगति को उजागर करती है जिसमें शहरीकरण और पलायन के कारण परिवारों के बुजुर्ग अकेले रह जाते हैं। ताई

जैसी वृद्ध महिला को एक तोते में संगति ढूँढनी पड़ती है। जब वह तोता भी चला जाता है, तो उनका सूनापन और गहरा हो जाता है। यह 'संवादहीन' जीवन ही कहानी की केंद्रीय विसंगति है।

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. "भगवान! कैसे नैया पार लगेगी?" ताई इस वाक्य में किस 'नैया' की बात कर रही हैं? वे यह बात क्यों कह रही हैं?

   उत्तरः

   ताई इस वाक्य में अपने जीवन की 'नैया' की बात कर रही हैं। 'नैया पार लगाना' एक लोक-प्रचलित मुहावरा है जिसका अर्थ है — जीवन की कठिनाइयों से पार पाना, जीवन की अंतिम यात्रा सुगम होना।

   ताई इस वाक्य को इसलिए कह रही हैं क्योंकि उनकी जीवन-स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई है। जो बड़ा घर कभी सुख-समृद्धि से भरा था, वह अब सूना खंडहर बन गया है। बहू-बेटे शहर चले गए, बेटियाँ अपनी गृहस्थी में रम गईं। अकेलेपन और वृद्धावस्था की कठिनाइयों से घिरी ताई भगवान से यही पूछती हैं कि इस जीवन का बाकी सफर कैसे पूरा होगा। मिट्ठू उन्हें उत्तर देता है — "राम-राम कहो, सीताराम कहो" — जो उनकी धार्मिक आस्था को भी सहारा देता है।

2. "धीरे-धीरे सब पराए हाथ में चला गया।" इस वाक्य में किस घटना की ओर संकेत किया गया है?

   उत्तरः

   इस वाक्य में ताई के जीवन में आई उस सामाजिक-आर्थिक टूटन की ओर संकेत किया गया है जो शहरीकरण और पलायन के कारण हुई।

   ताई के बड़े घर में पहले खेती-बाड़ी, कारबार, नौकर-चाकर, गाय-ढोर सब थे। धीरे-धीरे बहू-बेटे गाँव का मोह छोड़कर शहरों के हो गए। बेटियाँ विवाह के बाद अपनी गृहस्थी में चली गईं। जब घर में बड़े-बुजुर्ग न रहे, खेती-बाड़ी सँभालने वाला न रहा, तो धीरे-धीरे सारी संपत्ति — जमीन, कारबार — दूसरों के हाथों में चली गई या उपेक्षित हो गई। यह वाक्य ग्रामीण समृद्धि के क्षय और परिवारों के बिखरने की दर्दनाक कहानी है।

3. "ताई की सारी ममता मिट्ठू पर बरस पड़ी।" क्यों?

   उत्तरः

   ताई की सारी ममता मिट्ठू पर इसलिए बरस पड़ी क्योंकि उनके जीवन में वह सब खत्म हो गया था जिस पर वे अपना स्नेह लुटाती थीं।

   जो ताई कभी बहू-बेटों, पोते-पोतियों और पूरे घर-परिवार की देखभाल करती थीं, वे अब पूरी तरह अकेली थीं। उनका हृदय स्नेह से भरा था, पर उसे प्रकट करने का कोई पात्र न था। जब गनपत एक प्यारा-सा पहाड़ी तोता लाया, तो वे वर्षों की दबी हुई ममता एक साथ मिट्ठू पर उड़ेल बैठीं।

   जो ताई अपनी खातिर चूल्हा जलाने में आलस्य करती थीं, वही अब मिट्ठू के लिए नियमपूर्वक दाल-भात बनाने लगीं। यह उनकी दीर्घकाल से दबी-घुटी ममता का प्रस्फुटन था।

4. "अब ताई को इस बात की पूरी जानकारी रहने लगी थी कि किसके खेत में हरी मिर्चें तैयार हो गई हैं और किस पेड़ में फसल के आखिरी अमरुद बचे हैं।" इस वाक्य द्वारा ताई के व्यक्तित्व में आए परिवर्तनों के विषय में क्या-क्या पता चलता है?

   उत्तरः

   इस वाक्य से ताई के व्यक्तित्व में आए निम्नलिखित परिवर्तन स्पष्ट होते हैं:

   1. **सक्रियता का जन्म**: जो ताई अकेलेपन में निष्क्रिय और उदासीन थीं, अब मिट्ठू की देखभाल के लिए सक्रिय हो गई थीं। वे आस-पास के खेत-बगीचों की खबर रखने लगीं।
   2. **जागरूकता**: मिट्ठू की पसंद की चीजें — हरी मिर्चें, अमरुद — ढूँढने के लिए उन्होंने पूरे गाँव के खेतों और पेड़ों का हाल जानना शुरु किया। यह उनकी नई चेतना और रुचि को दर्शाता है।
   3. **जीवन में उद्देश्य**: मिट्ठू ने उन्हें जीने का एक नया कारण दे दिया। अब उनका जीवन सिर्फ जीना नहीं बल्कि किसी के लिए जीना था।
   4. **ममता की अभिव्यक्ति**: मिट्ठू के लिए सर्वोत्तम भोजन जुटाना ताई की उसी पुरानी ममता का नया रुप था जो बहू-बेटों के जाने के बाद अव्यक्त हो गई थी।
   5. **सामाजिक संपर्क**: खेत-बगीचों की जानकारी रखने से ताई का पड़ोसियों से भी संपर्क बना रहने लगा।

5. "जगन मास्टर दूसरे मिजाज के आदमी थे।" जगन मास्टर का व्यक्तित्व कैसा था? कहानी में से उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

   उत्तरः

   जगन मास्टर का व्यक्तित्व स्वतंत्र विचारों वाला, करुणाशील, नैतिक और सिद्धांतप्रिय था। कहानी से निम्नलिखित उदाहरण उनके व्यक्तित्व को स्पष्ट करते हैं:

   1. **सिद्धांतप्रिय**: उन्होंने अपने कुछ नियम-सिद्धांत बना रखे थे और भरसक कोशिश करते थे कि उनके कारण किसी को कष्ट न पहुँचे।
   2. **दूसरों की स्वतंत्रता का सम्मान**: वे दूसरों की स्वतंत्रता पर बाधा नहीं डालना चाहते थे। इसीलिए पिंजरे में बंद मिट्ठू को देखकर उन्हें बेचैनी होती थी।

3. **करुणाशील**: जब-जब मिट्ठू को देखते, उसकी यातना असह्य लगती। उन्होंने पिंजरे का दरवाजा खोलकर उसे खुली हवा देने का प्रयास किया।
4. **आत्म-आलोचक**: वे मिट्ठू को पिंजरे में रखे जाने को अपना 'पाप' मानते थे और प्रायश्चित करना चाहते थे। अपनी पत्नी की बुद्धि पर तरस खाते और स्वयं को भी दोषी अनुभव करते।
5. **जिद्दी किंतु सकारात्मक**: जब मिट्ठू उड़ गया, तो वे घंटों पिंजरे के सामने बैठकर नए तोते को सिखाने का प्रयास करते रहे ताकि ताई को कष्ट न हो।

6. कहानी का शीर्षक 'संवादहीन' किसके लिए सबसे अधिक सार्थक प्रतीत होता है— ताई, जगन मास्टर, मिट्ठू या नया तोता? कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः

'संवादहीन' शीर्षक सबसे अधिक ताई के लिए सार्थक प्रतीत होता है, यद्यपि यह पूरी कहानी पर भी लागू होता है।

ताई के लिए सार्थकता: ताई का जीवन संवाद के अभाव से परिभाषित है। बहू-बेटे शहर चले गए, बेटियाँ ब्याह कर गईं — सब छोड़ गए। ताई के लिए संसार से संवाद का एकमात्र माध्यम मिट्ठू बन गया था। जब मिट्ठू भी चला गया, तो एवजी मिट्ठू ने उन्हें देखकर कोई हरकत नहीं की — इस क्षण ताई की 'संवादहीनता' सबसे गहरी हो गई। वे गुहार करती रहीं पर उनका "सूनेपन का साथी" न जाने किन अमराइयों में घूम रहा था।

अन्य पात्रों के संदर्भ में: जगन मास्टर और उनकी पत्नी के बीच भी पर्याप्त संवाद नहीं है — पत्नी ने बिना सलाह के मिट्ठू रखने का वचन दे दिया। नया तोता भी संवादहीन है — वह बोलना नहीं जानता।

अंततः 'संवादहीन' शीर्षक उस सामाजिक यथार्थ का प्रतीक है जिसमें मनुष्य अपनों से कटकर संवाद की तलाश में है।

7. "अब ये ही दो प्राणी गाँव के बीच में स्थित बड़े घर के उस सूने खंडहर में एक-दूसरे को सहारा देने के लिए रह गए थे।" ताई के बड़े से घर को सूना खंडहर क्यों कहा गया होगा?

उत्तरः

ताई के बड़े घर को 'सूना खंडहर' इसलिए कहा गया है क्योंकि वह घर भौतिक और भावनात्मक दोनों दृष्टि से उजाड़ हो गया था:

1. **भौतिक रूप से**: बड़ा घर होने के बावजूद उसमें कोई न था। खेती-बाड़ी बंद हो गई, कारबार दूसरों के हाथ में चला गया, नौकर-चाकर चले गए। घर की दीवारें जर्जर होने लगी होंगी। अकेली ताई बड़े घर का रख-रखाव नहीं कर सकती थीं।
2. **भावनात्मक रूप से**: घर में पहले जो चहल-पहल थी — बहू-बेटे, बच्चों का शोर, त्योहार, दावतें, मेहमान — सब जाते रहे। उनकी यादें तो थीं, पर वास्तविकता में 'भाँय-भाँय' थी।
3. **'खंडहर' का प्रतीकार्थ**: खंडहर वह होता है जो कभी समृद्ध था, पर अब बीत चुके गौरव का अवशेष मात्र है। ताई का घर भी कभी जमींदारी की शान में था, अब केवल उस समृद्धि की याद बचती है।

इस प्रकार 'सूना खंडहर' एक शब्द-चित्र है जो ताई की दशा को और भी मर्मस्पर्शी बना देता है।

मेरे प्रश्न

नीचे कुछ उत्तर और उनके दो-दो प्रश्न दिए गए हैं। पहचानिए कि इनमें से कौन-सा प्रश्न उस उत्तर के लिए उपयुक्त है?

1. उत्तर: ताई के अकेलेपन को मिट्ठू ने सहारा दिया।
प्रश्न क: ताई के सूनेपन को किसने सहारा दिया था?
प्रश्न ख: ताई को मिट्ठू किसने भेंट में दिया था?

उत्तरः

प्रश्न क उपयुक्त है — "ताई के सूनेपन को किसने सहारा दिया था?"

क्योंकि उत्तर में कहा गया है कि मिट्ठू ने ताई के अकेलेपन को सहारा दिया। प्रश्न क इसी भाव को पूछ रहा है। प्रश्न ख अलग बात पूछ रहा है — कि मिट्ठू को कौन लाया (जो गनपत था), वह इस उत्तर से मेल नहीं खाता।

2. उत्तर: ताई के लौटने से पहले मिट्ठू उड़ गया था।
प्रश्न क: ताई के लौटने के बाद मिट्ठू कहाँ चला गया था?
प्रश्न ख: ताई के प्रयागराज से लौटने से पहले क्या अनहोनी हुई?

उत्तरः

प्रश्न ख उपयुक्त है — "ताई के प्रयागराज से लौटने से पहले क्या अनहोनी हुई?"

क्योंकि उत्तर में बताया गया है कि ताई के लौटने से पहले मिट्ठू उड़ गया था — यह एक 'अनहोनी' घटना थी। प्रश्न क तथ्यात्मक रूप से गलत है क्योंकि मिट्ठू ताई के लौटने से पहले ही उड़ा था।

3. उत्तर: गाँववालों को डर था कि ताई को सच्चाई जानकर सदमा लगेगा।
प्रश्न क: गाँववाले ताई की वापसी से क्यों चिंतित थे?
प्रश्न ख: गाँववाले मिट्ठू के उड़ने से खुश क्यों थे?

उत्तरः

प्रश्न क उपयुक्त है — "गाँववाले ताई की वापसी से क्यों चिंतित थे?"

क्योंकि उत्तर में गाँववालों की चिंता का कारण यही था कि ताई को सच पता चलने पर उन्हें सदमा लगेगा। प्रश्न ख का उत्तर कहानी से मेल नहीं खाता — गाँववाले मिट्ठू के उड़ने से खुश नहीं थे, बल्कि चिंतित थे।

4. उत्तर: कहानी का शीर्षक 'संवादहीन' जीवन के मौन का प्रतीक है।
प्रश्न क: कहानी का शीर्षक 'संवादहीन' क्यों उपयुक्त नहीं है?
प्रश्न ख: शीर्षक 'संवादहीन' का क्या भावार्थ है?

उत्तरः
प्रश्न ख उपयुक्त है — "शीर्षक 'संवादहीन' का क्या भावार्थ है?"

क्योंकि उत्तर में शीर्षक के भावार्थ की व्याख्या की गई है — जीवन का मौन। प्रश्न क यह पूछता है कि शीर्षक क्यों उपयुक्त नहीं है, जो उत्तर के विपरीत है।

मेरे अनुभव मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपने अनुभवों के आधार पर दीजिए—

1. "कभी-कभार गाँव में थोड़ी देर के लिए भी न्यौते-बुलावे में जातीं, तो दस बार खिड़की-दरवाजों की साँकलें टोहकर देखतीं..." ताई की तरह जब आप अपने घर या परिवार से दूर होते हैं, तो किसी वस्तु या व्यक्ति की चिंता आपको भीतर से कैसे परेशान करती है?

उत्तरः
ताई की तरह मुझे भी घर से दूर जाने पर चिंताएँ सताती हैं।

एक बार जब मैं स्कूल ट्रिप पर गया/गई, तो घर पर छोड़े हुए अपने छोटे भाई/बहन की चिंता बनी रही। रात को नींद कम आई क्योंकि बार-बार मन में विचार आता था कि वे खाना खाएंगे या नहीं, कहीं बीमार तो नहीं होंगे।

इसी तरह, एक बार हमने घर में एक छोटा पौधा लगाया था। परीक्षा के दिनों में जब मैं पढ़ाई में व्यस्त रहा/रही, तो उस पौधे को पानी देना भूल गया/गई — और वह सूख गया। उस दिन से जब भी बाहर जाता/जाती हूँ, पौधे की चिंता रहती है।

यह चिंता एक गहरे लगाव और जिम्मेदारी की भावना से उत्पन्न होती है। जितना प्रेम होता है, उतनी ही दूर रहने पर बेचैनी होती है — ताई का मिट्ठू के प्रति यही भाव था।

2. "आखिर वह भी तो बोलता-बतियाता प्राणी है।" क्या आप मानते हैं कि पशु-पक्षियों में भी संवेदनाएँ होती हैं? अपने किसी अनुभव का वर्णन करते हुए लिखिए।

उत्तरः
हाँ, मैं मानता/मानती हूँ कि पशु-पक्षियों में भी संवेदनाएँ होती हैं।

हमारे घर में एक कुत्ता था जिसका नाम 'शेरु' था। जब कभी परिवार में कोई बीमार पड़ता था, तो शेरु उसके पास जाकर लेट जाता और बार-बार उसे चाटने लगता। जब सब ठीक होते, तो वह खुशी से भागता-दौड़ता।

एक बार जब मैं परीक्षा में असफल होने के कारण बहुत उदास था/थी और एकांत में बैठा/बैठी था/थी, तो शेरु आकर मेरे पाँवों के पास बैठ गया और मेरे हाथ को अपने सिर से छुआया। लगा जैसे वह कह रहा हो — "मैं यहाँ हूँ।"

यह अनुभव बताता है कि पशु-पक्षियों में भी भावनाएँ होती हैं — वे खुशी, दुख, प्रेम और दर्द को महसूस कर सकते हैं। इसीलिए मिट्ठू ताई के साथ न सिर्फ बोलता था, बल्कि उनकी भावनाओं को भी समझता था।

3. "गनपत ने ही एक सुझाव दिया कि मिट्ठू की ही सूरत-शक्ल का एक दूसरा तोता ले आया जाए ताकि ताई को भ्रम में रखा जा सके..." ताई को भ्रम में रखना उचित था या नहीं? तर्क सहित अपने विचार लिखिए।

उत्तरः
ताई को भ्रम में रखने का प्रश्न जटिल है — इसके दोनों पक्षों पर विचार करना होगा।

भ्रम में रखना उचित था — इस पक्ष में तर्क:

1. ताई वृद्ध और भावनात्मक रूप से कमज़ोर थीं। मिट्ठू के चले जाने की सच्चाई उनके लिए असह्य होती।
2. गाँव वाले ताई के प्रति प्रेम और सहानुभूति से यह कर रहे थे — कोई स्वार्थ नहीं था।
3. एक वृद्ध महिला को अनावश्यक सदमे से बचाना मानवीय कर्तव्य है।

भ्रम में रखना उचित नहीं था — इस पक्ष में तर्क:

1. सच्चाई देर-सबेर सामने आती ही है। जब ताई ने एवजी मिट्ठू की निष्क्रियता देखी, तो वे समझ गईं।
2. भ्रम में रखना एक प्रकार का छल है जो व्यक्ति के आत्म-सम्मान को ठेस पहुँचा सकता है।
3. ताई को सच बताकर उन्हें भावनात्मक रूप से तैयार किया जा सकता था।

मेरा मत: इस परिस्थिति में भ्रम में रखना एक करुणापूर्ण प्रयास था, पर अंततः वह काम नहीं आया। बेहतर होता कि धीरे-धीरे सच्चाई बताई जाती और साथ में सांत्वना भी दी जाती।

4. "ताई सोच रही थीं कि उन्हें देखते ही मिट्ठू 'राम राम सीताराम' की रट लगाकर आसमान सिर पर उठा लेगा।" क्या कभी ऐसा हुआ कि आपने सोचा कुछ और, हुआ कुछ और? उस अनुभव को लिखिए।

उत्तरः
हाँ, ऐसा कई बार हुआ है।
एक बार कक्षा में एक प्रतियोगिता थी जिसमें मैंने अपना नाम सर्वोत्तम प्रस्तुति के लिए निश्चित मान लिया था। मैंने घर आकर परिवार को बता दिया कि मैं जीतूँगा/जीतूँगी। अगले दिन जब परिणाम आया, तो मुझे नहीं, बल्कि मेरे एक अन्य सहपाठी को पुरस्कार मिला।

जो अपेक्षा थी, वह पूरी नहीं हुई। उस समय बहुत निराशा हुई। परंतु बाद में समझ आया कि जीवन हमेशा हमारी कल्पना के अनुसार नहीं चलता।

ताई का अनुभव इससे भी अधिक गहरा था — उन्होंने मिट्ठू की उत्साही प्रतिक्रिया की कल्पना की थी, पर एवजी तोते की चुप्पी ने उन्हें अंदर से तोड़ दिया।

5. "मिट्ठू अब पिंजरे में रहने के इतने आदी हो चुके थे कि उन्होंने बाहर आने की कोई इच्छा नहीं प्रकट की।" क्या प्राणी सचमुच पिंजरे में रहने के आदी हो सकते हैं? अपने उत्तर के समर्थन में अपने आस-पास से उदाहरण भी दीजिए।

उत्तरः
हाँ, प्राणी सचमुच पिंजरे में रहने के आदी हो सकते हैं। यह एक वैज्ञानिक और अनुभवजन्य सत्य है।
आस-पास के उदाहरण:

1. **चिड़ियाघर के जानवर**: जो जानवर जन्म से या लंबे समय से पिंजरे में हैं, उन्हें जब खुले जंगल में छोड़ा जाता है, तो वे अक्सर खुद को असुरक्षित महसूस करते हैं और वापस बंदी जीवन में रहना पसंद करते हैं।
2. **घरेलू पक्षी**: हमारे पड़ोस में एक तोता था जो वर्षों से पिंजरे में था। एक बार गलती से पिंजरा खुल गया। वह थोड़ी देर बाहर रहा और फिर खुद ही वापस आ गया।
3. **मानवीय संदर्भ**: यह बात मनुष्य पर भी लागू होती है। जो लोग वर्षों से एक ही दिनचर्या, एक ही स्थान पर रहते हैं, वे बदलाव से डरने लगते हैं।

मिट्ठू के संदर्भ में यह दिखाता है कि लंबे समय का बंधन स्वतंत्रता की इच्छाशक्ति को कुंद कर देता है। परंतु जब उसने रोशनदान से बाहरी दुनिया देखी, तो भीतर की स्वतंत्रता-प्रवृत्ति जाग उठी और वह उड़ गया।

विधा से संवाद

कहानी का सौंदर्य

1. संवादहीन कहानी में अनेक विशेष बिंदु हैं जो इसे प्रभावपूर्ण बनाते हैं। नीचे कहानी के कुछ विशेष बिंदु और उनके उदाहरण दिए गए हैं। आप भी कहानी से इसी प्रकार के एक-एक उदाहरण खोजकर लिखिए—

उत्तरः

विशेष बिंदु	**अर्थ**	**उदाहरण (पुस्तक से)**
चित्रात्मकता (दृश्य बिंब)	शब्दों के माध्यम से पाठक के मन में स्पष्ट और जीवंत चित्र या छवियाँ बनाना।	मिट्ठू एक डाल से दूसरी डाल पर, एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर अपने पंख तौलने में मशगूल रहे।
संवादात्मकता	कथ्य को आगे बढ़ाने के लिए, पात्रों के विचार, भाव आदि व्यक्त करने के लिए बातचीत और संवादों का प्रयोग।	"राम-राम कहो, सीताराम कहो।"
पुनरुक्ति	शब्दों की बार-बार पुनरावृत्ति से भाव की तीव्रता।	"कटेगी! कटेगी!! कटेगी!!!"
अतिशयोक्ति	किसी पात्र, घटना, भाव या वस्तु का वर्णन इतना बढ़ाकर करना कि वह असंभव या अविश्वसनीय लगे।	रेलगाड़ी में उसका भी टिकट लगेगा, आखिर वह भी तो बोलता-बतियाता प्राणी है।
लोकधर्मी भाषा	ग्रामीण, सहज, बोल-चाल की भाषा।	भगवान! कैसे नैया पार लगेगी?
प्रश्नोत्तर शैली	पात्रों या लेखक द्वारा प्रश्न पूछना।	मिट्ठू! अब कैसे कटेगी?

उत्तरः

विशेष बिंदु	**अर्थ**	**उदाहरण (पुस्तक से)**	**मेरा खोजा उदाहरण**
चित्रात्मकता (दृश्य बिंब)	शब्दों के माध्यम से पाठक के मन में स्पष्ट और जीवंत चित्र या छवियाँ बनाना।	मिट्ठू एक डाल से दूसरी डाल पर, एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर अपने पंख तौलने में मशगूल रहे।	"ताई अचकचाकर उठ बैठतीं। लाड़ से मिट्ठू को निहारकर आशीष देतीं।"
संवादात्मकता	कथ्य को आगे बढ़ाने के लिए, पात्रों के विचार, भाव आदि व्यक्त करने के लिए बातचीत और संवादों का प्रयोग।	"राम-राम कहो, सीताराम कहो।"	"मिट्ठू! अब कैसे कटेगी?" — "कटेगी! कटेगी!! कटेगी!!!"
पुनरुक्ति	शब्दों की बार-बार पुनरावृत्ति से भाव की तीव्रता।	"कटेगी! कटेगी!! कटेगी!!!"	"मर जा! मर जा! मर जा!!"
अतिशयोक्ति	किसी पात्र, घटना, भाव या वस्तु का वर्णन इतना बढ़ाकर करना कि वह असंभव या अविश्वसनीय लगे।	रेलगाड़ी में उसका भी टिकट लगेगा, आखिर वह भी तो बोलता-बतियाता प्राणी है।	"अकेले मिट्ठू क्या उड़ें, आदर्शवादी जगन मास्टर के हाथों के सभी तोते उड़ गए।"

लोकधर्मी भाषा	ग्रामीण, सहज, बोल-चाल की भाषा।	भगवान! कैसे नैया पार लगेगी?	"कंजूस के धन की तरह मिट्ठू को छिपाकर रखतीं।"
प्रश्नोत्तर शैली	पात्रों या लेखक द्वारा प्रश्न पूछना।	मिट्ठू! अब कैसे कटेगी?	"ताई पशोपेश में पड़ गईं।"

कहानी का अंत

1. किसी कहानी का अंत अनेक प्रकार से हो सकता है जैसे—
   1. सुखांत — जब कहानी का अंत प्रसन्नता, सफलता से होता है।
   2. दुखांत — जब कथा का अंत दुख, वियोग, मृत्यु या हानि से होता है।
   3. मुक्त अंत — जब कहानी स्पष्ट रुप से खत्म नहीं होती, बल्कि सोचने के लिए छोड़ दी जाती है।
   4. अप्रत्याशित अंत — जब अंत अचानक और अप्रत्याशित रूप से सामने आता है।
   5. यथार्थवादी अंत — जब कहानी का अंत जीवन की सच्चाई जैसा लगे।
   6. प्रेरणात्मक अंत — जब कहानी के अंत में कोई प्रेरणा या सकारात्मक सोच दी जाए।
   7. व्यंग्यात्मक अंत — जब कहानी का अंत व्यंग्य या कटाक्ष से किसी सत्य को प्रकट करता है।

   आपके अनुसार 'संवादहीन' कहानी के अंत को किस श्रेणी में रखा जा सकता है? अपने उत्तर के कारण भी बताइए। आप इस कहानी का नया अंत किस प्रकार करना चाहेंगे?

   उत्तरः

   'संवादहीन' कहानी के अंत को दुखांत और मुक्त अंत — दोनों श्रेणियों में रखा जा सकता है।

   दुखांत इसलिए: ताई जब कुंभ-स्नान से लौटीं, तो उन्हें अपेक्षा थी कि मिट्ठू उनका उत्साह से स्वागत करेगा। पर एवजी तोते ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। ताई अपने मिट्ठू को गुहार करती रह गईं पर वह न आया। उनका "सूनेपन का साथी न जाने किन अमराइयों में घूम रहा होगा" — यह वाक्य गहरी उदासी और वियोग को व्यक्त करता है।

   मुक्त अंत इसलिए: कहानी यह नहीं बताती कि आगे क्या होगा — क्या ताई को सच पता चलेगा, क्या मिट्ठू वापस आएगा, क्या ताई एवजी तोते को अपना लेंगी? यह सब पाठक की कल्पना पर छोड़ दिया गया है।

   नया अंतः

   मेरे अनुसार कहानी का नया अंत इस प्रकार हो सकता है: ताई जब एवजी मिट्ठू की चुप्पी देखकर उदास हो गईं, तो उन्होंने उसे पिंजरे से बाहर निकाला और गले लगाकर रोने लगीं। उसी समय बाहर से एक परिचित आवाज़ आई — "राम-राम कहो! सीताराम कहो!" ताई ने आँखें उठाईं — बरामदे की मुँडेर पर असली मिट्ठू बैठा था। शायद वह भी ताई को ढूँढता हुआ वापस आ गया था। ताई की आँखों से आँसू बह निकले — "जीते रहो बेटा, जुग-जुग जिओ।" और मिट्ठू बोल उठा — "खुश रहो! खुश रहो!!"

विषयों से संवाद

1. "अंत में जगन मास्टर की घरवाली ने उनकी चिंता दूर कर दी।"

   कहानी में रेखांकित पात्र का नाम नहीं दिया गया है। इसे कहीं 'मास्टराइन', तो कहीं 'जगन मास्टर की घरवाली' कहा गया है। आपके अनुसार कहानी में ऐसा क्यों किया गया होगा?

   उत्तरः

   लेखक ने जगन मास्टर की पत्नी को नाम न देकर 'मास्टराइन' या 'जगन मास्टर की घरवाली' कहा है। इसके पीछे कई संभावित कारण हैं:
   1. **सामाजिक यथार्थ का चित्रण**: ग्रामीण समाज में महिलाओं की अपनी स वतंत्र पहचान प्रायः नहीं होती — वे पति के नाम से जानी जाती हैं। लेखक ने इस यथार्थ को उजागर किया है।
   2. **पात्र की गौण भूमिका**: कहानी में वह एक सहायक पात्र हैं जो एक निर्णय लेती हैं (बिना पति की सलाह के)। उनके नाम की आवश्यकता नहीं क्योंकि कहानी की केंद्रीय समस्या उनसे नहीं जुड़ी।
   3. **व्यंग्य**: "अपने पति से सलाह लिए बिना मास्टराइन ने ताई का भार अपना लिया था" — यह वाक्य उस सामाजिक व्यवस्था पर सूक्ष्म व्यंग्य करता है जहाँ महिलाएँ बड़े निर्णय भी स्वतंत्र रूप से ले सकती हैं, पर उनकी पहचान पति से जुड़ी रहती है।
   4. **सामान्यीकरण**: नाम न देने से वह पात्र केवल एक व्यक्ति नहीं रहती, बल्कि समाज की उन सभी महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती है जो परिवार के लिए स्वयं को समर्पित करती हैं।

2. "गाँव के कई लोग कुंभ-स्नान के लिए प्रयागराज जा रहे थे"

   (क) 'कुंभ-स्नान' एक सुप्रसिद्ध आयोजन है जिसमें करोड़ों लोग भाग लेते हैं। पता लगाइए—
   - इसका आयोजन क्यों किया जाता है?
   - पिछली बार इसका आयोजन कब और कहाँ हुआ था?
   - अगला आयोजन कब और कहाँ होगा?

   उत्तरः

   कुंभ-स्नान का आयोजन क्यों: कुंभ मेले का आयोजन हिंदू धार्मिक मान्यताओं के अनुसार होता है। पौराणिक कथा के अनुसार देवताओं और असुरों के बीच अमृत-मंथन हुआ था। अमृत की बूँदें चार स्थानों पर गिरीं — प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक। इन्हीं स्थानों पर ग्रह-नक्षत्रों के विशेष संयोग पर कुंभ मेला आयोजित होता है। मान्यता है कि इन

तिथियों पर यहाँ स्नान करने से पाप धुलते हैं और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

पिछली बार: महाकुंभ 2025 प्रयागराज में जनवरी-फरवरी 2025 में आयोजित हुआ था।

अगला आयोजन: अगला कुंभ मेला हरिद्वार में 2027 में और अगला महाकुंभ प्रयागराज में 2037 में होगा।

(ख) मान लीजिए कि ताई आपके मोहल्ले में रहती हैं। वे कुंभ-स्नान के लिए कैसे गई होंगी? उनकी यात्रा का वर्णन लिखिए।

(संकेत– कहाँ से कहाँ तक की यात्रा, टिकट, यात्रा के साधन, संगी-साथी, खान-पान, ठहरना आदि।)

उत्तरः

ताई की कुंभ-यात्रा का वर्णन: हमारे मोहल्ले के पंडित जी ने जब कुंभ-यात्रा का कार्यक्रम बनाया, तो ताई भी उनके साथ जाने को तैयार हो गईं। यात्रा के एक दिन पहले उन्होंने अपना पुराना टीन का बक्सा खोला, उसमें साफ धुले कपड़े, एक छोटा-सा श्रीरामचरितमानस, कुछ सत्तू, गुड़ और मुरमुरे रखे। सुबह चार बजे ही सब लोग बस-अड्डे पहुँच गए। ताई ने अपनी पोटली सँभाल रखी थी। वहाँ से ट्रेन पकड़ी। डिब्बे में अन्य यात्री भी थे — सब हम उम्र बुजुर्ग, सब राम-नाम गाते हुए। ताई खिड़की से बाहर देखते-देखते कब सो गईं, पता ही न चला।

प्रयागराज स्टेशन पर उतरकर टेंपो से संगम तट पहुँचे। वहाँ लाखों की भीड़ थी। ताई ने घाट पर उतरकर गंगाजल हाथ में लिया और आँखें बंद कर मिट्ठू की सलामती की दुआ माँगी। डुबकी लगाई — मन हल्का हो गया।

लौटते समय वे सोच रही थीं — "मिट्ठू ने कहा था — 'हर हर गंगे' — आज वह सच हो गया।"

(ग) आपके गाँव या नगर में कौन-सा मेला, उत्सव या पर्व मनाया जाता है? वहाँ का दृश्य, भीड़, श्रद्धा और वातावरण का वर्णन कीजिए।

(संकेत– उनका वर्णन पाँच ज्ञानेंद्रियों— देखने, सुनने, सूँघने, छूने और स्वाद महसूस करने के आधार पर कीजिए।)

उत्तरः

जयपुर में गणगौर का मेला

देखने में: आँखें जहाँ तक जाती हैं, रंग-बिरंगे परिधानों में सजी महिलाएँ दिखती हैं — लाल, पीले, हरे दुपट्टों की छटा। सिर पर कलश, हाथों में दीप। रास्तों पर रंगोली, घरों पर तोरण।

सुनने में: "ईसर गणगौर, माता गणगौर" के गीत हवा में तैरते रहते हैं। ढोल-नगाड़ों की गूँज, बच्चों की किलकारियाँ, दुकानदारों की आवाजें — कान शोर से भर जाते हैं।

सूँघने में: मिट्टी के दीपकों का धुआँ, अगरबत्ती की सुगंध, जलेबी और कचौड़ी के तेल की महक — मन भूख से मचल उठता है।

छूने में: भीड़ में धक्का-मुक्की, लोगों के कंधों का स पर्श, मिट्टी की गणगौर की मूर्ति को पूजते हुए हाथों का कंपन — एक अलग अनुभव।

स्वाद में: घेवर, मालपुआ, दाल-बाटी-चूरमा — हर दुकान पर कुछ न कुछ चखने को मिलता है।

यह मेला केवल उत्सव नहीं, यह जीवन का उत्सव है — जहाँ परंपरा और आस्था एक साथ जीवित हो उठती है।

सृजन

1. "बहू-बेटे गाँव का मोह छोड़कर शहरों के होकर रह गए।" अपना घर छोड़कर नए स्थान पर बस जाना आसान नहीं होता है। ताई के बहू-बेटों ने गाँव क्यों छोड़ा होगा? गाँव छोड़ते समय क्या-क्या सोचा होगा? अपना घर छोड़ने के लिए स्वयं को कैसे तैयार किया होगा?

उत्तरः

गाँव छोड़ने के कारण: ताई के बहू-बेटों ने संभवतः इन कारणों से गाँव छोड़ा होगा:

1. रोजगार की कमी — जब खेती-बाड़ी और कारबार ठीक न रहा तो शहर में नौकरी की तलाश की।
2. बच्चों की शिक्षा — शहर में बेहतर विद्यालय और अवसर थे।
3. आधुनिक जीवनशैली की चाह — शहर की सुविधाएँ, अस्पताल, मनोरंजन गाँव में उपलब्ध न थे।

गाँव छोड़ते समय के विचार:

1. शायद उन्होंने सोचा होगा — "थोड़े दिनों के लिए जा रहे हैं, जब व्यवस्था हो जाएगी तो ताई को भी बुला लेंगे।"
2. शायद उन्होंने सोचा हो — "ताई यहाँ ठीक हैं, बड़ा घर है, गाँव वाले हैं।" मन में अपराध-बोध भी रहा होगा, पर मजबूरी और भविष्य की आशा ने उसे दबा दिया।

स्वयं को कैसे तैयार किया: शुरु में तो मन भारी रहा होगा। पर धीरे-धीरे शहर की व्यस्तता, नई जिम्मेदारियाँ और नए परिवेश ने गाँव को 'यादों की दुनिया' बना दिया। त्योहारों पर आने का वादा किया, पर वह वादा धीरे-धीरे टूटता गया।

यही वह त्रासदी है जो आधुनिक भारत के गाँवों में हो रही है और 'संवादहीन' जैसी कहानियों को जन्म देती है।

2. "वहाँ बैठे एवजी मिट्ठू ने उन्हें देखकर कोई हरकत नहीं की" ताई सोच रही थीं कि मिट्ठू 'राम राम सीताराम' कहेगा, लेकिन एवजी मिट्ठू चुप था। कल्पना कीजिए कि एक दिन असली मिट्ठू वापस आ गया। मिट्ठू ने नए तोते को देखकर क्या कहा होगा? आगे की कहानी लिखिए।

(संकेत– प्रारंभ कीजिए— "एक दिन आकाश में वही हरे पंख चमके...")

उत्तरः

मिट्ठू की वापसी

एक दिन आकाश में वही हरे पंख चमके और एक परिचित आवाज़ गूँजी — "हर हर गंगे! हर हर गंगे!!"

ताई बरामदे में बैठी थीं। उन्होंने आवाज़ सुनी और ठिठक गईं। यह आवाज़...! यह तो... यह तो उनके मिट्ठू की आवाज़ थी! वह हरा तोता पिंजरे के ऊपर आकर बैठ गया। पिंजरे में बैठे एवजी तोते ने उसे देखकर सिर हिलाया।
असली मिट्ठू ने पिंजरे की ओर तिरछी आँख से देखा और बोला — "राम राम! राम राम!!"
एवजी तोता चुप रहा।
मिट्ठू ने फिर कहा — "सीताराम बोल! सीताराम बोल!!"
एवजी तोते ने टुकुर-टुकुर देखा, पर बोला कुछ नहीं।
ताई दौड़कर आईं। "मिट्ठू! मेरे मिट्ठू!" उन्होंने अपना हाथ आगे बढ़ाया। मिट्ठू धीरे-धीरे उनकी उँगली पर आ बैठा और उनका हाथ चाटने लगा।
"जीते रहो बेटा, जुग-जुग जिओ।" ताई की आँखें भर आईं।
"खुश रहो! खुश रहो!!" मिट्ठू ने जवाब दिया।
ताई ने पिंजरे का दरवाजा खोल दिया और एवजी तोते को आज़ाद कर दिया। अब उनके घर में फिर से रौनक लौट आई थी। बड़े घर का 'सूना खंडहर' फिर से 'घर' बन गया था।

3. "अब ये ही दो प्राणी गाँव के बीच में स्थित बड़े घर के उस सूने खंडहर में एक-दूसरे को सहारा देने के लिए रह गए थे।" आज घर जाकर अपने किसी बड़े या बुज़ुर्ग से बात कीजिए। उनसे पूछिए— "आप जब मेरी आयु के थे, तब समय कैसे बिताया करते थे; क्या-क्या बातें या काम करते थे? आदि"। उनके कहे हुए अनुभव अपनी पुस्तिका में लिखिए।

उत्तरः
यह गतिविधि घर पर करनी है। नीचे एक नमूना दिया गया है:

दादाजी के अनुभवः
मैंने आज दादाजी से पूछा — "दादाजी, जब आप मेरी उम्र के थे, तब क्या करते थे?"

वे मुस्कुराए और बोले — "उस समय न मोबाइल था, न टीवी। सुबह उठते ही खेत की ओर चल देते थे। पास के नदी में नहाते थे। दोपहर को आम के पेड़ की छाँव में पाठशाला लगती थी। शाम को गाँव के चबूतरे पर बड़े-बुज़ुर्ग बैठते थे, उनकी बातें सुनते थे — वही हमारी पढ़ाई थी, वही हमारा मनोरंजन।"

उन्होंने आगे बताया कि त्योहारों पर पूरा गाँव एक परिवार जैसा था। किसी के घर में खुशी होती तो सब आते, दुख में सब साथ होते।

यह सुनकर मुझे ताई की याद आई — वे भी उसी समय से थीं। शायद इसीलिए उनका अकेलापन इतना गहरा था।

4. "मिट्ठू ने फिर तिरछी आँख से रोशनदान के बाहर की दुनिया की ओर देखा और ये गए! वो गए!!"
मान लीजिए कि जगन मास्टर ने मिट्ठू की खोज के लिए एक विज्ञापन प्रकाशित किया है। अपनी कल्पना से वह विज्ञापन बनाइए।
(संकेत– आप समाचार पत्रों में प्रकाशित खोया-पाया या तलाश संबंधी विज्ञापन देख सकते हैं।)

उत्तरः
खोया हुआ तोता — कृपया ढूँढने में सहायता करें
दिनांक: ....
स्थान से उड़ा: ग्राम ...., जगन मास्टर का निवास
विवरण:
- नाम: मिट्ठू
- प्रजाति: पहाड़ी तोता
- रंग: हरा, लाल चोंच
- बोली: हिंदी — "राम राम", "सीताराम", "हर हर गंगे", "खुश रहो"
- पहचान: अपना नाम सुनते ही प्रतिक्रिया देता है
परिस्थिति: रोशनदान से उड़ गया।
विशेष निवेदन: यह तोता एक वृद्ध माँ समान ताई का एकमात्र सहारा है। उनके लौटने से पहले इसे ढूँढना अत्यंत आवश्यक है।
संपर्क करें: जगन मास्टर, ग्राम ....
इनाम: खोजकर्ता को उचित पुरस्कार दिया जाएगा।
"एक पक्षी को बचाएँ — एक वृद्ध माँ की मुस्कान लौटाएँ।"

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

1. 'मिट्ठू' शब्द का अर्थ होता है— मधुरभाषी, मीठा बोलनेवाला या तोता।

यह शब्द इतना अधिक प्रचलित है कि इसका प्रयोग एक मुहावरे में भी किया जाता है— 'अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना' जिसका अर्थ है 'अपनी प्रशंसा आप करना' या 'अपने मुँह से अपनी बड़ाई करना'।

आप कुछ ऐसे मुहावरों की सूची बनाइए जिनमें किसी अन्य जीव-जंतु का उल्लेख किया गया हो।

आप कुछ ऐसे मुहावरों की सूची बनाइए जिनमें किसी अन्य जीव-जंतु का उल्लेख किया गया हो, जैसे नीचे लिखे इस वाक्य में है—

"अकेले मिट्ठू क्या उड़े, आदर्शवादी जनम मास्टर के हाथों से सभी तोते उड़ गए।"

उत्तरः

मुहावरा	**अर्थ**	**वाक्य प्रयोग**
हाथों के तोते उड़ जाना	घबरा जाना, होश खो देना	परीक्षा में प्रश्न कठिन देखकर मेरे हाथों के तोते उड़ गए।
मगरमच्छ के आँसू	कपटी दुख	वह मगरमच्छ के आँसू बहा रहा था, पर मन में खुश था।
घोड़े बेचकर सोना	निश्चिंत होकर सोना	परीक्षा खत्म होते ही वह घोड़े बेचकर सो गया।

काला अक्षर भैंस बराबर	बिल्कुल अनपढ़	उसे काला अक्षर भैंस बराबर भी नहीं पता।
बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद	अनजान को अच्छी चीज की पहचान नहीं	कला की समझ न हो तो बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।
उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे	गलती करने वाला ही दूसरे को दोष दे	उसने गलती की और मुझे डाँट रहा है — उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।
कुत्ता काटना	पागल होना	क्या तुम्हें कुत्ते ने काटा है जो ऐसी बातें कर रहे हो?

ध्वन्यात्मकता शब्दों से

1. "जगन मास्टर का ध्यान अचानक 'गीता-रहस्य' से हटकर मिट्ठू के पंखों की 'फड़फड़ाहट' पर गया।"
पक्षी के उड़ने पर पंखों के हिलने-डुलने से उत्पन्न ध्वनि 'फड़फड़ाहट' कहलाती है। ध्वनियों का आभास कराने वाले कुछ और शब्द लिखिए और उनसे नए वाक्य बनाइए।

उत्तरः

ध्वन्यात्मक शब्द	**ध्वनि का स्रोत**	**वाक्य**
चहचहाना	पक्षियों की बोली	सुबह होते ही पेड़ों में चिड़ियाँ चहचहाने लगती हैं।
खड़खड़ाना	खिड़की, दरवाजे की आवाज़	तेज हवा से खिड़की खड़खड़ाने लगी।
कलकल	बहते पानी की आवाज़	नदी का पानी कलकल बहता चला जा रहा था।
सनसनाना	तेज हवा की आवाज़	गोली सनसनाती हुई निकल गई।
भनभनाना	मक्खी या मधुमक्खी की आवाज़	फूलों के पास मक्खियाँ भनभनाने लगीं।
टपटप	पानी की बूँदें गिरने की आवाज़	छत से पानी टपटप नीचे आ रहा था।
कड़कड़ाना	बिजली या ठंड की आवाज़	आसमान में बादल कड़कड़ाए और बारिश शुरु हो गई।
गुनगुनाना	धीमे स्वर में गाना	वह काम करते हुए गुनगुनाती रहती है।

शब्द-युग्म

1. "अपनी अकेली जान के लिए ताई दो जन का एक जन चूल्हा फूँक लेती, <u>व्रत-उपवास</u> के बहाने <u>चौका-चूल्हा</u> टाल जाती।"
उपर्युक्त वाक्य में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। ये शब्द-युग्म हैं। वे शब्द जो जोड़े में लिखे जाते हैं, उन्हें शब्द-युग्म कहा जाता है। शब्द-युग्म मुख्यतः निम्न प्रकार के होते हैं—
   - पुनरुक्त शब्द-युग्म, जैसे— बार-बार
   - सजातीय शब्द-युग्म, जैसे— उठना-बैठना
   - समानार्थी शब्द-युग्म, जैसे— दिन-प्रतिदिन
   - विपरीतार्थक शब्द-युग्म, जैसे— दिन-रात

पाठ में से चुनकर कुछ शब्द-युग्म नीचे दिए गए हैं। उनका अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए—

वक्त-बेवक्त, नियम-सिद्धांत, शादी-ब्याह, तीज-त्योहार

उत्तरः

1. **वक्त-बेवक्त (अर्थ**: उचित-अनुचित समय पर, कभी भी)
यह सजातीय शब्द-युग्म है।
वाक्यः मिट्ठू वक्त-बेवक्त अपनी माँगें रखता, तो ताई रोटी बचाकर रखती थीं।
2. **नियम-सिद्धांत (अर्थ**: जीवन में अपनाए गए आदर्श और कायदे)
यह समानार्थक शब्द-युग्म है।
वाक्यः जगन मास्टर ने अपने नियम-सिद्धांत बना रखे थे और भरसक उनका पालन करते थे।
3. **शादी-ब्याह (अर्थ**: विवाह-संस्कार, विवाह का आयोजन)
यह समानार्थक शब्द-युग्म है।
वाक्य: जमींदार के दरबार में शादी-ब्याह के अवसर पर बड़े आयोजन होते थे।
4. **तीज-त्योहार (अर्थ**: सभी पर्व और उत्सव)
यह समानार्थक शब्द-युग्म है।
वाक्य: ताई को याद था कि बड़े घर में तीज-त्योहार पर कितनी रौनक होती थी।

खोजबीन शब्दों की

1. "ढीली धोती को दोनों हाथों से सँभालते हुए वह बाग में एक पेड़ से दूसरे पेड़ के पास, 'मिट्ठु आ! मिट्ठु आ!!' पुकारते हुए पसीना-पसीना होते रहे और मिट्ठू एक डाल से दूसरी डाल पर, एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर अपने पंख तौलने में मशगूल रहे।"
   उपर्युक्त अनुच्छेद में से खोजिए—
   - ऐसा शब्द जो 'तंग' का विपरीतार्थक हो।
   - ऐसा वाक्यांश जो एक मुहावरा हो।
   - ऐसा शब्द जो एक क्रिया हो।
   - ऐसा शब्द जो एक संज्ञा हो।
   - ऐसा शब्द जो एक सर्वनाम हो।
   - ऐसा शब्द जो एक विशेषण हो।
   - ऐसा शब्द जो एक कारक हो।
   - ऐसा शब्द जो एक कर्ता हो।

   उत्तरः
   1. **ऐसा शब्द जो 'तंग' का विपरीतार्थक है:** ढीली ('ढीली धोती' — ढीला का विपरीत है तंग)
   2. **ऐसा वाक्यांश जो एक मुहावरा है:** पसीना-पसीना होना (अत्यधिक परिश्रम करना या घबरा जाना)
   3. **ऐसा शब्द जो एक क्रिया है:** पुकारते (पुकारना — क्रिया)
   4. **ऐसा शब्द जो एक संज्ञा है:** बाग (उद्यान — व्यक्तिवाचक नहीं, जातिवाचक संज्ञा)
   5. **ऐसा शब्द जो एक सर्वनाम है:** वह (जगन मास्टर के लिए प्रयुक्त)
   6. **ऐसा शब्द जो एक विशेषण है:** ढीली (धोती की विशेषता बताने वाला)
   7. **ऐसा शब्द जो एक कारक है:** में ('बाग में' — अधिकरण कारक; 'पर' — अधिकरण कारक)
   8. **ऐसा शब्द जो एक कर्ता है:** वह (जगन मास्टर — पुकारने वाले)

अर्थ के आधार पर वाक्य

1. आप जानते ही हैं कि अर्थ के आधार पर वाक्यों के कई भेद होते हैं जैसे— विधानवाचक, निषेधवाचक, प्रश्नवाचक, विस्मयादिबोधक, आज्ञावाचक (विधिवाचक), इच्छावाचक, संदेहवाचक और संकेतवाचक।

	वाक्य का भेद	**अर्थ/उपयोग**	**उदाहरण**
1	विधानवाचक वाक्य	किसी घटना या स्थिति के बारे में कथन करने वाला वाक्य।	जगन मास्टर ने पिंजरे का दरवाजा खोल दिया।
2	निषेधवाचक वाक्य	किसी कार्य के न होने या मना करने का भाव व्यक्त करने वाला वाक्य।	मिट्ठु ने कोई हरकत नहीं की।
3	प्रश्नवाचक वाक्य	किसी बात को पूछने या जानने के लिए प्रयुक्त वाक्य।	मिट्ठू! अब कैसे कटेगी?
4	विस्मयादिबोधक वाक्य	आश्चर्य, प्रसन्नता या दुख प्रकट करने वाला वाक्य।	मिट्ठु ने फिर तिरछी आँख से रोशनदान के बाहर की दुनिया की ओर देखा और ये गए! वो गए!!
5	आज्ञावाचक वाक्य	किसी को कुछ करने का आदेश या आग्रह व्यक्त करने वाला वाक्य।	राम-राम कहो, सीताराम कहो।
6	इच्छावाचक वाक्य	किसी आकांक्षा, आशा या इच्छा को प्रकट करने वाला वाक्य।	जीते रहो बेटा, जुग-जुग जिओ!
7	संदेहवाचक वाक्य	किसी बात को लेकर शंका या अनिश्चितता प्रकट करने वाला वाक्य।	ताई के सूनेपन का साथी न जाने किन अमराइयों में घूम रहा होगा।
8	संकेतवाचक वाक्य	इसमें एक बात या कार्य का होना या न होना किसी दूसरी बात या कार्य के होने या न होने पर निर्भर होता है।	जब खेती-बाड़ी नहीं, कारबार नहीं, तो नौकर-चाकर किस दम पर टिकते!

अब आप भी अपनी पुस्तक में से प्रत्येक प्रकार का एक-एक वाक्य चुनकर लिखिए।

उत्तरः

	वाक्य का भेद	उदाहरण (पाठ से)
1.	विधानवाचक	"जगन मास्टर ने पिंजरे का दरवाजा खोल दिया।"
2.	निषेधवाचक	"मिट्ठू ने कोई हरकत नहीं की।"
3.	प्रश्नवाचक	"मिट्ठू! अब कैसे कटेगी?"
4.	विस्मयादिबोधक	"ये गए! वो गए!!"
5.	आज्ञावाचक	"राम-राम कहो, सीताराम कहो।"
6.	इच्छावाचक	"जीते रहो बेटा, जुग-जुग जिओ!"
7.	संदेहवाचक	"ताई के सूनेपन का साथी न जाने किन अमराइयों में घूम रहा होगा।"
8.	संकेतवाचक	"जब खेती-बाड़ी नहीं, कारबार नहीं, तो नौकर-चाकर किस दम पर टिकते!"

गतिविधियाँ

नीचे दी गई गतिविधियाँ अपने समूह के साथ मिलकर कीजिए—

1. **कहानी के रंग**
   समूहों को अलग-अलग भावनाएँ (दुख, स्नेह, आजादी) दीजिए और इसे मूक अभिनय द्वारा प्रस्तुत कीजिए।

   उत्तरः
   (यह कक्षा-गतिविधि है। नीचे सुझाव दिए गए हैं:)
   दुख का भाव: एक छात्र ताई का अभिनय करे — पिंजरे की ओर देखते हुए उदास मुद्रा, माथे पर चिंता की लकीरें, सूने घर में अकेले बैठना।
   स्नेह का भाव: ताई मिट्ठू को दाना देती हैं — हाथ से प्यार से खिलाना, मिट्ठू का हाथ चाटना, एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराना।
   आजादी का भाव: मिट्ठू का रोशनदान से बाहर झाँकना, एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उड़ना, पंख फैलाकर आज़ाद होना — यह सब मूक अभिनय में प्रस्तुत किया जाए।

2. **पंखों की योजना**
   छोटे समूहों में सोचें कि अगर आपको मिट्ठू की तरह उड़ने का मौका मिले तो आप कहाँ जाते और क्यों?

   उत्तरः
   अगर मुझे मिट्ठू की तरह उड़ने का मौका मिलता, तो मैं सबसे पहले हिमालय की वादियों में जाता/जाती। वहाँ से हरे-भरे जंगल, बर्फ से ढकी चोटियाँ और कलकल बहती नदियाँ — सब अपनी आँखों से देखता/देखती।
   फिर समुद्र के ऊपर उड़ता/उड़ती — नीले पानी पर सूर्यास्त का दृश्य देखता/देखती।
   पर सबसे महत्त्वपूर्ण — मैं उन बुजुर्गों के घरों के आस-पास मँडराता/मँडराती जो अकेले हैं, और अपनी चहचहाहट से उनके सूने घरों में थोड़ी रौनक लाने की कोशिश करता/करती।
   क्योंकि आजादी तब सार्थक होती है जब वह दूसरों को खुशी दे सके।

3. "पेट की समस्या उनके लिए कभी समस्या नहीं रही"
   यह वाक्य बताता है कि ताई ने भोजन संबंधी अपनी आवश्यकताओं पर कभी ध्यान नहीं दिया अथवा उन्हें महत्त्वपूर्ण नहीं माना। हमारे परिवेश में ऐसी बहुत-सी महिलाएँ हैं जो परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं को प्राथमिकता देती हैं और अपनी आवश्यकताओं की अनदेखी करती हैं।
   - अपने घर की महिलाओं की भोजन संबंधी रुचियों के विषय में जानिए और समझिए कि उनकी पसंद का भोजन माह में कब-कब बनता है।

   उत्तरः
   (यह गतिविधि घर पर करनी है। नीचे एक नमूना दिया गया है:)
   मैंने अपनी माँ से पूछा — "माँ, आपको सबसे अच्छा खाना क्या लगता है?"
   वे हँस पड़ीं और बोलीं — "बेटा, मुझे तो मिठाई और दाल-बाफले बहुत पसंद हैं।"
   मैंने पूछा — "इस महीने कितनी बार बने?"
   उन्होंने सोचा और कहा — "एक बार भी नहीं।"
   यह सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ। मैंने निश्चय किया कि अगले रविवार को मैं खुद उनकी पसंद की दाल-बाफले बनाऊँगा/बनाऊँगी या बनवाऊँगा/बनवाऊँगी।
   यह छोटा-सा प्रयास घर की महिलाओं को यह एहसास दिला सकता है कि उनकी खुशी भी हमारे लिए महत्त्वपूर्ण है।

मेरी पहेली

1. अपने समूह के साथ मिलकर ऐसी पहेलियाँ या प्रश्न बनाइए जिनके उत्तर निम्नलिखित हों—

तोता,	ताई,	कुंभ,	पिंजरा,	कमरा,	गंगा

   उत्तरः
   1. तोता — हरे रंग का हूँ, मीठा बोलता हूँ। पंख हैं मेरे पर आज़ाद नहीं। एक बूढ़ी माँ का साथी हूँ। बताओ, कौन हूँ? (तोता)

2. ताई — बड़े घर की मालकिन, अब अकेली हूँ। बहू-बेटे शहर, मैं गाँव में। मेरा एकमात्र साथी है एक पक्षी। बताओ, कौन हूँ? (ताई)
3. कुंभ — करोड़ों लोग आते मुझमें, पापों को धोते हैं। नदी के किनारे होता हूँ, बारह साल में एक बार। बताओ, क्या हूँ? (कुंभ)
4. पिंजरा — मैं लोहे या तारों का हूँ। जो मुझमें आए, वह आज़ाद नहीं। पर मिट्ठू ने मुझसे आज़ादी ली। बताओ, मैं क्या हूँ? (पिंजरा)
5. कमरा — जगन मास्टर ने मुझे बंद किया था। मेरे अंदर मिट्ठू और जगन मास्टर थे। मेरे रोशनदान से मिट्ठू उड़ा। बतीओ, मैं क्या हूँ? (कमरा)
6. गंगा — मेरे किनारे पर ताई स्नान करने गईं। पापों को धोती हूँ। मिट्ठू भी "हर हर गंगे" बोलता था। बताओ, मैं क्या हूँ? (गंगा)

भाषा संगम

1. "वह न जाने कहाँ से एक प्यारा-सा पहाड़ी <u>तोता</u> ले आया था।"
नीचे 'तोता' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।
तोता (हिंदी); शुकः (संस्कृत); तोता (पंजाबी); तोता (उर्दू); तोतॅ (कश्मीरी); तोतो (सिंधी); पोपट (मराठी); पोपट, सूडो (गुजराती); पोपट (कोंकणी); सुगा (नेपाली); तोता (बांग्ला); भाटौ (असमिया); तेनवा (मणिपुरी); शुआ (शुक); (ओड़िआ); चिलुक (तेलुगु); किळि (तमिल); शुकम्, तत्त (मलयालम); गिळि (कन्नड़)।
   - इनके अतिरिक्त यदि आप 'तोता' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उसभाषा में भी लिखिए।
   - उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

उत्तरः
   - अतिरिक्त भाषाओं में 'तोता':
     1. अंग्रेज़ी में: Parrot
     2. फ्रेंच में: Perroquet
   - उपर्युक्त वाक्य मातृभाषा (राजस्थानी) में:
     "वो ना जाणे कठे सूँ एक प्यारो-सो पहाड़ी तोतो ले आयो था।"

6. अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'संवादहीन' कहानी के लेखक कौन हैं?
(क) प्रेमचंद
(ख) शेखर जोशी
(ग) पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
(घ) हजारीप्रसाद द्विवेदी

उत्तरः
(ख) शेखर जोशी

2. शेखर जोशी का जन्म किस स्थान पर हुआ था?
(क) देहरादून, उत्तराखंड (ख) नैनीताल, उत्तराखंड
(ग) अल्मोड़ा, उत्तराखंड (घ) हरिद्वार, उत्तराखंड

उत्तरः
(ग) अल्मोड़ा, उत्तराखंड

3. कहानी के आरंभ में ताई गहरी साँस लेकर क्या कहती हैं?
(क) 'मिट्ठू! अब कैसे कटेगी?'
(ख) 'भगवान! कैसे नैया पार लगेगी?'
(ग) 'सीताराम! सीताराम!'
(घ) 'जीते रहो बेटा, जुग-जुग जिओ'

उत्तरः
(ख) 'भगवान! कैसे नैया पार लगेगी?'

4. ताई के 'भगवान! कैसे नैया पार लगेगी?' कहने पर मिट्ठू ने क्या उत्तर दिया?
(क) 'खुश रहो! खुश रहो!!'
(ख) 'हर हर गंगे! हर हर गंगे!!'
(ग) 'राम-राम कहो, सीताराम कहो'
(घ) 'कटेगी! कटेगी!! कटेगी!!!'

उत्तरः
(ग) 'राम-राम कहो, सीताराम कहो'

5. ताई के बड़े घर में पहले क्या-क्या था?
(क) केवल गाय-ढोर और विस्तृत खेत-बाड़ी
(ख) पूत-परिवार, बहू-बेटियाँ, नौकर-चाकर, गाय-ढोर
(ग) केवल बहू-बेटे और काम करने वाले नौकर-चाकर
(घ) बड़ी जमींदारी, नगर का व्यापार और बड़ी संपत्ति

उत्तरः
(ख) पूत-परिवार, बहू-बेटियाँ, नौकर-चाकर, गाय-ढोर

6. ताई के बहू-बेटे क्यों चले गए?
(क) उन्हें शहरों में सरकारी नौकरी मिल गई थी।
(ख) गाँव का मोह छोड़कर शहरों के होकर रह गए।
(ग) ताई ने उन्हें ज़बरदस्ती घर से निकाला था।
(घ) खेती-बाड़ी में बहुत भारी घाटा हुआ था।

उत्तरः
(ख) गाँव का मोह छोड़कर शहरों के होकर रह गए।

7. ताई अपनी अकेली जान के लिए चूल्हा कैसे फूँक लेती थीं?
(क) रोज दो वक्त भोजन पकाती थीं
(ख) दो जून का एक जून चूल्हा फूँक लेती थीं
(ग) पड़ोसियों के यहाँ से खाना माँग लेती थीं
(घ) बाजार से खाना खरीद लेती थीं

उत्तरः
(ख) दो जून का एक जून चूल्हा फूँक लेती थीं

4. जगन मास्टर का व्यक्तित्व किस प्रकार का था? उनके बारे में कहानी क्या बताती है?

उत्तरः
जगन मास्टर स्वतंत्र विचारों के आदमी थे। उनके अपने नियम-सिद्धांत थे और वे नहीं चाहते थे कि उनके कारण किसी को कष्ट हो। पिंजड़े में बंद मिट्ठू को देखकर उन्हें बेचैनी होती। वे मास्टराइन की पत्नी की बुद्धि पर तरस खाते और स्वयं को भी दोषी अनुभव करते। उनके लिए पशु-पक्षी की स्वतंत्रता एक नैतिक प्रश्न था।

5. जगन मास्टर के हाथों के 'सभी तोते' क्यों उड़ गए? इस वाक्य का भावार्थ क्या है?

उत्तरः
मिट्ठू के रोशनदान से उड़ जाने पर कहानी में लिखा है — 'अकेले मिट्ठू क्या उड़े, आदर्शवादी जगन मास्टर के हाथों के सभी तोते उड़ गए।' इसका अर्थ है कि मिट्ठू के उड़ने से जगन मास्टर की सारी आदर्शवादी योजनाएँ, उनकी नैतिकता और उनका 'प्रायश्चित' — सब व्यर्थ हो गया। एक आदर्शवादी व्यक्ति की वास्तविकता से यह मुठभेड़ का व्यंग्यात्मक चित्रण है।

6. गाँव में सभी को ताई की वापसी से क्यों डर था? उनकी प्रतिक्रिया की कल्पना कैसे की जा रही थी?

उत्तरः
गाँव में सभी जानते थे कि ताई का स्वभाव तेज था और मिट्ठू के प्रति उनका अगाध प्रेम था। मिट्ठू के बिना उनकी क्या दशा होगी, इसका अनुमान सभी लगा सकते थे। इसीलिए गनपत ने एवजी तोते का सुझाव दिया — ताकि ताई को सच जानने से होने वाले सदमे से बचाया जा सके। यह गाँव की सामूहिक संवेदना और करुणा का प्रमाण है।

7. जगन मास्टर एवजी तोते को पाठ पढ़ाते हुए खीझकर 'मर जा! मर जा!!' क्यों कहने लगे?

उत्तरः
जगन मास्टर रात-दिन एवजी तोते को 'राम राम', 'सीताराम', 'हर गंगे' रटाते रहे पर वह तोता कुछ नहीं सीख रहा था। मास्टराइन भोजन ठंडा होने की शिकायत करती तो वे आग्नेय दृष्टि से देखकर फिर रटाते रहते। सारी कोशिश व्यर्थ जाती देख वे खीझकर मिट्ठू की ही भाषा — 'मर जा! मर जा!!' — बोलने लगे।

8. 'संवादहीन' कहानी का अंत किस प्रकार का है और यह पाठक के मन पर क्या प्रभाव छोड़ता है?

उत्तरः
कहानी का अंत खुला और मार्मिक है। ताई जगन मास्टर के दरवाजे पहुँचती हैं — मिट्ठू को गुहार करके थक जाती हैं, पर एवजी तोता कोई हरकत नहीं करता। अंत में लिखा है — 'उनके सूनेपन का साथी न जाने किन अमराइयों में घूम रहा होगा।' यह वाक्य गहरी विषाद और अकेलेपन का बोध कराता है — ताई अब वास्तव में संवादहीन हो गई हैं।

9. 'पेट की समस्या उनके लिए कभी समस्या नहीं रही' — इस पंक्ति से ताई के बारे में क्या पता चलता है?

उत्तरः
यह पंक्ति बताती है कि ताई अपने लिए चूल्हा जलाने में भी आलस्य करती थीं — व्रत-उपवास के बहाने खाना टाल देती थीं। उनके लिए शारीरिक जरूरतें कभी प्राथमिकता नहीं थी। पर मिट्ठू के आने के बाद वे नियमपूर्वक उसके लिए खाना बनाने लगीं। यह दर्शाता है कि किसी के लिए जीने की जिम्मेदारी ने उन्हें जीवंत बना दिया था।

10. कहानी के शीर्षक 'संवादहीन' की सार्थकता पर विचार कीजिए।

उत्तरः
'संवादहीन' शीर्षक बहुस्तरीय अर्थ रखता है। पहला — ताई के जीवन में परिवार के जाने के बाद मानवीय संवाद का अभाव। दूसरा — मिट्ठू के उड़ जाने के बाद उनका एकमात्र साथी भी चला गया। तीसरा — एवजी तोता मौजूद है, पर वह 'असली संवाद' नहीं दे सकता। यह शीर्षक केवल तोते की अनुपस्थिति का नहीं, बल्कि समकालीन जीवन में बढ़ते अकेलेपन और संवाद-शून्यता का प्रतीक है।

11. मिट्ठू का उड़ जाना — क्या यह स्वतंत्रता की जीत थी या ताई के लिए त्रासदी? दोनों दृष्टिकोणों पर विचार कीजिए।

उत्तरः
मिट्ठू की दृष्टि से यह स्वतंत्रता की जीत थी — वह अपनी प्रकृति के अनुसार खुले आकाश में उड़ा, जहाँ वह संबंधित था। जगन मास्टर की नैतिक दृष्टि से भी यह सही था। किंतु ताई की दृष्टि से यह गहरी त्रासदी है — जो एकमात्र संवाद का सेतु था, वह टूट गया। कहानी इन दोनों सच्चाइयों को एक साथ रखती है, बिना किसी को गलत ठहराए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'संवादहीन' कहानी में ताई का चरित्र-चित्रण कीजिए। वे किस तरह की स्त्री हैं?

उत्तरः
ताई इस कहानी की केंद्रीय पात्र हैं — एक ग्रामीण वृद्ध स्त्री जिन्होंने जीवन में सब कुछ देखा है। एक समय उनका घर वैभव और जन-समूह से भरा था — जमींदारी, नौकर-चाकर, गाय-ढोर। पर समय के साथ सब चला गया। फिर भी उनमें एक गजब की जिजीविषा है — वे टूटती नहीं। अपने लिए खाना न बनाने वाली ताई मिट्ठू के लिए नियमपूर्वक दाल-भात बनाती हैं। उनका स्वभाव तेज है — वे खीझती हैं, नोक-झोंक करती हैं — पर उनकी ममता असीम है। वे अपना अतीत मिट्ठू को सुनाती हैं, उससे जीवन का प्रश्न पूछती

18. ताई की राम-कहानी सुनते समय मिट्ठू क्या करता था?
(क) वह बोर होकर चुपचाप सो जाती था।
(ख) वह पिंजरे से उड़ने की कोशिश करता था।
(ग) गर्दन टेढ़ी कर धैर्यवान श्रोता बना रहता था।
(घ) वह जोर-जोर से अपनी आवाज लगाता था।

उत्तरः
(ग) गर्दन टेढ़ी कर धैर्यवान श्रोता बना रहता था।

19. कभी-कभी ताई और मिट्ठू में झगड़ा कैसे होता था?
(क) मिट्ठू उनके सामने कुछ गलत शब्द बोलने लगता था।
(ख) ताई मिट्ठू को समय पर उसका दाना नहीं देती थीं।
(ग) मिट्ठू पिंजड़े में तूफान खड़ा कर कटोरियाँ उलटा देता था।
(घ) मिट्ठू ताई की किसी भी बात को नहीं सुनता था।

उत्तरः
(ग) मिट्ठू पिंजड़े में तूफान खड़ा कर कटोरियाँ उलटा देता था।

20. खीझकर ताई मिट्ठू को क्या कोसती थीं और मिट्ठू क्या जवाब देता था?
(क) ताई कहतीं 'चुप रह!' और मिट्ठू 'नहीं-नहीं!' कहता
(ख) ताई कहतीं 'मर जा!' और मिट्ठू भी उतनी ही खीझ से 'मर जा! मर जा! मर जा!' कहता
(ग) ताई कहतीं 'उड़ जा!' और मिट्ठू 'कटेगी! कटेगी!' कहता
(घ) ताई कुछ नहीं कहती थीं पर मिट्ठू जोर से चिल्लाता था

उत्तरः
(ख) ताई कहतीं 'मर जा!' और मिट्ठू भी उतनी ही खीझ से 'मर जा! मर जा! मर जा!' कहता

21. गाँव में न्यौते-बुलावे में जाते समय ताई क्या करती थीं?
(क) वे मिट्ठू को किसी पड़ोसी के यहाँ छोड़ जाती थीं।
(ख) वे मिट्ठू को पिंजरे से निकालकर खुले में छोड़ देती थीं।
(ग) वे खिड़की-दरवाजे बंद कर मिट्ठू को छिपाकर रखती थीं।
(घ) वे मिट्ठू को बाहर ले जाकर बगीचे में बाँध देती थीं।

उत्तरः
(ग) वे खिड़की-दरवाजे बंद कर मिट्ठू को छिपाकर रखती थीं।

22. ताई के मन में धर्म-संकट कब उत्पन्न हुआ?
(क) जब उनका प्यारा मिट्ठू अचानक बहुत बीमार हो गया।
(ख) जब गाँव के कई लोग कुंभ-स्नान के लिए प्रयागराज जा रहे थे।
(ग) जब जगन मास्टर की पत्नी उनके घर मिलने आई।
(घ) जब गनपत ने आकर मिट्ठू को वापस माँगना शुरु किया।

उत्तरः
(ख) जब गाँव के कई लोग कुंभ-स्नान के लिए प्रयागराज जा रहे थे।

23. किसी ने मिट्ठू को साथ ले जाने की सलाह दी, तो किसी दूसरे ने क्या टोका?
(क) मिट्ठू वहाँ की अत्यधिक भीड़ में कहीं खो जाएगा।
(ख) मिट्ठू के लिए रेलगाड़ी में अलग से टिकट लगेगा।
(ग) मिट्ठू को रास्ते की तेज गर्मी सहन नहीं हो पाएगी।
(घ) मिट्ठू पूरी यात्रा में रोएगा और सबको परेशान करेगा।

उत्तरः
(ख) मिट्ठू के लिए रेलगाड़ी में अलग से टिकट लगेगा।

24. ताई की चिंता किसने दूर की और कैसे?
(क) गनपत ने, ताई के जाने के बाद मिट्ठू को अपने पास रखकर।
(ख) गाँव के बुजुर्गों ने, उन्हें यात्रा के नियम समझा-बुझाकर।
(ग) जगन मास्टर की घरवाली ने, मिट्ठू को अपने पास रखने की सहमति देकर।
(घ) स्वयं जगन मास्टर ने, मिट्ठू की पूरी देखभाल का वादा करके।

उत्तरः
(ग) जगन मास्टर की घरवाली ने, मिट्ठू को अपने पास रखने की सहमति देकर।

25. विदा के दिन ताई क्या कर रही थीं?
(क) वे बहुत शांत मन से अपनी यात्रा की तैयारी कर रही थीं।
(ख) वे मिट्ठू को बार-बार पुचकारती थीं और लगातार रो रही थीं।
(ग) वे दुखी होकर मिट्ठू से आखिरी बार झगड़ा कर रही थीं।
(घ) वे अपने घर के बाहर गाँव के लोगों से बातें कर रही थीं।

उत्तरः
(ख) वे मिट्ठू को बार-बार पुचकारती थीं और लगातार रो रही थीं।

26. **अभिकथन (A):** जगन मास्टर स्वतंत्र विचारों के आदमी थे और दूसरों की स्वतंत्रता पर बाधा नहीं डालना चाहते थे।
कारण (R): पिंजड़े में बंद मिट्ठू को देखकर उन्हें बेचैनी होती थी और वे अपनी पत्नी की बुद्धि पर तरस खाते थे।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है
(ख) A सही है किंतु R गलत है
(ग) A गलत है किंतु R सही है
(घ) A और R दोनों गलत हैं

उत्तरः
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है

27. जगन मास्टर ने एक दिन कमरा बंद करके मिट्ठू का पिंजरा खोल क्यों दिया?
(क) मिट्ठू बहुत बीमार था और उसका इलाज करना ज़रुरी था।

1. 'सूने खंडहर में एक-दूसरे को सहारा देने के लिए रह गए थे' — इस पंक्ति का निहित भाव क्या है?
   (क) वृद्धावस्था की असहाय एकाकिता और पारस्परिक निर्भरता
   (ख) गरीबी और आर्थिक संकट की पीड़ा
   (ग) पुराने वैभव की स्मृतियों का अटूट मोह
   (घ) परिवार से विद्रोह और गहरी नाराज़गी

2. 'देखते ही देखते क्या से क्या हो गया!' — यह वाक्य किस भाव को प्रकट करता है?
   (क) नई परिस्थितियों के प्रति उत्सुकता
   (ख) सुख से दुःख में हुए परिवर्तन पर गहरा विषाद
   (ग) जीवन में आए बदलाव के प्रति उदारता और सहज स्वीकृति।
   (घ) समय के साथ होने वाले परिवर्तन की प्रक्रिया पर गहरा चिंतन।

3. इस गद्यांश के केंद्रीय भाव को कौन-सा कथन सर्वोत्तम ढंग से व्यक्त करता है?
   (क) ताई की संचित धन-संपत्ति किसी भयंकर प्राकृतिक आपदा में नष्ट हो गई।
   (ख) ताई के सभी पढ़े-लिखे बेटे शहर में सफल होकर बहुत धन कमाने लगे।
   (ग) पलायन और परिवार के बिखराव ने ताई को पूरी तरह अकेला कर दिया
   (घ) ताई ने स्वयं अपना सब कुछ प्रेमपूर्वक बेटों को सौंपकर खाली हो गईं।

4. 'ढोर' शब्द का सही अर्थ है—
   (क) खेती में काम आने वाले पारंपरिक औज़ार
   (ख) गाय-भैंस जैसे पालतू गोजातीय पशु
   (ग) बड़े घर का चौड़ा आँगन
   (घ) नौकर-चाकरों का पूरा दल

5. बड़े घर में नौकर-चाकर के न टिकने का असली कारण क्या था?
   (क) ताई का कठोर और क्रोधी स्वभाव होना
   (ख) गाँव में आई किसी प्राकृतिक आपदा का प्रकोप
   (ग) बेटों द्वारा घर वापस न लौटने का दृढ़ निर्णय करना
   (घ) खेती-बाड़ी और कारोबार का पूरी तरह खत्म होना

   उत्तरः
   1. (क) वृद्धावस्था की असहाय एकाकिता और पारस्परिक निर्भरता
   2. (ख) सुख से दुःख में हुए परिवर्तन पर गहरा विषाद
   3. (ग) पलायन और परिवार के बिखराव ने ताई को पूरी तरह अकेला कर दिया
   4. (ख) गाय-भैंस जैसे पालतू गोजातीय पशु
   5. (घ) खेती-बाड़ी और कारबार का पूरी तरह खत्म होना

गद्यांश 2

भला हो गनपत का, जिसने ताई के सूनेपन को सहारा दे दिया था, वह न जाने कहाँ से एक प्यारा-सा पहाड़ी तोता ले आया था। ताई की सारी ममता मिट्ठू पर बरस पड़ी। वह रात-दिन मिट्ठू को लेकर ही बेचैन रहने लगीं। जो ताई अपनी खातिर चूल्ही जलाने में आलस्य कर जाती थीं, वही अब नियमपूर्वक मिट्ठू के लिए दाल-भात बनातीं। मिट्ठू के वक्त-बेवक्त के तकाजों के लिए रोटी बचाकर रखतीं। अब ताई को इस बात की पूरी जानकारी रहने लगी थी कि किसके खेत में हरी मिर्चें तैयार हो गई हैं और किस पेड़ में फसल के आखिरी अमरूद बचे हैं।

1. ताई का स्वयं के लिए आलसी होना लेकिन मिट्ठू के लिए परिश्रमी होना किस मनोभाव को उजागर करता है?
   (क) मिट्ठू के प्रति अत्यधिक आसक्ति और मोह
   (ख) ममता को जीने की नई प्रेरणा और ऊर्जा बना लेना
   (ग) परिवार के प्रति मन में कड़वाहट का भाव
   (घ) वृद्धावस्था में स्वयं की उपेक्षा करने की आदत

2. **अभिकथन (A):** मिट्ठू के आने से ताई के जीवन में नई ऊर्जा आ गई।
   कारण (R): ताई को मिट्ठू की देखभाल में अकेलेपन का सबसे बड़ा समाधान मिला।
   सही विकल्प चुनिए—
   (क) A गलत है लेकिन R सही है
   (ख) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है
   (ग) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
   (घ) A और R दोनों गलत हैं

3. इस गद्यांश में किस भाव की प्रधानता है?
   (क) करुणा और ममता का जीवन्त चित्रण
   (ख) ग्रामीण जीवन की आर्थिक कठिनाई का वर्णन
   (ग) अकेलेपन का गहरा दार्शनिक विश्लेषण
   (घ) प्रकृति और पशु-प्रेम की काव्यात्मक भावना

4. 'तकाजा' शब्द का प्रसंगानुसार अर्थ है—
   (क) पसंद और इच्छा का प्रकटीकरण
   (ख) सुबह की पहली और तीव्र भूख
   (ग) किसी काम के लिए बार-बार की माँग और आग्रह
   (घ) खाने की थाली और परोसने का क्रम

5. ताई को मिर्चों और अमरूदों की जानकारी क्यों रहने लगी थी?
   (क) अपने लिए भोजन सामग्री जुटाने की ज़रूरत से
   (ख) गाँव के खेतों की देखरेख की ज़िम्मेदारी से
   (ग) पड़ोसियों की मदद करने की पुरानी आदत से
   (घ) मिट्ठू के लिए ताज़ी और पसंदीदा सामग्री जुटाने की चिंता से

36. जगन मास्टर नए तोते को पिंजरे में रखकर पाठ क्यों पढ़ाने लगे?
(क) वे अपनी आदत के अनुसार तोतों को पढ़ाने के बहुत शौकीन थे।
(ख) ताकि ताई के आने तक वह भी दो अक्षर बोलना सीख ले।
(ग) वे नए तोते को अच्छे दामों में किसी और को बेचना चाहते थे।
(घ) ताई ने प्रयागराज जाने से पहले उन्हें ऐसा करने को कहा था।

उत्तरः
(ख) ताकि ताई के आने तक वह भी दो अक्षर बोलना सीख ले।

37. जगन मास्टर ने अंतिम दिन ताई के मिट्ठू को क्या सिखाने की कल्पना की थी?
(क) रामायण के छंद (ख) गीता के दो-चार श्लोक
(ग) महाभारत के प्रसंग (घ) भजन और कीर्तन

उत्तरः
(ख) गीता के दो-चार श्लोक

38. जगन मास्टर खाना-पीना छोड़कर घंटों पिंजरे के सामने बैठकर क्या रटते थे?
(क) 'हर हर गंगे, राम राम, सीताराम सीताराम'
(ख) 'जीते रहो बेटा, जुग-जुग जिओ'
(ग) 'मिट्ठू राम राम, सीताराम सीताराम, हर गंगे, हर गंगे'
(घ) 'मर जा! मर जा!!'

उत्तरः
(ग) 'मिट्ठू राम राम, सीताराम सीताराम, हर गंगे, हर गंगे'

39. रिक्त स्थान भरिए-
जब मास्टराइन भोजन ठंडा होने की शिकायत करती थीं तो जगन मास्टर ______ उनकी ओर देखकर पानी पीकर फिर दोहराते।
(क) मुस्कुराकर (ख) प्रेम से
(ग) आग्नेय दृष्टि से (घ) उदासी से

उत्तरः
(ग) आग्नेय दृष्टि से

40. खीझकर जगन मास्टर नए तोते को 'मर जा! मर जा!!' कहते तो वह तोता क्या करता?
(क) वह भी 'मर जा! मर जा!' दोहराता
(ख) जोर से चिल्लाने लगता
(ग) पिंजरे के अंदर से टुकुर-टुकुर उन्हें देखता रहता
(घ) डरकर पिंजरे की दीवार से चिपक जाता

उत्तरः
(ग) पिंजरे के अंदर से टुकुर-टुकुर उन्हें देखता रहता

41. **अभिकथन (A):** कुंभ-स्नान से लौटकर ताई सीधे बड़े घर की ओर न जाकर जगन मास्टर के दरवाजे पहुँचीं।
कारण (R): ताई सोच रही थीं कि मिट्ठू उन्हें देखते ही 'राम राम सीताराम' की रट लगाकर आसमान सिर पर उठा लेगा।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है
(ख) A सही है किंतु R गलत है
(ग) A गलत है किंतु R सही है
(घ) A और R दोनों गलत हैं

उत्तरः
(ख) A सही है किंतु R गलत है

42. जब ताई जगन मास्टर के घर पहुँचीं, तो वहाँ बैठे एवजी मिट्ठू ने उन्हें देखकर क्या किया?
(क) वह 'राम राम सीताराम' की रट लगाने लगा
(ख) उसने कूद-फाँद मचाकर तूफान खड़ा कर दिया
(ग) कोई हरकत नहीं की, केवल इधर-उधर ताकता रहा
(घ) वह ताई की आवाज पहचानकर खुश हो गया

उत्तरः
(ग) कोई हरकत नहीं की, केवल इधर-उधर ताकता रहा

43. कहानी के अंत में असली मिट्ठू के बारे में क्या कहा गया है?
(क) वह कुछ समय बाद स्वयं अपने पुराने पिंजरे में वापस लौट आया था।
(ख) उसे रास्ते में किसी अजनबी व्यक्ति ने चुपचाप पकड़ लिया था।
(ग) ताई का सूनेपन का साथी न जाने किन अमराइयों में घूम रहा होगा।
(घ) वह डर के मारे जगन मास्टर के बगीचे में ही कहीं छुपा हुआ था।

उत्तरः
(ग) ताई का सूनेपन का साथी न जाने किन अमराइयों में घूम रहा होगा।

44. कहानी के शीर्षक 'संवादहीन' का सबसे उचित अर्थ क्या है?
(क) ताई और मिट्ठू के बीच कभी कोई बातचीत नहीं हुई थी।
(ख) वृद्ध ताई का वास्तविक सूनापन जहाँ एवजी मिट्ठू भी संवाद नहीं कर पाता।
(ग) जगन मास्टर और उनकी पत्नी के बीच कोई संवाद नहीं था।
(घ) गाँव के सभी लोग आपस में बिल्कुल बातचीत नहीं करते थे।

उत्तरः
(ख) वृद्ध ताई का वास्तविक सूनापन जहाँ एवजी मिट्ठू भी संवाद नहीं कर पाता।

45. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प चुनिए:

I. जगन मास्टर ने अपनी पत्नी से सलाह लेकर ताई का भार स्वीकार किया था।

II. जगन मास्टर पिंजड़े में बंद मिट्ठू को देखकर बेचैन हो जाते थे।

III. जगन मास्टर 'गीता-रहस्य' पढ़ रहे थे जब मिट्ठू रोशनदान पर गया।

(क) केवल I और II सही हैं
(ख) केवल II और III सही हैं
(ग) केवल I और III सही हैं
(घ) I, II और III तीनों सही हैं

उत्तरः
(ख) केवल II और III सही हैं

46. कहानी में ताई और मिट्ठू जहाँ रहते थे, वह बड़ा घर कैसा था?
(क) अत्यंत समृद्ध और भव्य
(ख) सूना खंडहर
(ग) साफ-सुथरा और नया
(घ) छोटा और आरामदायक

उत्तरः
(ख) सूना खंडहर

47. रिक्त स्थान भरिए-
जगन मास्टर ने अपने कुछ ______ बना रखे थे और भरसक कोशिश करते थे कि उनके कारण किसी को कोई कष्ट न पहुँचे।
(क) शौक और आदतें (ख) नियम-सिद्धांत
(ग) मित्र और संबंधी (घ) विचार और विश्वास

उत्तरः
(ख) नियम-सिद्धांत

48. गनपत के सुझाव पर एवजी तोता लाने के निर्णय को आप किस दृष्टि से देखते हैं?
(क) यह एक स्वार्थी निर्णय था क्योंकि गनपत ताई से लाभ उठाना चाहता था।
(ख) यह सहानुभूति से लिया गया निर्णय था ताकि ताई को सदमा न लगे, पर यह असफल रहा।
(ग) यह जगन मास्टर की बड़ी गलती को छुपाने की एक सोची-समझी चालाकी थी।
(घ) यह पूरी तरह से उचित निर्णय था और इससे ताई को आगे कभी कष्ट नहीं होता।

उत्तरः
(ख) यह सहानुभूति से लिया गया निर्णय था ताकि ताई को सदमा न लगे, पर यह असफल रहा।

49. जगन मास्टर जब मिट्ठू की निगरानी कर रहे थे, उस समय वे कौन-सी पुस्तक पढ़ रहे थे?
(क) रामायण (ख) महाभारत
(ग) गीता-रहस्य (घ) उपनिषद

उत्तरः
(ग) गीता-रहस्य

50. 'संवादहीन' कहानी का मुख्य संदेश क्या है?
(क) पालतू पक्षियों को कभी भी पिंजरे में बंद करके नहीं रखना चाहिए।
(ख) वृद्धावस्था का अकेलापन, पारिवारिक संवादहीनता और आदर्श-यथार्थ का द्वंद्व।
(ग) जगन मास्टर जैसे अत्यधिक आदर्शवादी लोग जीवन में हमेशा गलती करते हैं।
(घ) गाँव से शहर की ओर जाना हमेशा बुरा होता है और इससे परिवार टूटते हैं।

उत्तरः
(ख) वृद्धावस्था का अकेलापन, पारिवारिक संवादहीनता और आदर्श-यथार्थ का द्वंद्व।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. ताई के बड़े घर को 'सूने खंडहर' क्यों कहा गया है?

उत्तरः
जो घर कभी पूत-परिवार, बहू-बेटियाँ, नौकर-चाकर और गाय-ढोर से भरा-पूरा था, वह अब पलायन के कारण खाली हो गया था। ताई अकेली थीं और घर की भाँय-भाँय उन्हें काटने को दौड़ती थी — इसीलिए वह 'सूना खंडहर' था।

2. गनपत ने ताई की मदद कैसे की?

उत्तरः
गनपत ताई के अकेलेपन को समझता था। वह न जाने कहाँ से एक प्यारा-सा पहाड़ी तोता ले आया और उसे ताई को दे दिया। इस तोते — मिट्ठू — ने ताई के सूनेपन को सहारा दिया।

3. मिट्ठू के आने से ताई के जीवन में क्या परिवर्तन आया?

उत्तरः
मिट्ठू के आने से ताई अपने लिए चूल्हा जलाने में आलस्य नहीं करतीं — अब नियमपूर्वक मिट्ठू के लिए दाल-भात बनाने लगीं। साथ ही उन्हें यह भी ध्यान रहने लगा कि कहाँ हरी मिर्च और अमरूद मिलेगा।

4. मिट्ठू को 'कुशाग्र बुद्धि छात्र' क्यों कहा गया है?

उत्तरः
मिट्ठू ताई के पढ़ाए पाठ को हू-ब-हू दुहरा देता था, एक-दो बार सुनकर याद रख लेता था और मौके-बेमौके ताई के सवालों का सटीक उत्तर दे देता था — ठीक उसी तरह जैसे कोई कुशाग्र बुद्धि छात्र करता है।

5. ताई मिट्ठू को अपनी 'राम-कहानी' क्यों सुनाती थीं?

उत्तरः
थकी दोपहरी में पिंजरे को बगल में रखकर सुस्ताते हुए ताई को वैभव और सत्ता के बीते दिनों की याद आती। मिट्ठू एकमात्र श्रोता था जो धैर्यपूर्वक सुनता था — इसीलिए वह उसे अपनी जीवन-गाथा सुनाती थीं।

6. ताई और मिट्ठू के बीच नोक-झोंक कब होती थी?

उत्तरः
जब ताई थकी-माँदी लेटी होती थीं और मिट्ठू अपनी जिद मनवाने के लिए पिंजड़े में तूफान खड़ा कर देता, पानी और दाने की कटोरियाँ उलटा देता — तब ताई खीझकर कोसती थीं और मिट्ठू भी उतनी ही खीझ से जवाब देता था।

7. कुंभ-स्नान जाने का निर्णय ताई के लिए 'धर्म-संकट' क्यों बन गया?

उत्तरः
एक ओर प्रयागराज में कुंभ-स्नान का लोभ था, दूसरी ओर मिट्ठू की चिंता। भीड़-भाड़ में मिट्ठू की सुरक्षा संभव नहीं थी। इन दोनों के बीच उलझकर ताई धर्म-संकट में पड़ गई थीं।

8. जगन मास्टर की पत्नी ने ताई की कौन-सी समस्या दूर की?

उत्तरः
जगन मास्टर की घरवाली ने ताई के लौटने तक मिट्ठू को अपने पास रखने की सहमति दी। इस तरह ताई की चिंता दूर हुई और वे निश्चिंत होकर कुंभ-स्नान के लिए जा सकीं।

9. जगन मास्टर ने मिट्ठू को पिंजरे से बाहर निकालने की कोशिश क्यों की?

उत्तरः
जगन मास्टर स्वतंत्र विचारों के आदमी थे और पिंजड़े में बंद मिट्ठू की यातना उनसे असह्य हो गई थी। वे उसे खुली हवा में आने का मौका देकर अपने 'पाप का प्रायश्चित' करना चाहते थे।

10. मिट्ठू पहली बार पिंजरे से बाहर क्यों नहीं आया?

उत्तरः
मिट्ठू पिंजरे में रहने का इतना आदी हो चुका था कि जब जगन मास्टर ने दरवाजा खोला, उसने बाहर आने की कोई इच्छा नहीं दिखाई। उसे अनाज का लालच देकर धीरे-धीरे बाहर लाया गया।

11. मिट्ठू रोशनदान से कैसे उड़ गया?

उत्तरः
जब जगन मास्टर प्रतिदिन मिट्ठू को पिंजरे से बाहर छोड़ने का क्रम चला रहे थे, एक दिन मिट्ठू की नजर खुले रोशनदान पर पड़ी। कौतूहलवश वह पिंजरे की छत से रोशनदान पर पहुँचा और फिर बाहरी दुनिया देखकर उड़ गया।

12. गनपत ने असली मिट्ठू के उड़ जाने के बाद क्या सुझाव दिया और क्यों?

उत्तरः
गनपत ने सुझाव दिया कि मिट्ठू की ही सूरत-शक्ल का दूसरा तोता लाकर ताई को भ्रम में रखा जाए। यह सुझाव इसलिए था कि ताई को असली मिट्ठू की खबर जानकर जो सदमा लगता, उससे बचाया जा सके।

13. जगन मास्टर ने एवजी तोते को क्यों पढ़ाने की कोशिश की?

उत्तरः
जगन मास्टर चाहते थे कि ताई के आने तक एवजी तोता भी 'राम राम', 'सीताराम', 'हर गंगे' जैसे पाठ सीख ले, ताकि ताई को असली मिट्ठू का भ्रम बना रहे। वे खाना-पीना छोड़कर घंटों उसे रटाते रहे।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. ताई के बड़े घर के पतन की कहानी क्या थी? परिवार का पलायन कैसे हुआ?

उत्तरः
ताई के घर में कभी पूत-परिवार, बहू-बेटियाँ, नौकर-चाकर और गाय-ढोर सब कुछ था। बहू-बेटे गाँव का मोह छोड़कर शहरों के हो गए। बेटियाँ ब्याह कर अपनी गृहस्थी में रम गईं। खेती-बाड़ी और कारोबार पराए हाथों में चला गया। जब काम ही नहीं रहा तो नौकर-चाकर भी नहीं टिके। ताई बिल्कुल अकेली रह गईं और घर सूना खंडहर बन गया।

2. ताई और मिट्ठू के भोर के संवाद का वर्णन कीजिए। इस प्रसंग का क्या महत्त्व है?

उत्तरः
सुबह जब पेड़ों में चिड़ियाँ चहचहाती थीं तो मिट्ठू 'हर हर गंगे, सीताराम बोल, मिट्ठू राम राम' कहकर ताई की झपकी से जगाता। ताई लाड़ से आशीष देतीं 'जीते रहो बेटा' और मिट्ठू 'खुश रहो! खुश रहो!!' कहकर उन्हें निहाल कर देता। यह संवाद प्रसंग बताता है कि मिट्ठू ताई का केवल तोता नहीं, बल्कि एक प्रिय परिजन और संवाद-साथी था।

3. ताई ने कुंभ-स्नान जाने से पहले मिट्ठू को छोड़ते समय किस तरह की भावनाएँ अनुभव कीं?

उत्तरः
विदा के दिन ताई की आँसुओं की धार रुकती नहीं थी। वे बार-बार मिट्ठू को पुचकारती थीं और जल्दी लौटने का दिलासा देती थीं। कुंभ-स्नान का आध्यात्मिक महत्त्व एक ओर था, तो मिट्ठू के प्रति ममता दूसरी ओर खींच रही थी। यह आँसू बताते हैं कि वृद्ध अकेली स्त्री के लिए मिट्ठू परिवार का हिस्सा बन गया था।

8. ताई के सूनेपन को किसने सहारा दिया और कैसे?
(क) जगन मास्टर ने, उन्हें पढ़ने के लिए एक धार्मिक किताब देकर।
(ख) पड़ोस की बहू ने, उनके घर रोज़ उनसे मिलने आकर।
(ग) गनपत ने, कहीं से एक प्यारा-सा पहाड़ी तोता लाकर।
(घ) गाँव के लोगों ने, मिलकर उनकी उचित देखभाल करके।

उत्तरः
(ग) गनपत ने, कहीं से एक प्यारा-सा पहाड़ी तोता लाकर

9. **अभिकथन (A):** जो ताई अपनी खातिर चूल्हा जलाने में आलस्य करती थीं, वही अब नियमपूर्वक मिट्ठू के लिए दाल-भात बनाने लगीं।
कारण (R): मिट्ठू के आने से ताई की सारी ममता उस पर बरस पड़ी और वह रात-दिन उसे लेकर बेचैन रहने लगीं।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है
(ख) A सही है किंतु R गलत है
(ग) A गलत है किंतु R सही है
(घ) A और R दोनों गलत हैं

उत्तरः
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है

10. मिट्ठू के आने के बाद ताई को किस बात की पूरी जानकारी रहने लगी?
(क) कौन गाँव में नया रहने आया है और कौन यहाँ से गया है।
(ख) किसके खेत में हरी मिर्चें तैयार हैं और किस पेड़ में आखिरी अमरुद बचे हैं।
(ग) गाँव में इस वर्ष कौन-सा त्योहार किस तिथि को मनाया जाएगा।
(घ) इस बार गाँव के कौन-से खेत में सबसे अच्छी फसल पैदा हुई है।

उत्तरः
(ख) किसके खेत में हरी मिर्चें तैयार हैं और किस पेड़ में आखिरी अमरुद बचे हैं।

11. मिट्ठू को किस प्रकार के छात्र की तरह बताया गया है?
(क) आलसी और भुलक्कड़ (ख) कुशाग्र बुद्धि
(ग) जिद्दी और हठी (घ) मंदबुद्धि और अनजान

उत्तरः
(ख) कुशाग्र बुद्धि

12. रिक्त स्थान भरिए-
सुबह पौ फटने लगती और पेड़ों में चिड़ियाँ चहचहातीं तो मिट्ठू भी जैसे ताई को ______ से जगाने के लिए ही अपना पाठ शुरू कर देते।
(क) रात की नींद (ख) भोर की झपकी
(ग) दोपहर की थकान (घ) शाम की उनींदाहट

उत्तरः
(ख) भोर की झपकी

13. मिट्ठू सुबह-सुबह किन शब्दों से ताई को जगाता था?
(क) 'मर जा! मर जा! मर जा!'
(ख) 'राम राम सीताराम कहो'
(ग) 'हर हर गंगे! सीताराम बोल! मिट्ठू राम राम!'
(घ) 'खुश रहो! खुश रहो!!'

उत्तरः
(ग) 'हर हर गंगे! सीताराम बोल! मिट्ठू राम राम!'

14. ताई मिट्ठू को लाड़ से निहारकर क्या आशीष देती थीं?
(क) 'खुश रहो, मस्त रहो'
(ख) 'जीते रहो बेटा, जुग-जुग जिओ'
(ग) 'राम-राम कहो, सीताराम कहो'
(घ) 'हर हर गंगे, हर हर गंगे'

उत्तरः
(ख) 'जीते रहो बेटा, जुग-जुग जिओ'

15. मिट्ठू ताई की आशीष के बदले में क्या कहता था?
(क) 'राम राम सीताराम'
(ख) 'हर हर गंगे'
(ग) 'खुश रहो! खुश रहो!!'
(घ) 'कटेगी! कटेगी!! कटेगी!!!'

उत्तरः
(ग) 'खुश रहो! खुश रहो!!'

16. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प चुनिए:
I. ताई थककर पिंजरे को बगल में रखकर सुस्ताने लगतीं तो मिट्ठू से पूछ बैठतीं।
II. मिट्ठू ने ताई के 'अब कैसे कटेगी?' के जवाब में 'कटेगी! कटेगी!! कटेगी!!!' कहकर दिलासा दिया।
III. ताई के थके शरीर में इस जवाब से प्राण लौट आते थे।
(क) केवल I और II सही हैं
(ख) केवल II और III सही हैं
(ग) I, II और III तीनों सही हैं
(घ) केवल I और III सही हैं

उत्तरः
(ग) I, II और III तीनों सही हैं

17. अलस दोपहरी में ताई मिट्ठू को कौन-सी कहानी सुनाती थीं?
(क) पड़ोसियों के आपसी झगड़ों की कहानी
(ख) वैभव और सत्ता के बीते दिनों की गाथा
(ग) धर्म-कर्म और देवी-देवताओं की कथाएँ
(घ) पुराने समय के गाँव के इतिहास की बातें

उत्तरः
(ख) वैभव और सत्ता के बीते दिनों की गाथा

हैं। उनका जीवन का सारा संवाद अब मिट्ठू के इर्द-गिर्द है। वे पलायन-युग की उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती हैं जो गाँव में अकेली छूट गई है।

2. जगन मास्टर के चरित्र का विश्लेषण कीजिए। कहानी में उनकी भूमिका क्या है?

उत्तरः

जगन मास्टर 'दूसरे मिजाज के आदमी' हैं — स्वतंत्र विचारों के, नैतिकता के प्रति सजग। उनके अपने सिद्धांत हैं और वे नहीं चाहते कि उनके कारण किसी को कष्ट हो। पिंजड़े में बंद मिट्ठू देखकर उन्हें बेचैनी होती है, खुद को दोषी महसूस होता है। वे प्रायश्चित के लिए मिट्ठू को रोज बाहर छोड़ते हैं — यह उनकी आदर्शवादिता है। पर उनकी यही आदर्शवादिता विडंबना बन जाती है — मिट्ठू उड़ जाता है। फिर वे खाना छोड़कर एवजी तोते को पढ़ाते हैं — 'मर जा! मर जा!!' कहते हैं। कहानी में जगन मास्टर आदर्श और यथार्थ के द्वंद्व का प्रतीक हैं। उनकी उपस्थिति कहानी में व्यंग्य और करुणा दोनों उत्पन्न करती है।

3. 'संवादहीन' कहानी पलायन और अकेलेपन की कहानी है। इस कथन की व्याख्या कीजिए।

उत्तरः

'संवादहीन' कहानी का मूल विषय आधुनिक जीवन की वह विसंगति है जिसमें गाँव के लोग शहर की ओर पलायन करते हैं और वृद्ध माता-पिता अकेले रह जाते हैं। ताई का बड़ा घर इस पलायन का प्रतीक है — बहू-बेटे, बेटियाँ, नौकर-चाकर — सब गए। जो सूनापन बचा, उसे मिट्ठू ने भरा। मिट्ठू केवल एक तोता नहीं था — वह संवाद का माध्यम था, ममता का केंद्र था। कहानी दर्शाती है कि जब मनुष्य-संवाद टूट जाता है तो इंसान पशु-पक्षी से संवाद खोजता है। मिट्ठू के उड़ जाने के बाद ताई 'संवादहीन' हो जाती हैं — और एवजी मिट्ठू उनकी उस जरूरत को पूरा नहीं कर सकता। यह कहानी शहरीकरण के दौर में बुजुर्गों के अकेलेपन पर एक मार्मिक टिप्पणी है।

4. कहानी में मिट्ठू का उड़ जाना और एवजी तोते का लाना — इन दो घटनाओं का प्रतीकात्मक विश्लेषण कीजिए।

उत्तरः

मिट्ठू का उड़ना कहानी का केंद्रीय मोड़ है। प्रतीकात्मक रूप से यह घटना कई अर्थ रखती है। पहला — स्वतंत्रता अंततः बंधन को तोड़ती है। मिट्ठू पिंजरे का आदी हो गया था, पर प्रकृति की पुकार आखिर जीती। दूसरा — आदर्शवाद के अनपेक्षित परिणाम होते हैं — जगन मास्टर की 'करुणा' ने ताई की सबसे बड़ी क्षति की। एवजी तोते का लाना भी प्रतीकात्मक है — यह समाज की उस प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ हम सच छिपाकर 'भ्रम' से राहत देने की कोशिश करते हैं। पर एवजी तोता असली संवाद नहीं दे सकता। यह प्रतिस्थापना सच्चे रिश्तों की अनन्यता को रेखांकित करती है — कोई भी 'एवजी' असली की जगह नहीं ले सकता।

5. 'संवादहीन' कहानी में मनुष्य और पशु-पक्षी के संबंध को किस तरह चित्रित किया गया है?

उत्तरः

शेखर जोशी ने इस कहानी में मनुष्य-पशु संबंध को अत्यंत संवेदनशीलता से उकेरा है। ताई और मिट्ठू का संबंध केवल स्वामी-पालतू का नहीं है — वह माँ-बेटे का, सखा-सखी का, गुरु-शिष्य का संयुक्त रूप है। ताई उसे 'बेटा' कहकर आशीष देती हैं, वह उन्हें 'खुश रहो' कहकर आशीष देता है। वे उसे अपनी राम-कहानी सुनाती हैं, वह धैर्य से सुनता है। कभी-कभी नोक-झोंक होती है, मान-मनौवल होता है — ठीक घर के प्राणियों की तरह। दूसरी ओर जगन मास्टर का नैतिक द्वंद्व भी मनुष्य-पक्षी संबंध का एक आयाम है। कहानी बताती है कि अकेले और संवादहीन जीवन में पशु-पक्षी ही इंसान का सहारा बन जाते हैं — और उनके जाने से इंसान और गहरी तन्हाई में डूब जाता है।

6. कहानी के विभिन्न पात्रों — ताई, जगन मास्टर, मास्टराइन और गनपत — के योगदान का विश्लेषण कीजिए।

उत्तरः

ताई कहानी की मुख्य पात्र हैं जो वृद्धावस्था के अकेलेपन और ममता का प्रतीक हैं। उनका जीवन पलायन के बाद की उस सच्चाई को दर्शाता है जो लाखों ग्रामीण बुजुर्ग झेलते हैं। गनपत कहानी में उस सहृदय पड़ोसी का प्रतिनिधित्व करता है जो दूसरों का दर्द देखता-समझता है — वही मिट्ठू लाया, वही एवजी तोते का सुझाव दिया। जगन मास्टर आदर्शवाद और यथार्थ के बीच फँसे हैं — उनकी नैतिकता और उसके परिणाम कहानी में व्यंग्य का स्रोत बनते हैं। मास्टराइन एक व्यावहारिक महिला है जिसने बिना सोचे-विचारे ताई का भार उठाया — पर उसकी असावधानी से मिट्ठू उड़ा। ये सभी पात्र मिलकर ग्रामीण जीवन का एक पूर्ण और सजीव चित्र बनाते हैं।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

गद्यांश 1

अब ये ही दो प्राणी गाँव के बीच में स्थित बड़े घर के उस सूने खंडहर में एक-दूसरे को सहारा देने के लिए रह गए थे। ताई ने अपने जीवन में अच्छे दिन भी देखे थे। पूत-परिवार, बहू-बेटियाँ, नौकर-चाकर, गाय-ढोर, क्या नहीं था बड़े घर में! देखते ही देखते क्या से क्या हो गया! बहू-बेटे गाँव का मोह छोड़कर शहरों के होकर रह गए। बेटियाँ अपने-अपने हाथ पीले कराकर अपनी गृहस्थी में रम गईं, किसके भरोसे कारबार संभलता। धीरे-धीरे सब पराए हाथों में चला गया। जब खेती-बाड़ी नहीं, कारबार नहीं, तो नौकर-चाकर किस दम पर टिकते!

(ख) ताई ने स्वयं उन्हें ऐसा करने का कड़ा आदेश दिया था।
(ग) खुली हवा देकर वे अपने पाप का प्रायश्चित करना चाहते थे।
(घ) उन्हें मिट्ठू के उस पुराने पिंजरे की सफाई करनी थी।

उत्तरः
(ग) खुली हवा देकर वे अपने पाप का प्रायश्चित करना चाहते थे।

28. जब जगन मास्टर ने पिंजरे का दरवाजा खोला तो मिट्ठू ने क्या किया?
(क) वह दरवाजा खुलते ही तुरंत कमरे से बाहर उड़ गया।
(ख) वह खुशी के मारे ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ें लगाने लगा।
(ग) आदी होने के कारण बाहर आने की कोई इच्छा नहीं दिखाई।
(घ) वह डर के मारे पिंजरे की पीछे वाली दीवार से चिपक गया।

उत्तरः
(ग) आदी होने के कारण बाहर आने की कोई इच्छा नहीं दिखाई।

29. रिक्त स्थान भरिए-
जगन मास्टर ने मिट्ठू को बाहर लाने के लिए मुट्ठी में थोड़ा अनाज लेकर ______ से लेकर बाहर तक बिखेर दिया।
(क) खिड़की के किनारे (ख) पिंजरे के दरवाजे
(ग) कमरे के दरवाजे (घ) रोशनदान के नीचे

उत्तरः
(ख) पिंजरे के दरवाजे

30. जगन मास्टर ने कितने दिनों तक रोज यह क्रम जारी रखा?
(क) एक-दो दिन (ख) एक सप्ताह
(ग) तीन-चार दिन (घ) पंद्रह दिन

उत्तरः
(ग) तीन-चार दिन

31. मिट्ठू की नजर अचानक किस पर पड़ी और वह वहाँ पहुँच गयी?
(क) खुली खिड़की पर (ख) बाग के पेड़ पर
(ग) ऊपर खुले रोशनदान पर (घ) घर के दरवाजे पर

उत्तरः
(ग) ऊपर खुले रोशनदान पर

32. 'अकेले मिट्ठू क्या उड़े, आदर्शवादी जगन मास्टर के हाथों के सभी तोते उड़ गए।' इस वाक्य का मुख्य भाव क्या है?
(क) मिट्ठू के उड़ने से जगन मास्टर के आदर्श और योजनाएँ विफल हो गए।
(ख) जगन मास्टर ने ताई से बदला लेने के लिए मिट्ठू को उड़ा दिया था।
(ग) मिट्ठू उड़ने में बहुत तेज था इसलिए वह दोबारा पकड़ा नहीं गया।
(घ) जगन मास्टर ने मिट्ठू को पिंजरे से पकड़ने की कोई कोशिश नहीं की।

उत्तरः
(क) मिट्ठू के उड़ने से जगन मास्टर के आदर्श और योजनाएँ विफल हो गए।

33. मिट्ठू के उड़ जाने पर जगन मास्टर क्या करते रहे?
(क) वे बहुत दुखी होकर अपने घर के कोने में बैठकर रोते रहे।
(ख) वे बिना समय गँवाए तुरंत ताई को सूचित करने के लिए चले गए।
(ग) वे बाग में पेड़-पेड़ 'मिट्ठू आ!' पुकारते हुए पसीना-पसीना होते रहे।
(घ) वे गाँव के सभी लोगों को बुलाकर तोते की खोजबीन करवाते रहे।

उत्तरः
(ग) वे बाग में पेड़-पेड़ 'मिट्ठू आ!' पुकारते हुए पसीना-पसीना होते रहे।

34. ताई के लौटने का दिन निकट आने पर गाँव में सभी के मन में क्या आशंका थी?
(क) लंबी और थका देने वाली यात्रा के कारण ताई बीमार पड़ जाएंगी।
(ख) ताई लौटकर मिट्ठू को न पाने पर उनकी क्या दयनीय दशा होगी।
(ग) ताई अब प्रयागराज का मोह छोड़कर कभी वापस गाँव नहीं लौटेंगी।
(घ) मिट्ठू के खो जाने पर जगन मास्टर की पत्नी से भारी झगड़ा होगा।

उत्तरः
(ख) ताई लौटकर मिट्ठू को न पाने पर उनकी क्या दयनीय दशा होगी।

35. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प चुनिए:
I. गनपत ने सुझाव दिया कि मिट्ठू की ही सूरत-शक्ल का एक दूसरा तोता लाया जाए।
II. गनपत का उद्देश्य ताई को भ्रम में रखना था।
III. गनपत अगले दिन ही नया तोता लेकर हाजिर हो गया।
(क) केवल I और II सही हैं
(ख) केवल II और III सही हैं
(ग) केवल I और III सही हैं
(घ) I, II और III तीनों सही हैं

उत्तरः
(घ) I, II और III तीनों सही हैं

उत्तरः

1. (ख) ममता को जीने की नई प्रेरणा और ऊर्जा बना लेना
2. (ग) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
3. (क) करुणा और ममता का जीवन्त चित्रण
4. (ग) किसी काम के लिए बार-बार की माँग और आग्रह
5. (घ) मिट्ठू के लिए ताज़ी और पसंदीदा सामग्री जुटाने की चिंता से

गद्यांश 3

ताई निहाल हो जातीं। वृद्धावस्था का शरीर और उस पर नई गृहस्थी का भार, काम-काज से थककर ताई जब कभी पिंजरे को बगल में रखकर सुस्ताने लगतीं तो अनायास ही मिट्ठू से सवाल कर बैठतीं, 'मिट्ठू! अब कैसे कटेगी?' और नौजवान मिट्ठू ताई के बुढ़ापे का सहारा बनकर दम-खम के साथ उन्हें दिलासा देते—

कटेगी! कटेगी!! कटेगी!!!

ताई के थके शरीर में प्राण लौट आते, और तब उस अलस दोपहरी में ताई मिट्ठू को अपनी राम-कहानी सुनाने लगतीं। वैभव और सत्ता के बीते दिनों की गाथा। काल की अतल गहराइयों से झाँकता एक-एक चेहरा ताई को नए-नए प्रसंगों की याद दिला देता—

1. "कटेगी! कटेगी!! कटेगी!!!" — मिट्ठू के इस उत्तर से ताई के थके शरीर में प्राण लौटने का कारण क्या है?
   (क) मिट्ठू की बुद्धिमत्ता पर ताई को गर्व होता था
   (ख) ताई को मिट्ठू की बात में सच्चा भरोसा होता था
   (ग) संवाद और साहचर्य अकेलेपन का सबसे बड़ा उपचार है
   (घ) मिट्ठू की आवाज़ से ताई की दोपहर की नींद टूट जाती थी

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. ताई अपनी थकान मिट्ठू से बातें करके दूर करती थीं।
   II. मिट्ठू ताई की हर बात का अर्थ पूरी तरह समझता था।
   III. ताई अपने बीते वैभव की कहानियाँ मिट्ठू को सुनाती थीं।

   सही कथन हैं—
   (क) केवल II और III (ख) केवल I और II
   (ग) I, II और III तीनों (घ) केवल I और III

3. इस गद्यांश में 'पुनरुक्ति' का प्रयोग ("कटेगी! कटेगी!! कटेगी!!!") किस प्रभाव के लिए किया गया है?
   (क) मिट्ठू की याददाश्त की विलक्षणता दर्शाने के लिए
   (ख) दृढ़ भरोसे और उत्साह की तीव्रता प्रकट करने के लिए
   (ग) कहानी में हास्य उत्पन्न करने के लिए
   (घ) मिट्ठू की रटने की आदत दर्शाने के लिए

4. 'अतल' शब्द का सटीक अर्थ है—
   (क) अथाह और तल-रहित गहराई
   (ख) प्राचीन और पुरातन विरासत
   (ग) अत्यंत ऊँचा और विस्तृत
   (घ) शांत और स्थिर

5. ताई अपनी 'राम-कहानी' में किन बातों का वर्णन करती थीं?
   (क) मिट्ठू की शरारतों और चालाकियों की बातें
   (ख) वैभव और सत्ता के बीते दिनों की जीवन-गाथा
   (ग) गाँव के झगड़ों और विवादों की पुरानी कहानियाँ
   (घ) कुंभ-स्नान और तीर्थयात्रा की योजनाएँ

उत्तरः

1. (ग) संवाद और साहचर्य अकेलेपन का सबसे बड़ा उपचार है
2. (घ) केवल I और III
3. (ख) दृढ़ भरोसे और उत्साह की तीव्रता प्रकट करने के लिए
4. (क) अथाह और तल-रहित गहराई
5. (ख) वैभव और सत्ता के बीते दिनों की जीवन-गाथा

गद्यांश 4

ताई को घड़ी-भर के लिए भी मिट्ठू का वियोग सहन नहीं हो सकता था। कभी-कभार गाँव में थोड़ी देर के लिए भी न्यौते-बुलावे में जातीं, तो दस बार खिड़की-दरवाजों की साँकलें टोहकर देखतीं, कंजूस के धन की तरह मिट्ठू को छिपाकर रखतीं और जल्दी लौट आने का दिलासा देकर देहरी से पाँव बाहर निकालतीं। लेकिन एक संयोग आ पड़ा कि ताई धर्म-संकट में पड़ गईं। इस लोक में ताई ने बहुत ऊँच-नीच देख लिए थे, अब कभी-कभी परलोक की चिंता भी मन में घर कर जाती। गाँव के कई लोग कुंभ-स्नान के लिए प्रयागराज जा रहे थे, अच्छा साथ बन रहा था।

1. 'कंजूस के धन की तरह मिट्ठू को छिपाकर रखतीं' — यह उपमा ताई के किस मनोभाव को उजागर करती है?
   (क) ताई का स्वभाव से कंजूस और संकुचित होना
   (ख) मिट्ठू को चोरी से बचाने की व्यावहारिक सावधानी
   (ग) ताई का मिट्ठू के प्रति उदासीन होना
   (घ) मिट्ठू के खोने का गहरा भय और अत्यधिक ममता

2. 'धर्म-संकट' शब्द से ताई की कौन-सी मनोदशा प्रकट होती है?
   (क) ताई का अपनी संतान और ईश्वर पर से विश्वास उठ जाना।
   (ख) धार्मिक आस्था और सांसारिक मोह के बीच की उलझन।
   (ग) परलोक की चिंता और पुराने विचारों में डूब जाना।
   (घ) कुंभ-स्नान न कर पाने का मन ही मन पछतावा होना।

3. इस गद्यांश का प्रमुख स्वर कैसा है?
   (क) भय और रहस्य से परिपूर्ण वातावरण
   (ख) क्रोध और विद्रोह की तीव्र भावना

पृष्ठ 68

47. पार्श्वगायन/पार्श्वगायक – किसी अन्य अभिनेता या अभिनेत्री के बदले में नेपथ्य में बैठकर गाने वाला, स्वरदान करने वाला
48. अनुपात – आनुपातिक संबंध, परिमाण
49. अजीबोगरीब – विचित्र, अनोखा
50. टोटके – उपाय, युक्तियाँ
51. विकसित – बढ़ा हुआ, तरक्की पाया हुआ
52. स्तरीय – अच्छे स्तर का, उच्च कोटि का
53. परहेज – किसी वस्तु से बचना, बीमार का हानिकर पदार्थ न खाना
54. दर्शना – दिखावट, प्रकटीकरण
55. दोस्ताना – मित्रता, भाईचारा
56. संस्मरण – यादें, पुरानी घटनाओं का वर्णन
57. होलिका – होली की अग्नि, पवित्र आग

पृष्ठ 69

58. मान्यता – भरोसा, परंपरागत विश्वास
59. आराधना – पूजा, उपासना
60. आत्मीयता – अपनापन, गहरा लगाव

पृष्ठ 70

61. सीनियर – वरिष्ठ, उम्र या पद में बड़ा
62. वाकया/वाकिया – घटना, दुर्घटना, युद्ध
63. उनींदे – नींद से भरे हुए, अलसाए हुए
64. खैरियत – कुशल, भलाई, नेकी
65. अनुष्ठानों – धार्मिक कार्यों, यज्ञ-पूजा
66. फाग – फागुन में गाया जाने वाला गीत, फागुन में होने वाला राग-रंग, होली
67. धमार – फाग का एक भेद (संगीत), एक ताल
68. सोहर – बच्चे के जन्म के अवसर पर गाया जाने वाला एक मंगलगीत
69. बधावा – मंगलाचार, बधाई, बच्चे के जन्म आदि के अवसर पर भेजा जाने वाला उपहार
70. रिवाज – प्रथा, परंपरा, रीति

पृष्ठ 71

71. मुग्ध – मोहित, लीन
72. ठेठ – बिल्कुल असली, शुद्ध
73. गँवई – ग्रामीण, गाँव का
74. सहयोग – सहायता, साथ देना
75. संपर्क – मेल-जोल, संबंध
76. जनश्रुतियाँ – किंवदंतियाँ, लोक-कथाएँ
77. अवधारणाओं – विचारों, मान्यताओं

पृष्ठ 72

78. मसलन – उदाहरण रूप में
79. पवित्र – साफ, पावन, शुद्ध
80. आघात – चोट, प्रहार
81. अतिरेक – आवश्यकता से अधिक, अंतर, आधिक्य
82. वाजिब – उचित, कर्तव्य
83. अमर – जो कभी न मरे, चिरस्थायी
84. अफ़सोस – दुख, पछतावा
85. प्रार्थना – निवेदन, ईश्वर से विनती
86. अप्रत्याशित – जिसकी आशा न रही हो, अनसोचा, आकस्मिक

5. पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. लता जी ने अपने पिताजी से क्या-क्या सीखा?
(क) अनुशासन और नियम के साथ जीना
(ख) भय और संशय के साथ जीना
(ग) स्वाभिमान और सच्चाई के साथ जीना
(घ) चतुराई और संयम के साथ जीना

उत्तरः
(ग) स्वाभिमान और सच्चाई के साथ जीना
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि लता जी ने स्वयं कहा — "सबसे ज्यादा तो स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा।" उन्होंने बताया कि पिताजी ने सिखाया कि अगर कोई बात सही लगे तो उसे करो और किसी के आगे झुकने की जरुरत नहीं है। उन्होंने कभी किसी के आगे हाथ नहीं पसारा। यह स्वाभिमान और सच्चाई के साथ जीने का ही उदाहरण है।

2. पिताजी की मृत्यु के बाद परिवार सँभालने का लता जी का निर्णय किस जीवन-मूल्य का द्योतक है?
(क) संघर्ष (ख) निराशा
(ग) भौतिकता (घ) कर्तव्यनिष्ठा

उत्तरः
(घ) कर्तव्यनिष्ठा
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि मात्र 13 वर्ष की आयु में पिता की मृत्यु के बाद लता जी ने अपनी माँ, भाई-बहनों की देखभाल के लिए सुबह से रात तक एक स्टूडियो से दूसरे स्टूडियो भागते हुए काम किया। उनके मन में सदा यही भाव रहा कि परिवार की जरूरतें कैसे पूरी की जाएँ। यह शुद्ध कर्तव्यनिष्ठा है — संघर्ष तो उसका माध्यम था, लक्ष्य कर्तव्यपालन था।

3. "बिल्कुल ठेठ गँवई अंदाज में यह मंगलागौर का उत्सव मनाया जाता है..." 'मंगलागौर' के वर्णन से भारतीय समाज की कौन-सी परंपरा उजागर होती है?
(क) संगीत पर आधुनिकता का प्रभाव
(ख) लोकगीतों की लोकप्रियता में कमी
(ग) धार्मिक कार्यक्रमों में संगीत का महत्व
(घ) संगीत की महत्वपूर्ण सामाजिक भूमिका

(ग) खोया हुआ सच्चा प्रेम और संवाद कभी वापस नहीं लौटता
(घ) धोखे से सच्चाई कभी लंबे समय तक नहीं छुपती

2. ताई की अपेक्षा और एवजी मिट्ठू की चुप्पी के विरोधाभास से कौन-सा भाव उत्पन्न होता है?
(क) अपेक्षा और यथार्थ के बीच की गहरी करुण दूरी
(ख) जगन मास्टर के छल की सफलता का संतोष
(ग) ताई के लौटने की अप्रत्याशित खुशी
(घ) ताई की गहरी निराशा और एवजी तोते पर भारी क्रोध

3. कहानी के इस अंतिम गद्यांश का मूड कैसा है?
(क) प्रेरणादायक और स्पष्ट सुखांत
(ख) रोमांचक और नाटकीय
(ग) हास्यपूर्ण और व्यंग्यात्मक
(घ) विषादपूर्ण और मुक्त-अंत वाला

4. 'एवजी' शब्द का सही अर्थ है—
(क) असली और मूल का वास्तविक प्रतिनिधि
(ख) बदले में या स्थान पर काम करने वाला
(ग) वफ़ादार और पूरी तरह आज्ञाकारी
(घ) चालाक और धोखेबाज़ स्वभाव का

5. ताई पहले बड़े घर न जाकर सीधे जगन मास्टर के दरवाजे क्यों पहुँचीं?
(क) जगन मास्टर को कुंभ की धार्मिक कथा सुनाने के लिए
(ख) मास्टराइन का आभार प्रकट करने और उपहार देने के लिए
(ग) अपना सामान और शेष पैसा वापस लेने के लिए
(घ) मिट्ठू से मिलने की तीव्र व्याकुलता और लगाव के कारण

उत्तरः
1. (ग) खोया हुआ सच्चा प्रेम और संवाद कभी वापस नहीं लौटता
2. (क) अपेक्षा और यथार्थ के बीच की गहरी करुण दूरी
3. (घ) विषादपूर्ण और मुक्त-अंत वाला
4. (ख) बदले में या स्थान पर काम करने वाला
5. (घ) मिट्ठू से मिलने की तीव्र व्याकुलता और लगाव के कारण

अध्याय 4

ऐसी भी बातें होती हैं

1. लेखक परिचय

महान सांगीतिक यात्रा को समेटे हुए साक्षात्कार 'ऐसी भी बातें होती हैं' के प्रस्तोता यतींद्र मिश्र का जन्म सन् 1977 में अयोध्या, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनका नाम ललित कलाओं, समाज और संस्कृति के अनन्य उपासक के रूप में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। इन्होंने निरंतर अपनी प्रखर लेखनी के द्वारा संगीत की महान विभूतियों के कड़े संघर्षों और उनकी अंतर्निहित कलात्मक गरिमा को सहेजकर हिंदी साहित्य को अलंकृत किया है। अपनी इस आत्मीय एवं सुरुचिपूर्ण शैली के बल पर इन्होंने हिंदी प्रेमियों को गौरवान्वित किया है।

2. पाठ-परिचय

'ऐसी भी बातें होती हैं' यतींद्र मिश्र द्वारा लिया गया 'भारत रत्न' लता मंगेशकर का एक रोचक साक्षात्कार है। इसमें लता जी ने अपने पिता पं. दीनानाथ मंगेशकर से मिली स्वाभिमान और संस्कार की सीख, अपने संघर्षमय जीवन, परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठा तथा संगीत के प्रति समर्पण के बारे में खुलकर बातें की हैं। बचपन की यादें, त्योहारों की परंपराएँ और संगीत की असीम शक्ति पर उनके विचार इस साक्षात्कार को अत्यंत आत्मीय, प्रेरणादायक और जीवंत बनाते हैं।

3. पाठ-सारांश

यतींद्र मिश्र और लता मंगेशकर का संवाद

यह पाठ लेखक यतींद्र मिश्र द्वारा 'भारत रत्न' लता मंगेशकर से लिए गए एक आत्मीय साक्षात्कार पर आधारित है। लेखक का उद्देश्य प्रशंसकों को लता जी के महान जीवन और उनकी संगीत यात्रा से रुबरु कराना है।

पं. दीनानाथ मंगेशकर की स्मृतियाँ और कार्यशैली

लता जी बताती हैं कि उनके पिता पं. दीनानाथ मंगेशकर बहुत गंभीर थे, जिनका केवल देखना ही बच्चों में अनुशासन के लिए काफी होता था। उनकी ड्रामा कंपनी के नाटक रात-रात भर चलते थे, जिनमें लंबी रागदारी वाले गायन की परंपरा थी।

वे एक राग गाते समय अचानक सुर बदलकर उसे नया रूप दे देते थे और उन्होंने ही पहली बार मराठी रंगमंच पर कर्नाटक और पंजाब के संगीत का समावेश किया था।

स्वाभिमान और जीवन के संस्कार

पिता से लता जी ने सबसे बड़ी सीख स्वाभिमान से जीने की पाई थी। पिता के असमय निधन के बाद परिवार को बहुत कठिन दिन देखने पड़े, परंतु माता-पिता के संस्कारों के कारण उन्होंने कभी किसी के आगे हाथ नहीं पसारा।

बचपन का खेल और अभिनय से अरुचि

बचपन में सभी भाई-बहन चोरी-छिपे फिल्मों की नकल उतारते थे। 'संत तुकाराम' फिल्म देखकर लता जी गद्गद होकर गद्दे-तकिए जोड़कर स्वर्ग बनाती थीं और उस पर बैठकर गाना गाती थीं।

लता जी ने शुरुआत में कुछ फिल्मों में अभिनय किया, परंतु उन्हें मेकअप करना और कैमरे के सामने झूठे हाव-भाव दिखाना कभी पसंद नहीं आया। उन्होंने केवल 'छत्रपति शिवाजी' फिल्म में अपनी व्यक्तिगत पसंद के कारण एक छोटा दृश्य और कुछ पंक्तियाँ गाई थीं।

काम की परिस्थितियाँ व बचपन की हसरत

शुरुआती दिनों में लता जी सुबह से रात तक एक स्टूडियो से दूसरे स्टूडियो के चक्कर काटती थीं ताकि कठिन परिश्रम करके अपने परिवार की ज़रूरतें पूरी कर सकें।

बचपन में उन्होंने पंडित कुमार गंधर्व को ढेर सारे मेडल लगाकर गाते देखा था, जिसे देखकर उनके मन में भी बड़ी होकर मेडल पाने की हसरत जागी थी।

संगीत का हेर-फेर और तकनीकी विकास

पुराने समय में तकनीक बहुत कमज़ोर थी और 'आएगा आने वाला' गाने के लिए उन्हें हॉल में बहुत दूर से दबे पाँव माइक तक आना पड़ता था। उनका मानना है कि यदि पुराने उस्तादों को आज की विकसित तकनीक मिलती, तो वे कमाल का एडवांस संगीत रचते।

व्यक्तिगत जीवन, रंग और त्योहार

अपने पहनावे में सफेद रंग को प्राथमिकता देने वाली लता जी अब होली नहीं खेलतीं। उनके परिवार में दशहरा, दीवाली और नवरात्रि का अधिक महत्व है, जहाँ नवरात्रि के पहले दिन 'गुड़ि पड़वा' को बहुत धूमधाम से मनाया जाता है।

संगीतकारों के प्रति आदर और अनूठा वाकया
पचास के दशक में लता जी दीवाली की सुबह साढ़े पाँच बजे नौशाद साहब के घर मिठाई देने पहुँच गई थीं। सच जानने पर नौशाद साहब ने भावुक होकर कहा था कि तुम्हारी गाई धुनों की मिठास के बदले हम सभी संगीतकारों को तुम्हें मिठाई खिलानी चाहिए।

इसके अतिरिक्त, वे बताती हैं कि महाराष्ट्र में विवाह के बाद औरतें एकत्र होकर 'मंगलागौर' उत्सव मनाती थीं, जिसमें ठेठ गँवई अंदाज़ में नृत्य-गायन होता था।

कोरस कलाकारों के साथ आत्मीय संबंध
लता जी का कोरस में गाने वाली लड़कियों के साथ बहुत ही आत्मीय और पारिवारिक संबंध था। स्टूडियो में कुर्सियाँ न होने पर वे सब ज़मीन पर बैठती थीं और लता जी भी उनके साथ नीचे बैठकर मज़े से बातें करती थीं। पुराने दौर में कोरस मुख्य गायकों के साथ ही लाइव रेकॉर्ड होता था।

संगीत की असीम शक्ति और मर्म
तानसेन के दीपक राग से दीये जलने या मेघ राग से वर्षा होने जैसी जनश्रुटियों पर लता जी कहती हैं कि संगीत में अप्रत्याशित रचने की असीम शक्ति होती है।

वे उस्ताद अली अकबर खाँ के कंसर्ट का प्रसंग सुनाती हैं, जहाँ पूरी तरह सुर में डूबकर बजाने के कारण सरोद का तार टूट गया था और अली अकबर भाई ने कहा था, "जब बहुत सुर में तार लगता है, तो टूट जाता है"।

जीवन का दार्शनिक सच और ईश्वर से प्रार्थना
अमरता के प्रश्न पर लता जी व्यावहारिक उत्तर देती हैं कि उनका गाना अमर हो सकता है, परंतु यह नश्वर शरीर अमर नहीं है।

वे एक मराठी कहावत 'गाव गेला वाहुन, नाव गेला राहुन' (गाँव बह जाता है, नाम रह जाता है) का उल्लेख करते हुए संतोष जताती हैं कि वे अपने पिता का नाम आगे बढ़ा सकीं। वे अंत में ईश्वर से प्रार्थना करती हैं कि प्रभु अपनी कृपा की छाया हर एक कलाकार और नेक इंसान पर बनाए रखें।

4. कठिन शब्दार्थ

पृष्ठ 63

1. अप्रतिम – बेजोड़, अनुपम
2. आकंठ – कंठ तक, पूर्ण रूप से
3. दुर्लभ – जो कठिनाई से मिले, अनोखा, नायाब
4. सार्थक – अर्थपूर्ण, सफल, उद्देश्यपूर्ण
5. असंख्य – अनगिनत, बहुत सारे
6. शुभचिंतकों – भला चाहने वालों, हितैषियों
7. दीवानगी – पागलपन, गहरा लगाव
8. समर्पित – समर्पण किया हुआ, दिया हुआ, सौंपा हुआ
9. आभार – धन्यवाद प्रकट करने का भाव, कृतज्ञता
10. स्मरण – याद, स्मृति, चिंता
11. गंभीरता – धीरता, शांत भाव

पृष्ठ 64

12. रागदारी – ठीक राग गाने का ढंग या क्रिया
13. परंपरा – पुरानी रीति, परिपाटी, चलन
14. राग – विशिष्ट ताल-लययुक्त, ध्वनि, मन को प्रसन्न करना, प्रीति, अनुराग
15. षडज – संगीत का पहला सुर यानी 'सा'
16. रंगमंच – नाटक खेलने का स्थान, स्टेज
17. शास्त्रीय संगीत – नियमों में बँधा हुआ पारंपरिक संगीत, क्लासिकल म्यूज़िक
18. स्वाभिमान – आत्मसम्मान, अपनी प्रतिष्ठा का अभिमान
19. संस्कार – अच्छे आचरण की सीख, अच्छे गुण
20. निर्णय – फ़ैसला, निश्चय

पृष्ठ 65

21. निधन – मृत्यु, देहावसान
22. पसारना – फैलाना, माँगना
23. प्रयास – कोशिश, चेष्टा
24. अनुयायी – पीछे चलने वाला, अनुगामी, समान
25. देशभक्ति – देश के प्रति प्रेम का भाव
26. अनुशासन – नियमों का पालन करना, मर्यादा, नियंत्रण
27. अभिनय – नाटक या फिल्म में रोल करना, ऐक्टिंग

पृष्ठ 66

28. बैकुंठ – स्वर्ग
29. मार्फत/मारफ़त – माध्यम, ज्ञान
30. सराहने – प्रशंसा करना, बड़ाई करना
31. संस्करणों – रूपों, प्रकाशनों
32. दृश्य – नजारा, चित्र
33. परिस्थितियाँ – हालात, दशाएँ
34. अनुकूल – पक्ष में, सुगम
35. सबब – कारण, अपादान कारण, हेतु
36. अलबत्ता – निस्संदेह
37. सुध – होश, चेतना, याद
38. हसरत – इच्छा, कामना
39. प्रचलन – रिवाज, चलन

पृष्ठ 67

40. सूत्रपात – कार्य का आरंभ, माप वाले सूत से मापन का कार्य
41. मददगार – सहायता करने वाला, सहायक
42. आमद – आय, आना
43. आकलन – अनुमान, मूल्यांकन
44. प्रभाव – असर, छाप
45. लिहाज – दृष्टिकोण, अनुसार
46. रोचक – दिलचस्प, मन को भाने वाला

2. लता मंगेशकर पर अपने पिताजी पं. दीनानाथ मंगेशकर के व्यक्तित्व का क्या प्रभाव पड़ा? उनके कौन-कौन से कार्यों और व्यवहार में उनके पिता का प्रभाव दिखाई देता है?

उत्तरः

पं. दीनानाथ मंगेशकर का लता जी के व्यक्तित्व पर गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ा। यह प्रभाव निम्नलिखित रुपों में दिखाई देता है:

1. **स्वाभिमान**: पिता ने सिखाया — "किसी के आगे हाथ मत पसारना।" लता जी ने पूरे जीवन कभी किसी से माँगा नहीं, अपनी मेहनत से सब कुछ पाया।
2. **संगीत के प्रति समर्पण**: पिता हमेशा संगीत में डूबे रहते थे। लता जी ने भी अपना पूरा जीवन संगीत को समर्पित किया।
3. **सही बात पर अडिग रहना**: "अगर कोई बात सही लगे तो उसे करो" — यही संस्कार था जिससे लता जी ने किसी के दबाव में नहीं आईं।
4. **परिवार के प्रति उत्तरदायित्व**: पिता की मृत्यु के बाद जिस तरह लता जी ने परिवार की जिम्मेदारी उठाई, वह पिता के दिए संस्कारों का ही प्रतिफल था।
5. **सीनियर संगीतकारों का आदर**: दीवाली पर मिठाई लेकर संगीतकारों के घर जाना — यह पिता द्वारा दी गई विनम्रता और गुरु-शिष्य परंपरा की भावना है।

3. "मैंने अपने पिताजी का नाम, थोड़ा ही सही मगर, आगे बढ़ाया।" 'नाम आगे बढ़ाने' का लता जी के लिए क्या अर्थ है? क्या यह सिर्फ प्रसिद्धि पाना है या इससे कोई महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व भी जुड़ा हुआ है?

उत्तरः

लता जी के लिए 'नाम आगे बढ़ाना' केवल प्रसिद्धि पाना नहीं है — इसमें एक गहरी भावना और उत्तरदायित्व निहित है:

नाम का अर्थ: पं. दीनानाथ मंगेशकर एक महान संगीतज्ञ, नाटककार और कलाकार थे। उन्होंने मराठी रंगमंच में कर्नाटक और पंजाब का संगीत लाया, शास्त्रीय संगीत को जन-जन तक पहुँचाया। लता जी ने उनकी इस विरासत को आगे बढ़ाया — सुगम संगीत को शास्त्रीय शुद्धता के साथ गाकर।

उत्तरदायित्व: नाम आगे बढ़ाने का अर्थ है पिता के संस्कारों को जीवन में उतारना — स्वाभिमान, कर्मनिष्ठा, संगीत के प्रति पवित्रता। लता जी ने यह सुनिश्चित किया कि उनके गाने में वही शुद्धता रहे जो उनके पिता की पहचान थी।

यह प्रसिद्धि से बड़ा है — यह एक पुत्री का अपने पिता के सपनों को सच करने का संकल्प है।

4. किसी भी कार्य को पूरा करने में सहयोगियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। साक्षात्कार के आधार पर बताइए कि लता जी के अपने सहयोगियों के साथ संबंध कैसे थे?

उत्तरः

लता जी के सहयोगियों के साथ संबंध अत्यंत आत्मीय और मानवीय थे:

1. **कोरस गायिकाओं के साथ**: वे सभी "बिल्कुल मेरे घर जैसी थीं।" रेकॉर्डिंग में जमीन पर साथ बैठना, उनके घर आना-जाना — यह औपचारिकता नहीं, परिवार जैसा संबंध था।
2. **संगीत निर्देशकों के साथ**: दीवाली पर तड़के पाँच बजे मिठाई लेकर नौशाद साहब, अनिल विश्वास जी, रोशनलाल, मदन भैया और बर्मन दादा के घर जाना — यह गुरु-शिष्य भाव और कृतज्ञता का प्रकटीकरण था।
3. **नौशाद साहब की बात**: नौशाद साहब ने कहा — "तुमने हमारी धुनों में इतनी मिठास घोली है।" यह बताता है कि संबंध पारस्परिक सम्मान पर आधारित थे।
4. **सहयोग की भावना**: लता जी ने सहयोगियों को कभी छोटा नहीं समझा। उनका विश्वास था कि संगीत में सभी का योगदान महत्वपूर्ण है।

साक्षात्कार से उभरता व्यक्तित्व/उभरती छवि

साक्षात्कार से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन पंक्तियों से लता मंगेशकर के व्यक्तित्व के कौन-कौन से गुण या विशेषताएँ उभरकर सामने आती हैं?

दुविधा, कृतज्ञता, दार्शनिकता, समर्पण, उत्तरदायित्व, स्पष्टता, एकाग्रता, साधना, स्पष्टवादिता, विनम्रता, कठोरता, सरलता, आत्मविश्वास, उत्सवप्रियता, श्रद्धा, मानवता, अमरता, घमंड, स्वाभिमान

1. "मुझे अपने गाने और रेकॉर्डिंग के अलावा किसी दूसरी चीज की सुध नहीं रहती थी।"

उत्तरः

इस पंक्ति से एकाग्रता और साधना के गुण उभरते हैं। लता जी पूरी तरह अपने काम में डूब जाती थीं। उनके लिए गायन केवल पेशा नहीं, साधना थी। यह एकाग्रता ही उन्हें महान बनाती है।

2. "अगर कोई बात तुम्हें सही लगती है, तो उसे करो और किसी के आगे झुकने की जरूरत नहीं है।"

उत्तरः

इस पंक्ति से स्वाभिमान, दृढ़ता और स्पष्टवादिता के गुण उभरते हैं। यह पिता द्वारा दिया गया वह संस्कार है जिसे उन्होंने जीवन भर निभाया। सही बात पर अडिग रहना और किसी के दबाव में न आना — यह उनके आत्मविश्वास की पहचान है।

3. "आप जैसे लोग अगर यह मानते हैं कि मैं अमर हूँ, तो यह मुझे मिलने वाले उस प्यार जैसा ही है।"

उत्तरः

इस पंक्ति से विनम्रता, कृतज्ञता और सरलता के गुण उभरते हैं। इतनी बड़ी गायिका होते हुए भी वे 'अमरता' का श्रेय अपने प्रशंसकों के प्रेम को देती हैं। यह घमंड के बिल्कुल विपरीत — एक विनम्र और कृतज्ञ हृदय की पहचान है।

उत्तरः

(घ) संगीत की महत्वपूर्ण सामाजिक भूमिका

यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि मंगलागौर में पास-पड़ोस की महिलाएँ एकत्र होती हैं, मिलकर गीत गाती हैं और नाचती हैं। यह संगीत केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक एकता, स्त्री-समुदाय की अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक बंधन का माध्यम है। संगीत यहाँ एक सामाजिक भूमिका निभाता है — नई बहू का स्वागत, समुदाय का मिलन और परंपरा का निर्वाह।

4. "गाव गेला वाहुन, नाव गेला राहुन" — इस कहावत का प्रतीकात्मक अर्थ क्या है?

(क) नाव गाँव में नहीं रहती, नदी में बहती है।
(ख) इस नश्वर संसार में सब कुछ नष्ट हो जाता है।
(ग) फिल्मों में गीत गाने से बहुत प्रसिद्धि मिलती है।
(घ) जीवन अस्थायी है, पर कर्म अमर रहते हैं।

उत्तरः

(घ) जीवन अस्थायी है, पर कर्म अमर रहते हैं।

यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि लता जी ने स्वयं इसका अर्थ समझाया — "गाँव तो बह जाता है, लेकिन जो नाम है, वह रह जाता है।" यह मराठी कहावत यही कहती है कि शरीर नश्वर है, पर अच्छे कर्मों से बनाया गया नाम और यश अमर रहता है। लता जी ने इसी विश्वास से गायकी की।

5. कोरस में साथ गाने वाली लड़कियों के साथ लता जी के संबंध कैसे थे?

(क) औपचारिक (ख) कामकाजी
(ग) आत्मीय (घ) प्रतिस्पर्धात्मक

उत्तरः

(ग) आत्मीय

यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि लता जी ने कहा — "मेरा कोरस की लड़कियों के साथ बहुत अच्छा संबंध था। मतलब जितनी भी लड़कियाँ थीं, वो बिल्कुल मेरे घर जैसी थीं।" रेकॉर्डिंग में जमीन पर बैठकर उनके साथ बातें करना, मीना की शादी में सभी का जाना — ये सब आत्मीयता के प्रमाण हैं।

6. लता मंगेशकर के अनुसार बाबा हरिदास और तानसेन की कथाओं से क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

(क) संगीत द्वारा दीपक जलाए जा सकते हैं।
(ख) मेघराग गाने से वर्षा होने लगती है।
(ग) सुर में वाद्य बजाने से तार टूट जाते हैं।
(घ) संगीत में अपरिमित शक्ति होती है।

उत्तरः

(घ) संगीत में अपरिमित शक्ति होती है।

यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि लता जी ने कहा — "मैं यह मानती हूँ कि संगीत में वह असीम शक्ति है कि कुछ अप्रत्याशित वह जरूर रच देता है।" अली अकबर खाँ के सरोद का तार टूटने का प्रसंग देकर उन्होंने यह सिद्ध किया कि शुद्ध सुर का आघात भी असीम होता है। तानसेन की कथाओं में भी यही संगीत की अपरिमित शक्ति का संकेत है।

7. पूरे साक्षात्कार में लता मंगेशकर की जो छवि बनती है, वह मुख्यतः कैसी है?

(क) सादगी, समर्पण और आत्मसम्मान की
(ख) प्रसिद्धि, परिवार को समर्पित और आत्ममुग्ध
(ग) कठोर सिद्धांतवादी और व्यावहारिक व्यक्ति
(घ) आधुनिकता विरोधी रुढ़िवादी विचारों वाली

उत्तरः

(क) सादगी, समर्पण और आत्मसम्मान की

यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि पूरे साक्षात्कार में लता जी की सादगी झलकती है — वे सफेद साड़ियाँ पहनती हैं, दीवाली पर स्वयं मिठाई लेकर संगीतकारों के घर जाती हैं, कोरस लड़कियों के साथ जमीन पर बैठती हैं। परिवार के प्रति समर्पण उनकी पूरी यात्रा में दिखता है। आत्मसम्मान — "किसी के आगे हाथ नहीं पसारा" — यह उनके व्यक्तित्व की आत्मा है।

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. "पिताजी उस समय पूछते थे, 'समझ गए न?'... इसके बाद वे कहते थे कि 'अच्छा अब जाओ, बाहर जाकर खेलो।'" यह प्रसंग पारिवारिक अनुशासन और स्नेह के संतुलन का प्रतीक है। कैसे?

(संकेत– यहाँ अनुशासन में डर है या सम्मान?)

उत्तरः

यह प्रसंग अनुशासन और स्नेह के अद्भुत संतुलन को दर्शाता है:

अनुशासन का पक्ष: पिताजी बच्चों को बुलाकर गंभीरता से देखते थे — बिना कुछ कहे ही बच्चे रोने लगते थे। यह अनुशासन था, पर यहाँ अनुशासन में डर नहीं, बल्कि सम्मान था। पिता का इतना नैतिक प्रभाव था कि उन्हें डाँटने की जरुरत ही नहीं पड़ी। बच्चे स्वयं अपनी गलती समझ जाते थे।

स्नेह का पक्ष: "समझ गए न?" — यह प्रश्न एक आदेश नहीं बल्कि बच्चों के आत्म-बोध को जाँचने का तरीका था। और जब बच्चों ने कहा कि हाँ समझ गए, तो पिताजी ने कहा — "अच्छा अब जाओ, बाहर जाकर खेलो।" यह स्नेह की पराकाष्ठा है — दंड नहीं, मुक्ति।

यह प्रसंग यह सिखाता है कि सच्चा अनुशासन भय नहीं बल्कि सम्मान पर टिका होता है और जहाँ स्नेह हो, वहाँ अनुशासन स्वतः आ जाता है।

घर में मिट्टी के दीये जलाता है — हर कमरे में, दरवाजे पर, छत पर। दादी कहती हैं — "पहले असली दीये जलाओ, फिर बिजली की लड़ियाँ।"

पूजा के बाद सब मिलकर घर के बने लड्डू और मिठाई खाते हैं और रात को पड़ोसियों के घर मिठाई देने जाते हैं।

यह परंपरा वर्षों से चली आ रही है और इसमें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सांस्कृतिक विरासत मिलती है।

4. "बिल्कुल ठेठ गँवई अंदाज में यह मंगलागौर का उत्सव मनाया जाता है, मगर आहिस्ता-आहिस्ता वह भी अब खत्म हो रहा है।"

पाठ में आपने पढ़ा कि लता मंगेशकर के बचपन से अब तक उत्सवों से जुड़ी अनेक परंपराएँ बदल रही हैं। कौन-कौन सी परंपराएँ बदल गई हैं? अपने घर-परिवार में बातचीत करके पता लगाइए कि विभिन्न त्योहारों को मनाने के तरीकों में कौन-कौन से बदलाव आ रहे हैं?

उत्तरः

परिवार में बुजुर्गों से बात करने पर पता चला कि निम्नलिखित परंपराएँ बदल गई हैं या खत्म हो रही हैं:

1. **मंगलागौर जैसे उत्सव**: विवाह के बाद पड़ोस की महिलाओं का मिलकर गाना-नाचना अब नहीं होता।
2. **होली की पारंपरिक विधि**: लता जी ने जो 'गुड़वड़' परंपरा बताई — होलिका की राख से रंग खेलना — अब यह नहीं होता।
3. **मिट्टी के दीये**: दीपावली पर मिट्टी के दीपक कम हो गए हैं, बिजली की झालरें ज्यादा आ गई हैं।
4. **सामूहिक गायन**: पहले त्योहारों पर घर-मोहल्ले में मिलकर गीत गाए जाते थे, अब यह बंद हो गया है।
5. **व्यक्तिगत मिलना**: पहले त्योहारों पर पड़ोसियों के घर जाने की परंपरा थी, अब फोन या सोशल मीडिया से बधाई दी जाती है।

इन बदलावों का कारण शहरीकरण, व्यस्त जीवनशैली और परिवारों का एकाकी होना है।

विधा से संवाद

साक्षात्कार की पड़ताल

1. 'ऐसी भी बातें होती हैं' एक साक्षात्कार है। साक्षात्कार में एक व्यक्ति प्रश्न पूछता है और दूसरा व्यक्ति उन प्रश्नों के उत्तर देता है। साक्षात्कार विधा के कुछ मुख्य बिंदु आगे दिए गए हैं। इस साक्षात्कार में से इन मुख्य बिंदुओं को रेखांकित करने वाली पंक्तियों को ढूँढ़कर लिखिए।

साक्षात्कार के मुख्य बिंदु

- साक्षात्कार लेने वाले का नाम और जिसका साक्षात्कार लिया गया, उसका नाम
- प्रश्नोत्तर
- भावनात्मक वातावरण
- आमंत्रण, स्वागत और परिचय
- उत्तर देने की शैली का संकेत
- विचार और उदाहरण
- संस्मरण
- समापन

उत्तरः

साक्षात्कार के मुख्य बिंदु	पाठ से उदाहरण
साक्षात्कार लेने वाले और देने वाले का नाम	"यतींद्र मिश्र:" और "लता मंगेशकर:" — दोनों के नाम संवाद से पहले दिए गए हैं।
प्रश्नोत्तर	"यतींद्र मिश्र: आपके पिताजी पं. दीनानाथ मंगेशकर की वे कौन-सी स्मृतियाँ हैं...?" "लता मंगेशकर: कई बातें हैं।"
भावनात्मक वातावरण	"लता मंगेशकर: (हँसते हुए) अरे! यह तो हम सब भाई-बहन बहुत करते थे।" — यहाँ हँसी का उल्लेख वातावरण को जीवंत बनाता है।
आमंत्रण, स्वागत और परिचय	"यतींद्र मिश्र: दीदी, आपके संगीत की अप्रतिम यात्रा पर बातचीत शुरू करते हैं..." — आमंत्रण और स्वागत का भाव।
उत्तर देने की शैली का संकेत	"(हँसते हुए)", "(खिलखिलाकर हँसती हैं)" — ये संकेत लता जी की उत्तर शैली को दर्शाते हैं।
विचार और उदाहरण	अली अकबर खाँ के सरोद के तार टूटने का प्रसंग — संगीत की शक्ति पर विचार का उदाहरण।
संस्मरण	नौशाद साहब के घर दीवाली की सुबह मिठाई लेकर जाने का संस्मरण।
समापन	"मेरा गाना अमर है, पर शरीर तो अमर नहीं... हे प्रभु! तुमने जो भी दिया, वह बहुत दिया... यही प्रार्थना है।" — भावपूर्ण समापन।

4. "मेरा गाना अमर है, पर शरीर तो अमर नहीं।"

उत्तरः
इस पंक्ति से दार्शनिकता, स्पष्टता और मानवता के गुण उभरते हैं। वे जीवन-मृत्यु के सत्य को बड़ी शांति से स्वीकार करती हैं। यह दार्शनिक दृष्टि उनके व्यक्तित्व को एक गहराई देती है। वे जानती हैं कि कर्म अमर होते हैं, शरीर नहीं।

मेरे प्रश्न

नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़िए—
"संगीत में असीम शक्ति और अप्रत्याशित रचने की क्षमता होती है।"
इस वाक्य के आधार पर अनेक प्रश्न बनाए जा सकते हैं, जैसे—

1. लता मंगेशकर ने संगीत के विषय में क्या कहा?
2. लता मंगेशकर ने संगीत की क्या विशेषताएँ बताई हैं?
3. लता मंगेशकर ने संगीत की क्षमता का आकलन करते हुए क्या कहा?
4. उस्ताद अली अकबर ख़ाँ और पंडित रविशंकर के कंसर्ट में हुई घटना से संगीत के बारे में क्या पता चलता है?

आपने देखा कि अनेक प्रश्नों का एक ही उत्तर हो सकता है और एक ही उत्तर से अनेक प्रश्न बनाए जा सकते हैं।
अब नीचे दिए गए उत्तरों से अधिक से अधिक प्रश्न बनाइए (कम से कम दो)—

1. उत्तर: 'मंगलागौर' जैसे लोक पर्वों में स्त्रियों के बीच गीत, नृत्य और सौहार्द का भाव झलकता था।

उत्तरः
1. 'मंगलागौर' क्या है और इसे कब मनाया जाता है?
2. महाराष्ट्र में विवाह के अवसर पर महिलाओं द्वारा कौन-सा उत्सव मनाया जाता है?
3. लता जी ने किस परंपरागत उत्सव का वर्णन करते हुए स्त्रियों के गीत-नृत्य की बात कही?
4. 'मंगलागौर' उत्सव में कौन-सी भावना और परंपराएँ प्रकट होती थीं?

2. उत्तर: लता जी का मानना था कि तकनीकी प्रगति के बावजूद पुराने संगीतकारों की सादगी और गहराई अद्वितीय थी।

उत्तरः
1. पुराने और नए संगीतकारों के बारे में लता जी के क्या विचार थे?
2. लता जी के अनुसार अनिल विश्वास, नौशाद साहब जैसे पुराने संगीतकारों की क्या विशेषता थी?
3. तकनीकी प्रगति के युग में भी लता जी किसे अद्वितीय मानती थीं और क्यों?
4. लता जी ने पुराने संगीतकारों की तुलना आज के संगीतकारों से करते हुए क्या कहा?

मेरे अनुभव मेरे विचार

अपने अनुभवों के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. "अगर कोई बात तुम्हें सही लगती है, तो उसे करो और किसी के आगे झुकने की जरूरत नहीं है।"

क्या आप किसी ऐसी स्थिति से गुजरे हैं जब आपको किसी सही बात पर अकेले खड़ा होना पड़ा हो? कब और क्यों?

उत्तरः
हाँ, एक बार कक्षा में ऐसा हुआ जब पूरी कक्षा किसी एक सहपाठी के साथ मिलकर उसे परेशान कर रही थी। सब हँस रहे थे, पर मुझे लगा कि यह गलत है।

मैं अकेला/अकेली उठा/उठी और उस सहपाठी के पक्ष में बोला/बोली। पहले सबने मेरा विरोध किया और कहा कि तुम हमारे साथ नहीं हो। उस समय डर तो लगा, पर मन में यही था कि जो सही है वह करना चाहिए।

बाद में शिक्षक ने मेरे निर्णय की सराहना की और सहपाठियों ने भी माफी माँगी।

लता जी का यह संस्कार आज भी मुझे प्रेरणा देता है कि सही बात पर अकेले भी खड़े रहना चाहिए।

2. "बाबा ने जैसा सिखाया था, उस पर हम सभी भाई-बहनों ने चलने का प्रयास किया।"

आपके परिवार में भी कोई ऐसी सीख या नियम अवश्य होंगे जिनका पालन आप किसी के याद दिलाए बिना स्वतः करते होंगे, उनके विषय में बताइए।

उत्तरः
हमारे घर में दादाजी ने यह नियम बनाया था — "जो भी घर में आए, उसे खाली हाथ मत जाने दो।"

यह बात हमारे परिवार की परंपरा बन गई। जब भी कोई मेहमान आता है, चाहे कितनी भी भागदौड़ हो, माँ चाय-पानी जरूर लाती हैं। हम बच्चे भी अब यही करते हैं — कोई मित्र आए, चाहे कुछ मिनट के लिए ही सही, उसे बैठाते हैं और कुछ न कुछ देते हैं।

यह नियम किसी ने याद नहीं दिलाया — यह स्वतः हमारे स्वभाव का हिस्सा बन गया। यही वह संस्कार है जो परिवार अगली पीढ़ी को देता है।

3. "पहले दिन गुड़ि बाँधने के बाद नौ दिन तक उत्सव मनाया जाता है।"

आप भी अपने घर में किसी पारंपरिक पर्व को विशेष तरीके से मनाते होंगे। उसका वर्णन कीजिए।

उत्तरः
हमारे घर में दीपावली एक विशेष परंपरा के साथ मनाई जाती है।

दीपावली से एक सप्ताह पहले ही घर की सफाई शुरु हो जाती है। धनतेरस के दिन माँ नई बर्तन या आभूषण खरीदती हैं। दीपावली की शाम को सारा परिवार मिलकर

(ग) स्नेह और विडंबना का कोमल मिश्रण
(घ) उत्साह और आनंद का उत्सवी भाव

4. 'साँकल' शब्द का अर्थ है—
(क) जंजीर और सिकड़ी
(ख) खिड़की का काँच और फ्रेम
(ग) ताला और चाबी का समुच्चय
(घ) दरवाजे की काठ की चौखट

5. ताई ने अंततः मिट्ठू को किसके पास छोड़ने का निर्णय किया?
(क) गनपत के परिवार की देखरेख में
(ख) अड़ोस-पड़ोस की बहू-बेटियों के पास
(ग) जगन मास्टर की घरवाली के पास
(घ) गाँव के मुखिया के घर में

उत्तरः
1. (घ) मिट्ठू के खोने का गहरा भय और अत्यधिक ममता
2. (ख) धार्मिक आस्था और सांसारिक मोह के बीच की उलझन
3. (ग) स्नेह और विडंबना का कोमल मिश्रण
4. (क) जंजीर और सिकड़ी
5. (ग) जगन मास्टर की घरवाली के पास

गद्यांश 5

जगन मास्टर के लिए जब मिट्ठू की यातना असह्य हो गई, तो उन्होंने एक दिन कमरा बंदकरे मिट्ठू के पिंजरे को जमीन पर रखा और उसका दरवाजा खोल दिया, ताकि उसे कुछ देर के लिए ही सही, खुली हवा में आने का मौका देकर अपने पाप का थोड़ा प्रायश्चित कर लें। मिट्ठू अब पिंजरे में रहने के इतने आदी हो चुके थे कि उन्होंने बाहर आने की कोई इच्छा नहीं प्रकट की। जगन मास्टर भी अपनी धुन के पक्के थे। निकट ही अनाज का थैला पड़ा हुआ था। उन्होंने मुट्ठी में थोड़ा अनाज लेकर पिंजरे के दरवाजे से लेकर बाहर तक बिखेर दिया और स्वयं अलग हटकर उसे देखते रहे।

1. मिट्ठू का पिंजरे से बाहर न आना किस गहरी सच्चाई का संकेत देता है?
(क) मिट्ठू को जगन मास्टर पर भरोसा नहीं था
(ख) लंबी पराधीनता स्वतंत्रता की स्वाभाविक इच्छा को नष्ट कर देती है
(ग) पिंजरे का नियमित भोजन मिट्ठू को बाहर जाने से रोकता था
(घ) मिट्ठू को ताई के बिना बाहर जाना उचित नहीं लगता था

2. जगन मास्टर के 'प्रायश्चित' शब्द के प्रयोग से उनके व्यक्तित्व की कौन-सी विशेषता उजागर होती है?
(क) ताई के प्रति छुपा हुआ क्रोध और विरोध
(ख) घर की हर छोटी-बड़ी समस्या के लिए अपनी पत्नी पर दोषारोपण की प्रवृत्ति।
(ग) नैतिक संवेदनशीलता और स्वतंत्रता के प्रति गहरी प्रतिबद्धता
(घ) धार्मिक कर्मकांड में गहरी आस्था

3. इस गद्यांश में जगन मास्टर के चरित्र को किस रूप में उभारा गया है?
(क) लापरवाह और पूरी तरह स्वार्थी
(ख) क्रोधी और भावनात्मक रूप से असंवेदनशील
(ग) कमज़ोर इच्छाशक्ति वाला और डरपोक
(घ) आदर्शवादी और नैतिक रूप से सजग

4. 'प्रायश्चित' शब्द का सटीक अर्थ है—
(क) किसी के प्रति किया गया विशेष उपकार
(ख) पाप के मार्जन के लिए किया गया कर्म
(ग) अपनी गलती को चतुराई से छुपाना
(घ) दूसरों को माफ करने की उदार भावना

5. जगन मास्टर ने मिट्ठू को बाहर लाने के लिए क्या उपाय अपनाया?
(क) पिंजरे के दरवाजे से बाहर तक अनाज की पगडंडी बिखेर दी
(ख) मिट्ठू को ज़बरदस्ती पकड़कर खुली हवा में छोड़ा
(ग) मिट्ठू के सामने बार-बार 'आ-आ' कहकर ज़ोर से पुकारते रहे
(घ) पिंजरे को बगीचे में पेड़ के निकट ले जाकर रख दिया

उत्तरः
1. (ख) लंबी पराधीनता स्वतंत्रता की स्वाभाविक इच्छा को नष्ट कर देती है
2. (ग) नैतिक संवेदनशीलता और स्वतंत्रता के प्रति गहरी प्रतिबद्धता
3. (घ) आदर्शवादी और नैतिक रूप से सजग
4. (ख) पाप के मार्जन के लिए किया गया कर्म
5. (क) पिंजरे के दरवाजे से बाहर तक अनाज की पगडंडी बिखेर दी

गद्यांश 6

कुंभ-स्नान से लौटकर सभी तीर्थयात्री अपने-अपने घरों की ओर चल दिए लेकिन ताई सीधे बड़े घर की ओर न जाकर जगन मास्टर के दरवाजे पहुँचीं। ताई सोच रही थीं कि उन्हें देखते ही मिट्ठू 'राम राम सीताराम' की रट लगाकर आसमान सिर पर उठा लेगा, पिंजड़े में कूद-फाँद मचाकर तूफान खड़ा कर देगा, लेकिन वहाँ बैठे एवजी मिट्ठू ने उन्हें देखकर कोई हरकत नहीं की, वह केवल इधर-उधर ताकता रहा।

ताई अपने मिट्ठू को गुहार कर थक गईं लेकिन उनके सूनेपन का साथी न जाने किन अमराइयों में घूम रहा होगा।

1. एवजी मिट्ठू का चुप रहना और असली मिट्ठू का न लौटना — यह अंत क्या सुझाता है?
(क) पशु-पक्षी कभी अपने पुराने मालिक को नहीं भूलते
(ख) आज़ाद होने के बाद कोई भी पुराने बंधन में नहीं आता।

2. "मैं कोशिश करूँगी कि जो कुछ भी मैंने संगीत में रहते हुए जाना है, उसे आपको बता सकूँ।"
इस कथन से साक्षात्कार की शैली के विषय में क्या पता चलता है— क्या यह औपचारिक संवाद है या आत्मीय बातचीत? अपने विचार तर्क सहित लिखिए।

उत्तरः
यह कथन स्पष्ट करता है कि यह साक्षात्कार आत्मीय बातचीत है, न कि औपचारिक संवाद।
तर्कः
1. **व्यक्तिगत अनुभव**: "जो कुछ भी मैंने संगीत में रहते हुए जाना है" — यह वाक्य बताता है कि लता जी अपना व्यक्तिगत अनुभव साझा करना चाहती हैं, न कि कोई तैयार किया हुआ वक्तव्य देना।
2. **'दीदी' संबोधन**: यतींद्र मिश्र लता जी को 'दीदी' कहकर बुलाते हैं — यह औपचारिकता नहीं, आत्मीयता का प्रतीक है।
3. **हँसी और भावना**: "(हँसते हुए)", "(खिलखिलाकर हँसती हैं)" — ये बातें बताती हैं कि संवाद में स्वाभाविकता थी।
4. **घरेलू किस्से**: पिता की शरारत, होली की परंपरा, नौशाद साहब के घर जाना — ये सब बहुत व्यक्तिगत बातें हैं जो औपचारिक साक्षात्कार में नहीं आतीं।
5. **करोड़ों प्रशंसकों के प्रति आभार**: "आपके माध्यम से ही मैं अपने करोड़ों प्रशंसकों का आभार व्यक्त करती हूँ" — यह एक आत्मीय भाव है।

आपका साक्षात्कार

1. "आप पूछिए, मैं आपके प्रश्नों का जवाब देने के लिए तैयार हूँ।"
प्रस्तुत पाठ में विश्व-प्रसिद्ध व्यक्तित्व का साक्षात्कार दिया गया है। कल्पना कीजिए कि आप भी लता मंगेशकर के इस साक्षात्कार में उपस्थित हैं। आप लता जी से कौन-कौन से अलग प्रश्न पूछते और क्यों?

उत्तरः
यदि मैं इस साक्षात्कार में उपस्थित होता/होती, तो लता जी से ये प्रश्न पूछता/पूछती:
1. **प्रश्न**: "दीदी, आपके गाए गीतों में 'ऐ मेरे वतन के लोगो' ने देश में एक विशेष स्थान बनाया। इसे गाते समय आप किन भावनाओं से भरी थीं?"
क्यों: क्योंकि यह गीत राष्ट्रभक्ति का प्रतीक है और इसे सुनकर नेहरू जी की आँखें भर आई थीं।
2. **प्रश्न**: "आपकी आवाज़ इतनी स्थायी कैसे रही? आपने अपनी आवाज़ की देखभाल के लिए क्या-क्या किया?"
क्यों: यह जानकारी संगीत सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी होती।
3. **प्रश्न**: "दीदी, यदि आप दोबारा जन्म लें तो क्या फिर गायिका बनना चाहेंगी?"
क्यों: यह प्रश्न उनके संगीत के प्रति प्रेम की गहराई को उजागर करता।

विषयों से संवाद

1. "एक स्टूडियो से दूसरे और तीसरे स्टूडियो के चक्कर में ही पूरा दिन बीत जाता था।"
सन् 1942 में अपने पिता की मृत्यु के बाद लता मंगेशकर ने अकेले अपनी माँ, छोटे भाई-बहनों की देखभाल की और अपने घर को सँभाला। उस समय उनकी आयु मात्र 13 वर्ष थी। तब महिलाओं का फिल्मों में काम करना अच्छा नहीं माना जाता था। उस समय सुबह से रात तक एक स्टूडियो से दूसरे स्टूडियो भागते हुए लता जी के एक दिन की कल्पना कीजिए। इस भागदौड़ में वे किन-किन चुनौतियों का सामना करती होंगी?
(संकेत– भोजन, यात्रा-भाड़ा, सुरक्षा, थकान आदि)

उत्तरः
लता जी के एक दिन की कल्पनाः
सुबह पाँच बजे उठना, जल्दी से नहाना और घर के काम देखना। माँ और छोटे भाई-बहनों के लिए खाना बनाने में मदद करना। फिर भारी मन से घर छोड़कर पहले स्टूडियो की ओर निकलना।
चुनौतियाँः
1. **भोजन की समस्या**: स्टूडियो से स्टूडियो भागते हुए खाने का समय नहीं मिलता था। कभी-कभी दिन भर भूखे रहना पड़ता था।
2. **यात्रा और भाड़े की समस्या**: बस, ट्राम या पैदल चलकर जाना — पैसे कम, दूरी ज्यादा। यात्रा-भाड़े का हिसाब रखना जरूरी था।
3. **सुरक्षा की समस्या**: उस जमाने में महिलाओं का फिल्म इंडस्ट्री में काम करना अच्छा नहीं माना जाता था। अकेले यात्रा करना असुरक्षित भी था।
4. **थकान**: सुबह से रात तक गाते रहना और एक के बाद एक रेकॉर्डिंग — शारीरिक थकान असह्य रही होगी।
5. **परिवार की चिंता**: घर पर माँ और छोटे भाई-बहन — उनकी चिंता मन से कभी नहीं जाती थी।
6. **सामाजिक दबाव**: "लड़की फिल्मों में काम करती है" — यह सुनकर समाज की आलोचना सहनी पड़ती थी। फिर भी लता जी झुकी नहीं — यही उनकी महानता है।

2. "पहले के दौर में पुरुष और स्त्री आवाजों के कोरस हम लोगों के गीतों के साथ ही रिकॉर्ड होते थे। भले ही वह गाना डुएट हो या फिर कोई सोलो सांग।"
अपने घर, आस-पड़ोस, समुदाय, विद्यालय में होने वाले उन कार्यों के विषय में बताइए जिसमें सहयोग और सामूहिकता की आवश्यकता होती है।

29. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प चुनिए:
    I. लता जी ने 'महल', 'बड़ी बहन', 'बरसात', 'तराना', 'बाजार' और 'संगदिल' जैसी फिल्मों के लिए पार्श्वगायन किया था।
    II. पुराने जमाने में तकनीकी रूप से सिनेमा में बहुत तरक्की हो चुकी थी।
    III. लता जी के अनुसार अनिल विश्वास, श्याम सुंदर आदि ने गीतों में विशेष प्रभाव देने के लिए नए तरीके आजमाए थे।
    (क) केवल I और II सही हैं
    (ख) केवल II और III सही हैं
    (ग) केवल I और III सही हैं
    (घ) I, II और III तीनों सही हैं
    उत्तरः
    (ग) केवल I और III सही हैं

30. यतींद्र मिश्र ने कहा कि लता जी ने रंगों से हमेशा परहेज किया है। विशेषकर पहनावे में वे कैसी साड़ियाँ पहनती हैं?
    (क) वे केवल लाल और नारंगी रंग की चमकीली साड़ियाँ पहनती हैं।
    (ख) वे बहुत रंगीन और विभिन्न प्रकार के रंगों की साड़ियाँ पहनती हैं।
    (ग) वे सफेद साड़ियाँ जिन पर रंगीन धारियाँ और गुलबूटे होते हैं, पहनती हैं।
    (घ) वे केवल नीले या गहरे हरे रंग की सादी साड़ियाँ पहनती हैं।
    उत्तरः
    (ग) वे सफेद साड़ियाँ जिन पर रंगीन धारियाँ और गुलबूटे होते हैं, पहनती हैं।

31. लता जी के घर में होलिका की राख को उठाकर दूसरे दिन एक-दूसरे पर डालने की परंपरा को क्या कहा जाता था?
    (क) 'गुड़वड़' (ख) 'रंग-पंचमी'
    (ग) 'गुड़ी पड़वा' (घ) 'मंगलागौर'
    उत्तरः
    (क) 'गुड़वड़'

32. होली के बाद पाँचवें दिन रंग-पंचमी पर लता जी के घर में क्या होता था?
    (क) सभी भाई-बहन बाहर जाकर जमकर रंग खेलते थे
    (ख) माँ और पिताजी सभी भाई-बहनों पर केसर घोलकर थोड़ा छिड़कते थे
    (ग) घर में किसी तरह का उत्सव नहीं मनाया जाता था
    (घ) केवल फूलों से होली खेली जाती थी और पूजा होती थी
    उत्तरः
    (ख) माँ और पिताजी सभी भाई-बहनों पर केसर घोलकर थोड़ा छिड़कते थे

33. लता जी के घर में किन त्योहारों का ज्यादा महत्व था?
    (क) होली और ईद
    (ख) दशहरा और दीवाली
    (ग) केवल गणेश चतुर्थी
    (घ) मकर संक्रांति और लोहड़ी
    उत्तरः
    (ख) दशहरा और दीवाली

34. 'गुड़ी पड़वा' के दिन 'गुड़ी' पर क्या चढ़ाया जाता था और कब उतारा जाता था?
    (क) फूलों की माला, सूर्यास्त के तुरंत बाद उतारते थे
    (ख) बताशों की माला या हार, सूर्यास्त होने से पहले उतार लिया जाता था
    (ग) नारियल और मिठाई, दोपहर की पूजा में उतारते थे
    (घ) दीये और धूप, रात होने पर उतार लिया जाता था
    उत्तरः
    (ख) बताशों की माला या हार, सूर्यास्त होने से पहले उतार लिया जाता था

35. महाराष्ट्र में नवरात्र के संदर्भ में कौन-सी विशेष मान्यता प्रचलित है?
    (क) देवी दुर्गा की आराधना के लिए नवरात्र मनाया जाता है
    (ख) भगवान राम चौदह वर्ष बाद अयोध्या लौटे थे, तब हर घर में बताशों की लड़ी सजाकर गुड़ी बाँधी गई थी
    (ग) महाराष्ट्र में गणेश उत्सव ही नवरात्र का पर्याय माना जाता है
    (घ) उत्तर प्रदेश और राजस्थान की भाँति दुर्गापूजा के रूप में नवरात्र मनाते हैं
    उत्तरः
    (ख) भगवान राम चौदह वर्ष बाद अयोध्या लौटे थे, तब हर घर में बताशों की लड़ी सजाकर गुड़ी बाँधी गई थी

36. पचास के दशक में लता जी ने दीवाली पर क्या परंपरा शुरु की थी?
    (क) घर पर दावत देकर सभी सहयोगियों को बुलाने की
    (ख) तड़के पाँच बजे नहाकर सीनियर संगीत निर्देशकों के घर मिठाई देने जाने की
    (ग) संगीत का कार्यक्रम आयोजित कर सबको निमंत्रण देने की
    (घ) रेकॉर्डिंग स्टूडियो में सभी के साथ जश्न मनाने की
    उत्तरः
    (ख) तड़के पाँच बजे नहाकर सीनियर संगीत निर्देशकों के घर मिठाई देने जाने की

37. नौशाद साहब के घर साढ़े पाँच बजे पहुँचने पर उन्होंने लता जी को देखकर क्या कहा?
    (क) 'अरे, इतनी सुबह बिना बताए क्यों आई?'
    (ख) 'लता बाई सब खैरियत तो है, इतने सबेरे क्या मुसीबत आन पड़ी?'

5. **साइबर हेल्पलाइन**: किसी धोखाधड़ी का संदेह होने पर तुरंत 1930 (राष्ट्रीय साइबर अपराध हेल्पलाइन) पर सूचित करें।
6. **सोशल मीडिया पर सावधानी**: अपनी व्यक्तिगत जानकारी और फोटो सार्वजनिक न करें, क्योंकि AI इनका उपयोग करके नकली आवाज़ बना सकती है।

हम ऐसे भी बोलते हैं

"वे बस हमको गंभीरता से देखते थे... मगर हम सभी समझ जाते थे कि हमको बुलाया किसलिए गया है।"

1. क्या आपके जीवन में भी कोई ऐसा व्यक्ति है जो बिना कुछ बोले सिर्फ नजरों या संकेतों (हाव-भाव) से ही आपको समझा देता है? उस अनुभव के विषय में बताइए।

उत्तरः

हाँ, मेरे जीवन में मेरी माँ ऐसी हैं।

जब भी मैं कुछ गलत करता/करती हूँ — देर से घर आना, पढ़ाई न करना, झूठ बोलना — माँ कुछ नहीं कहतीं, बस एक बार आँख उठाकर देखती हैं। उस एक नजर में इतना कुछ होता है कि मैं समझ जाता/जाती हूँ।

इसी तरह, जब मैं उदास होता/होती हूँ और अकेला/अकेली बैठता/बैठती हूँ, तो माँ पास आकर चुपचाप बैठ जाती हैं। कुछ नहीं कहतीं, पर उनकी उपस्थिति से ही मन हल्का हो जाता है।

यह मूक संवाद बहुत शक्तिशाली होता है — जैसे पं. दीनानाथ जी की एक नजर से बच्चे सब समझ जाते थे।

2. यदि कोई व्यक्ति बिना बोले (संकेत भाषा में) आपको कुछ समझा रहा है, तो वह आपके साथ और आप उसके साथ कैसा व्यवहार करेंगे?

(संकेत– धैर्य, जिज्ञासा, समानुभूति आदि)

उत्तरः

यदि कोई व्यक्ति मूक भाषा में या हाव-भाव से बात करे, तो मैं इस प्रकार व्यवहार करूँगा/करूँगी:

1. **धैर्य**: जल्दबाजी नहीं करूँगा/करूँगी। उन्हें अपनी बात समझाने का पूरा समय दूँगा/दूँगी।
2. **ध्यान से देखना**: उनके हाव-भाव, आँखों की दिशा, हाथों के इशारे को ध्यान से समझने की कोशिश करूँगा/करूँगी।
3. **जिज्ञासा**: यदि समझ न आए तो लिखकर या चित्र बनाकर पूछूँगा/पूछूँगी।
4. **समानुभूति**: यह याद रखूँगा/रखूँगी कि उनके लिए यह कठिन हो सकता है। उन्हें असहज महसूस नहीं होने दूँगा/दूँगी।
5. **भारतीय सांकेतिक भाषा (ISL) सीखने का प्रयास**: यह संकल्प लूँगा/लूँगी कि ISL के कुछ मूल संकेत सीखूँगा/सीखूँगी ताकि दिव्यांग व्यक्तियों से बेहतर संवाद हो सके।

सृजन

1. "अगर हम समय के चक्र (टाइम मशीन) को घुमाकर सन 1949-50 में ले जाएँ," कल्पना कीजिए कि आपके पास टाइम मशीन है। 1940-50 के दशक में जाकर लता जी से मिलिए और उनके साथ बिताए गए एक दिन का वर्णन डायरी के रूप में लिखिए। उस समय की वेशभूषा, भोजन, संगीत आदि का वर्णन अवश्य कीजिए।

उत्तरः

डायरी

दिनांक: एक सुनहरा दिन, 1950

आज मैंने टाइम मशीन पर बैठकर मुंबई का वह युग देखा जब हर गली से फिल्मों के गीत सुनाई देते थे।

सुबह एक छोटे से घर के दरवाजे पर पहुँचा/पहुँची। सफेद साड़ी में एक साधारण-सी युवती मिली — यह लता मंगेशकर थीं! उनकी आँखों में एक अजीब-सी गहराई थी।

सुबह के समय वे माँ और भाई-बहनों के लिए खाना बना रही थीं। वेशभूषा सादी थी — सूती साड़ी, माथे पर छोटी-सी बिंदी। उस जमाने की महिलाएँ ऐसे ही होती थीं — सादगी में सौंदर्य।

फिर हम एक पुरानी ट्राम से स्टूडियो पहुँचे। रास्ते में उन्होंने रेलिंग पकड़कर खड़े-खड़े कुछ गुनगुनाया — वह धुन आज भी कानों में है। स्टूडियो में मोटे माइक्रोफोन के सामने खड़े होकर उन्होंने एक गाना रिकॉर्ड किया। तकनीक पुरानी थी — बड़े-बड़े रील वाले रेकॉर्डर, पर आवाज़ में जो मिठास थी, वह अतुलनीय थी।

शाम को घर लौटते समय उन्होंने कहा — "आज जो कमाई, उससे कल का खाना होगा और भाई-बहनों की पढ़ाई भी।" उनके चेहरे पर न थकान की शिकायत, न जीवन से कोई शिकवा।

उस एक दिन ने मुझे सिखाया — महानता किसी बड़े महल में नहीं, छोटे-से घर की उस थकी-माँदी पर भी गाती रहने वाली आवाज़ में होती है।

2. "आप जैसे लोग अगर यह मानते हैं कि मैं अमर हूँ, तो यह मुझे मिलने वाले उस प्यार जैसा ही है"

कल्पना कीजिए कि यह लता जी का अंतिम संदेश है— आप उस पर अपनी भावनात्मक प्रतिक्रिया एक अनुच्छेद के रूप में व्यक्त कीजिए।

उत्तरः

जब लता दीदी ने कहा — "मेरा गाना अमर है, पर शरीर तो अमर नहीं" — तो ये शब्द सुनते ही मन में एक अजीब-सी चुप्पी छा गई। उनका यह कथन उनकी महानता का प्रमाण है। जो इंसान लाखों-करोड़ों की पहचान हो, फिर भी इतनी विनम्रता से कहे कि "मैं अमर नहीं, मेरा गाना अमर है" — यह सच्चाई हर महान व्यक्ति से हम सबको सीखनी चाहिए।

दीदी, आपने सही कहा — आपका शरीर चला गया पर आपकी आवाज़ आज भी हर सुबह हमारे घरों में जीती है।

उत्तरः
सहयोग और सामूहिकता की आवश्यकता वाले कार्य:

1. **विद्यालय में**: वार्षिक उत्सव, खेल प्रतियोगिताएँ, समूह गायन — इन सबमें सबका सहयोग जरूरी होता है।
2. **घर में**: त्योहारों की तैयारी — सफाई, सजावट, खाना बनाना — सब मिलकर करते हैं।
3. **मोहल्ले में**: सड़क की सफाई, वृक्षारोपण, किसी बीमार पड़ोसी की सहायता।
4. **समुदाय में**: शादी-ब्याह के आयोजन में पड़ोसी मिलकर काम करते हैं।
5. **गाँव में**: फसल की कटाई, कुआँ खोदना, मंदिर निर्माण — ये सब सामूहिक प्रयास से होते हैं।

इन सभी में यही संदेश है कि अकेला इंसान सीमित है, मिलकर काम करने से ही बड़े लक्ष्य प्राप्त होते हैं — जैसे कोरस की लड़कियों ने मिलकर लता जी के गीतों को पूर्णता दी।

शास्त्रीय संगीत

1. "फिर उसमें लंबी-लंबी रागदारी वाले गायन की भी परंपरा थी।"
रागदारी वाले गायन का अर्थ है भारतीय शास्त्रीय संगीत। आपने इस पाठ में संगीत से जुड़े अनेक शब्दों को पढ़ा है। शब्दकोश, इंटरनेट, पुस्तकालय और अपने शिक्षकों की सहायता से इनके अर्थ और उदाहरण खोजकर लिखिए—

राग, सुर, बंदिश, अभंग, सोहर, फाग, बधावा

उत्तरः

1. **राग :** भारतीय शास्त्रीय संगीत में स्वरों का एक विशेष क्रम जो मन को प्रसन्न करे। हर राग एक विशेष समय और मनोभाव के लिए होता है।
उदाहरण : राग भैरवी — सुबह के समय, राग यमन — शाम के समय।
2. **सुर :** संगीत में एक निश्चित ध्वनि-स्थान। भारतीय संगीत में सात मूल सुर हैं — सा, रे, ग, म, प, ध, नि।
3. **बंदिश :** शास्त्रीय संगीत में एक निश्चित रचना जिसमें राग के स्वर और ताल के साथ शब्द-रचना होती है।
उदाहरण : ध्रुपद, खयाल आदि।
4. **अभंग :** महाराष्ट्र के संत-कवियों द्वारा भगवान विठ्ठल (कृष्ण) की स्तुति में रचे गए भक्ति-गीत।
उदाहरण : संत तुकाराम, संत ज्ञानेश्वर के अभंग।
5. **सोहर :** बच्चे के जन्म के अवसर पर गाया जाने वाला मंगलगीत। मुख्यतः उत्तर भारत में प्रचलित।
उदाहरण : "बाजे बधाई सोहर गाओ री..."
6. **फाग :** फागुन (होली) के महीने में गाया जाने वाला विशेष गीत।
उदाहरण : ब्रज में होली के समय फाग गाने की परंपरा।
7. **बधावा :** किसी मंगल अवसर — जन्म, विवाह आदि पर गाया जाने वाला बधाई-गीत।
उदाहरण : "आज आनंद मंगल है, बाजत ढोल नगारा..."

2. "त्योहारों के संदर्भ में एक बात और ध्यान में आती है कि अधिकांश प्रदेशों में पर्वों व अनुष्ठानों से संदर्भित घर-घर गीत गाए जाने का प्रचलन रहा है।" आपने पढ़ा कि भारत में त्योहारों पर फाग, धमार, सोहर, बधावा, छठ के गीत आदि गाने की परंपरा है। अपने क्षेत्र में गाए जाने वाले ऐसे गीतों के विषय में अपने घर में पता कीजिए और एक गीत अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।

उत्तरः
यह गतिविधि घर पर करनी है। नीचे एक उदाहरण दिया गया है।

राजस्थान में होली पर गाया जाने वाला फागः
होली के अवसर पर राजस्थान में 'फाग' गाने की परंपरा है। परिवार और पड़ोस के लोग एकत्र होते हैं और ढोलक की थाप पर फाग गाते हैं:

"खेलेंगे होली, रंग गुलाल उड़ाके,
आओ सखी मिलके खेलें, प्रेम रंग में रंग जाके।"

यह गीत खुशी, एकता और वसंत के आगमन का संदेश देता है।

साइबर सुरक्षा

"आज, जो स्थिति है और जिस तरह हमारी तकनीक विकसित हो चुकी है, उसमें अगर इन लोगों को काम करने का मौका मिलता, तब तो कमाल ही हो गया होता।"

1. आज तकनीकी विकास इतना अधिक हो चुका है कि अनेक धोखेबाज/ठग कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग करके अपनी आवाज़ बदलकर लोगों के साथ धोखाधड़ी करते हैं। कक्षा में चर्चा कीजिए और बताइए कि साइबर सुरक्षा नियमों का प्रयोग करते हुए इस प्रकार की धोखाधड़ी से किस प्रकार बचा जा सकता है?

उत्तरः
AI द्वारा आवाज़ बदलकर की जाने वाली धोखाधड़ी से बचने के उपाय:

1. **अपरिचित कॉल पर सतर्कता**: यदि कोई परिचित व्यक्ति की आवाज़ में फोन आए और पैसे माँगे, तो पहले उस व्यक्ति के मोबाइल पर सीधे कॉल करके सत्यापित करें।
2. **व्यक्तिगत जानकारी न दें**: फोन पर बैंक विवरण, OTP, पासवर्ड कभी न बताएँ।
3. **परिवार के साथ एक गुप्त प्रश्न तय करें**: जो केवल परिवार के सदस्य जानते हों।
4. **आधिकारिक चैनलों का उपयोग**: किसी भी संस्था का फोन आने पर उनकी आधिकारिक वेबसाइट से नंबर लेकर वापस कॉल करें।

गतिविधियाँ

1. 'नाम रह जाएगा' वाक्य के लिए एक सुंदर पोस्टर बनाइए। इसके ऊपर 'नाम रह जाता है...' लिखिए और नीचे विभिन्न भारतीय भाषाओं में 'नाम' शब्द (जैसे— नाव, नालो, नांउ, नाँउ, मिंङ्, पेरु, नामम आदि) लिखिए। साथ ही कक्षा में सब विद्यार्थी मिलकर एक प्रतिज्ञा लें— 'हम हर भाषा का सम्मान करेंगे।'

उत्तरः
यह कला-गतिविधि है। पोस्टर के लिए सुझाव:
पोस्टर का डिज़ाइन:
1. ऊपर: "नाम रह जाता है..."
2. बीच में: एक बड़ा पेड़ — जिसकी जड़ें हैं 'कर्म', तना है 'जीवन', शाखाएँ हैं 'यश'
3. पेड़ की पत्तियों पर: विभिन्न भाषाओं में 'नाम' — हिंदी (नाम), मराठी (नाव), तमिल (पेरु), तेलुगु (पेरु), मलयालम (नामम्)
4. नीचे: "हम हर भाषा का सम्मान करेंगे।"
5. पृष्ठभूमि: भारत का नक्शा जिसमें विभिन्न राज्यों के रंग हों।

2. कागज पर एक पेड़ का चित्र बनाइए। इसे नाम दीजिए— भाषा-वृक्ष। इसकी जड़ में लिखिए— 'भारतीय संस्कृति'; तने पर और शाखाओं पर लिखिए— हिंदी, मराठी, तमिल, बांग्ला, गुजराती आदि। हर शाखा पर उस भाषा का एक प्यारा शब्द जोड़िए।

उत्तरः

भाषा-वृक्ष

जड़ : भारतीय संस्कृति
तना : भारत की भाषाएँ
शाखाएँ और प्यारे शब्द :
- हिंदी — नमस्ते
- मराठी — मित्र
- तमिल — वनक्कम
- बांग्ला — भालोबाशा
- गुजराती — केम छो
- पंजाबी — सत श्री अकाल
- संस्कृत — शांति
- उर्दू — मोहब्बत
- नेपाली — धन्यवाद
- कन्नड़ — नमस्कार

संदेश : "अनेक भाषाएँ, एक भारत"

3. समूह में मिलकर किसी विषय पर एक छोटा समाचार बुलेटिन तैयार कीजिए जिसमें हिंदी, अंग्रेज़ी और किसी क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग हो। उदाहरण के लिए, एक विषय हो सकता है— 'कलाएँ जो जोड़ती हैं, बाँटती नहीं'।

उत्तरः

समाचार बुलेटिन

विषय — "कलाएँ जो जोड़ती हैं, बाँटती नहीं"
नमस्कार! आज के हमारे विशेष समाचार बुलेटिन में आपका स्वागत है।
आज विद्यालय में "कलाएँ जो जोड़ती हैं, बाँटती नहीं" कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें विद्यार्थियों ने हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में गीत, नृत्य और नाटक प्रस्तुत किए।

हिंदी में छात्रों ने देशभक्ति गीत प्रस्तुत किया—
"सारे जहाँ से अच्छा..."

पंजाबी में बच्चों ने कहा—
"साडी सभ्याचार सानूं इकट्ठा रखदी है।"

राजस्थानी में विद्यार्थियों ने कहा—
"म्हारी भाषा, म्हारो गौरव।"

कार्यक्रम का मुख्य संदेश था कि कला लोगों को जोड़ती है तथा प्रेम और भाईचारे की भावना बढ़ाती है।
धन्यवाद!

4. **भाषाई स्मृति पोटली**
अपने परिवार में प्रयुक्त अलग-अलग भाषाओं के पाँच शब्द इकट्ठा कीजिए (जैसे— दादी मराठी बोलती हों, माँ हिंदी)। उन्हें एक 'शब्द पोटली' में कार्ड पर सजाइए।

उत्तरः

भाषाई स्मृति पोटली

भाषा	शब्द	अर्थ
हिंदी	नमस्ते	अभिवादन
पंजाबी	सत श्री अकाल	नमस्कार
राजस्थानी	खम्मा घणी	आदरपूर्वक नमस्कार
मराठी	धन्यवाद	आभार
गुजराती	केम छो	आप कैसे हैं

5. स्वर-कोलाज
लता जी के जीवन के प्रेरक वाक्यों और गीतों का चित्रमय कोलाज बनाइए।
उत्तरः

स्वर-कोलाज

लता जी के प्रेरक वाक्य
- "संगीत में असीम शक्ति और अप्रत्याशित रचने की क्षमता होती है।"
- "मेहनत और साधना ही सफलता का मार्ग है।"
- "संगीत आत्मा की आवाज़ है।"
- "अगर लोग मुझे अमर मानते हैं, तो यह उनका प्यार है।"

प्रसिद्ध गीत
- "ऐ मेरे वतन के लोगों"
- "लग जा गले"
- "प्यार किया तो डरना क्या"
- "तेरे बिना ज़िंदगी से"
- "सत्यम शिवम सुंदरम"

चित्रमय सजावट के लिए सुझाव
- बीच में लता मंगेशकर जी का चित्र बनाइए।
- चारों ओर संगीत के चिन्ह, माइक और सुरों की आकृतियाँ बनाइए।
- गीतों की पंक्तियों को रंगीन अक्षरों में लिखिए।
- तिरंगा, फूल और सितार की आकृतियों से कोलाज सजाइए।

6. समय-रेखा — लता जी के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएँ कालानुक्रम में दर्शाइए।

उत्तरः

वर्ष	**महत्वपूर्ण घटना**
1929	इंदौर, मध्यप्रदेश में जन्म
1934	पाँच वर्ष की आयु में पिता से संगीत की शिक्षा प्रारंभ
1942	पिता पं. दीनानाथ मंगेशकर का निधन; 13 वर्ष की आयु में परिवार की जिम्मेदारी
1942	पहली बार फिल्म में काम किया
1949	आएगा आने वाला' (महल) से अभूतपूर्व प्रसिद्धि
1963	ऐ मेरे वतन के लोगो' गाकर पूरे देश को भावविभोर किया
1969	पद्मभूषण से सम्मानित
1989	दादासाहब फाल्के पुरस्कार
1999	भारत रत्न से सम्मानित
2001	ग्रैमी लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड
2022	06 फरवरी को निधन

भाषा संगम

1. "उस दिन घर में संगीत की सभा होती थी।"
नीचे 'संगीत' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।

संगीत (हिंदी); सङ्गीतम् (संस्कृत); संगीत (पंजाबी); मूसीकी, मौसीकी (उर्दू); मूसीकी, संगीत (कश्मीरी); संगीत (सिंधी); संगीत कला (मराठी); संगीतकळा (ला) (गुजराती); संगीत (कोंकणी); संगीत (नेपाली); संगीत (बांग्ला); संगीत (असमिया); ईशै (मणिपुरी); संगीत (ओड़िआ); संगीतमु (तेलुगु); संगीतम्, इशै (तमिल); संगीतम् (मलयालम); संगीत (कन्नड़)।

- इनके अतिरिक्त यदि आप 'संगीत' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
- उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

उत्तरः
- अतिरिक्त भाषाओं में 'संगीत':
  1. अंग्रेज़ी में: Music
  2. फ्रेंच में: Musique
- उपर्युक्त वाक्य मातृभाषा (राजस्थानी) में:
  "उण दिन घर में संगीत री सभा होवती ही।"

खोजबीन

लता मंगेशकर से जान-पहचान

1. "जब मैं बड़ी हो जाऊँगी, तब मुझे भी ऐसे ही मेडल मिलेंगे।" लता जी ने बचपन में मेडल पाने की कल्पना की और जीवन में अनगिनत पुरस्कार और मेडल प्राप्त भी किए। पता कीजिए कि उन्होंने जीवन-भर में कौन-कौन से 'मेडल' और पुरस्कार प्राप्त किए?

उत्तरः
लता मंगेशकर को प्राप्त प्रमुख पुरस्कार और सम्मान:
1. भारत रत्न (1999) — देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान।
2. दादासाहब फाल्के पुरस्कार (1989) — भारतीय सिनेमा का सर्वोच्च पुरस्कार।
3. पद्म भूषण (1969) — भारत सरकार का तीसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान।
4. पद्म विभूषण (1999) — भारत सरकार का दूसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान।
5. राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार (तीन बार) — 1972, 1974 और 1990 में।
6. फिल्मफेयर पुरस्कार (अनेक बार) — सर्वश्रेष्ठ पार्श्वगायिका के लिए।
7. ग्रैमी लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड (2001) — अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संगीत की दुनिया का सर्वोच्च सम्मान।
8. महाराष्ट्र भूषण (1997) — महाराष्ट्र का सर्वोच्च नागरिक सम्मान।
9. NTR राष्ट्रीय पुरस्कार (1999)
10. फ्रांस का सर्वोच्च नागरिक सम्मान — ऑफिसियर ऑफ द नेशनल ऑर्डर ऑफ द लीजन ऑफ ऑनर।

2. पाठ में लता मंगेशकर ने कई फिल्मों और गीतों का उल्लेख किया है। इंटरनेट की सहायता से इनमें से किसी एक फिल्म और गीत को देखकर उसके विषय में अपने विचार लिखिए। आपको यह फिल्म और गीत कैसा लगा और क्यों?

उत्तरः
मैंने लता मंगेशकर जी का प्रसिद्ध गीत 'ऐ मेरे वतन के लोगों' सुना। यह गीत मुझे बहुत भावुक और प्रेरणादायक लगा। इस गीत में देशभक्ति की भावना बहुत सुंदर ढंग से व्यक्त की गई है। जब लता जी अपनी मधुर आवाज़ में यह गीत गाती हैं, तो शहीद सैनिकों के बलिदान की याद आती है और मन में देश के प्रति सम्मान बढ़ जाता है।

इस गीत के शब्द सरल होने के साथ-साथ बहुत प्रभावशाली हैं। संगीत भी अत्यंत मधुर और भावपूर्ण है। यह गीत सुनकर हर भारतीय के मन में देशप्रेम और गर्व की भावना जाग उठती है। इसलिए यह गीत मुझे बहुत अच्छा लगा।

3. अब आप नीचे दी गई इंटरनेट कड़ी की सहायता से लता मंगेशकर द्वारा गाया हुआ गीत 'ऐ मेरे वतन के लोगों' सुन सकते हैं।

उत्तरः
लता मंगेशकर द्वारा गाया गया गीत 'ऐ मेरे वतन के लोगों' भारत के वीर सैनिकों को श्रद्धांजलि देने वाला अत्यंत प्रसिद्ध देशभक्ति गीत है। यह गीत सुनकर देश के प्रति प्रेम, सम्मान और गर्व की भावना जागृत होती है। इसकी मधुर धुन और भावपूर्ण शब्द सभी श्रोताओं को भावुक कर देते हैं।

6. अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'ऐसी भी बातें होती हैं' साक्षात्कार के लेखक (साक्षात्कारकर्ता) कौन हैं?
(क) यतींद्र मिश्र
(ख) हजारीप्रसाद द्विवेदी
(ग) पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
(घ) रामचंद्र शुक्ल

उत्तरः
(क) यतींद्र मिश्र

2. लता मंगेशकर का जन्म किस शहर में हुआ था?
(क) मुंबई, महाराष्ट्र में (ख) इंदौर, मध्यप्रदेश में
(ग) पुणे, महाराष्ट्र में (घ) नागपुर, महाराष्ट्र में

उत्तरः
(ख) इंदौर, मध्यप्रदेश में

3. यतींद्र मिश्र ने इस साक्षात्कार में अपना प्रयास क्या बताया?
(क) लता जी की दुर्लभ छवियों से करोड़ों प्रशंसकों को मिलवाना
(ख) लता जी के व्यक्तिगत जीवन के विवाद उजागर करना
(ग) भारतीय और पाश्चात्य संगीत की तुलना करना
(घ) लता जी की फिल्मी यात्रा का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना

उत्तरः
(क) लता जी की दुर्लभ छवियों से करोड़ों प्रशंसकों को मिलवाना

4. लता मंगेशकर ने यतींद्र मिश्र के आभार पर क्या कहा?
(क) यह अवसर उनके लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है
(ख) जितना प्रेम मिला, शायद गाकर उतना आभार नहीं जता पाईं
(ग) वे इस साक्षात्कार के लिए उत्सुक नहीं थीं
(घ) वे अपने प्रशंसकों से कभी नहीं मिल पाई हैं

उत्तरः
(ख) जितना प्रेम मिला, शायद गाकर उतना आभार नहीं जता पाईं

5. बचपन में शरारत करने पर पिताजी बच्चों को कैसे डाँटते थे?
(क) जोर से डाँटकर सजा देते थे
(ख) घर के बाहर खड़ा कर देते थे
(ग) बिना कुछ कहे गंभीरता से देखते थे, रोना शुरू हो जाता था
(घ) भाई-बहनों को पास बुलाकर अलग-अलग समझाते थे

उत्तरः
(ग) बिना कुछ कहे गंभीरता से देखते थे, रोना शुरू हो जाता था

6. बच्चों को बुलाने के बाद पिताजी 'समझ गए न?' पूछते थे और फिर कहते थे —
(क) 'अच्छा अब जाओ, बाहर खेलो'
(ख) 'अब चुप रहो, शांत बैठो'
(ग) 'अब पढ़ाई करो, कमरे में जाओ'
(घ) 'अब नाश्ता करो, माँ के पास जाओ'

उत्तरः
(क) 'अच्छा अब जाओ, बाहर खेलो'

7. पिताजी की ड्रामा कंपनी के नाटक कितने बजे से कितने बजे तक चलते थे?
(क) शाम सात बजे से रात बारह बजे तक
(ख) रात नौ बजे से देर रात दो से तीन बजे तक
(ग) सुबह आठ बजे से शाम छह बजे तक
(घ) दोपहर दो बजे से रात दस बजे तक

उत्तरः
(ख) रात नौ बजे से देर रात दो से तीन बजे तक

8. पिताजी के नाटकों में एक नाटक के कितने अंक होते थे?
(क) तीन अंक (ख) सात अंक
(ग) पाँच अंक (घ) दस अंक

उत्तरः
(ग) पाँच अंक

जब कोई बच्चा "ए मेरे वतन के लोगो" सुनता है, जब कोई दुलहन के लिए "आज मेरे यार की शादी है" बजता है — उस पल में आप हमारे साथ होती हैं। यही अमरता है। आपकी विनम्रता ने हमें सिखाया कि सच्चा कलाकार वह है जो अपने काम को खुद से बड़ा मानता है।

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

मुहावरे

1. "मगर किसी के आगे जाकर हाथ नहीं पसारना है"
उपर्युक्त वाक्य में रेखांकित अंश मुहावरा है। हाथ पसारना या फैलाना का अर्थ है— कुछ माँगना या याचना करना। हाथों से जुड़े अनेक मुहावरे आपने पढ़े और सुने होंगे। ऐसे ही कुछ मुहावरे नीचे दिए गए हैं। इनका प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए—
   - हाथ में आना
   - हाथ का मैल होना
   - हाथ से हाथ मिलाना
   - हाथ साफ करना
   - हाथ से निकल जाना
   - हाथ धो बैठना

   उत्तरः
   1. **हाथ में आना (अर्थ**: प्राप्त होना, मिलना)
   वाक्यः वर्षों की मेहनत के बाद आखिरकार उसका सपना हाथ में आ ही गया।
   2. **हाथ का मैल होना (अर्थ**: बहुत मामूली, आसानी से खर्च हो जाने वाला)
   वाक्यः पैसा तो हाथ का मैल होता है, असली धन है ज्ञान और संस्कार।
   3. **हाथ से हाथ मिलाना (अर्थ**: मिलकर काम करना, सहयोग करना)
   वाक्यः यदि सब लोग हाथ से हाथ मिलाकर चलें, तो कोई भी काम असंभव नहीं।
   4. **हाथ साफ करना (अर्थ**: चुरा लेना, बेईमानी करना)
   वाक्यः जब दुकान खाली थी तो चोर ने माल पर हाथ साफ कर दिया।
   5. **हाथ से निकल जाना (अर्थ**: अवसर खो देना, नियंत्रण से बाहर हो जाना)
   वाक्यः यदि समय पर ध्यान नहीं दिया तो यह अवसर हाथ से निकल जाएगा।
   6. **हाथ धो बैठना (अर्थ**: किसी चीज को हमेशा के लिए खो देना)
   वाक्यः लापरवाही के कारण वह अपनी नौकरी से हाथ धो बैठा।

हमारी भाषाएँ

1. "'गाव गेला वाहुन, नाव गेला राहुन'। मतलब गाँव तो बह जाता है, लेकिन जो नाम है, वह रह जाता है।" आपने एक कहावत और उसका हिंदी में अर्थ पढ़ा। इस कहावत के अर्थ को अपने घर या क्षेत्र की भाषा अथवा भाषाओं में लिखिए।
उत्तरः
हिंदी में: "गाँव तो बह जाता है, पर नाम रह जाता है।"
राजस्थानी में: "गाँव तो बहि जावे, नाम रहि जावे।"
भोजपुरी में: "गाँव त बह जाला, नाव रहि जाला।"
पंजाबी में: "पिंड तां वहि जांदा है, पर नां रहि जांदा है।"
अंग्रेज़ी में: "The village may be swept away, but the name remains."

2. लता जी ने मराठी कहावत को हिंदी में समझाया। अब आप अपनी मातृभाषा की कोई कहावत चुनिए और उसका हिंदी में अनुवाद कीजिए। अनुवाद के बाद भाव में क्या परिवर्तन आया? लिखिए।
उत्तरः
राजस्थानी कहावतः "काग के आग्यां फूल नह गिणज्या।" (कौए के सामने फूल नहीं गिने जाते।)
हिंदी अनुवादः मूर्ख या अज्ञानी के सामने ज्ञान की बातें करना व्यर्थ है।
भाव में परिवर्तनः मूल कहावत में कौए और फूल का बिंब बहुत सजीव और काव्यात्मक है। हिंदी अनुवाद में वह काव्यात्मकता कम हो जाती है और कहावत अधिक सीधी और गद्यात्मक हो जाती है। मूल कहावत की रोचकता और संक्षिप्तता अनुवाद में पूरी तरह नहीं आ पाती।

3. एक 'सेतुचित्र' बनाइए जिसमें दो किनारे हों— एक किनारे पर हिंदी और दूसरे किनारे पर अपने घर या क्षेत्र की भाषा। दोनों किनारों के बीच में ऐसे शब्द लिखिए जो दोनों भाषाओं में समान अर्थ रखते हैं।
उत्तरः

हिंदी		समान शब्द		राजस्थानी
माँ	⟷	माँ	⟷	माँ
पानी	⟷	पाणी	⟷	पाणी
घर	⟷	घर	⟷	घर
खाना	⟷	खावणो	⟷	खावणो
दूध	⟷	दूध	⟷	दूध

दोनों भाषाओं में अनेक शब्द समान हैं — यह बताता है कि भारतीय भाषाएँ एक ही संस्कृति की धाराएँ हैं।

उत्तरः
(ख) उस समय वह बहुत छोटी थी

19. पिताजी घर में कौन-सी फिल्में देखने देते थे?
(क) वे सभी प्रकार की फिल्में देखने की अनुमति देते थे।
(ख) वे केवल प्रेम कहानी और रोमांटिक फिल्में देखते थे।
(ग) वे धार्मिक और देशभक्ति की फिल्में ही देखने देते थे।
(घ) वे केवल मराठी भाषा की फिल्में देखने की अनुमति देते थे।

उत्तरः
(ग) वे धार्मिक और देशभक्ति की फिल्में ही देखने देते थे।

20. लता मंगेशकर ने शुरु में कुल कितनी फिल्मों में अभिनय किया था?
(क) दो या तीन फिल्मों में (ख) दस या बारह फिल्मों में
(ग) छह या सात फिल्मों में (घ) पंद्रह से बीस फिल्मों में

उत्तरः
(ग) छह या सात फिल्मों में

21. लता जी को अभिनय क्यों पसंद नहीं था?
(क) मेकअप करना, लाइट के सामने जाना और लोगों के बीच रोना-हँसना अच्छा नहीं लगता था
(ख) उन्हें फिल्मों के लिए बहुत लंबे-लंबे संवाद आसानी से याद नहीं हो पाते थे।
(ग) उन्हें अचानक कैमरे के सामने आने और स्टूडियो की तेज लाइट से डर लगता था।
(घ) उनके पिताजी ने उन्हें शुरु से ही फिल्मों और अभिनय से हमेशा दूर रखा था।

उत्तरः
(क) मेकअप करना, लाइट के सामने जाना और लोगों के बीच रोना-हँसना अच्छा नहीं लगता था

22. 'छत्रपति शिवाजी' फिल्म में लता जी ने क्या किया था?
(क) इस फिल्म में उन्होंने मुख्य भूमिका निभाई थी
(ख) हिंदी और मराठी दोनों संस्करणों के आखिरी गाने की दो पंक्तियाँ गाई थीं
(ग) फिल्म के लिए केवल पार्श्वगायन किया था
(घ) इस फिल्म का निर्देशन और संगीत दोनों किए थे

उत्तरः
(ख) हिंदी और मराठी दोनों संस्करणों के आखिरी गाने की दो पंक्तियाँ गाई थीं

23. **अभिकथन (A):** लता मंगेशकर की रेकॉर्डिंग सुबह से रात तक चलती रहती थी और एक स्टूडियो से दूसरे-तीसरे स्टूडियो के चक्कर में पूरा दिन बीत जाता था।
कारण (R): उनके दिमाग में हमेशा यह घूमता था कि किसी तरह अपने परिवार के लिए ज्यादा से ज्यादा कमाकर उनकी जरूरतें पूरी करें।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है
(ख) A सही है किंतु R गलत है
(ग) A गलत है किंतु R सही है
(घ) A और R दोनों गलत हैं

उत्तरः
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है

24. लता जी को रेकॉर्डिंग की तकलीफों से उतना फर्क नहीं पड़ता था; उन्हें सबसे ज्यादा किस बात की चिंता रहती थी?
(क) गाने की गुणवत्ता सही रहे
(ख) आने वाले कल में कितने गीत रेकॉर्ड होने हैं
(ग) संगीत निर्देशकों से अच्छे संबंध रहें
(घ) फिल्म की कहानी कैसी और कितनी अच्छी है

उत्तरः
(ख) आने वाले कल में कितने गीत रेकॉर्ड होने हैं

25. बचपन में पंडित कुमार गंधर्व को देखकर लता जी का क्या सपना बना?
(क) एक महान और प्रसिद्ध शास्त्रीय गायिका बनने का।
(ख) बड़ी होकर मेडल पाना और उन्हें लगाकर जाने का।
(ग) मराठी रंगमंच पर बड़े-बड़े नाटक करने का।
(घ) अपनी खुद की फिल्म बनाने और निर्देशित करने का।

उत्तरः
(ख) बड़ी होकर मेडल पाना और उन्हें लगाकर जाने का।

26. पंडित कुमार गंधर्व गाने के लिए बैठे थे, उस समय उन्होंने क्या पहना था?
(क) सफेद कुर्ता-पाजामा और कुछ मेडल
(ख) काली शेरवानी और अपने ढेर सारे मेडल
(ग) धोती-कुर्ता और एक स्वर्ण पदक
(घ) नीली शेरवानी और कोई पदक नहीं था

उत्तरः
(ख) काली शेरवानी और अपने ढेर सारे मेडल

27. यतींद्र मिश्र ने 'आएगा आने वाला' गाना किस फिल्म से बताया?
(क) 'बरसात' से (ख) 'बड़ी बहन' से
(ग) 'महल' से (घ) 'संगदिल' से

उत्तरः
(ग) 'महल' से

28. रिक्त स्थान भरिए-
'आएगा आने वाला' गाने में लता जी को हॉल में बहुत दूर से ______ रेकॉर्डिंग वाले माइक तक आना पड़ता था।
(क) दौड़ते हुए चलकर (ख) गाते-गाते सीधे
(ग) चलकर दबे पाँव (घ) झुककर सावधानी से

उत्तरः
(ग) चलकर दबे पाँव

9. **अभिकथन (A):** पिताजी पहली बार मराठी रंगमंच में कर्नाटक और पंजाब का संगीत लेकर आए।
कारण (R): उन्होंने बाकायदा कर्नाटक जाकर वहाँ का कुछ गीत और संगीत सीखा था, जिसे अपने नाटकों में डाला।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है
(ख) A सही है किंतु R गलत है
(ग) A गलत है किंतु R सही है
(घ) A और R दोनों गलत हैं
उत्तरः
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है

10. जिस दिन कोई ड्रामा नहीं होता था, उस दिन पिताजी के घर में क्या होता था?
(क) नाटक के अगले दिन के लिए सभी पात्रों की रिहर्सल होती थी।
(ख) संगीत की सभा होती थी, जिसमें केवल शास्त्रीय संगीत गाया जाता था।
(ग) घर के सभी बच्चों को संगीत सिखाने की अलग कक्षा दी जाती थी।
(घ) बाहर से बहुत सारे मेहमान आते थे और मिलकर फिल्में देखी जाती थीं।
उत्तरः
(ख) संगीत की सभा होती थी, जिसमें केवल शास्त्रीय संगीत गाया जाता था।

11. पिताजी के गाए हुए शास्त्रीय संगीत के कई रेकॉर्ड किस कंपनी से रिलीज हुए थे?
(क) मेगाफोन कंपनी से (ख) एच.एम.वी. से
(ग) कोलंबिया कंपनी से (घ) पॉलीडोर कंपनी से
उत्तरः
(ख) एच.एम.वी. से

12. पिताजी ने राग जयजयवंती का जो रेकॉर्ड बनाया था, उसे बाजार में किसने उतारा था?
(क) एच.एम.वी. कंपनी ने (ख) प्रभात फिल्म कंपनी ने
(ग) मेगाफोन कंपनी ने (घ) विश्व रेकॉर्ड कंपनी ने
उत्तरः
(ग) मेगाफोन कंपनी ने

13. लता जी ने पिताजी से सबसे ज्यादा क्या सीखा?
(क) शास्त्रीय संगीत की बारीकियाँ
(ख) स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा
(ग) मराठी रंगमंच की परंपराएँ
(घ) फिल्मों में काम करने की कला
उत्तरः
(ख) स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा

14. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प चुनिए:
I. पिताजी ने लता जी को सिखाया कि सही बात पर खड़े रहो और किसी के आगे झुकने की जरुरत नहीं।
II. लता जी की माँ का संस्कार था कि किसी के आगे हाथ नहीं पसारना।
III. पिताजी की कंपनी हमेशा घाटे में चलती थी।
(क) केवल I और III सही हैं
(ख) केवल I और II सही हैं
(ग) I, II और III तीनों सही हैं
(घ) केवल II और III सही हैं
उत्तरः
(ख) केवल I और II सही हैं

15. बचपन में लता जी ने प्रभात फिल्म कंपनी की किस फिल्म की नकल उतारी थी?
(क) 'राम नाम' की (ख) 'छत्रपति शिवाजी' की
(ग) 'संत तुकाराम' की (घ) 'भक्त प्रह्लाद' की
उत्तरः
(ग) 'संत तुकाराम' की

16. 'संत तुकाराम' फिल्म की नकल उतारते समय लता जी क्या करती थीं?
(क) कमरे में गद्दे-तकिये रखकर ऊँचा स्वर्ग बनाती थीं और वहाँ से गीत गाती थीं
(ख) तुकाराम बनकर नाटक करती थीं और संवाद बोलती थीं
(ग) फिल्म देखकर उसी तरह नृत्य और अभिनय करती थीं
(घ) घर के कमरे को मंदिर की तरह सजाकर पूजा करती थीं
उत्तरः
(क) कमरे में गद्दे-तकिये रखकर ऊँचा स्वर्ग बनाती थीं और वहाँ से गीत गाती थीं

17. 'संत तुकाराम' नाटक में मीना, पंढरीनाथ और आशा क्या करते थे?
(क) वे भी साथ मिलकर ऊँचे स्वर में गाना गाते थे
(ख) तुकाराम के अनुयायी बनकर रोते और साथ ले जाने को कहते थे
(ग) वे विमान की भूमिका निभाते और इधर-उधर दौड़ते थे
(घ) वे नीचे बैठकर शांत दर्शक बनकर देखते रहते थे
उत्तरः
(ख) तुकाराम के अनुयायी बनकर रोते और साथ ले जाने को कहते थे

18. बचपन के नाटकों में उषा क्यों शामिल नहीं रहती थी?
(क) उसे अभिनय बिल्कुल पसंद नहीं था
(ख) उस समय वह बहुत छोटी थी
(ग) पिताजी ने उसे मना किया था
(घ) वह स्वभाव से शरारती नहीं थी

(ग) 'बहुत अच्छा किया, आपका स्वागत है यहाँ'
(घ) 'आप बिना सूचना दिए आ गईं, यह कैसे हुआ?'

उत्तरः
(ख) 'लता बाई सब खैरियत तो है, इतने सबेरे क्या मुसीबत आन पड़ी?'

38. नौशाद साहब ने लता जी को मिठाई बाँटते देख क्या कहा?
(क) 'तुम हम सबको मिठाई बाँट रही हो, हमें तुम्हें मिठाई खिलानी चाहिए, जो धुनों में मिठास घोली'
(ख) 'अरे लता, अगले साल से इतनी सुबह-सुबह मत आया करो'
(ग) 'तुम्हें इतने घरों में मिठाई लेकर जाने की क्या जरुरत है?'
(घ) 'मिठाई बाँटना बंद करो और अब गाने की तैयारी करो'

उत्तरः
(क) 'तुम हम सबको मिठाई बाँट रही हो, हमें तुम्हें मिठाई खिलानी चाहिए, जो धुनों में मिठास घोली'

39. 'मंगलागौर' नामक उत्सव कब और कैसे मनाया जाता था?
(क) हर साल होली के अवसर पर गाँव में सब मिलकर मनाते थे
(ख) विवाह के बाद नई बहू के घर आने पर पास-पड़ोस की औरतें आकर मग्न भाव से गीत गाती और नाचती थीं
(ग) नवरात्रि के अंतिम दिन मंदिर में सामूहिक रुप से मनाते थे
(घ) दीवाली की रात को घर के आँगन में महिलाएँ एकत्र होती थीं

उत्तरः
(ख) विवाह के बाद नई बहू के घर आने पर पास-पड़ोस की औरतें आकर मग्न भाव से गीत गाती और नाचती थीं

40. लता जी को सन् 1960 में जो कोरस गाने वालों का ग्रुप मिला था, वह लगभग कब तक चला?
(क) 1965 तक (ख) 1975 तक
(ग) 1990 तक (घ) 1980 तक

उत्तरः
(घ) 1980 तक

41. **अभिकथन (A):** अस्सी के बाद कोरस वालों का म्यूज़िक पहले रेकॉर्ड हो जाता था और बाद में लता जी जाकर अपने गाने गाती थीं।
कारण (R): इससे पहले के दौर में पुरुष और स्त्री आवाजों के कोरस लता जी के गीतों के साथ ही रेकॉर्ड होते थे।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है
(ख) A सही है किंतु R गलत है
(ग) A और R दोनों सही हैं पर R, A की व्याख्या नहीं करता
(घ) A गलत है किंतु R सही है

उत्तरः
(ग) A और R दोनों सही हैं पर R, A की व्याख्या नहीं करता

42. लता जी ने कोरस में सुरीला गाने वाली कुछ लड़कियों के नाम बताए। निम्नलिखित में से कौन-सा नाम उन्होंने नहीं बताया?
(क) कविता और गांधारी (ख) कल्याणी और सुमन
(ग) रेखा और मीना (घ) रेखा और सुमन

उत्तरः
(ग) रेखा और मीना

43. यतींद्र मिश्र ने किस परंपरागत कथा का उल्लेख किया?
(क) तानसेन के दीपक राग से दीये जले और उनकी पुत्रियों के मेघ राग से वर्षा होने लगी
(ख) बैजू बावरा के गाने से पत्थर पिघल गए और नदी बहने लगी
(ग) हरिदास बाबा के गाने से पशु-पक्षी नृत्य करने लगे थे
(घ) जैसे ही मीरा ने भजन गाना शुरु किया, वैसे ही जहर पानी बन गया था

उत्तरः
(क) तानसेन के दीपक राग से दीये जले और उनकी पुत्रियों के मेघ राग से वर्षा होने लगी

44. लता जी ने तानसेन की कथाओं के बारे में क्या कहा?
(क) मेरा मानना है कि ये सब कपोल-कल्पित हैं और कभी नहीं हुआ होगा
(ख) यह निश्चित ही हुआ होगा, यह वे पूरे विश्वास से कहती हैं
(ग) उनकी कला में सच्चा सुर था तो घटा होगा; आदर में मानते हैं पर निश्चित नहीं कह सकतीं
(घ) यह केवल राजनीतिक प्रचार और लोगों की मनगढ़ंत बातें थीं और ऐसा कुछ भी नहीं हुआ होगा

उत्तरः
(ग) उनकी कला में सच्चा सुर था तो घटा होगा; आदर में मानते हैं पर निश्चित नहीं कह सकतीं

45. मुंबई में उस्ताद अली अकबर खाँ और पंडित रविशंकर के कंसर्ट में क्या हुआ?
(क) लता जी ने वहाँ जाकर अचानक एक गाना सुनाया
(ख) श्रोताओं में से एक दर्शक भावुक होकर बेहोश हो गया
(ग) पचास-साठ मिनट बाद अली अकबर भाई के सरोद का एक तार टूट गया
(घ) संगीत इतना मधुर था कि वहाँ अचानक वर्षा होने लगी

उत्तरः
(ग) पचास-साठ मिनट बाद अली अकबर भाई के सरोद का एक तार टूट गया

(ग) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

4. लेखिका द्वारा अपने पिता के मेडलों का संस्मरण सुनाने का स्वर कैसा प्रतीत होता है?
(क) कौतुकपूर्ण (ख) उदासीन
(ग) ईर्ष्यालु (घ) क्रोधित

5. गद्यांश में प्रयुक्त 'हसरत' शब्द का सही अर्थ निम्नलिखित में से क्या है?
(क) घृणा (ख) अभिलाषा
(ग) विस्मृति (घ) निराशा

6. उस दौर के कलाकारों में अपने कार्यक्रमों के दौरान किस चीज़ को पहनने का प्रचलन था?
(क) अत्यधिक महंगी रेशमी शेरवानी
(ख) नए ज़माने की विदेशी पोशाकें
(ग) अपने प्रदर्शनों में मिले मेडल
(घ) बहुत ही कीमती सोने के आभूषण

उत्तरः
1. (ख) भविष्य के कार्यों व गीतों की निरंतरता पर
2. (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
3. (क) कौतुकपूर्ण
4. (ख) अभिलाषा
5. (ग) अपने प्रदर्शनों में मिले मेडल

गद्यांश 5

लता मंगेशकर : इतना जरूर मैं कहना चाहूँगी कि पुराने समयों में, जब मैंने 'महल', 'बड़ी बहन', 'बरसात', 'तराना', 'बाजार' और 'संगदिल' जैसी फिल्मों के लिए पार्श्वगायन किया था, उस समय तकनीकी रूप से सिनेमा में बहुत तरक्की नहीं हुई थी। 'आएगा आने वाला' में मुझे हॉल में बहुत दूर से चलकर दबे पाँव रेकॉर्डिंग वाले माईक तक आना पड़ता था और उसी अनुपात में रेकॉर्डिंग के माईक पर स्वर का उतार-चढ़ाव कैद किया जाता था।

बहुत सारे ऐसे गाने मुझे याद हैं जिसमें कुछ विशेष प्रभावों को देने के लिए अनिल विश्वास, श्याम सुंदर, सज्जाद हुसैन, सलिल चौधरी और सी. रामचंद्र ने कुछ नए तरीके और अजीबोगरीब टोटके आजमाए थे, जिनसे गीतों में वह प्रभाव पैदा हो सका।

1. 'आएगा आने वाला' गीत की रिकॉर्डिंग के लिए लता जी को दबे पाँव चलकर क्यों आना पड़ता था?
(क) तकनीकी अभाव के कारण ध्वनि का उतार-चढ़ाव स्वतः बनाने हेतु
(ख) स्टूडियो के सख्त नियमों के कारण चुपचाप चलने की मजबूरी थी
(ग) अन्य वरिष्ठ संगीतकारों को किसी प्रकार की बाधा न पहुँचाने के लिए
(घ) गीत की तेज़ गति को शारीरिक क्रियाओं द्वारा नियंत्रित करने हेतु

2. पुराने दौर के संगीतकारों (जैसे अनिल विश्वास, श्याम सुंदर आदि) के संदर्भ में कौन-सा निष्कर्ष सही है?
I. वे केवल आधुनिक डिजिटल मशीनों पर पूरी तरह निर्भर होकर काम करते थे।
II. वे सीमित तकनीकों में भी रचनात्मक प्रयोगों द्वारा संगीत रचते थे।
(क) निष्कर्ष I सही है और II गलत है।
(ख) निष्कर्ष I और II दोनों ही गलत हैं।
(ग) निष्कर्ष II सही है और I गलत है।
(घ) निष्कर्ष I और II दोनों ही सही हैं।

3. गद्यांश के आधार पर बताइए कि उस काल में पार्श्वगायन की परिस्थितियों का मिजाज कैसा था?
(क) अत्यंत सुगम
(ख) चुनौतीपूर्ण
(ग) घोर निराशाजनक
(घ) बेहद आधुनिक

4. गद्यांश में प्रयुक्त 'पार्श्वगायन' शब्द का सटीक अर्थ क्या होगा?
(क) मंच पर आकर सबके सामने अभिनय करना
(ख) केवल सामूहिक कोरस में सुर मिलाना
(ग) बिना किसी वाद्य यंत्र के अकेले गाना
(घ) परदे के पीछे से अभिनेता हेतु गाना

5. गद्यांश के अनुसार गीतों में विशेष प्रभाव पैदा करने के लिए संगीतकार क्या करते थे?
(क) वे विदेशों से बहुत महंगे वाद्य यंत्र मँगवाते थे।
(ख) वे नए तरीकों और अनोखे टोटकों को आजमाते थे।
(ग) वे एक ही गीत को कई हफ़्तों तक रिकॉर्ड करते थे।
(घ) वे केवल बहुत शांत खुले जंगलों में रिकॉर्डिंग करते थे।

उत्तरः
1. (क) तकनीकी अभाव के कारण ध्वनि का उतार-चढ़ाव स्वतः बनाने हेतु
2. (ग) निष्कर्ष II सही है और I गलत है।
3. (ख) चुनौतीपूर्ण
4. (घ) परदे के पीछे से अभिनेता हेतु गाना
5. (ख) वे नए तरीकों और अनोखे टोटकों को आजमाते थे।

5. बचपन में लता जी ने 'संत तुकाराम' फिल्म की नकल कैसे उतारी?

उत्तरः
घर में गद्दे-तकिए एक के ऊपर रखकर ऊँचा स्वर्ग बनाया जाता था। लता जी उस पर बैठकर तुकाराम का गीत गातीं और नीचे मीना, पंढरीनाथ और आशा तुकाराम के अनुयायी बनकर रोते थे।

6. लता जी को अभिनय क्यों पसंद नहीं था?

उत्तरः
उन्हें मेकअप करना, लाइटों के सामने जाना और भीड़ के सामने कभी रोना, कभी हँसना अच्छा नहीं लगता था। हालाँकि शुरुआत में उन्होंने लगभग छह-सात फिल्मों में काम किया था।

7. लता जी ने 'छत्रपति शिवाजी' फिल्म में काम करने की इच्छा क्यों जताई?

उत्तरः
लता जी छत्रपति शिवाजी को बहुत पसंद करती थीं। इसलिए उन्होंने भालजी पेंढारकर से खुद कहा कि फिल्म के आखिरी गाने में दो पंक्तियाँ वे भी गाएँगी और उन दृश्यों में वे मौजूद भी हैं।

8. लता जी की रेकॉर्डिंग के दौरान उनके मन में क्या चिंता सबसे अधिक रहती थी?

उत्तरः
उन्हें रेकॉर्डिंग की कठिनाइयों से उतना फर्क नहीं पड़ता था, जितना इस बात की चिंता रहती थी कि आने वाले कल में कितने गीत रेकॉर्ड होने हैं और नए कॉन्ट्रेक्ट की फिल्मों के गाने कब होंगे।

9. बचपन में लता जी का कौन-सा सपना था जो पंडित कुमार गंधर्व से जुड़ा था?

उत्तरः
लता जी ने जब कुमार गंधर्व को काली शेरवानी पहनकर ढेर सारे मेडल लगाकर गाते देखा, तब से उनकी इच्छा थी कि जब बड़ी होंगी, तो उन्हें भी ऐसे ही मेडल मिलेंगे और वे किसी कार्यक्रम में लगाकर जाएँगी।

10. 'आएगा आने वाला' गाने की रेकॉर्डिंग तकनीकी रूप से कितनी कठिन थी?

उत्तरः
उस समय तकनीकी सुविधाएँ नहीं थीं। लता जी को हॉल में बहुत दूर से चलकर दबे पाँव माइक तक आना पड़ता था और उसी अनुपात में माइक पर स्वर का उतार-चढ़ाव कैद किया जाता था।

11. लता जी के घर में बचपन में होली कैसे मनाई जाती थी?

उत्तरः
उनके यहाँ होली की राख 'गुड़वड़' से होती थी। रंग-पंचमी पर माँ और पिताजी केसर छिड़कते थे, मीठा बनाकर प्रसाद देते थे और सभी की आरती उतारी जाती थी। आधुनिक होली का प्रभाव उनके घर में नहीं था।

12. उस्ताद अली अकबर खाँ के सरोद का तार टूटने पर उन्होंने कौन-सी मार्मिक बात कही?

उत्तरः
उन्होंने कहा — 'बहन, जब बहुत सुर में तार लगता है, तो टूट जाता है।' उन्होंने अपने सुर को इतने पवित्र भाव से इतना डूबकर लगाया था कि सरोद का तार टूट गया।

13. लता जी ने 'गाव गेला वाहुन, नाव गेला राहुन' कहावत का क्या अर्थ बताया?

उत्तरः
लता जी ने बताया कि इसका अर्थ है — गाँव तो बह जाता है, लेकिन नाम रह जाता है। यानी शरीर नश्वर है, लेकिन कर्म और नाम अमर रहते हैं। वे इसी विश्वास के साथ जीती रही हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पं. दीनानाथ मंगेशकर के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताएँ साक्षात्कार में सामने आती हैं?

उत्तरः
पं. दीनानाथ मंगेशकर एक बहुमुखी प्रतिभाशाली व्यक्ति थे — संगीतकार, नाटककार और आदर्श पिता। वे बिना डाँट के केवल गंभीर दृष्टि से बच्चों को अनुशासित करते थे। एक राग में सुर बदलकर नया राग बनाना उनकी संगीत-कुशलता थी। उन्होंने मराठी रंगमंच में कर्नाटक और पंजाब का संगीत लाया। स्वाभिमान का संस्कार उन्होंने बच्चों को दिया। उनकी संगीत सभाएँ घर की परंपरा थीं।

2. लता जी ने पिताजी के निधन के बाद कैसे अपने परिवार की जिम्मेदारी उठाई?

उत्तरः
सन् 1942 में पिताजी के निधन के बाद मात्र 13 वर्ष की आयु में लता जी ने परिवार का भार उठाया। सुबह से रात तक एक स्टूडियो से दूसरे और तीसरे स्टूडियो के चक्कर काटते हुए उन्होंने अपने माँ, भाई-बहनों की जरूरतें पूरी कीं। उनके मन में हमेशा एक ही चिंता रहती थी — ज्यादा से ज्यादा कमाकर परिवार की जरूरतें कैसे पूरी करें। यह कर्तव्यनिष्ठा उनकी माँ के संस्कारों से भी मिली थी।

3. यतींद्र मिश्र के 'टाइम मशीन' वाले प्रश्न पर लता जी ने क्या रोचक जवाब दिया?

उत्तरः
यतींद्र मिश्र ने पूछा कि यदि 1949-50 में ए.आर. रहमान या जतिन-ललित होते, तो 'आएगा आने वाला' जैसे गाने कैसे

बनते? लता जी ने हँसते हुए कहा कि इसका पूरा आकलन संभव नहीं, पर कुछ बेहतरीन या बिल्कुल अलग अंदाज में होता। उन्होंने पलटकर पूछा — अगर 'मेरे ख्वाबों में जो आए' को नौशाद साहब ने बनाया होता, तो कैसा होता? यह दोनों पीढ़ियों की श्रेष्ठता को परस्पर मान्यता देने वाला उत्तर था।

4. पुराने संगीतकारों और नए संगीतकारों के बारे में लता जी के क्या विचार थे?

   उत्तरः

   लता जी ने कहा कि पुराने समय में तकनीक नहीं थी, फिर भी अनिल विश्वास, श्याम सुंदर, सज्जाद हुसैन, सलिल चौधरी और सी. रामचंद्र जैसे संगीतकारों ने अजीबोगरीब टोटके आजमाकर अद्भुत प्रभाव पैदा किए। अगर उन्हें आज की तकनीक मिलती, तो कमाल हो जाता। उसी तरह रहमान और जतिन-ललित जैसे नए संगीतकार पुराने जमाने में जाते, तो उन्हें भी संघर्ष करना पड़ता। दोनों युग अपने आप में महान हैं।

5. नौशाद साहब के घर दीवाली की सुबह पाँच बजे पहुँचने का वाकया क्या था?

   उत्तरः

   लता जी ने पचास के दशक में दीवाली पर सीनियर संगीतकारों के घर मिठाई लेकर जाने की परंपरा शुरु की थी। एक बार साढ़े पाँच बजे नौशाद साहब के घर पहुँचीं तो वे डरकर बोले — 'क्या मुसीबत आन पड़ी?' लता जी ने कहा — 'दीवाली है, बधाई देने आई हूँ।' नौशाद साहब ने प्रेम से कहा — 'हम सब संगीतकारों को मिलकर तुम्हें मिठाई खिलानी चाहिए, जो तुमने हमारी धुनों में मिठास घोली है।'

6. 'मंगलागौर' की परंपरा के बारे में लता जी ने क्या बताया?

   उत्तरः

   महाराष्ट्र में विवाह के बाद नई बहू के आने पर 'मंगलागौर' उत्सव मनाया जाता था। पड़ोस की औरतें आकर मुग्ध भाव से गीत गाती थीं, नाचती थीं, नाटकीय रूप धरकर भी कुछ करती थीं — ठेठ गँवई अंदाज में। लता जी ने बचपन में यह उत्सव देखा और उसमें खूब नाचती-गाती थीं। पर अब यह परंपरा धीरे-धीरे खत्म हो रही है — यह उन्हें दुख देता है।

7. कोरस में गाने वाली लड़कियों के साथ लता जी के संबंध कैसे थे?

   उत्तरः

   लता जी के लिए कोरस की लड़कियाँ 'बिल्कुल मेरे घर जैसी' थीं। सबका घर में आना-जाना होता था। मीना की शादी में कोरस की सारी लड़कियाँ और लड़के कोल्हापुर गए और वहाँ खूब गाया-नाचा। सन 1960 से 1980 तक यही ग्रुप चला। रेकॉर्डिंग के दौरान स्टूडियो में कुर्सियाँ न हों तो लता जी भी उनके साथ जमीन पर बैठकर बातें करती थीं।

8. तानसेन और मेघ राग वाली मान्यता पर लता जी ने क्या विचार व्यक्त किए?

   उत्तरः

   लता जी ने कहा कि जिस जमाने में हरिदास बाबा और तानसेन जैसे महान संगीतकार हुए, उनकी कला में कोई सच्चा सुर लगा होगा जिससे ऐसा घट गया — यह आदर में मान लेते हैं। पर वे निश्चित रुप से यह नहीं कह सकतीं क्योंकि उनका ऐसा कोई अनुभव नहीं। हालाँकि वे मानती हैं कि संगीत में असीम शक्ति है और वह कुछ अप्रत्याशित जरूर रच देता है।

9. उस्ताद अली अकबर खाँ के सरोद का तार टूटने की घटना से लता जी ने क्या निष्कर्ष निकाला?

   उत्तरः

   मुंबई के कंसर्ट में अली अकबर खाँ मंत्रमुग्ध वादन कर रहे थे। पचास-साठ मिनट बाद सरोद का तार 'ठन' से टूटा। ग्रीन रुम में मिलने पर लता जी ने कहा — 'काश तार न टूटता।' उन्होंने कहा — 'जब बहुत सुर में तार लगता है, तो टूट जाता है।' लता जी ने निष्कर्ष निकाला कि संगीत की सीमा इतनी अनंत है कि तार भी शुद्ध स्वर का आघात नहीं सह पाता।

10. लता जी ने अमरता के बारे में क्या विचार व्यक्त किए?

    उत्तरः

    लता जी ने कहा कि उनका गाना अमर है, पर शरीर अमर नहीं — उसे तो जाना ही है। इस पर कोई अफसोस नहीं। मराठी कहावत 'गाव गेला वाहुन, नाव गेला राहुन' — यानी गाँव बहता है, नाम रहता है — इसे वे जीवनभर मानती रही हैं। उन्हें सबसे बड़ी खुशी है कि उन्होंने अपने पिताजी का नाम थोड़ा ही सही, आगे बढ़ाया।

11. साक्षात्कार की शैली से लता जी के व्यक्तित्व की कौन-सी विशेषताएँ उभरकर आती हैं?

    उत्तरः

    साक्षात्कार से लता जी का व्यक्तित्व अत्यंत सहज, विनम्र, आत्मसम्मानी और पारिवारिक मूल्यों के प्रति समर्पित दिखता है। वे हँसते हुए जवाब देती हैं, बचपन की यादें बड़े प्रेम से साझा करती हैं। अपनी उपलब्धियों पर घमंड नहीं, बल्कि ईश्वर के प्रति कृतज्ञता है। पिता का संस्कार, परिवार के प्रति दायित्व, संगीत के प्रति समर्पण — ये तीन मूल धाराएँ उनके व्यक्तित्व को परिभाषित करती हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'ऐसी भी बातें होती हैं' साक्षात्कार में पं. दीनानाथ मंगेशकर का चरित्र-चित्रण कीजिए। उनका लता जी के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?

   उत्तरः

   पं. दीनानाथ मंगेशकर इस साक्षात्कार में एक बहुआयामी व्यक्तित्व के रूप में सामने आते हैं। संगीत में वे इतने निपुण

थे कि एक राग गाते हुए उसमें सुर बदलकर नया राग बना देते थे और फिर पहले राग में लौट आते थे — यह उनकी असाधारण कुशलता थी। उनके नाटकों में लंबी रागदारी और पाँच अंक होते थे। उन्होंने मराठी रंगमंच में दक्षिण और पंजाब का संगीत लाकर उसे समृद्ध किया। पिता के रूप में उनका अनुशासन बिना डाँट के केवल गंभीर दृष्टि से काम करता था। लता जी पर उनका सबसे बड़ा प्रभाव स्वाभिमान का संस्कार था — कभी किसी के आगे हाथ न पसारना। यह संस्कार लता जी ने जीवनभर निभाया। पिता की मृत्यु के बाद भी उन्होंने इसी संस्कार से परिवार को संभाला।

2. 'ऐसी भी बातें होती हैं' साक्षात्कार में लता जी के संगीत-जीवन की कठिनाइयों और समर्पण का वर्णन कीजिए।

उत्तरः

लता जी का संगीत-जीवन संघर्ष और समर्पण दोनों का अनूठा संगम है। 13 वर्ष की आयु में पिता की मृत्यु के बाद उन्होंने सुबह से रात तक एक स्टूडियो से दूसरे स्टूडियो के चक्कर काटे। रेकॉर्डिंग की कठिनाइयाँ थीं — 'आएगा आने वाला' जैसे गाने में हॉल में बहुत दूर से दबे पाँव माइक तक आना पड़ता था। पर उन्हें शिकायत नहीं थी। उनकी चिंता केवल यह थी कि आने वाले कल में कितने गाने रेकॉर्ड होंगे और परिवार की जरूरतें कैसे पूरी होंगी। अपने गाने और रेकॉर्डिंग के अलावा उन्हें किसी और चीज की सुध नहीं रहती थी। यह एकाग्रता ही उनकी सफलता का रहस्य था। पुराने संगीतकारों के अजीबोगरीब टोटके और नई तकनीक — दोनों को उन्होंने सहजता से स्वीकार किया।

3. 'ऐसी भी बातें होती हैं' में लता जी की पारिवारिक और सांस्कृतिक जीवन की जो झलकियाँ मिलती हैं, उनका वर्णन कीजिए।

उत्तरः

इस साक्षात्कार में लता जी का व्यक्तित्व केवल संगीत तक सीमित नहीं — उनका पारिवारिक और सांस्कृतिक जीवन भी उतना ही समृद्ध है। बचपन में भाई-बहनों के साथ 'संत तुकाराम' की नकल उतारना, पिताजी की नजर चुराकर फिल्मों का खेल खेलना — ये प्रसंग बाल-सुलभ आनंद और घर की ऊष्मा दर्शाते हैं। होली की उनकी परंपरा आधुनिक होली से बिल्कुल अलग थी — 'गुड़वड़', रंग-पंचमी पर केसर और आरती — यह उनकी सांस्कृतिक जड़ों की गहराई दर्शाता है। नवरात्रि में 'गुड़ि पड़वा' का महत्त्वपूर्ण आयोजन और 'मंगलागौर' जैसी परंपरा की चर्चा उनकी महाराष्ट्रीय संस्कृति के प्रति प्रेम और गर्व दिखाती है। दीवाली पर संगीतकारों के घर मिठाई लेकर जाने की परंपरा उनकी विनम्रता और कृतज्ञता का प्रमाण है।

4. 'ऐसी भी बातें होती हैं' साक्षात्कार में संगीत की शक्ति और असीम सीमाओं पर लता जी के विचारों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तरः

संगीत की शक्ति के विषय में लता जी के विचार अत्यंत गहरे और अनुभव-आधारित हैं। तानसेन के दीपक राग और मेघ राग की मान्यताओं पर वे न तो अंध-विश्वास रखती हैं, न अस्वीकार करती हैं। उनका कहना है कि यदि उनकी कला में सच्चा सुर था, तो ऐसा घट सकता है — यह आदर में मानते हैं। उस्ताद अली अकबर खाँ के सरोद का तार टूटने की घटना उन्होंने स्वयं अनुभव की। जब खाँ साहब ने कहा — 'जब बहुत सुर में तार लगता है, तो टूट जाता है' — तब लता जी को लगा कि संगीत की सीमा इतनी अनंत है कि तार भी शुद्ध स्वर का आघात नहीं सह पाता। यह प्रसंग उनके लिए तानसेन की कथाओं को विश्वसनीय बनाता है। संगीत के इस आध्यात्मिक पक्ष में उनकी गहरी आस्था है।

5. 'ऐसी भी बातें होती हैं' साक्षात्कार विधा के रूप में किस प्रकार सफल है? यतींद्र मिश्र के प्रश्नों की विशेषताएँ बताइए।

उत्तरः

यह साक्षात्कार विधा के रूप में अत्यंत सफल है। यतींद्र मिश्र के प्रश्न केवल जानकारी इकट्ठा करने के नहीं, बल्कि लता जी के व्यक्तित्व की गहरी परतें खोलने के हैं। वे बचपन से शुरू करते हैं — पिता की स्मृतियाँ, फिल्मों की नकल, अभिनय का प्रश्न। फिर कार्य-परिस्थितियों पर आते हैं — संघर्ष और मेहनत। 'टाइम मशीन' वाला प्रश्न रचनात्मक और अनूठा है — पुराने और नए संगीत की तुलना को एक काल्पनिक प्रयोग के रूप में प्रस्तुत करना। व्यक्तिगत प्रश्न — रंग, होली, त्योहार — साक्षात्कार को घरेलू और आत्मीय बनाते हैं। संगीत की दार्शनिक शक्ति पर प्रश्न गहराई लाता है। साक्षात्कार की शैली औपचारिक नहीं, आत्मीय बातचीत जैसी है — इससे लता जी खुलकर बोली हैं।

6. 'ऐसी भी बातें होती हैं' के आधार पर लता मंगेशकर के व्यक्तित्व का समग्र चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तरः

लता मंगेशकर का व्यक्तित्व इस साक्षात्कार में बहुआयामी रूप में सामने आता है। पहला आयाम — स्वाभिमान और संस्कार: पिता के संस्कारों से मिला स्वाभिमान उनका सबसे बड़ा आभूषण है। कभी किसी के आगे हाथ नहीं पसारा। दूसरा आयाम — कर्तव्यनिष्ठा: 13 वर्ष की आयु में परिवार का बोझ उठाया, सुबह से रात तक काम किया। तीसरा आयाम — सहजता और विनम्रता: प्रसिद्धि के बावजूद वे स्टूडियो में कोरस लड़कियों के साथ जमीन पर बैठ जाती थीं, संगीतकारों के घर दीवाली पर मिठाई लेकर जाती थीं। चौथा आयाम — सांस्कृतिक जड़ें: महाराष्ट्रीय परंपराओं से गहरा जुड़ाव। पाँचवाँ आयाम — दार्शनिकता: संगीत की अनंत शक्ति में विश्वास और जीवन-मृत्यु के प्रति सहज स्वीकृति। 'गाव गेला वाहुन, नाव गेला राहुन' — इस कहावत में उनका पूरा जीवन-दर्शन समाहित है।

46. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प चुनिए:
    I. उस्ताद अली अकबर खाँ ने कहा — 'बहन, जब बहुत सुर में तार लगता है, तो टूट जाता है।'
    II. लता जी को इस प्रसंग से लगा कि संगीत की सीमा इतनी अनंत है कि तार भी शुद्ध स्वर के आघात को सह नहीं पाता।
    III. लता जी ने इस प्रसंग के बाद तानसेन की कथाओं को पूरी तरह असत्य मान लिया।
    (क) केवल I और II सही हैं
    (ख) केवल II और III सही हैं
    (ग) I, II और III तीनों सही हैं
    (घ) केवल I और III सही हैं

    उत्तरः
    (क) केवल I और II सही हैं

47. रिक्त स्थान भरिए-
    लता मंगेशकर ने अंत में कहा — 'एक बात की मुझे सबसे ज्यादा खुशी है कि मैंने अपने पिताजी का नाम, थोड़ा ही सही मगर, ______।'
    (क) सदा याद रखा (ख) आगे बढ़ाया है
    (ग) गर्व से सम्मानित किया (घ) सबको बताया है

    उत्तरः
    (ख) आगे बढ़ाया है

48. लता मंगेशकर ने 'गाव गेला वाहुन, नाव गेला राहुन' कहावत का उल्लेख किस संदर्भ में किया और इसका क्या आशय है?
    (क) नाव-नदी का रोचक संबंध बताने के लिए; अर्थ है कि नाव और गाँव अलग-अलग दिशाओं में रहते हैं
    (ख) जीवन की नश्वरता और नाम की अमरता बताने के लिए; अर्थ है — शरीर नश्वर है पर अच्छे कर्मों का नाम अमर रहता है
    (ग) महाराष्ट्र की सांस्कृतिक विशेषता बताने के लिए; इसका अर्थ केवल भौगोलिक परिस्थितियों से है।
    (घ) अपनी प्रसिद्धि का विनम्र भाव से वर्णन करने के लिए; इसका सीधा अर्थ है कि मैं हमेशा अमर हूँ।

    उत्तरः
    (ख) जीवन की नश्वरता और नाम की अमरता बताने के लिए; अर्थ है — शरीर नश्वर है पर अच्छे कर्मों का नाम अमर रहता है

49. साक्षात्कार के अंत में लता मंगेशकर ने भगवान से क्या प्रार्थना की?
    (क) आगे भी गाने का और अधिक अवसर मिलता रहे
    (ख) जैसे मुझे छाँह दी, वैसे हर कलाकार और नेक इंसान पर भी कृपा बनाए रखना
    (ग) मेरा संगीत हमेशा के लिए अमर बना रहे
    (घ) पिताजी का नाम संगीत जगत में और आगे फैले

    उत्तरः
    (ख) जैसे मुझे छाँह दी, वैसे हर कलाकार और नेक इंसान पर भी कृपा बनाए रखना

50. इस साक्षात्कार में लता मंगेशकर के व्यक्तित्व की जो छवि उभरती है, उसका सबसे सटीक वर्णन क्या है?
    (क) वे एक महत्त्वाकांक्षी कलाकार थीं जो केवल प्रसिद्धि और धन के लिए गाती थीं
    (ख) वे सादगी, स्वाभिमान और पारिवारिक उत्तरदायित्व से युक्त कलाकार थीं जो संगीत में पूर्णतः समर्पित थीं
    (ग) वे परंपरागत विचारों से बंधी थीं और आधुनिक संगीत को पूरी तरह नकारती थीं
    (घ) वे केवल परिवार के लिए जीती थीं और संगीत उनके लिए केवल आजीविका का साधन था

    उत्तरः
    (ख) वे सादगी, स्वाभिमान और पारिवारिक उत्तरदायित्व से युक्त कलाकार थीं जो संगीत में पूर्णतः समर्पित थीं

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लता मंगेशकर के पिता पं. दीनानाथ मंगेशकर बच्चों को डाँटते कैसे थे?

   उत्तरः
   पिताजी बच्चों की शरारत पर उन्हें सामने खड़ा करके केवल गंभीरता से देखते थे। बिना एक शब्द कहे ही बच्चों का रोना शुरु हो जाता था। वे बस 'समझ गए न?' पूछते और 'जाओ, खेलो' कहकर भेज देते। यही उनका अनूठा अनुशासन था।

2. पं. दीनानाथ मंगेशकर की ड्रामा कंपनी के नाटक देर रात तक क्यों चलते थे?

   उत्तरः
   उनके नाटकों में पाँच-पाँच अंक होते थे और उनमें लंबी-लंबी रागदारी वाले गायन की भी परंपरा थी। नाटक रात नौ बजे शुरु होते और देर रात दो से तीन बजे तक चलते थे।

3. पं. दीनानाथ मंगेशकर ने मराठी रंगमंच में क्या नया योगदान दिया?

   उत्तरः
   वे पहली बार मराठी रंगमंच में कर्नाटक और पंजाब का संगीत लेकर आए। उन्होंने बाकायदा कर्नाटक जाकर वहाँ का गीत और संगीत सीखा और अपने नाटकों में उसे शामिल किया।

4. पिताजी से संगीत के अलावा लता जी ने सबसे महत्त्वपूर्ण क्या सीखा?

   उत्तरः
   लता जी ने पिताजी से स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा सीखी। उन्होंने कभी किसी के आगे हाथ नहीं पसारा। यह संस्कार था कि सही बात पर खड़े रहो, किसी के आगे झुकने की जरुरत नहीं।

5. पं. दीनानाथ मंगेशकर की गायकी की क्या विशेषता गद्यांश में बताई गई है?
(क) वे बहुत धीमी आवाज़ में भावुक होकर गाते थे।
(ख) वे बिना माइक के केवल खुले मैदानों में गाते थे।
(ग) वे माइक पर थोड़ी तेज आवाज़ में मधुर गाते थे।
(घ) वे केवल छोटे-छोटे लोकगीत गाना पसंद करते थे।

उत्तरः
1. (ख) दर्शकों द्वारा गायन से अत्यधिक प्रभावित होने की स्थिति
2. (घ) कथन I और II दोनों ही सही हैं।
3. (ख) गहरा आदर
4. (ख) परिपाटी
5. (ग) वे माइक पर थोड़ी तेज आवाज़ में मधुर गाते थे।

गद्यांश 3

लता मंगेशकर : सबसे ज्यादा तो स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा। उन्होंने जो संस्कार दिए उससे जिंदगी में सही बातों पर खड़े रहने की हिम्मत मिली। आज मुझे इस बात की खुशी है कि मैंने किसी से यह नहीं कहा कि आप मुझे पाँच सौ रुपये दीजिए, फलाँ चीज ला दीजिए, मुझे उसकी जरूरत है। इस तरह जो चीज मैं कर पाई, उसमें मैं अपने बाबा का संस्कार मानती हूँ। मैंने पिताजी में यह बात देखी थी कि हर हालात में कैसे रहना चाहिए। यह मेरे पिताजी ने ही मुझे सिखाया था कि अगर कोई बात तुम्हें सही लगती है, तो उसे करो और किसी के आगे झुकने की जरूरत नहीं है।

1. लता जी के अनुसार जीवन में 'सही बातों पर खड़े रहने की हिम्मत' का मूल स्रोत क्या था?
(क) पिता द्वारा दिए गए नैतिक संस्कार
(ख) उनकी अत्यधिक व्यावसायिक सफलता
(ग) मित्रों से मिलने वाली आर्थिक सहायता
(घ) परिस्थितियों के अनुसार ढलने की कला

2. लता जी के चरित्र को देखते हुए "किसी के आगे झुकने की जरूरत नहीं है" का सर्वोत्तम अर्थ क्या है?
(क) दूसरों के सुझावों को पूर्ण रूप से खारिज कर देना
(ख) सत्य और न्याय के मार्ग पर सदैव अडिग रहना
(ग) समाज के सभी नियमों का कड़ाई से उल्लंघन करना
(घ) आर्थिक रूप से कमजोर लोगों से दूरी बनाए रखना

3. इस पूरे गद्यांश की प्रकृति मुख्यतः किस प्रकार की कही जा सकती है?
(क) संशयात्मक (ख) आत्मनिरीक्षी
(ग) विवरणात्मक (घ) उपहासात्मक

4. गद्यांश में प्रयुक्त 'स्वाभिमान' शब्द किन दो शब्दों की संधि से बना है?
(क) सु + अभिमान (ख) स्व + अभिमान
(ग) स्वा + अभिमान (घ) स्वः + अभिमान

5. गद्यांश के अनुसार लेखिका को आज किस बात की सबसे बड़ी प्रसन्नता है?
(क) उन्होंने बहुत सी प्रसिद्ध फिल्मों में सफल अभिनय किया है।
(ख) उन्होंने कभी किसी के सामने हाथ फैलाकर याचना नहीं की।
(ग) वे अपने समय की सबसे अमीर महिला कलाकार बन सकीं।
(घ) उन्होंने अपने जीवन में किसी भी प्रकार का संकट नहीं देखा।

उत्तरः
1. (क) पिता द्वारा दिए गए नैतिक संस्कार
2. (ख) सत्य और न्याय के मार्ग पर सदैव अडिग रहना
3. (ख) आत्मनिरीक्षी
4. (ख) स्व + अभिमान
5. (ग) उन्होंने कभी किसी के सामने हाथ फैलाकर याचना नहीं की।

गद्यांश 4

लता मंगेशकर : आप मेरी परिस्थितियों के बारे में पूछ रहे हैं, तो सच बात तो यही है कि मुझे रेकॉर्डिंग से या उसकी तकलीफों से इतना फर्क नहीं पड़ता था, जितना इस बात से कि आने वाले कल में मेरे कितने गीत रेकॉर्ड होने हैं। फलाँ फिल्म के खत्म होने के साथ मुझे नए कॉन्ट्रेक्ट की दूसरी नई फिल्मों के गाने कब रेकॉर्ड करने हैं।
यतींद्र मिश्र : बचपन का कोई ऐसा सपना जिसे पूरा करने की हसरत मन में बहुत दिनों तक पलती रही हो?
लता मंगेशकर : ऐसा कोई सपना तो खास नहीं है, मगर आपको बचपन की एक बात बताती हूँ। मेरे पिताजी उस समय जीवित थे और जब वे अपने कार्यक्रमों के लिए तैयार होते थे, तो उनको जितने मेडल मिले थे, वे अपने कपड़ों पर सीने के बाईं तरफ लगाते थे।

1. लता जी का ध्यान रिकॉर्डिंग की तकलीफों के बजाय किस बात पर अधिक केंद्रित रहता था?
(क) अधिक से अधिक आराम के क्षण ढूँढ़ने पर
(ख) भविष्य के कार्यों व गीतों की निरंतरता पर
(ग) अन्य कलाकारों से अधिक मानदेय प्राप्त करने पर
(घ) नई तकनीकों को बहुत जल्दी सीख लेने पर

2. **अभिकथन (A):** लता जी को रिकॉर्डिंग के दौरान होने वाली व्यावहारिक दिक्कतों से विशेष फर्क नहीं पड़ता था।

3. **कारण (R):** वे अपने परिवार के प्रति उत्तरदायित्व निभाने और काम में पूरी तरह डूबी रहती थीं।
(क) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।
(ख) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

गद्यांश 1

लता मंगेशकर : कई बातें हैं। जैसे हम लोग बचपन में जब बहुत शरारत करते थे, तब पिताजी सबको बुलाकर अपने सामने खड़ा करते थे। वे बस हमको गंभीरता से देखते थे और इतने में ही हमारा रोना शुरु हो जाता था। मतलब वे कुछ कहते नहीं थे, न ही किसी बात पर डाँट पड़ती थी; मगर हम सभी समझ जाते थे कि हमको बुलाया किसलिए गया है। पिताजी उस समय पूछते थे, 'समझ गए न?' इस पर हम लोग कहते थे, 'हाँ, हम लोग समझ गए।' इसके बाद वे कहते थे कि 'अच्छा अब जाओ, बाहर जाकर खेलो।' इस तरह हमारे पिताजी का गुस्सा था, जो बिना कुछ कहे ही हम भाई-बहनों को डरा देता था।

1. इस गद्यांश के आधार पर बताइए कि बच्चों के रोने का मुख्य कारण क्या था?
(क) पिताजी की बहुत तेज डाँट-फटकार
(ख) पिताजी की मूक व गंभीर दृष्टि
(ग) खेल से जबरन दूर किए जाने का दुख
(घ) आपस में की गई शरारतों का डर

2. **अभिकथन (A):** पिताजी बिना कुछ कहे ही अपने भाई-बहनों को डरा देते थे।

3. **कारण (R):** उनका गुस्सा मौन रहकर भी गहरा प्रभाव डालने वाला था।
(क) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।
(ख) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
(ग) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

4. इस पूरे प्रसंग में निहित वातावरण या मूड को कौन-सा विकल्प सर्वोत्तम रूप से दर्शाता है?
(क) अत्यधिक क्रूरता (ख) सहज अनुशासन
(ग) गहरा अविश्वास (घ) घोर उदासीनता

5. गद्यांश में प्रयुक्त 'गंभीरता' शब्द का सटीक विलोम शब्द क्या होगा?
(क) चंचलता (ख) महानता
(ग) धीरता (घ) नवीनता

6. पिताजी बच्चों को वापस बाहर जाकर खेलने की अनुमति कब देते थे?
(क) जब बच्चे उनसे माफ़ी माँग लेते थे।
(ख) जब बच्चे अपनी शरारत स्वीकार लेते थे।
(ग) जब बच्चे उनके बुलाने का उद्देश्य समझ जाते थे।
(घ) जब माँ बच्चों के बीच आकर बीच-बचाव करती थी।

उत्तरः
1. (ख) पिताजी की मूक व गंभीर दृष्टि
2. (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
3. (ख) सहज अनुशासन
4. (क) चंचलता
5. (ग) जब बच्चे उनके बुलाने का उद्देश्य समझ जाते थे।

गद्यांश 2

लता मंगेशकर : मेरे पिताजी कमाल के आदमी थे, जिन्हें मैंने हमेशा अपने काम और संगीत में डूबा हुआ ही देखा। उनकी ड्रामा कंपनी के नाटक रात नौ बजे शुरू होते थे और देर रात दो से तीन बजे तक जाकर समाप्त होते थे। इतनी देर एक नाटक में समय इसलिए लगता था कि एक नाटक के पाँच अंक होते थे। फिर उसमें लंबी-लंबी रागदारी वाले गायन की भी परंपरा थी। एक बार पिताजी जब गाना शुरू करते थे, तो खूब सीटियाँ, तालियाँ और 'वन्स मोर' मिलता था। बाबा माइक पर थोड़ी तेज आवाज़ में गाते थे, जो सुनने पर बहुत अच्छा लगता था।

1. 'वन्स मोर' मिलना किस आंतरिक भाव या अर्थ को प्रकट करता है?
(क) दर्शकों द्वारा नाटक को जल्दी समाप्त करने की माँग
(ख) दर्शकों द्वारा गायन से अत्यधिक प्रभावित होने की स्थिति
(ग) नाटक के लंबे अंकों के प्रति दर्शकों का भारी असंतोष
(घ) आधुनिक तकनीकी उपकरणों के प्रयोग की अत्यधिक कमी

2. नाटकों के देर रात दो से तीन बजे तक चलने के संदर्भ में कौन-से कथन सही हैं?
I. नाटक कुल पाँच अंकों के बड़े प्रारूप में बंटे होते थे।
II. नाटकों के बीच लंबी रागदारी वाले गायन की समृद्ध परंपरा थी।
(क) कथन I सही है और II गलत है।
(ख) कथन II सही है और I गलत है।
(ग) कथन I और II दोनों ही गलत हैं।
(घ) कथन I और II दोनों ही सही हैं।

3. इस गद्यांश में लेखिका का अपने पिता के प्रति कौन-सा भाव मुखरित होता है?
(क) अत्यधिक भय (ख) गहरा आदर
(ग) घोर उपेक्षा (घ) तीव्र ईर्ष्या

4. गद्यांश में आए 'परंपरा' शब्द का सर्वाधिक उपयुक्त पर्यायवाची शब्द चुनिए:
(क) आधुनिकता (ख) परिपाटी
(ग) नवीनता (घ) स्वतंत्रता

गद्यांश 6

लता मंगेशकर : ऐसी कोई खास बात मुझे याद नहीं आती। अलबत्ता इतना जरूर कहूँगी कि पचास का दशक रहा होगा, जब मैं फिल्म इंडस्ट्री में नई-नई आई थी और मेरा काम कुछ चल निकलना शुरु हुआ था। उस दौरान मैंने कुछ सालों तक दीवाली के दिन अपने सीनियर म्यूजिक डायरेक्टर्स के यहाँ मिठाई लेकर जाने का चलन शुरु किया था। आप सुनकर हैरान होंगे कि मैं ऐन दीवाली के दिन तड़के पाँच बजे ही नहा-धोकर बहुत सारे संगीतकारों के घर मिठाई लेकर पहुँच जाती थी।

एक बार बड़ा मजेदार वाकया हुआ कि मैं नौशाद साहब के घर सुबह करीब साढ़े पाँच बजे पहुँच गई और जब कॉलबेल बजाया, तो उनींदे से नौशाद साहब मुझे गेट पर खड़ा देखकर डर गए।

1. लता जी द्वारा दीवाली की सुबह वरिष्ठ संगीतकारों के घर जाने से उनके किस गुण का पता चलता है?
(क) अत्यधिक व्यावसायिक चतुरता
(ख) वरिष्ठों के प्रति आदर व कृतज्ञता
(ग) समय प्रबंधन का कड़ा अभाव
(घ) अपनी प्रसिद्धि का अनावश्यक प्रदर्शन

2. **अभिकथन (A):** सुबह साढ़े पाँच बजे कॉलबेल बजने पर नौशाद साहब लता जी को देखकर सहम या डर गए थे।
कारण (R): वे दीवाली के दिन इतनी सुबह किसी के आने की बिल्कुल उम्मीद नहीं कर रहे थे।
(क) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।
(ख) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
(ग) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. नौशाद साहब के घर के इस पूरे प्रसंग की शैली या विधा का रूप क्या है?
(क) संस्मरणात्मक (ख) दार्शनिक
(ग) आलोचनात्मक (घ) कल्पित

4. गद्यांश में आए 'तड़के' शब्द का सर्वाधिक उपयुक्त और शुद्ध अर्थ क्या होगा?
(क) दोपहर के समय (ख) भोर या अत्यंत सुबह
(ग) देर रात के समय (घ) शाम के धुंधलके में

5. लता जी ने संगीतकारों के यहाँ मिठाई ले जाने का सिलसिला कब शुरू किया था?
(क) जब उनके पिता की ड्रामा कंपनी बहुत बड़ी हो गई थी।
(ख) जब तकनीकी रूप से सिनेमा उद्योग बहुत अधिक विकसित हो चुका था।
(ग) जब वे भारत रत्न पुरस्कार से पूरी तरह सम्मानित हो चुकी थीं।
(घ) जब वे फिल्म इंडस्ट्री में नई थीं और काम चलने लगा था।

उत्तरः
1. (ख) वरिष्ठों के प्रति आदर व कृतज्ञता
2. (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
3. (क) संस्मरणात्मक
4. (ख) भोर या अत्यंत सुबह
5. (घ) जब वे फिल्म इंडस्ट्री में नई थीं और काम चलने लगा था।

अध्याय 5

आखिरी चट्टान तक

1. लेखक परिचय

प्रकृति के भव्य और विराट स्वरूप का दर्शन कराने वाले यात्रा-वृत्तांत 'आखिरी चट्टान तक' के रचनाकार मोहन राकेश का जन्म सन् 1925 में अमृतसर, पंजाब में हुआ था। इनका नाम बहुमुखी गद्य-लेखन और मानवीय संवेदनाओं के सूक्ष्म अंकन के लिए स्वर्णाक्षरों में अंकित है। इन्होंने आजीवन अपनी सजीव लेखनी के माध्यम से भौगोलिक तथा सांस्कृतिक सुंदरता और मानव-मन के रोमांच का अद्भुत चित्रण करके हिंदी साहित्य को अलंकृत किया है। अपनी इस सहज, प्रवाहपूर्ण और चित्रात्मक भाषा से इन्होंने हिंदी प्रेमियों को गौरवान्वित किया है। सन् 1972 में इस महान साहित्यकार का निधन हो गया।

2. पाठ-परिचय

'आखिरी चट्टान तक' मोहन राकेश द्वारा रचित एक सजीव यात्रा-वृत्तांत है, जिसमें लेखक ने कन्याकुमारी की अपनी यात्रा के अनुभवों को मनोरम ढंग से प्रस्तुत किया है। अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी के त्रिवेणी संगम पर स्थित इस भूमि की प्राकृतिक भव्यता, सूर्योदय-सूर्यास्त के अद्भुत दृश्य और स्थानीय जन-जीवन की झलकियाँ लेखक की संवेदनशील दृष्टि से जीवंत हो उठती हैं। यह रचना केवल स्थान-चित्रण नहीं, बल्कि लेखक की आत्मिक खोज और मानवीय अनुभूतियों का गहन दस्तावेज़ है।

3. पाठ-सारांश

कन्याकुमारी और त्रिवेणी संगम का दृश्य

यह पाठ मोहन राकेश द्वारा रचित एक सजीव यात्रा-वृत्तांत है, जिसमें उन्होंने भारत के दक्षिणी छोर पर स्थित कन्याकुमारी के अपने अनुभवों को व्यक्त किया है। लेखक केप होटल के पास समुद्र के बीच उभरी स्याह चट्टानों पर खड़े होकर भारत के स्थल-भाग की आखिरी चट्टान को निहारते हैं। पृष्ठभूमि में कन्याकुमारी मंदिर की लाल और सफेद लकीरें चमक रही हैं।

अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी के इस पावन मिलन-स्थल पर स्थित चट्टान हर तरफ से पानी की मार सह रही है। यह वही ऐतिहासिक चट्टान है, जहाँ कभी स्वामी विवेकानंद ने समाधि लगाई थी। हिंद महासागर की ऊँची लहरें चट्टानों से टकराकर पानी की जालीदार बूँदें बनाती हैं, जिसे देखकर लेखक प्रकृति की असीम शक्ति के विस्तार को महसूस करते हैं।

सैंड हिल की यात्रा और सूर्यास्त का रोमांच

पच्छिमी क्षितिज पर सूर्य को नीचे उतरता देख लेखक सूर्यास्त का नज़ारा लेने के लिए पीली रेत के एक ऊँचे टीले की ओर बढ़ते हैं, जिसे 'सैंड हिल' कहा जाता है। वहाँ पर्यटकों की रंगीन टोलियाँ एकत्रित हैं।

परंतु अरब सागर के विस्तार को पूरी तरह देखने की चाह में लेखक सैंड हिल पर न रुककर आगे और ऊँचे टीलों की ओर अकेले ही चल पड़ते हैं। थकती टाँगों के बावजूद उनका मन हार नहीं मानता और कई टीले पार करने के बाद वे अंततः सबसे ऊँचे टीले पर पहुँचकर खुले क्षितिज को देख पाते हैं।

रंग बदलती प्रकृति और अँधेरे का भय

टीले पर बैठकर लेखक देखते हैं कि तेज़ हवा के कारण नारियल के झुरमुटों की टहनियाँ ऊपर की ओर उठ रही हैं और सुनहली किरणें पीली रेत को एक अद्भुत रंग से चमका रही हैं। जैसे ही सूर्य का गोला पानी की सतह को छूता है, पानी पर सोने जैसी चमक बिखर जाती है।

क्षण-क्षण बदलते रंगों के बीच सूर्य पानी में डूब जाता है और कुछ ही पलों में दृश्य स्याह होकर गहरा काला पड़ जाता है। पूरे दृश्य पर अँधेरा छा जाने पर लेखक के मन में रेत के टीलों में भटक जाने का भय समा जाता है। वे तुरंत निर्णय लेकर रेत पर फिसलते हुए नीचे समुद्र तट के रास्ते की ओर उतर जाते हैं।

तट की जादुई रेत और बढ़ता खतरा

तट पर पहुँचकर लेखक वहाँ की रेत के अद्भुत और अनाम रंगों को देखकर दंग रह जाते हैं। यहाँ की रेत में काली घटा और घनी लाल आँधी जैसे न जाने कितने सम्मिश्रण एक-एक इंच पर अपनी अलग झलक दिखा रहे थे। लेखक उदास मन से आगे बढ़ते हैं कि काश वे इस रेत को अपने पास सहेज पाते।

तभी समुद्र में पानी बढ़ने लगता है और तट की चौड़ाई महज़ तीन-चार फुट रह जाती है। पानी से घिरने के खतरे को भाँपकर लेखक जूता हाथ में लेकर तेजी से दौड़ने लगते हैं और रास्ते में एक ऊँची चट्टान से टकराकर खरोंच खा जाते

हैं। किसी तरह चट्टान के ऊपर चढ़ने के बाद जब वे दूसरी ओर देखते हैं, तो उनका डर एक मज़ाक में बदल जाता है, क्योंकि उस तरफ सौ फुट का खुला फैलाव था जहाँ लोग टहल रहे थे और सड़क पर जाने का सीधा रास्ता बना हुआ था।

विवेकानंद चट्टान पर अगला सूर्योदय और स्थानीय जीवन

अगली सुबह लेखक मल्लाहों की मदद से एक छोटी मछुआ नाव द्वारा समुद्र के बीच स्थित 'विवेकानंद चट्टान' पर पहुँचते हैं। चट्टान पर उनके साथ तीन स्थानीय नवयुवक भी बैठे हैं, जिनमें से एक पढ़ा-लिपि ग्रेजुएट है।

वह नवयुवक लेखक को बताता है कि कन्याकुमारी की आठ हज़ार की आबादी में सैकड़ों शिक्षित युवा पूरी तरह बेकार हैं, जिनका मुख्य काम केवल नौकरियों के लिए अर्जियाँ देना है। वे युवा जीवन बसर करने के लिए सीपियों का गूदा खाते हैं और फोटो-एल्बम या शंख-मालाएँ बेचने जैसे छोटे-मोटे काम करते हैं। इसी बातचीत के बीच समुद्र की ओट से शानदार सूर्योदय होता है और लेखक वापस लौटने के लिए बसों का टाइम-टेबल दोहराने लगते हैं।

4. कठिन शब्दार्थ

पृष्ठ 85

1. भूमि – धरती, ज़मीन
2. स्याह/सियाह – काला, श्याम
3. चट्टान – शिला
4. पृष्ठभूमि – पहले की बातें, पीछे की भूमि या पीछे का दृश्य
5. संगम-स्थल – मिलन की जगह, नदियों या सागरों का मिलाप
6. समाधिस्थ/समाधि – समाधि में स्थित, मनोयोग, तपस्या
7. बलखाती – टेढ़ी-मेढ़ी, चक्कर खाती हुई
8. चेतना – बुद्धि-विवेक से काम लेना, सावधान होना, होश में आना
9. विस्तार – फैलाव, व्यापकता
10. क्षितिज – वह स्थान जहाँ धरती और आकाश मिलते हुए दिखाई देते हैं, दृष्टि-सीमा
11. अपेक्षाया (अपेक्षरया) – तुलना में, बनिस्बत
12. छोर – किनारा, अंतिम सीमा
13. सिहरन – कंपन, सिहरने की क्रिया
14. उमड़ते – उमड़ना, तेजी से बढ़ना
15. सुरक्षित – हिफ़ाज़त से, संकट रहित
16. तट-रेखा – समुद्र किनारे की सीमा रेखा
17. टीला – बालू या मिट्टी का ऊँचा ढेर
18. टोलियाँ – समूह, मंडलियाँ
19. सैंड हिल – बालू का टीला
20. स्थिर – टिका हुआ, गतिहीन
21. ओट – आड़, रोक, शरण, परदे के लिए बनाई गई दीवार

पृष्ठ 86

22. कैनवस – पृष्ठभूमि का परदा, चित्रपट
23. कदमों – पैरों, डगों
24. ढलान – नीचे की ओर झुकाव, उतार
25. सार्थकता – अर्थपूर्ण होना, उपयोगिता, सफलता
26. चोटी – शिखर, सबसे ऊँचा भाग
27. सर किया – जीतना, फतह करना
28. झुरमुट – समूह, मंडली, पास-पास उगे पेड़ या झाड़ जिनकी जलियाँ मिलकर कुंज-सा बना रही हों
29. टहनियाँ – डालियाँ, शाखाएँ
30. श्रृंखला – कतार, लड़ी, सिलसिला
31. रूखी – नीरस, सूखी
32. बीहड़ – ऊबड़-खाबड़, विकट, विभक्त
33. वीरान – उजाड़, निर्जन

पृष्ठ 87

34. सतह – ऊपरी भाग, तल
35. उड़ेला – डालना, गिराना
36. क्षण – पल, बहुत थोड़ा समय
37. असंभव – जो मुमकिन न हो, कठिन
38. बेबसी – लाचारी, विवशता
39. लावे – पिघला हुआ गर्म पदार्थ
40. लहू – रक्त, खून
41. बैज़नी – बैंगनी रंग का, एक रंग
42. दृश्यपट – नजारा, दृश्य का पर्दा
43. स्याही – कालापन, अँधेरा
44. सिर धुनना – शोक, पश्चाताप आदि के वेग से सिर पीटना, मातम करना, पछताना
45. भींचता – कसना, दबाना
46. कँपकँपी – थरथराहट, सिहरन
47. आकृतियों – बनावटों, शक्लों
48. भटकता – रास्ता भूलना, गुमराह होना
49. निश्चित – तय, बिना किसी शक के
50. निर्णय – फ़ैसला, निश्चय
51. सुरमई – हल्का नीला, सुरमे के रंग का
52. अनाम – बिना नाम का, अज्ञात
53. सम्मिश्रण – मिलावट, कई चीज़ों का मेल

पृष्ठ 88

54. मसलकर – कुचलकर, दबाकर
55. बटोरूँगा – इकट्ठा करना, समेटना
56. सहसा – अचानक, एकाएक
57. लपेट – घेरा, प्रभाव क्षेत्र
58. संभालने – नियंत्रित करना, रोकना
59. खरोंच – हल्की चोट का निशान
60. अपेक्षा – तुलना में, बजाय
61. फैलाव – विस्तार, फैले होने की अवस्था

पृष्ठ 89

62. लॉन – घास का मैदान, हरी दूब का घेरा
63. मद्धिम/मद्धम – मध्यम, कम अच्छा, मंदा
64. भौगोलिक – भूगोल से संबंधित, प्राकृतिक बनावट की
65. मल्लाह – केवट, नाव चलाने वाला
66. महुआ/महुवा – एक प्रसिद्ध पेड़ जिसके फूल, पत्ते खाने और लकड़ी ईंधन तथा इमारती काम में आती है
67. स्थगित – रोका हुआ, कुछ समय के लिए बंद
68. चेष्टा – कोशिश, प्रयास
69. उदासीनता – विरक्ति, बेपरवाही का भाव
70. ढक – छिपाना, परदा डालना
71. धंधा – रोज़गार, व्यवसाय
72. अर्जियाँ – प्रार्थना-पत्र, आवेदन
73. सीपियाँ/सीपी/सीप – शंख, घोंघे आदि की जाति का एक जलचर प्राणी जिसका शरीर किश्तीनुमा दोहरे खोल के भीतर छिपा होता है और जिसके समुद्र में पाए जाने वाले प्रकार के अंदर मोती पैदा होता है, कड़ा खोल जिसके बटन आदि बनाते हैं
74. दार्शनिक – दर्शनशास्त्र का जानकार, तत्ववेत्ता
75. अर्घ्य – पूजनीय, पूजा में देने योग्य वस्तु, एक प्रकार का मधु
76. एकत्रित – इकट्ठा हुए, जमा
77. बाइनाक्यूलर्ज/बाइनाक्यूलर – दूरबीन, द्विनेत्री

पृष्ठ 90

78. बे-लाग – खरा, दो टूक (बात)
79. कडल-काक – पक्षियों की एक प्रजाति
80. मंडली – समूह, टोली
81. टाइम-टेबल – समय-सारणी

5. पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. लेखक ने सूर्यास्त का मनोहारी दृश्य कहाँ से देखा?
(क) विवेकानंद चट्टान से
(ख) अरब सागर की ओर के ऊँचे टीले से
(ग) पच्छिमी क्षितिज से
(घ) सैंड हिल से

उत्तरः
(ख) अरब सागर की ओर के ऊँचे टीले से
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि लेखक सैंड हिल पर रुककर संतुष्ट नहीं हुआ। वहाँ से अरब सागर की तरफ एक ऊँचा टीला था जो पश्चिमी विस्तार को ओट में लिए था। इसलिए लेखक एक के बाद एक कई टीले पार करते हुए उस टीले तक पहुँचा जहाँ से पश्चिमी क्षितिज का खुला विस्तार दिखाई दिया और वहीं से उसने सूर्यास्त का पूरा दृश्य देखा।

2. "मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं ही हूँ।" यह कथन लेखक की किस मनःस्थिति को दर्शाता है?
(क) मौन हो जाना
(ख) विस्मित हो जाना
(ग) भ्रमित हो जाना
(घ) आशंकित होना

उत्तरः
(ख) विस्मित हो जाना
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि जब लेखक तीनों ओर के क्षितिज को आँखों में समेट रहा था — तीनों तरफ से क्षितिज तक पानी-ही-पानी, हिंद महासागर की विशालता, चट्टानों से टकराती लहरें — तो वह इस भव्य प्राकृतिक दृश्य से इतना विस्मित हो गया कि उसे अपने अस्तित्व का भी बोध नहीं रहा। यह विस्मय की चरम अवस्था थी, न मौन, न भ्रम, न आशंका।

3. "मैंने, सिर्फ मैंने उस चोटी को पहली बार सर किया हो।" इस कथन में कौन-सा भाव व्यक्त होता है?
(क) करुणा
(ख) विनम्रता
(ग) आत्मीयता
(घ) संतुष्टि

उत्तरः
(घ) संतुष्टि
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि लेखक ने टाँगें थकी होने के बावजूद एक के बाद एक कई टीले पार किए और अंततः वह टीला खोज लिया जहाँ से पश्चिमी क्षितिज का खुला विस्तार दिखाई देता था। जब वह वहाँ पहुँचा और बैठ गया तो उसे अपने प्रयत्न की सार्थकता से गहरी संतुष्टि और उपलब्धि का भाव मिला — जैसे संसार की सबसे ऊँची चोटी को उसने अकेले सर किया हो।

4. "शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति" वाक्य में वर्णन है—
(क) बलखाती लहरों का
(ख) सागर की व्यापकता का
(ग) सूर्यास्त के दृश्य का
(घ) पच्छिमी क्षितिज का

उत्तरः
(ख) सागर की व्यापकता का
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि यह वाक्य उस क्षण कहा गया है जब लेखक तीनों तरफ से क्षितिज तक फैले पानी-ही-पानी को देख रहा था। अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी के इस त्रिवेणी संगम पर जल की विशालता और

उसकी शक्ति का जो अनुभव लेखक को हुआ, वही "शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति" में व्यक्त हुआ है।

5. लेखक की कन्याकुमारी की यात्रा का वर्णन पढ़कर कहा जा सकता है कि—
(क) यह कन्याकुमारी के मौसम को प्रमुखता से वर्णित करता है।
(ख) यह यात्रा को जीवंत अनुभूतियों से जोड़ता है।
(ग) यह केवल यात्रा के रोमांच पर केंद्रित है।
(घ) इसमें कन्याकुमारी का काल्पनिक वर्णन मिलता है।

उत्तरः
(ख) यह यात्रा को जीवंत अनुभूतियों से जोड़ता है।
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि मोहन राकेश का यह यात्रा-वृत्तांत केवल स्थान-चित्रण नहीं है। लेखक ने समुद्र की विशालता, सूर्योदय-सूर्यास्त के बदलते रंग, रेत की अनूठी छटाएँ, स्थानीय लोगों का जीवन और अपने मन में उठने वाले विस्मय, भय, रोमांच, उदासी और आत्मिक अनुभूतियों को एक साथ व्यक्त किया है। यह यात्रा को जीवंत अनुभूतियों से जोड़ता है।

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. यात्रियों का समूह सूर्यास्त का दृश्य देखने के लिए सैंड हिल की ओर बढ़ता जा रहा था लेकिन लेखक सैंड हिल पर पहुँचकर कुछ देर रुकने के बाद दूसरे टीले की ओर बढ़ने लगा। उसके ऐसा करने के पीछे मूल कारण क्या था?

उत्तरः
लेखक के सैंड हिल से आगे बढ़ने के पीछे मूल कारण उसकी पूर्णता की तलाश और जिज्ञासु प्रवृत्ति थी।

जब लेखक सैंड हिल पर पहुँचा, तो वहाँ से पूरा पश्चिमी विस्तार दिखाई तो दे रहा था, परंतु अरब सागर की तरफ एक और ऊँचा टीला था जो उधर के विस्तार को ओट में लिए था। लेखक चाहता था कि सूर्यास्त का दृश्य पूरे विस्तार की पृष्ठभूमि में देखा जाए।

इसके साथ ही लेखक स्वभाव से खोजी था। वह भीड़ के साथ चलने की बजाय अपना मार्ग स वयं खोजना चाहता था। सैंड हिल पर अनेक लोग थे — नवयुवतियाँ, नवयुवक, सरकारी मेहमान। उस भीड़ में वह "एक रंगहीन बिंदु" था। वह वहाँ अधिक देर नहीं रुक सका और एकांत में पूरे विस्तार को देखने के लिए आगे बढ़ गया।

2. लेखक ने कन्याकुमारी के स्थानीय लोगों के विषय में क्या-क्या बताया?

उत्तरः
लेखक ने कन्याकुमारी के स्थानीय लोगों के विषय में निम्नलिखित बातें बताईं:

1. **बेरोजगारी की समस्या**: कन्याकुमारी की आठ हजार की आबादी में कम-से-कम चार-पाँच सौ शिक्षित नवयुवक बेकार थे। उनमें से लगभग सौ ग्रेजुएट थे। उनका मुख्य धंधा था नौकरियों के लिए अर्जियाँ देना और बैठकर बहस करना।
2. **छोटे-मोटे काम**: जो ग्रेजुएट युवक लेखक से बात कर रहा था, वह वहाँ फोटो-एलबम बेचता था। दूसरे नवयुवक भी उसी तरह के छोटे-मोटे काम करते थे।
3. **दार्शनिक प्रवृत्ति**: उस नवयुवक ने व्यंग्य से कहा — "हम लोग सीपियों का गूदा खाते हैं और दार्शनिक सिद्धांतों पर बहस करते हैं।"
4. **चट्टान से प्रेरणा**: युवक ने बताया — "इस चट्टान से इतनी प्रेरणा तो हमें मिलती ही है।"
5. **स्थानीय नवयुवतियाँ**: दो स्थानीय नवयुवतियाँ सरकारी मेहमानों को अपनी टोकरियों से शंख और मालाएँ दिखला रही थीं।
6. **मल्लाह**: चार मल्लाह जो रबड़ के पेड़ के तीन तनों को जोड़कर बनाई गई छोटी-सी मछुआ नाव में यात्रियों को विवेकानंद चट्टान तक ले जाते थे।

3. "अपने प्रयत्न की सार्थकता से संतुष्ट होकर मैं टीले पर बैठ गया" इस पंक्ति में 'प्रयत्न की सार्थकता' से क्या अभिप्राय है?

उत्तरः
इस पंक्ति में 'प्रयत्न की सार्थकता' से अभिप्राय उस गहरी संतुष्टि से है जो लेखक को तब मिली जब उसे अपनी परिश्रम और दृढ़ता का फल प्राप्त हुआ।

लेखक सैंड हिल से आगे निकलकर एक-एक टीला पार करता गया। टाँगें थक रही थीं, रेत पर अकेले चलना कठिन था, पर मन थकने को तैयार नहीं था। हर अगले टीले पर लगता था कि अभी एक और टीला है। इस लगातार संघर्ष और आशा के बाद जब वह एक टीले पर पहुँचा और वहाँ से वास्तव में पश्चिमी क्षितिज का खुला विस्तार दिखाई दिया, तब उसे लगा कि उसकी मेहनत व्यर्थ नहीं गई।

वह इतना प्रसन्न था जैसे उसने संसार की सबसे ऊँची चोटी को पहली बार सर किया हो। यही 'प्रयत्न की सार्थकता' है — कठिन मार्ग पर चलकर जब लक्ष्य प्राप्त होता है, तो उस सफलता का आनंद अद्वितीय होता है।

4. यात्रा-वृत्तांत में आए उन दृश्यों के विषय में लिखिए जिनका अनुभव लेखक के लिए बिल्कुल नया था।

उत्तरः
यात्रा-वृत्तांत में लेखक के लिए निम्नलिखित अनुभव बिल्कुल नए थे:

1. **तीन सागरों का संगम-स्थल**: अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी के त्रिवेणी संगम पर खड़े होने का अनुभव। तीनों तरफ से क्षितिज तक पानी-ही-पानी — यह दृश्य लेखक के लिए अभूतपूर्व था।

जीवन मछली और समुद्र से जुड़ा है जबकि हमारे यहाँ कृषि और पशुपालन प्रमुख है।

4. इस यात्रा-वृत्तांत में कन्याकुमारी में स्थित चट्टान को आखिरी चट्टान कहा गया है। पुस्तकालय या अन्य स्रोतों तथा समाज विज्ञान के अपने शिक्षक से बातचीत करके पता लगाइए कि वर्तमान समय में भारत का अंतिम छोर (दक्षिणतम बिंदु) किसे माना जाता है। उस स्थान के विषय में लिखिए।

उत्तरः

वर्तमान समय में भारत के दक्षिणतम बिंदु के बारे में : भारत भूखंड का दक्षिणतम छोर: कन्याकुमारी (केप कोमोरिन) को भारत के मुख्य भूखंड का दक्षिणतम बिंदु माना जाता है। यह 8°04'41" उत्तरी अक्षांश पर स्थित है।

भारत का वास्तविक दक्षिणतम बिंदु : यदि भारत के सभी द्वीपों को शामिल किया जाए, तो इंदिरा पॉइंट (ग्रेट निकोबार द्वीप पर स्थित) भारत का सबसे दक्षिणी बिंदु है। यह भूमध्य रेखा से केवल 894 किलोमीटर दूर है।

विवेकानंद चट्टान का महत्व : यह चट्टान तट से लगभग 100-125 गज दूर समुद्र के बीच में है। यहीं स्वामी विवेकानंद ने 1892 में तीन दिन तक ध्यान किया था और इसके बाद शिकागो धर्म-महासभा में भाषण देने गए थे। 1970 में यहाँ विवेकानंद रॉक मेमोरियल का निर्माण हुआ।

5. इंटरनेट या अन्य किन्हीं माध्यमों से पता लगाइए कि आखिरी चट्टान में वर्णित कन्याकुमारी के विवेकानंद स्मारक चट्टान के स्वरुप में किस प्रकार का विस्तार हुआ है?
(संकेत– तिरुवल्लुवर की प्रतिमा इत्यादि)

उत्तरः

मोहन राकेश के समय से अब तक विवेकानंद चट्टान और उसके आस-पास का विकास:

1. **विवेकानंद रॉक मेमोरियल (1970)**: एकनाथ रानडे के नेतृत्व में यह स्मारक 1970 में बनकर तैयार हुआ। इसमें 'श्रीपाद मंडपम्' (जहाँ देवी के पदचिह्न हैं) और 'विवेकानंद मंडपम्' (जहाँ स्वामी जी की मूर्ति है) दोनों हैं।
2. **तिरुवल्लुवर की प्रतिमा**: विवेकानंद चट्टान के पास ही एक अन्य चट्टान पर महान तमिल कवि और दार्शनिक तिरुवल्लुवर की विशाल प्रतिमा स्थापित की गई है। यह 133 फुट ऊँची है और 38 फुट के आधार पर खड़ी है (कुल 183 फुट)। इसका निर्माण 1999 में पूर्ण हुआ। 133 फुट की ऊँचाई 'तिरुक्कुरल' के 133 अध्यायों का प्रतीक है।
3. **नौका सेवा का विकास**: अब यात्री फेरी बोट से विवेकानंद चट्टान तक आसानी से जा सकते हैं।

हस्तशिल्प कौशल



"दो स्थानीय नवयुवतियाँ उन्हें अपनी टोकरीयों में शंख-मालाएँ दिखला रही थीं।"

उपर्युक्त पंक्ति में स्थानीय युवतियों द्वारा यात्रियों को दिखाए जाने वाली शंख-मालाओं का उल्लेख है। यह भारतीय हस्तकला उद्योग के एक पारंपरिक रूप को दर्शाता है, जहाँ स्थानीय कारीगर घरेलू स्तर पर उत्पाद बनाते और बेचते हैं। शिक्षक की सहायता से हस्तकला और कुटीर उद्योग के विषय में जानकारी एकत्रित कीजिए।

1. किसी भी स्थानीय शिल्पकार से बात करके निम्नलिखित बिंदुओं पर जानकारी संगृहीत कीजिए। यह कार्य दो-दो के जोड़े में कीजिए—



- शिल्प का नाम
- यह कार्य कब से कर रहे हैं?
- इसका प्रशिक्षण कहाँ से लिया?
- शिल्प निर्माण में घर की महिलाओं की साझेदारी
- प्रयुक्त सामग्री, तकनीक, लागत और विपणन
- औपचारिक संस्थागत प्रशिक्षण

उत्तरः

यह गतिविधि स्थानीय शिल्पकार से बात करके करनी है। नीचे एक नमूना दिया गया है।

स्थानीय शिल्पकार से बातचीत — नीला कुम्हार (राजस्थान)

1. **शिल्प का नाम**: ब्लू पॉटरी (नीली मिट्टी के बर्तन)
2. **यह कार्य कब से कर रहे हैं**: पिछले 30 वर्षों से, पिता से सीखी यह कला।
3. **इसका प्रशिक्षण कहाँ से लिया**: परिवार की पारंपरिक विधा, साथ ही सरकारी प्रशिक्षण केंद्र से।

उत्तरः

यात्रा-वृत्तांत	स्थान	रचनाकार
किन्नर देश में	हिमाचल प्रदेश में स्थित किन्नौर	राहुल सांकृत्यायन
मेरी तिब्बत यात्रा	तिब्बत	राहुल सांकृत्यायन
आखिरी चट्टान तक	कन्याकुमारी, तमिलनाडु	मोहन राकेश
एक बूँद सहसा उछली	यूरोप	अज्ञेय
चीड़ों पर चाँदनी	कश्मीर-यूरोप	निर्मल वर्मा
अर्द्धनारीश्वर	हिमालय यात्रा	विष्णु प्रभाकर
यात्री	विभिन्न स्थान	सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

मेरे देश की धरती

कन्याकुमारी भारत के तमिलनाडु राज्य में स्थित एक तटीय शहर है जिसके प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण पाठ में हुआ है।

1. भारत के समुद्री तट पर स्थित अन्य राज्यों के नाम तथा उनकी अवस्थिति को भारत के मानचित्र पर चिह्नित कीजिए।

उत्तरः
भारत के समुद्री तट पर स्थित राज्यः भारत की समुद्र तट रेखा लगभग 7,516 किलोमीटर लंबी है। इस पर निम्नलिखित राज्य और केंद्र शासित प्रदेश स्थित हैं:

पश्चिमी तट (अरब सागर):
1. गुजरात – उत्तर-पश्चिम में
2. महाराष्ट्र – मध्य-पश्चिम में
3. गोवा – मध्य-पश्चिम में
4. कर्नाटक – दक्षिण-पश्चिम में
5. केरल – दक्षिण-पश्चिम में

पूर्वी तट (बंगाल की खाड़ी):
1. पश्चिम बंगाल – उत्तर-पूर्व में
2. ओडिशा – पूर्व में
3. आंध्र प्रदेश – पूर्व में
4. तमिलनाडु – दक्षिण-पूर्व में

केंद्र शासित प्रदेश:
1. लक्षद्वीप – अरब सागर में
2. अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह – बंगाल की खाड़ी में
3. दादरा और नगर हवेली – पश्चिमी तट
4. दमण और दीव – पश्चिमी तट
5. पुडुचेरी – पूर्वी व पश्चिमी दोनों तटों पर

(विद्यार्थी मानचित्र में इन्हें चिह्नित करें)

2. यात्रा करना सभी को अच्छा लगता है। आपके मन में भी कुछ जगहों को देखने की इच्छा अवश्य हुई होगी। अपनी पसंद की उन जगहों की सूची नीचे दिए गए शीर्षकों के अनुसार बनाइए।

पर्यटन स्थल	राज्य जहाँ वह स्थित है	पर्वतीय/ समुद्री/ मैदानी/ अन्य क्षेत्र	जलवायु	घूमने का अनुकूल समय

उत्तरः

पर्यटन स्थल	राज्य जहाँ वह स्थित है	पर्वतीय/ समुद्री/ मैदानी/ अन्य क्षेत्र	जलवायु	घूमने का अनुकूल समय
कन्याकुमारी	तमिलनाडु	समुद्री	उष्णकटिबंधीय	अक्टूबर-फरवरी
मनाली	हिमाचल प्रदेश	पर्वतीय	शीतल	मई-जून, सितंबर
जैसलमेर	राजस्थान	मरुस्थलीय	शुष्क	नवंबर-फरवरी
अंडमान	केंद्र शासित प्रदेश	द्वीपीय/ समुद्री	उष्णकटिबंधीय	नवंबर-मई
वाराणसी	उत्तर प्रदेश	मैदानी	समशीतोष्ण	अक्टूबर-मार्च

3. कन्याकुमारी की भौगोलिक स्थिति, परिवेश, महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल एवं जन-जीवन का वर्णन करते हुए बताइए कि वहाँ की स्थिति आपके राज्य अथवा शहर/गाँव से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तरः
कन्याकुमारी की भौगोलिक स्थितिः कन्याकुमारी भारत के तमिलनाडु राज्य में स्थित भारत के सबसे दक्षिणी छोर पर है। यह वह स्थान है जहाँ तीन जलराशियाँ – अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी – मिलती हैं।

महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलः
1. विवेकानंद रॉक मेमोरियल – समुद्र के बीच स्थित चट्टान पर बना स्मारक।
2. कन्याकुमारी देवी मंदिर – श्रद्धालुओं का प्रमुख केंद्र।
3. तिरुवल्लुवर की विशाल प्रतिमा।
4. गाँधी स्मारक।
5. सूर्योदय और सूर्यास्त का दृश्य – यहाँ एक ही स्थान से सूर्योदय और सूर्यास्त दोनों देखे जा सकते हैं।

जन-जीवन : मछुआरे, पर्यटन से जुड़े व्यापारी, शंख-माला बेचने वाली स्थानीय महिलाएँ। शिक्षित होने के बावजूद बेरोजगारी एक बड़ी समस्या है।

अपने राज्य/शहर से भिन्नता : हमारे राजस्थान में कोई समुद्र तट नहीं है। यहाँ की जलवायु शुष्क और रेतीली है जबकि कन्याकुमारी में आर्द्र और उष्णकटिबंधीय। वहाँ के लोगों का

2. **झुरमुट (अर्थ**: पास-पास उगे पेड़ या झाड़ जिनकी डालियाँ मिलकर कुंज-सा बनाती हों)
   पीछे दाईं तरफ दूर-दूर हटकर नारियलों के झुरमुट नजर आ रहे थे।
   नया वाक्य: नदी किनारे आम के झुरमुट में पक्षी घोंसले बनाते हैं।
3. **ढलान (अर्थ**: नीचे की ओर झुकी हुई सतह)
   दूर तक एक रेत की लंबी ढलान थी।
   नया वाक्य: पहाड़ की ढलान पर बर्फ फिसलती हुई नीचे आ गई।
4. **शृंखला (अर्थ**: क्रमबद्ध कड़ियों का सिलसिला, माला)
   पच्छिमी तट के साथ-साथ सूखी पहाड़ियों की एक श्रृंखला दूर तक चली गई थी।
   नया वाक्य: हिमालय पर्वत-श्रृंखला भारत की उत्तरी सीमा पर फैली है।
5. **बीहड़ (अर्थ**: ऊबड़-खाबड़, विकट, जंगली स्थान)
   सामने फैली रेत के कारण बहुत रुखी, बीहड़ और वीरान लग रही थी।
   नया वाक्य: चंबल के बीहड़ में एक जमाने में डाकुओं का डेरा रहता था।

गतिविधियाँ

1. कल्पना कीजिए कि आप अपने परिवार के साथ कहीं घूमने गए हैं। वहाँ आपकी भेंट एक ऐसे यात्री से होती है जिसे आपकी सहायता की आवश्यकता है लेकिन आप दोनों एक-दूसरे की भाषा से अपरिचित हैं। ऐसे में उस अनजान यात्री की सहायता आप कैसे करेंगे?

   उत्तरः
   भाषा की बाधा होने पर अनजान यात्री की सहायता के उपाय:
   1. **संकेत भाषा (इशारे)**: हाथों के इशारे से दिशा बताना, दूरी दिखाना।
   2. **चित्र और नक्शे**: कागज पर रास्ता बनाकर दिखाना या मोबाइल के नक्शे पर उँगली से दिखाना।
   3. **अनुवाद ऐप**: जैसे ऐप से उनकी भाषा में संवाद।
   4. **सार्वभौमिक संकेत**: "हाँ", "नहीं" के लिए सिर हिलाना।
   5. **किसी द्विभाषी व्यक्ति को ढूँढना**: स्थानीय पुलिस, पर्यटन केंद्र या होटल में मदद माँगना।
   6. **धैर्य और मुस्कान**: व्यक्ति को यह एहसास दिलाना कि आप मदद करना चाहते हैं।

2. पधारो म्हारे देश
   अपने क्षेत्र के महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों की एक सूची बनाइए और उनकी विशेषताओं को ध्यान में रखकर एक विवरणिका (ब्रॉशर) तैयार कीजिए।

   उत्तरः
   विवरणिका — राजस्थान: रंगों और विरासत की धरती

   जयपुर — गुलाबी शहर:
   आमेर किला, हवामहल, जंतर-मंतर (विरासत), सिटी पैलेस। सर्वोत्तम समय: अक्टूबर-मार्च। खानपान: दाल-बाटी-चूरमा, घेवर।
   जैसलमेर — सोने का शहर:
   जैसलमेर किला, पटवों की हवेली, सैम रेत के टीले। सर्वोत्तम समय: नवंबर-फरवरी। विशेषता: ऊँट-सफारी, थार रेगिस्तान।
   उदयपुर — झीलों का शहर:
   पिछोला झील, सिटी पैलेस, सहेलियों की बाड़ी। सर्वोत्तम समय: सितंबर-मार्च।
   पुष्कर — ब्रह्मा की नगरी:
   ब्रह्मा मंदिर, पुष्कर झील, ऊँट मेला (नवंबर)।

भाषा संगम

1. "ऊँची-ऊँची लहरों से बचाते हुए मल्लाह <u>नाव</u> को ला रहे थे"



   'नाव' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची आगे दी गई है।
   नाव (हिंदी); नौ, नौका (संस्कृत); बेड़ी (पंजाबी); किश्ती, नाव (उर्दू); नाव (कश्मीरी); बेड़ी, किश्ती (सिंधी); होड़ी, नाव (मराठी); नाव, होडी (गुजराती); बहड़ी (कोंकणी); नाउ, नौका, डुङ्गा (नेपाली); नाओ, नौका (बांग्ला); नाओ (असमिया); हि (मणिपुरी); नौका, नाआ (ओड़िआ); पडव, नाव (तेलुगू); ओडम् (तमिल); तोणि (मलयालम); दोणि (कन्नड़)।
   - इनके अतिरिक्त यदि आप 'नाव' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
   - उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

   उत्तरः
   - अतिरिक्त भाषाओं में 'नाव':
     1. अंग्रेज़ी में: Boat/Ship
     2. फ्रेंच में: Bateau
   - उपर्युक्त वाक्य मातृभाषा (राजस्थानी) में:
     "ऊँची-ऊँची लहरां सूँ बचावता थकां मल्लाह नाव ने लावता रह्या।"

4. **शिल्प निर्माण में घर की महिलाओं की साझेदारी**: रंगाई और डिज़ाइन में महिलाएँ सक्रिय भूमिका निभाती हैं।
5. **प्रयुक्त सामग्री**: क्वार्ट्ज पत्थर, पाउडर ग्लास, बोरेक्स, नीला रंग।
6. **औपचारिक संस्थागत प्रशिक्षण**: राजस्थान लघु उद्योग निगम से प्रशिक्षण।

2. डिजिटल खरीददारी और ई-वाणिज्य कुटीर उद्योग को बढ़ावा देने में किस प्रकार उपयोगी है?

उत्तरः

डिजिटल खरीददारी और ई-वाणिज्य के कुटीर उद्योग पर प्रभाव:

1. **बाज़ार का विस्तार**: Amazon, Flipkart, Etsy जैसे प्लेटफॉर्म के माध्यम से कुटीर उद्योग के उत्पाद देश-विदेश में बिक सकते हैं।
2. **बिचौलियों का उन्मूलन**: शिल्पकार सीधे ग्राहकों को सामान बेच सकते हैं जिससे उनकी आय बढ़ती है।
3. **GI टैग और ब्रांडिंग**: डिजिटल माध्यम से भौगोलिक संकेत उत्पादों को वैश्विक पहचान मिलती है।
4. **सरकारी योजनाएँ**: एक जिला एक उत्पाद' और 'वोकल फॉर लोकल' जैसी योजनाओं के तहत डिजिटल प्लेटफॉर्म पर स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा मिल रहा है।

3. हस्तशिल्प कला को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों की जानकारी इकट्ठा कीजिए। और अपनी कक्षा में उस पर चर्चा कीजिए।

उत्तरः

सरकार द्वारा हस्तशिल्प को बढ़ावा देने के प्रयास:

1. **राष्ट्रीय हस्तशिल्प विकास कार्यक्रम**: शिल्पकारों को वित्तीय सहायता, कच्चा माल और प्रशिक्षण।
2. **GI Tag (भौगोलिक संकेत)**: विशेष क्षेत्रों की शिल्पकला को कानूनी संरक्षण।
3. **राष्ट्रीय हस्तशिल्प मेले**: सूरजकुंड मेला, दिल्ली हाट जैसे आयोजन।
4. **ई-मार्केटप्लेस**: 'जेम' (सरकारी ई-मार्केटप्लेस) पर हस्तशिल्प उत्पादों की बिक्री।
5. **शिल्प कार्ड**: शिल्पकारों को पहचान पत्र और बीमा सुविधा।
6. **TRIFED**: आदिवासी शिल्पकारों के उत्पादों के लिए विपणन सहायता।

मिलकर चलें

आपकी कक्षा में कुछ विशेष आवश्यकता वाले साथी भी होंगे जिन्हें अपने दैनिक जीवन में अनेक तरह की समस्याओं से जूझना पड़ता होगा।

1. ऐसे साथियों को अगर किसी यात्रा पर जाना हो तो उनके समक्ष किस प्रकार की चुनौतियाँ आ सकती हैं?

उत्तरः

विशेष आवश्यकता वाले साथियों की यात्रा संबंधी चुनौतियाँ:

1. **परिवहन**: बसों, ट्रेनों में व्हीलचेयर के लिए उचित जगह न होना। सीढ़ियाँ चढ़ने-उतरने में कठिनाई।
2. **दृष्टिबाधित साथियों के लिए**: रास्ता पहचानना कठिन, नए स्थान पर भटकने का डर।
3. **श्रवण बाधित साथियों के लिए**: घोषणाएँ सुनाई न देना, दिशा-निर्देश समझने में कठिनाई।
4. **आवास**: होटलों में व्हीलचेयर-अनुकूल कमरे और शौचालय का अभाव।
5. **पर्यटन स्थल**: ऐतिहासिक स्थानों में रैम्प का अभाव।

2. उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर कुछ ऐसे सुझाव दीजिए जो उनकी यात्रा को सहज बनाने में उपयोगी हों।

उत्तरः

1. **पूर्व योजना**: यात्रा से पहले सुलभ परिवहन और आवास की व्यवस्था सुनिश्चित करें।
2. **साथी की उपस्थिति**: हमेशा एक सहायक साथी साथ रखें।
3. **एप्स का उपयोग**: दृष्टिबाधितों के लिए नेविगेशन ऐप, श्रवण बाधितों के लिए ट्रांसक्रिप्शन ऐप।
4. **सुलभ पर्यटन स्थल चुनें**: जहाँ रैम्प, लिफ्ट और विशेष शौचालय की सुविधा हो।
5. **आपातकालीन संपर्क**: विशेष सहायता के लिए स्थानीय आपातकालीन नंबर साथ रखें।

3. अपने द्वारा दिए गए सुझावों पर विद्यालय के विशेष शिक्षा शिक्षक के साथ चर्चा कीजिए और समझिए कि आपके द्वारा सुझाए गए उपाय कितने प्रभावी हैं तथा उनमें और क्या बदलाव किए जा सकते हैं?

उत्तरः

विद्यालय के विशेष शिक्षा शिक्षक के साथ चर्चा करने पर पता चला कि दिए गए सुझाव विशेष आवश्यकता वाले साथियों की यात्रा को अधिक सुरक्षित और सुविधाजनक बना सकते हैं। जैसे— व्हीलचेयर की व्यवस्था, रैंप, सहायक व्यक्ति, संकेत चिह्न और आरामदायक वाहन आदि उपाय काफी प्रभावी हैं।

शिक्षक ने यह भी सुझाव दिया कि यात्रा से पहले स्थान की पूरी जानकारी लेनी चाहिए, आवश्यक दवाइयाँ साथ रखनी चाहिए तथा सभी साथियों को संवेदनशील और सहयोगी व्यवहार के लिए प्रेरित करना चाहिए। इसके अतिरिक्त, श्रवण या दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए विशेष उपकरण और स्पष्ट निर्देशों की व्यवस्था भी की जा सकती है।

2. **सूर्यास्त के बदलते रंग**: सूर्य के पानी में डूबने के साथ रंगों का इतनी तेजी से बदलना — पहले सोना, फिर लहू, फिर बैंजनी, फिर काला — इतनी तेजी से बदलते रंगों को किसी एक क्षण में एक नाम देना असंभव था।
3. **तट की रंगीन रेत**: "जैसे रंग उस रेत में थे, वैसे मैंने पहले कभी कहीं की रेत में नहीं देखे थे।" सुरमई, खाकी, पीली, लाल और न जाने कितने अनाम रंग — एक-एक इंच पर अलग-अलग रंग।
4. **विस्मय से स्वयं का बोध खो देना**: "मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं हूँ" — प्रकृति की विशालता में स्वयं का एक हिस्सा बन जाने का यह अनुभव लेखक के लिए बिल्कुल नया था।
5. **रात के अँधेरे में समुद्र तट पर एकाकी भटकाव**: बढ़ते पानी, अँधेरे और रेत के टीलों के बीच फँसने और फिर सुरक्षित रास्ता खोजने का रोमांचक अनुभव।

5. यात्रा-वृत्तांत से ऐसे दो अंश चुनकर लिखिए जिससे लेखक की मानसिक दृढ़ता और हार न मानने की प्रवृत्ति का पता चलता है।

उत्तरः

1. **टीले पार करने का अंश** : "टाँगें थक रही थीं पर मन थकने को तैयार नहीं था। हर अगले टीले पर पहुँचने पर लगता कि शायद अब एक ही टीला और है, उस पर पहुँचकर पश्चिमी क्षितिज का खुला विस्तार अवश्य नजर आएगा।"

   यह अंश दिखाता है कि शारीरिक थकान के बावजूद लेखक का मन हार मानने को तैयार नहीं था। वह बार-बार निराश होने के बावजूद आगे बढ़ता रहा।
2. **चट्टान पार करने का अंश** : "मैं चट्टान की नोकों पर पैर रखता किसी तरह उसके ऊपर पहुँच गया।"

   यह अंश दिखाता है कि रात के अँधेरे में, बढ़ते पानी के खतरे के बावजूद, जब आगे जाने का रास्ता बंद लग रहा था, तब भी लेखक ने हिम्मत नहीं हारी और चट्टान की नोकों पर पैर रखकर ऊपर पहुँचने का साहस दिखाया।

विधा से संवाद

यात्रा का वृत्तांत

1. मोहन राकेश का 'आखिरी चट्टान तक' यात्रा-वृत्तांत केवल स्थान-चित्रण नहीं है बल्कि इसमें प्रकृति का सजीव रुपांकन, मानव-जीवन और समाज की झलक तथा आत्मानुभूति का गहरा समन्वय मिलता है।
   नीचे यात्रा-वृत्तांत के प्रमुख तत्वों/विशेषताओं को कुछ प्रमुख बिंदुओं के माध्यम से दर्शाया गया है। इन्हें पढ़कर यात्रा-वृत्तांत की रचना-प्रक्रिया को समझने का प्रयास कीजिए। अपनी किसी यात्रा को इन बिंदुओं के माध्यम से समझाइए।



उत्तरः

यात्रा: जयपुर से अजमेर (पुष्कर) की यात्रा

1. **दृश्य-वर्णन**: पुष्कर झील का नीला जल, चारों ओर पहाड़ियाँ, ऊँटों की कतारें, रंग-बिरंगे मेले की दुकानें, ब्रह्मा मंदिर का सफेद शिखर।
2. **आत्मानुभूति व भावनाएँ**: झील के किनारे बैठकर एक अजीब शांति का अनुभव हुआ। भीड़ में होते हुए भी एक अकेलेपन का एहसास। मन में प्रश्न — यह भीड़ यहाँ क्या खोजने आती है?
3. **सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य**: पुष्कर मेला भारत की धार्मिक परंपरा का प्रतीक है। विभिन्न राज्यों से आए श्रद्धालु, ऊँट-मेला, स्थानीय हस्तशिल्प।
4. **जीवन-दर्शन**: झील में डूबता सूरज यह याद दिलाता है कि सब कुछ क्षणभंगुर है — सौंदर्य भी, समय भी।
5. **शैलीगत विशेषताएँ**: बाजार की आवाजें, ऊँटों की घंटियों की ध्वनि, हवा में मिठाइयों की महक — सभी ज्ञानेंद्रियों का अनुभव।
6. **रोमांच व संघर्ष**: संकरी गलियों में भीड़ में खो जाने का डर, पर स्थानीय लोगों की मदद से रास्ता मिल जाना।

विषयों से संवाद

यात्रा और खोज

1. संसार में बहुत से लोगों ने लंबी-लंबी यात्राएँ की हैं और अपनी यात्रा से अर्जित ज्ञान और अनुभव से समाज को समृद्ध किया है। पुस्तकालय एवं शिक्षक की सहायता से कुछ महत्वपूर्ण यात्रा-वृत्तांत और उनके लेखकों के विषय में जानकारी एकत्रित कीजिए और लिखिए। आपकी सहायता के लिए एक संकेत नीचे दिया गया है।

यात्रा-वृत्तांत	स्थान	रचनाकार
किन्नर देश में	हिमाचल प्रदेश में स्थित किन्नौर	राहुल सांकृत्यायन

उत्तरः

ऐसी अप्रत्याशित परिस्थितियों से निपटने के लिए निम्नलिखित गुण आवश्यक हैं:

1. **साहस**: डर को दिखावटी उदासीनता से ढककर आगे बढ़ने की क्षमता।
2. **त्वरित निर्णय शक्ति**: खतरे में तुरंत सही निर्णय लेना — जैसे लेखक ने रेत के टीलों की बजाय समुद्र तट से जाने का निर्णय किया।
3. **धैर्य**: घबराहट में गलत कदम उठाने की बजाय शांत रहना।
4. **परिस्थिति का आकलन**: आस-पास के वातावरण को ध्यान से देखकर सुरक्षित रास्ता खोजना।
5. **शारीरिक फुर्ती**: आवश्यकता पड़ने पर दौड़ना, कूदना, चट्टान पर चढ़ना।

3. यदि आपके पास भी कोई ऐसा अनुभव हो तो उसे अपने सहपाठियों के साथ साझा कीजिए।

उत्तरः

मेरा अनुभव

एक बार मैं अपने परिवार के साथ पहाड़ी क्षेत्र की यात्रा पर गया था। अचानक तेज बारिश शुरु हो गई और रास्ता फिसलन भरा हो गया। हम सभी ने सावधानी रखी और एक-दूसरे की मदद करते हुए सुरक्षित स्थान तक पहुँचे। इस अनुभव से मैंने सीखा कि यात्रा में हमेशा सतर्क रहना चाहिए।

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

क्रिया-विशेषण की पहचान और रेखांकन

“समुद्र में पानी बढ़ रहा था। तट की चौड़ाई धीरे-धीरे कम होती जा रही थी।”

उपर्युक्त वाक्य में रेखांकित पद ‘धीरे-धीरे’ कम होना क्रिया की विशेषता बता रहा है। यहाँ कम होने की क्रिया धीमी गति से हो रही है।

जिस प्रकार संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द ‘विशेषण’ कहलाते हैं, उसी प्रकार क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द ‘क्रिया-विशेषण’ कहलाते हैं। इस वाक्य में ‘धीरे-धीरे’ पद व्याकरणिक दृष्टि से क्रिया-विशेषण है।

नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़कर उनमें क्रिया-विशेषण पदों की पहचान कीजिए तथा दिए गए उदाहरण के अनुसार लिखिए।

वाक्य

(क) बल खाती लहरें रास्ते की नुकीली चट्टानों से टकराती हुई आती थीं।

(ख) यात्रियों की कितनी ही टोलियाँ उस दिशा में जा रही थीं।

(ग) मैं दूर तक भारत के स्थल-भाग की आखिरी चट्टान को देखता रहा।

उदाहरण–

वाक्य	क्रिया-विशेषण	क्रिया, जिसकी विशेषता बताई जा रही है
मैं जल्दी-जल्दी चलने लगा।	जल्दी-जल्दी	चलने लगा' क्रिया की विशेषता

उत्तरः

	वाक्य	क्रिया-विशेषण	क्रिया, जिसकी विशेषता बताई जा रही है
	मैं जल्दी-जल्दी चलने लगा।	जल्दी-जल्दी	चलने लगा' क्रिया की विशेषता
(क)	बल खाती लहरें रास्ते की नुकीली चट्टानों से कटती हुई आती थीं।	कटती हुई (क्रियाविशेषण वाक्यांश)	आती' क्रिया की विशेषता
(ख)	यात्रियों की कितनी ही टोलियाँ उस दिशा में जा रही थीं।	उस दिशा में	जा रही थीं' क्रिया की विशेषता
(ग)	मैं देर तक भारत के स्थल-भाग की आखिरी चट्टान को देखता रहा।	देर तक	देखता रहा' क्रिया की विशेषता

आओ नए वाक्य बनाएँ

1. पाठ से चुनकर कुछ वाक्य नीचे तालिका में दिए गए हैं। इन वाक्यों में रेखांकित शब्दों का अर्थ बताते हुए उनसे नए वाक्य बनाइए।

वाक्य

1. तीनों तरफ से क्षितिज तक पानी-पानी था।
2. पीछे दाईं तरफ दूर-दूर होकर नारियलों के झुरमुट नजर आ रहे थे।
3. दूर तक फूटे रेत की लंबी ढलान थी।
4. पश्चिमी तट के साथ-साथ सूखी पहाड़ियों की एक श्रृंखला दूर तक चली गई थी।
5. सामने फैली रेत के कारण बहुत रुखी, बीहड़ और वीरान लग रही थी।

उत्तरः

1. **क्षितिज (अर्थ**: वह स्थान जहाँ धरती और आकाश मिलते हुए दिखाई देते हैं)
तीनों तरफ से क्षितिज तक पानी-पानी था।
नया वाक्यः नाविक ने क्षितिज की ओर देखा और तूफान आने का अनुमान लगाया।

4. प्राप्त सुझावों के विषय में कक्षा के विशेष आवश्यकता वाले साथियों से भी चर्चा कीजिए और उनकी राय जानने का प्रयास कीजिए।

उत्तरः
कक्षा के विशेष आवश्यकता वाले साथियों से चर्चा करने पर उन्होंने बताया कि यात्रा के दौरान सबसे अधिक आवश्यकता सहयोग, धैर्य और समझदारी की होती है। उन्होंने रैंप, व्हीलचेयर, स्पष्ट संकेत, आरामदायक वाहन और सहायक व्यक्ति की व्यवस्था को उपयोगी बताया।

कुछ साथियों ने यह भी सुझाव दिया कि यात्रा स्थल पर शौचालय, बैठने की सुविधा और सुरक्षित रास्तों की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। उनकी राय से यह समझ में आया कि यदि सभी लोग संवेदनशील और सहयोगी व्यवहार करें, तो यात्रा सभी के लिए सरल और आनंददायक बन सकती है।

सृजन

प्रकृति की ओर

1. क्या आपने कभी सूर्योदय और सूर्यास्त के समय का दृश्य देखा है? अगर नहीं तो एक दिन सुबह जल्दी उठकर उगते सूरज की लालिमा को देखिए और अस्त होते सूर्य के साथ शाम का भी आनंद लीजिए। अब इन दोनों दृश्यों की तुलना करते हुए अपने अनुभव का वर्णन कीजिए।

उत्तरः
सूर्योदय और सूर्यास्त — एक तुलनात्मक अनुभव
सूर्योदय : सुबह पाँच बजे उठा/उठी। पहले आकाश में एक हल्की लालिमा, फिर नारंगी-सुनहरी आभा। धीरे-धीरे सूर्य का गोला क्षितिज से ऊपर उठने लगा। चिड़ियों की चहचहाहट, ठंडी ओस की बूँदें, खेतों पर पड़ती पहली किरणें। इस दृश्य में एक ताज़गी थी, एक नई शुरुआत का एहसास।
सूर्यास्त : शाम छह बजे टेरेस पर गया/गई। सूरज पश्चिम की ओर झुकता जा रहा था। आकाश नारंगी से लाल, फिर बैंगनी और अंततः गहरे नीले रंग में बदल गया। इस दृश्य में एक उदासी थी, एक दिन के अंत होने का भाव।
तुलना : सूर्योदय में ऊर्जा है, उत्साह है, नई शुरुआत है। सूर्यास्त में शांति है, विश्राम है, पूर्णता का बोध है। दोनों में रंगों का खेल अद्भुत है, पर एक जागृति का है और दूसरा विश्रांति का। मोहन राकेश ने सूर्यास्त के रंगों का जो वर्णन किया है — सोना, फिर लहू, फिर बैंगनी — वह पढ़ने के बाद मेरे अपने अनुभव को एक नई भाषा मिल गई।

अनुभव की साझेदारी

1. विधा से संवाद के अंतर्गत आपने दिए गए बिंदुओं के माध्यम से यात्रा-वृत्तांत के प्रमुख तत्वों के विषय में जाना और समझा। इन तत्वों को ध्यान में रखकर आप भी अपने घूमे हुए किसी प्रिय स्थान के अनुभव पर एक यात्रा-संस्मरण लिखिए।

उत्तरः
जैसलमेर की रेत में
दृश्य-वर्णनः सुनहरी रेत का अनंत विस्तार, जैसलमेर का सोनार किला जो दूर से सोने की तरह चमकता है, ऊँटों की कतारें, रेत के टीलों पर उगते-डूबते सूरज के रंग।
आत्मानुभूतिः जब पहली बार रेत के टीले पर चढ़ा/चढ़ी और चारों तरफ रेत-ही-रेत दिखी, तो एक अजीब-सी शांति और अकेलेपन का एहसास हुआ। लगा जैसे समय रुक गया हो।
सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यः स्थानीय कलाकारों की मांड-गायकी, राजपूत वास्तुकला का वैभव, हवेलियों में नक्काशी — सब मिलकर एक अलग ही दुनिया बनाते हैं।
जीवन-दर्शनः रेत में डूबते सूरज को देखकर याद आया — जो आज सुनहरा है, वह कल यादों में बदल जाएगा। सौंदर्य क्षणभंगुर है, पर उसकी छाप स्थायी।
रोमांच व संघर्षः ऊँट-सवारी में संतुलन बनाना, रात के कैंप में ठंड सहना — ये चुनौतियाँ ही यात्रा को यादगार बनाती हैं।

चर्चा-परिचर्चा

1. 'यात्राएँ हमें समृद्ध करती हैं' विषय पर कक्षा में एक परिचर्चा आयोजित कीजिए।

उत्तरः
यह कक्षा-गतिविधि है। नीचे चर्चा के लिए बिंदु दिए गए हैं:
पक्ष में तर्कः
1. यात्राएँ नए लोगों, संस्कृतियों और परंपराओं से परिचित कराती हैं।
2. प्रकृति की विशालता और विविधता का प्रत्यक्ष अनुभव होता है।
3. अपरिचित स्थानों में समस्याएँ सुलझाने की क्षमता बढ़ती है।
4. भारत के विभिन्न भागों को जानने से राष्ट्रीय एकता की भावना मजबूत होती है।

नकारात्मक पक्षः
1. बिना तैयारी और जागरूकता के यात्रा खतरनाक हो सकती है।
2. पर्यटन से पर्यावरण को नुकसान।

निष्कर्षः सुनियोजित, जागरूक और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील यात्राएँ हमेशा समृद्ध करती हैं।

2. "एक लहर ने घेरों को भिगो गई तो सहसा मुझे खतरे का एहसास हुआ।"
यात्रा के दौरान कई बार ऐसी अप्रत्याशित चुनौतियाँ सामने आ जाती हैं। ऐसी किसी स्थिति का सामना करने के लिए व्यक्ति में किन गुणों का होना आवश्यक है? अपने सहपाठियों के साथ मिलकर इस विषय पर चर्चा कीजिए।

झरोखे से

1. आपने 'आखिरी चट्टान तक' रचना पढ़ी जो दक्षिण भारत की यात्रा पर आधारित है। आइए, अब पढ़ते हैं हिंदी के प्रसिद्ध रचनाकार निर्मल वर्मा का कुंभ मेले पर आधारित यात्रा-वृत्तांत का एक अंश—

प्रयाग : 1976

"मुँह अँधेरे सीटी सुनाई देती है— घनी नींद से सुराख बनाती हुई। एक क्षण पता नहीं चलता, मैं कहाँ हूँ, किस जगह हूँ, कौन-सा समय है? आँखें खुलती हैं, तो ठोस-सा अँधेरा गटागट पीने लगती हैं, जैसे मुँह की प्यास आँखें बुझा रही हों। याद आता है मेरे नीचे मेरा स्लीपिंग बैग है, मेरी यात्राओं और यातनाओं को ढोता हुआ मैं सोया गया हूँ— लेकिन मेरी समूची देह गरमाई के घेरे में सो रही है।

कुछ देर बाद आँखें अँधेरे में टोहती हुई एक-एक चीज पर ठहर जाती हैं— किताब, तिपाई, लालटेन, फूस का अधखुला दरवाजा, हवा में सरसराती छत। बाहर एक फुसफुसाता हुआ शोर है— रेंगती हुई आवाजों का रेला— जैसे हजारों पैर रेत को यथापथ करते हुए चल रहे हों। मैं हड़बड़ाकर अपना स्लीपिंग बैग समेटता हूँ। हाथों में रेत, मिट्टी, फूस के पत्तों को ठेलता हुआ दरवाजा खोलता हूँ, तो ठिठका-सा रह जाता।

चाँद दिखाई देता है। पूर्णिमा का पूरा चाँद, इलाहाबाद के किले पर ठहरा हुआ। पिछली रात उसे गंगा के भीतर देखा था— एक सफेद परछाई, एक झिलमिलाता-सा स्वप्न— अब सम्पूर्ण रात की यात्रा में थका हुआ वह किले के माथे पर चिपका था, एक गोल, सफेद, मुलायम बिंदी जिसे सिर्फ एक अँगुली से पोंछा जा सकता था।

"आप जाग गए?"

सच्चे महाराज का चौकीदार मुझे देखकर कुछ हैरान-सा हो जाता है। दरअसल जब से मैं आया हूँ, वह मुझे पर हैरान है। वह उन्नीस-बीस वर्ष का युवक, जो शायद बचपन से ही आश्रम में बस गया था। मैं जहाँ कहीं भी होता हूँ, वह अपनी फैली फटी-फटी आँखों से मुझे निहारता है— मैं कहूँ हूँ, यह वह नहीं समझ पाता, न मैं तीर्थयात्री लगता हूँ, न कल्पवासी— मैं उसे आधा हिप्पी, आधा जिप्सी- सा दिखाई देता हूँ— जो अपने पाप-पुण्यों को एक हल्के बैग में समेटकर कुंभ मेले में भटकता है।

"आप भी स्नान जाएँगे?"

उससे संदेह से मेरी ओर देखा।

"हाँ, इसलिए आया हूँ," मैंने कहा। "यह सीटी कौन बजा रहा है?"

"पुलिस" उसने कहा। "यात्रियों को रास्ता दिखाना पड़ता है— बेचारे अँधेरे में भटक जाते हैं।"

दबी छुपी आवाज़ें, नींद के कुछ परिवासी चेहरे और भरी चाँदनी पर उठती हैं, क्षीण बड़े-नगाड़ों का काँपता स्वर हवा में बहुत दूर तक रिसता रहता है। मैं पंप को ढूँढ़ता हुआ आश्रम का चक्कर लगाता हूँ। लगता है सब सो रहे हैं। हवा में खाली झोंपड़ों के दरवाजे सरसराते हैं, खुलते हैं, बंद हो जाते हैं। सब कुटियों से अलग सच्चे महाराज की यज्ञशाला दिखाई देती है— पीले फूल के मंडप, एक छत पर दूसरी छत— जैसे कोई जापानी पैगोडा चाँदनी में चमक रहा हो।

कुंभ मेले के वृत्तांत का यह अंश आपको रोचक लगा? अब इस यात्रा-वृत्तांत को इंटरनेट, पुस्तकालय से ढूँढ़कर पूरा पढ़िए।

उत्तरः

कुंभ मेले का यात्रा-वृत्तांत

निर्मल वर्मा के इस यात्रा-वृत्तांत अंश की तुलना मोहन राकेश के 'आखिरी चट्टान तक' से:

पहलू	**मोहन राकेश (आखिरी चट्टान तक)**	**निर्मल वर्मा (प्रयाग: 1976)**
स्थान	कन्याकुमारी, समुद्र तट	प्रयागराज, गंगा तट
समय	दिन	अर्द्धरात्रि से भोर
प्रकृति-वर्णन	समुद्र, चट्टानें, सूर्यास्त के रंग	चाँदनी, ठंडी रात, नदी तट
भाव	विस्मय, रोमांच, संघर्ष	नींद और जागरण के बीच का अनुभव
भाषा-शैली	चित्रात्मक, ऊर्जापूर्ण	काव्यात्मक, सूक्ष्म

खोजबीन

1. इस यात्रा-वृत्तांत में उल्लिखित 'आखिरी चट्टान' को 'विवेकानंद चट्टान' के नाम से भी जाना जाता है। युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत के रूप में विवेकानंद के जन्मदिवस 12 जनवरी को भारत में 'राष्ट्रीय युवा दिवस' तथा 'राष्ट्रीय युवा सप्ताह' के रूप में मनाया जाता है। राष्ट्रीय युवा सप्ताह के एक हिस्से के रूप में भारत सरकार द्वारा प्रत्येक वर्ष 'राष्ट्रीय युवा महोत्सव' का आयोजन किया जाता है। विवेकानंद के जीवन, लेखन और सामाजिक कार्यों के विषय में पुस्तकालय और इंटरनेट से खोजकर पढ़िए और कक्षा में चर्चा कीजिए। कुछ लिंक नीचे दिए गए हैं।
स्वामी विवेकानंद — युवाओं के लिए सच्चे आदर्श और मार्गदर्शक
स्वामी विवेकानंद — आध्यात्मिक वैज्ञानिक : प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार

उत्तरः

स्वामी विवेकानंद (1863-1902) के बारे में प्रमुख तथ्य:

जीवनः

जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में। मूल नाम नरेंद्रनाथ दत्त। रामकृष्ण परमहंस के शिष्य। 1892 में कन्याकुमारी की चट्टान पर ध्यान के बाद शिकागो जाने का निर्णय किया।

(ख) जैसे वह बहुत थक गया हो और अब घर जाना चाहता हो
(ग) जैसे उसने कोई बड़ी गलती की हो और पछता रहा हो
(घ) जैसे वह पूरी तरह अकेला और उदास हो गया हो

उत्तरः
(क) जैसे वह टीला संसार की सबसे ऊँची चोटी हो और उसने उसे पहली बार सर किया हो

23. टीले के पीछे दाईं तरफ लेखक को क्या नजर आया?
(क) दूर-दूर हटकर उगे नारियलों के झुरमुट
(ख) सूखी पहाड़ियों की एक लंबी श्रृंखला
(ग) पीली रेत का लंबा मैदान
(घ) समुद्र के पानी में डूबती नावें

उत्तरः
(क) दूर-दूर हटकर उगे नारियलों के झुरमुट

24. रिक्त स्थान भरिए —
"सूर्य का गोला पानी की सतह से ________ गया।"
(क) मिल (ख) छू
(ग) उठ (घ) डूब

उत्तरः
(ख) छू

25. सूर्यास्त के समय पानी पर पहले सोना, फिर कौन-सा रंग छा गया?
(क) बादल के जैसा नीला और फिर काला
(ख) पीला और सफेद
(ग) लहू जैसा लाल, फिर बैंजनी और काला
(घ) हरा और नारंगी

उत्तरः
(ग) लहू जैसा लाल, फिर बैंजनी और काला

26. **अभिकथन (A):** सूर्यास्त के बाद लेखक का पूरा दृश्यपट स्याह हो गया।
कारण (R): नारियलों के झुरमुट स्याह पड़कर सिर धुनते और हाथ-पैर पटकते लग रहे थे।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है

उत्तरः
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है

27. अँधेरा होने पर लेखक ने वापस लौटने के लिए कौन-सा रास्ता चुना?
(क) रेत के टीलों से होते हुए सैंड हिल की तरफ
(ख) नारियलों के झुरमुट से होकर सड़क तक
(ग) नीचे समुद्र तट पर उतरकर केप होटल की तरफ
(घ) पहाड़ियों की श्रृंखला से होते हुए मंदिर तक

उत्तरः
(ग) नीचे समुद्र तट पर उतरकर केप होटल की तरफ

28. समुद्र तट पर लेखक ने पहले कौन-कौन से रंगों की रेत देखी थी?
(क) सफेद, पीली, हरी और नीली
(ख) सुरमई, खाकी, पीली और लाल
(ग) काली, भूरी, सफेद और नारंगी
(घ) भूरी, पीली, हरी और बैंजनी

उत्तरः
(ख) सुरमई, खाकी, पीली और लाल

29. रिक्त स्थान भरिए —
"मन था कि किसी तरह हर रंग की थोड़ी-थोड़ी रेत अपने पास ________।"
(क) बटोरूँ (ख) रख लूँ
(ग) देखूँ (घ) छू लूँ

उत्तरः
(ख) रख लूँ

30. समुद्र में पानी बढ़ने पर लेखक के पैर को किसने भिगोया और उसे खतरे का एहसास हुआ?
(क) एक ऊँची लहर ने (ख) बारिश की बूँदों ने
(ग) एक लहर ने (घ) समुद्री हवा ने

उत्तरः
(ग) एक लहर ने

31. खतरा बढ़ने पर लेखक ने क्या किया?
(क) वह चट्टान पर चढ़ गया और वहीं पर रुक गया
(ख) उसने जूता उतारकर हाथ में लिया और दौड़ने लगा
(ग) उसने मदद के लिए जोर से आवाज लगाई
(घ) वह रेत पर बैठकर लहरों का इंतजार करने लगा

उत्तरः
(ख) उसने जूता उतारकर हाथ में लिया और दौड़ने लगा

32. **अभिकथन (A):** लेखक ऊँची चट्टान से टकरा गया।
कारण (R): वह लहरों से बचकर इतनी तेज दौड़ रहा था कि वक्त पर अपने को संभाल नहीं सका।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है

उत्तरः
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है

12. जब लेखक को होश आया तो उसने क्या देखा?
(क) उसकी चट्टान बढ़ते पानी में काफी घिर गई है
(ख) सूर्य पूरी तरह से समुद्र के पानी में डूब चुका है।
(ग) उसके साथ आए सभी साथी उसे छोड़कर चले गए हैं।
(घ) समुद्र की भयानक लहरें अब बहुत शांत हो गई हैं।
उत्तरः
(क) उसकी चट्टान बढ़ते पानी में काफी घिर गई है

13. लेखक सूर्यास्त देखने के लिए किस दिशा में चलने लगा?
(क) पूर्वी क्षितिज की दिशा में
(ख) उत्तरी तट की दिशा में
(ग) पश्चिमी क्षितिज की दिशा में
(घ) दक्षिणी समुद्र की दिशा में
उत्तरः
(ग) पश्चिमी क्षितिज की दिशा में

14. पश्चिमी तट-रेखा के एक मोड़ पर लेखक को क्या नजर आया?
(क) एक विशाल चट्टान
(ख) पीली रेत का एक ऊँचा टीला
(ग) एक छोटा-सा मंदिर
(घ) नारियलों का घना जंगल
उत्तरः
(ख) पीली रेत का एक ऊँचा टीला

15. 'सैंड हिल' पर कितनी नवयुवतियाँ और नवयुवक थे?
(क) पाँच नवयुवतियाँ और आठ नवयुवक
(ख) दस नवयुवतियाँ और पाँच नवयुवक
(ग) आठ-दस नवयुवतियाँ और छह-सात नवयुवक
(घ) छह नवयुवतियाँ और दस नवयुवक
उत्तरः
(ग) आठ-दस नवयुवतियाँ और छह-सात नवयुवक

16. सैंड हिल पर गवर्नमेंट गेस्ट हाउस के बैरे लोगों को क्या पिला रहे थे?
(क) चाय (ख) नारियल पानी
(ग) शरबत (घ) कॉफी
उत्तरः
(घ) कॉफी

17. कन्याकुमारी का सूर्यास्त देखने के लिए नवयुवतियों ने क्या पहना था?
(क) सूती साड़ियाँ (ख) सुंदर रंगों का रेशम
(ग) ऊनी शॉल (घ) रंगीन लहँगे
उत्तरः
(ख) सुंदर रंगों का रेशम

18. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'सैंड हिल' के वर्णन के संदर्भ में सही है?
I. सैंड हिल पर गाँधी टोपियोंवाले दो-तीन व्यक्ति थे।
II. हवा समुद्र की तरह नवयुवतियों के रेशम में लहरें पैदा कर रही थी।
III. लेखक सैंड हिल पर ज्यादा देर स्थिर नहीं रह सका।
(क) केवल कथन I और II सही हैं
(ख) केवल कथन II और III सही हैं
(ग) केवल कथन I और III सही हैं
(घ) तीनों कथन सही हैं
उत्तरः
(घ) तीनों कथन सही हैं

19. लेखक सैंड हिल से आगे क्यों बढ़ता रहा?
(क) वह मंदिर तक पहुँचना चाहता था
(ख) वह सूर्यास्त पूरे विस्तार की पृष्ठभूमि में देखना चाहता था
(ग) वह नारियल के झुरमुट देखना चाहता था
(घ) वह समुद्र तट पर उतरना चाहता था
उत्तरः
(ख) वह सूर्यास्त पूरे विस्तार की पृष्ठभूमि में देखना चाहता था

20. **अभिकथन (A):** लेखक एक के बाद एक कई टीले पार करता रहा।
कारण (R): टाँगें थक रही थीं पर मन थकने को तैयार नहीं था।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है
उत्तरः
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है

21. रेत पर लंबा सफर तय करने के बाद अंत में लेखक को क्या दिखाई दिया?
(क) एक विशाल मंदिर का शिखर
(ख) खुला विस्तार और रेत की लंबी ढलान
(ग) गहरा नीला समुद्र और ऊँची लहरें
(घ) नारियलों का घना झुरमुट और हरा मैदान
उत्तरः
(ख) खुला विस्तार और रेत की लंबी ढलान

22. अंतिम टीले पर पहुँचकर बैठते समय लेखक के मन में कैसी भावना थी?
(क) जैसे वह टीला संसार की सबसे ऊँची चोटी हो और उसने उसे पहली बार सर किया हो

43. सूर्योदय के समय घाट पर लोग किस उद्देश्य से एकत्रित थे?
(क) सूर्योदय का दृश्य देखने और फोटो खींचने के लिए
(ख) उगते सूर्य को अर्घ्य देने के लिए
(ग) मंदिर में पूजा करने जाने के लिए
(घ) समुद्री स्नान करने के लिए

उत्तरः
(ख) उगते सूर्य को अर्घ्य देने के लिए

44. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन-समूह सूर्योदय के दृश्य के संदर्भ में सही है?

I. पानी और आकाश में तरह-तरह के रंग झिलमिलाकर सूर्य उदित हो रहा था।

II. दो स्थानीय नवयुवतियाँ टोकरियों से शंख और मालाएँ दिखला रही थीं।

III. सरकारी मेहमानों को गेस्ट हाउस के बैरे सूर्योदय की कॉफी पिला रहे थे।

(क) केवल I सही है
(ख) केवल I और II सही हैं
(ग) केवल II और III सही हैं
(घ) तीनों कथन सही हैं

उत्तरः
(घ) तीनों कथन सही हैं

45. लेखक के साथी ग्रेजुएट नवयुवक ने चट्टान के बारे में क्या कहा?
(क) "इस चट्टान से हम लोगों को डर लगता है।"
(ख) "इस चट्टान से इतनी प्रेरणा तो हमें मिलती ही है।"
(ग) "इस चट्टान पर रोज हजारों लोग आते हैं।"
(घ) "इस चट्टान पर विवेकानंद जी रोज ध्यान करते थे।"

उत्तरः
(ख) "इस चट्टान से इतनी प्रेरणा तो हमें मिलती ही है।"

46. कन्याकुमारी के मंदिर में क्या हो रहा था जब लेखक चट्टान पर था?
(क) आरती की थाली घूम रही थी
(ख) पूजा की घंटियाँ बज रही थीं
(ग) भजन गाए जा रहे थे
(घ) प्रसाद बाँटा जा रहा था

उत्तरः
(ख) पूजा की घंटियाँ बज रही थीं

47. हमारी नाव और किनारे के बीच क्या-क्या एक-से चमक रहे थे?
(क) नावों के पाल और कडल-काकों के पंख
(ख) समुद्री लहरें और सूर्य की किरणें
(ग) मल्लाहों के कपड़े और पानी की सतह
(घ) मंदिर की चोटी और दीपक की रोशनी

उत्तरः
(क) नावों के पाल और कडल-काकों के पंख

48. यह यात्रा-वृत्तांत पढ़कर लेखक की किस विशेषता का सबसे अच्छा परिचय मिलता है?
(क) लेखक केवल भौगोलिक स्थानों का नाम और दूरी बताने में रुचि रखता है और पाठक को सूचनाएँ देना चाहता है।
(ख) लेखक प्रकृति के दृश्यों को केवल बाहरी आँखों से देखता है और समाज की समस्याओं से कोई संबंध नहीं रखता।
(ग) लेखक प्रकृति के दृश्यों को आंतरिक अनुभूतियों से जोड़ता है और साथ ही सामाजिक यथार्थ के प्रति भी सजग है।
(घ) लेखक केवल रोमांचकारी घटनाओं का वर्णन करता है और पाठक को भयभीत करना चाहता है।

उत्तरः
(ग) लेखक प्रकृति के दृश्यों को आंतरिक अनुभूतियों से जोड़ता है और साथ ही सामाजिक यथार्थ के प्रति भी सजग है।

49. लेखक ने अंत में मन में बसों का टाइम-टेबल क्यों दोहरा रहा था?
(क) वह बसों का इंतजार करते हुए यात्रियों की मदद करना चाहता था
(ख) वह कन्याकुमारी छोड़कर आगे की यात्रा की योजना बना रहा था
(ग) वह बस से होटल जाना चाहता था
(घ) वह नवयुवकों को बस का समय बताना चाहता था

उत्तरः
(ख) वह कन्याकुमारी छोड़कर आगे की यात्रा की योजना बना रहा था

50. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प इस यात्रा-वृत्तांत की भाषा-शैली का सबसे उचित वर्णन करता है?
(क) भाषा अत्यंत कठिन और तत्सम शब्दों से भरी है जो केवल विद्वानों के लिए उपयुक्त है।
(ख) भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण और चित्रात्मक है जो पाठक को लेखक के साथ यात्रा कराती महसूस कराती है।
(ग) भाषा अत्यंत सरल और बोलचाल की है जिसमें साहित्यिक गुण बिल्कुल नहीं हैं।
(घ) भाषा केवल तथ्यात्मक और आँकड़ों से भरी है जिसमें भावनाओं का कोई स्थान नहीं है।

उत्तरः
(ख) भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण और चित्रात्मक है जो पाठक को लेखक के साथ यात्रा कराती महसूस कराती है।

33. चट्टान के उस तरफ क्या था जिसे देखकर लेखक को लगा जैसे उसके साथ मजाक किया गया हो?
(क) गहरा समुद्र और ऊँची लहरें
(ख) खुला तट फैलाव और वहाँ टहलते लोग
(ग) घना अँधेरा और सुनसान रास्ता
(घ) रेत के और भी ऊँचे टीले

उत्तरः
(ख) खुला तट फैलाव और वहाँ टहलते लोग

34. रात के समय लेखक ने केप होटल के लॉन से क्या-क्या देखा?
निम्नलिखित में से कौन-से कथन सही हैं?

I. अँधेरे में हिंद महासागर को काटती कुछ स्याह लकीरें — एक पौधे की टहनियाँ।
II. नीचे सड़क पर टार्च जलाता-बुझाता एक आदमी।
III. दक्षिण-पूर्व के क्षितिज में एक जहाज की मद्धिम-सी रोशनी।

(क) केवल कथन I और II सही हैं
(ख) केवल कथन I और III सही हैं
(ग) केवल कथन II और III सही हैं
(घ) तीनों कथन सही हैं

उत्तरः
(घ) तीनों कथन सही हैं

35. विवेकानंद चट्टान तट से कितनी दूर समुद्र के बीच है?
(क) पचास-साठ गज (ख) दो सौ गज
(ग) सौ-सवा-सौ गज (घ) डेढ़ सौ गज

उत्तरः
(ग) सौ-सवा-सौ गज

36. विवेकानंद चट्टान पर लेखक के अलावा कितने और लोग थे?
(क) पाँच — दो नवयुवक और तीन मल्लाह
(ख) सात — तीन नवयुवक और चार मल्लाह
(ग) छह — दो नवयुवक और चार मल्लाह
(घ) आठ — चार नवयुवक और चार मल्लाह

उत्तरः
(ख) सात — तीन नवयुवक और चार मल्लाह

37. चट्टान तक जाने वाली नाव किस चीज से बनी थी?
(क) मजबूत लकड़ी के तख्तों को जोड़कर
(ख) रबड़ पेड़ के तीन तनों को साथ-साथ जोड़कर
(ग) लोहे की मजबूत चादरों को वेल्ड करके
(घ) बाँस और रस्सियों को बाँधकर

उत्तरः
(ख) रबड़ पेड़ के तीन तनों को साथ-साथ जोड़कर

38. नाव पर जाते समय लेखक ने अपने डर को कैसे छुपाया?
(क) वह हँसता-बोलता रहा और मल्लाहों से बातें करता रहा
(ख) उसने आसमान की तरफ देखते हुए अपनी चेतना स्थगित रखी
(ग) उसने आँखें बंद करके समुद्री हवा का आनंद लिया
(घ) उसने नाव की पेंदी में बैठकर मुँह छुपा लिया

उत्तरः
(ख) उसने आसमान की तरफ देखते हुए अपनी चेतना स्थगित रखी

39. रिक्त स्थान भरिए —
कन्याकुमारी की आठ हजार की आबादी में कम-से-कम _______ शिक्षित नवयुवक बेकार हैं।
(क) दो-तीन सौ (ख) छह-सात सौ
(ग) चार-पाँच सौ (घ) एक-दो सौ

उत्तरः
(ग) चार-पाँच सौ

40. ग्रेजुएट नवयुवक ने बताया कि बेकार नवयुवकों का मुख्य धंधा क्या है?
(क) मछली पकड़ना और बेचना
(ख) नौकरियों के लिए अर्जियाँ देना और बैठकर बहस करना
(ग) पर्यटकों को नाव में घुमाना
(घ) हस्तशिल्प बनाकर बेचना

उत्तरः
(ख) नौकरियों के लिए अर्जियाँ देना और बैठकर बहस करना

41. ग्रेजुएट नवयुवक खुद वहाँ क्या बेचता था?
(क) शंख और मालाएँ (ख) मछलियाँ और सीपियाँ
(ग) फोटो-एल्बम (घ) नारियल और फल

उत्तरः
(ग) फोटो-एल्बम

42. ग्रेजुएट नवयुवक ने लेखक को दिखाने के लिए क्या किया?
(क) वहीं से एक सीपी लेकर तोड़ी और उसका गूदा मुँह में डाल लिया।
(ख) वह समुद्र के गहरे पानी में तैरकर बहुत दूर तक चला गया।
(ग) उसने एक बड़ी चट्टान पर चढ़कर ऊपर की ओर आसमान दिखाया।
(घ) उसने अपनी पुरानी फोटो-एल्बम में कन्याकुमारी के चित्र दिखाए।

उत्तरः
(क) वहीं से एक सीपी लेकर तोड़ी और उसका गूदा मुँह में डाल लिया।

13. 'हम लोग सीपियों का गूदा खाते हैं और दार्शनिक सिद्धांतों पर बहस करते हैं' — यह किसने, किस संदर्भ में कहा?

उत्तरः
यह ग्रेजुएट नवयुवक ने कहा, जो खुद फोटो-एल्बम बेचता था। इस चट्टान पर बैठकर वह बेरोजगारी की विसंगति को स्वीकार कर रहा था — साधारण आजीविका के साथ दार्शनिक बहसें करना ही उसके जैसे युवाओं की नियति बन गई थी।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं हूँ' — लेखक की इस मनःस्थिति का विश्लेषण कीजिए।

उत्तरः
यह पंक्ति तब आई जब लेखक तीनों ओर के क्षितिज को आँखों में समेट रहा था। विशाल समुद्री विस्तार और भव्य चट्टानों के बीच वह अपनी पहचान भूलकर उस दृश्य का एक हिस्सा बन गया — 'बड़ी-बड़ी चट्टानों के बीच एक छोटी-सी चट्टान।' यह क्षण आत्म-विस्मरण का है जब प्रकृति की विराटता व्यक्ति की चेतना को अपने में समा लेती है। यह यात्रा-वृत्तांत की सबसे गहरी अनुभूति है।

2. सूर्यास्त के दृश्य का वर्णन करते हुए लेखक ने किन-किन रंगों और भावों का उपयोग किया है?

उत्तरः
सूर्य के डूबते समय पानी पर सोना-ही-सोना बिखर गया। रंग इतनी तेजी से बदल रहे थे कि एक पल के लिए भी एक नाम देना असंभव था। जहाँ सोना था, वहाँ लहू बहने लगा, फिर बैंजनी और अंत में काला। लेखक की मुट्ठियाँ भींची-खुलीं, वह कभी नारियलों की तरफ और कभी समुद्र की तरफ देखता रहा — यह दृश्य उसे उद्वेलित कर रहा था।

3. लेखक ने सैंड हिल से ऊँचे टीले की ओर अकेले चलने का निर्णय क्यों लिया? इस प्रसंग का क्या महत्त्व है?

उत्तरः
यात्रियों की टोलियाँ सैंड हिल पर ही रुक गई थीं। लेखक चाहता था कि सूर्यास्त पूरे पश्चिमी क्षितिज के विस्तार में देखे। इसके लिए उसे अरब सागर की ओर के और ऊँचे टीले तक जाना था। एकाकी चलते हुए, हर नए टीले पर एक और टीला मिलता — यह प्रसंग जिजीविषा और लक्ष्य-साधना का प्रतीक है। अंततः खुला विस्तार देखकर वह संसार की सबसे ऊँची चोटी पर बैठे होने की अनुभूति करता है।

4. नावड़े में विवेकानंद चट्टान तक जाने की यात्रा के दौरान लेखक ने अपने डर को कैसे छिपाया?

उत्तरः
रबड़ के पेड़ के तीन तनों से बनी नाव में चार मल्लाह नुकीली चट्टानों और ऊँची लहरों के बीच से नाव ला रहे थे। उस समय लेखक ने आसमान की तरफ देखते हुए अपनी चेतना को स्थगित रखने की चेष्टा की — डर को दिखावटी उदासीनता से ढकना चाहा। पर जब चट्टान पर पहुँच गया, तो डर टाँगों में उतर गया और वे हल्के-हल्के काँप रही थीं।

5. कन्याकुमारी के सूर्योदय के दृश्य और वहाँ की सामाजिक परिस्थितियों का एक साथ वर्णन लेखक ने कैसे किया?

उत्तरः
सूर्योदय के समय पानी और आकाश में रंग झिलमिला रहे थे, समुद्र में स्याह चट्टानों की ओट से सूर्य उदित हो रहा था। घाट पर भक्त अर्घ्य दे रहे थे। साथ ही लेखक के साथ का नवयुवक बेकारी के आँकड़े बता रहा था, और कडल-काक 'दोनों से बे-लाग' तैर रहे थे। यह समन्वय प्रकृति की निर्लिप्तता और मानव-समस्याओं के विरोधाभास को उजागर करता है।

6. रेत के अनाम रंगों के प्रति लेखक के आकर्षण से उसके व्यक्तित्व की कौन-सी विशेषता प्रकट होती है?

उत्तरः
तट पर जब बढ़ता पानी खतरनाक हो रहा था, उस समय भी लेखक रेत के अनाम रंगों में खो गया। उसने रंगों को हाथ से उठाया, मसला, पैरों से भी छुआ। हर रंग की थोड़ी-थोड़ी रेत रखने की इच्छा हुई। यह दर्शाता है कि लेखक एक संवेदनशील, सौंदर्य-दृष्टि-संपन्न और प्रकृति से गहरे जुड़े हुए व्यक्ति हैं, जो खतरे में भी सौंदर्य को नहीं भूलते।

7. यात्रा-वृत्तांत के अंत में लेखक के मन में बसों का टाइम-टेबल क्यों दोहराया जा रहा था? इसका क्या भाव है?

उत्तरः
कन्याकुमारी के सूर्योदय की सुंदरता देखते हुए भी लेखक के मन में 'तीसरी बस नौ चालीस पर, चौथी...' चल रहा था। यह प्रसंग यात्री की व्यावहारिक जिम्मेदारी और आत्मिक अनुभव के बीच के द्वंद्व को दर्शाता है। प्रकृति के बीच खोया मन भी अंततः वास्तविकता की ओर लौटता है। यह मानव-मन की स वाभाविक स्थिति है।

8. 'सूर्य का गोला जैसे एक बेबसी में पानी के लावे में डूबता जा रहा था' — इस उपमा का प्रभाव समझाइए।

उत्तरः
सूर्य के डूबने को 'बेबसी में लावे में डूबना' कहना अत्यंत मार्मिक है। इसमें सूर्य को एक ऐसी सत्ता के रूप में चित्रित किया गया है जो डूबना नहीं चाहता पर डूबना उसकी नियति है। 'लावे' शब्द समुद्र के रंग और गर्माहट दोनों को एक साथ व्यक्त करता है। यह उपमा सूर्यास्त को क्षणभंगुरता और विवशता के प्रतीक के रूप में स्थापित करती है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लेखक ने कन्याकुमारी की पहली पंक्ति में उसे किस प्रकार परिभाषित किया है?

   उत्तरः
   लेखक ने कन्याकुमारी को 'सुनहले सूर्योदय और सूर्यास्त की भूमि' कहा है। यह परिचय यात्रा-वृत्तांत की पृष्ठभूमि स्थापित करता है और पाठक को उस स्थान की विशेषता से पहली ही पंक्ति में परिचित करा देता है।

2. विवेकानंद चट्टान का वर्णन यात्रा-वृत्तांत में किस रूप में किया गया है?

   उत्तरः
   वह चट्टान अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी के संगम-स्थल पर है, जिस पर स्वामी विवेकानंद ने समाधि लगाई थी। तीनों तरफ से पानी की मार सहती वह चट्टान स्वयं भी समाधिस्थ-सी लग रही थी।

3. 'शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति' — लेखक यह अनुभव करते हुए क्या देख रहा था?

   उत्तरः
   लेखक हिंद महासागर की ऊँची-ऊँची लहरों और तीनों तरफ क्षितिज तक फैले विशाल जल-विस्तार को देख रहा था। इस दृश्य की भव्यता और असीमितता को अनुभव करते हुए उसने यह भाव व्यक्त किया।

4. लेखक सैंड हिल पर पहुँचकर वहाँ रुका क्यों नहीं और आगे क्यों बढ़ा?

   उत्तरः
   सैंड हिल से अरब सागर की ओर एक और ऊँचा टीला था जो उस तरफ के विस्तार को ओट में लिए था। सूर्यास्त पूरे विस्तार की पृष्ठभूमि में देखने के लिए लेखक आगे के टीले की ओर चल दिया।

5. 'टाँगें थक रही थीं पर मन थकने को तैयार नहीं था' — यह पंक्ति किस प्रसंग में आई है?

   उत्तरः
   यह पंक्ति तब आई जब लेखक एक के बाद एक रेत के टीले पार कर रहा था। शरीर की थकान के बावजूद मन में यह उत्साह बना था कि शायद अगले टीले से पश्चिमी क्षितिज का खुला विस्तार दिखेगा।

6. 'मैंने, सिर्फ मैंने, उस चोटी को पहली बार सर किया हो' — लेखक के इस भाव का क्या अर्थ है?

   उत्तरः
   जब लेखक अंततः उस टीले पर पहुँचा जहाँ से खुला पश्चिमी क्षितिज दिखा, तो उसे अपने एकल प्रयत्न की सार्थकता पर गहरी संतुष्टि हुई। वह टीला उसके लिए संसार की सबसे ऊँची चोटी-सा था।

7. सूर्यास्त के समय रंगों का क्या क्रम था? लेखक ने इसे किन शब्दों में व्यक्त किया?

   उत्तरः
   सूर्य के पानी में डूबते ही पानी पर 'सोना-ही-सोना' ढुल आया। फिर 'लहू बहता' दिखा, तब वह 'बैज़नी' हुआ और अंत में काला पड़ गया। लेखक ने रंगों का यह परिवर्तन इतनी तेजी से बताया कि उन्हें एक नाम देना असंभव था।

8. अँधेरा होते देख लेखक ने वापसी के लिए कौन-सा रास्ता क्यों चुना?

   उत्तरः
   लेखक को लगा कि टीलों के रास्ते जाने पर रेत में भटक जाएगा। इसलिए उसने समुद्र तट का रास्ता चुना, जो निश्चित रूप से केप होटल के सामने तक ले जाता। तुरंत निर्णय लेकर वह रेत पर बैठकर तट की तरफ फिसल गया।

9. कन्याकुमारी के तट की रेत के रंगों को लेखक ने असाधारण क्यों बताया?

   उत्तरः
   उस रेत में सुरमई, खाकी, पीली, लाल जैसे सामान्य रंगों के अलावा अनगिनत अनाम रंग थे — एक-एक इंच पर अलग। हर रंग कई-कई रंगों की झलक लिए था, जैसे काली घटा और घनी लाल आँधी के मिश्रण हों। लेखक ने ऐसी रेत पहले कहीं नहीं देखी थी।

10. लेखक ने तट पर रेत के रंगों को हाथ और पाँव से मसला — उसके मन में क्या था?

    उत्तरः
    लेखक चाहता था कि हर रंग की थोड़ी-थोड़ी रेत अपने पास रख ले, पर उसका कोई उपाय नहीं था। इसलिए उसने रेत को हाथ और पैरों से मसलकर उन रंगों को अनुभव किया और उदास मन से आगे चला।

11. बढ़ते पानी ने लेखक को किस स थिति में डाल दिया और उसने क्या किया?

    उत्तरः
    तट का केवल तीन-चार फुट हिस्सा पानी से बाहर था। एक लहर पैरों को भिगो गई तो खतरे का एहसास हुआ। लेखक ने जूता उतारकर हाथ में लिया, एक ऊँची चट्टान से टकराया, बाँहों पर खरोंच आई, फिर चट्टान के ऊपर पहुँचकर सुरक्षित हो गया।

12. विवेकानंद चट्टान पर बैठे ग्रेजुएट नवयुवक ने स्थानीय बेरोजगारी के बारे में क्या बताया?

    उत्तरः
    उसने बताया कि आठ हजार की आबादी में चार-पाँच सौ शिक्षित नवयुवक बेकार हैं, जिनमें सौ के लगभग ग्रेजुएट हैं। उनका मुख्य धंधा नौकरियों के लिए अर्जियाँ देना और बैठकर बहस करना है।

प्रमुख कार्यः

1. 1893 में शिकागो की विश्व धर्म-महासभा में ऐतिहासिक भाषण
2. 1897 में रामकृष्ण मिशन की स्थापना।
3. युवाओं को "उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए" का संदेश।

लेखनः राज योग, कर्म योग, ज्ञान योग, भक्ति योग — ये उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

राष्ट्रीय युवा दिवसः 12 जनवरी को उनके जन्मदिन पर राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया जाता है। सरकार प्रतिवर्ष 'राष्ट्रीय युवा महोत्सव' का आयोजन करती है।

6. अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'आखिरी चट्टान तक' यात्रा-वृत्तांत के लेखक कौन हैं?
(क) निर्मल वर्मा (ख) राहुल सांकृत्यायन
(ग) मोहन राकेश (घ) महादेवी वर्मा
उत्तरः
(ग) मोहन राकेश

2. मोहन राकेश का जन्म किस शहर में हुआ था?
(क) लाहौर, पंजाब (ख) अमृतसर, पंजाब
(ग) लुधियाना, पंजाब (घ) जालंधर, पंजाब
उत्तरः
(ख) अमृतसर, पंजाब

3. मोहन राकेश को 'संगीत नाटक अकादमी' पुरस्कार किस नाटक के लिए मिला?
(क) लहरों के राजहंस (ख) आधे-अधूरे
(ग) आषाढ़ का एक दिन (घ) न आने वाला कल
उत्तरः
(ग) आषाढ़ का एक दिन

4. मोहन राकेश ने किस हिंदी पत्रिका का संपादन किया था?
(क) धर्मयुग (ख) सारिका
(ग) कादंबिनी (घ) हंस
उत्तरः
(ख) सारिका

5. मोहन राकेश का निधन किस आयु में हुआ?
(क) 45 वर्ष (ख) 50 वर्ष
(ग) 52 वर्ष (घ) 48 वर्ष
उत्तरः
(घ) 48 वर्ष

6. 'आखिरी चट्टान तक' किस विधा की रचना है?
(क) उपन्यास (ख) कहानी-संग्रह
(ग) यात्रा-वृत्तांत (घ) नाटक
उत्तरः
(ग) यात्रा-वृत्तांत

7. कन्याकुमारी को लेखक ने किसकी भूमि कहा है?
(क) वर्षा और बादलों की
(ख) सुनहले सूर्योदय और सूर्यास्त की
(ग) भयानक लहरों और तूफानों की
(घ) प्राचीन मंदिरों और प्रसिद्ध तीर्थों की
उत्तरः
(ख) सुनहले सूर्योदय और सूर्यास्त की

8. लेखक केप होटल के आगे बने बाथ टैंक के किस तरफ खड़ा था?
(क) दाईं तरफ (ख) सामने की तरफ
(ग) बाईं तरफ (घ) पीछे की तरफ
उत्तरः
(ग) बाईं तरफ

9. वह चट्टान जिस पर स्वामी विवेकानंद ने समाधि लगाई थी, किन तीन समुद्रों के संगम-स्थल पर स्थित है?
(क) अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी
(ख) अरब सागर, प्रशांत महासागर और बंगाल की खाड़ी
(ग) हिंद महासागर, अटलांटिक और अरब सागर
(घ) बंगाल की खाड़ी, लाल सागर और हिंद महासागर
उत्तरः
(क) अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी

10. लेखक ने समुद्र के उस दृश्य को देखकर अपनी पूरी चेतना से क्या महसूस किया?
(क) भय का विस्तार, विस्तार का भय
(ख) शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति
(ग) लहरों का विस्तार, विस्तार की लहरें
(घ) जल का विस्तार, विस्तार का जल
उत्तरः
(ख) शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति

11. तीनों ओर के क्षितिज को आँखों में समेटते हुए लेखक कुछ देर क्या भूल गया?
(क) कि उसे अब अपने होटल वापस भी जाना है।
(ख) कि वह एक जीवित व्यक्ति और यात्री है
(ग) कि समुद्र में तेज ज्वार आ रहा है
(घ) कि कुछ ही देर में सूर्यास्त होने वाला है
उत्तरः
(ख) कि वह एक जीवित व्यक्ति और यात्री है

9. ग्रेजुएट नवयुवक की बात से कन्याकुमारी के सामाजिक यथार्थ का क्या चित्र उभरता है?

उत्तरः
ग्रेजुएट नवयुवक ने बताया कि आठ हजार की आबादी में सौ ग्रेजुएट सहित चार-पाँच सौ शिक्षित नवयुवक बेरोजगार हैं। उनका काम अर्जियाँ देना और बहस करना है। वह खुद फोटो-एल्बम बेचता था। 'सीपियों का गूदा खाते हैं और दार्शनिक बहस करते हैं' — इस वाक्य में शिक्षित बेरोजगारी की विडंबना और उसके प्रति कड़वी आत्म-जागरुकता एक साथ है।

10. 'आखिरी चट्टान तक' यात्रा-वृत्तांत में भौगोलिक यात्रा के साथ-साथ आंतरिक यात्रा भी है — स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः
लेखक की शारीरिक यात्रा कन्याकुमारी के तट, टीलों और विवेकानंद चट्टान तक है। पर उसके साथ एक मानसिक यात्रा भी चलती है — आत्म-विस्मरण का क्षण, संतुष्टि की अनुभूति, सौंदर्य में खो जाना, भय और साहस का द्वंद्व, और अंत में व्यावहारिक जीवन में लौटना। यह आंतरिक यात्रा यात्रा-वृत्तांत को एक साहित्यिक रचना बनाती है।

11. रात के केप होटल के लॉन का वर्णन लेखक ने जिस शैली में किया है, उसकी विशेषता बताइए।

उत्तरः
रात के लॉन के वर्णन में लेखक ने बहुत संक्षिप्त, खंडित और चित्रात्मक शैली अपनाई है — 'अँधेरे में हिंद महासागर को काटती कुछ स्याह लकीरें— एक पौधे की टहनियाँ। नीचे सड़क पर टार्च जलाता-बुझाता एक आदमी। क्षितिज में एक जहाज की मद्धिम-सी रोशनी।' यह शैली एक अधूरे चित्र की तरह है, जो पाठक की कल्पना को सक्रिय करती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'आखिरी चट्टान तक' यात्रा-वृत्तांत में प्रकृति-वर्णन की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। लेखक ने प्रकृति को किस रूप में अनुभव किया है?

उत्तरः
'आखिरी चट्टान तक' में प्रकृति-वर्णन अत्यंत जीवंत, सूक्ष्म और भावनात्मक है। लेखक ने लहरों का चित्रण 'बलखाती लहरें रास्ते की नुकीली चट्टानों से कटती हुई आती थीं, जिससे उनके ऊपर चूरा बूँदों की जालियाँ बन जाती थीं' — जैसे शब्दों में किया है। सूर्यास्त के रंगों का क्रम — सोना, लहू, बैज़नी, काला — और तट की रेत के अनाम रंग इसके प्रमाण हैं। लेखक प्रकृति को केवल देखता नहीं, उसे 'पूरी चेतना से महसूस' करता है। समुद्र के विस्तार में वह 'शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति' देखता है। नारियलों की टहनियाँ 'सिर धुन रही थीं' — इस मानवीकरण से प्रकृति सजीव हो उठती है। लेखक की प्रकृति-दृष्टि केवल सौंदर्यात्मक नहीं, आत्मान्वेषण की भी है।

2. 'आखिरी चट्टान तक' यात्रा-वृत्तांत में लेखक की भाषा-शैली की प्रमुख विशेषताएँ बताइए और उदाहरणों से स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः
मोहन राकेश की इस यात्रा-वृत्तांत की भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण और चित्रात्मक है। पहली विशेषता है दृश्यबिंब — 'बलखाती लहरें', 'स्याह चट्टानें', 'सोना-ही-सोना ढुल आया' जैसे प्रयोग पाठक के मन में सजीव चित्र बनाते हैं। दूसरी विशेषता है रूपक और उपमा — 'सूर्य का गोला जैसे बेबसी में लावे में डूबता जा रहा था' एक असाधारण उपमा है। तीसरी है रंगों का भावात्मक प्रयोग — लहू बहना, बैज़नी पड़ना, काला पड़ जाना। चौथी है मानवीकरण — 'समाधिस्थ-सी लग रही थी', 'सिर धुन रहे थे'। रात के लॉन का खंडित वर्णन चित्रकारी-सा है। छोटे-छोटे वाक्यों में भी भाव की गहराई है।

3. 'आखिरी चट्टान तक' यात्रा-वृत्तांत में लेखक के साहस, संकट और जिजीविषा के प्रसंगों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तरः
इस यात्रा-वृत्तांत में लेखक कई बार संकट में पड़ा। पहला संकट: चट्टान पर खड़े होने पर बढ़ते पानी में घिर जाना — 'मेरा पूरा शरीर सिहर गया।' दूसरा संकट: रेत के टीलों पर अकेले अँधेरे में भटकने का भय — मन में डर था कि अँधेरे से पहले टीले पार हो सकेंगे या नहीं। तीसरा संकट: बढ़ते पानी में तट सिकुड़ते जाना, लहर का पाँव भिगोना, ऊँची चट्टान से टकराना और बाँहों पर खरोंच। पर हर बार लेखक ने त्वरित निर्णय लेकर संकट पार किया। नाव में भी उसने डर को 'दिखावटी उदासीनता' से ढका। यह जिजीविषा और मानसिक दृढ़ता यात्रा-वृत्तांत की महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

4. 'आखिरी चट्टान तक' में प्रकृति की भव्यता और मानव-जीवन की विसंगतियों का एक साथ चित्रण किया गया है। इस कथन के आलोक में यात्रा-वृत्तांत का विश्लेषण कीजिए।

उत्तरः
मोहन राकेश ने इस यात्रा-वृत्तांत में प्रकृति और मानव-जीवन को एक दूसरे के विपरीत और साथ-साथ रखा है। विवेकानंद चट्टान पर सूर्योदय का अलौकिक दृश्य और उसी के बीच ग्रेजुएट नवयुवक का बेरोजगारी के आँकड़े देना — यह विसंगति पाठक को झकझोरती है। सरकारी मेहमान सूर्योदय के समय कॉफी पी रहे हैं और स्थानीय नवयुवतियाँ शंख-मालाएँ बेच रही हैं — वर्ग-भेद यहाँ भी दिखता है। कडल-काक 'बेरोजगारी की समस्या और सूर्योदय की विशेषता, दोनों से बे-लाग' तैर रहे हैं — यह प्रकृति की निर्लिप्तता का चित्रण है। इस प्रकार भव्य प्रकृति के बीच मानव-जीवन की सीमाएँ और विडंबनाएँ और अधिक उजागर हो जाती हैं।

5. 'आखिरी चट्टान तक' यात्रा-वृत्तांत को 'केवल स्थान-चित्रण नहीं, बल्कि आत्मान्वेषण की यात्रा' क्यों कहा जाता है? विस्तार से समझाइए।

उत्तरः
मोहन राकेश की यह यात्रा भूगोल से आत्मा की ओर जाती है। केप होटल से शुरू होकर विवेकानंद चट्टान तक की शारीरिक यात्रा के बीच लेखक कई बार अपनी आत्मिक अवस्था का वर्णन करता है। 'मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं हूँ' — यह आत्म-विस्मरण की चरम अवस्था है जहाँ व्यक्ति प्रकृति में विलीन हो जाता है। रेत के रंगों के प्रति उसकी ललक मनुष्य की सौंदर्य-पिपासा का प्रतीक है। टीले पर बैठकर 'सिर्फ मैंने इस चोटी को सर किया' की अनुभूति आत्म-संतुष्टि की है। संकट में 'तुरंत निर्णय' आत्म-विश्वास दर्शाता है। अंत में बस-टाइम-टेबल दोहराना यथार्थ में वापसी है। यह पूरी यात्रा मानव-मन की खोज है।

6. यात्रा-वृत्तांत विधा के तत्त्वों के आधार पर 'आखिरी चट्टान तक' का विश्लेषण कीजिए।

उत्तरः
यात्रा-वृत्तांत के सभी प्रमुख तत्त्व इस रचना में मिलते हैं। दृश्य-वर्णन: समुद्र, चट्टानें, लहरें, रेत और रंगों का सजीव चित्रण। आत्मानुभूति: लेखक का आत्म-विस्मरण, भय, संतुष्टि और उदासी। सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य: विवेकानंद चट्टान, मंदिर की घंटियाँ, भक्तों का अर्घ्य। जीवन-दर्शन: 'शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति' और क्षणभंगुरता का बोध। सामाजिक यथार्थ: स्थानीय बेरोजगारी का मार्मिक चित्रण। रोमांच और संघर्ष: अकेले टीले पार करना, बढ़ते पानी में दौड़ना। शैलीगत विशेषता: प्रवाहपूर्ण, चित्रात्मक और भावपूर्ण भाषा। ये सभी तत्त्व मिलकर इसे हिंदी के श्रेष्ठ यात्रा-वृत्तांतों में स्थान देते हैं।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

गद्यांश 1

अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी- इन तीनों के संगम-स्थल-सी वह चट्टान, जिस पर कभी स्वामी विवेकानंद ने समाधि लगायी थी, हर तरफ से पानी की मार सहती हुई स्वयं भी समाधिस्थ-सी लग रही थी। हिंद महासागर की ऊँची-ऊँची लहरें मेरे आस-पास की स्याह चट्टानों से टकरा रही थीं। बलखाती लहरें रास्ते की नुकीली चट्टानों से कटती हुई आती थीं जिससे उनके ऊपर चूरा बूँदों की जालियाँ बन जाती थीं। मैं देख रहा था और अपनी पूरी चेतना से महसूस कर रहा था— शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति।

1. चट्टान के लिए 'पानी की मार सहना' और 'समाधिस्थ लगना' किस आंतरिक गुण को दर्शाता है?
(क) अत्यधिक जड़ता (ख) असीम अडिगता
(ग) विवश लाचारी (घ) घोर उदासीनता

2. **अभिकथन (A):** लेखक समुद्र के इस विहंगम दृश्य को देखकर अत्यंत रोमांचित और प्रभावित था।
कारण (R): वह वहाँ प्रकृति में छिपे शक्ति के असीम विस्तार को पूरी चेतना से महसूस कर रहा था।
(क) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।
(ख) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
(ग) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. चट्टानों से टकराकर 'चूरा बूँदों की जालियाँ' बनने के वर्णन में कौन-सा मुख्य भाव या मूड प्रकट होता है?
(क) भयावहता
(ख) काव्यात्मकता
(ग) संशयात्मकता
(घ) दार्शनिकता

4. गद्यांश में प्रयुक्त 'स्याह' शब्द का सबसे सटीक और शुद्ध पर्यायवाची शब्द कौन-सा है?
(क) विशाल (ख) धवल
(ग) उथला (घ) कृष्ण

5. गद्यांश के अनुसार, लेखक जिस मुख्य चट्टान पर खड़ा था, उसकी ऐतिहासिक विशेषता क्या थी?
(क) वहाँ प्रसिद्ध राजाओं ने बड़े-बड़े महल बनवाए थे।
(ख) वहाँ स्वामी विवेकानंद ने कभी समाधि लगाई थी।
(ग) वह चट्टान केवल विदेशी यात्रियों के ठहरने का स्थान थी।
(घ) वह भारत के समुद्री व्यापार का सबसे बड़ा केंद्र थी।

उत्तरः
1. (ख) असीम अडिगता
2. (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
3. (ख) काव्यात्मकता
4. (घ) कृष्ण
5. (ख) वहाँ स्वामी विवेकानंद ने कभी समाधि लगाई थी।

गद्यांश 2

तीनों ओर के क्षितिज को आँखों में समेटता मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं हूँ, एक जीवित व्यक्ति, दूर से आया यात्री, एक दर्शक। उस दृश्य के बीच में जैसे दृश्य का एक हिस्सा बनकर खड़ा रहा— बड़ी-बड़ी चट्टानों के बीच एक छोटी-सी चट्टान। जब अपना होश हुआ, तो देखा कि मेरी चट्टान भी तब तक बढ़ते पानी में काफी घिर गई है। मेरा पूरा शरीर सिहर गया। मैंने एक नजर फिर सामने के उमड़ते विस्तार पर डाली और पास की एक सुरक्षित चट्टान पर कूदकर दूसरी चट्टानों पर से होता हुआ किनारे पर पहुँच गया।

1. लेखक का "यह भूल जाना कि वह एक जीवित व्यक्ति या दर्शक है" क्या व्यक्त करता है?
(क) आत्म-विस्मृति (ख) अत्यधिक अज्ञान
(ग) शारीरिक थकान (घ) मानसिक भ्रम

2. लेखक द्वारा स्वयं को "बड़ी-बड़ी चट्टानों के बीच एक छोटी-सी चट्टान" समझना उसके किस दृष्टिकोण को प्रकट करता है?
(क) स्वयं को समाज का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति मानना
(ख) विशाल प्रकृति के समक्ष मानव के लघु अस्तित्व का बोध
(ग) दूसरी चट्टानों के प्रति मन में भारी ईर्ष्या का होना
(घ) समुद्र की लहरों को पूरी तरह अपने वश में करने का दंभ

3. अचानक होश आने पर जब लेखक ने पानी को बढ़ते देखा, तब गद्यांश में कैसा मूड उत्पन्न होता है?
(क) व्यंग्यात्मक (ख) कौतूहलपूर्ण
(ग) रोमांच और भय (घ) घोर शांति

4. गद्यांश में आए 'क्षितिज' शब्द का सही और उपयुक्त अर्थ निम्नलिखित में से क्या होगा?
(क) समुद्र के भीतर स्थित सबसे गहरा गड्ढा
(ख) जहाँ धरती और आकाश मिलते प्रतीत हों
(ग) बादलों के बीच चमकने वाली तेज़ बिजली
(घ) ऊँची पहाड़ियों से गिरने वाला सुंदर झरना

5. लेखक को सुरक्षित चट्टान पर कूदकर किनारे की ओर वापस क्यों भागना पड़ा?
(क) उसे होटल पहुँचने में बहुत अधिक देरी हो रही थी।
(ख) उसकी अपनी चट्टान बढ़ते पानी से घिरने लगी थी।
(ग) अचानक बहुत तेज़ मूसलाधार बारिश शुरु हो गई थी।
(घ) किनारे पर उसके मित्र उसे ज़ोर से पुकार रहे थे।

उत्तरः
1. (क) आत्म-विस्मृति
2. (ख) विशाल प्रकृति के समक्ष मानव के लघु अस्तित्व का बोध
3. (ग) रोमांच और भय
4. (ख) जहाँ धरती और आकाश मिलते प्रतीत हों
5. (ख) उसकी अपनी चट्टान बढ़ते पानी से घिरने लगी थी।

गद्यांश 3

सूर्यास्त पूरे विस्तार की पृष्ठभूमि में देखा जा सके, इसके लिए मैं कुछ देर सैंड हिल पर रुका रहकर आगे उस टीले की तरफ चल दिया। पर रेत पर अपने अकेले कदमों को घसीटता वहाँ पहुँचा, तो देखा कि उससे आगे उससे भी ऊँचा एक और टीला है। जल्दी-जल्दी चलते हुए मैंने एक के बाद एक कई टीले पार किए। टाँगें थक रही थीं पर मन थकने को तैयार नहीं था। हर अगले टीले पर पहुँचने पर लगता कि शायद अब एक ही टीला और है, उस पर पहुँचकर पच्छिमी क्षितिज का खुला विस्तार अवश्य नजर आएगा।

1. लेखक के "टाँगें थकने पर भी मन के थकने को तैयार न होने" से उसका कौन-सा गुण निखरता है?
(क) अटूट जिजीविषा (ख) कड़ा अनुशासन
(ग) अनावश्यक हठ (घ) अत्यधिक लालच

2. एक के बाद एक ऊँचे टीलों को पार करने के संदर्भ में कौन-से कथन सही हैं?
I. लेखक सैंड हिल पर बैठकर केवल आराम से कॉफी पीना चाहता था।
II. लेखक सूर्यास्त को बिना किसी ओट के पूरे खुले विस्तार में देखना चाहता था।
(क) कथन I सही है और II गलत है।
(ख) कथन II सही है और I गलत है।
(ग) कथन I और II दोनों ही गलत हैं।
(घ) कथन I और II दोनों ही सही हैं।

3. इस पूरे गद्यांश की प्रकृति मुख्य रूप से किस प्रकार की कही जा सकती है?
(क) उपदेशात्मक (ख) संशयात्मक
(ग) विवरणात्मक (घ) आवेगात्मक

4. गद्यांश में प्रयुक्त 'क्षितिज' शब्द का सही विलोम शब्द निम्नलिखित में से कौन-सा होगा?
(क) अंबर (ख) पाताल
(ग) क्षिति (घ) गगन

5. लेखक को हर अगले टीले पर पहुँचने पर लगातार किस बात की आशा बंधी रहती थी?
(क) वहाँ उसे केप होटल के मल्लाह मिल जाएँगे।
(ख) वहाँ स्थानीय युवतियाँ सुंदर शंख-मालाएँ बेच रही होंगी।
(ग) वहाँ रेत के ऊपर सोने के सुंदर सिक्के बिखरे होंगे।
(घ) वहाँ से पच्छिमी क्षितिज का खुला विस्तार दिखेगा।

उत्तरः
1. (क) अटूट जिजीविषा
2. (ख) कथन II सही है और I गलत है।
3. (ग) विवरणात्मक
4. (ख) पाताल
5. (घ) वहाँ से पच्छिमी क्षितिज का खुला विस्तार दिखेगा।

गद्यांश 4

सूर्य का गोला पानी की सतह से छू गया। पानी पर दूर तक सोना-ही-सोना ढुल आया। पर वह रंग इतनी जल्दी-जल्दी बदल रहा था कि किसी भी एक क्षण के लिए उसे एक नाम दे सकना असंभव था। सूर्य का गोला जैसे एक बेबसी में पानी के लावे में डूबता जा रहा था। धीरे-धीरे वह पूरा डूब गया और कुछ क्षण पहले जहाँ सोना बह रहा था, वहाँ अब लहू बहता नजर आने लगा। कुछ और क्षण बीतने पर वह लहू भी धीरे-धीरे बैज़नी और बैज़नी से काला पड़ गया।

अध्याय 6

रीढ़ की हड्डी

1. लेखक परिचय

रूढ़िवादी सामाजिक सोच पर कड़ा प्रहार करने वाले एकांकी 'रीढ़ की हड्डी' के रचयिता जगदीशचंद्र माथुर का जन्म सन् 1917 में शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनका नाम नाटक और रंगमंच के ऐतिहासिक विकास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। इन्होंने जीवन-भर अपनी प्रखर लेखनी के माध्यम से समाज में स्त्रियों की शिक्षा के अधिकार, नारी चेतना और रूढ़िगत मान्यताओं पर चोट करने वाली कृतियों की रचना करके हिंदी साहित्य को अलंकृत किया है। अपनी इसी स्वाभाविक एवं व्यंग्यपूर्ण संवाद शैली से इन्होंने हिंदी प्रेमियों को गौरवान्वित किया है। सन् 1978 में इस महान नाटककार का निधन हो गया।

2. पाठ-परिचय

'रीढ़ की हड्डी' जगदीशचंद्र माथुर द्वारा रचित एक प्रभावशाली एकांकी है जो सन् 1939 में लिखी गई। यह रचना भारतीय समाज में स्त्री-शिक्षा के प्रति रूढ़िगत सोच और परंपरागत विवाह-व्यवस्था की विसंगतियों पर तीखा व्यंग्य करती है। कम पढ़ी-लिखी दुल्हन की माँग करने वाले पात्रों के माध्यम से सामाजिक पाखंड को उजागर किया गया है। मुख्य पात्र उमा एक शिक्षित, आत्मसम्मानी और साहसी युवती है जो दकियानूसी विचारों को निडरता से चुनौती देती है।

3. पाठ-सारांश

एकांकी की पृष्ठभूमि और स्वागत की तैयारियाँ

'रीढ़ की हड्डी' जगदीशचंद्र माथुर द्वारा रचित एक अत्यंत लोकप्रिय और व्यंग्यपूर्ण एकांकी है, जो समाज में स्त्रियों की शिक्षा को लेकर बनी रूढ़िवादी सोच और पारंपरिक विवाह व्यवस्था पर गहरी चोट करती है। एकांकी की शुरुआत एक मामूली सजे हुए कमरे से होती है, जहाँ घर के मालिक बाबू रामस्वरूप और उनका घरेलू सहायक रतन एक तख्त बिछाने में व्यस्त हैं। रामस्वरूप अपनी पत्नी प्रेमा के साथ मिलकर आने वाले मेहमानों के स्वागत की तैयारियाँ करते हैं और रतन को दरी, चद्दर तथा बीबी जी के कमरे से हारमोनियम-सितार लाने के लिए दौड़ते हैं। इसी बीच यह पता चलता है कि नाश्ता तो तैयार है, परंतु घर में मक्खन नहीं है, जिसके कारण रतन को तुरंत मक्खन लाने के लिए बाज़ार भेजा जाता है।

रामस्वरूप का अंतर्द्वंद्व

रामस्वरूप और प्रेमा के संवाद से यह स्पष्ट होता है कि उनकी लाडली बेटी उमा पढ़ी-लिखी होने के बावजूद शादी के इस दिखावे से चिढ़कर मुँह फुलाए पड़ी है और उसने पाउडर व श्रृंगार की सामग्रियों को छूने से भी मना कर दिया है। यहाँ रामस्वरूप का एक अंतर्द्वंद्व सामने आता है; वे समाज में आधुनिकता का दिखावा तो करते हैं और अपनी बेटी को उच्च शिक्षा भी दिलाते हैं, परंतु विवाह के बाज़ार में उसे बेचने के लिए उसकी पढ़ाई-लिखाई को छिपाने का प्रयास करते हैं।

लड़के वालों की सोच

रामस्वरूप अपनी पत्नी को सख्त हिदायत देते हैं कि मेहमानों के सामने उमा की शिक्षा केवल मैट्रिक तक ही बताई जाए। इसका मूल कारण लड़के वालों के दकियानूसी ख़याल हैं। लड़की देखने आने वाले बाबू गोपालप्रसाद स्वयं पेशे से वकील हैं और सभा-सोसाइटियों में जाते हैं, परंतु अपने बेटे के लिए वे एक कम पढ़ी-लिखी लड़की चाहते हैं, ताकि वह उनके सामने ज़बान न खोल सके। उनका बेटा शंकर मेडिकल कॉलेज में पढ़ता है, परंतु वह भी अपने पिता की इस रूढ़िवादी सोच का समर्थन करता है कि गृहस्थी चलाने के लिए औरतों का अधिक पढ़ा-लिखा होना आवश्यक नहीं है।

गोपालप्रसाद का आगमन और रूढ़िवादी बातचीत

बाबू गोपालप्रसाद और उनका बेटा शंकर रामस्वरूप के घर पहुँचते हैं। गोपालप्रसाद अत्यंत चतुर और अनुभवी व्यक्ति हैं, जबकि शंकर अपनी झुकी हुई कमर और खिसियाहट-भरी कमज़ोर आवाज़ के कारण एक रीढ़विहीन (कमज़ोर व्यक्तित्व वाले) नौजवान के रूप में दिखाई देता है। औपचारिक स्वागत और चाय-नाश्ते के बाद गोपालप्रसाद अचानक विषय बदलते हुए 'बिजनेस' यानी ब्याह की मुख्य बातचीत शुरु करते हैं। वे अपने पुराने ज़माने की जोशीली बातें करते हैं और वर्तमान शिक्षा पद्धति व लड़कियों की उच्च शिक्षा पर खुलकर व्यंग्य करते हैं।

गोपालप्रसाद का मानना है कि ऊँची तालीम पाना सिर्फ पुरुषों का अधिकार है और औरतों का काम केवल

बैठकर आपस में बहस करना। वह खुद वहाँ फोटो-एल्बम बेचता था। दूसरे नवयुवक भी उसी तरह के छोटे-मोटे काम करते थे। "हम लोग सीपियों का गूदा खाते हैं और दार्शनिक सिद्धांतों पर बहस करते हैं", वह कह रहा था। "इस चट्टान से इतनी प्रेरणा तो हमें मिलती ही है।" मुझे दिखाने के लिए उसने वहीं से एक सीपी लेकर उसे तोड़ा और उसका गूदा मुँह में डाल लिया।

1. शिक्षित नवयुवकों द्वारा "सीपियों का गूदा खाना और दर्शन पर बहस करना" समाज की किस दशा को दिखाता है?
(क) अत्यधिक संपन्नता (ख) बेकारी जनित विडंबना
(ग) धार्मिक अंधविश्वास (घ) पूर्ण आध्यात्मिक सुख

2. **अभिकथन (A) :** कन्याकुमारी के अनेक उच्च शिक्षित ग्रेजुएट नवयुवक पूरी तरह से बेकार या बेरोज़गार थे।
कारण (R): उनका मुख्य कार्य केवल फोटो-एल्बम बेचना और नौकरियों के लिए अर्जियाँ देना था।
(क) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।
(ख) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
(ग) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. स्थानीय नवयुवक की बातों को सुनकर लेखक के मन में उपजा मुख्य स्वर कैसा प्रतीत होता है?
(क) अत्यधिक उपहासात्मक व उपेक्षापूर्ण
(ख) सामाजिक यथार्थवादी व संवेदनशील
(ग) घोर अमानवीय व निंदनीय
(घ) अत्यंत प्रसन्नतापूर्ण व अभिप्रेरक

4. गद्यांश में आए 'शिक्षित' शब्द का सही और शुद्ध विलोम शब्द निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(क) कुशिक्षित (ख) विद्वान
(ग) साक्षर (घ) अशिक्षित

5. गद्यांश के अनुसार, कन्याकुमारी की आठ हज़ार की कुल आबादी में कितने शिक्षित नवयुवक बेकार थे?
(क) कम-से-कम चार-पाँच सौ नवयुवक
(ख) लगभग दो-तीन हज़ार नवयुवक
(ग) केवल आठ-दस गिने-चुने नवयुवक
(घ) पूरी आबादी के सभी मल्लाह और मणिकार

उत्तरः
1. (ख) बेकारी जनित विडंबना
2. (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
3. (ख) सामाजिक यथार्थवादी व संवेदनशील
4. (घ) अशिक्षित
5. (क) कम-से-कम चार-पाँच सौ नवयुवक

2. **उमा के कथन में (चारित्रिक-नैतिक अर्थ में)**: एकांकी के अंत में उमा जाते हुए गोपालप्रसाद को कहती है — "घर जाकर ज़रा यह पता लगाइएगा कि आपके लाडले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं — यानी बैकबोन, बैकबोन!" यहाँ रीढ़ की हड्डी का अर्थ है नैतिक साहस, आत्मसम्मान और चारित्रिक दृढ़ता। उमा व्यंग्य से कह रही है कि शंकर में न शारीरिक दृढ़ता है, न नैतिक।

इस प्रकार एकांकी का शीर्षक ही दोहरे अर्थ का वाहक है — एक शारीरिक और एक नैतिक।

3. "मेरी समझ में तो ये पढ़ाई-लिखाई के जंजाल आते नहीं।" प्रेमा की इस सोच से उस समय की स्त्री-शिक्षा की स्थिति के विषय में क्या पता चलता है?

उत्तरः

प्रेमा की यह सोच 1939 के भारतीय समाज में स्त्री-शिक्षा की दयनीय स्थिति को उजागर करती है:

1. उस समय अधिकांश महिलाएँ स्वयं अधिक पढ़ी-लिखी नहीं थीं, इसलिए उन्हें शिक्षा का महत्व समझ नहीं आता था। प्रेमा का "आ-ई पढ़ ली, गिनती सीख ली और बहुत हुआ तो 'स्त्री-सुबोधिनी' पढ़ ली" कहना यही दर्शाता है कि स्त्रियों की शिक्षा की सीमा बहुत संकुचित मानी जाती थी।
2. उस समय समाज में यह धारणा थी कि लड़कियों को घर-गृहस्थी के लिए ही तैयार करना है, इसलिए उच्च शिक्षा को उनके लिए "जंजाल" यानी बोझ माना जाता था।
3. प्रेमा यह भी मानती है कि ज्यादा पढ़ी-लिखी होने से लड़की का विवाह कठिन हो जाता है — "इट्रेंस ही पास करा लेते — लड़की अपने हाथ रहती, और इतनी परेशानी न उठानी पड़ती।" यह दिखाता है कि शिक्षा को विवाह की बाधा समझा जाता था।
4. इससे यह भी पता चलता है कि उस समय स्त्री-शिक्षा को लेकर स्वयं महिलाओं में जागरुकता नहीं थी। पुरुष समाज की रुढ़िवादी सोच इतनी गहरी थी कि महिलाएँ भी उसी सोच को अपनाकर चलती थीं।

4. लेखक ने 'रीढ़ की हड्डी' शब्द को एकांकी के शीर्षक के रूप में क्यों चुना होगा? यदि आप इस एकांकी का दूसरा शीर्षक रखना चाहें, जो इसकी मुख्य बात को दर्शाए, तो वह क्या होगा और क्यों?

उत्तरः

लेखक जगदीशचंद्र माथुर ने 'रीढ़ की हड्डी' शीर्षक इसलिए चुना होगा क्योंकि यह शब्द एकांकी के केंद्रीय विचार को बहुत सटीक और प्रतीकात्मक रूप से व्यक्त करता है। जिस प्रकार शरीर में रीढ़ की हड्डी के बिना मनुष्य सीधा खड़ा नहीं हो सकता, उसी प्रकार आत्मसम्मान और नैतिक साहस के बिना व्यक्ति का व्यक्तित्व खोखला होता है। उमा इसी दृढ़ता का प्रतीक है, जबकि शंकर इसके अभाव का। यह शीर्षक दोहरे अर्थ में काम करता है — शारीरिक और नैतिक — जो एकांकी की विषयवस्तु से पूरी तरह मेल खाता है।

वैकल्पिक शीर्षकः 'उमा की आवाज़'

यह शीर्षक इसलिए उपयुक्त होगा क्योंकि पूरी एकांकी उमा के साहसी व्यक्तित्व और उसके आत्मसम्मान के इर्द-गिर्द घूमती है। जब वह अंत में खुलकर बोलती है और समाज की अनुचित परंपराओं को चुनौती देती है, तो वह केवल एक लड़की की आवाज़ नहीं, बल्कि उस युग की हर पढ़ी-लिखी स्त्री की आवाज़ बन जाती है।

विधा से संवाद

एकांकी की पड़ताल

1. आप जानते हैं कि 'रीढ़ की हड्डी' एक एकांकी है। एकांकी में भी एक कहानी ही होती है, लेकिन एकांकी की रुपरेखा कहानी से थोड़ी अलग होती है।
आगे 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी से संबंधित कुछ बिंदु दिए गए हैं। एकांकी में इन बिंदुओं से संबंधित एक-एक उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए।
    1. एकांकी का नाम
    2. लेखक का नाम
    3. पात्र
    4. परिवेश/देश-काल
    5. रंग-निर्देश/मंच-निर्देश
    6. संवाद-निर्देश
    7. समस्या
    8. संवाद
    9. मुख्य विचार
    10. समाधान/परिणाम

उत्तरः

1. **एकांकी का नाम**: रीढ़ की हड्डी
2. **लेखक का नाम**: जगदीशचंद्र माथुर
3. **पात्र**: उमा (लड़की), रामस्वरुप/बाबू (लड़की का पिता), प्रेमा (लड़की की माँ), शंकर (लड़का), गोपालप्रसाद (लड़के का पिता), रतन (रामस्वरुप का घरेलू सहायक)
4. **परिवेश/देश-काल**: स्वतंत्रता पूर्व भारत (1939), एक मध्यवर्गीय हिंदी भाषी परिवार का साधारण घर जहाँ परंपरागत विवाह व्यवस्था और स्त्री-शिक्षा को लेकर रुढ़िवादी सोच हावी है।
5. **रंग-निर्देश/मंच-निर्देश**: (मामूली तरह से सजा हुआ एक कमरा। अंदर के दरवाजे से आते हुए जिन महाशय की पीठ नजर आ रही है, वे अधेड़ उम्र के मालूम होते हैं। एक तख्त को पकड़े हुए पीछे की ओर चलते-चलते कमरे में आते हैं।)
6. **संवाद-निर्देश**: (जरा तेज आवाज़ में), (बात काटकर), (चौंककर खड़े हो जाते हैं), (हल्की लेकिन मजबूत आवाज़ में) — ये संवाद-निर्देश पात्रों की मनःस्थिति और स्वर का बोध कराते हैं।

घर सँभालना है। वे रामस्वरूप से साफ़ शब्दों में कहते हैं कि लड़की का खूबसूरत होना निहायत ज़रूरी है, चाहे वह पाउडर लगाए या सादगी से रहे। रामस्वरूप भी उनकी हाँ में हाँ मिलाते हुए अपनी बेटी को बुलाने का प्रबंध करते हैं।

उमा का प्रवेश और तीखी प्रतिक्रिया

उमा हाथ में पान की तश्तरी लिए अत्यंत सादगी के कपड़ों में और गर्दन झुकाए कमरे में प्रवेश करती है। जैसे ही वह अपना चेहरा थोड़ा उठाती है, गोपालप्रसाद और शंकर उसकी नाक पर सोने के रिम वाला चश्मा देखकर चौंक उठते हैं। रामस्वरूप बात को सँभालने के लिए बहाना बनाते हैं कि पिछले महीने आँखें दुखने के कारण उसे कुछ दिनों के लिए चश्मा लगाना पड़ा है। इसके बाद गोपालप्रसाद उमा की चाल, चेहरे की छवि और उसके गाना-बजाना जानने की परीक्षा लेते हैं। उमा सितार के साथ मीरा का प्रसिद्ध भजन गाकर अपनी संगीत कला का परिचय देती है।

जब गोपालप्रसाद उमा से उसके द्वारा जीते गए इनामों और सिलाई-पेंटिंग के विषय में रूखेपन से पूछते हैं, तो उमा काफी देर तक अपनी गर्दन झुकाए चुप रहती है। पिता के बार-बार टोकने पर उमा अत्यंत हल्की परंतु बेहद मजबूत आवाज़ में कहती है कि जब मेज़-कुर्सी बिकती है, तो दुकानदार खरीदार से कुछ नहीं पूछता, केवल मेज़-कुर्सी को दिखा देता है। वह गोपालप्रसाद को खरीदार और खुद को भेड़-बकरी समझने वाले कसाई की उपमा देकर उनकी दकियानूसी नाप-तोल पर कड़ा प्रहार करती है।

सत्य का उद्घाटन

उमा के इस कड़े रुख से गोपालप्रसाद गुस्से में आ जाते हैं और रामस्वरूप से अपनी इज़्ज़त उतारने का कारण पूछते हैं। तब उमा पूरी प्रखरता के साथ सत्य का उद्घाटन करते हुए कहती है कि उसने कॉलेज में पढ़कर बी.ए. पास किया है, जो कोई पाप या चोरी नहीं है। वह शंकर के चरित्र की पोल खोलते हुए बताती है कि यही साहबजादे पिछली फरवरी में लड़कियों के हॉस्टल के इर्द-गिर्द ताक-झाँक करते हुए पकड़े गए थे और वहाँ से अपना मुँह छिपाकर कायरों की तरह भागे थे।

एकाकी का अंत

लड़की को बी.ए. पास जानकर गोपालप्रसाद को गहरा धक्का लगता है कि उनके साथ धोखा हुआ है। वे गुस्से में अपनी छड़ी उठाते हैं और अपने बेटे के साथ वहाँ से जाने लगते हैं। जाते-जाते उमा उन पर अंतिम और सबसे तीखा व्यंग्य कसती है कि घर जाकर ज़रा यह पता लगाइएगा कि आपके लाडले बेटे के रीढ़ की हड्डी (बैकबोन) है भी या नहीं! मेहमानों के जाने के बाद रामस्वरूप हताश होकर कुर्सी पर बैठ जाते हैं, उमा की खामोशी सिसकियों में बदल जाती है और इसी बीच रतन बाज़ार से 'मक्खन' लेकर लौटता है, जिसके साथ ही परदा गिर जाता है।

4. कठिन शब्दार्थ

पृष्ठ 101

1. घरेलू सहायक – घर के काम में मदद करने वाला नौकर, सेवक
2. अधेड़ – आधी उम्र का, ढलती उम्र का
3. तख्त – लकड़ी की बड़ी चौकी, सिंहासन
4. मेजपोश – मेज को ढकने वाला कपड़ा
5. गंदुमी – गेहुँए रंग का
6. व्यस्त – काम में लगा हुआ, मसरुफ़

पृष्ठ 102

7. डाट – टेक, अटकाव
8. लाडली – अत्यधिक प्यारी, दुलारी
9. मर्ज – बीमारी, रोग
10. जंजाल – झंझट, झमेला, संसार का बखेड़ा
11. लच्छन (लक्षण) – तौर-तरीके, आचरण, विशेषता
12. ठठोली – हँसी, परिहास

पृष्ठ 103

13. नफरत – घृणा, चिढ़
14. कारोबार – व्यवसाय, व्यापार
15. परेशानी – दिक्कत, मुसीबत, अड़चन
16. कतई – बिल्कुल, पूरी तरह
17. मर्ज़ी – इच्छा, रज़ामंदी
18. नखरों – चोंचलों, नज़ाकत, नखरा

पृष्ठ 104

19. करीने/करीना – ढंग, क्रम, मेल, समानता
20. दकियानूसी – पुराने विचार का, पुराना
21. तालीम – शिक्षा
22. मजबूरी – विवशता, लाचारी
23. चौपट – नष्ट, चारों ओर से खुला हुआ

पृष्ठ 105

24. दस्तक – खटखटाना, हाथ का हलका आघात या धक्का, ताली
25. फितरती – चालबाज, प्रकृतिगत
26. खीस निपोरना – इस तरह हँसना कि दाँत दिखाई दें, बेढंगी हँसी हँसना
27. खासियत/खासीयत – विशेषता, गुण, प्रभाव, प्रकृति, स्वभाव
28. तशरीफ़ – आदर, सम्मान, महत्व
29. मुखातिब – संबोधन करने वाला, बात करने वाला
30. मार्जिन – सीमा, किनारा

1. पानी पर 'सोना ढुल आने' के बाद 'लहू बहता नजर आना' किस प्राकृतिक सत्य को दर्शाता है?
(क) पानी का पूरी तरह प्रदूषित होना
(ख) बादलों में भयानक बिजली का कड़कना
(ग) समुद्र के भीतर ज्वालामुखी का फटना
(घ) सूर्यास्त कालीन तीव्र रंग-परिवर्तन

2. **अभिकथन (A):** सूर्यास्त के समय पानी के बदलते रंगों को एक निश्चित नाम देना बिल्कुल असंभव था।

3. **कारण (R):** सूर्य का गोला बहुत ही धीरे-धीरे बिना कोई रंग बदले पानी में सीधा समा रहा था।
(क) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।
(ख) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
(ग) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

4. इस गद्यांश में सूर्य के डूबने के दृश्यों का अंकन किस प्रकार की शैली में किया गया है?
(क) शुष्क व नीरस (ख) चित्रात्मक व सजीव
(ग) अत्यंत रहस्यमयी (घ) पूर्णतः वैज्ञानिक

5. गद्यांश में आए 'असंभव' शब्द में कौन-सा शुद्ध तत्सम मूल शब्द और उपसर्ग प्रयुक्त है?
(क) अ + सम्भव (ख) अस + भव
(ग) अस्म + भव (घ) अ + सम्भ

6. गद्यांश के अनुसार, सूर्यास्त के अंत में लहू जैसा लाल रंग अंततः किस रंग में बदल गया?
(क) पहले बैज़नी और फिर पूरी तरह काला
(ख) पहले गहरा पीला और फिर चमकीला हरा
(ग) पहले एकदम सफ़ेद और फिर गहरा सुरमई
(घ) पहले धुंधला खाकी और फिर सिंदूरी लाल

उत्तरः
1. (घ) सूर्यास्त कालीन तीव्र रंग-परिवर्तन
2. (ख) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
3. (ख) चित्रात्मक व सजीव
4. (क) अ + सम्भव
5. (क) पहले बैज़नी और फिर पूरी तरह काला

गद्यांश 5

यूँ पहले भी समुद्र-तट पर कई-कई रंगों की रेत देखी थी- सुरमई, खाकी, पीली और लाल। मगर जैसे रंग उस में थे, वैसे मैंने पहले कभी कहीं की रेत में नहीं देखे थे। कितने ही अनाम रंग थे वे। एक-एक इंच पर एक-दूसरे से अलग... और एक-एक रंग कई-कई रंगों की झलक लिए हुए। काली घटा और घनी लाल आँधी को मिलाकर रेत के आकार में ढाल देने से रंगों के जितनी तरह के अलग-अलग सम्मिश्रण पाए जा सकते थे, वे सब वहाँ थे- और उनके अतिरिक्त भी बहुत-से रंग थे।

1. लेखक का "रेत के रंगों को अनाम कहना" किस आंतरिक विस्मयकारी अनुभूति की ओर संकेत करता है?
(क) रंगों की अप्रतिम विशिष्टता
(ख) रंगों का बहुत फीका होना
(ग) रेत का बहुत गंदा होना
(घ) दृष्टि का अचानक कमज़ोर होना

2. कन्याकुमारी के तट की रेत के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन पूर्णतः सत्य है?
(क) यहाँ की रेत केवल एक ही साधारण खाकी रंग की समरूप चादर जैसी थी।
(ख) यहाँ की रेत एक-एक इंच पर कई अनाम रंगों का अद्भुत सम्मिश्रण थी।
(ग) यहाँ की रेत केवल कृत्रिम रसायनों को मिलाकर रंगीन बनाई गई थी।
(घ) यहाँ की रेत का रंग पूरे दिन में एक बार भी नहीं बदलता था।

3. 'काली घटा और घनी लाल आँधी को मिलाकर रेत में ढालना' पंक्ति में कौन-सा गुण मुखरित है?
(क) तार्किकता (ख) कल्पनाश्रयी सौंदर्य
(ग) वैज्ञानिक सत्य (घ) घोर निराशा

4. गद्यांश में प्रयुक्त 'सम्मिश्रण' शब्द का सर्वाधिक उपयुक्त और सटीक अर्थ क्या होगा?
(क) अलग-अलग होना (ख) पूरी तरह नष्ट होना
(ग) भली-भांति मिलना (घ) रंगहीन हो जाना

5. लेखक ने कन्याकुमारी से पहले अपने जीवन में समुद्र-तटों पर मुख्य रूप से किस-किस रंग की रेत देखी थी?
(क) हरी, नीली, जामुनी और चमकीली सफ़ेद
(ख) सिंदूरी, गुलाबी, बैज़नी और कत्थई
(ग) केवल घनी काली और एकदम मटमैली
(घ) सुरमई, खाकी, पीली और लाल

उत्तरः
1. (क) रंगों की अप्रतिम विशिष्टता
2. (ख) यहाँ की रेत एक-एक इंच पर कई अनाम रंगों का अद्भुत सम्मिश्रण थी।
3. (ख) कल्पनाश्रयी सौंदर्य
4. (ग) भली-भांति मिलना
5. (घ) सुरमई, खाकी, पीली और लाल

गद्यांश 6

ग्रेजुएट नवयुवक मुझे बता रहा था कि कन्याकुमारी की आठ हजार की आबादी में कम-से-कम चार-पाँच सौ शिक्षित नवयुवक ऐसे हैं जो बेकार हैं। उनमें से सौ के लगभग ग्रेजुएट हैं। उनका मुख्य धंधा है नौकरियों के लिए अर्जियाँ देना और

यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि शंकर पूरी एकांकी में एक कायर, झुकी कमर वाले और बिना किसी दृढ़ मत के युवक के रूप में चित्रित है। उसने लड़कियों के हॉस्टल के इर्द-गिर्द घूमकर और वहाँ से भागकर नैतिक दुर्बलता का परिचय दिया। उमा का यह वाक्य उसी चारित्रिक कमज़ोरी को उजागर करता है।

4. "जी हाँ, मैं कॉलेज में पढ़ी हूँ। मैंने बी.ए. पास किया है।" उमा की दृष्टि में शिक्षा प्राप्त करने का सही अर्थ है?
(क) बड़ी-बड़ी डिग्री प्राप्त करना
(ख) कॉलेज में पढ़ना और नौकरी पाना
(ग) माता-पिता और पति को प्रसन्न रखना
(घ) आत्मबल और स्वतंत्र विचार रखना

उत्तरः
(घ) आत्मबल और स्वतंत्र विचार रखना
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि उमा अपनी शिक्षा का परिचय देते समय यह नहीं कहती कि उसे नौकरी मिलेगी या डिग्री से फायदा होगा। वह कहती है कि उसने कोई पाप नहीं किया, कोई कायरता नहीं दिखाई — अर्थात् उसकी शिक्षा ने उसे आत्मसम्मान, साहस और स्वतंत्र सोच दी है। यही उमा के लिए शिक्षा का सही अर्थ है।

5. गोपालप्रसाद और रामस्वरुप में क्या-क्या समानताएँ हैं?
(क) दोनों प्रगतिशील हैं और रूढ़ियों को नकारते हैं।
(ख) दोनों दिखावे और परंपरा के शिकार हैं।
(ग) दोनों शिक्षा और रूढ़ियों के समर्थक हैं।
(घ) दोनों संगीत और स्वादिष्ट भोजन के प्रेमी हैं।

उत्तरः
(ख) दोनों दिखावे और परंपरा के शिकार हैं।
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि रामस्वरुप बाहर से आधुनिक दिखते हैं, उमा को बी.ए. तक पढ़ाया है, लेकिन विवाह के लिए वे उसकी शिक्षा छुपाते हैं। गोपालप्रसाद पढ़े-लिखे वकील हैं, फिर भी कम पढ़ी-लिखी बहू चाहते हैं। दोनों ही परंपरागत सोच के शिकार हैं और समाज के सामने दिखावा करते हैं।

6. इस एकांकी की संवाद शैली मुख्यतः कैसी है?
(क) औपचारिक और शुष्क
(ख) स्वाभाविक और व्यंग्यपूर्ण
(ग) काव्यात्मक और प्रश्नात्मक
(घ) भावुक और संक्षिप्त

उत्तरः
(ख) स्वाभाविक और व्यंग्यपूर्ण
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि एकांकी के संवाद रोज़मर्रा की बोलचाल की भाषा में हैं, जिनमें पात्रों का स्वभाव और परिस्थिति स्वाभाविक रूप से उभरती है। साथ ही गोपालप्रसाद, रामस्वरुप और उमा के संवादों में सामाजिक कुरीतियों पर तीखा व्यंग्य भी निरंतर चलता रहता है।

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. बाबू रामस्वरुप समाज में आधुनिक व्यवहार का दिखावा करते हैं, जबकि उनके विचार रुढ़िवादी हैं। इस अंतर्द्वंद्व के उदाहरण एकांकी में से खोजकर लिखिए।
(संकेत– उमा के साथ उनका व्यवहार, विवाह के लिए दिखावे करना किंतु इन प्रयासों को छिपाने की चेष्टा करना आदि।)

उत्तरः
बाबू रामस्वरुप के चरित्र में आधुनिकता का दिखावा और भीतर से रुढ़िवादी सोच का यह अंतर्द्वंद्व एकांकी में कई स्थानों पर स्पष्ट होता है:
1. रामस्वरुप ने उमा को बी.ए. तक पढ़ाया, जो आधुनिक सोच का प्रतीक है। लेकिन जब विवाह का अवसर आया, तो उन्होंने गोपालप्रसाद से कहा कि उमा केवल मैट्रिक तक पढ़ी है। यह उनकी रुढ़िवादी मानसिकता को उजागर करता है — वे जानते थे कि ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की की माँग नहीं होगी।
2. रामस्वरुप गोपालप्रसाद की दकियानूसी बातों पर मन ही मन नाराज़ होते हैं, "गुस्सा तो मुझे बहुत आता है इनके दकियानूसी खयालों पर" — लेकिन ऊपर से "जी हाँ, जी हाँ" कहकर उनसे सहमति जताते रहते हैं। आधुनिक विचार मन में हैं, लेकिन व्यवहार में परंपरा का पालन करते हैं।
3. उमा को "ज़रा करीने से" और "थोड़ा-सा गा देगी" जैसी हिदायतें देना — अर्थात् पिता के रूप में वे उमा की शिक्षा और योग्यता से परिचित हैं, परंतु विवाह की बैठक में उसे केवल सजी-सँवरी और गाने वाली लड़की के रूप में प्रस्तुत करना चाहते हैं। यह स्पष्ट दिखावा है।
4. उमा के चश्मे पर जब गोपालप्रसाद चौंके, तो रामस्वरुप ने घबराकर झूठ बोला कि "पिछले महीने आँखें दुखनी आई थीं।" यदि वे सच में आधुनिक होते तो गर्व से कहते कि पढ़ाई के कारण चश्मा लगा है।

2. 'रीढ़ की हड्डी' का संदर्भ दो अलग-अलग पात्रों के लिए भिन्न-भिन्न अर्थों में आया है, उनकी पहचान कीजिए और लिखिए।

उत्तरः
एकांकी में 'रीढ़ की हड्डी' शब्द दो पात्रों के संदर्भ में भिन्न-भिन्न अर्थों में आया है:
1. **शंकर के संदर्भ में (शारीरिक अर्थ में)**: एकांकी में शंकर के बारे में उसके पिता गोपालप्रसाद कहते हैं कि "झुककर क्यों बैठते हो? ... तुम्हारे दोस्त ठीक कहते हैं कि शंकर की 'बैकबोन'..." — यहाँ रीढ़ की हड्डी का अर्थ शारीरिक रूप से झुकी कमर से है। शंकर शारीरिक रूप से कमजोर और झुके स्वभाव का युवक है।

पृष्ठ 106

31. बालाई – ऊपर का हिस्सा
32. फर्राटे – तेजी से, बिना रुके बोलना या लिखना
33. मुकाबिला (मुकाबला) – बराबरी करना, सामना
34. जब्त – धीरज रखना, खुद पर काबू पाना
35. तकल्लुफ़ – बनावट, शिष्टाचार
36. काबिल – योग्य, समर्थ
37. हैसियत – आर्थिक स्थिति, औकात, सामर्थ्य

पृष्ठ 107

38. जायका – स्वाद, मज़ा
39. आमदनी – आय, कमाई

पृष्ठ 108

40. माफ़िक – अनुकूल, अनुसार
41. बेढब – अजीब, भद्दा, अनूठा
42. निहायत – अत्यधिक, अत्यंत, बहुत ज्यादा
43. राजी – सहमत, तैयार
44. रस्म – प्रथा, रिवाज
45. एहसान – उपकार, भलाई
46. जायचा – जन्मपत्री
47. भनक – कानों में पड़ने वाली हल्की आवाज़, सुनाई देना

पृष्ठ 109

48. ग्रेजुएट – स्नातक, कॉलेज पास
49. मर्दों – पुरुषों
50. सकपकाकर – घबराकर, असहज होना
51. अर्ज – निवेदन, प्रार्थना, चौड़ाई

पृष्ठ 110

52. छवि – सुंदरता, कांति, चमक
53. तल्लीनता – मग्न होना, गहरा ध्यान
54. मस्तक – सिर, माथा
55. झेंपती – शरमाती हुई, लजाती हुई
56. जिम्मे – अधीन, दायित्व

पृष्ठ 111

57. अधीर – धैर्य रहित, उतावला, आकुल, दृढ़ता रहित
58. खरीदार – ग्राहक, मोल लेने वाला
59. इज्जत – सम्मान, प्रतिष्ठा
60. साहबजादे – सुपुत्र, बेटा

पृष्ठ 112

61. दगा – धोखा, छल
62. ठिकाना – सीमा, अंत
63. बेबसी – विवशता, लाचारी
64. खामोशी – मौन, सन्नाटा
65. तबदील – बदलना, परिवर्तित होना
66. सिसकियों – रोने की धीमी आवाज़

5. पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. एकांकी 'रीढ़ की हड्डी' का शीर्षक किसका प्रतीक है?
   (क) शरीर के एक आवश्यक अंग का
   (ख) व्यक्ति की ऊँचाई के आधार का
   (ग) आत्म-सम्मान और नैतिक दृढ़ता का
   (घ) शारीरिक शक्ति और परिश्रम का

   उत्तरः
   (ग) आत्म-सम्मान और नैतिक दृढ़ता का
   यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि एकांकी में 'रीढ़ की हड्डी' शब्द का प्रयोग केवल शारीरिक अर्थ में नहीं, बल्कि व्यक्ति के आत्म-सम्मान, नैतिक साहस और दृढ़ चरित्र के प्रतीक के रुप में हुआ है। उमा अंत में शंकर के लिए कहती है कि पता लगाइए उसकी 'बैकबोन' है या नहीं — यहाँ रीढ़ की हड्डी का अर्थ चरित्र की दृढ़ता है। उमा स्वयं इसी दृढ़ता और आत्म-सम्मान का प्रतिनिधित्व करती है।

2. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में किस पर व्यंग्य किया गया है?
   (क) पात्रों की निर्धनता और लाचारी पर
   (ख) पात्रों की भाषा और हास्य पर
   (ग) विवाह और अशिक्षा पर
   (घ) समाज की अनुचित मान्यताओं पर

   उत्तरः
   (घ) समाज की अनुचित मान्यताओं पर
   यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि एकांकी में मुख्यतः उन सामाजिक मान्यताओं पर व्यंग्य किया गया है जो स्त्री-शिक्षा को हीन मानती हैं, विवाह में लड़कियों को वस्तु की तरह देखती हैं, और पढ़ी-लिखी लड़की को अयोग्य समझती हैं। गोपालप्रसाद जैसे पढ़े-लिखे व्यक्ति का यह कहना कि "ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की नहीं चाहिए" — यही अनुचित सामाजिक मान्यता है जिस पर व्यंग्य है।

3. "घर जाकर ज़रा यह पता लगाइएगा कि आपके लाडले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं" यह वाक्य शंकर की किस छवि को उजागर करता है?
   (क) नैतिक साहस की कमी और चारित्रिक दुर्बलता
   (ख) अनुभव और विवेक की कमी
   (ग) चारित्रिक दृढ़ता और शारीरिक दुर्बलता
   (घ) उदासीनता और एकाकीपन

   उत्तरः
   (क) नैतिक साहस की कमी और चारित्रिक दुर्बलता

7. **समस्या**: समाज में स्त्री-शिक्षा के प्रति रूढ़िवादी सोच और विवाह में लड़कियों को वस्तु की भाँति देखने की प्रवृत्ति। गोपालप्रसाद का यह कहना — "हमें ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की नहीं चाहिए" — यही मुख्य समस्या है।
8. **संवाद**: उमा का यह संवाद — "क्या जवाब दूँ, बाबूजी! जब कुर्सी-मेज बिकती है तब दुकानदार कुर्सी-मेज से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ खरीदार को दिखला देता है।" — यह एकांकी का सबसे महत्त्वपूर्ण और भावपूर्ण संवाद है।
9. **मुख्य विचार**: स्त्री-शिक्षा समाज के लिए अनिवार्य और सम्मानजनक है। पढ़ी-लिखी स्त्री आत्मनिर्भर, आत्मसम्मान से पूर्ण और साहसी होती है। परंपरागत विवाह व्यवस्था में स्त्री को वस्तु मानना अनुचित है।
10. **समाधान/परिणाम**: उमा के साहसपूर्ण और तीखे संवादों से गोपालप्रसाद और शंकर लज्जित होकर चले जाते हैं। एकांकी का अंत यह संदेश देता है कि स्त्री यदि शिक्षित और आत्मसम्मानी हो, तो वह समाज की अनुचित परंपराओं का साहस से सामना कर सकती है।

रंग-निर्देश

1. एकांकी की शुरुआत कुछ इस तरह से होती है—
(मामूली तरह से सजा हुआ एक कमरा। अंदर के दरवाजे से आते हुए जिन महाशय की पीठ नजर आ रही है, वे अधेड़ उम्र के मालूम होते हैं। एक तख्त को पकड़े हुए पीछे की ओर चलते-चलते कमरे में आते हैं। तख्त का दूसरा सिरा रतन ने पकड़ रखा है।)
इस रंग-निर्देश द्वारा एकांकी की पृष्ठभूमि की रचना की गई है, जहाँ से एकांकी आगे बढ़ती है। एकांकी में स्थान, परिवेश, सामाजिक स्थिति आदि के विषय में पाठक और निर्देशक को सटीक जानकारी देने के लिए एकांकिकार/नाटककार प्रायः ऐसे रंग-निर्देशों का प्रयोग करता है। मंचन के समय निर्देशक के पास यह छूट होती है कि वह देश-काल और वातावरण के अनुसार मंच-सज्जा, प्रकाश, पात्रों के वस्त्र आदि में आवश्यक परिवर्तन कर सकता है।
अब इस एकांकी को कक्षा में प्रस्तुत करने का समय है। अपने समूह के साथ मिलकर एकांकी के किसी एक दृश्य का चुनाव कीजिए। उसकी तैयारी कीजिए और कक्षा में उसे प्रस्तुत कीजिए।
(संकेत— (i) समूह बनाइए और उचित हाव-भाव द्वारा उस दृश्य का अभिनय कीजिए। (ii) आप अपनी आवश्यकता के अनुसार दिए गए रंग-निर्देश में परिवर्तन भी कर सकते हैं।)

उत्तरः
यह एक गतिविधि-आधारित प्रश्न है। नीचे मंचन के लिए मार्गदर्शन दिया जा रहा है।

अनुशंसित दृश्य — उमा का साहसपूर्ण संवाद (एकांकी का अंतिम दृश्य)

यह दृश्य एकांकी का सबसे प्रभावशाली और विचारोत्तेजक भाग है। इसमें उमा, रामस्वरूप, गोपालप्रसाद और शंकर — चारों पात्र मंच पर होते हैं।

मंच-सज्जा संबंधी सुझावः
1. मंच पर एक साधारण कमरे का दृश्य — तख्त, कुर्सियाँ और एक मेज।
2. पान की तश्तरी लिए उमा का प्रवेश सादे वेश में।
3. गोपालप्रसाद के हाथ में छड़ी।

हाव-भाव संबंधी सुझावः
1. उमा की आवाज़ पहले धीमी, फिर दृढ़ और साहसपूर्ण।
2. गोपालप्रसाद क्रोध और आश्चर्य दोनों दिखाएँ।
3. शंकर सिर झुकाए, संकुचित मुद्रा में।
4. रामस्वरूप घबराए हुए और चुप।

मेरी टिप्पणी

1. "जी हाँ, जाइए, जरूर चले जाइए! लेकिन घर जाकर ज़रा यह पता लगाइएगा कि आपके लाडले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं— यानी बैकबोन, बैकबोन!"
उपर्युक्त वाक्य को ध्यान से पढ़िए। यह वाक्य उमा द्वारा शंकर पर की गई एक टिप्पणी है जो एक व्यंग्य की तरह है। 'टिप्पणी' किसी व्यक्ति, विषय या घटना पर व्यक्त की गई एक संक्षिप्त राय, स्पष्टीकरण या विचार होता है। यह किसी के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी देने, किसी मुद्दे पर नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करने या किसी संदर्भ पर विचारों की अभिव्यक्ति होती है, जो पाठक को उस विषय पर एक नया दृष्टिकोण देती है।
टिप्पणी की कुछ विशेषताएँ हैं—
- संक्षिप्तता — इसमें विषय के मुख्य बिंदुओं को कम शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है।
- स्पष्टता — भाषा सरल, स्पष्ट और तर्कपूर्ण होनी चाहिए।
- व्यक्तिपरकता — इसमें व्यक्ति के विचारों और सुझावों को शामिल किया जाता है।

अब आप उमा द्वारा शंकर के लिए कही गई उपर्युक्त बात पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए इस पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तरः

उमा की व्यंग्योक्तिः एक टिप्पणी

उमा द्वारा शंकर के लिए कहा गया यह वाक्य केवल एक व्यक्तिगत टिप्पणी नहीं, बल्कि समाज के उस वर्ग पर करारा व्यंग्य है जो बाहर से सम्भ्रांत दिखता है, किंतु भीतर से नैतिक रूप से खोखला है।

शंकर एक मेडिकल कॉलेज का छात्र है, पर उसका आचरण न तो शिक्षित व्यक्ति जैसा है, न साहसी व्यक्ति जैसा। वह पूरी एकांकी में झुकी कमर, खीसें निपोरते हुए, पिता की हर बात पर हाँ-में-हाँ मिलाते दिखाई देता है। लड़कियों के हॉस्टल के इर्द-गिर्द घूमना और वहाँ से भागना — यह उसकी चारित्रिक दुर्बलता को उजागर करता है।

उमा का यह व्यंग्य इसलिए और अधिक प्रभावशाली है क्योंकि वह शंकर को उसी भाषा में जवाब देती है जो उसके पिता ने उसके लिए प्रयोग की थी — 'बैकबोन'। इस प्रकार उमा ने न केवल अपना बचाव किया, बल्कि समाज में पुरुष-श्रेष्ठता के उस दंभ को भी तोड़ा जो बिना किसी नैतिक आधार के स्त्री को कमतर आँकता है।

विषयों से संवाद

तुलना और विचार

1. "गोपालप्रसाद : भला पूछिए इन अक्ल के ठेकेदारों से कि क्या लड़कों की पढ़ाई और लड़कियों की पढ़ाई एक बात है।"
एकांकी में उन पंक्तियों को खोजिए जहाँ एकांकी के पात्रों के व्यवहार में लड़कियों तथा लड़कों के प्रति भिन्न-भिन्न दृष्टि अभिव्यक्त हुई है। अब यह भी लिखिए कि आप इस भिन्नता को किस प्रकार समझते हैं?

उत्तरः
एकांकी में लड़कों और लड़कियों के प्रति भिन्न दृष्टि दर्शाने वाली पंक्तियाँ:

1. गोपालप्रसाद कहते हैं — "अरे, मर्दों का काम तो है ही पढ़ना और काबिल होना। अगर औरतें भी वही करने लगीं, अंग्रेजी अखबार पढ़ने लगीं और 'पालिटिक्स' वगैरह पर बहस करने लगीं तब तो हो चुकी गृहस्थी।" — यहाँ शिक्षा को केवल पुरुषों का अधिकार माना गया है।
2. शंकर बी.एससी. के बाद मेडिकल कॉलेज में पढ़ता है, पर उसके पिता चाहते हैं कि बहू अधिकतम मैट्रिक तक पढ़ी हो — "बस हद से हद मैट्रिक-पास होनी चाहिए।" यह दोहरा मापदंड है।
3. रामस्वरूप ने उमा को बी.ए. तक पढ़ाया, लेकिन विवाह के लिए उसकी शिक्षा छुपाई। अर्थात् लड़के की शिक्षा तो गर्व की बात है, लड़की की शिक्षा शर्म की।
4. गोपालप्रसाद यह भी कहते हैं — "मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं; शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं।" यह प्रकृति के उदाहरण देकर स्त्री को कमतर सिद्ध करने का प्रयास है।

इस भिन्नता को मैं इस प्रकार समझता/समझती हूँ: यह भिन्नता समाज की उस पितृसत्तात्मक सोच की देन है जो स्त्री को केवल घर-गृहस्थी के लिए बनाती है। यह न तो तर्कसंगत है और न न्यायसंगत। यदि शिक्षा पुरुषों को योग्य बनाती है, तो वही शिक्षा स्त्रियों को भी सशक्त बनाएगी। उमा इसी सोच को तोड़ती है और सिद्ध करती है कि पढ़ी-लिखी स्त्री अपने अधिकारों की रक्षा कर सकती है।

2. "मुझे अपनी इज्जत, अपने मान का खयाल तो है। लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह अपना मुँह छिपाकर भागे थे।"
एकांकी में उमा अपने अधिकार और विचार खुलकर व्यक्त करती है। इससे उमा के व्यक्तित्व के विषय में क्या-क्या पता चलता है? आपके विचार से उसके व्यक्तित्व में ये विशेषताएँ कैसे आई होंगी?
(संकेत– शिक्षा, परिवार का व्यवहार आदि)

उत्तरः
उमा के व्यक्तित्व की विशेषताएँ:

1. **आत्मसम्मान**: उमा स्वयं को वस्तु नहीं मानती। जब गोपालप्रसाद उसे परखने लगते हैं, तो वह कुर्सी-मेज की बिक्री से तुलना करके अपनी पीड़ा व्यक्त करती है। यह उसके उच्च आत्मसम्मान का परिचायक है।
2. **साहस और निडरता**: वह बड़ों के सामने भी सत्य बोलने से नहीं डरती। पिता के इशारों की परवाह न करते हुए वह अपनी बात कहती है।
3. **वाक्पटुता और तर्कशक्ति**: उमा के संवाद तीखे, तर्कपूर्ण और सटीक हैं। वह शंकर के चरित्र का पर्दाफाश भी करती है।
4. **स्वाभिमान और सत्यनिष्ठा**: वह स्वीकार करती है कि उसने बी.ए. किया है — "कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की।" शिक्षा को वह अपनी उपलब्धि मानती है, बोझ नहीं।

ये विशेषताएँ उसमें कैसे आई होंगी:

1. **शिक्षा के कारण**: बी.ए. तक की पढ़ाई ने उसे न केवल ज्ञान दिया, बल्कि स्वतंत्र सोच और आत्मनिर्भरता भी दी। कॉलेज के वातावरण में उसने अपने अधिकारों को समझा।
2. **पिता का योगदान**: यद्यपि रामस्वरुप में अंतर्द्वंद्व है, किंतु उन्होंने उमा को पढ़ाया — यह उनका सकारात्मक योगदान है। इससे उमा को अपने व्यक्तित्व के विकास का अवसर मिला।
3. **स्वयं का संकल्प**: उमा ने समाज की बाधाओं के बावजूद पढ़ाई की और अपनी पहचान बनाई। यही उसके व्यक्तित्व की असली शक्ति है।

सृजन

एकांकी का विस्तार

"रतन : बाबूजी, मक्खन!
(सब रतन की तरफ देखते हैं और परदा गिरता है।)"

1. एकांकी के अंत में रतन कहता है— "बाबूजी, मक्खन..." और परदा गिर जाता है। लेखक ने इस संवाद से एकांकी का अंत क्यों किया होगा?
(संकेत– हास्य, व्यंग्य, टिप्पणी आदि)

उत्तरः
लेखक ने एकांकी का अंत रतन के "बाबूजी, मक्खन!" संवाद से कई कारणों से किया होगा:

1. **व्यंग्यात्मक प्रभाव**: पूरी एकांकी में रामस्वरुप विवाह की "मेहनत" करते रहे, सब कुछ तैयार किया — लेकिन मक्खन नहीं आया। यह मक्खन इस बात का प्रतीक

बन जाता है कि जिस काम के लिए इतना प्रयास किया, वह तो हो नहीं पाया और जो छोटी सी चीज़ भूल गए, वह अब आई।

2. **हास्य और कटाक्ष**: इतने गंभीर और भावनात्मक दृश्य के बाद रतन का यह मासूम-सा संवाद एक हल्की हास्य की स्थिति बनाता है। लेकिन यह हास्य उन लोगों पर व्यंग्य है जो बड़ी-बड़ी तैयारी करते हैं पर असल बात भूल जाते हैं।
3. **जीवन की विडंबना**: उमा रो रही है, रामस्वरुप हक्के-बक्के हैं, गोपालप्रसाद जा चुके हैं — और ठीक उसी क्षण रतन मक्खन लेकर आता है। यह जीवन की उस विडंबना को दर्शाता है जहाँ जब काम बिगड़ जाता है, तब देर से सहायता आती है।
4. **नाटकीयता**: यह अंत नाटकीय दृष्टि से भी प्रभावशाली है — सारे पात्र रतन की ओर देखते हैं, जो परिस्थिति से बिल्कुल अनजान है। यह दृश्य दर्शकों को एक साथ हँसाता भी है और सोचने पर भी मजबूर करता है।

2. एकांकी में यदि परदा दोबारा उठ जाए तो अगला दृश्य क्या होगा? अनुमान लगाइए और लिखिए।

उत्तरः

यदि परदा दोबारा उठे, तो संभावित दृश्य इस प्रकार हो सकता है:

[दृश्य — परदा उठने के कुछ क्षण बाद]

कमरे में रामस्वरुप कुर्सी पर चुप बैठे हैं। प्रेमा उमा को थपथपाकर शांत करने की कोशिश कर रही है। रतन हाथ में मक्खन लिए खड़ा है और समझ नहीं पा रहा कि क्या हुआ।

रामस्वरुप धीरे से उठते हैं और उमा के पास आते हैं। वे कहते हैं — "उमा, तुमने जो किया, शायद वह ठीक ही था। लेकिन अब हम क्या करेंगे?"

उमा आँसू पोंछकर कहती है — "बाबूजी, मुझे किसी ऐसे घर में नहीं जाना जहाँ मेरी शिक्षा को अपमान समझा जाए। जो मुझे वैसे ही स्वीकार करे जैसी मैं हूँ, वही मेरे योग्य होगा।"

प्रेमा सुनकर थोड़ा चौंकती है, फिर धीरे से कहती है — "बेटी, तू सही कह रही है।"

रामस्वरुप एक लंबी साँस लेते हैं और मुस्कुराते हैं — "हाँ उमा, तू सच में रीढ़ की हड्डी वाली है।"

(परदा गिरता है — इस बार एक सकारात्मक संदेश के साथ।)

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

मेरे शब्द

1. एकांकी में पाँच ऐसे शब्द चुनकर रेखांकित कर लीजिए जो आपके लिए बिल्कुल नए थे। उन शब्दों वाले वाक्य अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए। अब उन शब्दों के अर्थ अपने अनुमान से लिखिए। इसके बाद उनके अर्थ शब्दकोश में से देखकर लिखिए।

उत्तरः

क्र.	शब्द	वाक्य (एकांकी से)	अनुमानित अर्थ	शब्दकोश से अर्थ
1	दकियानूसी	"खुद पढ़े-लिखे हैं, वकील हैं, सभा-सोसाइटियों में जाते हैं, मगर लड़की चाहते हैं ऐसी कि ज्यादा पढ़ी-लिखी न हो।" (संदर्भ में)	पुराने विचारों वाला	पुराने विचार का, रुढ़िवादी
2	फितरती	"आँखों से लोक चतुराई टपकती है। आवाज़ से मालूम होता है कि काफी अनुभवी और फितरती महाशय हैं।"	चालाक, धूर्त	चालबाज, प्रकृतिगत
3	तकल्लुफ	"यह सब आप क्या तकल्लुफ करते हैं!"	औपचारिक व्यवहार	बनावट, शिष्टाचार
4	निहायत	"लड़की का खूबसूरत होना निहायत जरूरी है।"	बहुत अधिक	अत्यधिक, अत्यंत
5	मुखातिब	"शंकर की तरफ मुखातिब होकर"	सम्बोधित करते हुए	संबोधन करने वाला, बात करने वाला

भाषा में मुहावरे

एकांकी में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं। इन वाक्यों में जहाँ-जहाँ मुहावरे आए हैं, उन्हें पहचानकर रेखांकित कीजिए। इन मुहावरों का प्रयोग करते हुए नए वाक्य बनाकर लिखिए—

1. "उनके पीछे-पीछे भीगी बिल्ली की तरह रतन आ रहा है—खाली हाथ।"

उत्तरः

मुहावराः भीगी बिल्ली की तरह
अर्थः डरकर या शर्म से दबा-दबा रहना।
नया वाक्यः परीक्षा में नकल करते पकड़े जाने पर राहुल भीगी बिल्ली की तरह सिर झुकाए खड़ा रहा।

लड़की नहीं चाहते। इसके बाद भी रामस्वरूप उनसे रिश्ता जोड़ना चाहते हैं क्योंकि उनका 'मतलब अपना है।' यह उनकी अवसरवादी प्रवृत्ति को दर्शाता है — वे मूल्यों से समझौता करके व्यक्तिगत लाभ को प्राथमिकता देते हैं।

7. उमा ने जिस साहस और दृढ़ता के साथ गोपालप्रसाद का सामना किया — वह उसके किन गुणों को उजागर करता है?

उत्तरः
उमा का यह साहस उसकी शिक्षा, आत्मसम्मान और नैतिक दृढ़ता का परिणाम है। वह न केवल अपनी बेइज़्ज़ती पर प्रतिरोध करती है, बल्कि शंकर की चरित्रहीनता को उजागर करती है। वह स्पष्ट कहती है — 'मैंने बी.ए. पास किया है, कोई पाप नहीं किया।' यह उसकी शिक्षित महिला की सशक्त पहचान है। वह एकांकी में 'रीढ़ की हड्डी' वाली स्त्री का जीवंत प्रतीक बनती है।

8. गोपालप्रसाद के 'सौंदर्य पर टैक्स' वाले विचार से क्या व्यंग्य प्रकट होता है?

उत्तरः
गोपालप्रसाद मजाक में कहते हैं कि सरकार को 'खूबसूरती पर टैक्स' लगाना चाहिए और हर औरत खुद तय करे। यह विचार स्त्री को एक वस्तु की तरह देखने की पुरुषवादी मानसिकता का उपहास उड़ाता है। लेखक इस हास्यपूर्ण संवाद के जरिए यह दिखाते हैं कि ऐसे 'सभ्य' और 'बुद्धिमान' पुरुष भी स्त्री को केवल सौंदर्य की दृष्टि से देखते हैं, उसकी बौद्धिकता को नकारते हैं।

9. एकांकी के अंत में उमा का रोना उसकी कमज़ोरी है या उसकी संवेदनशीलता? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तरः
उमा का रोना उसकी कमज़ोरी नहीं, बल्कि उसकी गहरी संवेदनशीलता का प्रमाण है। उसने जो साहस दिखाया, जो सत्य बोला — वह सब आत्मसम्मान के लिए था। लेकिन अपने पिता की मजबूरी देखकर, समाज की क्रूर वास्तविकता को महसूस करके वह भीतर से टूट जाती है। यह रोना उसके भावनात्मक परिपक्वता का प्रतीक है — वह लड़ी भी और महसूस भी किया। ऐसी पात्र पाठक के मन में सम्मान और सहानुभूति दोनों जगाती है।

10. रामस्वरूप का 'हँ-हँ-हँ' बार-बार दोहराना उनके व्यक्तित्व के बारे में क्या बताता है?

उत्तरः
रामस्वरूप का बार-बार 'हँ-हँ-हँ' कहना उनकी चापलूसी और अवसरवादी प्रवृत्ति को दर्शाता है। वे गोपालप्रसाद के हर विचार से सहमति जताते हैं, भले ही वे उनसे असहमत हों। यह खोखली हँसी उनके आत्मसम्मान की कमी और अपनी बेटी की भावनाओं के प्रति उदासीनता का प्रतीक है। यह चरित्र-चित्रण का एक कुशल नाटकीय प्रयोग है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी समाज में स्त्री-शिक्षा के प्रति रूढ़िगत सोच पर करारा व्यंग्य करती है। इस कथन को एकांकी के विभिन्न पात्रों के आलोक में सिद्ध कीजिए।

उत्तरः
जगदीशचंद्र माथुर की यह एकांकी सन् 1939 में लिखी गई थी जब स्त्रियों को समान अवसर नहीं मिलते थे। गोपालप्रसाद जैसे शिक्षित और पढ़े-लिखे वकील कहते हैं — 'मर्दों का काम है पढ़ना और काबिल होना, अगर औरतें भी वही करने लगीं तो गृहस्थी चौपट हो जाएगी।' प्रेमा भी स्त्री-शिक्षा को 'जंजाल' मानती है। रामस्वरूप उमा की बी.ए. की पढ़ाई छिपाते हैं क्योंकि समाज इसे स्वीकार नहीं करता। इन सबके विरुद्ध उमा का साहसपूर्ण विरोध इस मान्यता को ध्वस्त करता है कि शिक्षित स्त्री घर नहीं चला सकती। एकांकी यह स्थापित करती है कि स्त्री-शिक्षा न केवल आवश्यक है, बल्कि समाज की 'रीढ़' को सीधा रखने के लिए अनिवार्य है।

2. उमा एकांकी की केंद्रीय पात्र है। उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताओं का विस्तृत विवेचन कीजिए।

उत्तरः
उमा 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी की सबसे सशक्त और प्रभावशाली पात्र है। वह बी.ए. पास शिक्षित युवती है जो अपने आत्मसम्मान और अधिकारों के प्रति पूरी तरह सजग है। जब गोपालप्रसाद उससे इनाम के बारे में पूछते हैं तो वह चुप रहती है क्योंकि वह इस 'खरीद-बिक्री' की प्रक्रिया को स्वीकार नहीं करती। वह खुद कहती है — 'जब कुर्सी-मेज बिकती है तो दुकानदार उनसे कुछ नहीं पूछता।' यह उसकी बुद्धिमत्ता और वाक्पटुता का परिचय है। शंकर की चरित्रहीनता को वह सार्वजनिक रूप से उजागर करती है जो उसके नैतिक साहस को दर्शाता है। एकांकी के अंत में उसका रोना उसकी संवेदनशीलता को दर्शाता है। उमा शिक्षित नारी की 'रीढ़ की हड्डी' का प्रतीक है।

3. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में परंपरागत विवाह-प्रणाली की विसंगतियों को किस प्रकार उजागर किया गया है?

उत्तरः
'रीढ़ की हड्डी' में लड़की देखने आने की प्रक्रिया पर करारा व्यंग्य किया गया है। रामस्वरूप उमा को सजाने-सँवारने, पाउडर लगाने और गाने-बजाने का प्रदर्शन करने के लिए कहते हैं। वर-पक्ष लड़की को माल की तरह परखता है — चाल देखते हैं, चेहरा देखते हैं, गाना सुनते हैं, पेंटिंग और सिलाई पूछते हैं। जन्मपत्री मिलाई जाती है, चश्मे पर आपत्ति होती है। लड़की की भावनाओं, उसकी बुद्धि और शिक्षा का कोई मूल्य नहीं। यह प्रक्रिया उमा को असहनीय लगती है — इसीलिए वह 'खरीद-फरोख्त' का उदाहरण देकर इस पूरी व्यवस्था का विरोध करती है। एकांकी यह सिद्ध करती है कि विवाह में लड़की को वस्तु नहीं, व्यक्ति के रूप में देखा जाना चाहिए।

संवाददाता (दर्शकों से): दर्शकों, आपने सुना — एक ओर उमा जैसी शिक्षित, साहसी लड़की है, दूसरी ओर समाज की वह सोच जो आज भी स्त्री को कमतर आँकती है। सवाल यह है — क्या हम बदलेंगे?

2. मान लीजिए कि आप उमा के घर से रिपोर्टिंग कर रहे हैं जब उसके घर में शंकर आया था। इस पूरे घटनाक्रम को जीवंत प्रसारण (लाइव रिपोर्ट) की तरह प्रस्तुत कीजिए।

उत्तरः

लाइव रिपोर्ट

"नमस्ते! मैं [संवाददाता का नाम], यहाँ से सीधा प्रसारण कर रहा/रही हूँ। हम अभी रामस्वरुप जी के घर के बाहर खड़े हैं, जहाँ आज एक महत्त्वपूर्ण घटना घटने वाली है। अंदर से खबर है कि बाबू गोपालप्रसाद और उनके पुत्र शंकर वधू देखने आए हैं।

थोड़ी देर पहले दोनों तरफ से औपचारिक बातचीत हुई। नाश्ते के बाद जब उमा पान लेकर आई, तो उसके चश्मे ने सबको चौंका दिया। गोपालप्रसाद और शंकर एक साथ बोल उठे — 'चश्मा!'

अब स्थिति तनावपूर्ण हो गई है। उमा के पिता सफाई दे रहे हैं... लेकिन रुकिए! उमा खुद बोलने लगी हैं — और उनके शब्द बेहद साहसी और तीखे हैं। वे कह रही हैं कि उन्हें कुर्सी-मेज की तरह दिखाया जा रहा है।

और अब — गोपालप्रसाद क्रोधित होकर उठ रहे हैं... शंकर चुपचाप सिर झुकाए है... और उमा ने अंतिम प्रहार किया है — 'आपके बेटे की रीढ़ की हड्डी है या नहीं, पता लगाइएगा!'

दोनों जा चुके हैं। उमा रो रही है — लेकिन ये आँसू हार के नहीं, साहस की कीमत के हैं। यह था आज का जीवंत प्रसारण।"

भाषा संगम

1. "मक्खन वाले की दुकान दूर है"

नीचे 'मक्खन' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।

मक्खन (हिंदी); नवनीतम् (संस्कृत); मक्खण (पंजाबी); मक्खन (उर्दू); ठ्ॅन्य (कश्मीरी); मखणु (सिंधी); लोणी (मराठी); माखण, नवनीत (गुजराती); लोणी (कोंकणी); नौनी, माखन (नेपाली); माखन, ननी (बांग्ला); माखन (असमिया); माखोन (मणिपुरी); लहुणी, मक्खन (ओड़िआ); वेन्नै(तेलुगु); वेर्ण्णय् (तमिल); वेण्ण (मलयालम); वेण्णे (कन्नड़)।

- इनके अतिरिक्त यदि आप मक्खन शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
- उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

उत्तरः

- 'मक्खन' शब्द अन्य भाषा में:
  राजस्थानी में: माखण
  मालवी में: माखन
  भोजपुरी में: मक्खन / नउनी
- उपर्युक्त वाक्य मातृभाषा (हिंदी) में:
  "मक्खन वाले की दुकान दूर है।"
  (यदि आपकी मातृभाषा राजस्थानी है:)
  "माखण वाला री दुकान दूर है।"
  (यदि आपकी मातृभाषा मराठी है:)
  "लोण्याच्या दुकान दूर आहे।"

6. अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के लेखक कौन हैं?
   (क) मोहन राकेश (ख) निर्मल वर्मा
   (ग) जगदीशचंद्र माथुर (घ) भीष्म साहनी

   उत्तरः
   (ग) जगदीशचंद्र माथुर

2. जगदीशचंद्र माथुर का जन्म किस स्थान पर हुआ था?
   (क) इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश (ख) शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश
   (ग) लखनऊ, उत्तर प्रदेश (घ) आगरा, उत्तर प्रदेश

   उत्तरः
   (ख) शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश

3. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी की रचना किस वर्ष की गई थी?
   (क) सन् 1935 (ख) सन् 1942
   (ग) सन् 1939 (घ) सन् 1947

   उत्तरः
   (ग) सन् 1939

4. जगदीशचंद्र माथुर का सर्वाधिक चर्चित और मंचित नाटक कौन-सा है?
   (क) भोर का तारा (ख) ओ मेरे सपने
   (ग) पहला राजा (घ) कोणार्क

   उत्तरः
   (घ) कोणार्क

5. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में रतन कौन है?
   (क) लड़की का भाई
   (ख) गोपालप्रसाद का नौकर
   (ग) रामस्वरुप का घरेलू सहायक
   (घ) पड़ोसी का बेटा

   उत्तरः
   (ग) रामस्वरुप का घरेलू सहायक

6. एकांकी के आरंभ में रामस्वरुप और रतन मिलकर क्या कर रहे थे?
(क) कमरे में पर्दे लगा रहे थे
(ख) कमरे में तख्त रख रहे थे
(ग) कमरे में कुर्सियाँ सजा रहे थे
(घ) कमरे में मेज बिछा रहे थे

उत्तरः
(ख) कमरे में तख्त रख रहे थे

7. प्रेमा का रंग-रुप एकांकी में किस प्रकार बताया गया है?
(क) लंबा कद और गोरा रंग
(ख) गंदुमी रंग और छोटा कद
(ग) साँवला रंग और मध्यम कद
(घ) गोरा रंग और पतली देह

उत्तरः
(ख) गंदुमी रंग और छोटा कद

8. रामस्वरूप ने रतन को बीबी जी के कमरे से क्या-क्या उठा लाने को कहा?
(क) सितार और तबला
(ख) हारमोनियम और सितार
(ग) बाँसुरी और हारमोनियम
(घ) तानपुरा और सितार

उत्तरः
(ख) हारमोनियम और सितार

9. प्रेमा ने लड़कियों की पढ़ाई के बारे में क्या राय व्यक्त की?
(क) लड़कियों को उच्च शिक्षा अवश्य मिलनी चाहिए
(ख) 'आ-ई' पढ़ लेना और 'स्त्री-सुबोधिनी' काफी है
(ग) लड़कियों को कॉलेज भेजना आवश्यक है
(घ) लड़कियाँ अंग्रेजी पढ़ें तो बेहतर होगा

उत्तरः
(ख) 'आ-ई' पढ़ लेना और 'स्त्री-सुबोधिनी' काफी है

10. रामस्वरुप ने ग्रामोफोन के बारे में क्या व्यंग्य किया?
(क) एक आदमी का बनाया जिसे रोका जा सके, दूसरा परमात्मा का जो रुकता नहीं।
(ख) एक बाज़ार से खरीदा हुआ बहुत सस्ता होता है और दूसरा बहुत महँगा होता है।
(ग) एक केवल हिंदी और देसी गाने बजाता है और दूसरा हमेशा अंग्रेजी गाने बजाता है।
(घ) एक आकार में बहुत छोटा और साधारण होता है और दूसरा बहुत बड़ा होता है।

उत्तरः
(क) एक आदमी का बनाया जिसे रोका जा सके, दूसरा परमात्मा का जो रुकता नहीं।

11. रामस्वरुप ने प्रेमा को उमा के बारे में क्या निर्देश दिया?
(क) उसे साड़ी और जेवर पहनाओ
(ख) उसे अच्छे से तैयार करके पान लेकर भेज देना
(ग) उसे अंग्रेजी में बात करने को कहो
(घ) उसे बाल बाँधकर नीचे लाओ

उत्तरः
(ख) उसे अच्छे से तैयार करके पान लेकर भेज देना

12. रिक्त स्थान भरिए –
गोपालप्रसाद और शंकर के आने पर बाबू गोपालप्रसाद की आँखों से ________ टपकती थी।
(क) चालाकी (ख) लोक चतुराई
(ग) घमंड (घ) बेशर्मी

उत्तरः
(ख) लोक चतुराई

13. शंकर की कौन-सी शारीरिक विशेषता एकांकी में बताई गई है?
(क) उसकी लंबी और सीधी कमर थी।
(ख) उसका मोटा शरीर और भारी आवाज थी।
(ग) उसकी झुकी कमर और पतली आवाज थी।
(घ) उसका छोटा कद और गोल चेहरा था।

उत्तरः
(ग) उसकी झुकी कमर और पतली आवाज थी।

14. रामस्वरुप के मकान ढूँढ़ने में गोपालप्रसाद को कोई तकलीफ क्यों नहीं हुई?
(क) रामस्वरुप ने नक्शा भेजा था
(ख) ताँगेवाला रास्ता जानता था
(ग) शंकर पहले आ चुका था
(घ) रतन रास्ते पर मिल गया था

उत्तरः
(ख) ताँगेवाला रास्ता जानता था

15. शंकर कॉलेज की छुट्टी न होने पर भी क्यों आया था?
(क) वह बीमार था इसलिए छुट्टी ली
(ख) वह 'वीक-एंड' में चला आया था
(ग) पिता ने जबरदस्ती बुलाया था
(घ) कॉलेज में हड़ताल थी इसलिए आया

उत्तरः
(ख) वह 'वीक-एंड' में चला आया था

16. गोपालप्रसाद ने चाय में क्या पसंद किया?
(क) बिना चीनी की काली चाय
(ख) विलायती फैशन वाली हल्की चाय
(ग) आधा दूध, आधी चाय और ज्यादा चीनी
(घ) नींबू वाली हल्की मीठी चाय

उत्तरः
(ग) आधा दूध, आधी चाय और ज्यादा चीनी

17. गोपालप्रसाद ने सरकार से किस अनोखी चीज पर टैक्स लगाने की बात कही?
(क) मिठाई और चाय पर (ख) खूबसूरती पर
(ग) गहनों और कपड़ों पर (घ) पढ़ाई और नौकरी पर

उत्तरः
(ख) खूबसूरती पर

18. **अभिकथन (A):** गोपालप्रसाद ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की नहीं चाहते थे।
कारण (R): उनके अनुसार ऊँची तालीम सिर्फ मर्दों के लिए है, औरतें अगर पढ़ लिखकर बहस करने लगें तो गृहस्थी बिगड़ जाएगी।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है

उत्तरः
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है

19. गोपालप्रसाद ने लड़कियों की शिक्षा-सीमा के बारे में क्या कहा?
(क) इंटर तक पढ़ी होनी चाहिए
(ख) हद से हद मैट्रिक-पास होनी चाहिए
(ग) आठवीं तक पढ़ी होनी चाहिए
(घ) बी.ए. तक पढ़ी होनी चाहिए

उत्तरः
(ख) हद से हद मैट्रिक-पास होनी चाहिए

20. गोपालप्रसाद ने प्रकृति से उदाहरण देते हुए क्या कहा?
(क) शेर हमेशा ज़ोर से दहाड़ता है, पर शेरनी कभी नहीं दहाड़ती।
(ख) मोर के पंख होते हैं मोरनी के नहीं, शेर के बाल होते हैं शेरनी के नहीं।
(ग) हाथी आकार में बहुत बड़ा होता है, पर हथिनी उतनी बड़ी नहीं होती।
(घ) बैल हमेशा खेतों में काम करता है, पर गाय कभी काम नहीं करती।

उत्तरः
(ख) मोर के पंख होते हैं मोरनी के नहीं, शेर के बाल होते हैं शेरनी के नहीं।

21. रामस्वरूप ने गोपालप्रसाद की बात पर हँसते हुए क्या जोड़ा?
(क) और मर्द के दाढ़ी होती है, औरत के नहीं
(ख) और मर्द काम करता है, औरत नहीं
(ग) और मर्द लड़ाई करता है, औरत नहीं
(घ) और मर्द पढ़ाई करता है, औरत नहीं

उत्तरः
(क) और मर्द के दाढ़ी होती है, औरत के नहीं

22. रिक्त स्थान भरिए —
उमा पान की तश्तरी लेकर आई तो उसके चेहरे के ऊपर उठने पर ________ दिखाई दिया।
(क) सोने की बाली (ख) सोने की रिम वाला चश्मा
(ग) माथे पर बड़ी बिंदी (घ) रेशमी दुपट्टा

उत्तरः
(ख) सोने की रिम वाला चश्मा

23. उमा के चश्मे को देखकर गोपालप्रसाद ने क्या शंका जताई?
(क) यह चश्मा बहुत महँगा है
(ख) पढ़ाई-वढ़ाई की वजह से तो नहीं है कुछ
(ग) यह चश्मा फैशन के लिए लगाया है
(घ) यह आँखें कमजोर होने का लक्षण है

उत्तरः
(ख) पढ़ाई-वढ़ाई की वजह से तो नहीं है कुछ

24. उमा ने सितार के साथ कौन-सा प्रसिद्ध गीत गाना शुरु किया?
(क) जाग उठा है राग सुहाना
(ख) मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई
(ग) वैष्णव जन तो तेने कहिए
(घ) रघुपति राघव राजा राम

उत्तरः
(ख) मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई

25. उमा गाते-गाते एकाएक क्यों रुक गई?
(क) उसे गाना याद नहीं रहा
(ख) उसकी आँखें शंकर से मिल गईं।
(ग) गोपालप्रसाद ने रुकने को कहा
(घ) उसके गले में दर्द होने लगा

उत्तरः
(ख) उसकी आँखें शंकर से मिल गईं।

26. रामस्वरुप ने उमा की किन कलाओं और कामों का परिचय गोपालप्रसाद को दिया?
निम्नलिखित में से कौन-से कथन सही हैं?

I. उमा पेंटिंग बनाती है और घर की दीवारों पर तस्वीरें टँगी हैं।

II. उमा सारे घर की सिलाई करती है, यहाँ तक कि पिता की कमीजें भी।

III. उमा सितार और बाजा दोनों बजाती और गाती है।

(क) केवल I और II सही हैं
(ख) केवल II और III सही हैं
(ग) केवल I और III सही हैं
(घ) तीनों कथन सही हैं

(ग) मकान तो ठीक है पर आदमी संदिग्ध लगता है
(घ) आदमी बुरा है, साथ ही हैसियत तो अच्छी है पर मकान पुराना है

उत्तरः
(ख) आदमी भला है, मकान से हैसियत भी बुरी नहीं मालूम होती

43. शंकर की पढ़ाई में देरी का क्या कारण बताया गया?
(क) वह बहुत आलसी था इसलिए पढ़ाई छूट गई
(ख) वह एक साल बीमार हो गया था
(ग) उसकी फीस नहीं भरी गई थी
(घ) कॉलेज में दंगा हो गया था

उत्तरः
(ख) वह एक साल बीमार हो गया था

44. नाश्ते में कौन-सी चीज नहीं आ पाई जिसके लिए रामस्वरुप और प्रेमा में बात हुई?
(क) चाय (ख) टोस्ट
(ग) मक्खन (घ) मिठाई

उत्तरः
(ग) मक्खन

45. गोपालप्रसाद ने जन्मपत्री के बारे में रामस्वरुप से क्या पूछा और रामस्वरुप ने क्या जवाब दिया?
(क) जन्मपत्री अभी तक मिली नहीं, पंडित जी उसे रोज खोज रहे हैं।
(ख) जायचे का मिलना क्या मुश्किल है, ठाकुर जी के चरणों में रख दिया।
(ग) हमारी बेटी की कोई भी जन्मपत्री कभी बनवाई ही नहीं गई थी।
(घ) जन्मपत्री आपके घर पर डाक द्वारा पहले ही भेज दी गई थी।

उत्तरः
(ख) जायचे का मिलना क्या मुश्किल है, ठाकुर जी के चरणों में रख दिया।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. एकांकी 'रीढ़ की हड्डी' का रचना-काल क्या है और उस समय स्त्री-शिक्षा की स्थिति कैसी थी?

उत्तरः
एकांकी 'रीढ़ की हड्डी' की रचना सन् 1939 में की गई थी। उस समय भारतीय समाज में स्त्रियों को शिक्षा और अन्य कार्यक्षेत्रों में समान अवसर नहीं मिलते थे।

2. जगदीशचंद्र माथुर का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उत्तरः
जगदीशचंद्र माथुर का जन्म सन् 1917 में शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की और इंडियन सिविल सर्विस में भी चयनित हुए।

3. रामस्वरुप उमा के लिए कौन-कौन सी तैयारियाँ करते हैं जब वर-पक्ष के लोग आने वाले होते हैं?

उत्तरः
रामस्वरुप हारमोनियम, सितार मँगवाते हैं, कमरे में दरी-चादर बिछवाते हैं, उमा को तैयार होकर पान लेकर आने को कहते हैं और उसे थोड़ा गाने के लिए भी तैयार करते हैं।

4. प्रेमा स्त्री-शिक्षा के बारे में क्या सोचती है? एकांकी से एक उदाहरण दीजिए।

उत्तरः
प्रेमा स्त्री-शिक्षा को 'जंजाल' मानती है। वह कहती है कि 'आ-ई' पढ़ लो, गिनती सीख लो और 'स्त्री-सुबोधिनी' पढ़ लो — बस इतनी पढ़ाई काफी है।

5. गोपालप्रसाद की लड़की के बारे में क्या माँग है? उनके अनुसार लड़की कितनी पढ़ी होनी चाहिए?

उत्तरः
गोपालप्रसाद को ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की नहीं चाहिए। उनके अनुसार लड़की हद से हद मैट्रिक-पास होनी चाहिए, क्योंकि अधिक पढ़ी-लिखी लड़की 'मेम साहब' बन जाती है।

6. शंकर की शारीरिक भाषा और व्यक्तित्व को एकांकीकार ने कैसे चित्रित किया है?

उत्तरः
शंकर झुकी कमर वाला युवक है। उसकी आवाज़ पतली और खिसियाहट-भरी है। वह खीस निपोरते हुए हँसता है और इधर-उधर देखता रहता है — चरित्रहीनता और कायरता उसके व्यक्तित्व में दिखती है।

7. उमा पान की तश्तरी लेकर आती है — उस दृश्य में बाप-बेटे क्यों चौंक उठते हैं?

उत्तरः
जब उमा पान की तश्तरी देती है तो उसका चेहरा ऊपर उठता है और नाक पर सोने की रिम वाला चश्मा दिखता है। गोपालप्रसाद और शंकर एक साथ 'चश्मा!!!' कहकर चौंक उठते हैं।

8. रामस्वरुप ने गोपालप्रसाद से उमा की पढ़ाई के बारे में झूठ क्यों बोला था?

उत्तरः
रामस्वरुप जानते थे कि गोपालप्रसाद ज्यादा पढ़ी लड़की नहीं चाहते। इसलिए उन्होंने कहा था कि उमा सिर्फ मैट्रिक तक पढ़ी है, जबकि उमा वास्तव में बी.ए. पास थी।

(ग) फल लेकर आया और बोला "बाबूजी, फल!"
(घ) पान लेकर आया और बोला "बाबूजी, पान!"

उत्तरः
(ख) मक्खन लेकर आया और बोला "बाबूजी, मक्खन!"

36. रामस्वरुप ने गोपालप्रसाद के सामने शंकर के बारे में क्या कहा था?
(क) बाप सेर है तो लड़का सवा सेर
(ख) बाप से बेटा चार गुना होशियार
(ग) बाप की छाया में बेटा छुपा रहता है
(घ) बाप और बेटा एक जैसे ही हैं

उत्तरः
(क) बाप सेर है तो लड़का सवा सेर

37. इस एकांकी में 'रीढ़ की हड्डी' शब्द का प्रयोग किस संदर्भ में सबसे पहले आता है?
(क) उमा गोपालप्रसाद को जाते समय खिड़की के पास खड़े होकर यह कहती है कि आप लोग अब यहाँ से तुरंत चले जाइए।
(ख) गोपालप्रसाद शंकर को कमर सीधी करके बैठने को कहते हुए 'बैकबोन' शब्द उठाते हैं कि तुम्हारी रीढ़ की हड्डी कहाँ है।
(ग) रामस्वरुप उमा की तारीफ में लड़के वालों के सामने यह कहते हैं कि मेरी बेटी की रीढ़ की हड्डी बहुत मजबूत है।
(घ) प्रेमा शंकर के बारे में नौकर के सामने यह टिप्पणी करती है कि इस लड़के की रीढ़ की हड्डी बचपन से ही झुकी हुई है।

उत्तरः
(ख) गोपालप्रसाद शंकर को कमर सीधी करके बैठने को कहते हुए 'बैकबोन' शब्द उठाते हैं कि तुम्हारी रीढ़ की हड्डी कहाँ है।

38. रामस्वरूप के व्यवहार का सही वर्णन कौन-सा है?
(क) रामस्वरूप पूरी तरह प्रगतिशील हैं — उन्होंने उमा को बी.ए. तक पढ़ाया, गोपालप्रसाद की रुढ़िवादी बातों का खुलकर विरोध किया और उमा का पक्ष लिया।
(ख) रामस्वरूप पूरी तरह रुढ़िवादी हैं — उन्होंने उमा को पढ़ाया नहीं, गोपालप्रसाद की बातें मानीं और शादी के लिए उमा को मना किया।
(ग) रामस्वरुप आधुनिकता का दिखावा करते हैं — उमा को पढ़ाया, परंतु गोपालप्रसाद से उमा की पढ़ाई छुपाई और उनकी रुढ़िवादी बातों पर हँसते रहे।
(घ) रामस्वरुप न पूरी तरह आधुनिक हैं, न रुढ़िवादी — वे पूरी तरह तटस्थ हैं और किसी का पक्ष नहीं लेते।

उत्तरः
(ग) रामस्वरुप आधुनिकता का दिखावा करते हैं — उमा को पढ़ाया, परंतु गोपालप्रसाद से उमा की पढ़ाई छुपाई और उनकी रुढ़िवादी बातों पर हँसते रहे।

39. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन उमा के चरित्र की सबसे सटीक व्याख्या करता है?
(क) उमा एक साधारण लड़की है जो माता-पिता की बात मानती है, चुप रहती है और समाज के नियमों का पालन करती है।
(ख) उमा एक पढ़ी-लिखी, आत्मसम्मानी और साहसी लड़की है जो अन्याय के सामने चुप नहीं रहती और सच बोलने का साहस रखती है।
(ग) उमा केवल गाना-बजाना जानती है और घर के काम करती है, उसकी शिक्षा का कोई महत्व नहीं है।
(घ) उमा गुस्सैल और अहंकारी लड़की है जो माता-पिता की इज्जत नहीं करती और बड़ों से झगड़ती है।

उत्तरः
(ख) उमा एक पढ़ी-लिखी, आत्मसम्मानी और साहसी लड़की है जो अन्याय के सामने चुप नहीं रहती और सच बोलने का साहस रखती है।

40. प्रेमा ने रामस्वरुप से कहा कि उमा को इंट्रेंस ही पास करा लेते, क्यों?
(क) ताकि वह घर का कामकाज अच्छी तरह संभालती।
(ख) ताकि लड़की अपने हाथ रहती और इतनी परेशानी न उठानी पड़ती।
(ग) ताकि वह आगे जाकर कहीं कोई अच्छी नौकरी कर पाती।
(घ) ताकि उसे शादी के लिए कोई बड़ा घराना मिल पाता।

उत्तरः
(ख) ताकि लड़की अपने हाथ रहती और इतनी परेशानी न उठानी पड़ती।

41. जगदीशचंद्र माथुर ने किन-किन प्रशासनिक पदों पर कार्य किया?
निम्नलिखित में से कौन-से कथन सही हैं?
I. बिहार राज्य के शिक्षा सचिव रहे।
II. आकाशवाणी के महानिदेशक रहे।
III. सूचना और प्रसारण मंत्रालय के संयुक्त सचिव रहे।
(क) केवल I और II सही हैं
(ख) केवल II और III सही हैं
(ग) केवल I और III सही हैं
(घ) तीनों कथन सही हैं

उत्तरः
(घ) तीनों कथन सही हैं

42. गोपालप्रसाद ने रामस्वरूप के घर और हैसियत के बारे में क्या राय दी?
(क) मकान बहुत छोटा और हैसियत कमजोर लगती है
(ख) आदमी भला है, मकान से हैसियत भी बुरी नहीं मालूम होती

2. "लेकिन वह तुम्हारी लाडली बेटी तो मुँह फुलाए पड़ी है।"
   उत्तरः
   मुहावराः मुँह फुलाना
   अर्थः नाराज होकर रूठ जाना।
   नया वाक्यः खेल में हार जाने पर छोटा भाई मुँह फुलाए कमरे में बैठ गया।

3. "और तुम उसकी माँ, किस मर्ज की दवा हो?"
   उत्तरः
   मुहावराः किस मर्ज की दवा होना
   अर्थः किसी काम का न होना, बेकार होना।
   नया वाक्यः जो मित्र मुसीबत में साथ न दे, वह किस मर्ज की दवा है?

4. "तुम्हीं ने उसे पढ़ा-लिखाकर इतना सिर चढ़ा रखा है।"
   उत्तरः
   मुहावराः सिर चढ़ाना
   अर्थः अधिक लाड़-प्यार से बिगाड़ देना, अधिक महत्त्व देना।
   नया वाक्यः माता-पिता ने इकलौते बेटे को इतना सिर चढ़ा रखा है कि वह किसी की बात ही नहीं सुनता।

5. "मगर तुम तो अभी से सब-कुछ उगले देती हो।"
   उत्तरः
   मुहावराः उगल देना
   अर्थः सब कुछ बता देना, भेद खोल देना।
   नया वाक्यः पुलिस ने पूछताछ की तो चोर ने सारा राज उगल दिया।

6. "यह लीजिए, आप तो मुझे काँटों में घसीटने लगे।"
   उत्तरः
   मुहावराः काँटों में घसीटना
   अर्थः व्यर्थ की मुसीबत में डालना, परेशानी में उलझाना।
   नया वाक्यः मैंने तो बस एक सलाह दी थी, तुमने उसे मुझ पर थोपकर काँटों में घसीट दिया।

7. "बाबू रामस्वरूप, आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए मुझे यहाँ बुलाया था?"
   उत्तरः
   मुहावराः इज्जत उतारना
   अर्थः अपमानित करना, मान-सम्मान नष्ट करना।
   नया वाक्यः सबके सामने झूठा आरोप लगाकर उसने मेरी इज्जत उतार दी।

8. "लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह अपना मुँह छिपाकर भागे थे।"
   उत्तरः
   मुहावराः मुँह छिपाकर भागना
   अर्थः शर्म या डर के कारण सबके सामने आने से बचना।
   नया वाक्यः परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने के बाद वह मुँह छिपाकर भाग गया और किसी से नहीं मिला।

संदर्भ में शब्द

1. "बाप सेर है तो लड़का सवा सेर।"
   एकांकी में इस कहावत का प्रयोग रामस्वरूप द्वारा गोपालप्रसाद और शंकर की नकारात्मक प्रवृत्ति का उल्लेख करने के लिए किया गया है। लेकिन इस कहावत का प्रयोग सकारात्मक अर्थ में भी किया जा सकता है। अब आप इस नए प्रयोग से वाक्य बनाकर लिखिए।
   उत्तरः
   कहावत का सकारात्मक अर्थ में प्रयोग:
   वाक्य 1: अर्जुन के पिता राज्य स्तर के शतरंज खिलाड़ी हैं, और अर्जुन ने राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण पदक जीता — सच ही कहते हैं, बाप सेर है तो लड़का सवा सेर।
   वाक्य 2: डॉ. शर्मा एक कुशल चिकित्सक हैं और उनके पुत्र ने चिकित्सा के क्षेत्र में नई खोज कर सबको चौंका दिया — बाप सेर है तो लड़का सवा सेर।

गतिविधियाँ

आप भी संवाददाता

1. मान लीजिए कि आप एक संवाददाता हैं और आपको उमा की कहानी का पता चलता है। अब आप उमा तथा अन्य पात्रों का साक्षात्कार लेकर उनका पक्ष दर्शकों के सामने प्रस्तुत कीजिए।
   उत्तरः
   टेलीविज़न साक्षात्कार
   संवाददाता: नमस्ते दर्शकों! आज हम आपके सामने एक ऐसी घटना प्रस्तुत कर रहे हैं जो हमारे समाज में स्त्री-शिक्षा और विवाह की परंपरागत सोच पर एक बड़ा सवाल खड़ा करती है। हमारे साथ हैं उमा, जिन्होंने आज एक साहसी कदम उठाया।
   संवाददाता (उमा से): उमा जी, आपने आज जो किया, उसके पीछे क्या कारण था?
   उमा: मैं केवल इतना चाहती थी कि मुझे एक इंसान की तरह देखा जाए — वस्तु की तरह नहीं। मुझे किसी के सामने परखा जाना स्वीकार नहीं।
   संवाददाता (रामस्वरुप से): बाबूजी, आपने उमा की शिक्षा छुपाई — क्यों?
   रामस्वरुप (झिझकते हुए): मैं... दरअसल मैं मजबूर था। समाज की सोच ऐसी है...
   संवाददाता (गोपालप्रसाद से): आप पढ़े-लिखे वकील हैं, फिर भी अशिक्षित बहू क्यों चाहते हैं?
   गोपालप्रसाद: घर की व्यवस्था के लिए...

9. उमा ने शंकर के बारे में कौन-सी महत्वपूर्ण बात उजागर की जिससे गोपालप्रसाद लज्जित हुए?

उत्तरः
उमा ने बताया कि पिछली फरवरी में शंकर लड़कियों के हॉस्टल के इर्द-गिर्द घूम रहा था और वहाँ से भगाया गया था। यह सुनकर गोपालप्रसाद का सिर शर्म से झुक गया।

10. एकांकी का अंत रतन के 'मक्खन' शब्द के साथ क्यों होता है? इसका क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तरः
एकांकी के गंभीर अंत में रतन का 'बाबूजी, मक्खन!' कहकर आना व्यंग्यात्मक हास्य उत्पन्न करता है। यह सांसारिक छोटी-छोटी बातों की ओर इशारा करके पूरी स्थिति का उपहास उड़ाता है।

11. गोपालप्रसाद ने मोर और शेर का उदाहरण देते हुए क्या तर्क दिया?

उत्तरः
गोपालप्रसाद ने कहा कि 'मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं; शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं।' इससे उनका तात्पर्य था कि उच्च शिक्षा केवल पुरुषों के लिए है, स्त्रियों के लिए नहीं।

12. जगदीशचंद्र माथुर का सबसे चर्चित और मंचित नाटक कौन-सा है?

उत्तरः
'कोणार्क' जगदीशचंद्र माथुर का सर्वाधिक चर्चित और मंचित नाटक है। उनकी अन्य प्रमुख कृतियों में 'भोर का तारा', 'ओ मेरे सपने', 'पहला राजा', 'दस तस्वीरें' आदि हैं।

13. उमा ने कुर्सी-मेज की दुकान का उदाहरण देकर क्या कहना चाहा?

उत्तरः
उमा ने कहा कि जैसे कुर्सी-मेज बिकती है तो दुकानदार उनसे कुछ नहीं पूछता, सिर्फ खरीदार को दिखाता है। इसी तरह लड़कियों को भी बिना उनकी भावनाओं की परवाह किए परखा जाता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बाबू रामस्वरूप के चरित्र में आधुनिकता और रुढ़िवादिता का अंतर्द्वंद्व कैसे दिखता है?

उत्तरः
रामस्वरुप एक ओर उमा को बी.ए. तक पढ़ाते हैं, उसे सशक्त बनाते हैं — यह उनकी आधुनिक सोच है। लेकिन दूसरी ओर वे वर-पक्ष की रुढ़िवादी माँग को पूरा करने के लिए उमा की पढ़ाई छिपाते हैं, उसे पाउडर लगाने को कहते हैं और उसे गाने-बजाने का प्रदर्शन करने को कहते हैं। यह दिखावा उनकी कायरता और अवसरवादिता को प्रकट करता है।

2. गोपालप्रसाद के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तरः
गोपालप्रसाद एक अनुभवी, चालाक और रुढ़िवादी वकील हैं। उनकी आँखों से 'लोक-चतुराई टपकती' है। वे बातों-बातों में अपनी शर्तें मनवाते हैं, महिलाओं की शिक्षा के सख्त विरोधी हैं और समाज में ऊँचे ओहदे पर रहते हुए भी पुरानी मान्यताओं के शिकार हैं। उनके चरित्र में दोहरापन स्पष्ट है — वे खुद पढ़े-लिखे हैं लेकिन बहू कम पढ़ी चाहते हैं।

3. प्रेमा का चरित्र उस समय की भारतीय गृहिणी का प्रतिनिधित्व कैसे करता है?

उत्तरः
प्रेमा एक व्यस्त और परंपरागत सोच वाली गृहिणी है। वह स्त्री-शिक्षा को 'जंजाल' मानती है और उमा की बी.ए. की पढ़ाई को फिज़ूल समझती है। उसे घर के कामों की अधिक चिंता है। वह अपने पति की बात मानती है और लड़की को 'सिर चढ़ाने' का दोष पति पर डालती है। वह उस दौर की उन महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती है जो स्वयं पुरुषवादी व्यवस्था को आगे बढ़ाती हैं।

4. उमा जब गाना गाते-गाते अचानक रुक जाती है — उस क्षण का क्या महत्व है?

उत्तरः
उमा मीरा का भजन 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई' गाते-गाते तल्लीन हो जाती है, उसका मस्तक उठ जाता है। तभी उसकी आँखें शंकर की झेंपती आँखों से मिलती हैं और वह एकदम रुक जाती है। यह क्षण बताता है कि उमा अपनी आत्मसम्मान की रक्षा में सजग है। शंकर की कायर नजरों को देखकर वह भीतर से आहत होती है और उसका मौन एक गहरा विरोध बन जाता है।

5. एकांकी में 'रीढ़ की हड्डी' शब्द दो अलग-अलग अर्थों में प्रयुक्त हुआ है — उन्हें स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः
पहला प्रयोग: गोपालप्रसाद शंकर से कहते हैं — 'ब्याह तय करने आए हो, कमर सीधी करके बैठो, तुम्हारे दोस्त ठीक कहते हैं कि शंकर की बैकबोन...' — यहाँ 'रीढ़' का अर्थ शारीरिक कमजोरी है। दूसरा प्रयोग: एकांकी के अंत में उमा कहती है — 'घर जाकर पता लगाइए कि आपके लाडले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं' — यहाँ 'रीढ़' आत्मसम्मान, नैतिक साहस और चारित्रिक दृढ़ता का प्रतीक है।

6. रामस्वरुप ने गोपालप्रसाद के 'दकियानूसी खयालों' पर गुस्से का उल्लेख किया फिर भी उनसे रिश्ता क्यों जोड़ना चाहते थे? इससे उनके चरित्र पर क्या प्रकाश पड़ता है?

उत्तरः
रामस्वरुप स्वयं मानते हैं कि गोपालप्रसाद के विचार 'दकियानूसी' हैं — वे खुद पढ़े-लिखे, वकील और सभा-सोसाइटियों में जाने वाले व्यक्ति हैं, फिर भी ज्यादा पढ़ी

उत्तरः
(घ) तीनों कथन सही हैं

27. **अभिकथन (A):** उमा ने इनाम जीतने के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।
कारण (R): उमा चुप रही क्योंकि वह गोपालप्रसाद के व्यवहार से अपमानित और आहत थी।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है
उत्तरः
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है

28. उमा ने अपनी तुलना किससे की जब उसने अपनी व्यथा व्यक्त की?
(क) बाग के सुंदर फूल और तीखे काँटों से।
(ख) पिंजरे में बंद एक बेबस पालतू पक्षी से।
(ग) बिकने वाली वस्तु और भेड़-बकरियों से।
(घ) बहती नदी और उस पर बने मजबूत बाँध से।
उत्तरः
(ग) बिकने वाली वस्तु और भेड़-बकरियों से।

29. उमा ने शंकर के बारे में कौन-सी बात उजागर की जिससे सब चौंक गए?
(क) वह पढ़ाई में बहुत कमजोर और लापरवाह था।
(ख) वह लड़कियों के होस्टल के पास से भगाया गया था।
(ग) उसने कॉलेज की किसी लड़की को धमकी दी थी।
(घ) वह बीमारी का बहाना बनाकर परीक्षा से बचा था।
उत्तरः
(ख) वह लड़कियों के होस्टल के पास से भगाया गया था।

30. रिक्त स्थान भरिए —
उमा ने कहा, "मैंने बी.ए. पास किया है। कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की, और न आपके पुत्र की तरह _______ कायरता दिखाई है।"
(क) घर में छुपकर (ख) ताक-झाँककर
(ग) आँखें चुराकर (घ) मुँह छिपाकर
उत्तरः
(ख) ताक-झाँककर

31. **अभिकथन (A):** गोपालप्रसाद ने रामस्वरुप पर दगा करने का आरोप लगाया।
कारण (R): रामस्वरूप ने उन्हें बताया था कि उमा सिर्फ मैट्रिक तक पढ़ी है, जबकि वह बी.ए. पास थी।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है
उत्तरः
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है

32. निम्नलिखित में से कौन-से कथन गोपालप्रसाद के चरित्र के बारे में सही हैं?
I. वे खुद पढ़े-लिखे वकील हैं और सभा-सोसाइटियों में जाते हैं।
II. वे लड़की के लिए कम पढ़ी-लिखी की माँग रखते हैं।
III. वे अपने बेटे की कमजोरियाँ जानते हैं और उन्हें स्वीकार करते हैं।
(क) केवल I और II सही हैं
(ख) केवल II और III सही हैं
(ग) केवल I और III सही हैं
(घ) तीनों कथन सही हैं
उत्तरः
(क) केवल I और II सही हैं

33. उमा ने जाते हुए गोपालप्रसाद से क्या कहा?
(क) "जी हाँ, और हमारी बेइज्जती जो आप इतनी देर से नाप-तौल कर रहे हैं, वह क्या आपके लिए बहुत अच्छी बात है।"
(ख) "जाइए, घर जाकर पता लगाइएगा कि आपके लाडले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं — यानी बैकबोन, बैकबोन!"
(ग) "बाबूजी, जब कुर्सी-मेज बिकती है तब दुकानदार कुर्सी-मेज से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ खरीदार को दिखा देता है।"
(घ) "क्या हम लड़कियों के पास दिल नहीं होता, क्या हमारे चोट नहीं लगती, क्या हम बेबस भेड़-बकरियाँ हैं जिन्हें आप कसाई की तरह..."
उत्तरः
(ख) "जाइए, घर जाकर पता लगाइएगा कि आपके लाडले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं — यानी बैकबोन, बैकबोन!"

34. गोपालप्रसाद और शंकर के जाने के बाद उमा की खामोशी किसमें तब्दील हो गई?
(क) गुस्से में (ख) हँसी में
(ग) सिसकियों में (घ) गाने में
उत्तरः
(ग) सिसकियों में

35. एकांकी के बिल्कुल अंत में रतन क्या लेकर आया और क्या बोला?
(क) चाय लेकर आया और बोला "बाबूजी, चाय!"
(ख) मक्खन लेकर आया और बोला "बाबूजी, मक्खन!"

4. गोपालप्रसाद और रामस्वरुप दोनों पुरुष-पात्रों में क्या समानताएँ और असमानताएँ हैं? तुलनात्मक विवेचन कीजिए।

उत्तरः

गोपालप्रसाद और रामस्वरुप दोनों शिक्षित हैं, समाज में सम्मानित हैं, लेकिन भीतर से रुढ़िवादी हैं। दोनों में समानता यह है कि वे स्त्री-शिक्षा को महत्व नहीं देते और दिखावे की परंपरा को ढोते हैं। गोपालप्रसाद अपनी बात खुलकर कहते हैं — 'ज़्यादा पढ़ी लड़की नहीं चाहिए।' रामस्वरुप अपनी बात छिपाते हैं — उमा की पढ़ाई झूठ बोलकर छिपाते हैं। गोपालप्रसाद में दंभ है, रामस्वरुप में चापलूसी। गोपालप्रसाद अपने बेटे की कमज़ोरी से अनजान हैं, जबकि रामस्वरूप अपनी बेटी की सच्चाई से परिचित हैं। दोनों पात्र मिलकर उस पुरुष-प्रधान समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं जो स्त्री को समान दर्जा नहीं देता।

5. एकांकी 'रीढ़ की हड्डी' में व्यंग्य और हास्य की क्या भूमिका है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः

जगदीशचंद्र माथुर ने एकांकी में गंभीर सामाजिक समस्याओं को हास्य और व्यंग्य के माध्यम से प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। रामस्वरुप का बार-बार 'हँ-हँ-हँ' कहना — चापलूसी का व्यंग्यात्मक चित्रण है। गोपालप्रसाद का 'खूबसूरती पर टैक्स' वाला विचार स्त्री को वस्तु समझने पर व्यंग्य है। प्रेमा का 'ग्रामोफोन' जैसा बोलते रहना — रुढ़िवादी सोच पर कटाक्ष है। रतन का अंत में 'बाबूजी, मक्खन!' लेकर आना — पूरी परिस्थिति की विडंबना पर हल्का-फुल्का लेकिन गहरा व्यंग्य है। इस हास्य-व्यंग्य की भाषा के कारण एकांकी अपने संदेश को सरल और प्रभावशाली तरीके से दर्शकों तक पहुँचाती है।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

गद्यांश 1

रामस्वरुप : (ज़रा तेज आवाज़ में) और क्या करेगा? परमात्मा के यहाँ अक्ल बँट रही थी तो तू देर से पहुँचा था क्या?... बिछा दूँ साब!... और यह पसीना किसलिए बहाया है? (तख्त बिछाता है।) ही-ही-ही।

हँसता क्यों है?... अरे, हमने भी जवानी में कसरतें की हैं। कलसों से नहाता था लोटों की तरह। यह तख्त क्या चीज है?... उसे सीधा कर... यों... हाँ, बस। और सुन, बहू जी से दरी माँग ला, इसके ऊपर बिछाने के लिए।... चद्दर भी, कल जो कपड़े धोने वाले के यहाँ से आई है, वही।

1. रामस्वरुप द्वारा रतन को दिए गए उलाहने से उनके किस चारित्रिक भाव का संकेत मिलता है?
(क) अधिकारपूर्ण हास्य (ख) अत्यंत उग्र स्वभाव
(ग) तीव्र घृणा भाव (घ) अत्यधिक संशयशीलता

2. रामस्वरुप के संवाद "परमात्मा के यहाँ अक्ल बँट रही थी तो तू देर से पहुँचा था क्या?" के संदर्भ में कौन-सा विकल्प उनकी मानसिकता को सर्वोत्तम रुप से व्यक्त करता है?
(क) वे रतन की बुद्धिमत्ता की सराहना कर रहे हैं।
(ख) वे नौकर के धीमेपन पर तीखा व्यंग्य कर रहे हैं।
(ग) वे परमात्मा की न्यायप्रियता का बखान कर रहे हैं।
(घ) वे अपने स्वयं के अज्ञान को स्वीकार कर रहे हैं।

3. इस गद्यांश में रामस्वरुप का अपनी जवानी की कसरतों का उल्लेख करना किस प्रकार स्वर का दर्शाता है?
(क) दार्शनिक (ख) उपदेशात्मक
(ग) निराशावादी (घ) आत्मश्लाघा

4. गद्यांश में प्रयुक्त 'अक्ल' शब्द का सबसे उपयुक्त पर्यायवाची शब्द निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(क) परिश्रम (ख) मति
(ग) घमंड (घ) किस्मत

5. रामस्वरुप ने रतन को बहू जी से दरी के अतिरिक्त और क्या माँग कर लाने का निर्देश दिया?
(क) पूजा घर में रखी नई सफ़ेद धोती
(ख) बैठक में बिछाने वाला नया मेजपोश
(ग) बगल के कमरे में रखा हुआ बाजा
(घ) कल धोबी के यहाँ से आई चद्दर

उत्तरः
1. (क) अधिकारपूर्ण हास्य
2. (ख) वे नौकर के धीमेपन पर तीखा व्यंग्य कर रहे हैं।
3. (घ) आत्मश्लाघा
4. (ख) मति
5. (घ) कल धोबी के यहाँ से आई चद्दर

गद्यांश 2

रामस्वरुप : ग्रामोफोन बाजा होता है न?

प्रेमा : क्यों?

रामस्वरुप : दो तरह का होता है। एक तो आदमी का बनाया हुआ। उसे एक बार चलाकर जब चाहे रोक लो। और दूसरा परमात्मा का बनाया हुआ। उसका रिकार्ड एक बार चढ़ा तो रुकने का नाम नहीं।

प्रेमा : हटो भी ! तुम्हें ठठोली ही सूझती रहती है। यह तो होता नहीं कि उस अपनी उमा को राह पर लाते। अब देर ही कितनी रही है उन लोगों के आने में।

1. रामस्वरुप द्वारा अपनी पत्नी के संवादों की तुलना 'परमात्मा के बनाए ग्रामोफोन' से करने का अंतर्निहित कारण क्या है?
(क) पत्नी की कम बोलने की आदत
(ख) पत्नी का लगातार बोलते जाना
(ग) पत्नी के मधुर गायन की कला
(घ) पत्नी की धार्मिक बातों में रुचि

2. **अभिकथन (A) :** प्रेमा अपने पति रामस्वरूप की बातों को 'ठठोली' मानकर टाल देती है।
कारण (R) : वह इस समय मेहमानों के आगमन की निकटता के कारण बेहद चिंतित है।
(क) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।
(ख) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
(ग) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. इस पूरे प्रसंग में दोनों पात्रों के बीच चल रही बातचीत का स्वरूप कैसा प्रतीत होता है?
(क) अत्यधिक औपचारिक (ख) नोक-झोंक पूर्ण
(ग) घोर अपमानजनक (घ) रहस्यात्मक भाव

4. गद्यांश में आए 'ठठोली' शब्द का सर्वाधिक उपयुक्त अर्थ निम्नलिखित में से क्या होगा?
(क) परिहासात्मक मज़ाक
(ख) गहरी चिंता
(ग) कठोर डाँट
(घ) अज्ञानता पूर्ण व्यवहार

5. प्रेमा के अनुसार रामस्वरूप को इस समय मज़ाक करने के बजाय मुख्य रूप से क्या करना चाहिए था?
(क) रतन को तुरंत मक्खन लाने बाज़ार भेजना चाहिए था।
(ख) उमा को समझा-बुझाकर सही राह पर लाना चाहिए था।
(ग) बैठक में बिछाने के लिए नई दरी ढूँढ़नी चाहिए थी।
(घ) मेहमानों के स्वागत के लिए नए कपड़े पहनने चाहिए थे।

उत्तरः
1. (ख) पत्नी का लगातार बोलते जाना
2. (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
3. (ख) नोक-झोंक पूर्ण
4. (क) परिहासात्मक मज़ाक
5. (ख) उमा को समझा-बुझाकर सही राह पर लाना चाहिए था।

गद्यांश 3

रामस्वरूप : हाँ एक तो बाबू गोपालप्रसाद और दूसरा खुद लड़का है। देखो, उमा से कह देना कि ज़रा करीने से आए। ये लोग ज़रा ऐसे ही हैं, गुस्सा तो मुझे बहुत आता है इनके दकियानूसी खयालों पर। खुद पढ़े-लिखे हैं, वकील हैं, सभा-सोसाइटियों में जाते हैं, मगर लड़की चाहते हैं ऐसी कि ज्यादा पढ़ी-लिखी न हो।
प्रेमा : और लड़का?
रामस्वरूप : बताया तो था तुम्हें। बाप सेर है तो लड़का सवा सेर। बी.एससी. के बाद लखनऊ में ही तो पढ़ता है मेडिकल कॉलेज में। कहता है कि शादी का सवाल दूसरा है, तालीम का दूसरा। क्या करूँ, मजबूरी है।

1. गोपालप्रसाद के "खुद पढ़े-लिखे और वकील होने" के बावजूद कम पढ़ी-लिखी लड़की चाहने से उनकी कौन-सी मानसिकता उजागर होती है?
(क) अत्यधिक उदारता (ख) वैचारिक पाखंड
(ग) सामाजिक सेवा (घ) गहन संन्यास

2. रामस्वरूप के संवाद "बाप सेर है तो लड़का सवा सेर" के संदर्भ में कौन-सा कथन सत्य है?
I. शंकर अपने पिता से भी अधिक प्रगतिशील विचारों का समर्थक है।
II. शंकर भी अपने पिता की तरह रुढ़िवादी सोच में उनसे आगे है।
(क) कथन II सही है और I गलत है।
(ख) कथन I सही है और II गलत है।
(ग) कथन I और II दोनों ही गलत हैं।
(घ) कथन I और II दोनों ही सही हैं।

3. इस गद्यांश में रामस्वरूप का अपनी परिस्थितियों के प्रति कैसा भाव मुखरित हो रहा है?
(क) पूर्ण स्वाभिमान (ख) घोर उदासीनता
(ग) अत्यधिक हर्षोल्लास (घ) विवशता जनित क्षोभ

4. गद्यांश में प्रयुक्त 'दकियानूसी' शब्द का सही विलोम शब्द निम्नलिखित में से कौन-सा होगा?
(क) पुरातनपंथी (ख) प्रगतिशील
(ग) अनपढ़ (घ) संकीर्ण

5. रामस्वरूप के अनुसार शंकर अपनी उच्च शिक्षा (मेडिकल कॉलेज) और विवाह के विषय में क्या तर्क देता है?
(क) वह उच्च शिक्षित लड़कियों से ही विवाह करना चाहता है।
(ख) वह अपनी मर्जी से बिना किसी लेन-देन के विवाह करेगा।
(ग) वह पढ़ाई पूरी होने से पहले विवाह नहीं करना चाहता।
(घ) वह विवाह और शिक्षा को दो अलग बातें मानता है।

उत्तरः
1. (ख) वैचारिक पाखंड
2. (क) कथन II सही है और I गलत है।
3. (घ) विवशता जनित क्षोभ
4. (ख) प्रगतिशील
5. (घ) वह विवाह और शिक्षा को दो अलग बातें मानता है।

गद्यांश 4

गोपालप्रसाद : (जोशीली आवाज़ में) और पढ़ाई का यह हाल था कि एक बार कुर्सी पर बैठे कि बारह घंटे की 'सिटिंग' हो गई, बारह घंटे ! जनाब, मैं सच कहता हूँ कि उस जमाने का मैट्रिक भी वह अंग्रेजी लिखता था फर्राटे की, कि आजकल के एम.ए. भी मुकाबिला नहीं कर सकते।

रामस्वरूप : जी हाँ, जी हाँ! यह तो है ही।

गोपालप्रसाद : माफ कीजिएगा बाबू रामस्वरूप, उस जमाने की जब याद आती है, अपने को जब्त करना मुश्किल हो जाता है।

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ!... जी हाँ वह तो रंगीन जमाना था, रंगीन जमाना। हँ-हँ-हँ!

(शंकर भी ही-ही करता है।)

गोपालप्रसाद : (एक साथ अपनी आवाज़ और तरीका बदलते हुए) अच्छा तो साहब, फिर 'बिजनेस' की बातचीत हो जाए।

1. गोपालप्रसाद द्वारा अपने ज़माने की मैट्रिक की तुलना आज के एम.ए. से करना क्या संकेत देता है?
(क) वर्तमान शिक्षा प्रणाली के प्रति गहरा सम्मान
(ख) अपने अतीत को श्रेष्ठ दिखाने का अहम भाव
(ग) आधुनिक युवाओं की कर्मठता पर पूरा भरोसा
(घ) स्वयं को बहुत कम पढ़ा-लिखा साबित करना

2. गोपालप्रसाद द्वारा विवाह की चर्चा को अचानक 'बिजनेस' कहना उनके किस दृष्टिकोण को भली-भांति प्रकट करता है?
(क) विवाह को पूरी तरह एक व्यापारिक सौदा समझना
(ख) विवाह को एक पवित्र और अटूट संस्कार मानना
(ग) रामस्वरुप की आर्थिक मदद करने की सच्ची इच्छा
(घ) सामाजिक नियमों को बहुत कड़ाई से लागू करना

3. गद्यांश के अंत में गोपालप्रसाद द्वारा अचानक तरीका बदलने से वातावरण में कैसा परिवर्तन आता है?
(क) अत्यधिक काव्यात्मक (ख) व्यावसायिक व गंभीर
(ग) अत्यंत कारुणिक (घ) रहस्यमयी व डरावना

4. गद्यांश में प्रयुक्त 'जब्त' शब्द का सही अर्थ निम्नलिखित विकल्पों में से चुनिए:
(क) पूर्ण विनाश (ख) तीव्र दिखावा
(ग) खुली छूट (घ) आत्म-नियंत्रण

5. गोपालप्रसाद के अनुसार उनके ज़माने में लगातार कितनी देर बैठकर पढ़ने की क्षमता होती थी?
(क) कुल मिलाकर बारह घंटे
(ख) लगातार दो से तीन घंटे
(ग) पूरा दिन और पूरी रात
(घ) सुबह से लेकर दोपहर तक

उत्तरः

1. (ख) अपने अतीत को श्रेष्ठ दिखाने का अहम भाव
2. (क) विवाह को पूरी तरह एक व्यापारिक सौदा समझना
3. (ख) व्यावसायिक व गंभीर
4. (घ) आत्म-नियंत्रण
5. (क) कुल मिलाकर बारह घंटे

गद्यांश 5

गोपालप्रसाद : और जायचा (जन्मपत्र) तो मिल ही गया होगा?

रामस्वरुप : जी, जायचे का मिलना क्या मुश्किल बात है। ठाकुर जी के चरणों में रख दिया। बस, खुद-ब-खुद मिला हुआ समझिए।

गोपालप्रसाद : यह ठीक कहा आपने, बिल्कुल ठीक। (थोड़ी देर रुककर) लेकिन हाँ, यह जो मेरे कानों में भनक पड़ी है, यह तो गलत है न?

रामस्वरुप : (चौंककर) क्या?

गोपालप्रसाद : यह पढ़ाई-लिखाई के बारे में !... जी हाँ, साफ बात है साहब, हमें ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की नहीं चाहिए। मेम साहब तो रखनी नहीं, कौन भुगतेगा उसके नखरों को। बस हद से हद मैट्रिक-पास होनी चाहिए... क्यों, शंकर?

1. रामस्वरुप द्वारा जन्मपत्री को "ठाकुर जी के चरणों में रखकर मिला हुआ समझना" किस बात का परिचायक है?
(क) बात को कुशलता से टालना
(ख) अंधविश्वास का कड़ा विरोध
(ग) पूर्ण वैज्ञानिक दृष्टिकोण
(घ) तीव्र तार्किक क्षमता होना

2. **अभिकथन (A) :** गोपालप्रसाद को अपने बेटे के लिए अधिक पढ़ी-लिखी लड़की बिल्कुल नहीं चाहिए थी।
कारण (R) : वे मानते थे कि उच्च शिक्षित लड़कियाँ अपने अधिकारों के प्रति सजग और नखरे वाली होती हैं।
(क) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।
(ख) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
(ग) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. इस गद्यांश में लड़कियों की शिक्षा के प्रति गोपालप्रसाद के विचारों का लहजा कैसा है?
(क) अत्यंत सम्मानजनक (ख) संकीर्ण व उपेक्षापूर्ण
(ग) अत्यधिक प्रगतिशील (घ) बहुत ही संवेदनशील

4. गद्यांश में आए 'भनक पड़ना' मुहावरे का सही और सटीक अर्थ निम्नलिखित में से क्या है?
(क) साफ़-साफ़ पूरी बात सुनना
(ख) उड़ती हुई कोई ख़बर मिलना
(ग) किसी बात का लिखित प्रमाण होना
(घ) कानों में बहुत तेज दर्द होना

3. **वैज्ञानिक और इंजीनियर का दायित्व**: नई तकनीक और आविष्कार से देश को आत्मनिर्भर बनाना।
4. **शिक्षक का दायित्व**: नई पीढ़ी को सुशिक्षित और संस्कारवान बनाना।
5. **आम नागरिक का दायित्व**: कानून का पालन करना, स्वच्छता बनाए रखना, सही नेता को मत देना, देश की छवि को उज्ज्वल रखना।
6. **उद्योगपतियों का दायित्व**: रोजगार सृजन करना और देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करना।

(ख) अपने पास-पड़ोस में विचरने वाले पशु-पक्षियों की जीवनचर्या का अवलोकन कीजिए और अपने अवलोकन के आधार पर लिखिए कि आप उनके संघर्षों को किस रूप में देखते हैं?
(संकेत– आप अपनी पाठ्यपुस्तक में दी गई कहानी 'दो बैलों की कथा' के मुख्य पात्रों के अनुभवों को भी आधार बना सकते हैं।)

उत्तरः
मेरे पास-पड़ोस में मैंने अनेक पशु-पक्षियों की जीवनचर्या का अवलोकन किया है:

1. **चिड़िया**: प्रतिदिन प्रातःकाल से ही दाना चुगने निकल जाती है। अपने बच्चों के लिए घोंसला बनाती है। बिल्ली या बड़े पक्षी से बच्चों की रक्षा के लिए जान की बाजी लगाती है। यह संघर्ष परिवार के प्रति प्रेम और उत्तरदायित्व का प्रतीक है।
2. **कुत्ता**: अपने स्वामी की रक्षा के लिए रात भर जागता है। अजनबियों पर भौंककर घर की सुरक्षा करता है — यह कर्तव्यनिष्ठा का उदाहरण है।
3. **चींटी**: छोटे-छोटे दल बनाकर, सहकार से काम करती है। अपने से कई गुना भारी भोजन उठाकर ले जाती है — यह सामूहिक प्रयास और परिश्रम का संदेश देता है।
4. **'दो बैलों की कथा' के संदर्भ में**: हीरा और मोती ने बंधन में भी हार नहीं मानी। उन्होंने मिलकर संघर्ष किया और अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की। यह दर्शाता है कि संघर्ष में सहयोग और दृढ़ता से किसी भी बाधा को पार किया जा सकता है।

इन सबका संघर्ष देखकर यह स्पष्ट होता है कि जीवन में संघर्ष स्वाभाविक है, और प्रत्येक प्राणी अपने-अपने कर्तव्य का पालन करते हुए जीता है।

(ग) इस निबंध में जीवन को युद्ध क्यों कहा गया है? आप अपने घर के बड़ों से इस विषय पर चर्चा करके उनके और अपने विचार लिखिए।

उत्तरः
मेरे विचार: निबंध में जीवन को युद्ध इसलिए कहा गया है क्योंकि जिस प्रकार युद्ध में एक लक्ष्य होता है और उसे पाने के लिए हर व्यक्ति अपनी-अपनी भूमिका निभाता है — कोई लड़ता है, कोई रसद पहुँचाता है, कोई जयघोष करता है — उसी प्रकार जीवन में भी देश की उन्नति के लिए सभी को मिलकर प्रयास करना होता है।

घर के बड़ों के विचार: घर के बड़ों का कहना है कि जीवन को युद्ध इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें प्रतिदिन अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है — गरीबी, बीमारी, अज्ञान, भ्रष्टाचार — ये सब जीवन-युद्ध के शत्रु हैं। जो व्यक्ति इनसे हार नहीं मानता और अपना कर्तव्य निभाता रहता है, वही सच्चा योद्धा है।

(घ) देश की भौगोलिक सीमाओं की रक्षा सैनिक करते हैं। इसी तरह हमारे आस-पास हमारे जीवन को बेहतर बनाने के लिए अनेक लोग कार्यरत हैं। ये कौन-कौन लोग हैं और उनके लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं?

उत्तरः
हमारे जीवन को बेहतर बनाने वाले लोग और उनके लिए हम क्या कर सकते हैं:

1. **शिक्षक — ज्ञान देकर हमारे भविष्य का निर्माण करते हैं। उनके लिए**: उनका आदर करें, उनकी बातों को ध्यान से सुनें।
2. **चिकित्सक और नर्स — हमारे स्वास्थ्य की रक्षा करते हैं। उनके लिए**: उनके कार्य के प्रति कृतज्ञ रहें, स्वास्थ्य नियमों का पालन करें।
3. **सफाई कर्मचारी — शहर को साफ रखते हैं। उनके लिए**: कूड़ा सही स्थान पर डालें, उनके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करें।
4. **किसान — भोजन उगाते हैं। उनके लिए**: अन्न की बर्बादी न करें, उनके परिश्रम का सम्मान करें।
5. **पुलिस और अग्निशमन कर्मी — हमारी सुरक्षा करते हैं। उनके लिए**: कानून का पालन करें, आपातकाल में सहयोग करें।

4. "अपने पड़ोस में खेलकर, पड़ोसियों की ममता-दुलार पा, बड़ा हुआ था।"

(क) उपर्युक्त पंक्ति के आधार पर लिखिए कि पास-पड़ोस के लोगों में किस तरह के पारस्परिक संबंध रहे होंगे?

उत्तरः
इस पंक्ति से स्पष्ट होता है कि उस समय पास-पड़ोस में बेहद घनिष्ठ और आत्मीय संबंध होते थे:

1. ममता और दुलार का भाव — पड़ोसी बच्चों को अपने बच्चों की तरह प्यार करते थे। बच्चे पड़ोसियों के घर निडर होकर खेलते थे।
2. सहकारिता — सुख-दुख में पड़ोसी एक-दूसरे के साथ खड़े रहते थे।
3. आत्मीय विश्वास — लोग अपने घर की चाबी पड़ोसी को सौंपकर निश्चिंत हो जाते थे।
4. सामूहिक उत्सव — त्योहार और खुशियाँ मिलकर मनाई जाती थीं।

अध्याय 7

मैं और मेरा देश

1. लेखक परिचय

नागरिक और राष्ट्र के अविभाज्य संबंधों की व्याख्या करने वाले निबंध 'मैं और मेरा देश' के लेखक कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का जन्म सन् 1906 में देवबंद, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनकी पहचान एक महान पत्रकार और संस्मरणात्मक निबंधकार के रूप में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। इन्होंने आजीवन अपनी ओजस्वी लेखनी के माध्यम से देश के शक्तिबोध, सौंदर्यबोध और मानवीय जीवन-दर्शन को सुदृढ़ करके हिंदी साहित्य को अलंकृत किया है। अपनी अनूठी संवादात्मक एवं प्रश्नोत्तर शैली के द्वारा इन्होंने हिंदी प्रेमियों को गौरवान्वित किया है। सन् 1995 में इस महान पत्रकार एवं निबंधकार का निधन हो गया।

2. पाठ-परिचय

'मैं और मेरा देश' कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' द्वारा रचित एक विचारोत्तेजक निबंध है जो व्यक्ति और राष्ट्र के अटूट संबंध को गहराई से स्थापित करता है। लेखक के अनुसार व्यक्ति की पूर्णता केवल उसकी निजता में नहीं, बल्कि उसके परिवार, क्षेत्र और राष्ट्र की पहचान से भी जुड़ी है। स्वामी रामतीर्थ और जापानी युवक की प्रेरक घटनाओं के माध्यम से लेखक यह सिद्ध करता है कि प्रत्येक नागरिक का आचरण उसके देश के सम्मान को प्रभावित करता है।

3. पाठ-सारांश

व्यक्ति और राष्ट्र का अविभाज्य संबंध

लेखक स्पष्ट करते हैं कि एक मनुष्य की पूर्णता केवल उसकी निजता में नहीं होती, बल्कि वह अपने परिवार, पड़ोस और नगर के संचित ज्ञान व सहयोग से एक पूरा मनुष्य बनता है। लेखक स्वयं को अपने नगर में सम्मानित और पूर्ण महसूस कर रहे थे। परंतु पराधीन भारत के दौर में लाला लाजपत राय के एक अनुभव ने उनके मानस में वैचारिक भूकंप ला दिया।

लालाजी ने कहा था कि संसार के समृद्ध देशों में घूमने के बाद भी भारत की गुलामी की लज्जा का कलंक हमेशा उनके माथे पर लगा रहा। इस घटना से लेखक को समझ आया कि यदि किसी नागरिक का देश पराधीन या हीन हो, तो संसार या स्वर्ग के सारे साधन भी उसे सच्चा गौरव नहीं दे सकते।

देश के प्रति साधारण नागरिक का दायित्व

निबंध में इस अज्ञान को दूर किया गया है कि केवल वैज्ञानिक या धनपति ही देश के लिए कुछ कर सकते हैं। जीवन एक युद्ध की तरह है, जिसमें केवल लड़ना ही नहीं, बल्कि रसद पहुँचाना, खेती करना और यहाँ तक कि दर्शकों की तरह तालियाँ बजाकर खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता' की कहावत सौ फीसदी झूठ है, क्योंकि इतिहास में अकेले नागरिकों ने भी बड़े बदलाव किए हैं।

इसे समझाने के लिए लेखक ने दो जापानी घटनाएँ प्रस्तुत की हैं:

पहली घटना: स्वामी रामतीर्थ जब जापान में फल खोज रहे थे, तो एक साधारण जापानी युवक ने उन्हें ताज़े फल भेंट किए और मूल्य के बदले सिर्फ यह माँगा कि वे अपने देश जाकर यह न कहें कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते। इस देशभक्ति की भावना से उसने अपने देश का मस्तक ऊँचा कर दिया।

दूसरी घटना: एक अन्य विदेशी छात्र ने जापान के पुस्तकालय की पुस्तक से कुछ दुर्लभ चित्र चुरा लिए। पकड़े जाने पर न केवल उसे देश से निकाला गया, बल्कि पुस्तकालय के बाहर बोर्ड लगा दिया गया कि उस देश का कोई भी नागरिक वहाँ प्रवेश नहीं कर सकता।

यह स्पष्ट करता है कि नागरिक की छोटी से छोटी हीनता या गौरव का सीधा फल उसके देश को भुगतना पड़ता है।

शक्ति-बोध और सौंदर्य-बोध की कसौटी

लेखक के अनुसार, हमारे देश को दो चीज़ों की सबसे ज़्यादा ज़रूरत है:

1. **शक्ति-बोध:** जब लोग सार्वजनिक स्थानों पर देश की भीतरी दशा की कड़वी आलोचना करते हैं या दूसरे देशों से तुलना करके अपने देश को हीन बताते हैं, तो वे देश के सामूहिक मानसिक बल और आत्मविश्वास को 'शल्य' की भाँति ठेस पहुँचाते हैं। (शल्य महाभारत में कर्ण का सारथी था, जो बार-बार अर्जुन की प्रशंसा कर कर्ण का मनोबल तोड़ देता था)।

यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि जापानी युवक और दूसरे देश के विद्यार्थी — दोनों की घटनाएँ यह सिद्ध करती हैं कि नागरिक का आचरण देश की छवि को प्रभावित करता है और देश की स्थिति नागरिक के सम्मान को। 'गाँठ' यही अटूट संबंध है जो देश और नागरिक को एक-दूसरे से जोड़ती है।

6. प्रस्तुत निबंध में मुख्यतः कौन-सा भाव व्यक्त हुआ है?
(क) लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था
(ख) पारिवारिक संबंधों का महत्व
(ग) व्यक्ति और देश का अंतर्संबंध
(घ) देश का महत्व और व्यक्ति की उपेक्षा

उत्तरः
(ग) व्यक्ति और देश का अंतर्संबंध
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि पूरा निबंध इसी विचार के इर्द-गिर्द है कि व्यक्ति और देश दो अलग चीज़ें नहीं हैं। नागरिक का गौरव देश के गौरव से और देश का सम्मान नागरिक के आचरण से जुड़ा है। लेखक बार-बार यही कहता है — "मैं और मेरा देश दो अलग चीज़ें तो हैं ही नहीं।"

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. स्वामी रामतीर्थ फल देने वाले युवक का उत्तर सुनकर मुग्ध क्यों हो गए?

उत्तरः
स्वामी रामतीर्थ मुग्ध इसलिए हो गए क्योंकि उस जापानी युवक ने फलों के मूल्य के रूप में धन नहीं माँगा, बल्कि अपने देश के सम्मान की रक्षा माँगी। युवक ने कहा कि फलों का मूल्य यह है कि आप अपने देश में जाकर यह न कहें कि "जापान में अच्छे फल नहीं मिलते।" यह उत्तर एक सच्चे देशप्रेमी नागरिक का था जिसे अपनी निजी सुविधा से अधिक अपने देश की प्रतिष्ठा की चिंता थी। उसने अपनी बात बीच में छोड़कर दौड़कर फल लाए और बिना मूल्य लिए भेंट किए। इस असाधारण देशप्रेम और आत्मसम्मान की भावना ने स्वामी जी को मुग्ध किया।

2. जापान के युवक ने स्वामी रामतीर्थ को दिए गए फलों के मूल्य के रूप में क्या माँगा? आपके मन में उस युवक के व्यक्तित्व की कौन-सी छवि उभरती है, यह भी लिखिए।

उत्तरः
जापान के युवक ने फलों के मूल्य के रूप में धन नहीं माँगा। उसने स्वामी रामतीर्थ से केवल यह माँगा कि वे अपने देश में जाकर किसी से यह न कहें कि "जापान में अच्छे फल नहीं मिलते।" अर्थात् उसने अपने देश की प्रतिष्ठा की रक्षा का संकल्प माँगा।

उस युवक के व्यक्तित्व की जो छवि मन में उभरती है वह एक सच्चे, स्वाभिमानी और देशभक्त नागरिक की है। वह एक साधारण व्यक्ति था — न कोई नेता, न विद्वान — फिर भी उसका देशप्रेम असाधारण था। वह अपनी पत्नी को विदा करने आया था, परंतु देश की आलोचना सुनते ही वह सब छोड़कर दौड़ पड़ा। उसने निःस्वार्थ भाव से फल लाकर भेंट किए और बदले में केवल देश का सम्मान माँगा। ऐसा व्यक्ति सच्चे अर्थ में एक आदर्श नागरिक है जो समझता है कि उसका हर कार्य उसके देश की छवि को प्रभावित करता है।

3. "बात यह है कि मैं और मेरा देश दो अलग चीज तो हैं ही नहीं।" स्वयं को देश से अलग न मानने के पीछे क्या तर्क हो सकते हैं, उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः
लेखक का यह कथन अत्यंत गहरे अर्थ वाला है। स्वयं को देश से अलग न मानने के पीछे निम्नलिखित तर्क हैं:

1. **नागरिक का आचरण = देश की छवि**: जापानी विद्यार्थी ने पुस्तकालय से चित्र चुराए — इससे उसके पूरे देश के नागरिकों को उस पुस्तकालय में प्रवेश से वंचित किया गया। एक व्यक्ति के कार्य ने पूरे देश को प्रभावित किया।
2. **देश की गुलामी = व्यक्ति की लज्जा**: लाला लाजपत राय अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस — सभी जगह गए, पर हर जगह भारत की गुलामी का कलंक उनके माथे पर रहा। व्यक्तिगत योग्यता के बावजूद देश की पराधीनता ने उनके गौरव को क्षीण किया।
3. **व्यक्ति का सत्कार्य = देश का गौरव**: जापानी युवक ने अपने देश की प्रतिष्ठा की रक्षा की — इससे उस साधारण युवक का कार्य इतिहास में अमर हो गया। व्यक्ति के सत्कार्य से देश का सिर ऊँचा होता है।
4. **देश की शक्ति = नागरिक की सुरक्षा**: जब देश सम्मानित और शक्तिशाली होता है, तो उसका प्रत्येक नागरिक विश्व में सम्मान से जीता है। दोनों की रक्षा एक-दूसरे पर निर्भर है।

मेरे अनुभव मेरे विचार

1. "देश की हीनता और गौरव का ही फल उसे नहीं मिलता, उसकी हीनता और गौरव का फल भी उसके देश को मिलता है", अपने आस-पास के विभिन्न उदाहरणों के द्वारा इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः
इस पंक्ति का भाव यह है कि व्यक्ति और देश का संबंध दोतरफा है — दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं।
आस-पास के उदाहरण:

1. **खेल जगत में**: जब कोई भारतीय खिलाड़ी ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतता है, तो उसका गौरव पूरे देश का गौरव बन जाता है — करोड़ों भारतीय उसकी जीत पर गर्व महसूस करते हैं। इसके विपरीत, यदि कोई खिलाड़ी मैच-फिक्सिंग में लिप्त पाया जाए, तो उसकी हीनता पूरे देश को लज्जित करती है।

72. अजेयता – जिसे जीता न जा सके
73. उल्लेख – वर्णन, चर्चा
74. सघन – घना, गझिन, ठोस
75. आत्मविश्वास – स्वयं पर भरोसा
76. तरेड़ – दरार
77. भावी – आने वाला, भविष्य का
78. ज़ीना – सीढ़ी, सोपान
79. सुरुचि – अच्छी पसंद, शिष्टता
80. ठेस – आघात, मानसिक चोट
81. आघात – गहरी चोट, प्रहार
82. संस्कृति – सभ्यता, रीति-रिवाज
83. उच्चता – बड़प्पन, श्रेष्ठता
84. चुनाव – मत डालने की प्रक्रिया, इलेक्शन
85. उत्तेजक – जोश पैदा करने वाले, भड़काने वाले

5. पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. "एक दिन आनंद की इस दीवार में <u>दरार</u> पड़ गई", इस पंक्ति में रेखांकित शब्द 'दरार' किस ओर संकेत करता है?
(क) पूर्णता के भाव की तुष्टि
(ख) पारस्परिक संबंध टूटने की स्थिति
(ग) पूर्णता के भाव पर प्रहार
(घ) सुख-सुविधाओं का अभाव

उत्तरः
(ग) पूर्णता के भाव पर प्रहार
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि लेखक अपने घर, पड़ोस और नगर के संबंधों से पूर्णतः संतुष्ट था और उसे लग रहा था कि उसकी मनुष्यता में कोई अपूर्णता नहीं रही। लेकिन लाला लाजपत राय के अनुभव ने उसे झझकोर दिया — देश की गुलामी के कलंक के सामने सारी व्यक्तिगत पूर्णता निरर्थक है। यह 'दरार' उसी पूर्णता के भाव पर प्रहार का प्रतीक है।

2. निबंध में कहा गया है कि "ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने में एक अपूर्व आनंद आता है।" लेखक को किस तरह के प्रश्नों का उत्तर देने में आनंद की अनुभूति होती है?
(क) बात को विस्तार देने वाले प्रश्नों का
(ख) बात का निष्कर्ष प्रस्तुत करने वाले प्रश्नों का
(ग) बिना किसी संदर्भ के पूछे गए प्रश्नों का
(घ) किसी की समझ का आकलन करने वाले प्रश्नों का

उत्तरः
(क) बात को विस्तार देने वाले प्रश्नों का
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि लेखक स्वयं कहता है कि यह प्रश्न "बात को खिलने का, आगे बढ़ने का अवसर देता है।" ऐसे प्रश्न जो विषय को और गहराई तथा विस्तार से समझने का द्वार खोलते हैं, उनका उत्तर देने में लेखक को विशेष आनंद आता है।

3. "अपने महान राष्ट्र की पराधीनता के दीन दिनों में जिन लोगों ने अपने रक्त से गौरव के दीपक जलाए", इस वाक्य में पराधीनता के दिनों को दीन कहा गया है क्योंकि पराधीन भारत में—
(क) भोजन, आवास और वस्त्र जैसी मूलभूत सुविधाओं का अभाव था।
(ख) लोगों के आत्मसम्मान और गौरव की भावना का दमन होता था।
(ग) महत्वपूर्ण निर्णय लेने की स्वतंत्रता थी।
(घ) धार्मिक रीति-रिवाजों को मनाने पर रोक लगाई जाती थी।

उत्तरः
(ख) लोगों के आत्मसम्मान और गौरव की भावना का दमन होता था।
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि निबंध में लाला लाजपत राय का उदाहरण देते हुए लेखक बताता है कि विदेश जाने पर भी "भारतवर्ष की गुलामी की लज्जा का कलंक माथे पर लगा रहा।" पराधीनता का सबसे बड़ा दर्द आत्मसम्मान और गौरव का हनन था — इसीलिए उन दिनों को 'दीन' कहा गया है।

4. निबंध के अनुसार मनुष्य साधन-संपन्न होते हुए भी गौरव का अनुभव नहीं कर सकते यदि—
(क) उन्हें विदेश भ्रमण के अवसर न मिलें।
(ख) उनका देश किसी दूसरे देश के अधीन हो।
(ग) उनके नगर की शासन प्रणाली कमजोर हो।
(घ) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन होता हो।

उत्तरः
(ख) उनका देश किसी दूसरे देश के अधीन हो।
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि लेखक स्पष्ट कहता है — "किसी मनुष्य के पास संसार के ही नहीं, यदि स्वर्ग के भी सब उपहार और साधन हों, पर उसका देश गुलाम हो या किसी भी दूसरे रूप में हीन हो तो वे सारे उपहार और साधन उसे गौरव नहीं दे सकते।" लाला लाजपत राय का अनुभव भी यही दर्शाता है।

5. "पर उन दो घटनाओं में वह <u>गाँठ</u> इतनी साफ है", इस वाक्य में रेखांकित शब्द 'गाँठ' किन दो बातों को साथ बाँधती है?
(क) देश और नागरिक
(ख) देश और संविधान
(ग) देश और विदेश
(घ) व्यवसाय और आजीविका

उत्तरः
(क) देश और नागरिक

5. गोपालप्रसाद के अनुसार उनके घर की बहू के लिए शिक्षा की अधिकतम सीमा क्या होनी चाहिए?
(क) बी.ए. अथवा एम.ए. पास
(ख) बिना किसी स्कूली शिक्षा के
(ग) मेडिकल कॉलेज की डिग्री
(घ) केवल और केवल मैट्रिक-पास

उत्तरः
1. (क) बात को कुशलता से टालना
2. (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
3. (ख) संकीर्ण व उपेक्षापूर्ण
4. (ख) उड़ती हुई कोई ख़बर मिलना
5. (घ) केवल और केवल मैट्रिक-पास

गद्यांश 6

उमा : (हल्की लेकिन मजबूत आवाज़ में) क्या जवाब दूँ, बाबू जी ! जब कुर्सी-मेज बिकती है तब दुकानदार कुर्सी-मेज से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ खरीदार को दिखला देता है। पसंद आ गई तो अच्छा है, वरना...
रामस्वरुप : (चौंककर खड़े हो जाते हैं।) उमा, उमा !
उमा : अब मुझे कह लेने दीजिए, बाबूजी।... ये जो महाशय मेरे खरीदार बनकर आए हैं, इनसे ज़रा पूछिए कि क्या लड़कियों के दिल नहीं होता? क्या उनके चोट नहीं लगती? क्या वे बेबस भेड़-बकरियाँ हैं, जिन्हें कसाई अच्छी तरह देख-भालकर खरीदते हैं?

1. उमा द्वारा स्वयं की तुलना 'कुर्सी-मेज' से करना समाज की किस विसंगति की ओर अकाट्य संकेत करता है?
(क) लड़कियों को बहुत आरामदेह जीवन देना
(ख) समाज में फर्नीचर की बढ़ती हुई माँग
(ग) दुकानदारों द्वारा घटिया माल बेचना
(घ) विवाह बाज़ार में स्त्री को वस्तु समझ लेना

2. उमा के संवादों में "हल्की लेकिन मजबूत आवाज़" का होना उसके चरित्र की किस विशेषता को रेखांकित करता है?
(क) उसका अत्यधिक संकोच और डरपोक होना
(ख) उसका आंतरिक साहस और वैचारिक दृढ़ता
(ग) बड़ों का अपमान करने की उसकी उद्दंडता
(घ) शारीरिक रूप से बहुत कमज़ोर होना

3. इस पूरे प्रसंग में उमा के वक्तव्य से उत्पन्न होने वाला मुख्य मूड क्या है?
(क) हास्यप्रद (ख) घोर कायरता
(ग) क्षोभ और विद्रोह (घ) अत्यधिक शांति

4. गद्यांश में प्रयुक्त 'बेबस' शब्द में कौन-सा उपसर्ग लगा हुआ है?
(क) बे (ख) ब
(ग) बेव (घ) बेब

5. उमा ने अपने पिता के सामने खरीदार बनकर आए गोपालप्रसाद की तुलना किससे की है?
(क) बहुत ही सीधे-सादे दुकानदारों से
(ख) पशुओं को परख कर खरीदने वाले कसाई से
(ग) समाज के बहुत बड़े समाजसेवकों से
(घ) मिट्टी के सुंदर खिलौने बनाने वाले से

उत्तरः
1. (घ) विवाह बाज़ार में स्त्री को वस्तु समझ लेना
2. (ख) उसका आंतरिक साहस और वैचारिक दृढ़ता
3. (ग) क्षोभ और विद्रोह
4. (क) बे
5. (ख) पशुओं को परख कर खरीदने वाले कसाई से

2. **विद्यालय में**: यदि हमारे विद्यालय का कोई छात्र राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार जीतता है, तो पूरे विद्यालय का नाम रोशन होता है। और यदि कोई छात्र गलत व्यवहार करे, तो विद्यालय की छवि धूमिल होती है।
3. **विदेश में रहने वाले भारतीय**: जो भारतीय विदेश में अपने अच्छे आचरण से पहचान बनाते हैं, वे भारत की छवि को उज्ज्वल करते हैं। पर यदि कोई भारतीय विदेश में धोखाधड़ी करे, तो सभी भारतीयों को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है।
4. **स्वच्छता का उदाहरण**: जो नागरिक सार्वजनिक स्थान पर कूड़ा फेंकते हैं, वे अपने देश की सुंदरता और संस्कृति को हानि पहुँचाते हैं। इससे विदेशी पर्यटक भारत के बारे में नकारात्मक धारणा बनाते हैं।

2. "मुझे बहुतों की अपने लिए जरुरत पड़ती थी। मैं भी बहुतों की जरूरत का उनके लिए जवाब था।"

(क) प्रातःकाल से लेकर रात्रि तक आप अपने किन-किन कार्यों में किस-किसका क्या सहयोग लेते हैं और आप दूसरों को किस तरह का सहयोग देते हैं? अपने अनुभव लिखिए।

उत्तरः
प्रातःकाल से रात्रि तक मेरे दैनिक जीवन में अनेक लोगों का सहयोग होता है:
सहयोग जो मैं लेता/लेती हूँ : माँ प्रातः भोजन बनाती हैं — उनका श्रम मुझे ऊर्जा देता है। दूधवाला दूध पहुँचाता है, अखबार वाला समाचार-पत्र। विद्यालय में शिक्षक ज्ञान देते हैं। सड़क पर बस चालक मुझे विद्यालय पहुँचाते हैं। किसान अन्न उगाता है, दुकानदार सामान देता है। बिजली विभाग और जल-विभाग के कर्मचारी मूलभूत सुविधाएँ देते हैं।
सहयोग जो मैं देता/देती हूँ : छोटे भाई-बहन को पढ़ाई में मदद करता/करती हूँ। घर के छोटे-छोटे कार्यों में माता-पिता का हाथ बँटाता/बँटाती हूँ। मोहल्ले में किसी बुज़ुर्ग को रास्ता बताने या सामान उठाने में मदद करता/करती हूँ। कक्षा में सहपाठियों को समझाने में सहयोग देता/देती हूँ।

(ख) उपर्युक्त वाक्य में रेखांकित शब्द 'बहुतों' में कौन-कौन सम्मिलित होंगे, अनुमान के आधार पर लिखिए।

उत्तरः
'बहुतों' में निम्नलिखित लोग सम्मिलित होंगे:
1. परिवार के सदस्य — माता-पिता, भाई-बहन।
2. पड़ोसी — जो आपसी संकट में सहायता करते हैं।
3. शिक्षक — जो ज्ञान और संस्कार देते हैं।
4. किसान — जो अन्न उगाकर सबका भरण-पोषण करते हैं।
5. श्रमिक और कारीगर — जो घर, वस्त्र और बर्तन बनाते हैं।
6. चिकित्सक और नर्स — जो स्वास्थ्य की रक्षा करते हैं।
7. सफाई कर्मचारी — जो नगर को स्वच्छ रखते हैं।
8. सैनिक — जो देश की सीमाओं की रक्षा करते हैं।
9. व्यापारी और दुकानदार — जो आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध कराते हैं।

(ग) रचनाकार को स्वयं के लिए दूसरे लोगों से किस प्रकार के सहयोग की आवश्यकता पड़ती होगी और वह दूसरों को किस प्रकार का सहयोग देता होगा, अनुमान के आधार पर लिखिए।

उत्तरः
रचनाकार को दूसरों से मिलने वाला सहयोग:
1. परिवार का भावनात्मक सहयोग — जो उन्हें लेखन के लिए अनुकूल वातावरण देता है।
2. समाज के विभिन्न वर्गों से — जिनके जीवन और अनुभव उनके लेखन की सामग्री बनते हैं।
3. पाठकों का प्रोत्साहन — जो उनके विचारों को आगे ले जाते हैं।
4. प्रकाशक और पत्रिका संपादक — जो उनकी रचनाओं को जन-जन तक पहुँचाते हैं।
5. पुस्तकालय और ज्ञान के स्रोत — जो उनके शोध में सहायता करते हैं।

रचनाकार का दूसरों को सहयोग:
1. अपने लेखन द्वारा समाज को नई सोच और प्रेरणा देना।
2. सामाजिक कुरीतियों और समस्याओं की ओर ध्यान दिलाना।
3. राष्ट्रप्रेम और नागरिक कर्तव्य की भावना जगाना।
4. भाषा और साहित्य को समृद्ध करना।
5. अपनी पत्रकारिता और लेखन द्वारा स्वतंत्रता आंदोलन को बल देना।

3. "सुना नहीं आपने कि जीवन एक युद्ध है और युद्ध में लड़ना ही तो काम नहीं होता।"

(क) उपर्युक्त वाक्य के रेखांकित अंश "युद्ध में लड़ना ही तो काम नहीं होता" के आधार पर लिखिए कि देश की प्रगति, विकास एवं सुरक्षा के प्रति हम सभी के क्या-क्या दायित्व हैं? अपने उत्तर को विस्तार देने के लिए अपने घर या पास-पड़ोस के बड़ों और अध्यापक से चर्चा करके लिखिए।

उत्तरः
देश की प्रगति, विकास और सुरक्षा एक सामूहिक युद्ध है जिसमें सबकी अलग-अलग भूमिका होती है। घर के बड़ों और अध्यापकों से चर्चा करके जो दायित्व उभरे वे इस प्रकार हैं:
1. **विद्यार्थी का दायित्व**: लगन से पढ़ना और कौशल विकसित करना ताकि भविष्य में देश के लिए उपयोगी नागरिक बन सकें।
2. **किसान का दायित्व**: अन्न उगाकर देश को खाद्य सुरक्षा प्रदान करना — सेना के लिए रसद की व्यवस्था की तरह।

2. **सौंदर्य-बोध:** जो लोग रास्तों पर केले का छिलका फेंकते हैं, थूकते हैं, गंदगी फैलाते हैं या अभद्र भाषा का प्रयोग करते हैं, वे देश के सौंदर्य-बोध और संस्कृति को गहरी चोट पहुँचाते हैं।

अंत में, लेखक नागरिकों के सजग 'चुनाव और मतदान' को देश की उच्चता और हीनता की अंतिम कसौटी मानते हैं।

4. कठिन शब्दार्थ

पृष्ठ 121

1. संपर्क – मेल-जोल, संबंध
2. संचित – इकट्ठा किया हुआ, जमा किया हुआ, ढेर लगाया हुआ
3. संगठित – एकजुट, व्यवस्थित
4. दरार – दरार
5. हीन – तुच्छ, घटिया, नीचा
6. भूकंप – भूचाल, धरती का डोलना
7. अपूर्व – अनोखा, अनूठा, जो पहले न हुआ हो
8. मानस – मन, चित्त, मन से उत्पन्न, मानसरोवर, रामचरितमानस

पृष्ठ 122

9. तेजस्वी – तेजवाला, प्रतापी, शक्तिशाली, प्रभावशाली
10. पराधीनता – गुलामी, परतंत्रता
11. दीन – असहाय, गरीब, दुखी
12. बवंडरों – चक्रवातों, तूफानों
13. झकझोरों – झटकों, थपेड़ों
14. तेजस्विता – प्रभावशीलता, प्रताप
15. गठन – बनावट, रचना
16. सर्वोत्तम – सबसे अच्छा, श्रेष्ठ
17. ठसक – चाल-ढाल का बनावटीपन, जिससे रूप, धन आदि का गर्व सूचित होता हो; ऐंठ, शान, नखरा
18. कसक – टीस, हल्का दर्द, चुभन
19. लज्जा – शर्म, हया
20. धनपति – धनी व्यक्ति, कुबेर
21. त्याग – छोड़ना, उत्सर्ग
22. धनिक – धनवान, धनी, स्वामी

पृष्ठ 123

23. फिक्र – चिंता, सोच
24. उत्तेजना – जोश, उकसावा
25. जीवनशास्त्र – जीवन का विज्ञान
26. अज्ञान – जानकारी न होना, मूर्खता
27. विशाल – बहुत बड़ा, विस्तृत
28. दर्शनशास्त्रियों – दार्शनिकों, तत्ववेत्ताओं
29. बहुमुखी – कई दिशाओं या पक्षों वाला
30. रसद – अनाज, खाने का सामान, भत्ता, राशन
31. जय – जीत, विजयघोष
32. मुशायरों – कवि-सम्मेलनों (उर्दू)
33. दाद देना – न्यायोचित प्रशंसा करना, न्याय करना
34. साक्षी – गवाही, गवाह का बयान
35. खील-खील – बिखर जाना, नष्ट होना
36. छूमंतर – गायब हो जाना
37. गाँठ – बंधन, जुड़ाव

पृष्ठ 124

38. मंच (प्लेटफार्म) – स्टेशन का चबूतरा
39. इनकार – मना करना, निषेध
40. आग्रह – जिद, अनुरोध
41. मुग्ध – मोहित, रीझा हुआ
42. गौरव – सम्मान, बड़प्पन, महत्ता
43. निवासी – रहने वाला
44. दुर्लभ – जो कठिनाई से मिले, नायाब
45. बरामद – ज़ब्त करना, वापस मिलना

पृष्ठ 125

46. मस्तक – सिर, माथा
47. लांछित – दोषयुक्त, कलंकित
48. हीनता – कमी, नीचा होने का भाव
49. अध्ययन – पढ़ाई, अनुशीलन
50. विशालता – बड़प्पन, फैलाव
51. भावना – विचार, मन का भाव
52. वर्षगाँठ – जन्मदिन
53. स्वीकार – मंजूर करना, अपनाना
54. हँडिया – एक प्रकार का मिट्टी का बर्तन

पृष्ठ 126

55. निहाल – प्रसन्न, कृतकृत्य, हर तरह से तृप्त
56. शाही – राजसी, ठाठदार
57. सुतली – सन या पटसन के रेशों से बटकर बनाई हुई डोरी
58. भाव-मुग्ध – भावना में लीन हो जाना
59. दस्तखत (दस्तखती) – हस्ताक्षर, साइन
60. विद्वान – ज्ञानी, समझदार
61. अनुकूल – पक्ष में, योग्य
62. विवरण – ब्यौरा, विस्तार
63. कसौटी – परख, जाँचने का माध्यम
64. दशा – स्थिति, हालत
65. शक्ति-बोध – ताकत का अहसास
66. सौंदर्य-बोध – सुंदरता की समझ
67. चौपाल – खुली या छायी हुई मंडपाकार बैठक जहाँ गाँव के लोग बैठकर पंचायत आदि करते हों; छायादार बड़ा चबूतरा या दालान
68. कुरुचि – बुरी पसंद, अशिष्टता

पृष्ठ 127

69. तुलना – बराबरी करना, मुकाबला
70. श्रेष्ठ – उत्तम, बढ़िया
71. ह्रास (ह्रास) – कमी, गिरावट, घटती

5. बड़ों का संरक्षण — मोहल्ले के बड़े-बुज़ुर्ग सभी बच्चों के संरक्षक होते थे।

(ख) वर्तमान समय में ऐसे संबंधों में किस तरह के परिवर्तन आए हैं और इनके क्या कारण हो सकते हैं? लिखिए।

उत्तरः

परिवर्तन: आज के समय में पड़ोसी संबंध काफी बदल गए हैं। बड़े-बड़े शहरों में लोग अपने पड़ोसी का नाम भी नहीं जानते। फ्लैट संस्कृति में सब अपने-अपने कमरों में बंद रहते हैं।

कारण:

1. व्यस्त जीवनशैली — नौकरी, स्कूल, दफ्तर की व्यस्तता में पड़ोसियों से मिलने का समय नहीं।
2. तकनीक और मोबाइल — लोग सोशल मीडिया पर दूर के मित्रों से तो जुड़े हैं, पर पड़ोसी से बात नहीं।
3. एकांत की चाहत — शहरी जीवन में लोग अपनी निजता को अधिक महत्व देते हैं।
4. भय और अविश्वास — शहरों में अपराध बढ़ने से अपरिचितों पर विश्वास कम हुआ है।
5. संयुक्त परिवारों का टूटना — एकल परिवार संस्कृति में लोग केवल अपने परिवार तक सीमित हो गए हैं।

5. "क्या सुरुचि और सौंदर्य को आपके किसी काम से ठेस लगती है?" अपने घर/विद्यालय के आस-पास, सार्वजनिक संसाधनों और ऐतिहासिक महत्व के स्थानों की स्वच्छता एवं सौंदर्य को बनाए रखने के लिए आप और आपके सहपाठी, संबंधी क्या-क्या करते हैं?

उत्तरः

सौंदर्य और स्वच्छता की रक्षा के लिए मैं और मेरे सहपाठी निम्नलिखित प्रयास करते हैं:

1. **विद्यालय में**: कागज और कचरा डस्टबिन में ही डालते हैं। श्यामपट्ट पर अनावश्यक कुछ नहीं लिखते। विद्यालय परिसर में पौधे लगाते हैं।
2. **सार्वजनिक स्थानों पर**: बस, रेल या पार्क में कूड़ा नहीं फेंकते। दीवारों पर कुछ नहीं लिखते।
3. **ऐतिहासिक स्थलों पर**: किसी इमारत, मूर्ति या स्मारक पर नाम नहीं लिखते। वहाँ की साफ-सफाई का ध्यान रखते हैं।
4. **घर में**: घर का कूड़ा नालियों में नहीं डालते, कूड़ेदान में डालते हैं।
5. **जागरूकता फैलाना**: यदि कोई गंदगी करता दिखे तो विनम्रता से उसे रोकते हैं।

6. "मैं कोई ऐसा काम न करूँ जिससे मेरे देश की स्वतंत्रता को, दूसरे शब्दों में, उसके सम्मान को धक्का पहुँचे।" देश के सम्मान को धक्का न पहुँचे, इसके लिए क्या करें और क्या नहीं करें? अपने-अपने समूह में इसकी चर्चा कीजिए और चर्चा से उभरे बिंदुओं को प्रातःकालीन सभा में पढ़कर सुनाइए।

उत्तरः

क्या करें:

1. विदेशी पर्यटकों के साथ विनम्र और सहयोगपूर्ण व्यवहार करें।
2. अपने देश की भाषा, संस्कृति और परंपराओं का सम्मान करें।
3. सार्वजनिक स्थानों को स्वच्छ रखें।
4. देश के कानूनों का पालन करें।
5. चुनाव में सही और योग्य व्यक्ति को मत दें।
6. अपने कार्य में श्रेष्ठता लाएँ — चाहे वह पढ़ाई हो, खेल हो या कोई व्यवसाय।
7. देश के इतिहास और वीरों के बारे में जानें और दूसरों को बताएँ।

क्या न करें:

1. दूसरे देशों के सामने अपने देश की अनावश्यक निंदा न करें।
2. सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान न पहुँचाएँ।
3. ऐतिहासिक स्मारकों पर नाम न लिखें।
4. भ्रष्टाचार और रिश्वत में भागीदार न बनें।
5. देश की एकता और अखंडता को नुकसान पहुँचाने वाली बातें न फैलाएँ।
6. विदेश में या सार्वजनिक स्थानों पर ऐसा आचरण न करें जिससे देश की छवि धूमिल हो।

मेरे प्रश्न

1. "ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने में एक अपूर्व आनंद आता है"
निबंध के उपर्युक्त संदर्भ से आपके लिए दो प्रश्न बनाए गए हैं—

(क) रचनाकार को किस तरह के प्रश्नों का उत्तर देने में आनंद आता है?

(ख) आपको किस तरह के प्रश्नों को बूझना रोचक लगता है?

अब इस निबंध के आलोक में नीचे दी गई सामग्री को पढ़कर तीन प्रश्न बनाइए और लिखिए।

यह सोचना एकदम निराधार है कि केवल संपन्न व्यक्ति ही देश की प्रगति और विकास में योगदान दे सकते हैं। देश की सुरक्षा का विषय हो अथवा ऐश्वर्य व संपन्नता का, सभी नागरिकों का अपनी ही तरह से योगदान होता है। हम सब नागरिक अपने देश का प्रतिनिधित्व करते हैं। हम यदि कुछ भी गलत करते हैं तो उससे अपनी छवि ही धूमिल नहीं होती अपितु अपने देश की छवि पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

उत्तरः

(क) रचनाकार को ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने में आनंद आता है जो बात को आगे बढ़ाने का और विषय को विस्तार से खोलने का अवसर देते हैं तथा जो सही समय पर पूछे जाते हैं और जिनका उत्तर देकर विचारों की एक नई श्रृंखला सामने आ सके।

(ख) मुझे किस तरह के प्रश्नों को बूझना रोचक लगता है:
मुझे ऐसे प्रश्नों को बूझना रोचक लगता है जिनमें सोचने की गुंजाइश हो, जो जीवन से जुड़े हों और जिनका उत्तर केवल किताब में नहीं, बल्कि अपने अनुभव और आस-पास की दुनिया में भी खोजा जा सके।

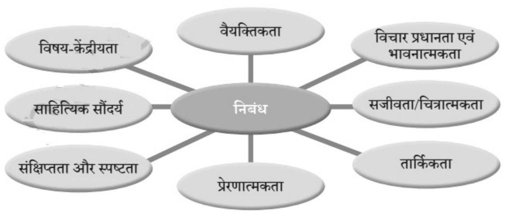
दी गई सामग्री के आधार पर तीन प्रश्न:

1. यदि एक साधारण नागरिक भी देश की प्रगति में योगदान दे सकता है, तो एक विद्यार्थी किन-किन तरीकों से देश के विकास में अपना योगदान दे सकता है?
2. "हम यदि कुछ भी गलत करते हैं तो उससे देश की छवि पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है" — क्या आपके जीवन में ऐसा कोई उदाहरण है जब किसी एक व्यक्ति के गलत कार्य से पूरे समूह की छवि प्रभावित हुई हो?
3. "सभी नागरिकों का अपनी ही तरह से योगदान होता है" — इस कथन के आधार पर बताइए कि एक किसान, एक सफाई कर्मचारी और एक शिक्षक — तीनों में से किसका योगदान अधिक महत्वपूर्ण है और क्यों?

विधा से संवाद

आपने अब तक अपनी पाठ्यपुस्तकों और अन्य पुस्तकों में बहुत से निबंध पढ़े होंगे और लिखे भी होंगे। निबंध लिखने से पहले किस तरह की तैयारी करते हैं? आइए, इस विधा से संबंधित कुछ विचार-विमर्श करते हैं—

1. 'निबंध' का शाब्दिक अर्थ है— 'बाँधना' (नि+बंध)। अर्थात भली-भाँति बँधा या गठा हुआ। यह गद्य की वह विधा है जिसमें रचनाकार किसी विषय पर अपने अनुभव, विचार, दृष्टिकोण और भावनाओं को तार्किक, भावनात्मक, क्रमबद्ध और साहित्यिक रूप से प्रस्तुत करते हैं। एक विधा के रूप में निबंध की कुछ विशेषताओं को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है—



उपर्युक्त बिंदुओं से संबंधित संदर्भ 'मैं और मेरा देश' निबंध से खोजकर लिखिए।

उत्तरः

निबंध की विशेषता	मैं और मेरा देश' निबंध से उदाहरण
विषय-केंद्रीयता	पूरा निबंध 'व्यक्ति और देश के संबंध' पर केंद्रित है। लेखक प्रारंभ से अंत तक इसी विषय पर टिका रहता है — "बात यह है कि मैं और मेरा देश दो अलग चीज़ें तो हैं ही नहीं।"
विचार प्रधानता एवं भावनात्मकता	"किसी मनुष्य के पास संसार के ही नहीं, यदि स्वर्ग के भी सब उपहार और साधन हों, पर उसका देश गुलाम हो... तो वे सारे उपहार और साधन उसे गौरव नहीं दे सकते।" — यह वाक्य विचार और भावना दोनों का संगम है।
वैयक्तिकता	"मैं अपने घर में जनमा था, पला था।" — लेखक पूरे निबंध में अपने व्यक्तिगत अनुभव और विचार प्रथम पुरुष में प्रस्तुत करता है।
प्रेरणात्मकता	जापानी युवक की घटना और कमालपाशा का उदाहरण — ये दोनों पाठक को देशप्रेम के लिए प्रेरित करते हैं।
तार्किकता	"अकेला चना क्या भाड़ फोड़े — यह कहावत सौ फीसदी झूठ है। इतिहास साक्षी है..." — लेखक तर्क और ऐतिहासिक प्रमाण से अपनी बात सिद्ध करता है।
संक्षिप्तता और स्पष्टता	"मतलब साफ है, एकदम साफ— कि जहाँ एक युवक ने अपने काम से अपने देश का सिर ऊँचा किया था, वहीं एक युवक ने अपने देश के मस्तक पर कलंक का ऐसा टीका लगाया।"
सजीवता/ चित्रात्मकता	जापानी युवक का दौड़कर फल लाना, मिट्टी की हँडिया में शहद लेकर आने वाले बूढ़े किसान और कमालपाशा का विश्राम-वेश में ही उतर आना — ये दृश्य पाठक की आँखों के सामने जीवंत हो उठते हैं।

साहित्यिक सौंदर्य	"एक तेजस्वी पुरुष का अनुभव ही वह भूकंप था" — यह रूपक अलंकार साहित्यिक सौंदर्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसी प्रकार "अपने रक्त से गौरव के दीपक जलाए" में भी साहित्यिक सौंदर्य है।

2. "क्या कोई भूकंप आया था, जिससे दीवार में दरार पड़ गई? बड़े महत्व का प्रश्न है। इस अर्थ में भी कि यह बात को खिलने का, आगे बढ़ने का अवसर देता है और इस अर्थ में भी कि ठीक समय पर पूछा गया है। ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने में एक अपूर्व आनंद आता है, तो उत्तर यह है आपके प्रश्न का..." निबंध के उपर्युक्त अंश को ध्यान से देखिए। इसकी पहली पंक्ति में एक प्रश्न है और बाद के अंश में उसका उत्तर दिया गया है। आपने ध्यान दिया होगा कि यह पूरा निबंध इसी तरह की प्रश्नोत्तर शैली में लिखा गया है। यह प्रश्नोत्तर या संवादात्मक शैली इस निबंध की संरचना को विशेष बनाती है। इसी तरह की और भी अन्य विशेषताएँ इस निबंध में से छाँटकर लिखिए।

उत्तरः
'मैं और मेरा देश' निबंध की प्रमुख विशेषताएँ:
1. **प्रश्नोत्तर/संवादात्मक शैली**: पूरा निबंध एक काल्पनिक प्रश्नकर्ता और लेखक के बीच संवाद के रूप में चलता है। जैसे — "जय बोलने वालों का?" / "हाँ जी, युद्ध में जय बोलने वालों का भी बहुत महत्व है।" यह शैली पाठक को सीधे संवाद में शामिल करती है।
2. **कहावतों और मुहावरों का सटीक प्रयोग**: "अकेला चना क्या भाड़ फोड़े" जैसी प्रचलित कहावत को लेखक उलट देता है और कहता है यह "सौ फीसदी झूठ है" — इससे पाठक चमत्कृत हो जाता है।
3. **उदाहरण-प्रधान शैली**: निबंध में स्वामी रामतीर्थ, जापानी विद्यार्थी, कमालपाशा, भारतीय किसान और लाला लाजपत राय — ये सभी उदाहरण विचार को ठोस और स्पष्ट करते हैं।
4. **पाठक को सीधे संबोधन**: "आपका प्रश्न विचारों को उत्तेजना देता है", "लो, एक और बात बताता हूँ आपको", "वाह, क्या सवाल पूछा है आपने" — लेखक पाठक से सीधी बातचीत करता प्रतीत होता है।
5. **पौराणिक और ऐतिहासिक संदर्भ**: शल्य और कर्ण का उदाहरण देकर लेखक आत्मविश्वास को नष्ट करने की हानि बताता है — यह भारतीय परंपरा और वर्तमान को जोड़ता है।
6. **व्यंग्यात्मक तत्व**: "जी हाँ, और मर्द के दाढ़ी होती है, औरत के नहीं...!" — जैसे व्यंग्य से लेखक सामाजिक रुढ़ियों पर प्रहार करता है।

3. नीचे कुछ विषय दिए गए हैं, आप इनमें से किन विषयों पर निबंध लिखना चाहेंगे, कारण सहित लिखिए—
   - मेरा भारत मेरा गौरव
   - चाँद के साथ गपशप
   - जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि
   - गागर में सागर
   - यथा नाम तथा गुण
   - दूध का दूध और पानी का पानी

उत्तरः
पसंदीदा विषय 1: मेरा भारत मेरा गौरव
यह विषय मुझे विशेष रूप से प्रिय है क्योंकि 'मैं और मेरा देश' निबंध पढ़ने के बाद देश के प्रति चेतना और अधिक जागृत हुई है। इस विषय पर लिखते समय मैं भारत की प्राचीन संस्कृति, स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान, वर्तमान उपलब्धियाँ और अपने कर्तव्य — सब पर विचार कर सकता/सकती हूँ। यह विषय मुझे अपने देश से जुड़ाव और गर्व का अनुभव कराता है।
पसंदीदा विषय 2: गागर में सागर
यह विषय इसलिए रोचक लगता है क्योंकि इसमें कम शब्दों में गहरी बात कहने की कला पर विचार करने का अवसर है। कबीर के दोहे, सूक्तियाँ और जीवन के वे क्षण जब किसी छोटी-सी घटना ने बड़ी सीख दी — इन सबको इस विषय के अंतर्गत समेटा जा सकता है।

विषयों से संवाद

चुनाव एवं आपके अनुभव

"क्या कोई ऐसी कसौटी भी बनाई जा सकती है, जिससे देश के नागरिकों को आधार बनाकर देश की उच्चता और हीनता को हम तोल सकें?"

रचनाकार के अनुसार इस प्रश्न का उत्तर है— निष्पक्ष चुनाव प्रक्रिया।

1. जब कोई चुनाव प्रक्रिया आपके क्षेत्र में शुरु होती है तो किस तरह की गतिविधियाँ होती हैं?

उत्तरः
जब हमारे क्षेत्र में चुनाव की प्रक्रिया शुरु होती है तो निम्नलिखित गतिविधियाँ होती हैं:
1. **प्रचार अभियान**: उम्मीदवार और उनके समर्थक घर-घर जाकर वोट माँगते हैं। रैलियाँ, सभाएँ और जुलूस निकाले जाते हैं।
2. **दीवार-लेखन और पोस्टर**: दीवारों पर उम्मीदवारों के नाम और चुनाव चिह्न लिखे जाते हैं।
3. **मतदाता सूची की जाँच**: लोग सुनिश्चित करते हैं कि उनका नाम मतदाता सूची में है।
4. **मतदाता जागरूकता अभियान**: सरकार और स्वयंसेवी संस्थाएँ मतदान का महत्व बताती हैं।

(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है

उत्तरः
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है

13. निबंध के अनुसार नागरिक का क्या कर्तव्य है?
(क) हर परिस्थिति में केवल अपने परिवार के हितों की रक्षा करना।
(ख) कोई ऐसा काम न करना जिससे देश के सम्मान को धक्का पहुँचे।
(ग) हमेशा विदेश जाकर अपने देश की संस्कृति का खूब प्रचार करना।
(घ) देश की व्यवस्था को संभालने के लिए सरकारी नौकरी करना।

उत्तरः
(ख) कोई ऐसा काम न करना जिससे देश के सम्मान को धक्का पहुँचे।

14. लेखक ने 'अकेला चना क्या भाड़ फोड़े' कहावत के बारे में क्या कहा?
(क) यह कहावत बिल्कुल सच है
(ख) यह कहावत कभी-कभी सही होती है
(ग) यह कहावत सौ फीसदी झूठ है
(घ) यह कहावत केवल युद्ध में लागू होती है

उत्तरः
(ग) यह कहावत सौ फीसदी झूठ है

15. लेखक ने जीवन की तुलना किससे की?
(क) एक छोटी नदी के तट से
(ख) एक गुड़िया से
(ग) एक विशाल समुद्र के तट से
(घ) एक पर्वत से

उत्तरः
(ग) एक विशाल समुद्र के तट से

16. लेखक ने युद्ध के उदाहरण से क्या समझाया?
(क) युद्ध में केवल अग्रिम पंक्ति के वीर सैनिक ही देश के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
(ख) युद्ध में लड़ना ही काम नहीं — किसान, रसद पहुँचाने वाले और जय बोलने वाले सब महत्वपूर्ण हैं।
(ग) युद्ध में अंतिम विजय केवल आधुनिक और शक्तिशाली हथियारों के बल पर ही संभव होती है।
(घ) युद्ध में केवल अमीर धनपति ही अपने धन से देश की वास्तविक सहायता कर सकते हैं।

उत्तरः
(ख) युद्ध में लड़ना ही काम नहीं — किसान, रसद पहुँचाने वाले और जय बोलने वाले सब महत्वपूर्ण हैं।

17. लेखक ने किस उदाहरण से यह सिद्ध किया कि दर्शकों की तालियाँ भी महत्वपूर्ण होती हैं?
(क) नाटक के मंच और वहाँ उपस्थित कलाकारों का उदाहरण।
(ख) मैच देखने और कवि-सम्मेलन का उदाहरण।
(ग) धार्मिक सभा और वहाँ प्रवचन सुनने वालों का उदाहरण।
(घ) स्कूल की परीक्षा और उसमें बैठने वाले छात्रों का उदाहरण।

उत्तरः
(ख) मैच देखने और कवि-सम्मेलन का उदाहरण।

18. स्वामी रामतीर्थ जापान की रेल यात्रा में किस चीज की तलाश में थे?
(क) एक अच्छे होटल की
(ख) किसी भारतीय मित्र की
(ग) खाने को फलों की
(घ) जापानी भाषा के शब्दकोश की

उत्तरः
(ग) खाने को फलों की

19. जापानी युवक प्लेटफार्म पर किस काम से आया था?
(क) टिकट खरीदने के लिए
(ख) अपनी पत्नी को रेल में बैठाने के लिए
(ग) फल बेचने के लिए
(घ) स्वामी रामतीर्थ से मिलने के लिए

उत्तरः
(ख) अपनी पत्नी को रेल में बैठाने के लिए

20. **अभिकथन (A):** जापानी युवक ने स्वामी रामतीर्थ से फलों के दाम लेने से इनकार कर दिया।
कारण (R): उसने कहा कि फलों का मूल्य यह है कि आप अपने देश में जाकर किसी से यह न कहिएगा कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है

उत्तरः
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है

21. दूसरी घटना में दूसरे देश के युवक ने जापानी पुस्तकालय की पुस्तक में से क्या किया?
(क) उसने पुस्तक पर अपना नाम लिखा
(ख) उसने पुस्तक को जानबूझकर फाड़ा
(ग) उसने पुस्तक में से दुर्लभ चित्र निकाल लिए
(घ) उसने पुस्तक वापस नहीं की

उत्तरः
(ग) उसने पुस्तक में से दुर्लभ चित्र निकाल लिए

2. ऐसा न हो, इसके लिए क्या किया जा सकता है?

उत्तरः

1. पुस्तकालय में प्रवेश के समय नियमों की जानकारी अनिवार्य की जाए।
2. पुस्तकों की नियमित जाँच हो और क्षति होने पर जिम्मेदार से हर्जाना लिया जाए।
3. विद्यालयों में पुस्तकालय-शिष्टाचार पर विशेष कक्षाएँ लगाई जाएँ।
4. पाठकों में जागरूकता फैलाई जाए कि पुस्तकालय सामूहिक संपत्ति है।

3. आप पुस्तकालय में किन नियमों का पालन करते हैं, उन नियमों का पालन करना क्यों अनिवार्य है? इस पर अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए और लिखिए।

उत्तरः

मैं पुस्तकालय में जिन नियमों का पालन करता/करती हूँ:

1. पुस्तक में पेन से कुछ नहीं लिखता/लिखती।
2. पुस्तक समय पर वापस करता/करती हूँ।
3. पृष्ठ मोड़कर नहीं रखता/रखती — बुकमार्क का उपयोग करता/करती हूँ।
4. पुस्तक ध्यान से पकड़ता/पकड़ती हूँ, उसे फाड़ता/फाड़ती नहीं।
5. पुस्तकालय में शांति बनाए रखता/रखती हूँ।

ये नियम अनिवार्य हैं क्योंकि: पुस्तकालय की पुस्तकें अनेक पाठकों के लिए हैं। यदि एक व्यक्ति पुस्तक नष्ट करे, तो दूसरों को उस ज्ञान से वंचित होना पड़ेगा। जापानी पुस्तकालय वाली घटना हमें यही सिखाती है कि सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना हमारा नैतिक दायित्व है।

ब्रेल लिपि में पुस्तकें

1. आपके विद्यालय में रोचक पुस्तकों का भंडार है परंतु आपके 'दृष्टिबाधित' सहपाठी स्वयं पढ़कर इनका आनंद नहीं उठा पाते हैं। प्रधानाध्यापक को ब्रेल लिपि में पुस्तकें मँगवाने के संदर्भ में पत्र लिखिए।

उत्तरः

सेवा में,
प्रधानाध्यापक महोदय/महोदया,
विद्यालय का नाम,
स्थान

विषयः पुस्तकालय में ब्रेल लिपि में पुस्तकें मँगवाने के संबंध में।

महोदय/महोदया,

सविनय निवेदन है कि हमारे विद्यालय का पुस्तकालय अनेक उत्कृष्ट और रोचक पुस्तकों से समृद्ध है। परंतु हमारी कक्षा में कुछ दृष्टिबाधित सहपाठी हैं जो इन पुस्तकों का लाभ नहीं उठा पाते, क्योंकि पुस्तकालय में ब्रेल लिपि में पुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं।

हमारे निबंध 'मैं और मेरा देश' में पढ़ा है कि हर नागरिक महत्वपूर्ण है और उसे समान अवसर मिलने चाहिए। यदि हमारे दृष्टिबाधित सहपाठी पुस्तकालय का उपयोग नहीं कर पाते, तो यह उनके साथ अन्याय होगा।

अतः आपसे सविनय अनुरोध है कि पुस्तकालय में ब्रेल लिपि में कुछ महत्वपूर्ण पाठ्य-पुस्तकें, कहानी-संग्रह और जीवनी-संबंधी पुस्तकें मँगवाई जाएँ ताकि हमारे दृष्टिबाधित सहपाठी भी ज्ञान और आनंद का समान अवसर पा सकें।

आपकी अति कृपा होगी।

भवदीय/भवदीया,
आपका नाम
कक्षा: ...., अनुक्रमांक: ....
दिनांक: ....

कृतज्ञता ज्ञापन

1. "अपने महान राष्ट्र की पराधीनता के दीन दिनों में जिन लोगों ने अपने रक्त से गौरव के दीप जलाए..."
देश के विकास में सभी का सहयोग होता है जो सीमा पर तैनात हैं और जो देश के भीतर हैं, जैसे– अध्यापक, किसान, श्रमिक, कलाकार, वैज्ञानिक, अभियंता आदि। इन सभी के अमूल्य योगदान के लिए कृतज्ञता ज्ञापन तैयार करके लिखिए।

उत्तरः

कृतज्ञता ज्ञापन

हम, भारत के नागरिक, उन सभी महान व्यक्तियों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हैं जो अपने-अपने क्षेत्र में देश की सेवा और उन्नति के लिए अथक परिश्रम करते हैं।

हम कृतज्ञ हैं उन सैनिकों के प्रति जो बर्फीले पहाड़ों और जलती रेत में तैनात रहकर हमारी नींद की रक्षा करते हैं।

हम कृतज्ञ हैं उन किसानों के प्रति जो धूप और वर्षा में खेत जोतकर हमारी थाली भरते हैं।

हम कृतज्ञ हैं उन शिक्षकों के प्रति जो प्रतिदिन ज्ञान का दीपक जलाकर हमारे भविष्य को संवारते हैं।

हम कृतज्ञ हैं उन वैज्ञानिकों के प्रति जो अपने आविष्कारों से देश को आत्मनिर्भर बनाते हैं।

हम कृतज्ञ हैं उन श्रमिकों के प्रति जो सड़क, पुल और इमारतें बनाकर देश की नींव रखते हैं।

हम कृतज्ञ हैं उन कलाकारों और लेखकों के प्रति जो अपनी कला से राष्ट्रीय एकता और गौरव की भावना जगाते हैं।

हम कृतज्ञ हैं उन सफाई कर्मचारियों के प्रति जो अपने परिश्रम से हमारे नगरों को स्वच्छ और सुंदर रखते हैं।

हम कृतज्ञ हैं उन स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति जिन्होंने अपने रक्त से गौरव के दीप जलाए और हमें स्वतंत्र भारत दिया।

आइए, हम भी अपने कर्तव्यों को निभाकर इन सबके प्रति सच्ची कृतज्ञता व्यक्त करें।

विज्ञापन

1. "ठीक मनुष्य को अपना मत दें।"
उपर्युक्त पंक्ति में चुनाव में योग्य उम्मीदवार को चुनने का संदेश दिया गया है। आप भी चुनाव में योग्य उम्मीदवार को चुनने के लिए एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए।



उत्तरः

आपका मत — आपकी शक्ति

ईमानदार उम्मीदवार को चुनें
जो काम करे, वादे नही
जो सबका हो, केवल अपनों का नही

"सोचकर दें अपना मत
देश का भविष्य है आपके हाथ में"

जाति, धर्म, लालच — इनसे ऊपर उठें
योग्यता और ईमानदारी को देखें

मतदान करें — जरूर करें

स्वच्छता और आचरण

1. "क्या आप कभी केला खाकर छिलका रास्ते में फेंकते हैं..."
निबंध के इस अंश को पुनः पढ़िए। इस प्रकार के और कौन-कौन से आचरण हो सकते हैं जिनसे देश के सौंदर्य को आघात लगता है? इस विषय पर अपने अभिभावकों, सहपाठियों और शिक्षकों के साथ चर्चा कीजिए।
(संकेत– ऐतिहासिक या सार्वजनिक स्थानों पर अपना नाम आदि लिखना।)

उत्तरः
देश के सौंदर्य और स्वच्छता को आघात पहुँचाने वाले आचरण:
1. ऐतिहासिक स्थलों पर नाम लिखना — ताजमहल, किलों और मंदिरों की दीवारों पर नाम और प्रेम-संदेश लिखना।
2. सार्वजनिक स्थानों पर पान-तंबाकू थूकना — रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड और दीवारों पर लाल धब्बे करना।
3. नदियों और तालाबों में कचरा फेंकना — पूजा सामग्री, पॉलिथीन और घरेलू कचरा जल-स्रोतों में डालना।
4. सड़कों पर प्लास्टिक छोड़ना — चिप्स, बिस्किट और पानी की बोतलें रास्ते में फेंकना।
5. सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुँचाना — पार्क की बेंच तोड़ना, स्ट्रीट लाइट को क्षति पहुँचाना।
6. शोर-प्रदूषण — तेज आवाज में संगीत बजाना, बिना कारण हॉर्न बजाना।

इन सब आचरणों से बचना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है।

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

संदर्भ में शब्द

1. नीचे लिखे वाक्यों पर ध्यान दीजिए—
   - एक दिन आनंद की इस दीवार में <u>दरार</u> पड़ गई।
   - क्या कोई भूकंप आया था, जिससे दीवार में <u>दरार</u> पड़ गई।



दीवार में पैदा हुई चटक/तरेड़/फाँक/टूटन के लिए 'दरार' शब्द का प्रयोग करते हैं। भूकंप आने पर अथवा किसी भी प्रकार के तोड़-फोड़ का कार्य होने पर भवनों की छतों और दीवारों में दरार पड़ जाती है। इस शब्द का प्रयोग ऐसे भी किया जाता है—
- वे बहुत अच्छे मित्र थे। न जाने ऐसा क्या हुआ कि उनके संबंधों में <u>दरार</u> पड़ गई।
- भेदभाव की भावना सामाजिक एकता में <u>दरार</u> डालती है।

अब इसी प्रकार 'गाँठ' शब्द के प्रयोग पर ध्यान दीजिए—

- "पर उन दो घटनाओं में वह गाँठ इतनी साफ है, जो नागरिक और देश को एक साथ बाँधती है"
- माला गूँथते समय धागे के एक सिरे पर गाँठ बाँध दीजिए।

इसी प्रकार 'पानी' शब्द का प्रयोग देखिए—

- बहुत प्यास लगी है, पानी दीजिए।
- जब उस लड़के की पुस्तक से पन्ने फाड़ने की बात सामने आई तो वह पानी-पानी हो गया।
- इतनी अधिक वर्षा हुई कि चारों ओर पानी-पानी हो गया।
- अब इनके कामों के बारे में और क्या कहा जाए, इनका तो पानी ही उतर चुका है।

अब अपनी पाठ्यपुस्तक में से ऐसे अन्य शब्द छाँटकर लिखिए जो संदर्भ के अनुसार भिन्न-भिन्न अर्थ देते हों।

उत्तरः

पाठ्यपुस्तक से संदर्भ के अनुसार भिन्न-भिन्न अर्थ देने वाले शब्द:

1. 'दीवार'
   - "एक दिन आनंद की इस दीवार में दरार पड़ गई" — यहाँ दीवार = मानसिक संतुष्टि और पूर्णता का भाव
   - "ईंट और चूने की दीवार बनाओ" — यहाँ दीवार = भवन की भौतिक दीवार
2. 'भूकंप'
   - "मेरे मानस में उठा था" — यहाँ भूकंप = मानसिक आघात और विचारों का हिलना
   - "जापान में भूकंप आया" — यहाँ भूकंप = प्राकृतिक आपदा
3. 'रोशनी'
   - "ज्ञान की रोशनी" — यहाँ रोशनी = बुद्धि और विवेक का प्रकाश
   - "घर में रोशनी करो" — यहाँ रोशनी = बिजली का प्रकाश
4. 'आग'
   - "मन में आग लगाना" — यहाँ आग = उत्साह और जोश
   - "घर में आग लग गई" — यहाँ आग = भौतिक अग्नि
   - मिलते-जुलते भाव वाले 'शब्द-युग्म'
   - "अपने पड़ोस में खेलकर, पड़ोसियों की ममता-दुलार पा, बड़ा हुआ था।"

मिलते-जुलते भाव वाले 'शब्द-युग्म'

- "अपने पड़ोस में खेलकर, पड़ोसियों की ममता-दुलार पा, बड़ा हुआ था।"
- "इस तरह एक मनुष्य से भरा-पूरा नगर बनकर मैं खड़ा हुआ था।"

पहले वाक्य में 'ममता-दुलार' और दूसरे वाक्य में 'भरा-पूरा' शब्द मिलता-जुलता भाव दे रहे हैं। ये शब्द-युग्म हैं। शब्द-युग्म प्रायः दो शब्दों के समूह होते हैं। ये कई प्रकार से बनते और बनाए जाते हैं। कभी अर्थ की दृष्टि से समान होते हैं, कभी उच्चारण की दृष्टि से समान होते हैं परंतु अर्थ में अंतर होता है, कभी विपरीत भाव भी देते हैं। इस प्रकार के शब्दों के प्रयोग से भाषा में सजीवता आती है।

आप इस निबंध में से मिलते-जुलते अर्थ वाले और पुनरुक्त (एक ही शब्द को फिर से कहना) शब्द-युग्म छाँटकर लिखिए।

उत्तरः

मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्द-युग्म:

क्र.	**शब्द-युग्म**	**दोनों में समान भाव**
1	ममता-दुलार	दोनों में स्नेह और प्यार का भाव
2	भरा-पूरा	दोनों में परिपूर्णता का भाव
3	हीनता-गौरव	विपरीत भाव — एक में हीनता, दूसरे में श्रेष्ठता
4	शक्ति-बोध और सौंदर्य-बोध	दोनों में 'बोध' अर्थात् चेतना का भाव
5	सम्मान-साधन	दोनों व्यक्ति की शक्ति और प्रतिष्ठा के प्रतीक

क्र.	शब्द-युग्म	वाक्य से उदाहरण
1	छोटी-छोटी	"छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देता हूँ"
2	बड़े-बड़े	"दो बड़ी-बड़ी पुस्तकें पढ़कर भी"
3	पूरा-पूरा	"अपने देश के सम्मान का पूरा-पूरा भाग"
4	खील-खील	"भाड़ खील-खील ही नहीं हो गया"
5	साफ-साफ	"मतलब साफ है, एकदम साफ"

शब्दों की कड़ियाँ/श्रृंखला

1. "मैं सोचा करता था कि मेरी मनुष्यता में अब कोई अपूर्णता नहीं रही।"

   उपर्युक्त वाक्य के रेखांकित शब्द 'अपूर्णता' में उपसर्ग और प्रत्यय दोनों का ही प्रयोग चिह्नित किया गया है। इस प्रयोग को समझकर नीचे दिए गए शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय शब्द पहचानकर लिखिए—

अलौकिक, निरक्षरता, सम्मानित, अनावश्यक, अपमानित, अभिमानी

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय
अपूर्णता	अ	पूर्ण	ता

(आपकी पाठ्यपुस्तक के 'क्या लिखूँ?' पाठ में भी उपसर्ग और प्रत्यय के प्रयोग के विषय में जानकारी दी गई है।)

उत्तरः

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय
अपूर्णता	अ	पूर्ण	ता
अलौकिक	अ	लौकिक	—
निरक्षरता	निर्	अक्षर	ता
सम्मानित	सम्	मान	इत
अनावश्यक	अन्	आवश्यक	—
अपमानित	अप	मान	इत
अभिमानी	अभि	मान	ई

गतिविधियाँ

1. 'देश मात्र एक भौगोलिक सीमा क्षेत्र नहीं है।'
इस विषय पर परिचर्चा का आयोजन कीजिए और परिचर्चा में उभरकर आए बिंदुओं की रिपोर्ट तैयार कीजिए। रिपोर्ट को पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण या चार्ट के माध्यम से कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

उत्तरः
यह एक समूह-गतिविधि है। नीचे परिचर्चा के लिए प्रमुख बिंदु और रिपोर्ट का ढाँचा दिया गया है।
परिचर्चा रिपोर्ट
विषय: देश मात्र एक भौगोलिक सीमा क्षेत्र नहीं है।
परिचर्चा में उभरे प्रमुख बिंदु:
1. **देश = संस्कृति और विरासत**: देश केवल भूमि नहीं है, वह हमारी भाषा, परंपरा, कला, साहित्य और इतिहास का समुच्चय है।
2. **देश = लोग और उनके संबंध**: निबंध में लेखक कहता है — "मेरा नगर और मैं।" अर्थात् देश वह सामूहिक भावना है जो नागरिकों को एक सूत्र में बाँधती है।
3. **देश = सम्मान और आत्मगौरव**: लाला लाजपत राय विदेश में भी भारत की गुलामी की पीड़ा अनुभव करते थे — क्योंकि देश की भावना भूमि से नहीं, आत्मसम्मान से जुड़ी है।
4. **देश = भविष्य की जिम्मेदारी**: देश वह संकल्प भी है जो हम अपनी आने वाली पीढ़ियों के प्रति लेते हैं।

निष्कर्ष: देश की सीमाएँ नक्शे पर खिंची रेखाएँ नहीं हैं — वे हमारे हृदय में बसती हैं। जब हम देश की भाषा, संस्कृति और नागरिकों का सम्मान करते हैं, तभी हम सच्चे अर्थ में देशप्रेमी हैं।

भाषा संगम

1. "मैं अपने देश का नागरिक हूँ"
नीचे 'देश' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।
देश (हिंदी); देशः, क्षेत्रम् (संस्कृत); देस, देश (पंजाबी); ख़ित्ता, इलाक़ा (उर्दू); दीश, मलुँख (कश्मीरी); देशु, देसु (सिंधी); देश (मराठी); देश, प्रदेश (गुजराती); देश (कोंकणी); देश, मुलुक, राष्ट्र (नेपाली); प्रदेश, अञ्चल, राज्य (बांग्ला); देश, राज्य, प्रदेश (असमिया); लैबाक, मफम, लम (मणिपुरी); देश, राज्य, प्रदेश, अंचल (ओड़िआ); प्रदेशमु (तेलुगु); इडम्, पिरदेशम् (तमिल); देशम् (मलयालम); देश (कन्नड़)।
   - इनके अतिरिक्त यदि आप 'देश' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
   - उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

उत्तरः
   - राजस्थानी में: देश / मुलक
भोजपुरी में: देस
अवधी में: देस
मैथिली में: देश / मुलुक
बुंदेलखंडी में: देश / परदेस
   - हिंदी (मातृभाषा):
"मैं अपने देश का नागरिक हूँ।"
(यदि मातृभाषा मराठी है:)
"मी माझ्या देशाचा नागरिक आहे।"

6. अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'मैं और मेरा देश' निबंध के लेखक कौन हैं?
(क) जगदीशचंद्र माथुर
(ख) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
(ग) मोहन राकेश
(घ) हजारीप्रसाद द्विवेदी

उत्तरः
(ख) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

2. कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का जन्म किस जिले में हुआ था?
(क) लखनऊ जिले में (ख) आगरा जिले में
(ग) सहारनपुर जिले में (घ) मेरठ जिले में

उत्तरः
(ग) सहारनपुर जिले में

3. कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का मुख्य कार्यक्षेत्र क्या था?
(क) अध्यापन (ख) पत्रकारिता
(ग) राजनीति (घ) वकालत

उत्तरः
(ख) पत्रकारिता

4. लेखक ने किन दो पत्रों का संपादन किया था?
(क) धर्मयुग और साप्ताहिक हिंदुस्तान
(ख) नया जीवन और विकास
(ग) हंस और कादंबिनी
(घ) सारिका और माधुरी

उत्तरः
(ख) नया जीवन और विकास

5. 'प्रभाकर' को किस सम्मान से नवाजा गया था?
(क) भारत रत्न से
(ख) पद्म विभूषण से
(ग) साहित्य अकादमी पुरस्कार से
(घ) पद्म श्री से

उत्तरः
(घ) पद्म श्री से

6. लेखक ने निबंध के आरंभ में अपने विकास के बारे में क्या बताया?
(क) वह अपने नगर में घूम-फिरकर और संचित ज्ञान-भंडार का उपयोग कर पूरा मनुष्य बना।
(ख) वह कई बार विदेश यात्राएँ करके और नए-नए अनुभव पाकर पूरा मनुष्य बना।
(ग) वह समाज से पूरी तरह दूर केवल अपने घर में ही रहकर पूरा मनुष्य बना।
(घ) वह जीवन में अकेले ही निरंतर संघर्ष और कठिन मेहनत से पूरा मनुष्य बना।

उत्तरः
(क) वह अपने नगर में घूम-फिरकर और संचित ज्ञान-भंडार का उपयोग कर पूरा मनुष्य बना।

7. लेखक ने अपनी स्थिति की क्या विशेषता बताई जब वह पूर्ण मनुष्य बन चुका था?
(क) उसे जीवन में कभी भी धन और सुख-सुविधाओं की कोई कमी नहीं थी।
(ख) मेरा घर, मेरा पड़ोस, मेरा नगर — सुंदर, संगठित और पूर्ण स्थिति।
(ग) उसके पास संसार की सभी प्रकार की कठिन और महत्वपूर्ण विद्याएँ थीं।
(घ) उसके पास समाज में बहुत बड़ी राजनैतिक शक्ति और ऊँची सत्ता थी।

उत्तरः
(ख) मेरा घर, मेरा पड़ोस, मेरा नगर — सुंदर, संगठित और पूर्ण स्थिति।

8. "एक दिन आनंद की इस दीवार में एक दरार पड़ गई" — इससे क्या आशय है?
(क) घर की दीवार टूट गई थी
(ख) लेखक की पूर्णता की भावना पर प्रहार हुआ था
(ग) लेखक और उसके मित्रों में झगड़ा हो गया था
(घ) लेखक के नगर में भूकंप आया था

उत्तरः
(ख) लेखक की पूर्णता की भावना पर प्रहार हुआ था

9. रिक्त स्थान भरिए —
"यह दीवार थी मानसिक विचारों की, इसलिए यह भूकंप भी किसी प्रांत या प्रदेश में नहीं उठा, मेरे ________ में ही उठा था।"
(क) हृदय (ख) मानस
(ग) विचार (घ) जीवन

उत्तरः
(ख) मानस

10. लेखक के मन में जो भूकंप आया वह किसके अनुभव के कारण था?
(क) स्वामी विवेकानंद के (ख) स्वामी रामतीर्थ के
(ग) लाला लाजपत राय के (घ) महात्मा गांधी के

उत्तरः
(ग) लाला लाजपत राय के

11. लाला लाजपत राय ने अपनी विदेश यात्रा का अनुभव किन शब्दों में व्यक्त किया?
(क) "मैं जहाँ भी गया, लोगों ने मुझे अपनी पलकों पर बिठाया और बहुत सम्मान दिया"
(ख) "मैं जहाँ भी गया, भारतवर्ष की गुलामी की लज्जा का कलंक मेरे माथे पर लगा रहा"
(ग) "मैं जहाँ भी गया, मुझे हर मामले में हमेशा अपने भारत से श्रेष्ठ देश मिला"
(घ) "मैं जहाँ भी गया, मुझे हर पल केवल अपने प्यारे भारत देश की याद आती रही"

उत्तरः
(ख) "मैं जहाँ भी गया, भारतवर्ष की गुलामी की लज्जा का कलंक मेरे माथे पर लगा रहा"

12. **अभिकथन (A):** लाला लाजपत राय का अनुभव एक मानसिक भूकंप था।
कारण (R): उनके अनुभव ने लेखक की पूर्णता को अपूर्णता की कसक से भर दिया क्योंकि देश गुलाम होने पर सारे उपहार और साधन गौरव नहीं दे सकते।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है

5. **मतदान केंद्रों की तैयारी**: विद्यालयों और सार्वजनिक भवनों में मतदान केंद्र बनाए जाते हैं।
6. **मतगणना और परिणाम**: मतदान के बाद मतगणना होती है और परिणाम घोषित होता है।

2. "जब भी कोई चुनाव हो, ठीक मनुष्य को अपना मत दें", आपके विचार से एक अच्छे उम्मीदवार में क्या-क्या गुण होने चाहिए?

उत्तरः

एक अच्छे उम्मीदवार में निम्नलिखित गुण होने चाहिए:

1. **ईमानदारी**: उसका जीवन पारदर्शी हो, वह भ्रष्टाचार से दूर रहे।
2. **जनसेवा की भावना**: सत्ता का उपयोग अपने लाभ के लिए नहीं, जनकल्याण के लिए करे।
3. **शिक्षित और जागरूक**: देश, समाज और कानून की समझ हो ताकि सही निर्णय ले सके।
4. **साहसी और निर्भीक**: गलत बात के सामने दबाव में न आए।
5. **सभी वर्गों का प्रतिनिधि**: जाति, धर्म, लिंग के भेद के बिना सबके हित में काम करे।
6. **स्पष्ट दृष्टि और कार्ययोजना**: क्षेत्र की समस्याओं का समाधान कैसे होगा — इसकी स्पष्ट सोच हो।
7. **संवेदनशीलता**: आम नागरिकों की समस्याओं को समझने और सुनने की क्षमता हो।

3. चुनाव से जुड़ा अपना कोई अनुभव लिखिए।
(संकेत– विद्यालय में कक्षा प्रतिनिधि का चुनाव)

उत्तरः

हमारे विद्यालय में कक्षा प्रतिनिधि के चुनाव का अनुभव बहुत रोचक रहा। इस बार दो उम्मीदवार थे — एक बहुत लोकप्रिय था पर जिम्मेदार नहीं, दूसरा शांत स्वभाव का पर मेहनती और ईमानदार था।

मैंने और मेरे कई सहपाठियों ने मिलकर सोचा कि लोकप्रियता से नहीं, गुण से मत देना चाहिए। हमने दूसरे उम्मीदवार को वोट दिया। वह जीत गया और उसने पूरे साल कक्षा की समस्याओं को शिक्षकों तक पहुँचाया, स्वच्छता अभियान चलाया। इस अनुभव ने सिखाया कि सही व्यक्ति को मत देना क्यों जरूरी है।

4. यदि आप किसी सभा, क्लब आदि के चुनाव में उम्मीदवार हों तो आपके क्या-क्या मुद्दे होंगे?

उत्तरः

यदि मैं विद्यालय या क्षेत्र की किसी सभा के चुनाव में उम्मीदवार होऊँ, तो मेरे मुख्य मुद्दे होंगे:

1. **स्वच्छता अभियान**: विद्यालय परिसर और आस-पास की सफाई के लिए नियमित अभियान।
2. **पुस्तकालय का विकास**: अधिक पुस्तकें मँगवाना और सभी के लिए खुला रखना।
3. **खेल-कूद की सुविधाएँ**: खेल के मैदान और उपकरणों की व्यवस्था।
4. **कमजोर सहपाठियों की मदद**: पढ़ाई में पिछड़े छात्रों के लिए विशेष सहायता समूह बनाना।
5. **पर्यावरण संरक्षण**: विद्यालय में पौधारोपण और प्लास्टिक के उपयोग पर रोक।
6. **सांस्कृतिक गतिविधियाँ**: समय-समय पर वाद-विवाद, कविता-पाठ और नाटक प्रतियोगिताएँ।

अधिकार और कर्तव्य

1. इस निबंध में किसी भी स्वतंत्र देश में नागरिक के अधिकार और उसके कर्तव्य की बात की गई है। आपकी पाठ्यपुस्तक के प्रारंभिक पृष्ठ पर भारतीय संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकार और कर्तव्य दिए गए हैं। उसे पढ़कर अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए।

उत्तरः

यह एक कक्षा-चर्चा आधारित गतिविधि है। नीचे चर्चा के लिए महत्वपूर्ण बिंदु दिए गए हैं।

मौलिक अधिकारों से जुड़े बिंदु : निबंध में लेखक कहता है — "उसके एक नागरिक के रुप में मेरा यह अधिकार भी है कि अपने देश के सम्मान का पूरा-पूरा भाग मुझे मिले।" यह समानता के अधिकार और स्वतंत्रता के अधिकार से जुड़ा है।

मौलिक कर्तव्यों से जुड़े बिंदु : निबंध में कहा गया है कि हर नागरिक का कर्तव्य है कि वह देश के सौंदर्य-बोध और शक्ति-बोध को हानि न पहुँचाए, सही व्यक्ति को मत दे और देश का सम्मान बनाए रखे। ये सब भारतीय संविधान में वर्णित मौलिक कर्तव्यों — जैसे राष्ट्रीय धरोहर की रक्षा, लोकतांत्रिक मूल्यों का सम्मान — से मेल खाते हैं।

सृजन

हमारा पुस्तकालय

आप अपने विद्यालय एवं सार्वजनिक पुस्तकालय में जाते हैं। हो सकता है, आपको कभी कोई पुस्तक फटी हुई मिली हो या उसमें से कुछ पृष्ठ गायब हों अथवा उसमें पेन से निशान लगे हों—

1. ऐसा होने के पीछे क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तरः

1. पुस्तकों के प्रति लापरवाह और असंवेदनशील रवैया।
2. स्वार्थी प्रवृत्ति — दुर्लभ जानकारी या चित्र अपने पास रखने का लालच।
3. नागरिक दायित्व की समझ का अभाव — यह न समझना कि सार्वजनिक संपत्ति हम सबकी है।
4. घर पर पेन से रेखांकन करने की आदत का पुस्तकालय में भी प्रयोग।

22. पुस्तकालय की घटना उजागर होने के बाद क्या परिणाम हुआ?
(क) उस विद्यार्थी को केवल जुर्माना भरना पड़ा
(ख) उस विद्यार्थी को माफी माँगकर छोड़ दिया गया
(ग) उस विद्यार्थी को जापान से निकाला और उसके देश के निवासियों का पुस्तकालय प्रवेश बंद हुआ
(घ) उस विद्यार्थी की पढ़ाई बंद कर दी गई

उत्तरः
(ग) उस विद्यार्थी को जापान से निकाला और उसके देश के निवासियों का पुस्तकालय प्रवेश बंद हुआ

23. निम्नलिखित में से कौन-से कथन दोनों जापानी घटनाओं के निष्कर्ष के बारे में सही हैं?
I. एक युवक ने अपने काम से अपने देश का सिर ऊँचा किया।
II. दूसरे युवक ने अपने देश के मस्तक पर कलंक का टीका लगाया।
III. दोनों घटनाओं से स्पष्ट होता है कि नागरिक और देश एक-दूसरे से बँधे हुए हैं।
(क) केवल I और II सही हैं
(ख) केवल II और III सही हैं
(ग) केवल I और III सही हैं
(घ) तीनों कथन सही हैं

उत्तरः
(घ) तीनों कथन सही हैं

24. रिक्त स्थान भरिए —
"मैं अपने देश का नागरिक हूँ और मानता हूँ कि मैं अपना देश हूँ। बात यह है कि मैं और मेरा देश दो ________ तो हैं ही नहीं।"
(क) समान चीजें (ख) अलग चीजें
(ग) भिन्न इकाइयाँ (घ) विपरीत शक्तियाँ

उत्तरः
(ख) अलग चीजें

25. लेखक ने कार्य की महानता या हीनता का क्या आधार बताया?
(क) कार्य की विशालता और उसका परिणाम
(ख) कार्य करने वाले की आर्थिक स्थिति
(ग) कार्य के करने की भावना
(घ) कार्य में खर्च हुआ समय और धन

उत्तरः
(ग) कार्य के करने की भावना

26. कमालपाशा किस देश के राष्ट्रपति थे?
(क) मिस्र (ख) ईरान
(ग) इराक (घ) तुर्की

उत्तरः
(घ) तुर्की

27. देहाती बूढ़ा कमालपाशा को वर्षगाँठ का उपहार देने देर से क्यों पहुँचा?
(क) वह रास्ता भटक गया था
(ख) वह बहुत बीमार था इसलिए देर हो गई
(ग) वह तीस मील से पैदल चलकर आ रहा था
(घ) बूढ़े के पास यातायात का कोई साधन नहीं था

उत्तरः
(ग) वह तीस मील से पैदल चलकर आ रहा था

28. बूढ़े किसान ने कमालपाशा को उपहार में क्या दिया?
(क) सोने की अंगूठी
(ख) हाथ से बनी कालीन
(ग) घर का बना मक्खन और दूध
(घ) मिट्टी की छोटी हँडिया में पाव-भर शहद

उत्तरः
(घ) मिट्टी की छोटी हँडिया में पाव-भर शहद

29. कमालपाशा ने बूढ़े किसान को कौन-सा सम्मान दिया?
(क) उन्हें राज्य में जमीन दी
(ख) उन्हें राष्ट्रपति की शाही कार में सम्मान के साथ गाँव पहुँचाया
(ग) उन्हें सोने का पदक दिया
(घ) उन्हें राजधानी में बुलाकर पुरस्कृत किया

उत्तरः
(ख) उन्हें राष्ट्रपति की शाही कार में सम्मान के साथ गाँव पहुँचाया

30. भारत में एक किसान रंगीन सुतलियों से बनी खाट लेकर किनकी कोठी पर गया?
(क) राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद की
(ख) सरदार पटेल की
(ग) महात्मा गांधी की
(घ) प्रधानमंत्री पंडित नेहरु की

उत्तरः
(घ) प्रधानमंत्री पंडित नेहरु की

31. पंडित नेहरु ने किसान को उपहार में क्या दिया?
(क) स्वर्ण पदक (ख) मूल्यवान घड़ी
(ग) दस्तखती फोटो (घ) हस्तलिखित पत्र

उत्तरः
(ग) दस्तखती फोटो

32. **अभिकथन (A):** कमालपाशा के उपहार और पंडित नेहरु के प्रसंग में शहद और खाट का कोई आर्थिक मूल्य नहीं था।
कारण (R): उन उपहारों के पीछे लाने वाले की भावना थी जिसने उन्हें सौ लालों का एक लाल बना दिया।

1. लेखक के अनुसार किसी कार्य के 'महान' होने की वास्तविक कसौटी क्या है?
   (क) कार्य का बहुत बड़े पैमाने पर किया जाना
   (ख) कार्य को बहुत प्रसिद्ध व्यक्तियों द्वारा किया जाना
   (ग) कार्य को करने में खर्च धन की अधिकता
   (घ) कार्य के पीछे निहित पवित्र व शुभ भावना

2. तुर्की के राष्ट्रपति कमालपाशा के संदर्भ में कौन-से कथन सही हैं?
   I. उन्होंने विश्राम के वस्त्र बदल लेने के बाद भी नीचे आकर बूढ़े किसान से भेंट की।
   II. उन्होंने बूढ़े किसान के उपहार को बहुत छोटा और तुच्छ मानकर अस्वीकार कर दिया।
   (क) कथन I सही है और II गलत है।
   (ख) कथन II सही है और I गलत है।
   (ग) कथन I और II दोनों ही गलत हैं।
   (घ) कथन I और II दोनों ही सही हैं।

3. 'मैं और मेरा देश दो अलग चीजें नहीं हैं' इस विचार में निबंधकार का कौन-सा दृष्टिकोण मुखरित है?
   (क) संकीर्णतावादी (ख) अविभाज्य राष्ट्रबोध
   (ग) अत्यधिक उदासीनता (घ) घोर भौतिकतावादी

4. गद्यांश में आए 'विशालता' शब्द में कौन-सा शुद्ध मूल शब्द और प्रत्यय प्रयुक्त है?
   (क) विशाला + ता (ख) विशाल + ता
   (ग) विश + आलता (घ) विशा + लता

5. देहाती बूढ़ा राष्ट्रपति कमालपाशा के लिए मिट्टी की हँडिया में क्या उपहार लेकर आया था?
   (क) दुर्लभ मोतियों की एक माला
   (ख) रंगीन सुतलियों से बुनी खाट
   (ग) पाव-भर शुद्ध शहद
   (घ) अपने गाँव के खेतों के ताज़े फल

उत्तरः
1. (घ) कार्य के पीछे निहित पवित्र व शुभ भावना
2. (क) कथन I सही है और II गलत है।
3. (ख) अविभाज्य राष्ट्रबोध
4. (ख) विशाल + ता
5. (ग) पाव-भर शुद्ध शहद

गद्यांश 6

अच्छा, आप इस तरह की चर्चा कभी नहीं करते। तो मैं आपसे दूसरा प्रश्न पूछता हूँ। क्या आप कभी केला खाकर छिलका रास्ते में फेंकते हैं, अपने घर का कूड़ा बाहर फेंकते हैं; मुँह से गंदे शब्दों में गंदे भाव प्रकट करते हैं, इधर की उधर, उधर की इधर लगाते हैं; अपना घर, दफ्तर, गली गंदा रखते हैं, होटलों-धर्मशालाओं में या ऐसे ही दूसरे स्थानों में, ज़ीनों में, कोनों में पीक थूकते हैं? उत्सवों, मेलों, रेलों और खेलों में ठेलमठेल करते हैं और इसी तरह किसी भी रुप में क्या सुरुचि और सौंदर्य को आपके किसी काम से ठेस लगती है?

यदि आपका उत्तर हाँ है, तो आपके द्वारा देश के सौंदर्य-बोध को भयंकर आघात लग रहा है और आपके द्वारा देश की संस्कृति को गहरी चोट पहुँच रही है।

1. सार्वजनिक स्थानों पर 'छिलके फेंकना' या 'पीक थूकना' नागरिक के किस अभाव को दर्शाता है?
   (क) नागरिक व सौंदर्य चेतना का अभाव
   (ख) धन और साधनों की कमी
   (ग) आधुनिक तकनीकी ज्ञान की कमी
   (घ) राजनीतिक अधिकारों की अज्ञानता

2. लेखक के अनुसार देश के 'सौंदर्य-बोध को भयंकर आघात' कब पहुँचता है?
   (क) जब नागरिक केवल अपने घर की साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देते हैं।
   (ख) जब नागरिकों के दैनिक कार्यों व आचरण से सुरुचि को ठेस लगती है।
   (ग) जब देश के वैज्ञानिक नए-नए रक्षा उपकरणों का आविष्कार नहीं करते।
   (घ) जब चुनाव के समय नागरिक उत्तेजक नारों के प्रभाव में नहीं आते।

3. इस पूरे गद्यांश में निबंधकार का मुख्य स्वर कैसा प्रतीत होता है?
   (क) अत्यंत उपहासात्मक
   (ख) सुधारात्मक व चेतावनीपूर्ण
   (ग) अत्यधिक काव्यात्मक
   (घ) घोर अकर्मण्य

4. गद्यांश में प्रयुक्त 'कुरुचि' शब्द का सही विलोम शब्द निम्नलिखित में से क्या होगा?
   (क) सुरुचि (ख) अरुचि
   (ग) रुचि (घ) कुरुचिता

5. गद्यांश में आए शब्दों "इधर की उधर, उधर की इधर लगाना" का क्या अर्थ है?
   (क) बाज़ार से सामान खरीद कर घर लाना
   (ख) खेल के मैदान में खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाना
   (ग) कूड़े को सही स्थान पर डस्टबिन में डालना
   (घ) पीठ पीछे एक-दूसरे की चुगली करना

उत्तरः
1. (क) नागरिक व सौंदर्य चेतना का अभाव
2. (ख) जब नागरिकों के दैनिक कार्यों व आचरण से सुरुचि को ठेस लगती है।
3. (ख) सुधारात्मक व चेतावनीपूर्ण
4. (क) सुरुचि
5. (घ) पीठ पीछे एक-दूसरे की चुगली करना

42. निम्नलिखित में से कौन-से कथन 'मैं और मेरा देश' निबंध के मुख्य विचारों के बारे में सही हैं?

I. व्यक्ति की पूर्णता उसकी निजता में नहीं, परिवार, क्षेत्र और राष्ट्र की पहचान तक जुड़ी है।

II. देश का सम्मान और नागरिक का सम्मान एक-दूसरे से अटूट रूप से जुड़े हुए हैं।

III. केवल वैज्ञानिक और धनपति ही देश के लिए महत्वपूर्ण काम कर सकते हैं।

(क) केवल I और II सही हैं
(ख) केवल II और III सही हैं
(ग) केवल I और III सही हैं
(घ) तीनों कथन सही हैं

उत्तरः
(क) केवल I और II सही हैं

43. लाला लाजपत राय की कलम और वाणी में किस चीज की अद्भुत किरणें थीं?
(क) प्रेम और करुणा की
(ख) तेजस्विता की
(ग) ज्ञान और विद्वता की
(घ) क्रोध और विद्रोह की

उत्तरः
(ख) तेजस्विता की

44. लेखक ने 'मैं और मेरा देश' निबंध में दो छोटी कहानियाँ सुनाईं। ये कहानियाँ किसकी थीं?
(क) प्रेमचंद और चेखव की
(ख) दो युवकों के जीवन की घटनाएँ
(ग) ऐतिहासिक राजाओं की कहानियाँ
(घ) स्वतंत्रता सेनानियों की जीवन-गाथाएँ

उत्तरः
(ख) दो युवकों के जीवन की घटनाएँ

45. इस निबंध की शैली के बारे में कौन-सा कथन सबसे उचित है?
(क) निबंध पूरी तरह वर्णनात्मक शैली में है जिसमें केवल घटनाओं का विवरण है।
(ख) निबंध केवल तथ्यों और आँकड़ों पर आधारित शोधपरक लेखन है।
(ग) निबंध प्रश्नोत्तर या संवादात्मक शैली में है जिसमें प्रश्न पूछकर उनका उत्तर दिया जाता है।
(घ) निबंध पूरी तरह काव्यात्मक शैली में है जिसमें लय और छंद का उपयोग है।

उत्तरः
(ग) निबंध प्रश्नोत्तर या संवादात्मक शैली में है जिसमें प्रश्न पूछकर उनका उत्तर दिया जाता है।

46. 'प्रभाकर' के निधन का वर्ष कौन-सा है?
(क) सन् 1985 में (ख) सन् 1990 में
(ग) सन् 1995 में (घ) सन् 2000 में

उत्तरः
(ग) सन् 1995 में

47. "जो उपहार और साधन होंगे, पर उसका देश गुलाम हो — तो वे सारे उपहार और साधन उसे गौरव नहीं दे सकते।" यह विचार किस सत्य को उजागर करता है?
(क) भौतिक संपत्ति ही जीवन का आधार है इसलिए देश की चिंता छोड़ो।
(ख) व्यक्ति और देश का गौरव अविभाज्य है — देश की हीनता व्यक्ति की हीनता है और व्यक्ति की हीनता देश की हीनता।
(ग) गुलाम देश में भी व्यक्ति अपनी निजी उपलब्धियों से महान बन सकता है।
(घ) विदेश में रहकर भी व्यक्ति अपने देश से जुड़ा रह सकता है इसलिए गुलामी कोई बड़ी समस्या नहीं।

उत्तरः
(ख) व्यक्ति और देश का गौरव अविभाज्य है — देश की हीनता व्यक्ति की हीनता है और व्यक्ति की हीनता देश की हीनता।

48. रिक्त स्थान भरिए —
"हम अपने कार्यों को देश के अनुकूल होने की कसौटी पर कसकर चलने की आदत डालें, पर हम इसमें तब तक सफल नहीं हो सकते जब तक हम अपने देश की ________ दशा को ठीक से न समझ लें।"
(क) बाहरी (ख) ऐतिहासिक
(ग) राजनीतिक (घ) भीतरी

उत्तरः
(घ) भीतरी

49. लेखक के अनुसार व्यक्ति की पूर्णता का विस्तार किस क्रम में होता है?**
(क) घर → पड़ोस → नगर → देश
(ख) देश → नगर → परिवार → घर
(ग) विद्यालय → समाज → देश → विश्व
(घ) परिवार → विद्यालय → नगर → देश

उत्तरः
(क) घर → पड़ोस → नगर → देश

50. 'मैं और मेरा देश' निबंध का केंद्रीय संदेश क्या है?
(क) समाज के केवल बड़े, ज्ञानी और प्रतिष्ठित लोग ही देश के लिए कुछ बड़ा और महत्वपूर्ण कार्य कर सकते हैं।
(ख) व्यक्ति और देश एक हैं — नागरिक का हर छोटा-बड़ा कार्य देश को प्रभावित करता है और देश की उन्नति में हर नागरिक का योगदान है।

(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है

उत्तरः
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है

33. देश के अनुकूल काम करने की कसौटी के रूप में लेखक ने देश को किन दो बातों की सबसे अधिक जरूरत बताई?
(क) शिक्षा-बोध और स्वास्थ्य-बोध
(ख) धन-बोध और बल-बोध
(ग) शक्ति-बोध और सौंदर्य-बोध
(घ) राष्ट्र-बोध और धर्म-बोध

उत्तरः
(ग) शक्ति-बोध और सौंदर्य-बोध

34. लेखक ने शल्य का उदाहरण किस संदर्भ में दिया?
(क) देश के लिए बलिदान के संदर्भ में
(ख) चुनाव में सही मत देने के संदर्भ में
(ग) सौंदर्य-बोध को ठेस पहुँचाने के संदर्भ में
(घ) देश की तुलना दूसरे देश से करने पर शक्ति-बोध को चोट पहुँचने के संदर्भ में

उत्तरः
(घ) देश की तुलना दूसरे देश से करने पर शक्ति-बोध को चोट पहुँचने के संदर्भ में

35. निम्नलिखित में से कौन-से कार्य देश के सौंदर्य-बोध को आघात पहुँचाते हैं?

I. केला खाकर छिलका रास्ते में फेंकना

II. होटलों-धर्मशालाओं में पीक थूकना

III. चुनाव में गलत व्यक्ति को मत देना

(क) केवल I और II सही हैं
(ख) केवल II और III सही हैं
(ग) केवल I और III सही हैं
(घ) तीनों कथन सही हैं

उत्तरः
(क) केवल I और II सही हैं

36. देश की उच्चता और हीनता की कसौटी लेखक ने किसे बताया?
(क) देश की आर्थिक समृद्धि को
(ख) देश की सैन्य शक्ति को
(ग) चुनाव को
(घ) देश के शैक्षिक स्तर को

उत्तरः
(ग) चुनाव को

37. रिक्त स्थान भरिए —
"जिस देश के नागरिक गलत लोगों के उत्तेजक नारों या गलत प्रभाव में आकर मत देते हैं, वह देश ________ है।"
(क) उच्च (ख) शक्तिशाली
(ग) हीन (घ) अज्ञानी

उत्तरः
(ग) हीन

38. लेखक के अनुसार हर नागरिक का अधिकार क्या है?
(क) वह किसी भी पद के लिए चुनाव लड़ सके
(ख) वह विदेश में स्वतंत्र रूप से बस सके
(ग) वह देश की नीतियाँ तय करने में भाग ले सके
(घ) उसका मत लिए बिना कोई भी आदमी किसी अधिकार की कुर्सी पर न बैठ सके

उत्तरः
(घ) उसका मत लिए बिना कोई भी आदमी किसी अधिकार की कुर्सी पर न बैठ सके

39. कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के कारण क्या भोगा?
(क) उन्हें देश निकाला दिया गया
(ख) उन्हें अनेक बार जेल-यात्रा करनी पड़ी
(ग) उनकी नौकरी चली गई
(घ) उनकी संपत्ति जब्त हो गई

उत्तरः
(ख) उन्हें अनेक बार जेल-यात्रा करनी पड़ी

40. लेखक के अनुसार एक साधारण नागरिक देश के लिए क्या कर सकता है?
(क) केवल सरकारी नौकरी करके देश की सेवा कर सकता है
(ख) युद्ध में सैनिक बनकर देश की रक्षा कर सकता है
(ग) देश के सम्मान की रक्षा के लिए बहुत कुछ कर सकता है
(घ) केवल कर चुकाकर देश की सेवा कर सकता है

उत्तरः
(ग) देश के सम्मान की रक्षा के लिए बहुत कुछ कर सकता है

41. 'प्रभाकर' के संस्मरणात्मक निबंध-संग्रहों में से कौन-सा नाम सही है?
(क) दीपशिखा और यामा
(ख) दीप जले शंख बजे और ज़िंदगी मुसकराई
(ग) कामायनी और लहर
(घ) बीजक और रामायण

उत्तरः
(ख) दीप जले शंख बजे और ज़िंदगी मुसकराई

13. शल्य के व्यवहार से लेखक ने क्या शिक्षा दी?

उत्तरः
शल्य महाबली कर्ण का सारथी था, पर वह बार-बार अर्जुन की अजेयता का उल्लेख करता था। इससे लेखक ने सिखाया कि निराशावादी बातें किसी के मनोबल को तोड़ देती हैं — देश के साथ भी यही होता है।

14. लेखक के अनुसार किसी कार्य का महत्व किसमें निहित है?

उत्तरः
लेखक के अनुसार कार्य की महानता उसकी विशालता में नहीं, उसके पीछे की भावना में है। अच्छी भावना से किया गया छोटा कार्य भी महान होता है और बुरी भावना से किया बड़ा कार्य हीन होता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लेखक ने नगर को 'एक मनुष्य से भरा-पूरा नगर' क्यों कहा? इस कथन का क्या भाव है?

उत्तरः
लेखक ने घर, पड़ोस और नगर के लोगों के साथ पारस्परिक सहयोग की गहरी श्रृंखला बनाई। उन्होंने नगर का ज्ञान उपयोग किया और अपनी सेवाएँ दीं। इस सामूहिक आदान-प्रदान से वे एक पूर्ण मनुष्य बने। भाव यह है कि व्यक्ति और समाज एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं।

2. लाला लाजपत राय को 'पंजाब-केसरी' क्यों कहा जाता था? निबंध के आधार पर उनके व्यक्तित्व का परिचय दीजिए।

उत्तरः
लाला लाजपत राय भारत की पराधीनता के दिनों में उन लोगों में थे जिन्होंने अपने रक्त से गौरव के दीपक जलाए। घोर अंधकार और भयंकर बवंडरों में भी वे स्वतंत्रता की ज्योत बुझने नहीं देते थे। उनकी कलम और वाणी दोनों में असाधारण तेजस्विता थी। वे सारे संसार में भ्रमण कर चुके थे। ऐसे व्यक्तित्व के धनी थे कि जिससे भी मिलते, उसे प्रभावित कर लेते थे।

3. जापानी युवक की घटना के आधार पर बताइए कि एक साधारण नागरिक अपने देश का गौरव कैसे बढ़ा सकता है?

उत्तरः
स्वामी रामतीर्थ ने जब कहा कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते, तो एक युवक ने अपनी पत्नी को छोड़कर भागकर ताज़े फल लाए। उसने पैसे लेने से इनकार करते हुए केवल यही माँगा कि स्वामीजी जापान की बुराई न करें। इस एक छोटे-से कार्य से उसने अपने देश का अपार सम्मान बढ़ाया। इससे सिद्ध होता है कि बिना धन या पद के भी एक नागरिक देश-सम्मान की रक्षा कर सकता है।

4. पुस्तकालय वाली जापानी घटना से लेखक ने व्यक्ति और देश के संबंध के विषय में क्या निष्कर्ष निकाला?

उत्तरः
एक विदेशी विद्यार्थी ने जापानी पुस्तकालय की पुस्तक से दुर्लभ चित्र चुराए। परिणामस्वरुप पूरे उसके देश के नागरिकों का उस पुस्तकालय में प्रवेश बंद हो गया। इससे लेखक ने निष्कर्ष निकाला कि एक व्यक्ति का कार्य सारे देश की छवि को प्रभावित करता है। देश और नागरिक एक-दूसरे से अटूट रुप से जुड़े हैं — नागरिक की हीनता देश को भी हीन बनाती है और देश का गौरव नागरिक को भी मिलता है।

5. लेखक ने जीवन को युद्ध से क्यों तुलना की और इस युद्ध में सभी की भूमिका का वर्णन किस प्रकार किया?

उत्तरः
लेखक ने कहा कि जीवन एक बहुमुखी प्रयास है जिसमें केवल लड़ना ही नहीं, बल्कि रसद पहुँचाना, खेती करना, उत्साह बढ़ाना — सब महत्वपूर्ण हैं। युद्ध में सैनिक लड़ते हैं, किसान अनाज उगाते हैं और जय बोलने वाले मनोबल बढ़ाते हैं। इसी तरह देश की प्रगति में वैज्ञानिक, धनपति, किसान, कलाकार सभी अपनी-अपनी भूमिका से योगदान देते हैं। कोई भी नागरिक 'बेकार' नहीं है।

6. कमालपाशा की घटना से लेखक ने नेतृत्व के विषय में क्या संदेश दिया?

उत्तरः
एक देहाती बूढ़ा तीस मील पैदल चलकर मिट्टी के बर्तन में पाव-भर शहद लेकर कमालपाशा को भेंट देने आया। राष्ट्रपति ने विश्राम-वस्त्र पहने होने के बावजूद नीचे आकर उपहार स्वीकार किया और बूढ़े को शाही सम्मान के साथ घर पहुँचवाया। इससे लेखक ने संदेश दिया कि श्रेष्ठ नेतृत्वकर्ता वह होता है जो साधारण नागरिक की भावना को समझे, उसका सम्मान करे और उसे महत्व दे।

7. 'मैं और मेरा देश दो अलग चीज़ें तो हैं ही नहीं' — इस विचार की व्याख्या कीजिए।

उत्तरः
लेखक का मानना है कि व्यक्ति और देश के हित व सम्मान एक-दूसरे से अविभाज्य हैं। जैसे नागरिक अपने छोटे-छोटे कार्यों में भी अपने लाभ और सम्मान का ध्यान रखता है, वैसे ही उसे देश के लाभ और सम्मान का भी ध्यान रखना चाहिए। देश का सम्मान नागरिक का सम्मान है और नागरिक का गौरव देश का गौरव। दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

8. लेखक के अनुसार नागरिक के अधिकार और कर्तव्य क्या हैं? निबंध के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः
कर्तव्य: नागरिक का कर्तव्य है कि वह कोई ऐसा कार्य न करे जिससे देश की स्वतंत्रता और सम्मान को धक्का पहुँचे; देश के 'शक्ति-बोध' और 'सौंदर्य-बोध' की रक्षा करे; चुनाव में सही व्यक्ति को मत दे। अधिकार: देश के सम्मान का पूरा-पूरा भाग नागरिक को मिले; देश की शक्तियों से अपने

(ग) देश की उन्नति और उसका विकास पूरी तरह से केवल बड़े वैज्ञानिकों और अमीर धनपतियों पर ही निर्भर करता है।
(घ) किसी भी देश का वास्तविक सम्मान और उसकी सुरक्षा केवल सीमा पर तैनात वीर सैनिकों के बलिदान से ही बनता है।

उत्तरः
(ख) व्यक्ति और देश एक हैं — नागरिक का हर छोटा-बड़ा कार्य देश को प्रभावित करता है और देश की उन्नति में हर नागरिक का योगदान है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लेखक ने अपनी स्थिति को 'पूर्ण' क्यों समझा था?

उत्तरः
लेखक को लगता था कि घर, पड़ोस और नगर के लोगों के प्यार, ज्ञान और सहयोग से उनकी मनुष्यता पूर्ण हो चुकी है। वे स्वयं को किसी भी अपूर्णता से मुक्त मानते थे।

2. लेखक की 'आनंद की दीवार' में दरार किस कारण पड़ी?

उत्तरः
लाला लाजपत राय के उस अनुभव ने लेखक की मानसिक दीवार में दरार डाली जिसमें उन्होंने कहा था कि विदेश यात्रा के दौरान भारत की गुलामी का कलंक उनके माथे पर लगा रहा।

3. लाला लाजपत राय ने विदेश भ्रमण के बाद क्या अनुभव साझा किया?

उत्तरः
लाला लाजपत राय ने कहा कि वे अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस और अन्य देशों में गए, परंतु जहाँ भी गए भारतवर्ष की गुलामी की लज्जा का कलंक उनके माथे पर लगा रहा।

4. जापानी युवक ने स्वामी रामतीर्थ को फलों का मूल्य किस रूप में माँगा?

उत्तरः
जापानी युवक ने धन नहीं माँगा, बल्कि स्वामी रामतीर्थ से यही निवेदन किया कि वे अपने देश में जाकर किसी से यह न कहें कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते।

5. जापानी पुस्तकालय की घटना का क्या परिणाम हुआ?

उत्तरः
एक विदेशी विद्यार्थी द्वारा पुस्तक से चित्र निकाल लेने पर उसे जापान से निष्कासित कर दिया गया और पुस्तकालय के बाहर बोर्ड लगा दिया गया कि उस देश का कोई नागरिक वहाँ प्रवेश नहीं कर सकता।

6. देश के 'शक्ति-बोध' को क्षति पहुँचाने वाले कार्य कौन से हैं?

उत्तरः
रेलगाड़ियों, क्लबों या सार्वजनिक स्थानों पर अपने देश की तुलना दूसरे देशों से करते हुए उसे हीन और दूसरे को श्रेष्ठ सिद्ध करना, देश के 'शक्ति-बोध' को भारी क्षति पहुँचाता है।

7. लेखक ने 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता' कहावत को गलत क्यों ठहराया?

उत्तरः
लेखक ने कहा कि इतिहास में अनेक बार एक अकेले व्यक्ति ने भी असंभव कार्य किए हैं। इसलिए यह सोचना कि एक साधारण नागरिक कुछ नहीं कर सकता, बिल्कुल गलत है।

8. 'जय बोलने वालों' का महत्व लेखक ने किस प्रसंग में समझाया?

उत्तरः
लेखक ने क्रिकेट मैच का उदाहरण देते हुए कहा कि दर्शकों की तालियाँ खिलाड़ियों को ऊर्जा देती हैं। अतः युद्ध (जीवन-संघर्ष) में उत्साह बढ़ाने वालों का महत्व भी उतना ही है।

9. कमालपाशा ने बूढ़े किसान के उपहार को सर्वोत्तम क्यों कहा?

उत्तरः
बूढ़ा किसान तीस मील पैदल चलकर मिट्टी के बर्तन में पाव-भर शहद लाया था। कमालपाशा ने इसे सर्वोत्तम इसलिए कहा क्योंकि उस शहद में किसान के हृदय का शुद्ध प्यार था।

10. भारत के एक किसान ने प्रधानमंत्री नेहरु को क्या उपहार दिया और उन्होंने बदले में क्या दिया?

उत्तरः
एक किसान ने रंगीन सुतलियों से बुनी हुई एक खाट पंडित नेहरु को दिल्ली तक लाकर भेंट की। नेहरु जी ने उसकी भावना का सम्मान करते हुए अपना दस्तखती फोटो उसे भेंट किया।

11. लेखक के अनुसार देश की उच्चता और हीनता की कसौटी क्या है?

उत्तरः
लेखक के अनुसार इसकी सबसे बड़ी कसौटी चुनाव है। जिस देश के नागरिक विवेकपूर्वक सही व्यक्ति को मत देते हैं, वह देश उच्च है; गलत प्रभाव में मत देने वाले देश हीन हैं।

12. देश के 'सौंदर्य-बोध' को किस प्रकार के व्यवहार से क्षति पहुँचती है?

उत्तरः
सार्वजनिक स्थानों पर कचरा फेंकना, गंदे शब्दों का प्रयोग, होटलों में पीक थूकना, उत्सवों में ठेलमठेल करना तथा किसी भी रूप में सुरुचि और सौंदर्य को ठेस पहुँचाना इसे नष्ट करता है।

'सौंदर्य-बोध' का अर्थ है — संस्कृति, स्वच्छता और सुरुचि की रक्षा करना। आज के संदर्भ में यह और भी प्रासंगिक है — सोशल मीडिया पर देश की नकारात्मक छवि फैलाना 'शक्ति-बोध' को नष्ट करता है, जबकि सार्वजनिक स्थानों को स्वच्छ रखना, विरासत का सम्मान करना 'सौंदर्य-बोध' को पोषित करता है। दोनों मिलकर एक सशक्त और सुंदर राष्ट्र का निर्माण करते हैं।

5. 'मैं और मेरा देश' निबंध की भाषा-शैली की विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए। इसमें प्रयुक्त संवाद-शैली की क्या उपयोगिता है?

उत्तरः
कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ने इस निबंध में प्रश्नोत्तर एवं संवादात्मक शैली का अत्यंत कुशल प्रयोग किया है। पूरा निबंध एक काल्पनिक संवाद के रूप में चलता है जिसमें लेखक प्रश्न पूछता है और उसी का उत्तर देता है। इससे पाठक निबंध से जुड़ाव महसूस करता है। भाषा सरल, प्रवाहमयी और मुहावरेदार है। 'भूकंप', 'दीवार में दरार', 'गाँठ' जैसे शब्दों का प्रांजल लाक्षणिक प्रयोग हुआ है। 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता' जैसी लोकोक्तियाँ भाषा को जीवंत बनाती हैं। कहानियों और उदाहरणों का प्रयोग गद्य को चित्रात्मक बनाता है। संवाद-शैली जटिल विचारों को सरलता से प्रस्तुत करती है और पाठक की जिज्ञासा को सतत बनाए रखती है।

6. निबंध 'मैं और मेरा देश' के आधार पर लेखक द्वारा प्रस्तुत 'आदर्श नागरिक' की अवधारणा को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः
लेखक ने निबंध में 'आदर्श नागरिक' की एक समग्र अवधारणा प्रस्तुत की है। आदर्श नागरिक वह है जो — अपने प्रत्येक कार्य को देश के अनुकूल रखे और उसके 'शक्ति-बोध' व 'सौंदर्य-बोध' की रक्षा करे; सार्वजनिक स्थानों पर देश की आलोचना कर उसके मनोबल को न गिराए; स्वच्छता और सुरुचि का पालन करे; विवेकपूर्वक सही व्यक्ति को मत दे; देश के सम्मान की रक्षा को अपना कर्तव्य समझे और साथ ही अपने अधिकारों के प्रति सजग रहे। यह नागरिक वैज्ञानिक या धनपति नहीं भी हो तो भी जापानी युवक की तरह एक छोटे कार्य से देश का गौरव बढ़ा सकता है। लेखक के अनुसार देश और नागरिक एक ही इकाई हैं।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

गद्यांश 1

मैं अपने घर में जनमा था, पला था।

अपने पड़ोस में खेलकर, पड़ोसियों का ममता-दुलार पा, बड़ा हुआ था।

अपने नगर में घूम-फिरकर, वहाँ के विशाल समाज का संपर्क पा, वहाँ के संचित ज्ञान-भंडार का उपयोग कर, उसे अपनी सेवाओं का दान दे, उसकी सेवाओं का सहारा पा और इस तरह एक मनुष्य से भरा-पूरा नगर बनकर मैं खड़ा हुआ था।

मैं अपने नगर के लोगों का सम्मान करता था, वे भी मेरा सम्मान करते थे।

मुझे बहुतों की अपने लिए जरूरत पड़ती थी। मैं भी बहुतों की जरूरत का उनके लिए जवाब था।

इस तरह मैं समझ रहा था कि मैं अपने में अब पूरा हो गया हूँ, पूरा फैल गया हूँ, पूरा मनुष्य हो गया हूँ।

1. लेखक का यह सोचना कि वह "बहुतों की ज़रुरत का जवाब था" उसके किस भाव को दर्शाता है?
   (क) सामाजिक उपयोगिता (ख) अत्यधिक अहंकार
   (ग) व्यक्तिगत स्वार्थ (घ) घोर एकाकीपन

2. लेखक के इस कथन "एक मनुष्य से भरा-पूरा नगर बनकर मैं खड़ा हुआ था" के संदर्भ में कौन-सा विकल्प उपयुक्त है?
   (क) वह नगर निर्माण के कार्यों में व्यस्त एक वास्तुकार था।
   (ख) उसका संपूर्ण अस्तित्व उसके सामाजिक परिवेश से निर्मित था।
   (ग) वह अपने नगर का एकमात्र सबसे धनी और शक्तिशाली व्यक्ति था।
   (घ) वह अपने परिवार के लोगों से पूरी तरह अलग होकर रहता था।

3. इस गद्यांश की प्रारंभिक प्रकृति मुख्यतः किस प्रकार की कही जा सकती है?
   (क) रहस्यात्मक (ख) आत्मसंतोषी
   (ग) उपहासात्मक (घ) विक्षोभकारी

4. गद्यांश में प्रयुक्त 'संचित' शब्द का सबसे सटीक विलोम शब्द निम्नलिखित में से क्या होगा?
   (क) एकत्रित (ख) रक्षित
   (ग) वितरित (घ) कलंकित

5. लेखक के अनुसार, गद्यांश में उसकी मनुष्यता की पूर्णता का आधार क्या था?
   (क) देश-विदेश की लंबी यात्राएँ करना और बहुत सा धन कमाना
   (ख) सरकारी पुस्तकालयों से दुर्लभ चित्र चुराकर घर में रखना
   (ग) उसका अपना घर, उसका पास-पड़ोस और उसका अपना नगर
   (घ) कुरुचि और सौंदर्य-बोध को पूरी तरह से नष्ट कर देना

उत्तरः
1. (क) सामाजिक उपयोगिता
2. (ख) उसका संपूर्ण अस्तित्व उसके सामाजिक परिवेश से निर्मित था।
3. (ख) आत्मसंतोषी
4. (ग) वितरित
5. (ग) उसका अपना घर, उसका पास-पड़ोस और उसका अपना नगर

सम्मान की रक्षा का भरोसा हर जगह बना रहे; और बिना उसके मत के कोई भी पद पर न बैठ सके।

9. लेखक ने 'संदर्भ में शब्द' की तरह निबंध में 'भूकंप' शब्द का प्रयोग किस प्रकार किया? इसकी व्याख्या कीजिए।

उत्तरः
लेखक ने 'भूकंप' शब्द का प्रयोग मानसिक झटके के रूप में किया है। जब लाला लाजपत राय ने विदेश में भारत की गुलामी की लज्जा का उल्लेख किया, तो वह कोई वास्तविक भूकंप नहीं था — वह लेखक के मानस में उठा एक विचारों का भूकंप था जिसने उनकी पूर्णता की भावना को तोड़ दिया। इस प्रयोग से भाषा में गहरी सजीवता और चित्रात्मकता आई है।

10. निबंध में लेखक ने 'देश की भीतरी दशा' समझने पर क्यों बल दिया? 'शक्ति-बोध' और 'सौंदर्य-बोध' से क्या तात्पर्य है?

उत्तरः
लेखक का मानना है कि जब तक नागरिक देश की आंतरिक स्थिति — उसकी शक्ति और सौंदर्य — को नहीं समझेगा, तब तक वह देश के अनुकूल कार्य नहीं कर पाएगा। 'शक्ति-बोध' का अर्थ है देश में आत्मविश्वास और सामर्थ्य की भावना बनाए रखना। 'सौंदर्य-बोध' का अर्थ है देश की संस्कृति, स्वच्छता और सुरुचि को बनाए रखना। दोनों को नष्ट करने वाले कार्य देश-विरोधी हैं।

11. स्वामी रामतीर्थ और जापानी युवक की घटना तथा विदेशी विद्यार्थी और जापानी पुस्तकालय की घटना की तुलना कीजिए।

उत्तरः
पहली घटना में जापानी युवक ने अपने देश की छवि बचाने के लिए निःस्वार्थ भाव से कार्य किया — उसने देश का गौरव बढ़ाया। दूसरी घटना में विदेशी विद्यार्थी की चोरी ने न केवल उसे निष्कासित करवाया, बल्कि उसके पूरे देश को लांछित करवाया। दोनों घटनाएँ एक ही सत्य को दो विपरीत कोणों से दर्शाती हैं — व्यक्ति का आचरण देश की छवि बनाता या बिगाड़ता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'मैं और मेरा देश' निबंध के शीर्षक की सार्थकता पर विचार करते हुए निबंध के केंद्रीय भाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः
निबंध का शीर्षक 'मैं और मेरा देश' अत्यंत सार्थक है क्योंकि यह व्यक्ति और राष्ट्र के अविभाज्य संबंध को प्रतिबिंबित करता है। लेखक ने बताया कि व्यक्ति की पूर्णता केवल उसके व्यक्तिगत जीवन में नहीं, बल्कि उसके परिवार, क्षेत्र और राष्ट्र के गौरव से जुड़ी है। लाला लाजपत राय के अनुभव ने लेखक को झकझोरा और उन्हें समझाया कि व्यक्तिगत समृद्धि तब तक अर्थहीन है जब तक देश का सम्मान सुरक्षित न हो। दो जापानी और दो भारतीय घटनाओं के माध्यम से सिद्ध किया गया कि व्यक्ति के कार्य देश की छवि बनाते या बिगाड़ते हैं। अंत में लेखक घोषित करता है — 'मैं और मेरा देश दो अलग चीज़ें नहीं हैं।' यही निबंध का केंद्रीय भाव है।

2. निबंध में वर्णित जापान की दोनों घटनाओं के आधार पर यह सिद्ध कीजिए कि 'एक नागरिक का आचरण ही देश का दर्पण होता है।'

उत्तरः
निबंध में जापान से संबंधित दो विपरीत घटनाएँ वर्णित हैं। पहली घटना में एक जापानी युवक ने स्वामी रामतीर्थ की टिप्पणी सुनकर दूर से ताज़े फल लाए और पैसे लेने से इनकार करते हुए केवल यही माँगा कि जापान की बुराई न की जाए — इस एक कार्य ने जापान का सिर विश्व में ऊँचा किया। दूसरी घटना में एक विदेशी विद्यार्थी ने जापानी पुस्तकालय से दुर्लभ चित्र चुराए, जिसके कारण उसके पूरे देश के नागरिकों पर पुस्तकालय में प्रवेश का प्रतिबंध लग गया। इन दोनों घटनाओं से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति का व्यवहार देश की छवि का दर्पण है — सकारात्मक आचरण देश को गौरव देता है और नकारात्मक आचरण देश को लांछित करता है।

3. कमालपाशा और पंडित नेहरू की घटनाओं के आधार पर 'भावना की महत्ता' और 'कुशल नेतृत्व' पर प्रकाश डालिए।

उत्तरः
कमालपाशा और पंडित नेहरू की घटनाएँ 'भावना की महत्ता' और 'आदर्श नेतृत्व' के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। कमालपाशा की वर्षगाँठ पर तीस मील पैदल चलकर आए बूढ़े किसान ने मिट्टी की हँडिया में पाव-भर शहद भेंट किया। राष्ट्रपति ने विश्राम-वस्त्रों में ही आकर उपहार स्वीकार किया और बूढ़े को शाही सम्मान से घर पहुँचवाया। भारत में एक किसान ने बुनी हुई खाट पंडित नेहरू को भेंट की और उन्होंने अपना दस्तखती फोटो दिया। दोनों घटनाओं में उपहार का मूल्य कम था, पर भावना अमूल्य थी। लेखक का संदेश है — महत्व कार्य की विशालता में नहीं, उसके पीछे की भावना में है। आदर्श नेता वही है जो साधारण नागरिक की भावना को पहचाने।

4. लेखक ने 'शक्ति-बोध' और 'सौंदर्य-बोध' को देश की दो मूलभूत आवश्यकताएँ क्यों माना? आज के संदर्भ में इनकी प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।

उत्तरः
लेखक के अनुसार देश को सर्वप्रथम 'शक्ति-बोध' और 'सौंदर्य-बोध' की आवश्यकता है। 'शक्ति-बोध' का तात्पर्य है — नागरिकों में आत्मविश्वास और सामूहिक मानसिक बल बनाए रखना। जो व्यक्ति सार्वजनिक स्थानों पर अपने देश को हीन और दूसरे देशों को श्रेष्ठ सिद्ध करता है, वह शल्य की तरह देश के 'शक्ति-बोध' को खोखला करता है।

3. इस गद्यांश में लेखक द्वारा पाठकों को संबोधित करने की शैली मुख्यतः कैसी प्रतीत होती है?
   (क) अत्यंत नीरस (ख) संवादात्मक व रोचक
   (ग) घोर उपदेशात्मक (घ) संशयात्मक व डरावनी

4. गद्यांश में आए 'साक्षी' शब्द का तद्भव रूप निम्नलिखित विकल्पों में से चुनिए:
   (क) सखी (ख) साखी
   (ग) सखा (घ) साख

5. लेखक के अनुसार, जो दो कहानियाँ वह सुनाना चाहता है, वे किसकी रचनाएँ नहीं हैं?
   (क) लाला लाजपत राय और स्वामी रामतीर्थ की
   (ख) प्रेमचंद और अंतोन चेखव की
   (ग) कमालपाशा और पंडित जवाहरलाल नेहरु की
   (घ) हरी सिंह नलवा और निर्मल जीत सिंह की

उत्तरः
1. (ख) एक साधारण और अकेला नागरिक भी बड़ा बदलाव ला सकता है।
2. (ख) नागरिक के व्यक्तिगत आचरण और राष्ट्र के भाग्य को
3. (ख) संवादात्मक व रोचक
4. (ख) साखी
5. (ख) प्रेमचंद और अंतोन चेखव की

गद्यांश 4

स्वामी जी ने समझा कि यह कोई फल बेचने वाला है और उनके दाम पूछे, पर उसने दाम लेने से इनकार कर दिया। बहुत आग्रह करने पर उसने कहा- आप इनका मूल्य देना ही चाहते हैं तो वह यह है कि आप अपने देश में जाकर किसी से यह न कहिएगा कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते।

स्वामी जी युवक का यह उत्तर सुनकर मुग्ध हो गए, और वे क्या मुग्ध हो गए, उस युवक ने अपने इस कार्य से अपने देश का गौरव जाने कितना बढ़ा दिया!

इस गौरव की ऊँचाई का अनुमान आप दूसरी घटना सुनकर ही पूरी तरह लगा सकते हैं। एक दूसरे देश का निवासी एक युवक जापान में शिक्षा लेने आया। एक दिन वह सरकारी पुस्तकालय से एक पुस्तक पढ़ने को लाया जिसमें कुछ दुर्लभ चित्र थे। ये चित्र इस युवक ने पुस्तक में से निकाल लिए और पुस्तक वापस कर आया।

1. जापानी युवक द्वारा फलों के मूल्य के रूप में माँगी गई शर्त उसके किस भाव को उजागर करती है?
   (क) व्यावसायिक चतुरता (ख) प्रगाढ़ राष्ट्र-भक्ति
   (ग) अत्यधिक लालच (घ) विदेशी मेहमानों से डर

2. **अभिकथन (A):** पुस्तक से दुर्लभ चित्र निकालने वाले विदेशी विद्यार्थी को जापान से निकाल दिया गया।
   कारण (R): उसका यह आचरण उसके व्यक्तिगत अपराध के साथ उसके देश के नाम पर भी कलंक था।
   (क) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।
   (ख) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
   (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
   (घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. गद्यांश में इन दोनों विपरीत घटनाओं को एक साथ रखने में लेखक का मुख्य उद्देश्य क्या है?
   (क) जापानी बाज़ार में फलों की उपलब्धता दिखाना
   (ख) नागरिक आचरण के राष्ट्रीय प्रभाव को प्रतिपादित करना
   (ग) पुस्तकालय के कड़े नियमों की आलोचना करना
   (घ) स्वामी रामतीर्थ की यात्राओं का विवरण देना

4. गद्यांश में प्रयुक्त 'दुर्लभ' शब्द का सही और सटीक संधि-विच्छेद क्या होगा?
   (क) दुः + लभ (ख) दुर + लभ
   (ग) दुरः + लभ (घ) दु + रलभ

5. जापानी युवक ने प्लेटफार्म पर स्वामी रामतीर्थ के मुँह से कौन-से शब्द सुन लिए थे?
   (क) जापान के सरकारी पुस्तकालयों में बहुत दुर्लभ चित्र रखे हैं।
   (ख) जापान का राष्ट्र-ध्वज पूरे संसार में सबसे ऊँचा है।
   (ग) जापान के लोग बहुत ही चतुर और स्वार्थी होते हैं।
   (घ) जापान में शायद अच्छे फल नहीं मिलते!

उत्तरः
1. (ख) प्रगाढ़ राष्ट्र-भक्ति
2. (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
3. (ख) नागरिक आचरण के राष्ट्रीय प्रभाव को प्रतिपादित करना
4. (क) दुः + लभ
5. (घ) जापान में शायद अच्छे फल नहीं मिलते!

गद्यांश 5

बात यह है कि मैं और मेरा देश दो अलग चीजें तो हैं ही नहीं।

मैंने जो कुछ जीवन में अध्ययन और अनुभव से सीखा है, वह यही है कि महत्व किसी कार्य की विशालता में नहीं है, उस कार्य के करने की भावना में है। बड़े से बड़ा कार्य हीन है, यदि उसके पीछे अच्छी भावना नहीं है और छोटे से छोटा कार्य भी महान है, यदि उसके पीछे अच्छी भावना है।

महान कमालपाशा उन दिनों अपने देश तुर्की के राष्ट्रपति थे। राजधानी में अपनी वर्षगाँठ का उत्सव समाप्त कर जब वे अपने भवन में ऊपर चले गए, तो एक देहाती बूढ़ा उन्हें वर्षगाँठ का उपहार भेंट करने आया। सेक्रेटरी ने कहा– अब तो समय बीत गया है। बूढ़े ने कहा– मैं तीस मील से पैदल चलकर आ रहा हूँ, इसलिए मुझे देर हो गई।

गद्यांश 2

उनका वह अनुभव था कि "मैं अमेरिका गया, इंग्लैंड गया, फ्रांस गया और संसार के दूसरे देशों में भी घूमा, पर जहाँ भी मैं गया, भारतवर्ष की गुलामी की लज्जा का कलंक मेरे माथे पर लगा रहा।" क्या सचमुच यह अनुभव एक mental भूकंप नहीं है, जो मनुष्य को झकझोर कर कहे कि किसी मनुष्य के पास संसार के ही नहीं, यदि स्वर्ग के भी सब उपहार और साधन हों, पर उसका देश गुलाम हो या किसी भी दूसरे रूप में हीन हो तो वे सारे उपहार और साधन उसे गौरव नहीं दे सकते।

इस अनुभव की छाया में मैं सोचता हूँ कि मेरा कर्तव्य है कि मुझे निजी रूप में सारे संसार का राज्य भी क्यों न मिलता हो, मैं कोई ऐसा काम न करूँ जिससे मेरे देश की स्वतंत्रता को, दूसरे शब्दों में, उसके सम्मान को धक्का पहुँचे, उसकी किसी भी प्रकार की शक्ति में कमी आए; साथ ही उसके एक नागरिक के रूप में मेरा यह अधिकार भी है कि अपने देश के सम्मान का पूरा-पूरा भाग मुझे मिले और उसकी शक्तियों से अपने सम्मान की रक्षा का मुझे, जहाँ भी मैं हूँ, भरोसा रहे।

1. लाला लाजपत राय के माथे पर 'गुलामी की लज्जा का कलंक' लगे रहने का अंतर्निहित अर्थ क्या है?
   (क) व्यक्तिगत श्रेष्ठता भी राष्ट्र की हीनता को नहीं ढक सकती।
   (ख) उनके पास पर्याप्त धन और साधनों की भारी कमी थी।
   (ग) विदेशी सरकारों ने उन्हें अपने देशों में आने से रोका था।
   (घ) वे अपने परिवार के दायित्वों को पूरा नहीं कर पाए थे।

2. **अभिकथन (A):** देश के हीन या गुलाम होने पर व्यक्ति के पास मौजूद स्वर्ग के साधन भी उसे गौरव नहीं दे सकते।
   कारण (R): व्यक्ति का निजी सम्मान उसके राष्ट्र के सम्मान और स्वतंत्रता से अटूट रूप से जुड़ा होता है।
   (क) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।
   (ख) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
   (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
   (घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. लाला लाजपत राय के इस अनुभव को सुनकर लेखक के मन में उपजा मुख्य भाव क्या है?
   (क) अकर्मण्यता (ख) राष्ट्र-कर्तव्य बोध
   (ग) घोर निराशा (घ) व्यक्तिगत ईर्ष्या

4. गद्यांश में आए 'लज्जा' शब्द का सर्वाधिक उपयुक्त पर्यायवाची शब्द निम्नलिखित में से क्या होगा?
   (क) अभिमान (ख) व्रीड़ा
   (ग) पुरुषार्थ (घ) हास

5. इस अनुभव के आलोक में लेखक ने अपने लिए क्या मुख्य कर्तव्य निर्धारित किया है?
   (क) वह अधिक से अधिक धन अर्जित कर भामाशाह की तरह त्यागेगा।
   (ख) वह संसार के सर्वश्रेष्ठ देशों में जाकर व्यापारिक केंद्र खोलेगा।
   (ग) वह नए-नए आविष्कारों के माध्यम से देश को शक्तिशाली बनाएगा।
   (घ) वह ऐसा कोई कार्य नहीं करेगा जिससे देश के सम्मान को धक्का पहुँचे।

उत्तरः

1. (क) व्यक्तिगत श्रेष्ठता भी राष्ट्र की हीनता को नहीं ढक सकती।
2. (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
3. (ख) राष्ट्र-कर्तव्य बोध
4. (ख) व्रीड़ा
5. (घ) वह ऐसा कोई कार्य नहीं करेगा जिससे देश के सम्मान को धक्का पहुँचे।

गद्यांश 3

अकेला चना क्या भाड़ फोड़े- यह कहावत, अपने अनुभव के आधार पर ही आपसे कह रहा हूँ कि सौ फीसदी झूठ है। इतिहास साक्षी है, बहुत बार अकेले चने ने ही भाड़ फोड़ा है और ऐसा फोड़ा है कि भाड़ खील-खील ही नहीं हो गया, उसका निशान तक ऐसा छूमंतर हुआ कि कोई यह भी न जान पाया कि वह बेचारा आखिर था कहाँ।

मैं जानता हूँ, इतिहास की गहराइयों में उतरने का समय नहीं है, पर दो छोटी कहानियाँ तो सुन ही सकते हैं आप; और कहानियाँ भी न प्रेमचंद की हैं, न अंतोन चेखव की। दो युवकों के जीवन की दो घटनाएँ हैं, पर उन दो घटनाओं में वह गाँठ इतनी साफ है, जो नागरिक और देश को एक साथ बाँधती है कि आप दो बड़ी-बड़ी पुस्तकें पढ़कर भी उसे इतना साफ नहीं देख सकते।

1. लेखक के अनुसार "अकेला चना क्या भाड़ फोड़े" कहावत के 'सौ फ़ीसदी झूठ' होने का क्या तात्पर्य है?
   (क) समाज में अकेले व्यक्ति का कोई अस्तित्व नहीं होता।
   (ख) एक साधारण और अकेला नागरिक भी बड़ा बदलाव ला सकता है।
   (ग) इतिहास में सभी बड़े कार्य केवल राजाओं द्वारा किए गए।
   (घ) सामूहिक प्रयासों के बिना कोई भी देश उन्नति नहीं कर सकता।

2. गद्यांश में वर्णित "गाँठ" शब्द निम्नलिखित में से किस अंतर्संबंध को सर्वोत्तम रूप से अभिव्यक्त करता है?
   (क) दो अलग-अलग मित्र देशों की राजनीतिक संधियों को
   (ख) नागरिक के व्यक्तिगत आचरण और राष्ट्र के भाग्य को
   (ग) प्राचीन राजाओं और आधुनिक नेताओं के विचारों को
   (घ) दो प्रसिद्ध कहानीकारों की लेखन शैलियों के सामंजस्य को

अध्याय 8

पद

1. कवि परिचय

सच्ची आंतरिक भक्ति और सहज प्रेम का मार्ग दिखाने वाली सुंदर रचना 'पद' के रचयिता संत रैदास का जन्म सन् 1388 में वाराणसी, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनका नाम मध्यकालीन संत कवियों में परम आदर के साथ स्वर्णाक्षरों में अंकित है। इन्होंने जीवन-भर अपनी अनन्य लेखनी और बाह्य आडंबरों के खंडन द्वारा मन की शुद्धता, समानता और भाईचारे के भावों को बुनकर हिंदी साहित्य को अलंकृत किया है। अपनी इस सरल, व्यावहारिक और गेयात्मक लोकधर्मी भाषा से इन्होंने हिंदी प्रेमियों को गौरवान्वित किया है। सन् 1518 में इस महान संत कवि का निधन हो गया।

2. कविता-परिचय

प्रस्तुत पाठ में 15वीं शताब्दी के संत कवि रैदास के दो भक्तिपूर्ण पद संकलित हैं। पहले पद में चंदन-पानी, दीपक-बाती और मोती-धागे जैसे सुंदर प्रतीकों के माध्यम से भक्त और आराध्य के अटूट संबंध को व्यक्त किया गया है। दूसरे पद में भक्त की अडिग निष्ठा का चित्रण है — वह तीर्थ और व्रत का मोह छोड़ सकता है, किंतु प्रभु-भक्ति कभी नहीं। सरल ब्रजभाषा में रचित ये पद आज भी समानता, प्रेम और आंतरिक भक्ति का संदेश देते हैं।

3. कविता का सार

अनन्य भक्ति भाव

इस पद में संत रैदास प्रभु के प्रति अपनी अटूट भक्ति और समर्पण को व्यक्त करते हैं। वे कहते हैं कि उन्हें भगवान के नाम की जो रट लग चुकी है, वह अब छूट नहीं सकती। कवि चंदन-पानी, बादल-मोर, चकोर-चन्द्रमा, दीपक-बाती, मोती-धागा और सोने-सुहागे जैसी अनेक सुंदर उपमाओं के ज़रिए बताते हैं कि भक्त और भगवान का संबंध अभिन्न है। वे स्वयं को तुच्छ और प्रभु को सर्वोपरि मानते हुए उनके चरणों में खुद को पूरी तरह समर्पित कर देते हैं।

अडिग निष्ठा और आस्था

इस पद में कवि रैदास ईश्वर के प्रति अपनी अडिग निष्ठा और अटूट विश्वास को रेखांकित करते हैं। वे घोषणा करते हैं कि प्रभु से उनका नाता कभी टूट नहीं सकता और वे बाहरी कर्मकांडों जैसे तीर्थ या व्रत की परवाह नहीं करते। उनके लिए ईश्वर सर्वव्यापक हैं, जो हर स्थान पर मौजूद हैं। वे संसार के सभी सांसारिक बंधनों को तोड़कर मन, कर्म और वचन से केवल अपने आराध्य के चरणों में सच्चा आश्रय पाते हैं।

4. कठिन-शब्दार्थ, सप्रसंग व्याख्या

काव्यांश 1

अब कैसे छूटै राम रट लागी।
प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी।
प्रभु जी तुम घन बन, हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभु जी तुम दीपक, हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभु जी तुम मोती, हम धागा, जैसे सोने मिलत सुहागा।
प्रभु जी तुम स्वामी, हम दासा, ऐसी भगति करै रैदासा।

कठिन-शब्दार्थ

1. रट – बार-बार एक ही नाम दोहराने की आदत या लगन।
2. चंदन – एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसकी लकड़ी एक प्रधान गंधद्रव्य है, संदल, चंदन को घिसकर बनवाया हुआ लेप।
3. बास – गंध, निवास, वासस्थान, वस्त्र।
4. समानी – समा जाना, समाहित होना या बस जाना।
5. घन – बादल, मेघ, अंधकार, समूह, विस्तार।
6. मोरा – मोर पक्षी।
7. चितवत/चितवन/चितवना – किसी की ओर देखने का ढंग, दृष्टि, देखना, निरखना।
8. चंद – चंद्रमा।
9. चकोरा/चकोर – तीतर की जाति का एक पक्षी जो चंद्रमा का परम प्रेमी माना जाता है।
10. बाती – दीये की बत्ती।
11. जोति – प्रकाश, रोशनी, लौ, सूर्य, नक्षत्र।
12. बरै – जलना या जलती है।
13. राती – रात।
14. सोने – स्वर्ण, सोना धातु।

उत्तरः

विशेषताएँ	उदाहरण
अनन्य भक्ति भाव	"जो तुम तोरौ राम मैं नहि तोरौ, तुम सौ तोरि कवन सौं जोरौ।"
सरल और लोकधर्मी भाषा	"प्रभुजी तुम स्वामी, हम दासा, ऐसी भगति करै रैदासा।" — यहाँ स्वामी-दास का संबंध लोक-जीवन से लिया गया सरल प्रतीक है।
उपमा और तुलना	"प्रभुजी तुम मोती, हम धागा, जैसे सोने मिलत सुहागा।"
लयात्मकता और गेयता/ ध्वन्यात्मकता	"जाकी जोति बरै दिन राती" — 'ज' और 'र' की आवृत्ति से लयात्मक प्रभाव। "अब कैसे छूटै राम रट लागी" — 'र' की पुनरावृत्ति गेयता उत्पन्न करती है।
दृढ़ निष्ठा और आस्था	"तीरथ बरत न करूँ अंदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसां।"

विषयों से संवाद

1. तीर्थ और व्रत के स्थान पर रैदास ने आराध्य की भक्ति को प्रधान माना है। भक्तिकाल के कवि रैदास की तरह कबीर भी निराकार आराध्य की भक्ति पर बल देते हैं। तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों के आधार पर बताइए कि इसके क्या कारण हो सकते हैं?
(संकेत– आप अपने सामाजिक विज्ञान के शिक्षक की सहायता भी ले सकते हैं।)

उत्तरः
भक्तिकाल में रैदास, कबीर आदि संत कवियों के निराकार भक्ति पर बल देने के तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक कारण निम्नलिखित थे:

1. **जाति-व्यवस्था की कठोरता**: रैदास स्वयं चर्मकार जाति से थे जो तत्कालीन समाज में अछूत मानी जाती थी। मंदिरों में उनका प्रवेश वर्जित था। तीर्थों में भी निम्न जाति के लोगों को उचित स्थान नहीं मिलता था। ऐसे में उन्होंने बाह्य कर्मकांडों को अस्वीकार कर आंतरिक भक्ति को सच्चा मार्ग बताया।
2. **पुजारियों का अधिकार और शोषण**: उस समय पंडित वर्ग तीर्थ, व्रत और धार्मिक अनुष्ठानों पर एकाधिकार रखता था। सामान्य और निम्न वर्ग से भारी दक्षिणा ली जाती थी। इस शोषण का विरोध करते हुए संत कवियों ने कहा कि ईश्वर को पाने के लिए पंडितों या कर्मकांड की आवश्यकता नहीं।
3. **इस्लाम का प्रभाव**: उस काल में भारत में इस्लाम का प्रसार हो रहा था जो निराकार ईश्वर और समानता की बात करता था। इससे भी भक्त कवियों को निराकार भक्ति की प्रेरणा मिली।
4. **सामाजिक समरसता का संदेश**: रैदास और कबीर चाहते थे कि धर्म जाति-भेद से ऊपर हो और सभी मनुष्य समान हों। निराकार ईश्वर की भक्ति में जाति, कुल या धन का कोई भेद नहीं होता।
5. **ढोंग और आडंबर का विरोध**: तत्कालीन समाज में बाह्य आडंबरों, पाखंड और ढोंग का बोलबाला था। संत कवियों ने इसका विरोध कर सच्चे मन की भक्ति और आंतरिक शुद्धता पर बल दिया।

2. "सोने मिलत सुहागा"
'सुहागा' एक प्राकृतिक खनिज है जिसके प्रयोग से सोने की अशुद्धियाँ दूर हो जाती हैं और उसकी चमक बढ़ जाती है। 'सुहागा' का रासायनिक नाम और उसकी विशेषताएँ अपने विज्ञान के शिक्षक से चर्चा करके लिखिए।

उत्तरः
विज्ञान के शिक्षक से चर्चा के बाद प्राप्त जानकारी:
सुहागा का रासायनिक नाम: सोडियम टेट्राबोरेट (Sodium Tetraborate) या बोरेक्स (Borax)। इसका रासायनिक सूत्र $Na_2B_4O_7{\cdot}10H_2O$ है।
सुहागा की विशेषताएँ:
1. यह एक प्राकृतिक खनिज है जो सफेद रंग का होता है।
2. इसका उपयोग सोने को शुद्ध करने में किया जाता है — जब सोने को गर्म करके इसमें सुहागा मिलाया जाता है तो अशुद्धियाँ दूर हो जाती हैं और सोना चमकदार हो जाता है।
3. यह एक अच्छा सोल्वेंट (विलायक) है जो धातुओं की ऑक्साइड परतें हटाता है।
4. इसका उपयोग काँच, मिट्टी के बर्तन, साबुन और कीटनाशकों में भी होता है।
5. चिकित्सा में भी इसका सीमित उपयोग होता है।

रैदास ने इस प्रतीक का उपयोग बहुत सटीक किया है — जैसे सुहागा सोने की अशुद्धियाँ दूर कर उसे शुद्ध और चमकदार बनाता है, वैसे ही आराध्य भक्त की अशुद्धियाँ (पाप, दोष) दूर कर उसे पवित्र बनाते हैं।

5. पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. "अब कैसे छूटै राम रट लागी" पंक्ति का भाव है?
(क) नाम उच्चारण की कठिनाई
(ख) नाम रटकर याद करना
(ग) आराध्य का नाम जपना
(घ) मित्रों का नाम रटना

उत्तरः
(ग) आराध्य का नाम जपना
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि इस पंक्ति में रैदास कह रहे हैं कि उनके मन में राम-नाम की ऐसी लगन लग गई है कि अब वह छूटती नहीं। 'रट लागी' का अर्थ है निरंतर नाम-स्मरण की आदत पड़ जाना। यह किसी भय या कठिनाई का नहीं, बल्कि प्रेम और भक्ति में आराध्य के नाम जपने की गहरी लगन का भाव है।

2. "प्रभुजी तुम चंदन हम पानी" पंक्ति में आराध्य और भक्त का संबंध किस रुप में व्यक्त हुआ है?
(क) एकाकार और समरूप
(ख) तरल और तीव्र सुगंध
(ग) आश्रय और आश्रित
(घ) द्रव और ठोस

उत्तरः
(क) एकाकार और समरूप
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि चंदन और पानी जब मिलते हैं तो पानी चंदन की सुगंध में रंग जाता है और दोनों एकाकार हो जाते हैं — पानी में चंदन की सुगंध और चंदन में पानी का प्रसार। इसी प्रकार भक्त और आराध्य इतने घुल-मिल जाते हैं कि दोनों एकरूप और अभेद हो जाते हैं। यह संबंध 'अंग-अंग बास समानी' से और भी स्पष्ट होता है।

3. "तुम दीपक, हम बाती" से रैदास का क्या भाव है?
(क) दीपक और बाती का कोई मेल नहीं होता है।
(ख) दीपक बिना बाती भी जल सकता है।
(ग) भक्त आराध्य से अधिक महत्वपूर्ण है।
(घ) भक्त का आराध्य से मेल जीवन को आलोकित करता है।

उत्तरः
(घ) भक्त का आराध्य से मेल जीवन को आलोकित करता है।
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि जैसे दीपक और बाती का मिलन प्रकाश उत्पन्न करता है और यह ज्योति दिन-रात जलती रहती है, उसी प्रकार भक्त और आराध्य के मिलन से जीवन प्रकाशमान हो जाता है। बाती दीपक के बिना और दीपक बाती के बिना व्यर्थ है — यह परस्पर निर्भरता और एकता का प्रतीक है।

4. "जो तुम तोरौ राम मैं नहि तोरौ" पंक्ति में रैदास का क्या आशय है?
(क) परोपकारी भक्ति भाव
(ख) आराध्य से अटूट संबंध
(ग) सांसारिक मोह
(घ) कर्मकांड पर बल

उत्तरः
(ख) आराध्य से अटूट संबंध
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि रैदास कह रहे हैं कि यदि आराध्य राम भी उन्हें छोड़ दें, तो भी वे उन्हें नहीं छोड़ेंगे। वे आगे यह भी कहते हैं — "तुम सौ तोरि कवन सौं जोरौ" अर्थात् तुम्हें छोड़कर किससे संबंध जोड़ें? यह एकनिष्ठ, अटूट और निःस्वार्थ भक्ति का भाव है।

5. "तीरथ बरत न करुँ अंदेसा" पंक्ति से आप क्या समझते हैं?
(क) तीर्थ और व्रत आवश्यक नहीं हैं।
(ख) तीर्थ और व्रत सब आवश्यक हैं।
(ग) तीर्थ जाने से मुक्ति निश्चित है।
(घ) आराध्य के चरणों में सच्चा आश्रय है।

उत्तरः
(घ) आराध्य के चरणों में सच्चा आश्रय है।
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि रैदास तीर्थ और व्रत को पूरी तरह नकारते नहीं, बल्कि वे कहते हैं कि इनकी चिंता करने की जरुरत नहीं है — क्योंकि उनका एकमात्र भरोसा आराध्य के चरण-कमलों पर है। जिसे आराध्य के चरणों का सहारा मिल गया, उसके लिए बाह्य साधनों की आवश्यकता नहीं रहती।

6. सर्वव्यापक ईश्वर की अवधारणा किस पंक्ति में व्यक्त होती है?
(क) "जहँ जहँ जाओ तुम्हरी पूजा"
(ख) "जाकी जोति बरै दिन राती"
(ग) "तुम दीपक, हम बाती"
(घ) "तीरथ बरत न करुँ अंदेसा"

उत्तरः
(क) "जहँ जहँ जाओ तुम्हरी पूजा"
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि इस पंक्ति में रैदास कहते हैं कि जहाँ-जहाँ भी जाओ, वहाँ-वहाँ तुम्हारी ही पूजा होती है — और "तुम सा देव और नहिं दूजा" अर्थात् तुम्हारे समान कोई देव नहीं। यह ईश्वर की सर्वव्यापकता को सुंदर ढंग से व्यक्त करता है — वे हर स्थान में, हर रूप में विद्यमान हैं।

अर्थ और भाव

नीचे दी गई पंक्तियों का अर्थ समझाते हुए भाव स्पष्ट कीजिए।

(क) "प्रभुजी तुम घन बन, हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।"

उत्तरः

अर्थ: हे प्रभु! तुम घने बादल हो और मैं मोर हूँ। जैसे मोर बादलों को देखकर नाचता है और उन पर अपनी दृष्टि लगाए रखता है। इसी प्रकार जैसे चकोर पक्षी चंद्रमा को एकटक निहारता रहता है, उसी भाव से मेरी दृष्टि भी तुम पर लगी रहती है।

भाव: इस पंक्ति में रैदास ने भक्त और आराध्य के संबंध को दो सुंदर उपमाओं से स्पष्ट किया है। मोर के लिए बादल जैसे आनंद और जीवन का स्रोत है — वह उन्हें देखकर हर्षित और उत्साहित हो जाता है। चकोर के लिए चंद्रमा परम प्रेम का केंद्र है — वह उससे अपनी आँखें नहीं हटाता। उसी प्रकार भक्त रैदास के लिए आराध्य ही जीवन का आनंद और प्रेम का केंद्र है। भक्त की दृष्टि, चाहत और ध्यान सदा आराध्य पर ही टिका रहता है। यहाँ प्रेम, समर्पण और अनन्य भक्ति का सुंदर भाव व्यक्त हुआ है।

(ख) "तीरथ बरत न करूँ अंदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसां।"

उत्तरः

अर्थ: हे प्रभु! मुझे तीर्थयात्रा और व्रत-उपवास की चिंता नहीं है। मेरा एकमात्र आश्रय और भरोसा केवल तुम्हारे चरण-कमलों पर है।

भाव: इस पंक्ति में रैदास ने आंतरिक भक्ति को बाह्य धार्मिक कर्मकांड से श्रेष्ठ बताया है। तीर्थ और व्रत धर्म के बाहरी आचरण हैं, पर रैदास का मानना है कि यदि मन में सच्ची आस्था है और आराध्य के चरणों का सहारा है, तो इन बाह्य साधनों की आवश्यकता नहीं। 'चरन कमल' रूपक अत्यंत सुंदर है — प्रभु के चरण कमल के समान पवित्र, कोमल और शरण देने वाले हैं। यह पंक्ति निराकार भक्ति, आत्मसमर्पण और अटूट विश्वास का प्रतीक है।

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. "जो तुम तोरौ राम मैं नहि तोरौ" पंक्ति में रैदास की अपने आराध्य में अटूट निष्ठा का भाव है। इससे आप क्या समझते हैं? विस्तार से लिखिए।

उत्तरः

इस पंक्ति में रैदास की भक्ति का सर्वोच्च और अद्भुत रुप प्रकट होता है। वे अपने आराध्य राम से कह रहे हैं — "यदि तुम मुझसे संबंध तोड़ लो, तो भी मैं तुमसे संबंध नहीं तोड़ूँगा।" यह वाक्य सुनने में साधारण लगता है, पर इसका भाव अत्यंत गहरा है।

सामान्यतः भक्त अपने आराध्य से कुछ पाने की आशा में भक्ति करते हैं — यदि कोई इच्छा पूरी न हो, तो भक्त निराश हो जाते हैं। परंतु रैदास की भक्ति ऐसी नहीं है। उनकी भक्ति निःस्वार्थ है, बदले में कुछ भी पाने की आकांक्षा नहीं है। वे कहते हैं कि चाहे राम उन्हें स्वीकार करें या न करें, उनकी निष्ठा अचल रहेगी।

अगली पंक्ति में वे कहते हैं — "तुम सौ तोरि कवन सौं जोरौ" अर्थात् तुम्हें छोड़कर किससे नाता जोड़ूँ? इससे स्पष्ट होता है कि रैदास के लिए राम ही एकमात्र आश्रय हैं — संसार में कोई और है ही नहीं जिससे वे संबंध जोड़ सकें।

यह भाव हमें यह सिखाता है कि सच्ची निष्ठा वह है जो परिस्थितियों के अनुसार न बदले। जैसे चंदन-पानी, दीपक-बाती और मोती-धागे का संबंध अटूट है, वैसे ही रैदास और उनके आराध्य का संबंध भी अटूट है। यह भक्ति का आदर्श स्वरूप है — प्रेम, समर्पण और अडिग विश्वास का।

2. रैदास ने तीर्थ और व्रत के स्थान पर किस साधन को भक्ति का प्रमुख आधार माना है? आपके विचार से भक्ति के क्या आधार हो सकते हैं?

उत्तरः

रैदास ने तीर्थ और व्रत जैसे बाह्य कर्मकांडों के स्थान पर आराध्य के चरण-कमलों में अटूट आस्था और अनन्य भक्ति को प्रमुख आधार माना है। वे कहते हैं — "तुम्हरे चरन कमल एक भरोसां" अर्थात् उनका एकमात्र भरोसा प्रभु के चरणों पर है। इसके साथ ही "मन क्रम वचन कहै रैदासा" से स्पष्ट होता है कि रैदास के अनुसार मन, कर्म और वाणी — तीनों से आराध्य को स्मरण करना ही सच्ची भक्ति है। वे बाह्य आडंबर के स्थान पर आंतरिक शुद्धता और हृदय की पवित्रता को भक्ति का मूल मानते हैं।

मेरे विचार से भक्ति के आधारः

1. श्रद्धा और विश्वास — मन में आराध्य के प्रति पूर्ण विश्वास और श्रद्धा का भाव।
2. निःस्वार्थ प्रेम — बिना किसी स्वार्थ के आराध्य से प्रेम करना।
3. नाम-स्मरण — आराध्य का नाम निरंतर मन में रखना।
4. समर्पण — अपने मन, कर्म और वाणी को आराध्य को अर्पित करना।
5. सेवाभाव — प्राणीमात्र की सेवा को ईश्वर की सेवा समझना।
6. आंतरिक शुद्धता — मन को स्वच्छ और निर्मल रखना।

3. दोनों पदों में भक्त और आराध्य के संबंध को किन-किन प्रतीकों/उपमाओं से व्यक्त किया गया है? लिखिए।

उत्तरः

दोनों पदों में भक्त और आराध्य के संबंध को निम्नलिखित प्रतीकों और उपमाओं से व्यक्त किया गया है:

पहले पद में:

1. चंदन-पानी — प्रभु चंदन हैं, भक्त पानी है। जैसे पानी में चंदन घुलकर उसे सुगंधित कर देता है, वैसे ही प्रभु भक्त के जीवन को सुगंधित करते हैं। दोनों एकाकार हो जाते हैं।
2. घन बन (बादल) — मोरा (मोर) — प्रभु घने बादल हैं, भक्त मोर है। जैसे मोर बादलों को देखकर हर्षित होता और नृत्य करता है, वैसे ही भक्त आराध्य को देखकर आनंद से भर जाता है।
3. चंद (चंद्रमा) — चकोरा — जैसे चकोर चंद्रमा को एकटक निहारता रहता है, वैसे ही भक्त की दृष टि आराध्य पर टिकी रहती है।
4. दीपक — बाती — प्रभु दीपक हैं, भक्त बाती है। जैसे दीपक और बाती के मिलने से ज्योति जलती है, वैसे ही भक्त और आराध्य के मिलने से जीवन प्रकाशमय हो जाता है।
5. मोती — धागा — प्रभु मोती हैं, भक्त धागा है। जैसे मोती धागे में पिरोया जाता है और दोनों एक माला बनाते हैं, वैसे ही भक्त और आराध्य का संबंध है।
6. सोने — सुहागा — सुहागा सोने की अशुद्धियाँ दूर कर उसे शुद्ध और चमकदार बनाता है। भक्त आराध्य के संपर्क से शुद्ध और निखरा हुआ बनता है।
7. स्वामी — दासा — प्रभु स्वामी हैं, भक्त दास है। यह समर्पण और आश्रय का भाव है।

दूसरे पद में:

1. चरन कमल (कमल चरण) — आराध्य के चरण कमल के समान हैं — पवित्र और शरण देने वाले। भक्त इन चरणों पर पूर्ण आस्था रखता है।

विधा से संवाद

कविता का सौंदर्य

- "प्रभुजी तुम घन बन, हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।"

उपर्युक्त पंक्ति के रेखांकित अंश पर ध्यान दीजिए। इसमें अनुप्रास अलंकार का प्रयोग किया गया है। जिस रचना में व्यंजन वर्णों की आवृत्ति एक से अधिक बार होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

- "प्रभुजी तुम मोती, हम धागा, जैसे सोने मिलत सुहागा।"

उपर्युक्त रेखांकित अंश में उपमा अलंकार है। किसी प्रसिद्ध वस्तु की समानता के आधार पर जब किसी वस्तु या व्यक्ति के रूप, गुण, धर्म का वर्णन किया जाता है तो वहाँ उपमा अलंकार होता है।

- "तीरथ बरत न करूँ अंदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसां।"

उपर्युक्त रेखांकित अंश में रूपक अलंकार है। रूपक अलंकार वहाँ होता है जहाँ रूप और गुण की अत्यधिक समानता के कारण उपमेय में उपमान का आरोप कर अभेद स्थापित किया जाए।

अब आप अपनी पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित कविताओं में अनुप्रास, उपमा और रूपक अलंकार वाली अन्य पंक्तियों को ढूँढ़कर लिखिए।

उत्तर:

अनुप्रास अलंकार के उदाहरण (रैदास के पदों से):

1. "चितवत चंद चकोरा" — 'च' व्यंजन की आवृत्ति।
2. प्रभुजी तुम चंदन हम पानी" — 'प' की आवृत्ति।
3. "मन क्रम वचन कहै रैदासा" — 'क' की आवृत्ति।

उपमा अलंकार के उदाहरण (पाठ्यपुस्तक की अन्य कविताओं से):

1. "जैसे चितवत चंद चकोरा" — चकोर की चंद्रमा को निहारने की उपमा।
2. "जैसे सोने मिलत सुहागा" — सोने और सुहागे की उपमा।
3. "जैसे तरवर पंखि-बसेरा" (नामदेव के पद से) — वृक्ष पर पक्षियों के बसेरे की उपमा।

रूपक अलंकार के उदाहरण:

1. "तुम्हरे चरन कमल" — चरणों में कमल का आरोप, अभेद।
2. "तुम दीपक, हम बाती" — प्रभु को दीपक और भक्त को बाती बताकर अभेद स्थापित।
3. "तुम घन बन, हम मोरा" — प्रभु को बादल मानकर रूपक।

कविता की कुछ अन्य विशेषताएँ

1. नीचे दी गई सूची को ध्यान से देखिए। इस सूची में रैदास के दोनों पदों से कुछ विशेषताएँ चुनकर दी गई हैं। पदों में से चुनकर इन विशेषताओं को दर्शाती पंक्तियाँ लिखिए। उदाहरण के लिए पहली विशेषता के सामने पंक्ति दी गई है।

विशेषताएँ	उदाहरण
अनन्य भक्ति भाव	"जो तुम तोरौ राम मैं नहि तोरौ, तुम सौ तोरि कवन सौं जोरौ।"
सरल और लोकधर्मी भाषा	
उपमा और तुलना	
लयात्मकता और गेयता/ ध्वन्यात्मकता	
दृढ़ निष्ठा और आस्था	

(ख) दीपक और बाती का आपस में दूर-दूर तक कोई मेल नहीं होता।
(ग) समाज में हमेशा भक्त अपने आराध्य ईश्वर से अधिक महत्वपूर्ण है।
(घ) भक्त का आराध्य से मेल जीवन को आलोकित करता है।

उत्तरः
(घ) भक्त का आराध्य से मेल जीवन को आलोकित करता है।

16. "जोति/ज्योति" शब्द का क्या अर्थ है?
(क) रात का घना अंधकार अथवा किसी पेड़ की ठंडी छाया।
(ख) प्रकाश, रोशनी, लौ, सूर्य, नक्षत्र।
(ग) बर्फ जैसी बहुत अधिक शीतलता अथवा सुखद ठंडक।
(घ) दूर से आने वाली कोई मधुर ध्वनि अथवा गूँजती आवाज।

उत्तरः
(ख) प्रकाश, रोशनी, लौ, सूर्य, नक्षत्र।

17. रिक्त स्थान भरिए —
"प्रभुजी तुम मोती, हम धागा, जैसे सोने मिलत ________।"
(क) सोना (ख) हीरा
(ग) सुहागा (घ) चाँदी

उत्तरः
(ग) सुहागा

18. "प्रभुजी तुम मोती, हम धागा, जैसे सोने मिलत सुहागा" — इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(क) रूपक अलंकार (ख) अनुप्रास अलंकार
(ग) उपमा अलंकार (घ) यमक अलंकार

उत्तरः
(ग) उपमा अलंकार

19. पहले पद की अंतिम पंक्ति "प्रभुजी तुम स्वामी, हम दासा, ऐसी भगति करै रैदासा" में कौन-सा भाव प्रकट होता है?
(क) स्वामी और दास का विरोध
(ख) दास्य भाव की भक्ति
(ग) आराध्य का दासों पर क्रोध
(घ) भक्त की स्वतंत्रता की माँग

उत्तरः
(ख) दास्य भाव की भक्ति

20. **अभिकथन (A):** रैदास ने बाह्य आडंबरों का खंडन किया।
कारण (R): उन्होंने मन की शुद्धता और आंतरिक भक्ति को ही सच्चा धर्म माना।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है

उत्तरः
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है

21. दूसरे पद की प्रारंभिक पंक्ति "जो तुम तोरौ राम मैं नहि तोरौ" में रैदास का क्या आशय है?
(क) सांसारिक मोह
(ख) कर्मकांड पर बल
(ग) परोपकारी भक्ति भाव
(घ) आराध्य से अटूट संबंध

उत्तरः
(घ) आराध्य से अटूट संबंध

22. "तुम सौ तोरि कवन सौं जोरौ" — इस पंक्ति का भाव क्या है?
(क) तुम्हें छोड़कर संसार से जुड़ जाऊँगा
(ख) तुम्हें छोड़कर और किससे नाता जोड़ूँ?
(ग) तुम्हें छोड़ने पर भी भक्ति बनी रहेगी
(घ) तुम्हारे बिना तीर्थ पर जाऊँगा

उत्तरः
(ख) तुम्हें छोड़कर और किससे नाता जोड़ूँ?

23. "तीरथ बरत न करूँ अंदेसा" — इस पंक्ति में 'अंदेसा' शब्द का क्या अर्थ है?
(क) मन में उठने वाली कोई तीव्र इच्छा अथवा चाहत।
(ख) जीवन में मिलने वाला असीम सुख अथवा आनंद।
(ग) सोच, चिंता, शक, आशंका, दुविधा।
(घ) ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति अथवा अटूट श्रद्धा।

उत्तरः
(ग) सोच, चिंता, शक, आशंका, दुविधा।

24. "तीरथ बरत न करूँ अंदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसां" — इस पंक्ति में 'चरन कमल' में कौन-सा अलंकार है?
(क) अनुप्रास अलंकार (ख) उपमा अलंकार
(ग) रूपक अलंकार (घ) उत्प्रेक्षा अलंकार

उत्तरः
(ग) रूपक अलंकार

25. "तीरथ बरत न करूँ अंदेसा" — इस पंक्ति से रैदास का क्या भाव है?
(क) तीर्थ जाने से मुक्ति निश्चित है
(ख) तीर्थ और व्रत सब आवश्यक हैं
(ग) आराध्य के चरणों में सच्चा आश्रय है
(घ) तीर्थ और व्रत बिल्कुल व्यर्थ हैं

उत्तरः
(ग) आराध्य के चरणों में सच्चा आश्रय है

26. "जहँ जहँ जाओ तुम्हरी पूजा, तुम सा देव ओर नहिं दूजा" — इस पंक्ति में कौन-सी अवधारणा व्यक्त होती है?
(क) भगवान केवल मंदिर में हैं
(ख) भगवान की पूजा केवल तीर्थ में होती है

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

शब्दों की बात

1. पठित पदों में से संज्ञा और सर्वनाम के तीन-तीन उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए।

   उत्तरः

   संज्ञा के तीन उदाहरण:

   1. चंदन — "प्रभुजी तुम चंदन हम पानी" — (जातिवाचक संज्ञा — एक वृक्ष)
   2. दीपक — "प्रभुजी तुम दीपक, हम बाती" — (जातिवाचक संज्ञा — प्रकाश का स्रोत)
   3. तीरथ — "तीरथ बरत न करूँ अंदेसा" — (जातिवाचक संज्ञा — पुण्य क्षेत्र)

   सर्वनाम के तीन उदाहरण:

   1. तुम — "प्रभुजी तुम चंदन हम पानी" — (पुरुषवाचक सर्वनाम — मध्यम पुरुष)
   2. हम — "प्रभुजी तुम घन बन, हम मोरा" — (पुरुषवाचक सर्वनाम — उत्तम पुरुष)
   3. मैं — "जो तुम तोरौ राम मैं नहि तोरौ" — (पुरुषवाचक सर्वनाम — उत्तम पुरुष)

2. रैदास के इन दोनों पदों में बहुत से ऐसे शब्द प्रयुक्त हुए हैं जिनके स्थान पर अन्य शब्दों का प्रयोग होता है। नीचे सूची में दिए गए शब्दों को देखिए। आप या आपके आस-पास के लोग इन शब्दों के लिए किन अन्य शब्दों का प्रयोग करते हैं? लिखिए।

मोरा, चकोरा, बाती, राती, सोने, तीरथ, बरत

उत्तरः

पद में प्रयुक्त शब्द	आज प्रचलित/अन्य शब्द
मोरा	मोर, मयूर
चकोरा	चकोर (पक्षी का नाम)
बाती	बत्ती, दीपबत्ती
राती	रात, रात्रि
सोने	स्वर्ण, कंचन, हेम
तीरथ	तीर्थ, धाम, पुण्यस्थान
बरत	व्रत, उपवास

सृजन

1. कक्षा में समूह बनाकर इन दोनों पदों को गाकर/पाठ करके प्रस्तुत कीजिए।

   उत्तरः

   यह एक समूह-गतिविधि है। नीचे गायन/पाठ के लिए मार्गदर्शन दिया गया है।

   पाठन/गायन के लिए सुझाव:

   1. पहले पद को भजन की शैली में गाएँ — प्रत्येक पंक्ति में "प्रभुजी तुम..." की आवृत्ति एक लयबद्ध धुन बनाती है।
   2. दूसरे पद में "जो तुम तोरौ राम..." की पंक्ति को दृढ़ भाव और ऊँचे स्वर में प्रस्तुत करें।
   3. सभी पंक्तियों में ब्रज भाषा के उच्चारण का ध्यान रखें।
   4. पद गाते समय भाव को समझकर उसी के अनुसार स्वर का उतार-चढ़ाव रखें।

2. कल्पना कीजिए कि पद में आई उपमाओं के आधार पर भक्त और आराध्य आपस में बात कर रहे हैं। इस दृश्य को आधार बनाकर संवाद-लेखन कीजिए।

   उत्तरः

   संवाद: भक्त और प्रभु के बीच

   स्थान: एक शांत नदी का किनारा, संध्या का समय

   भक्त: प्रभु, मैं तुमसे दूर कैसे रहूँ? तुम चंदन हो और मैं पानी। जैसे पानी में चंदन घुल जाता है, वैसे ही मेरा तन-मन तुम्हारी भक्ति में रंग गया है।

   प्रभु: रैदास! तुम्हारा यह प्रेम अटूट है। पर मैं तो सबमें हूँ — जैसे दीपक जलता है और सबको प्रकाश देता है।

   भक्त: हाँ प्रभु, तुम दीपक हो और मैं बाती। बाती के बिना दीपक नहीं जल सकता और दीपक के बिना बाती का कोई अर्थ नहीं।

   प्रभु: तो फिर तुम्हें किस बात की चिंता है?

   भक्त: कोई चिंता नहीं प्रभु! तीर्थ और व्रत की भी नहीं। मेरा तो बस एक ही भरोसा है — तुम्हारे चरण-कमल। जहाँ-जहाँ भी जाता हूँ, वहाँ-वहाँ तुम्हारी ही पूजा होती दिखती है।

   प्रभु: भक्त! तुमने सच्चा मार्ग पाया है। मन, कर्म और वाणी से जो प्रेम करे, वही मुझे पाता है।

   भक्त: (हाथ जोड़कर) प्रभु, मेरी यही विनती है — चाहे तुम मुझे छोड़ दो, पर मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूँगा!

3. "जो तुम तोरौ राम मैं नहि तोरौ" पंक्ति को आधार बनाकर अटूट मित्रता पर एक लघुकथा तैयार कीजिए।

   उत्तरः

   लघुकथा: अटूट मित्रता

   रामू और श्यामू बचपन से पक्के मित्र थे। एक ही विद्यालय, एक ही गाँव, एक ही सपना।

   एक बार गाँव में अकाल पड़ा। श्यामू के पिता का व्यापार डूब गया। श्यामू को शहर जाकर मजदूरी करनी पड़ी। कुछ

धनी लड़कों ने रामू को बहलाया — "उससे मित्रता तोड़ लो, वह अब गरीब है।"
रामू ने शांत भाव से उत्तर दिया — "मित्रता धन से नहीं, मन से होती है। चाहे श्यामू संसार की दृष्टि में कितना भी नीचे गिरे, मैं उसका साथ नहीं छोड़ूँगा।"
रामू ने अपनी पढ़ाई के साथ-साथ श्यामू को चिट्ठियाँ लिखीं, उसका मनोबल बढ़ाता रहा। कुछ वर्षों में श्यामू ने शहर में मेहनत से अपना व्यापार खड़ा किया।
जब श्यामू लौटा तो उसने रामू से कहा — "दोस्त, तुमने कभी साथ नहीं छोड़ा।"
रामू मुस्कुराया — "मैंने रैदास जी की बात याद रखी — चाहे तुम तोरौ, मैं नहि तोरौ।"

झरोखे से

1. आपने रैदास के पद पढ़े। अब आप रैदास की तरह ही महाराष्ट्र के संत कवि नामदेव के आगे दिए गए दो पद पढ़िए। निर्गुण संत काव्य परंपरा के संत कवि नामदेव का जन्म 13वीं–14वीं शताब्दी में महाराष्ट्र में हुआ। अन्य संत कवियों की भाँति नामदेव ने भी बाह्य आडंबरों, सामाजिक रूढ़ियों का विरोध कर सामाजिक समरसता, प्रेम एवं निराकार भक्ति से संबंधित पदों की रचना की है।

(1)

माइ न होती बापु न होता करम न होती काग्या।
हम नहीं होते, तुम नहीं होते, कवन कहाँ ते आग्या॥
राम कोइ न किसीही करा। जैसे तरवर पंखि-बसेरा॥
चंद न होता, सूर न होता, पानी पवन मिलाया।
सास्त्र न होता वेद न होता, करमु कहाँ ते आग्या॥
खेचरि भूचरि तुलसी माला। गुरप्रसादी पाया।
नामा प्रणवै परम तत कूं। सतगुरु मोहि लखाया॥

(2)

मोहि लागति तालाबेली।
बछरा बिनु गाइ अकेली॥

पानी बिनु ज्यूं मीन तलफै।
ऐसे रामनाम बिनु नामा कलपै॥

जैसे गाइ का बाछा छूटला।
धन चौकता मावन छूटला॥

नामदेउ नारायन पाया।
गुरु भेटत ही अलख लखाया॥

जैसे विषे हेतु परनारी।
ऐसे नामे प्रीति मुरारी॥

जैसे ताप ते निरमल घामा।
तैसे रामनाम बिनु बापुरो नामा॥

अब अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए और बताइए कि रैदास तथा नामदेव के पदों में क्या-क्या अंतर है और क्या-क्या समानताएँ हैं?

उत्तरः
रैदास और नामदेव के पदों में समानताएँ:
1. **निराकार भक्तिः** दोनों ने निराकार ईश्वर की भक्ति पर बल दिया है — रैदास ने "राम" और नामदेव ने "राम नाम" और "नारायन" को आराध्य माना।
2. **आंतरिक भक्ति का महत्वः** दोनों ने बाह्य आडंबरों की अपेक्षा हृदय की सच्ची भक्ति को श्रेष्ठ माना।
3. **उपमा शैलीः** दोनों ने भक्ति भाव व्यक्त करने के लिए लोक-जीवन से ली गई उपमाओं का प्रयोग किया — नामदेव ने गाय-बछड़े, मीन-पानी जैसी उपमाएँ दी हैं; रैदास ने चंदन-पानी, मोर-बादल जैसी।
4. **सरल भाषाः** दोनों ने सामान्य जन की बोलचाल की भाषा में पद लिखे।
5. **सामाजिक समरसताः** दोनों संत कवि समाज में समानता और प्रेम का संदेश देते हैं।
6. **भक्त का आराध्य पर निर्भरता का भावः** नामदेव ने "मोहि लागति तालाबेली" (मुझे आकुलता है) और रैदास ने "अब कैसे छूटै राम रट लागी" — दोनों में भक्त की व्याकुलता और आराध्य पर निर्भरता समान है।

रैदास और नामदेव के पदों में अंतरः
1. **व्याकुलता का स्वरूपः** नामदेव का दूसरा पद अधिक भावनात्मक और तड़प से भरा है — "बछरा बिन गाइ अकेली", "पानी बिन ज्यूँ मीन तलफैं" — जबकि रैदास के पद में अधिक शांत, दृढ़ और आश्वस्त भाव है।
2. **गुरु का महत्वः** नामदेव के पद में गुरु की भूमिका विशेष रूप से उल्लिखित है — "गुर भेटत ही अलख लखाया" और "सतगुर मोहि लखाया" — जबकि रैदास के पदों में गुरु का उल्लेख नहीं है।
3. **दार्शनिक दृष्टिः** नामदेव के पहले पद में "माइ न होती बापु न होता" — यह सृष्टि की उत्पत्ति और माया का दार्शनिक विचार है जो रैदास के पदों में नहीं है।
4. **भाषा का अंतरः** नामदेव के पदों में महाराष्ट्री और हिंदी का मिश्रण अधिक स्पष्ट है, जबकि रैदास की भाषा में ब्रज और खड़ी बोली का मिश्रण है।

6. अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'रैदास के पद' के रचयिता कौन हैं?
(क) कबीरदास (ख) सूरदास
(ग) रैदास (संत रविदास) (घ) तुलसीदास

उत्तरः
(ग) रैदास (संत रविदास)

2. रैदास का जन्म किस नगर में हुआ था?
(क) मथुरा (ख) प्रयाग
(ग) अयोध्या (घ) काशी (वाराणसी)

उत्तरः
(घ) काशी (वाराणसी)

3. रैदास का जीवन-काल किस शताब्दी में माना जाता है?
(क) 13वीं शताब्दी (ख) 14वीं शताब्दी
(ग) 15वीं शताब्दी (घ) 16वीं शताब्दी

उत्तरः
(ग) 15वीं शताब्दी

4. रैदास किस श्रेणी के कवियों में गिने जाते हैं?
(क) वीर काव्य (ख) संत कवि
(ग) श्रृंगार काव्य (घ) रीतिकाल कवि

उत्तरः
(ख) संत कवि

5. रैदास ने मन की शुद्धता और आंतरिक भक्ति को क्या माना है?
(क) ईश्वर प्राप्ति का एकमात्र साधन
(ख) सच्चा धर्म
(ग) तीर्थ यात्रा का विकल्प
(घ) समाज सेवा का आधार

उत्तरः
(ख) सच्चा धर्म

6. रैदास ने अपनी काव्य-रचनाओं में मुख्यतः किस भाषा का प्रयोग किया?
(क) अवधी भाषा (ख) संस्कृत भाषा
(ग) खड़ी बोली (घ) ब्रजभाषा

उत्तरः
(घ) ब्रजभाषा

7. रैदास की भक्ति रचनाएँ किस ग्रंथ में शामिल हैं?
(क) रामचरितमानस
(ख) बीजक
(ग) आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी
(घ) सूरसागर

उत्तरः
(ग) आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी

8. रैदास की रचनाएँ किस संग्रह में संकलित हैं?
(क) साखी संग्रह (ख) रैदास बानी
(ग) पद संग्रह (घ) रैदास ग्रंथावली

उत्तरः
(ख) रैदास बानी

9. पहले पद की प्रथम पंक्ति "अब कैसे छूटै राम रट लागी" में 'राम रट' से क्या तात्पर्य है?
(क) राम का नाम रटकर याद करना
(ख) मित्रों का नाम याद करना
(ग) आराध्य का नाम निरंतर जपना
(घ) राम शब्द का उच्चारण करना

उत्तरः
(ग) आराध्य का नाम निरंतर जपना

10. "अब कैसे छूटै राम रट लागी" — इस पंक्ति का मुख्य भाव क्या है?
(क) नाम उच्चारण की कठिनाई
(ख) राम का नाम रटकर याद करना
(ग) आराध्य की भक्ति से अब पीछे हटना संभव नहीं
(घ) मित्रों का नाम रटना

उत्तरः
(ग) आराध्य की भक्ति से अब पीछे हटना संभव नहीं

11. रिक्त स्थान भरिए —
"प्रभुजी तुम चंदन हम ________, जाकी अंग-अंग बास समानी।"
(क) सुगंध (ख) फूल
(ग) धरती (घ) पानी

उत्तरः
(घ) पानी

12. "प्रभुजी तुम चंदन हम पानी" — इस पंक्ति में भक्त और आराध्य का संबंध किस रुप में व्यक्त हुआ है?
(क) एकाकार और समरुप (ख) तरल और तीव्र सुगंध
(ग) आश्रय और आश्रित (घ) द्रव और ठोस

उत्तरः
(क) एकाकार और समरुप

13. "प्रभुजी तुम घन बन, हम मोरा" — यहाँ 'घन' शब्द का क्या अर्थ है?
(क) सूर्य (ख) अंधकार
(ग) बादल (घ) समूह

उत्तरः
(ग) बादल

14. "जैसे चितवत चंद चकोरा" — यहाँ चकोर पक्षी का स्वभाव भक्त के किस भाव का प्रतीक है?
(क) रात में केवल ऊंचे आकाश को देखते रहने का।
(ख) बादलों से बरसती बारिश की प्रतीक्षा करने का।
(ग) आराध्य को एकटक निहारने का अनन्य प्रेम।
(घ) अंधेरे में जलते दीपक की रोशनी चाहने का।

उत्तरः
(ग) आराध्य को एकटक निहारने का अनन्य प्रेम।

15. "प्रभुजी तुम दीपक, हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती" — इस पंक्ति का क्या भाव है?
(क) मिट्टी का दीपक बिना किसी रुई की बाती के भी जल सकता है।

15. सुहागा – एक प्राकृतिक खनिज जिसके प्रयोग से सोने की अशुद्धियाँ दूर हो जाती हैं और उसकी चमक बढ़ जाती है।
16. दासा – सेवक, दास या नौकर।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'पद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध संत कवि रैदास (संत रविदास) हैं। इसमें चंदन-पानी और दीपक-बाती जैसे उदाहरणों द्वारा भक्त और भगवान के कभी न टूटने वाले अटूट संबंध तथा अनन्य भक्ति भाव को दर्शाया गया है।

व्याख्या

प्रथम पद में संत रैदास जी ने अपने आराध्य (ईश्वर) के प्रति अपनी अनन्य भक्ति और गहरे समर्पण भाव को प्रकट किया है। कवि कहते हैं कि हे प्रभु! अब मेरे मन में जो आपके नाम की रट (लगन) लग गई है, वह किसी भी तरह छूट नहीं सकती। उन्होंने भक्त और भगवान के अटूट संबंध को समझाने के लिए कई सुंदर और व्यावहारिक उपमाओं का सहारा लिया है।

कवि कहते हैं कि प्रभु यदि चंदन हैं, तो भक्त पानी के समान है। जिस प्रकार चंदन पानी में मिलकर अपनी सुगंध बिखेरता है, उसी प्रकार ईश्वर की भक्ति भक्त के अंग-अंग में समा गई है। आगे वे कहते हैं कि हे भगवान! आप आसमान में छाए काले बादलों (घन) की तरह हैं और मैं जंगल का मोर हूँ, जो आपको देखकर खुशी से नाच उठता है। यह संबंध ठीक वैसा ही है जैसे चकोर पक्षी पूरी रात बिना पलक झपकाए केवल चंद्रमा को निहारता रहता है।

कवि स्वयं को दीये की बत्ती और ईश्वर को दीपक मानते हैं, जिसकी ज्ञान रूपी ज्योति दिन-रात जलती रहती है और जीवन को आलोकित करती है। वे ईश्वर को मोती और स्वयं को वह धागा बताते हैं जिसमें मोती पिरोए जाते हैं। यह मिलन वैसा ही पवित्र है जैसे सोने में सुहागा मिलने से उसकी शुद्धता और चमक बढ़ जाती है। अंत में, रैदास जी कहते हैं कि हे प्रभु! आप मेरे स्वामी हैं और मैं आपका तुच्छ दास (सेवक) हूँ, और मैं इसी दास्य-भाव से आपकी भक्ति करता हूँ।

काव्यांश 2

जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ, तुम सौ तोरि कवन सौं जोरौ।
तीरथ बरत न करूँ अंदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसां।
जहँ जहँ जाओ तुम्हरी पूजा, तुम सा देव ओर नहिं दूजा।
मैं अपनो मन हरि से जोरौ, हरि सो जोरि सबन सो तोरों।
सबही पहर तुम्हारी आसा, मन क्रम वचन कहै रैदासा।

कठिन-शब्दार्थ

1. तोरौ – तोड़ना या संबंध विच्छेद करना।
2. कवन – किस, किससे।
3. जोरौ – जोड़ना या संबंध बनाना।
4. तीरथ – पुण्य क्षेत्र, वह पुण्य स्थान जहाँ विशेष धर्म के अनुयायी पूजा, स्नान आदि के लिए जाते हों, जैसे- काशी, प्रयाग, मथुरा आदि।
5. बरत – व्रत, उपवास।
6. अंदेसा – सोच, चिंता, शक, आशंका, खतरा, हानि, दुविधा।
7. चरन कमल – कमल के समान कोमल और पवित्र चरण (पैर)।
8. भरोसां – विश्वास, सहारा या आसरा।
9. दूजा – दूसरा या कोई और।
10. हरि – भगवान, विष्णु या कृष्ण।
11. सबन – अन्य सभी, सांसारिक लोग या सांसारिक संबंध।
12. पहर – प्रहर (समय का एक भाग, जैसे दिन या रात का चौथा हिस्सा)।
13. आसा – आशा, उम्मीद या भरोसा।
14. क्रम – कर्म, कार्य।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'पद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध संत कवि रैदास (संत रविदास) हैं। इसमें यह दर्शाया गया है कि एक सच्चा भक्त तीर्थ और व्रत जैसे बाहरी कर्मकांडों को छोड़ सकता है, लेकिन प्रभु-चरणों के सच्चे आश्रय और अपनी अडिग निष्ठा को कभी नहीं छोड़ सकता।

व्याख्या

दूसरे पद में भी संत रैदास जी ने भगवान के साथ अपने कभी न टूटने वाले रिश्ते को बड़ी ही दृढ़ता और अडिग विश्वास के साथ व्यक्त किया है। रैदास जी कहते हैं कि हे राम! यदि आप मुझसे अपना नाता तोड़ना भी चाहें, तो भी मैं आपसे अपना नाता कभी नहीं तोड़ूँगा। क्योंकि यदि मैं आपसे अपना संबंध तोड़ लूं, तो भला संसार में ऐसा दूसरा कौन है जिससे मैं अपना रिश्ता जोड़ सकूँ? अर्थात् मेरा आपके सिवा कोई और सहारा नहीं है।

कवि बाह्य आडंबरों जैसे तीर्थ यात्राओं और कठिन व्रतों का खंडन करते हुए कहते हैं कि मुझे इन कर्मकांडों को करने की कोई इच्छा या चिंता नहीं है। मुझे तो केवल आपके कोमल चरण-कमलों पर ही पूरा भरोसा और विश्वास है। वे ईश्वर की सर्वव्यापकता को स्वीकार करते हुए कहते हैं कि मैं जहाँ-जहाँ भी जाता हूँ, मुझे सर्वत्र आपकी ही छवि दिखती है और वहीं मेरी पूजा संपन्न हो जाती है, क्योंकि आपके जैसा दयालु और बड़ा कोई दूसरा देव इस पूरे संसार में नहीं है।

आगे वे कहते हैं कि मैंने अपना यह चंचल मन पूरी तरह से हरि (ईश्वर) से जोड़ लिया है, और भगवान से नाता जोड़ने के बाद मैंने संसार के सभी झूठे और मोह-माया वाले संबंधों को तोड़ दिया है। अंत में रैदास जी कहते हैं कि मुझे दिन-रात, आठों पहर केवल आपकी ही आशा और लगन रहती है। मैं मन, कर्म और अपने वचनों से पूरी तरह से केवल आपका ही हूँ और आपकी ही भक्ति में लीन रहता हूँ।

(ग) सर्वव्यापक ईश्वर की अवधारणा
(घ) भगवान केवल भक्तों के हृदय में हैं

उत्तरः
(ग) सर्वव्यापक ईश्वर की अवधारणा

27. निम्नलिखित में से कौन-से कथन रैदास के दोनों पदों में प्रयुक्त उपमाओं के बारे में सही हैं?

I. प्रभु चंदन हैं, भक्त पानी — दोनों मिलकर एकाकार हो जाते हैं।

II. प्रभु घन बन हैं, भक्त मोर — मोर बादल को देखकर नाचता है।

III. प्रभु दीपक हैं, भक्त बाती — दोनों के मेल से ज्योति जलती रहती है।

(क) केवल I और II सही हैं
(ख) केवल II और III सही हैं
(ग) केवल I और III सही हैं
(घ) तीनों कथन सही हैं

उत्तरः
(घ) तीनों कथन सही हैं

28. "मैं अपनो मन हरि से जोरौ, हरि सो जोरि सबन सो तोरों" — इस पंक्ति में रैदास क्या कहते हैं?
(क) हरि से मन जोड़कर सबसे विरोध करना चाहते हैं
(ख) हरि और संसार दोनों को साथ रखना चाहते हैं
(ग) हरि को छोड़कर सब से जुड़ना चाहते हैं
(घ) हरि से मन जोड़कर सांसारिक मोह छोड़ना चाहते हैं

उत्तरः
(घ) हरि से मन जोड़कर सांसारिक मोह छोड़ना चाहते हैं

29. रिक्त स्थान भरिए —
"सबही पहर तुम्हारी आसा, मन क्रम वचन कहै _______।"
(क) कबीरा
(ख) तुलसीदासा
(ग) रैदासा
(घ) नामदेवा

उत्तरः
(ग) रैदासा

30. "सबही पहर तुम्हारी आसा, मन क्रम वचन कहै रैदासा" — इस पंक्ति में 'मन क्रम वचन' से क्या तात्पर्य है?
(क) मन से सोचना, हाथ से कर्म करना और मुख से बोलना।
(ख) केवल शांत बैठकर पवित्र मन से प्रभु की भक्ति करना।
(ग) केवल सुंदर वचनों से प्रतिदिन प्रभु की स्तुति करना।
(घ) इन तीनों सांसारिक क्रियाओं को हमेशा अलग रखना।

उत्तरः
(क) मन से सोचना, हाथ से कर्म करना और मुख से बोलना।

31. **अभिकथन (A):** दूसरे पद में रैदास तीर्थ और व्रत के प्रति निश्चिंत हैं।
कारण (R): रैदास का एकमात्र भरोसा प्रभु के चरण कमल हैं जो उनके लिए सर्वोच्च आश्रय हैं।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है

उत्तरः
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है

32. "चंदन" शब्द का क्या अर्थ है?
(क) नदी के किनारे मिलने वाली एक विशेष प्रकार की चिकनी मिट्टी।
(ख) एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसकी लकड़ी एक प्रधान गंधद्रव्य है।
(ग) पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाने वाला एक फल जो मीठा होता है।
(घ) केवल रात के समय खिलने वाला एक पुष्प जो सुगंधित होता है।

उत्तरः
(ख) एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसकी लकड़ी एक प्रधान गंधद्रव्य है।

33. "बास" शब्द का क्या अर्थ है?
(क) मनुष्य द्वारा धारण किए जाने वाले वस्त्र और आभूषण।
(ख) गंध, निवास, वासस्थान, वस्त्र।
(ग) बहुमूल्य धातुओं में गिने जाने वाले सोना और चाँदी।
(घ) प्रकृति में दिखाई देने वाले तीव्र प्रकाश और छाया।

उत्तरः
(ख) गंध, निवास, वासस्थान, वस्त्र।

34. "चकोरा/चकोर" पक्षी के बारे में क्या कहा जाता है?
(क) यह पक्षी सूर्य का परम प्रेमी माना जाता है
(ख) यह पक्षी वर्षा में झूमकर नाचता है
(ग) यह पक्षी चंद्रमा का परम प्रेमी माना जाता है
(घ) यह पक्षी दीपक के पास आता है और जलकर मर जाता है

उत्तरः
(ग) यह पक्षी चंद्रमा का परम प्रेमी माना जाता है

35. "तीरथ/तीर्थ" शब्द का क्या अर्थ है?
(क) विशेष तिथियों पर रखा जाने वाला एक कठिन धार्मिक व्रत
(ख) पुण्य क्षेत्र जहाँ धर्म के अनुयायी पूजा, स्नान आदि के लिए जाते हों
(ग) समाज में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाने वाला एक पारंपरिक उत्सव

10. हितु – हितैषी, मित्र।
11. खुटानी – दुष्टता, खोट, शामत या बुरा समय आना।
12. बहोरि – फिर, दोबारा, अनंतर।
13. नावा – झुकाया (सिर नवाया)।
14. सीय – सीता जी।
15. आसिष – आशीर्वाद।
16. हरषानीं – हर्षित हुईं, प्रसन्न हुईं।
17. सयानीं – चतुर, समझदार स्त्रियाँ।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध संत कवि गोस्वामी तुलसीदास हैं। इसमें सीता स्वयंवर की सभा में परशुराम जी के भयंकर रूप में आगमन और वहाँ उपस्थित राजाओं व जनक के भय और आदर को दर्शाया गया है।

व्याख्या

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि स्वयंवर सभा में जैसे ही परशुराम जी का अत्यंत भयानक और विकराल भेष दिखाई दिया, वैसे ही वहाँ उपस्थित सभी राजा डर के मारे व्याकुल होकर खड़े हो गए। वे सभी राजा अत्यधिक भयभीत होकर अपने पिता के नाम के साथ अपना-अपने नाम ले-लेकर परशुराम जी को साष्टांग (दंडवत) प्रणाम करने लगे ताकि मुनि के कोप से बच सकें। स्वभाव से क्रोधी परशुराम जी जिस किसी राजा को अपना मित्र या हितैषी समझकर सामान्य रूप से भी देखते थे, वह राजा डर के मारे यही समझता था कि मानो आज उसकी शामत (बुरा समय) ही आ गई हो।

इसके बाद राजा जनक आगे आए और उन्होंने मुनि के चरणों में अपना सिर झुकाया, फिर अपनी पुत्री सीता को बुलाकर उनसे भी मुनि को प्रणाम करवाया। परशुराम जी ने सीता को आशीर्वाद दिया, जिसे देखकर उनकी सखियाँ अत्यंत प्रसन्न हो गईं और चतुर स्त्रियाँ सीता को आदरपूर्वक सखियों के समाज में वापस ले गईं।

काव्यांश 2

बिस्वामित्रु मिले पुनि आई। पद सरोज मेले दोउ भाई।
रामु लखनु दसरथ के ढोटा। दीन्हि असीस देखि भल जोटा।।
रामहि चितइ रहे थकि लोचन। रूप अपार मार मद मोचन।।
बहुरि बिलोकि बिदेह सन कहहु काह अति भीर।
पूछत जानि अजान जिमि ब्यापेउ कोपु सरीर।।

कठिन-शब्दार्थ

1. पद सरोज – कमल के समान कोमल चरण (पैर)।
2. दोउ – दोनों।
3. ढोटा – पुत्र, बेटा, बालक।
4. असीस – आशीर्वाद।
5. जोटा – जोड़ा, जोड़ी।
6. चितइ – देखकर।
7. लोचन – आँख, नेत्र, देखने की क्रिया।
8. रूप अपार मार मद मोचन – कामदेव के भी अहंकार को चूर करने वाला सुंदर रूप।
9. बहुरि – फिर।
10. बिलोकि – देखा, अवलोकन किया।
11. बिदेह – राजा जनक (देह-अभिमान से रहित)।
12. भीर – भीड़।
13. ब्यापेउ – व्याप्त हो गया, फैल गया।
14. कोपु – कोप, अत्यंत क्रोध।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध संत कवि गोस्वामी तुलसीदास हैं। इसमें मुनि विश्वामित्र द्वारा राम-लक्ष्मण का परशुराम से परिचय कराने तथा श्री राम के अद्भुत सौंदर्य को देखकर परशुराम द्वारा जनक से क्रोधपूर्वक भीड़ का कारण पूछने को दर्शाया गया है।

व्याख्या

तुलसीदास जी कहते हैं कि इसके बाद मुनि विश्वामित्र आगे बढ़कर परशुराम जी से मिले और उन्होंने श्री राम और लक्ष्मण दोनों भाइयों को उनके कमल रूपी चरणों में प्रणाम करवाया। राजा दशरथ के इन दोनों बालकों को देखकर और उनकी सुंदर जोड़ी को निहारकर परशुराम जी ने उन्हें हृदय से आशीर्वाद दिया।

श्री राम के असीम सौंदर्य को देखकर क्रोधी परशुराम जी की आँखें भी थमी की थमी रह गईं, क्योंकि राम का वह रूप कामदेव के भी रूप-अभिमान को चूर करने वाला था। थोड़ी देर देखने के बाद परशुराम जी ने राजा जनक की ओर देखा और सब कुछ जानते हुए भी अनजान बनते हुए भारी क्रोध के साथ पूछा—"हे जनक! मुझे बताओ कि यहाँ राजाओं की यह भारी भीड़ किस कारण से इकट्ठा हुई है?" ऐसा पूछते समय उनके पूरे शरीर में भयंकर क्रोध व्याप्त हो चुका था।

काव्यांश 3

समाचार कहि जनक सुनाए। जेहि कारन महीप सब आए।
सुनत बचन फिरि अनत निहारे। देखे चापखंड महि डारे।।
अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा॥
बेगि देखाउ मूढ़ न त आजू। उलटउँ महि जहँ लहि तव राजू।।
अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं।।॥

कठिन-शब्दार्थ

1. महीप – राजा, पृथ्वी का पालन करने वाला।
2. अनत – अन्यत्र, और कहीं।
3. निहारे – देखा।
4. चापखंड – धनुष का टुकड़ा, धनुष का भाग।
5. महि – पृथ्वी, धरती।

कि जैसे सुहागा सोने को निखारता है, वैसे ही प्रभु की भक्ति भक्त को परिष्कृत करती है।

8. प्रथम पद के अंत में रैदास ने स्वयं को क्या कहा है?

उत्तरः
प्रथम पद के अंत में रैदास ने स्वयं को प्रभु का 'दासा' (सेवक) कहा है। वे कहते हैं — 'प्रभुजी तुम स्वामी, हम दासा, ऐसी भगति करै रैदासा।' यह उनकी विनम्र समर्पण-भावना को दर्शाता है।

9. द्वितीय पद का प्रारंभिक भाव क्या है?

उत्तरः
द्वितीय पद का प्रारंभिक भाव है — यदि आराध्य भक्त का साथ छोड़ दें, तो भक्त उनका साथ नहीं छोड़ेगा। भक्त की निष्ठा इतनी अटल है कि वह प्रभु के बिना किसी और से संबंध नहीं जोड़ सकता।

10. 'तीरथ बरत न करूँ अंदेसा' — इस पंक्ति में रैदास ने किस बात की ओर संकेत किया है?

उत्तरः
रैदास ने कहा है कि उन्हें तीर्थ और व्रत की चिंता नहीं है क्योंकि उन्हें केवल प्रभु के चरण-कमलों का एकमात्र आसरा है। बाह्य कर्मकांड से अधिक महत्व आंतरिक भक्ति को दिया गया है।

11. 'जहँ जहँ जाओ तुम्हरी पूजा' — इस पंक्ति में ईश्वर की कौन-सी अवधारणा प्रकट होती है?

उत्तरः
इस पंक्ति में ईश्वर की सर्वव्यापकता की अवधारणा प्रकट होती है। रैदास कहते हैं कि प्रभु हर जगह हैं — जहाँ भी जाओ, वहाँ उनकी पूजा है। उनके जैसा कोई दूसरा देव नहीं है।

12. रैदास ने 'मन क्रम वचन' कहकर भक्ति के किन तीन माध्यमों की बात की?

उत्तरः
रैदास ने 'मन क्रम वचन' में भक्ति के तीन माध्यम बताए — मन से (भावना से), कर्म से (कार्य से) और वचन से (वाणी से)। इन तीनों से प्रभु की आराधना करना ही सच्ची भक्ति है।

13. रैदास के भक्ति-पदों का संकलन किस ग्रंथ में है और वे किस धार्मिक ग्रंथ में भी शामिल हैं?

उत्तरः
रैदास के पदों का संकलन 'रैदास बानी' में है। इनकी भक्ति रचनाएँ 'आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' में भी शामिल हैं, जो समानता, प्रेम और भाईचारे का संदेश देती हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रथम पद में रैदास ने भक्त और आराध्य के संबंध को जिन प्रतीकों द्वारा व्यक्त किया है, उनकी सूची बनाइए और किसी एक का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः
प्रथम पद में रैदास ने निम्न प्रतीक प्रयोग किए हैं: (1) चंदन-पानी, (2) घन बन (बादल)-मोर, (3) चंद-चकोर, (4) दीपक-बाती, (5) मोती-धागा और (6) स्वामी-दास। उदाहरण: 'दीपक-बाती' में भाव है कि जैसे बाती दीपक की ज्योति को दिन-रात जलाए रखती है, उसी प्रकार भक्त अपने आराध्य की सेवा में निरंतर समर्पित रहता है। भक्त का अस्तित्व आराध्य से ही पूर्ण होता है।

2. 'अब कैसे छूटै राम रट लागी' — इस टेक के आधार पर प्रथम पद का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः
इस टेक में रैदास ने प्रभु-नाम की ऐसी रट (लगन) का वर्णन किया है जो एक बार लग जाए तो छूटती नहीं। 'अब कैसे छूटै' में भक्त की यह स वीकारोक्ति है कि राम की भक्ति उनके जीवन का अविभाज्य अंग बन चुकी है। पूरा पद इसी एकनिष्ठ भक्ति को विभिन्न प्रकृति-प्रतीकों द्वारा सिद्ध करता है — जैसे चंदन-पानी, मोर-बादल, बाती-दीपक आदि — हर प्रतीक अटूट संबंध का प्रमाण है।

3. 'प्रभुजी तुम घन बन, हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा' — इन दो उपमाओं में क्या समानता है?

उत्तरः
दोनों उपमाओं में एक पक्ष का दूसरे के प्रति तीव्र, स्वाभाविक और अनन्य प्रेम व लालसा का भाव है। मोर बादल देखकर आनंदित होकर नाचता है और उसकी प्रतीक्षा में व्याकुल रहता है। चकोर पक्षी चंद्रमा का परम प्रेमी माना जाता है — वह सदा उसी की ओर एकटक देखता रहता है। दोनों में भक्त की प्रभु के प्रति वैसी ही तड़प और एकनिष्ठ दृष्टि व्यक्त है।

4. द्वितीय पद की पंक्ति 'जो तुम तोरौ राम मैं नहि तोरौ, तुम सौ तोरि कवन सौं जोरौ' में भक्त की किस मनोदशा का वर्णन है?

उत्तरः
इस पंक्ति में भक्त की अटल निष्ठा और एकाश्रयता का वर्णन है। रैदास कहते हैं — यदि प्रभु स्वयं भी उनसे संबंध तोड़ लें, तो भी वे उनसे नहीं तोड़ेंगे; और यदि प्रभु से ही नाता तोड़ लिया तो किससे जोड़ेंगे? इस प्रश्न में भक्त की यह स्वीकारोक्ति है कि प्रभु के सिवा उनका कोई दूसरा आश्रय नहीं है। यह भाव भक्ति की चरम परिणति है।

5. रैदास ने बाह्य आडंबरों का खंडन किस प्रकार किया? दोनों पदों के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(घ) निर्धन अथवा जरूरतमंद लोगों को दिया जाने वाला एक विशेष दान

उत्तरः
(ख) पुण्य क्षेत्र जहाँ धर्म के अनुयायी पूजा, स्नान आदि के लिए जाते हों

36. "प्रभुजी तुम घन बन, हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा" — इस पंक्ति में "चितवत चंद चकोरा" में कौन-सा अलंकार है?
(क) रूपक अलंकार (ख) उपमा अलंकार
(ग) अनुप्रास अलंकार (घ) यमक अलंकार

उत्तरः
(ग) अनुप्रास अलंकार

37. निम्नलिखित में से कौन-से कथन रैदास के दोनों पदों के मुख्य भाव के बारे में सही हैं?

I. पहले पद में भक्त और आराध्य के अटूट संबंध को विभिन्न उपमाओं द्वारा दर्शाया गया है।

II. दूसरे पद में रैदास की अडिग भक्ति और प्रभु के प्रति निष्ठा का भाव व्यक्त है।

III. दोनों पदों में बाह्य कर्मकांड और तीर्थ यात्रा को भक्ति से श्रेष्ठ बताया गया है।

(क) केवल I और II सही हैं (ख) केवल II और III सही हैं
(ग) केवल I और III सही हैं (घ) तीनों कथन सही हैं

उत्तरः
(क) केवल I और II सही हैं

38. रैदास के पहले पद में कुल कितनी उपमाएँ प्रयोग करके भक्त और आराध्य के संबंध को दर्शाया गया?
(क) तीन (ख) चार
(ग) छह (घ) पाँच

उत्तरः
(घ) पाँच

39. रैदास की भाषा में किन भाषाओं का मिश्रण पाया जाता है?
(क) अवधी, हिंदी, तमिल, ब्रजभाषा और संस्कृत
(ख) अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली और उर्दू-फारसी
(ग) अरबी, मराठी, अवधी, खड़ी बोली और फारसी
(घ) केवल ब्रजभाषा और संस्कृत

उत्तरः
(ख) अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली और उर्दू-फारसी

40. रैदास के पदों में आज भी कौन-से संदेश मिलते हैं?
(क) केवल पूजा-अर्चना करने का संदेश
(ख) केवल तीर्थ यात्रा करने का महत्व
(ग) समानता, प्रेम और भाईचारे का संदेश
(घ) केवल जाति-व्यवस्था के समर्थन का संदेश

उत्तरः
(ग) समानता, प्रेम और भाईचारे का संदेश

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रैदास का जन्म कहाँ और किस शताब्दी में हुआ था?

उत्तरः
रैदास का जन्म काशी (वाराणसी) में हुआ था। उनका जीवन-काल 15वीं शताब्दी (सन् 1388–1518) माना जाता है। वे संत कवियों में गिने जाते हैं।

2. रैदास ने किस भाषा में अपनी काव्य-रचनाएँ लिखी हैं?

उत्तरः
रैदास ने सरल, व्यावहारिक ब्रजभाषा में काव्य-रचनाएँ लिखी हैं। इनमें अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली और उर्दू-फारसी के शब्दों का भी मिश्रण है।

3. रैदास के अनुसार सच्चा धर्म क्या है?

उत्तरः
रैदास ने बाह्य आडंबरों का खंडन कर मन की शुद्धता और आंतरिक भक्ति को ही सच्चा धर्म माना है। उनके अनुसार आत्मिक शुद्धि ही वास्तविक पूजा है।

4. प्रथम पद में भक्त और प्रभु के बीच चंदन-पानी का प्रतीक किस भाव को व्यक्त करता है?

उत्तरः
चंदन-पानी का प्रतीक यह व्यक्त करता है कि जैसे चंदन की सुगंध पानी में पूरी तरह समा जाती है, वैसे ही भक्त का प्रभु की भक्ति में एकाकार होना उसके रग-रग में बस जाता है।

5. 'प्रभुजी तुम घन बन, हम मोरा' में किस पक्षी का उल्लेख है और उसकी क्या विशेषता है?

उत्तरः
इस पंक्ति में मोर का उल्लेख है। मोर बादल देखकर प्रसन्न होकर नाचता है। यहाँ भक्त को मोर और प्रभु को बादल (घन) बताकर भक्त की आराध्य के प्रति व्याकुल लालसा प्रकट की गई है।

6. 'प्रभुजी तुम दीपक, हम बाती' — इस पंक्ति में 'जाकी जोति बरै दिन राती' का क्या भाव है?

उत्तरः
इस पंक्ति का भाव है कि जैसे बाती दीपक की ज्योति के लिए दिन-रात जलती रहती है, वैसे ही भक्त अपने आराध्य की भक्ति में सदा समर्पित रहता है — उसका यह संबंध निरंतर और अटूट है।

7. रैदास ने 'तुम मोती, हम धागा' के प्रतीक में 'सुहागा' का उल्लेख क्यों किया?

उत्तरः
सुहागा एक प्राकृतिक खनिज है जो सोने की अशुद्धियाँ दूर कर उसे और चमकदार बनाता है। यहाँ रैदास ने यह बताया

है। तीसरी विशेषता — ईश्वर की सर्वव्यापकता: 'जहँ जहँ जाओ तुम्हरी पूजा' — प्रभु सर्वत्र हैं, उनके समान कोई दूसरा देव नहीं। चौथी विशेषता — समग्र समर्पण: 'मन क्रम वचन कहै रैदासा' — मन, कर्म और वाणी तीनों से प्रभु को समर्पित करना। पाँचवीं विशेषता — एकाश्रयता: 'मैं अपनो मन हरि से जोरौ, हरि सो जोरि सबन सो तोरौं' — प्रभु से जुड़ने के बाद संसार की आसक्तियाँ स्वतः टूट जाती हैं। इस प्रकार रैदास की भक्ति बाह्य आडंबर-रहित, आंतरिक, अटल और सर्वसमर्पित भक्ति है।

3. 'रैदास के पद सरल भाषा में गहरे अर्थ व्यक्त करते हैं।' — दोनों पदों के आधार पर इस कथन की सत्यता सिद्ध कीजिए।

उत्तरः
रैदास के दोनों पदों में भाषा की सरलता और भाव की गहराई का अद्भुत समन्वय है। भाषागत सरलता की दृष्टि से — रैदास ने ब्रजभाषा में अवधी, राजस्थानी और उर्दू के शब्द मिलाकर एक ऐसी भाषा रची जो जनसामान्य की समझ में आसानी से आती है। 'तोरौ', 'जोरौ', 'अंदेसा', 'बरत', 'बाती', 'राती' जैसे सरल शब्द पढ़ने में सहज लगते हैं। गेयता और लय से पद और भी प्रभावशाली बन जाते हैं। भावगत गहराई की दृष्टि से — चंदन-पानी का साधारण प्रतीक भक्त के आराध्य में एकाकार होने के गहरे दार्शनिक भाव को व्यक्त करता है। 'दीपक-बाती' में भक्त के सर्वात्मसमर्पण का तत्त्व छिपा है। 'तीरथ बरत न करूँ अंदेसा' में बाह्य आडंबरों पर आंतरिक भक्ति की श्रेष्ठता का गंभीर दार्शनिक संदेश है। 'मन क्रम वचन' में भक्ति की त्रिस्तरीय समग्रता का जटिल भाव सरल तीन शब्दों में समा गया है। इस प्रकार रैदास के पद सरलता में गहराई का श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

4. रैदास के दोनों पदों में प्रयुक्त अलंकारों का उदाहरण सहित विश्लेषण कीजिए।

उत्तरः
रैदास के दोनों पदों में अनेक अलंकारों का सुंदर प्रयोग हुआ है:

1. **अनुप्रास अलंकारः** 'चितवत चंद चकोरा' — 'च' वर्ण की आवृत्ति। 'बरत बरै' में 'ब' की आवृत्ति। इससे पदों में संगीतात्मकता और लय उत्पन्न होती है।
2. **उपमा अलंकारः** 'प्रभुजी तुम मोती, हम धागा, जैसे सोने मिलत सुहागा' — यहाँ 'जैसे' उपमावाचक शब्द के साथ आराध्य और भक्त की प्रसिद्ध वस्तुओं से उपमा दी गई है।
3. **रूपक अलंकारः** 'तुम्हरे चरन कमल' — चरणों पर कमल का आरोप कर अभेद स्थापित किया गया है।
4. **उत्प्रेक्षा/प्रतीकः** पूरा प्रथम पद प्रतीकात्मकता से भरा है जिसमें चंदन-पानी, दीपक-बाती जैसे प्रतीक भक्ति के विविध रूपों को उजागर करते हैं।

इन अलंकारों से पदों में काव्य-सौंदर्य, चित्रात्मकता और भावगत गहराई आती है।

5. रैदास के पदों में व्यक्त 'अनन्य भक्ति' की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए। आज के समाज में इनकी प्रासंगिकता क्या है?

उत्तरः
'अनन्य भक्ति' का अर्थ है — केवल एक आराध्य पर पूर्ण आस्था, किसी दूसरे देव, तीर्थ या कर्मकांड की अपेक्षा न रखना। रैदास के पदों में यह भाव कई स्तरों पर प्रकट होता है। प्रथम पद में 'अब कैसे छूटै राम रट लागी' में भक्त की एकनिष्ठ लगन है। द्वितीय पद में 'जो तुम तोरौ राम मैं नहि तोरौ' में भक्त स्पष्ट करता है कि प्रभु के अलावा किसी से संबंध न जोड़ूँगा। 'तुम सा देव ओर नहिं दूजा' में सर्वश्रेष्ठता का भाव है। तीर्थ-व्रत छोड़कर प्रभु-चरण की भक्ति को ही आश्रय मानना — यह सब अनन्य भक्ति के लक्षण हैं। आज के समाज में प्रासंगिकता: रैदास का संदेश बाह्य धार्मिक दिखावे पर आंतरिक शुद्धता और प्रेम को महत्व देता है। जाति-भेद, धार्मिक आडंबर और ऊँच-नीच से ऊपर उठकर मानवीय एकता और प्रेम का संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है।

6. रैदास के पदों और उनके भक्ति-दर्शन का संत-काव्य परंपरा में क्या स्थान है? पदों के आधार पर उनके व्यक्तित्व और विचारों का परिचय दीजिए।

उत्तरः
रैदास 15वीं शताब्दी के महान संत कवि थे जो भक्तिकाल की निर्गुण संत-काव्य परंपरा के प्रमुख स्तंभ हैं। कबीर की तरह उन्होंने भी बाह्य आडंबरों, जाति-भेद और धार्मिक पाखंड का विरोध किया।

उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ:

1. **विनम्रताः** वे स्वयं को 'दासा' कहते हैं, अहंकार से रहित हैं।
2. **दृढ़ निष्ठाः** प्रभु के संबंध-तोड़ने पर भी नाता न तोड़ने की प्रतिज्ञा उनकी अडिग भक्ति को दर्शाती है।
3. **समावेशी दृष्टिः** उनकी रचनाएँ आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल हैं — यह उनके सर्वधर्म-समभाव का प्रमाण है।

उनके विचारः
आंतरिक भक्ति ही सच्चा धर्म है; मन-कर्म-वचन की एकता में ही ईश्वर की प्राप्ति है; ईश्वर सर्वव्यापक है — तीर्थों में नहीं, हृदय में निवास करता है।

संत-काव्य परंपरा में उनका स्थान अतुलनीय है क्योंकि उन्होंने जाति-भेद से ऊपर उठकर समानता, प्रेम और भाईचारे का संदेश दिया जो आज भी प्रेरणादायी है।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

काव्यांश 1

अब कैसे छूटै राम रट लागी।
प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी।
प्रभु जी तुम घन बन, हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।

उत्तरः
रैदास ने तीर्थ और व्रत को भक्ति का आधार नहीं माना। द्वितीय पद में वे स्पष्ट कहते हैं — 'तीरथ बरत न करूँ अंदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसां।' उनके लिए प्रभु के चरणों की भक्ति ही एकमात्र आश्रय है। प्रथम पद में भी बाह्य पूजा-विधान का उल्लेख न कर, प्रकृति के सरल प्रतीकों द्वारा आंतरिक प्रेम और समर्पण को ही भक्ति का सच्चा रुप बताया है। मन, कर्म और वचन से प्रभु की आराधना करना ही उनका धर्म है।

6. 'तुम स्वामी, हम दासा' — इस भाव के आधार पर रैदास के भक्ति-दर्शन की विशेषता बताइए।

उत्तरः
रैदास के भक्ति-दर्शन में दास्य-भाव की प्रधानता है। वे स्वयं को प्रभु का सेवक मानते हैं और प्रभु को स्वामी। यह भाव उनकी विनम्रता और पूर्ण समर्पण का प्रतीक है। वे संत कवि होते हुए भी अहंकार से रहित हैं। उनकी भक्ति न केवल भावनात्मक है, बल्कि 'मन क्रम वचन' — अर्थात् मन, कार्य और वाणी तीनों से प्रभु को समर्पित है। यह समग्र समर्पण रैदास के भक्ति-दर्शन का मूल है।

7. 'मैं अपनो मन हरि से जोरौ, हरि सो जोरि सबन सो तोरों' — इस पंक्ति का भाव विस्तार कीजिए।

उत्तरः
इस पंक्ति में रैदास ने एकाग्र भक्ति का सूत्र दिया है। वे कहते हैं — मैंने अपना मन हरि (प्रभु) से जोड़ लिया है और हरि से जोड़ने के बाद संसार की सभी आसक्तियों से मन तोड़ लिया है। यह भाव भक्तिकाल की 'एकाश्रयता' की अवधारणा को व्यक्त करता है — भगवान से प्रेम जोड़ने पर सांसारिक बंधन स्वतः शिथिल पड़ जाते हैं। यह सच्ची वैराग्य-भावना का काव्यात्मक रुप है।

8. रैदास के पदों की भाषा-शैली की दो प्रमुख विशेषताएँ उदाहरण सहित बताइए।

उत्तरः
पहली विशेषता — सरल, लोकधर्मी भाषा: रैदास की भाषा ब्रजभाषा आधारित है जिसमें 'तोरौ', 'जोरौ', 'बरत', 'अंदेसा' जैसे लोकप्रिय शब्द हैं, जो आम जनता की बोलचाल के निकट हैं। दूसरी विशेषता — प्रकृति-प्रतीकों का सुंदर प्रयोग: चंदन-पानी, मोर-बादल, दीपक-बाती जैसे प्रतीक पाठक को सहज ही भाव समझाते हैं। इससे पदों में चित्रात्मकता और गेयता दोनों आती है।

9. 'सबही पहर तुम्हारी आसा, मन क्रम वचन कहै रैदासा' — इस पंक्ति के आलोक में रैदास की भक्ति की समग्रता बताइए।

उत्तरः
'सबही पहर' का अर्थ है — दिन के चारों पहर, अर्थात् हर समय। रैदास कहते हैं कि वे प्रभु की आशा (आसरा) सदा बनाए रखते हैं। 'मन क्रम वचन' में भक्ति की त्रिस्तरीय समग्रता है — मन से प्रभु का चिंतन, कर्म से उनकी सेवा और वाणी से उनका स्मरण-गान। यह समग्र भक्ति किसी बाह्य अनुष्ठान पर निर्भर नहीं, बल्कि अंतर्मन से प्रवाहित होती है।

10. रैदास के पदों में चकोर का प्रतीक क्यों प्रयोग किया गया? इसका काव्य-सौंदर्य क्या है?

उत्तरः
चकोर एक ऐसा पक्षी माना जाता है जो चंद्रमा का परम प्रेमी है — वह सदा चंद्रमा की ओर टकटकी लगाए एकटक देखता रहता है। रैदास ने इस प्रतीक के माध्यम से भक्त की उस तन्मय अवस्था को व्यक्त किया है जब वह निरंतर प्रभु के ध्यान में लीन रहता है। काव्य-सौंदर्य की दृष्टि से 'चितवत चंद चकोरा' में 'च' की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार भी है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. रैदास के प्रथम पद में भक्त और आराध्य के संबंध को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त प्रतीकों का विश्लेषण कीजिए। इन प्रतीकों की विशेषता क्या है?

उत्तरः
रैदास के प्रथम पद में भक्त और आराध्य के संबंध को पाँच प्राकृतिक और दैनंदिन जीवन से जुड़े प्रतीकों द्वारा व्यक्त किया गया है:

1. **चंदन-पानी:** जैसे चंदन की सुगंध पानी में घुल जाती है — भक्त प्रभु में एकाकार हो जाता है।
2. **बादल (घन बन)-मोर:** मोर बादल की प्रतीक्षा में व्याकुल रहता है — भक्त की प्रभु-भक्ति में वही व्याकुलता है।
3. **चंद-चकोर:** चकोर की चंद्रमा की ओर अखंड दृष्टि — भक्त की प्रभु पर एकनिष्ठ दृष्टि।
4. **दीपक-बाती:** बाती दिन-रात जलकर दीपक की ज्योति बनाए रखती है — भक्त प्रभु की भक्ति में जीवन समर्पित करता है।
5. **मोती-धागा / सोना-सुहागा:** धागा मोती को पिरोता है, सुहागा सोने को निखारता है — प्रभु भक्त के जीवन को अर्थ और निखार देते हैं।

इन सभी प्रतीकों की विशेषता यह है कि वे प्रकृति और लोकजीवन से लिए गए हैं, सरल और बोधगम्य हैं तथा अटूट प्रेम और निर्भरता के संबंध को सहज रुप से व्यक्त करते हैं।

2. रैदास के द्वितीय पद के आधार पर उनकी भक्ति की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तरः
रैदास के द्वितीय पद में भक्ति की कई विशिष्ट विशेषताएँ मिलती हैं। पहली विशेषता है — अटल निष्ठा: 'जो तुम तोरौ राम मैं नहि तोरौ' — यहाँ भक्त स्पष्ट कहता है कि प्रभु के नाता तोड़ने पर भी वह नाता न तोड़ेगा, यह निष्ठा की पराकाष्ठा है। दूसरी विशेषता — बाह्य कर्मकांड का निषेध: 'तीरथ बरत न करूँ अंदेसा' — तीर्थ और व्रत की चिंता छोड़कर केवल प्रभु-चरण में आश्रय लेना उनकी आंतरिक भक्ति का प्रमाण

अध्याय 9

राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

1. कवि परिचय

रोष, व्यंग्य और अटूट मर्यादा के अनूठे संगम 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' के अमर शिल्पी गोस्वामी तुलसीदास का जन्म सन् 1532 में राजापुर, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनका नाम अनन्य रामभक्ति और विलक्षण सृजनात्मक कौशल के लिए संपूर्ण विश्व में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। इन्होंने अपनी अलौकिक लेखनी के माध्यम से नीति, शील, विनय, त्याग और लोकजीवन के शाश्वत मूल्यों को प्रतिष्ठित करके हिंदी साहित्य को अलंकृत किया है। अपनी नादमयी अवधी भाषा और उत्कृष्ट दोहा-चौपाई शैली से इन्होंने हिंदी प्रेमियों को गौरवान्वित किया है। सन् 1623 में इस महान रामभक्त कवि का निधन हो गया।

2. कविता-परिचय

प्रस्तुत पाठ गोस्वामी तुलसीदास रचित महाकाव्य 'रामचरितमानस' के 'बालकांड' से लिया गया है। सीता स्वयंवर में श्रीराम द्वारा शिव-धनुष भंग का समाचार पाकर क्रोधित परशुराम सभा में आते हैं। तुलसीदास ने परशुराम के रौद्र रूप, राम की विनम्रता और लक्ष्मण के व्यंग्यपूर्ण प्रत्युत्तर के माध्यम से तीन भिन्न चरित्रों को जीवंत किया है। यह प्रसंग नाटकीयता, भावविविधता और अवधी भाषा के सौंदर्य का उत्कृष्ट उदाहरण है।

3. कविता का सार

परशुराम का आगमन और राजाओं का भय

सीता स्वयंवर की सभा में जब अत्यंत भयानक भेष धारण किए मुनि परशुराम का आगमन होता है, तो पूरी सभा और वहाँ उपस्थित राजा भय से व्याकुल हो उठते हैं। राजा जनक, सीता जी और दोनों राजकुमार (राम-लक्ष्मण) मुनि के चरणों में आदरपूर्वक प्रणाम करते हैं। दोनों भाइयों की सुंदर जोड़ी को देखकर महर्षि विश्वामित्र उन्हें आशीर्वाद देते हैं।

मुनि का तीव्र क्रोध और जनक का मौन

राजा जनक से शिव-धनुष के टूटने का पूरा समाचार सुनकर परशुराम का क्रोध भड़क उठता है। वे धरती पर पड़े धनुष के टुकड़ों को देखकर अत्यंत कठोर वचनों में पूछते हैं कि इस धनुष को किसने तोड़ा है। वे राजा जनक को चेतावनी देते हैं कि तोड़ने वाले को तुरंत सामने लाया जाए, नहीं तो वे पूरा राज्य उलट देंगे। मुनि के इस रौद्र रूप को देखकर राजा जनक भय के कारण मौन रह जाते हैं, जिससे सभा के अन्य कुटिल राजा मन ही मन प्रसन्न होते हैं।

राम की विनम्रता और लक्ष्मण का प्रत्युत्तर

सभा को भयभीत देखकर श्रीराम अत्यंत विनम्रतापूर्वक परशुराम से कहते हैं कि शिव-धनुष को तोड़ने वाला आपका ही कोई एक दास होगा। इस पर और अधिक क्रोधित होकर परशुराम कहते हैं कि जिसने भी यह धनुष तोड़ा है, वह उनका घोर शत्रु है। मुनि के इन वचनों पर लक्ष्मण मुस्कुराते हुए व्यंग्य करते हैं कि बचपन में हमने ऐसी कई धनुहियाँ तोड़ी थीं, तब तो आपने ऐसा क्रोध नहीं किया। इस पर परशुराम लक्ष्मण को काल के वश में होने की चेतावनी देते हुए कहते हैं कि शिव-धनुष कोई साधारण धनुही नहीं है।

4. कठिन-शब्दार्थ, सप्रसंग व्याख्या

काव्यांश 1

देखत भृगुपति बेषु कराला। उठे सकल भय बिकल भुआला।।
पितु समेत कहि कहि निज नामा। लगे करन सब दंड प्रनामा।।
जेहि सुभायँ चितवहिं हितु जानी। सो जानइ जनु आइ खुटानी।।
जनक बहोरि आइ सिरु नावा। सीय बोलाइ प्रनामु करावा।।
आसिष दीन्हि सखीं हरषानीं। निज समाज लै गईं सयानीं।।॥

कठिन-शब्दार्थ

1. भृगुपति – भृगु वंश के श्रेष्ठ पुरुष, परशुराम के लिए संबोधन।
2. बेषु (वेष) – रूप, वेशभूषा, पहनावा।
3. कराला – भयानक, विकराल।
4. सकल – समस्त, सब, पूरा।
5. बिकल – व्याकुल, परेशान।
6. भुआला – राजा, भूपाल।
7. दंड प्रनामा – लेटकर किया जाने वाला सादर साष्टांग प्रणाम।
8. सुभायँ – स्वभाव से।
9. चितवहिं – देखते हैं।

प्रभु जी तुम दीपक, हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभु जी तुम मोती, हम धागा, जैसे सोने मिलत सुहागा।
प्रभु जी तुम स्वामी, हम दासा, ऐसी भगति करै रैदासा।

1. "अब कैसे छूटै राम रट लागी" पंक्ति में 'रट लागी' शब्द किस आंतरिक स्थिति की ओर संकेत करता है?
(क) मानसिक भ्रम होना (ख) आदतन नाम दोहराना
(ग) अनन्य अनुराग होना (घ) बाहरी दिखावा करना

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भक्त ने स्वयं को 'पानी' और प्रभु को 'चंदन' कहा है क्योंकि पानी का अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता।
II. चंदन के संपर्क में आने से पानी भी उसकी सुगंध से एकाकार हो जाता है।
(क) कथन I सही है, परंतु II गलत है।
(ख) कथन II सही है, परंतु I गलत है।
(ग) कथन I और II दोनों ही सही हैं।
(घ) कथन I और II दोनों गलत हैं।

3. इस पूरे पद में कवि रैदास का अपने आराध्य के प्रति कैसा मुख्य भाव या मूड मुखरित हुआ है?
(क) पूर्ण आत्मसमर्पण (ख) अत्यधिक दीनता
(ग) सांसारिक विरक्ति (घ) दार्शनिक गर्व

4. "प्रभु जी तुम दीपक, हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती" — इस पंक्ति में 'दीपक-बाती' की उपमा से कवि किस भाव को व्यक्त करना चाहते हैं?
(क) भक्त का अस्तित्व प्रभु के बिना निरर्थक है
(ख) प्रभु और भक्त में सदा संघर्ष बना रहता है
(ग) भक्त खुद को प्रभु से श्रेष्ठ और स्वतंत्र समझने लगा है
(घ) भक्ति केवल रात्रि के समय में ही संभव होती है

5. पद के अनुसार 'सुहागा' के संपर्क में आने पर सोने में क्या परिवर्तन आता है?
(क) सोना पिघल जाता है (ख) सोना शुद्ध होता है
(ग) सोना भारी होता है (घ) सोना कठोर होता है

उत्तरः
1. (ग) अनन्य अनुराग होना
2. (ग) कथन I और II दोनों ही सही हैं।
3. (क) पूर्ण आत्मसमर्पण
4. (क) भक्त का अस्तित्व प्रभु के बिना निरर्थक है
5. (ख) सोना शुद्ध होता है

काव्यांश 2

जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ, तुम सौ तोरि कवन सौं जोरौ।
तीरथ बरत न करूँ अंदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसां।
जहँ जहँ जाओ तुम्हरी पूजा, तुम सा देव ओर नहिं दूजा।
मैं अपनो मन हरि से जोरौ, हरि सो जोरि सबन सो तोरों।
सबही पहर तुम्हारी आसा, मन क्रम वचन कहै रैदासा।

1. "तुम सौ तोरि कवन सौं जोरौ" पंक्ति के माध्यम से कवि किस परम सत्य को अभिव्यक्त करना चाहते हैं?
(क) ईश्वर ही एकमात्र आश्रय हैं।
(ख) संसार में अनेक देवी-देवता हैं।
(ग) समाज से विमुख होना सरल है।
(घ) मानवीय संबंध अस्थाई होते हैं।

2. **अभिकथन (A):** रैदास तीर्थ यात्रा और व्रत आदि कर्मकांडों के प्रति कोई दुविधा या रुचि नहीं रखते।
कारण (R): उनका दृढ़ विश्वास है कि केवल प्रभु के चरण-कमलों में ही सच्चा और पूर्ण आश्रय प्राप्त होता है।
(क) (A) सही है, परंतु (R) गलत है।
(ख) (A) गलत है, परंतु (R) सही है।
(ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. "जहँ जहँ जाओ तुम्हरी पूजा" पंक्ति में कवि का स्वर ईश्वर की किस विशेषता को रेखांकित करता है?
(क) ईश्वर की रहस्यमयी शक्ति
(ख) ईश्वर की सर्वव्यापकता
(ग) ईश्वर का ऐतिहासिक रुप
(घ) ईश्वर की न्यायप्रियता

4. "मैं अपनो मन हरि से जोरौ, हरि सो जोरि सबन सो तोरों" — इस पंक्ति में कवि के आध्यात्मिक दर्शन का सार क्या है?
(क) ईश्वर से जुड़कर सांसारिक संबंध और भी मज़बूत हो जाते हैं
(ख) ईश्वर से जुड़ने के लिए सांसारिक आसक्ति छोड़नी पड़ती है
(ग) समाज से विमुख होना ही सच्ची भक्ति है
(घ) मन को वश में करना असंभव कार्य है

5. 'मन क्रम वचन कहै रैदासा' पंक्ति के अनुसार रैदास प्रभु की आशा कब-कब बनाए रखते हैं?
(क) केवल सुबह के समय (ख) विशेष पर्वों पर ही
(ग) दिन के आठों प्रहर (घ) संकट आने पर ही

उत्तरः
1. (क) ईश्वर ही एकमात्र आश्रय हैं।
2. (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
3. (ख) ईश्वर की सर्वव्यापकता
4. (ख) ईश्वर से जुड़ने के लिए सांसारिक आसक्ति छोड़नी पड़ती है
5. (ग) दिन के आठों प्रहर

6. डारे – पड़े हुए, गिरे हुए।
7. रिस – रोष, क्रोध, गुस्सा।
8. जड़ – मूर्ख, बुद्धिहीन।
9. कै – किसने।
10. बेगि – शीघ्र, जल्दी, वेगपूर्वक।
11. मूढ़ – मूर्ख, अज्ञानी।
12. उलटउँ – पलट दूँगा, नष्ट कर दूँगा।
13. जहँ लहि – जहाँ तक, जिस सीमा तक।
14. नृपु – राजा (यहाँ राजा जनक के लिए आया है)।
15. कुटिल भूप – दुष्ट स्वभाव वाले राजा।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध संत कवि गोस्वामी तुलसीदास हैं। इसमें राजा जनक द्वारा स्वयंवर का कारण बताने तथा शिव-धनुष के टुकड़ों को देखकर परशुराम जी के भयंकर क्रोधित होने व जनक को धमकी देने का वर्णन है।

व्याख्या

परशुराम के पूछने पर राजा जनक ने उन्हें स्वयंवर और प्रतिज्ञा का पूरा समाचार कह सुनाया, जिसके कारण संसार भर के राजा वहाँ आए हुए थे। जनक की बातें सुनकर परशुराम जी ने जब दूसरी तरफ दृष्टि दौड़ाई, तो उन्हें धरती पर शिव-धनुष के टुकड़े बिखरे हुए दिखाई दिए। धनुष को टूटा देखकर वे अत्यधिक क्रोधित हो गए और अत्यंत कठोर स्वर में बोले—"अरे मूर्ख जनक! मुझे तुरंत बता कि यह शिव का पवित्र धनुष किसने तोड़ा है?"

वे आगे बोले—"उस पापी मूर्ख को मेरे सामने जल्दी हाजिर कर, नहीं तो आज मैं तेरे इस पूरे राज्य को पलट दूँगा और धरती का विनाश कर दूँगा।।" परशुराम के इस भयानक रूप को देखकर राजा जनक डर के मारे कोई उत्तर नहीं दे पा रहे थे, जिसे देखकर सभा में उपस्थित दुष्ट और कुटिल राजा मन ही मन बहुत खुश हो रहे थे।

काव्यांश 4

सुर मुनि नाग नगर नर नारी। सोचहिं सकल त्रास उर भारी॥
मन पछिताति सीय महतारी। बिधि अब सँवरी बात बिगारी।।
भृगुपति कर सुभाउ सुनि सीता। अरध निमेष कलप सम बीता।।
सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीरु।
हृदयं न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु।।

कठिन-शब्दार्थ

1. त्रास – भय, डर।
2. उर – हृदय।
3. सीय महतारी – सीता जी की माता सुनयना।
4. बिधि – विधि, विधाता, भाग्य।
5. अरध निमेष – आधी पलक झपकने का समय, बहुत कम समय।
6. कलप (कल्प) – एक बहुत लंबा युग।
7. सभय – भय के साथ, डरते हुए।
8. जानकी – राजा जनक की पुत्री सीता।
9. भीरु – भयभीत, डरा हुआ।
10. विषादु – दुःख, उदासी, शोक।
11. श्रीरघुबीरु – श्री राम जी।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध संत कवि गोस्वामी तुलसीदास हैं। इसमें सभा के लोगों और सीता जी व उनकी माता के डर तथा ऐसी विकट परिस्थिति में श्री राम के शांत स्वभाव से आगे आने को दर्शाया गया है।

व्याख्या

मुनि के क्रोध को देखकर सभा में मौजूद देवता, मुनि, नाग और नगर के सभी स्त्री-पुरुष अत्यंत भयभीत होकर अपने हृदय में गहरी चिंता करने लगे। सीता जी की माता (सुनयना) मन ही मन पछताते हुए सोचने लगीं कि विधाता ने तो आज यह बनी-बनाई बात ही बिगाड़ दी है। परशुराम जी के अत्यंत क्रोधी और क्रूर स्वभाव के बारे में सुनकर सीता जी इतनी भयभीत हो गईं कि उनके लिए वह आधा पल भी एक कल्प (युग) के समान लंबा और कष्टदायी बीतने लगा।

जब श्री राम ने पूरी सभा को डरा हुआ देखा और यह जान लिया कि जानकी (सीता) भी बहुत डरी हुई हैं, तब वे अपने मन में बिना किसी हर्ष या दुःख के, पूर्ण संयम और भावनात्मक संतुलन के साथ आगे आए और बोले।

काव्यांश 5

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।
आयसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई॥
सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा॥
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा॥

कठिन-शब्दार्थ

1. संभुधनु – शंभु (शिव जी) का धनुष।
2. भंजनिहारा – तोड़ने वाला, खंडित करने वाला।
3. केउ – कोई।
4. आयसु – आज्ञा, आदेश।
5. मोही – मुझसे, मुझे।
6. रिसाइ – क्रोध करके, चिढ़कर।
7. कोही – क्रोधी, अत्यंत गुस्सा करने वाला।
8. सेवकाई – सेवा का कार्य।
9. अरि करनी – शत्रु जैसा कर्म, दुश्मनी का काम।
10. लराई – लड़ाई, युद्ध।
11. सहसबाहु – सहस्रबाहु (एक पराक्रमी राजा)।
12. रिपु – शत्रु, दुश्मन।

13. बिलगाउ – अलग होना।
14. बिहाइ – छोड़कर।
15. जैहहिं – जाएँगे।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध संत कवि गोस्वामी तुलसीदास हैं। इसमें श्री राम द्वारा विनम्रतापूर्वक शिव-धनुष तोड़ने वाले का परिचय देने तथा परशुराम जी द्वारा भारी क्रोध में राजाओं को मारने की धमकी देने का वर्णन है।

व्याख्या

श्री राम परशुराम जी से बड़े शांत और विनम्र स्वर में बोले—"हे नाथ! भगवान शिव के इस विशाल धनुष को तोड़ने वाला आपका ही कोई एक तुच्छ दास होगा। आपकी मेरे लिए क्या आज्ञा है, आप मुझसे क्यों नहीं कहते? " श्री राम के इस शांत वचन को सुनकर क्रोधी मुनि और अधिक चिढ़ गए और बोले—"सेवक तो वह होता है जो सेवा का कार्य करे, लेकिन जिसने शत्रु जैसा काम किया हो, उससे तो केवल लड़ाई ही मोल ली जा सकती है।"

परशुराम आगे बोले—"हे राम! मेरी बात ध्यान से सुन, जिसने भी इस शिव-धनुष को तोड़ा है, वह सहस्त्रबाहु राजा के समान मेरा घोर शत्रु है। इसलिए वह व्यक्ति इस पूरी राज-सभा को छोड़कर तुरंत अलग हो जाए, नहीं तो उसके चक्कर में यहाँ उपस्थित ये सभी राजा व्यर्थ ही मेरे हाथों मारे जाएँगे।"

काव्यांश 6

सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने।।
बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं।।
एहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू॥
रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार।।

कठिन-शब्दार्थ

1. परसुधरहि – परशुराम (परशु यानी कुल्हाड़ी धारण करने वाले)।
2. अपमाने – उपहास उड़ाते हुए, अपमान करते हुए।
3. धनुहीं – छोटी-छोटी धनुहियाँ (बच्चों के खेलने के धनुष)।
4. लरिकाई – लड़कपन, बचपन में।
5. असि – ऐसी, इस प्रकार की।
6. गोसाईं – स्वामी, मुनिवर, नाथ।
7. हेतू – कारण, उद्देश्य।
8. भृगुकुलकेतू – भृगु वंश के ध्वजस्वरूप परशुराम जी।
9. काल बस – मृत्यु के वश में होकर, काल के अधीन।
10. तोहि – तुझे, तुम्हें।
11. सँभार – सँभलकर, होश में।
12. तिपुरारि धनु – त्रिपुरारी (शिव जी) का महान धनुष।
13. विदित – विख्यात, मालूम, ज्ञात।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध संत कवि गोस्वामी तुलसीदास हैं। इसमें मुनि परशुराम के क्रोध भरे वचनों को सुनकर लक्ष्मण जी द्वारा उन पर व्यंग्य कसने तथा परशुराम द्वारा उन्हें काल के वश में होने की चेतावनी देने का सजीव वर्णन है।

व्याख्या

मुनि के ऐसे अहंकार भरे और क्रोधित वचनों को सुनकर लक्ष्मण जी मन ही मन मुसकराने लगे और वे परशुराम जी का थोड़ा उपहास (अपमान) उड़ाते हुए बोले —"हे मुनिवर! बचपन में तो हमने ऐसी बहुत-सी छोटी-छोटी धनुहियाँ तोड़ डाली थीं, तब तो आपने कभी हम पर ऐसा क्रोध नहीं किया! फिर इसी पुराने धनुष पर आपकी इतनी गहरी ममता और मोह किस कारण से है?"

लक्ष्मण की यह व्यंग्यभरी बात सुनकर भृगुवंश के ध्वज स्वरूप परशुराम जी और अधिक भड़क उठे और गरजकर बोले —"अरे राजपुत्र! तू काल (मृत्यु) के वश में हो चुका है, इसीलिए तुझे अपनी जुबान पर कोई नियंत्रण नहीं है और तू संभलकर नहीं बोल पा रहा है। जिस दिव्य धनुष को पूरा संसार जानता है कि वह साक्षात् भगवान शिव का त्रिपुरारी धनुष है, तू उसकी तुलना बच्चों की साधारण धनुहियों से कर रहा है!"

5. पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. "पितु समेत कहि कहि निज नामा। लगे करन सब दंड प्रनामा।।" यह पंक्ति सभा में उपस्थित लोगों की किस मनःस्थिति को दर्शाती है?
   (क) आदर और सम्मान
   (ख) भक्ति और श्रद्धा
   (ग) भय और शिष्टाचार
   (घ) प्रेम और सहिष्णुता

   उत्तरः
   (ग) भय और शिष्टाचार
   यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि परशुराम का भयानक वेश देखकर सभी राजा भयभीत होकर उठ खड़े हुए। उनका अपना और अपने पिता का नाम लेकर दंडवत प्रणाम करना भय से उत्पन्न शिष्टाचार है — वे परशुराम को प्रसन्न करना चाहते थे

ताकि उनके क्रोध से बच सकें। यह भक्ति या प्रेम से नहीं, बल्कि भय के कारण किया गया औपचारिक आदर था।

2. "जनक बहोरि आइ सिरु नावा। सीय बोलाइ प्रनामु करावा" पंक्ति से राजा जनक के व्यवहार की कौन-सी विशेषता उद्घाटित होती है?
(क) संवेदनशीलता
(ख) शिष्टता
(ग) सहनशीलता
(घ) उदासीनता

उत्तरः
(ख) शिष्टता
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि राजा जनक ने परशुराम के क्रोध से भरे वातावरण में भी शांत और शालीन भाव से उनके पास आकर सिर झुकाया और अपनी पुत्री सीता को बुलाकर प्रणाम करवाया। यह कूटनीतिक शिष्टता का उत्कृष्ट उदाहरण है — परिस्थिति चाहे कितनी भी तनावपूर्ण हो, जनक का व्यवहार सभ्य और शिष्ट रहा।

3. "अति रिस बोले बचन कठोरा।" जनक के प्रति परशुराम के कठोर वचन बोलने का मूल कारण था—
(क) उचित आदर-सत्कार न मिलना
(ख) जनक द्वारा समाचार छिपाना
(ग) शिव-धनुष का खंडित होना
(घ) अन्य राजाओं की सभा में उपस्थिति

उत्तरः
(ग) शिव-धनुष का खंडित होना
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि परशुराम ने जब इधर-उधर देखा तो उन्हें धनुष के टुकड़े पृथ्वी पर पड़े दिखे। शिव-धनुष परशुराम के लिए अत्यंत पवित्र था क्योंकि वे शिव के परम भक्त थे। उसका खंडित होना उनके लिए असहनीय अपमान था — इसीलिए उन्होंने अत्यंत क्रोध में आकर जनक से पूछा कि यह धनुष किसने तोड़ा।

4. राम का कथन "होइहि केउ एक दास तुम्हारा" उनके व्यक्तित्व की किस विशेषता को दर्शाता है?
(क) कूटनीति और चतुराई
(ख) विनम्रता और मर्यादा
(ग) त्याग और समर्पण
(घ) दृढ़ता और आत्मविश्वास

उत्तरः
(ख) विनम्रता और मर्यादा
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि राम स्वयं धनुष तोड़ने वाले हैं, फिर भी वे विनम्रतापूर्वक कहते हैं — "हे नाथ! शिव-धनुष को भंग करने वाला आपका ही कोई एक दास होगा।" यह कथन उनकी अहंकार-शून्यता और मर्यादापूर्ण व्यवहार को दर्शाता है। वे परशुराम के क्रोध को और भड़काने के बजाय विनय से स्थिति को संभालने का प्रयास करते हैं।

5. "सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने।।" लक्ष्मण के मुसकराने और उपहास भरे वचनों का क्या कारण था?
(क) वे सभा में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करना चाहते थे।
(ख) उन्हें राम के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करना था।
(ग) वे परशुराम की शक्ति से अनभिज्ञ थे।
(घ) वे परशुराम को चुनौती देना चाहते थे।

उत्तरः
(घ) वे परशुराम को चुनौती देना चाहते थे।
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि लक्ष्मण का स्वभाव उग्र और तेजस्वी था। परशुराम द्वारा धनुष तोड़ने वाले को अपना शत्रु बताना और सभी राजाओं को धमकी देना — यह सब सुनकर लक्ष्मण ने व्यंग्य से मुस्कुराकर कहा कि बचपन में हमने ऐसी बहुत-सी 'धनहिया' तोड़ी हैं। यह सीधी चुनौती थी। लक्ष्मण जानबूझकर परशुराम को चुनौती दे रहे थे।

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. "अरध निमेष कलप सम बीता" पंक्ति का भाव स्पष्ट करते हुए बताइए कि कविता में यह किसके संदर्भ में कहा गया है और क्यों?

उत्तरः
भाव: इस पंक्ति का अर्थ है — "आधा पल (क्षण) एक कल्प के समान बीता।" 'कल्प' ब्रह्मा का एक दिन होता है जो अरबों मानव-वर्षों के बराबर माना जाता है। अतिशयोक्ति अलंकार से यह कहा गया है कि समय का आधा क्षण भी अत्यंत लंबा और भारी प्रतीत हो रहा था।
किसके संदर्भ में: यह पंक्ति सीता के संदर्भ में कही गई है। परशुराम का क्रोधपूर्ण स्वभाव और उनकी भयानक स्थिति सुनकर सीता के लिए आधा पल भी कल्प के समान भारी और लंबा हो गया।
क्यों: सीता इस पूरे प्रसंग में सबसे अधिक व्यग्र थीं। परशुराम के क्रोध का सीधा संबंध शिव-धनुष भंग से था, और यह काम राम ने किया था जो उनके होने वाले पति हैं। एक ओर परशुराम का भयंकर रोष था, दूसरी ओर राम और सभा का अस्तित्व संकट में था। ऐसे में सीता का एक-एक पल युग के समान बीतना स्वाभाविक था।

2. "सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा।।" पंक्ति के आधार पर बताइए कि परशुराम द्वारा दी गई इस चेतावनी का सभा में उपस्थित राज-समाज पर क्या प्रभाव पड़ा होगा? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तरः
परशुराम की इस चेतावनी का सभा में उपस्थित राज-समाज पर अत्यंत भयावह प्रभाव पड़ा होगा। इसके तर्क इस प्रकार हैं:

1. **भय का वातावरण**: परशुराम का नाम सुनते ही सभी राजा पहले से ही भयभीत थे — "उठे सकल भय बिकल भुआला।" जब उन्होंने यह चेतावनी दी कि जो शिव-धनुष तोड़ने वाले को अलग न करे, वे सभी राजा मारे जाएँगे — तो भय और भी बढ़ गया होगा।
2. **मौन और असहाय स्थिति**: "अति डरु उतरु देत नृप नाहीं" — राजा जनक तक उत्तर देने में असमर्थ हो गए। अन्य राजा तो पहले से ही उत्तर नहीं दे रहे थे। परशुराम की यह चेतावनी सुनकर सभी और भी सिकुड़ गए होंगे।
3. **कुटिल राजाओं की मन में खुशी**: तुलसीदास ने स्पष्ट लिखा है — "कुटिल भूप हरषे मन माहीं।" कुछ राजा मन ही मन प्रसन्न हुए होंगे कि अब राम संकट में हैं — यह मानवीय दुर्बलता का यथार्थ चित्रण है।
4. **सामूहिक चिंता**: "सुर मुनि नाग नगर नर नारी। सोचहिं सकल त्रास उर भारी।" देवता, मुनि, नाग, नगरवासी — सब चिंतित थे। इससे स्पष्ट है कि परशुराम की चेतावनी ने संपूर्ण सभा में त्रास और भय का वातावरण बना दिया था।

3. तुलसीदास ने राम और लक्ष्मण के माध्यम से एक ही परिस्थिति के प्रति दो अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ दिखाई हैं। आपकी दृष्टि में परशुराम के क्रोध को शांत करने के लिए राम का 'विनय' का मार्ग उचित है या लक्ष्मण के 'तर्क' का? अपने उत्तर का उचित कारण और तर्क भी प्रस्तुत कीजिए।

उत्तरः
मेरी दृष्टि में राम का विनय' का मार्ग अधिक उचित है। इसके पक्ष में तर्कः

1. **परिस्थिति की गंभीरता**: परशुराम कोई साधारण व्यक्ति नहीं थे। वे महातेजस्वी मुनि थे जो पहले पृथ्वी को क्षत्रियों से रहित कर चुके थे। उनके क्रोध से सभा, सभी राजा और जनकपुरी — सब संकट में थे। ऐसे में शांत और विनम्र रहना ही बुद्धिमत्ता है।
2. **विनय से स्थिति शांत होती है**: राम का "होइहि केउ एक दास तुम्हारा" कहना — इसमें वे परशुराम को प्रसन्न रखते हुए स्थिति संभाल रहे थे। विनय क्रोध की अग्नि को शांत करती है, तर्क उसे और भड़का सकता है।
3. **लक्ष्मण का तर्क उचित पर समयानुकूल नहीं**: लक्ष्मण के तर्क तेज और सही थे, पर वे क्रोधाग्नि को और बढ़ाने वाले थे। परशुराम और अधिक क्रोधित हुए — "रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार।"
4. **नेतृत्व का गुण**: एक कुशल नेता वह होता है जो विपरीत परिस्थितियों में भी विवेक और संयम रखे। राम का यही गुण उन्हें आदर्श पुरुष बनाता है।

हालाँकि, लक्ष्मण का तर्क सत्य का साहसपूर्ण प्रतिनिधित्व करता है — जो अपने आप में एक साहसिक गुण है। पर व्यावहारिक दृष्टि से राम का विनय-मार्ग ही श्रेष्ठ था।

4. 'हृदयँ न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु॥' श्री राम के हृदय में न हर्ष था, न विषाद। यह उनके व्यक्तित्व के किन गुणों को दर्शाता है? उनका भावनात्मक संतुलन इस पूरे पाठ में उन्हें अन्य पात्रों से अलग कैसे स्थापित करता है?

उत्तरः
राम के व्यक्तित्व के गुणः

1. **स्थितप्रज्ञता**: गीता में स्थितप्रज्ञ वह है जो सुख में अतिहर्षित और दुख में अतिखिन्न नहीं होता। राम का न हर्ष न विषाद — यही स्थितप्रज्ञता है।
2. **भावनात्मक परिपक्वता**: वे न शिव-धनुष तोड़ने पर अहंकार से फूले, न परशुराम के क्रोध से भयभीत हुए। यह परिपक्व व्यक्तित्व का लक्षण है।
3. **मर्यादापुरुषत्व**: राम मर्यादापुरुषोत्तम हैं। विपरीत परिस्थिति में भी मर्यादा का पालन करना उनकी विशेषता है।
4. **संयम और धैर्य**: वे संयमित और धैर्यवान हैं — यही गुण उन्हें आदर्श नायक बनाते हैं।

अन्य पात्रों से तुलना : पाठ में सभी पात्र किसी न किसी भाव से आक्रांत हैं — परशुराम क्रोध में हैं, राजा भयभीत हैं, सीता की माता चिंतित हैं, लक्ष्मण उत्तेजित हैं, कुटिल राजा मन में प्रसन्न हैं। पर राम इन सबसे अलग हैं — उनके हृदय में कोई विकार नहीं। यह शांत मध्यबिंदु पूरे तूफान में स्थिर दीपक की तरह है।

मेरी कल्पना मेरे अनुमान

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी कल्पना और अनुमान के आधार पर दीजिए—

1. कल्पना कीजिए कि आप जनक की सभा में उपस्थित एक राजा हैं। परशुराम जी के आगमन से लेकर उनके गमन तक की कथा अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तरः
मैं जनक की सभा में बैठा था — सीता-स्वयंवर की उस ऐतिहासिक बेला में। शिव-धनुष पर चढ़ाने का प्रयास बड़े-बड़े राजा कर चुके थे, कोई सफल न हुआ था। फिर एक किशोर राजकुमार राम ने — अत्यंत सहजता से — उस धनुष को उठाकर तोड़ दिया। सभा में आनंद की लहर दौड़ गई।

पर तभी — एक भयानक आकृति का प्रवेश हुआ। हाथ में फरसा, माथे पर रोष की रेखाएँ, आँखों में आग — मुनि परशुराम! उन्हें देखते ही मेरे रोंगटे खड़े हो गए। मैं भी अन्य राजाओं के साथ उठकर खड़ा हो गया। हमने अपना और अपने पिता का नाम लेकर दंडवत प्रणाम किया — भय से थरथराते हुए।

परशुराम की दृष्टि टुकड़े-टुकड़े हुए धनुष पर पड़ी। उनका क्रोध आसमान छूने लगा। उन्होंने जनक से कठोर शब्दों में पूछा — धनुष किसने तोड़ा? जनक चुप रहे — भय से। मेरे मन में आया कि बता दूँ, पर मैं भी चुप रहा।

फिर राम ने विनम्रता से कहा कि धनुष तोड़ने वाला आपका ही दास होगा। परशुराम और क्रोधित हुए। तभी लक्ष्मण ने व्यंग्य से कुछ कहा — परशुराम का क्रोध और भड़का।

पर राम के शांत, विनम्र और धीर व्यवहार ने अंत में विश्वामित्र की मदद से परशुराम का क्रोध शांत किया। जब परशुराम गए, तो मैंने चैन की साँस ली। वह पूरा प्रसंग मेरे जीवन का सबसे भयावह और अविस्मरणीय अनुभव था।

2. "अति डरु उतरु देत नृप नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं॥" जनक द्वारा डर से चुप रहने पर अन्य राजा मन में प्रसन्न क्यों हुए होंगे?
(संकेत– सोचिए, यह मनुष्य के व्यवहार की किस सच्चाई को उजागर करता है?)

उत्तरः
जनक के चुप रहने पर 'कुटिल' राजाओं के मन में प्रसन्नता के अनेक कारण हो सकते हैं:

1. **प्रतिस्पर्धा का भाव:** सभी राजा सीता-स्वयंवर में आए थे। राम ने धनुष तोड़ा — अर्थात् राम को सीता मिलेगी। कुटिल राजा यह नहीं चाहते थे। परशुराम का क्रोध राम पर केंद्रित था — इसलिए वे मन में प्रसन्न हुए होंगे कि शायद राम संकट में पड़ें।
2. **जनक की असहाय स्थिति देखकर:** जनक जैसे धीर-गंभीर राजा का भय से चुप रहना — यह देखकर उन्हें संतोष मिला होगा कि वे अकेले नहीं हैं जो डरे हुए हैं।
3. **मनुष्य की दुर्बलता:** यह मानव स्वभाव की एक कड़वी सच्चाई है — दूसरे की विपत्ति में कुछ लोग प्रसन्न होते हैं। यही 'शाडेनफ्रॉइड' (दूसरे की पीड़ा में खुशी) की मनोवृत्ति है।
4. **अपनी रक्षा की राहत:** जब जनक जैसा बलशाली राजा भी परशुराम से डर रहा है, तो कुटिल राजाओं को राहत मिली होगी कि परशुराम का क्रोध अभी उन पर नहीं, बल्कि जनक पर केंद्रित है।

तुलसीदास ने यहाँ मानव-प्रकृति के इस स्याह पहलू को 'कुटिल भूप' कहकर बड़ी सूक्ष्मता से उजागर किया है।

विधा से संवाद

कविता का सौंदर्य

1. यह कविता तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य रामचरितमानस के 'बालकांड' का एक अंश है जहाँ शिव-धनुष के टूटने से क्रोधित परशुराम के रोष भरे वचनों का उत्तर लक्ष्मण व्यंग्य वचनों से देते हैं। दोनों के बीच के ये संवाद कविता में नाटकीयता उत्पन्न करते हैं। संवादों के माध्यम से ही पूरी कविता का कथानक विकास होता है, संवाद ही चरित्र का निर्माण करते हैं और संवादों से ही भावों में विविधता भी आती है। इस प्रकार यह कविता काव्यात्मक विधा में संवाद-प्रस्तुति का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। नीचे कविता के संवादों की कुछ विशेषताएँ दी गई हैं। उन विशेषताओं को दर्शाने वाली पंक्तियों के उदाहरण कविता से ढूँढ़कर लिखिए।

संवादों की विशेषता
- राम की विनम्रता
- परशुराम का रौद्र रूप
- लक्ष्मण का प्रत्युत्तर
- पौराणिक संदर्भ
- नाटकीयता

उत्तरः

शीर्षक	**काव्य-पंक्तियाँ**	**टिप्पणी / व्याख्या**
राम की विनम्रता	"नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।आयसु काह कहिअ किन मोही।"	(राम परशुराम को 'नाथ' कहकर संबोधित करते हैं और स्वयं को दास की श्रेणी में रखते हैं — यह विनम्रता का उत्कृष्ट उदाहरण है।)
परशुराम का रौद्र रूप	"अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा।।बेगि देखाउ मूढ़ न त आजू। उलटउँ महि जहँ लहि तव राजू।।"	(परशुराम ने जनक को 'जड़' और 'मूढ़' कहकर पृथ्वी उलटने की धमकी दी — यह उनके रौद्र रूप का प्रतीक है।)
लक्ष्मण का प्रत्युत्तर	"बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं।।एहि धनु पर ममता केहि हेतू।"	(लक्ष्मण ने व्यंग्य से कहा कि बचपन में ऐसी अनेक धनुहिया तोड़ी हैं — यह सीधी चुनौती और व्यंग्योक्ति है।)
पौराणिक संदर्भ	"सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।"	(परशुराम ने सहस्रबाहु का उल्लेख किया जो उनके पौराणिक शत्रु थे — यह पौराणिक संदर्भ है।)

2. कविता में वर्णित प्रसंग सीता-स्वयंवर की सभा का है। प्राचीन भारतीय समाज में वर-चयन के लिए स्वयंवर की प्रथा प्रचलित थी। इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं। ऐसी किसी एक पौराणिक-ऐतिहासिक आदि घटना/प्रसंग का वर्णन कीजिए जिससे स्वयंवर विधि द्वारा विवाह की जानकारी मिलती है।

उत्तरः

द्रौपदी-स्वयंवर (महाभारत से)

महाभारत में द्रौपदी-स्वयंवर का प्रसंग अत्यंत प्रसिद्ध है। राजा द्रुपद ने अपनी पुत्री द्रौपदी के लिए एक विशेष स्वयंवर का आयोजन किया। इसमें एक विशाल मछली को छत पर लटकाया गया था। उसके नीचे एक जलपूर्ण कुंड था। योग्य वर को चाहिए था कि वह नीचे जल में मछली की परछाईं देखते हुए उसकी आँख पर तीर से निशाना लगाए।

अनेक राजाओं ने प्रयास किया पर विफल रहे। अर्जुन ने ब्राह्मण के वेश में उपस्थित होकर यह कठिन लक्ष्य भेद दिया और द्रौपदी ने उन्हें वरमाला पहनाई।

यह प्रसंग यह दर्शाता है कि प्राचीन भारतीय स्वयंवर में:

1. वर की योग्यता और शक्ति की परीक्षा ली जाती थी।
2. कन्या को स्वयं वर चुनने का अधिकार था।
3. राजा-महाराजा भी वर्चस्व के लिए उपस्थित होते थे।

सृजन

1. परशुराम के क्रोध को देखकर सीता और उनकी माता सुनयना दोनों चिंतित हैं और सीता के लिए एक-एक पल युग के समान भारी और लंबा प्रतीत हो रहा है। उनकी मनःस्थिति का अनुमान लगाते हुए उस क्षण दोनों के बीच चल रहा मौन संवाद लिखिए।

उत्तरः

मौन संवाद: सीता और माता सुनयना के बीच

(दोनों एक कक्ष में बैठी हैं। सभा का हर शब्द उन तक पहुँच रहा है।)

माता सुनयना (हृदय में, चिंतित भाव से): बेटी, यह क्या हो गया। विधाता ने बनी-बनाई बात बिगाड़ दी। मुझे खुशी थी कि राम जैसा योग्य वर मिला — पर यह परशुराम का क्रोध...

सीता (माँ की आँखों में देखती है, उत्तर में आँखें भर आती हैं): माँ, मुझे राम पर पूरा विश्वास है। जिन्होंने इतना बड़ा धनुष तोड़ा, वे परशुराम के क्रोध से भी निपट लेंगे।

माता सुनयना (सीता का हाथ थाम लेती हैं): पर बेटी, परशुराम महातेजस्वी हैं। मैं तुम्हारे लिए भयभीत हूँ।

सीता (शांत मुस्कान): माँ, देखो — राम के मुख पर तनिक भी भय नहीं। वे धीर और शांत हैं। जहाँ राम हैं, वहाँ मुझे भय कैसा? पर यह एक-एक पल... कितना लंबा लग रहा है।

माता सुनयना (आशीर्वाद देते हुए): भगवान भला करे।

2. सभा में हो रहे संवाद को दूर बैठी सीता, राजा जनक और अन्य लोग भी सुन रहे थे। अपनी कल्पना और अनुमान के आधार पर लिखिए कि उस समय सीता के मन में किस तरह के भाव उत्पन्न हो रहे होंगे? सीता के दृष्टिकोण से पूरी घटना का विश्लेषण कीजिए।
(संकेत– लक्ष्मण के प्रत्युत्तर पर चिंता, गर्व, हँसी, भय, शंका इत्यादि)

उत्तरः

सीता के मन में उठते भाव : जब परशुराम सभा में आए और धनुष खंडित देखकर क्रोधित हुए — सीता के हृदय में तीव्र भय और व्यग्रता उत्पन्न हुई होगी। "अरध निमेष कलप सम बीता" — यह उनकी मनःस्थिति का सटीक वर्णन है।

जब परशुराम ने राजाओं को धमकी दी — सीता के मन में चिंता और भी गहरी हुई होगी। वे सोच रही होंगी — क्या राम सुरक्षित रहेंगे?

जब राम ने विनम्रता से "होइहि केउ एक दास तुम्हारा" कहा — सीता के मन में गर्व का भाव उठा होगा। राम की शांति और विनम्रता ने उन्हें आश्वस्त किया होगा।

जब लक्ष्मण ने व्यंग्यपूर्वक उत्तर दिया — सीता के मन में एक ओर हँसी आई होगी (लक्ष्मण की निडरता पर), दूसरी ओर शंका — कहीं इससे परशुराम और क्रोधित न हों।

परशुराम के और क्रोधित होने पर सीता का भय फिर बढ़ा होगा।

निष्कर्षः सीता इस पूरे प्रसंग में एक मूक दर्शक थीं — पर उनका हृदय भावों का महासागर था। वे राम पर विश्वास करती थीं, इसीलिए अंत में परशुराम के प्रस्थान पर उन्होंने राहत की साँस ली होगी।

3. कविता में सभा में उपस्थित राजाओं ने अपनी वीरता, पराक्रम आदि का उल्लेख करते हुए अपना परिचय दिया है। यदि आपको अपना परिचय देना हो तो आप अपना परिचय किस प्रकार देना उचित समझेंगे? अपना परिचय देते हुए कुछ वाक्य लिखिए जिससे आपके व्यक्तित्व की महत्वपूर्ण बातों का पता चलता हो।

उत्तरः

मेरा परिचय

नमस्कार! मेरा नाम [आपका नाम] है। मैं कक्षा नौ का/की विद्यार्थी हूँ।

मुझे पुस्तकें पढ़ना और नई चीज़ें सीखना पसंद है। मेरा विश्वास है कि ज्ञान और परिश्रम ही व्यक्ति की सबसे बड़ी शक्ति हैं। मैं कठिन परिस्थितियों में भी शांत और धैर्यपूर्वक समाधान खोजने का प्रयास करता/करती हूँ।

मुझे अपने परिवार, मित्रों और शिक्षकों से बहुत प्यार है। मैं सच्चाई का साथ देने में विश्वास रखता/रखती हूँ — चाहे परिस्थिति कितनी भी कठिन क्यों न हो।

मेरा सपना है कि अपने जीवन में कुछ ऐसा करूँ जिससे न केवल मेरा, बल्कि मेरे परिवार और देश का नाम रोशन हो।

4. निष्कर्ष दीजिए — अंत में 1-2 पंक्तियों में 'अपना' स्पष्ट निष्कर्ष लिखिए जैसे— 'इससे स्पष्ट होता है कि...' या 'यह पंक्ति संकेत देती है कि...'
5. संक्षेप में क्या, क्यों, कैसे के आधार पर विश्लेषण कीजिए और निष्कर्ष लिखिए।

उत्तरः

संदर्भः परशुराम ने अत्यंत क्रोध में जनक से पूछा — "कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा" — धनुष किसने तोड़ा? इससे पहले परशुराम ने धमकी दी थी कि जहाँ तक तुम्हारा राज्य है, पृथ्वी उलट दूँगा।

विश्लेषणः

भयजनित मौन के तर्कः

1. तुलसीदास ने स्पष्ट लिखा है — "अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं" — अत्यधिक भय के कारण उत्तर नहीं दे रहे। इसमें 'अति डरु' शब्द स्पष्ट भय का संकेत देते हैं।
2. परशुराम का रौद्र रुप, पृथ्वी उलटने की धमकी — इनसे किसी भी राजा का भयभीत होना स्वाभाविक है।

विवेकपूर्ण निर्णय के तर्कः

1. जनक एक धीर और विवेकशील राजा हैं। हो सकता है कि उन्होंने सोचा हो कि परशुराम के क्रोध में राम का नाम लेना उन पर आक्रमण को आमंत्रित करेगा।
2. उन्होंने बाद में शांत होने पर ही विश्वामित्र की मदद से संवाद स्थापित किया।

निष्कर्षः दोनों कारण मिले-जुले हो सकते हैं। किंतु तुलसीदास के 'अति डरु' शब्द से यह स्पष्ट होता है कि जनक का मौन मुख्यतः भयजनित था। विवेकपूर्ण निर्णय उसमें सहायक तत्व हो सकता है, प्राथमिक कारण नहीं।

काव्य-पंक्ति और भाव

"रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार।
धनही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार।।"

(क) यदि आप इन पंक्तियों को मंच पर बोलते, तो आपके चेहरे पर कौन-सा भाव होता?

उत्तरः

यदि मैं मंच पर इन पंक्तियों को बोलता/बोलती तो मेरे चेहरे पर तीव्र क्रोध, आत्मविश्वास और रोष का भाव होता। भौंहें तनी हुई, आँखें लाल, आवाज़ में गर्जन — जैसे कोई महातेजस्वी ऋषि क्रोध में बोल रहे हों। "रे नृप बालक" — इस संबोधन में अत्यंत तिरस्कार का भाव है। "काल बस बोलत तोहि न सँभार" — यहाँ आवाज़ गहरी और भारी होगी। फिर "धनही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार" — यहाँ स्वाभिमान और निश्चय का भाव होगा कि शिव का धनुष साधारण नहीं था।

(ख) आपने अनुभव किया होगा कि इस कविता में परिस्थितिवश प्रत्येक पात्र एक अलग भाव का प्रतिनिधि बन जाता है। निम्नलिखित पात्रों को आप कौन-कौन से भावों द्वारा प्रदर्शित करेंगे—

- परशुराम
- राजा जनक
- लक्ष्मण
- राम
- सभा में उपस्थित अन्य राजा

उत्तरः

1. **परशुराम** — रौद्र क्रोध और अहंकार का भाव — उनका पूरा व्यक्तित्व इस प्रसंग में क्रोध, दंभ और प्रतिशोध का प्रतीक है। भृकुटि तनी, हाथ में फरसा, आवाज़ में गर्जन।
2. **राजा जनक** — भय और विवेक का मिश्रित भाव — एक ओर परशुराम से भय, दूसरी ओर राजोचित धीरता। मौन किंतु भीतर से व्यग्र।
3. **लक्ष्मण** — साहस, व्यंग्य और निडरता का भाव — परशुराम के क्रोध से भयभीत हुए बिना, हल्की मुस्कान के साथ तीखे व्यंग्य।
4. **राम** — शांति, संयम और विनम्रता का भाव — न हर्ष न विषाद — पूर्णतः स्थितप्रज्ञ। शांत मुखमंडल, नम्र वाणी।
5. **सभा में उपस्थित अन्य राजा** — भय, असहायता और कुछ में कुटिल प्रसन्नता का भाव — सिकुड़े हुए, भयभीत, और कुछ मन में छुपी प्रसन्नता लिए।

विषयों से संवाद

1. सभा में परशुराम के प्रति राम के व्यवहार से उनकी विनम्रता, मर्यादा, धीर और उदात्त चरित्र के संबंध में पता चलता है जो किसी भी कुशल शासक के लिए आवश्यक है। आपको किन-किन परिस्थितियों में इन विशेषताओं का परिचय देना पड़ता है? चर्चा कीजिए और लिखिए।

उत्तरः

राम की विशेषताएँ — विनम्रता, मर्यादा, धीरता और उदात्त चरित्र — हमारे दैनिक जीवन में भी आवश्यक हैं। मुझे निम्नलिखित परिस्थितियों में इनकी आवश्यकता पड़ती है:

1. **कक्षा में मतभेद होने परः** जब किसी मित्र या शिक्षक से विचार नहीं मिलते, तो विनम्रता से अपना पक्ष रखना और दूसरे को सुनना — यह राम जैसी मर्यादा है।
2. **बड़ों के क्रोध के समयः** घर में माता-पिता या बड़ों के क्रोधित होने पर शांत रहना और विनम्रता से उत्तर देना — यह राम का गुण है।
3. **परीक्षा में असफलता परः** असफल होने पर न निराश होना, न अहंकार में बहना — धीरता और संतुलन बनाए रखना।
4. **दबाव की स्थिति मेंः** किसी समूह में जब कोई गलत काम करने का दबाव हो — तब मर्यादा में रहकर 'नहीं' कहने का साहस रखना।
5. **नेतृत्व करते समयः** जब कक्षा प्रतिनिधि के रूप में सबकी बात सुनकर शांत निर्णय लेना पड़े — यह राम जैसी उदात्त नेतृत्व क्षमता है।

नाटकीयता	"देखत भृगुपति बेषु कराला। उठे सकल भय बिकल भुआला।।अति डरु उतरु देत नृप नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं।।"	(सभी राजाओं का भयभीत होकर उठना, फिर जनक का चुप रहना और कुटिल राजाओं का मन में प्रसन्न होना — यह अत्यंत नाटकीय दृश्य है।)

भाव-पहचान एवं विश्लेषण

1. आपने पढ़ा कि राजा जनक की सभा में उपस्थित विभिन्न पात्रों की मनःस्थिति अलग-अलग है। नीचे दिए गए भावों/मनःस्थिति को दर्शाने वाली पंक्तियों को कविता से चिह्नित कीजिए और बताइए कि यह भाव किस पात्र से संबंधित है और उसकी इस मनःस्थिति का कारण क्या है? आपकी सहायता के लिए एक उदाहरण नीचे दिया गया है।

चिंता, क्रोध, व्यग्रता, भय, संयम/विनम्रता, ईर्ष्या/कुटिलता

भाव/मनःस्थिति	**संबंधित पंक्ति**	**संबंधित पात्र**	**मनःस्थिति का कारण**
चिंता	"बिधि अब सँवरी बात बिगारी"	सीता की माता सुनयना	पुत्री सीता के भविष्य (विवाह) के प्रति आशंकित और चिंतित

उत्तरः

भाव/मनःस्थिति	**संबंधित पंक्ति**	**संबंधित पात्र**	**मनःस्थिति का कारण**
चिंता	"बिधि अब सँवरी बात बिगारी"	सीता की माता सुनयना	पुत्री सीता के भविष्य (विवाह) के प्रति आशंकित और चिंतित
क्रोध	"अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा।"	परशुराम	शिव-धनुष खंडित देखकर असहनीय क्रोध उत्पन्न हुआ
व्यग्रता	"भृगुपति कर सुभाउ सुनि सीता। अरध निमेष कलप सम बीता।।"	सीता	परशुराम का क्रोधपूर्ण स्वभाव सुनकर उनके मन में भय और व्यग्रता उत्पन्न हुई
भय	"उठे सकल भय बिकल भुआला। पितु समेत कहि कहि निज नामा। लगे करन सब दंड प्रनामा।।"	सभा के राजा	परशुराम का भयानक वेश और रौद्र रुप देखकर
संयम/विनम्रता	"हृदयँ न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु।। नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।"	राम	स्वयं धनुष तोड़ने के बावजूद राम संयमित और विनम्र बने रहे
ईर्ष्या/कुटिलता	"अति डरु उतरु देत नृप नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं।।"	कुटिल राजा	जनक के चुप रहने और राम के संकट में पड़ने की संभावना से मन में प्रसन्न हुए

2. "अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं।"
परशुराम के पूछने पर जनक का मौन भयजनित है या विवेकपूर्ण निर्णय? संवाद की स्थिति के आधार पर विश्लेषण कीजिए।

विश्लेषण कैसे करें

1. संदर्भ स्पष्ट कीजिए — आरंभ में यह बताइए कि यह पंक्ति/घटना किस स्थिति में आई है, उससे पहले क्या घट चुका था।
2. विश्लेषण में घटना का वर्णन कम, उसका कारण और प्रभाव अधिक लिखना होता है — केवल क्या हुआ नहीं, बल्कि क्यों हुआ लिखिए।
3. कारण → भाव → परिणाम का क्रम बनाइए।

मैं यह भी मानता/मानती हूँ कि विनम्रता और सेवाभाव ही सच्ची महानता के आधार हैं।

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

1. नीचे दी गई पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए—
   - "देखत भृगुपति बेषु कराला।"
   - "बोले परसुधरहि अपमाने।।"
   - "सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू"

   यहाँ परशुराम को विभिन्न नामों से संबोधित किया गया है, जैसे— भृगुपति, परशुधर और भगुकुलेतु। आप इस कविता में अनेक विशेषताएँ देख सकते हैं, जैसे— दोहा-चौपाई का क्रम से होना, बिना वक्ता का नाम बताए उनका कथन कह देना, मुहावरों का उपयोग करना आदि। नीचे इस कविता की कुछ विशेषताएँ और उनके एक-एक उदाहरण दिए गए हैं। एक-एक उदाहरण आप लिखिए।

विशेषता (अलंकार)	अर्थ	उदाहरण
अनुप्रास अलंकार	एक ही वर्ण की बार-बार आवृत्ति	अरि करनी करि करिअ लराई
अतिशयोक्ति अलंकार	बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना	अरध निमेष कलप सम बीता
रुपक अलंकार	रुप का आरोपण करना (उपमेय में उपमान का अभेद)	पद सरोज मेले दोउ भाई

उत्तरः

विशेषता (अलंकार)	अर्थ	पाठ्यपुस्तक का उदाहरण	आपका उदाहरण
अनुप्रास अलंकार	एक ही वर्ण की बार-बार आवृत्ति	अरि करनी करि करिअ लराई	"सुर मुनि नाग नगर नर नारी" — 'न' की आवृत्ति
अतिशयोक्ति अलंकार	बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना	अरध निमेष कलप सम बीता	"उलटउँ महि जहँ लहि तव राजू" — पृथ्वी पलटने की अतिशयोक्ति
रुपक अलंकार	रुप का आरोपण करना (उपमेय में उपमान का अभेद)	पद सरोज मेले दोउ भाई	"श्रीरघुबीरु" — राम को वीर में अभेद

बहुभाषिकता

1. यह कविता अवधी भाषा में लिखी गई है जो कि हिंदी भाषा का ही एक स्वरूप है और उत्तर प्रदेश के अनेक स्थानों पर बोली जाती है। कविता में ऐसे बहुत से शब्द आए हैं, जो अवधी भाषा के हैं। ऐसे शब्दों को पहचान कर उनके खड़ी बोली हिंदी रुप लिखिए। साथ ही आपकी भाषा में इनके लिए कौन-से शब्द प्रयुक्त होते हैं, उन्हें भी लिखिए।

अवधी शब्द	खड़ी बोली का शब्द	मेरी भाषा में शब्द
कोही	क्रोधी	गुस्सैल
वेषु	वेष	रुप, भेष

उत्तरः

अवधी शब्द	खड़ी बोली का शब्द	मेरी भाषा में शब्द
कोही	क्रोधी	गुस्सैल
वेषु	वेष	रुप, भेष
बेगि	शीघ्र	जल्दी
लरिकाईं	बचपन/लड़कपन	बचपन
महि	पृथ्वी	धरती/ज़मीन
आयसु	आज्ञा	हुक्म, आदेश
रिसाइ	क्रोध करना	गुस्सा होना
ढोटा	पुत्र, बेटा	बेटा
बहोरि	फिर, पीछे	फिर
जैहहिं	जाएँगे	जाएँगे

लोक में भाषा

1. नीचे कोष्ठक में कविता से कुछ शब्द चुनकर दिए गए हैं। उन शब्दों से संबंधित लोकोक्ति और उनका अर्थ लिखकर स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए। आपकी सहायता के लिए एक उदाहरण नीचे दिया गया है।

मन,	राम,	राजा,	बात,	सिरु (सिर)

शब्द	लोकोक्ति	अर्थ
मन	मन के जीते जीत है, मन के हारे हार	आत्मविश्वास, साहस और मनोबल से सफलता निश्चित है

उत्तरः

शब्द	लोकोक्ति / मुहावरा	अर्थ	वाक्य प्रयोग
मन	मन के जीते जीत है, मन के हारे हार	आत्मविश्वास, साहस और मनोबल से सफलता निश्चित है	परीक्षा में असफल होने पर भी रमेश ने हार नहीं मानी — सच ही है, मन के जीते जीत है।
राम	राम नाम जपना, पराया माल अपना	दिखावटी धर्म करते हुए बेईमानी करना	कुछ लोग दिखाने को राम-राम जपते हैं, पर राम नाम जपना, पराया माल अपना — यह उन पर सटीक बैठता है।
राजा	राजा की राजनीति, प्रजा की भलाई	शासक का कर्तव्य प्रजा की भलाई करना है	अच्छे शासक को याद रखना चाहिए — राजा की राजनीति, प्रजा की भलाई।
बात	बात का धनी	जो अपनी कही बात का पालन करे	सच्चा मनुष्य बात का धनी होता है — कहे हुए को निभाता है।
सिरु (सिर)	सिर पर सवार होना	किसी को बहुत अधिक महत्व देकर बिगाड़ देना	माँ-बाप ने बच्चे को इतना प्यार दिया कि वह सिर पर सवार हो गया।

गद्य-रूप

1. नीचे लिखी चौपाई को पढ़िए—
"नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा॥
आयसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही॥"
इस चौपाई को हम गद्य-रूप में भी लिख सकते हैं। इसमें राम परशुराम से विनम्रतापूर्वक कहते हैं— हे नाथ! शिव-धनुष को तोड़ने वाला आपका ही कोई एक दास होगा। आपकी क्या आज्ञा है, मुझसे क्यों नहीं कहते? राम की यह बात सुनकर क्रोधित परशुराम कहते हैं।
अब आप नीचे दी गई चौपाई को गद्य-रुप में लिखिए—
"अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं॥
सुर मुनि नाग नगर नर नारी। सोचहिं सकल त्रास उर भारी॥"
उत्तरः
परशुराम के प्रश्न का उत्तर अत्यधिक भय के कारण राजा नहीं दे रहे थे। मन ही मन कुटिल राजा प्रसन्न हो रहे थे। देवता, मुनि, नाग, नगर के निवासी, नर और नारी — सभी अत्यंत चिंतित थे और उनके हृदय में भय का भार था।

गतिविधियाँ

1. यह कविता संवाद का सुंदर उदाहरण है। तालिका में दिए गए कथनों को पढ़कर बताइए कि कौन-सा कथन किसका हो सकता है। अपनी समझ से सही (✓) का चिह्न लगाइए—

कथन	राम	लक्ष्मण	परशुराम	जनक	सीता की माता (सुनयना)
शिव के धनुष को तोड़ने वाला आपका कोई दास ही हो सकता है।					
विधाता ने बनी-बनाई बात बिगाड़ दी।					
सेवक वह होता है जो सेवा का काम करे।					
इस कारण ये सब राजा आए हैं।					
बचपन में हमने ऐसी बहुत-सी धनहियाँ तोड़ डाली हैं।					
क्या आज्ञा है, मुझसे क्यों नहीं कहते?					
कहो जनक, किस कारण यह भीड़ है?					
इसी धनुष पर इतनी ममता क्यों!					

उत्तरः

कथन	राम	लक्ष्मण	परशुराम	जनक	सीता की माता (सुनयना)
शिव के धनुष को तोड़ने वाला आपका कोई दास ही हो सकता है।	✓				
विधाता ने बनी-बनाई बात बिगाड़ दी।					✓
सेवक वह होता है जो सेवा का काम करे।		✓			

इस कारण ये सब राजा आए हैं।				✓	
बचपन में हमने ऐसी बहुत-सी धनहियाँ तोड़ डाली हैं।		✓			
क्या आज्ञा है, मुझसे क्यों नहीं कहते?	✓				
कहो जनक, किस कारण यह भीड़ है?			✓		
इसी धनुष पर इतनी ममता क्यों!		✓			

2. रामचरितमानस के इस प्रसंग का मंचन लोकनाट्य, रामलीला और कठपुतली कला में बड़ी जीवंतता से किया जा सकता है। कलात्मक तकनीकों (ध्वनि, भाव, संगीत, वेशभूषा) का उपयोग करते हुए कविता को एक दृश्य नाटक के रूप में प्रस्तुत कीजिए।

उत्तरः
यह एक समूह-गतिविधि है। नीचे मंचन के लिए दिशानिर्देश दिए गए हैं।
दृश्य: जनक की सभा
वेशभूषाः
परशुराम: गेरुआ वस्त्र, जटा, हाथ में फरसा (लकड़ी से निर्मित), आँखों पर लाल रंग का प्रभाव
राम: नीले वस्त्र, मुकुट, धनुष
लक्ष्मण: हरे वस्त्र, वीरभाव
राजा जनक: राजसी पोशाक
ध्वनि संकेतः
परशुराम के आगमन पर भयावह संगीत
राम के संवाद पर शांत मधुर धुन
लक्ष्मण के व्यंग्य पर हल्की व्यंग्यात्मक ध्वनि
भाव-संकेतः
परशुराम: भृकुटि तनी, क्रोधपूर्ण चाल
राम: शांत मुस्कान, हाथ जोड़े
लक्ष्मण: हल्की मुस्कान, निडर मुद्रा
राजा और सभासद: सिकुड़े हुए, भयभीत

3. 'कठिन परिस्थितियों में भी सत्य कहने का साहस करना आवश्यक है।' इस विषय पर कक्षा में एक परिचर्चा अथवा वाद-विवाद गतिविधि के माध्यम से अपने विचार साझा कीजिए।

उत्तरः
मेरा पक्ष (समर्थन में) : हाँ, कठिन परिस्थितियों में भी सत्य कहने का साहस आवश्यक है।
1. इस पाठ में ही लक्ष्मण ने निडरता से सत्य कहा — चाहे उससे परशुराम और क्रोधित हुए। सत्य बोलना एक नैतिक दायित्व है।
2. यदि कोई गलत काम देखकर चुप रहे — जैसे सभी राजा चुप रहे — तो गलत को बल मिलता है।
3. सत्य बोलने का साहस आत्मसम्मान की नींव है। जो व्यक्ति भय से सत्य छुपाता है, वह धीरे-धीरे अपना आत्मविश्वास खो देता है।
4. इतिहास में महात्मा गांधी, भगत सिंह, अब्राहम लिंकन — सबने कठिन परिस्थितियों में सत्य का साहस दिखाया और अमर हो गए।

निष्कर्षः सत्य का मार्ग कठिन हो सकता है, पर अंत में वही मार्ग सम्मानजनक है।

मेरी पहेली

1. पाठ में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। अब अपने समूह में मिलकर ऐसी पहेलियाँ बनाइए जिनके उत्तर निम्नलिखित हों—

समाचार,	धनुष,	मन,	नाग,	नगर

उत्तरः
1. **समाचार**: जो आए वह बताए, जो न आए वह न पाए — जो सच्चाई को दूर-दूर तक पहुँचाए, उसे क्या कहते हैं? (उत्तर: समाचार)
2. **धनुष**: मेरे पास दो सींग हैं, मेरी पीठ झुकी रहती है, मैं आवाज़ करता हूँ — पर कभी चलता नहीं। जब मेरी डोर छोड़ो, तो तीर उड़ता है। मैं क्या हूँ? (उत्तर: धनुष)
3. **मन**: मैं न दिखता हूँ, न छुआ जाता हूँ — पर सब कुछ मुझसे होता है। जीतो तो जीत, हारो तो हार। बताओ मैं कौन हूँ? (उत्तर: मन)
4. **नाग**: मैं जमीन पर रेंगता हूँ, फन फैलाता हूँ। देवताओं का भूषण भी हूँ। कभी-कभी मणि भी धारण करता हूँ। मैं क्या हूँ? (उत्तर: नाग)
5. **नगर**: मैं वह हूँ जहाँ हजारों लोग रहते हैं — बाजार हैं, मंदिर हैं, सड़कें हैं। मैं गाँव से बड़ा हूँ। मैं क्या हूँ? (उत्तर: नगर)

भाषा संगम

1. "अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक <u>धनुष</u> कै तोरा।।"
नीचे 'धनुष' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।
कमान (हिंदी); धनुः, चापम् (संस्कृत); धणुख (पंजाबी); कमान (क़ौस) (उर्दू); कमान (कश्मीरी); धनुषु, कमानु (सिंधी); धनुष्य (मराठी); धनुष, कामठुं (गुजराती); धनुश (कोंकणी); धनु (नेपाली); धनुक (बांग्ला); धनु (असमिया); लिरुर् (मणिपुरी); धनुष, धनु, कार्मुक (ओड़िआ); धनुस्सु, विल्लु (तेलुगु); विल् (तमिल); धनुस्सॅ, विल्लॅु (मलयालम); बिल्लु, धनुष (कन्नड़)

- इनके अतिरिक्त यदि आप धनुष शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
- उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

उत्तरः

- राजस्थानी में: धनखो / धनुष
  भोजपुरी में: धनुख
  अवधी में: धनुहिया (छोटे के लिए), धनुष (बड़े के लिए)
  बुंदेली में: धनुष / कमान
  मैथिली में: धनुष / धनु
- हिंदी (मातृभाषा) में: "उसने अत्यंत क्रोध में कठोर वचन बोले — बताओ जड़ जनक, धनुष किसने तोड़ा?"
  अन्य भाषाओं के वाक्यों का हिंदी रूप:
  पंजाबी:
  "उसने बहुत गुस्से विच कठोर बचन कहे — दस्सो जड़ जनक, धनुख किसने तोड़िया?"
  मराठी:
  "त्याने अतिशय क्रोधाने कठोर शब्द बोले — सांग मूर्ख जनका, धनुष्य कोणी तोडले?"
  गुजराती:
  "तेणे अत्यंत क्रोधमा कठोर वचन बोल्या — कहो मूर्ख जनक, धनुष कोणे तोड्यूँ?"
  राजस्थानी:
  "उणनै बहुत गुस्सै में कड़वा बोल बोल्या — बता मूरख जनक, धनखो किणनै तोड़्यो?"

6. अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' के रचयिता कौन हैं?
   (क) रैदास (ख) कबीरदास
   (ग) सूरदास (घ) तुलसीदास
   उत्तरः
   (घ) तुलसीदास

2. तुलसीदास का जन्म किस राज्य में हुआ था?
   (क) बिहार (ख) मध्य प्रदेश
   (ग) राजस्थान (घ) उत्तर प्रदेश
   उत्तरः
   (घ) उत्तर प्रदेश

3. तुलसीदास का जीवन-काल किस शताब्दी में माना जाता है?
   (क) 14वीं–15वीं शताब्दी (ख) 15वीं–16वीं शताब्दी
   (ग) 16वीं–17वीं शताब्दी (घ) 17वीं–18वीं शताब्दी
   उत्तरः
   (ग) 16वीं–17वीं शताब्दी

4. तुलसीदास का प्रसिद्ध महाकाव्य कौन-सा है?
   (क) कवितावली (ख) विनयपत्रिका
   (ग) रामचरितमानस (घ) दोहावली
   उत्तरः
   (ग) रामचरितमानस

5. तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना किस भाषा में की?
   (क) ब्रजभाषा में (ख) संस्कृत में
   (ग) खड़ी बोली में (घ) अवधी में
   उत्तरः
   (घ) अवधी में

6. तुलसीदास ने विनयपत्रिका तथा कवितावली की रचना किस भाषा में की?
   (क) अवधी में (ख) ब्रजभाषा में
   (ग) संस्कृत में (घ) खड़ी बोली में
   उत्तरः
   (ख) ब्रजभाषा में

7. 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' रामचरितमानस के किस कांड से लिया गया है?
   (क) अयोध्याकांड (ख) अरण्यकांड
   (ग) बालकांड (घ) किष्किंधाकांड
   उत्तरः
   (ग) बालकांड

8. परशुराम सीता-स्वयंवर की सभा में क्रोधित होकर क्यों आए?
   (क) उन्हें सभा में आमंत्रण नहीं मिला था
   (ख) शिव-धनुष भंग का समाचार मिलने पर
   (ग) राम-लक्ष्मण को देखकर
   (घ) जनक ने उनका अपमान किया था
   उत्तरः
   (ख) शिव-धनुष भंग का समाचार मिलने पर

9. "देखत भृगुपति बेषु कराला" — यहाँ 'कराला' शब्द का क्या अर्थ है?
   (क) सुंदर और आकर्षक (ख) शांत और सौम्य
   (ग) भयानक और डरावना (घ) प्रसन्न और हर्षित
   उत्तरः
   (ग) भयानक और डरावना

10. "उठे सकल भय बिकल भुआला" — यहाँ 'भुआला' शब्द का क्या अर्थ है?
    (क) ब्राह्मण, वामन, पंडित (ख) राजा, महीप, भूपाल
    (ग) संत, योगी, महात्मा (घ) योद्धा, वीर, पराक्रमी
    उत्तरः
    (ख) राजा, महीप, भूपाल

11. परशुराम को देखकर सभा में उपस्थित राजाओं ने क्या किया?
(क) वे डर के मारे तुरंत ही जनक की सभा छोड़कर भाग गए।
(ख) उन्होंने अपनी तलवारें निकाल कर युद्ध की तैयारी की।
(ग) पिता समेत अपना नाम बताते हुए सबने दंडवत प्रणाम किया।
(घ) वे अपने-अपने सिंहासनों पर बिल्कुल चुपचाप बैठे रहे।

उत्तरः
(ग) पिता समेत अपना नाम बताते हुए सबने दंडवत प्रणाम किया।

12. "पितु समेत कहि कहि निज नामा। लगे करन सब दंड प्रनामा।।" — यह पंक्ति सभा में उपस्थित लोगों की किस मनःस्थिति को दर्शाती है?
(क) आदर और सम्मान
(ख) भक्ति और श्रद्धा
(ग) भय और शिष्टाचार
(घ) प्रेम और सहिष्णुता

उत्तरः
(ग) भय और शिष्टाचार

13. "जेहि सुभायँ चितवहिं हितु जानी। सो जानइ जनु आइ खुटानी।।" — इस पंक्ति का क्या भाव है?
(क) जनक की सभा में उपस्थित सभी राजा परशुराम के बहुत अच्छे मित्र बन गए।
(ख) जो भी परशुराम को मित्र समझकर देखता था वह समझता था जैसे उसकी खैर नहीं।
(ग) सभा में बैठे सभी राजा और प्रजाजन एकदम शांत होकर चुपचाप बैठे रहे।
(घ) श्री राम और लक्ष्मण ने आगे बढ़कर बड़े आदर से परशुराम को प्रणाम किया।

उत्तरः
(ख) जो भी परशुराम को मित्र समझकर देखता था वह समझता था जैसे उसकी खैर नहीं।

14. राजा जनक ने परशुराम से मिलने पर क्या किया?
(क) उन्होंने क्रोधित परशुराम को अपने दरबार की सभा से बाहर जाने को कहा।
(ख) उन्होंने बिना डरे परशुराम के तीव्र क्रोध पर बहुत कठोर उत्तर दिया।
(ग) उन्होंने गुरु विश्वामित्र को शांत स्वभाव से परशुराम से मिलाने भेजा।
(घ) स्वयं आकर सिर झुकाया और सीता को भी प्रणाम कराया।

उत्तरः
(घ) स्वयं आकर सिर झुकाया और सीता को भी प्रणाम कराया।

15. "जनक बहोरि आइ सिरु नावा। सीय बोलाइ प्रनामु करावा।।" — इस पंक्ति से राजा जनक के व्यवहार की कौन-सी विशेषता उजागर होती है?
(क) संवेदनशीलता (ख) शिष्टता
(ग) सहनशीलता (घ) उदासीनता

उत्तरः
(ख) शिष्टता

16. विश्वामित्र ने परशुराम को किन दोनों भाइयों से मिलाया?
(क) भरत और शत्रुघ्न से (ख) राम और भरत से
(ग) राम और लक्ष्मण से (घ) लक्ष्मण और शत्रुघ्न से

उत्तरः
(ग) राम और लक्ष्मण से

17. रिक्त स्थान भरिए —
"रामु लखनु दसरथ के ________, दीन्हि असीस देखि भल जोटा।।"
(क) भाई (ख) मित्र
(ग) ढोटा (घ) शिष्य

उत्तरः
(ग) ढोटा

18. "रामहि चितइ रहे थकि लोचन। रूप अपार मार मद मोचन।।" — इस पंक्ति में राम के रूप की क्या विशेषता बताई गई है?
(क) श्री राम का रूप उस समय जनक की सभा में उपस्थित अन्य राजाओं की तरह बहुत साधारण था।
(ख) राम का रूप अपार था और कामदेव के मद को भी हरने वाला था।
(ग) श्री राम कद-काठी में बहुत अधिक लंबे और संसार के अन्य योद्धाओं से अधिक बलशाली थे।
(घ) श्री राम का रूप शत्रुओं को डराने वाला और देखने में अत्यंत भयंकर तथा रौद्र था।

उत्तरः
(ख) राम का रूप अपार था और कामदेव के मद को भी हरने वाला था।

19. "बहुरि बिलोकि बिदेह सन कहह काह अति भीर" — इस पंक्ति में परशुराम ने किससे पूछा?
(क) विश्वामित्र से (ख) राम से
(ग) जनक (बिदेह) से (घ) लक्ष्मण से

उत्तरः
(ग) जनक (बिदेह) से

20. "पूछत जानि अजान जिमि ब्यापेउ कोपु सरीर।।" — इस पंक्ति में परशुराम की कौन-सी मनःस्थिति व्यक्त होती है?
(क) शांत और जिज्ञासु भाव से पूछना
(ख) प्रसन्न और हर्षित भाव से पूछना
(ग) क्रोध से आवेशित होकर पूछना
(घ) उदास और चिंतित भाव से पूछना

उत्तरः
(ग) क्रोध से आवेशित होकर पूछना

21. जनक ने परशुराम को स्वयंवर का क्या समाचार सुनाया?
(क) सीता ने स्वयंवर में भाग लेने से मना कर दिया
(ख) परशुराम को स्वयंवर सभा छोड़ने का अनुरोध किया
(ग) जिस कारण सब राजा यहाँ आए थे, वह कारण बताया
(घ) सभी राजाओं को धनुष तोड़ने में असफलता बताई

उत्तरः
(ग) जिस कारण सब राजा यहाँ आए थे, वह कारण बताया

22. "सुनत बचन फिरि अनत निहारे। देखे चापखंड महि डारे।।" — यह पंक्ति क्या दर्शाती है?
(क) परशुराम ने जनक की बात सुनकर दूसरी ओर देखा और धनुष के टुकड़े जमीन पर पड़े देखे।
(ख) परशुराम ने जनक की बात सुनकर श्री राम की ओर देखा जो अत्यंत शांत मुद्रा में खड़े थे।
(ग) परशुराम ने जनक की बात सुनकर लक्ष्मण की ओर देखा जो मुस्कुराते हुए उनकी तरफ देख रहे थे।
(घ) परशुराम ने जनक की बात सुनकर विश्वामित्र की ओर देखा जो उनसे शांत होने का निवेदन कर रहे थे।

उत्तरः
(क) परशुराम ने जनक की बात सुनकर दूसरी ओर देखा और धनुष के टुकड़े जमीन पर पड़े देखे।

23. परशुराम ने धनुष के टुकड़े देखकर अति रोष में क्या कठोर वचन कहे?
(क) "अरे जनक, धनुष किसने तोड़ा, बताओ!"
(ख) "कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा"
(ग) "यह धनुष मेरा था, इसे कैसे तोड़ा?"
(घ) "इस सभा में शिव-भक्त कहाँ हैं?"

उत्तरः
(ख) "कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा"

24. "बेगि देखाउ मूढ़ न त आजू। उलटउँ महि जहँ लहि तव राजू।।" — परशुराम की इस धमकी का क्या अर्थ है?
(क) मूर्ख राजा यहाँ से जल्दी चले जाओ नहीं तो मैं अभी तुम्हारे साथ युद्ध करूँगा।
(ख) तुरंत दिखाओ नहीं तो जहाँ तक तेरा राज्य है पृथ्वी उलट दूँगा।
(ग) तुम्हें आज ही अपना यह पूरा राज्य छोड़कर हमेशा के लिए दूर जाना होगा।
(घ) मैं क्रोध में आकर आज ही तुम्हारे इस सुंदर राज्य को पूरी तरह जला दूँगा।

उत्तरः
(ख) तुरंत दिखाओ नहीं तो जहाँ तक तेरा राज्य है पृथ्वी उलट दूँगा।

25. "अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं।।" — इस पंक्ति में 'कुटिल भूप' के हर्षित होने का क्या कारण था?
(क) वे सभी अहंकारी राजा परशुराम का उस सभा में अचानक आना अच्छा मानते थे।
(ख) वे सभी कपटी राजा श्री राम-लक्ष्मण की अद्भुत वीरता देखकर बहुत प्रसन्न थे।
(ग) वे जनक को परेशानी में देखकर मन ही मन प्रसन्न हो रहे थे।
(घ) वे सभी राजा जनक द्वारा सीता का स्वयंवर आयोजित करने पर अत्यधिक क्रोधित थे।

उत्तरः
(ग) वे जनक को परेशानी में देखकर मन ही मन प्रसन्न हो रहे थे।

26. "सुर मुनि नाग नगर नर नारी। सोचहिं सकल त्रास उर भारी।।" — इस पंक्ति में किनके हृदय में भारी भय था?
(क) जनक के दरबार में दूर-दूर से आए केवल पराक्रमी और अहंकारी राजाओं के।
(ख) परशुराम का भयानक फरसा देखकर केवल राजकुमार श्री राम और लक्ष्मण के।
(ग) स्वयंवर सभा के मध्य बैठी केवल राजकुमारी सीता और उनकी पूज्य माता के।
(घ) देव, मुनि, नाग, नगर और नर-नारी सभी के।

उत्तरः
(घ) देव, मुनि, नाग, नगर और नर-नारी सभी के।

27. "मन पछिताति सीय महतारी। बिधि अब सँवरी बात बिगारी।।" — सीता की माता के मन में क्या भाव था?
(क) वह परशुराम के भयानक वचनों को सुनकर उनके ऊपर अत्यंत क्रोधित हो गई।
(ख) वह मन ही मन प्रसन्न हुई कि अब शीघ्र ही उनकी पुत्री का विवाह हो जाएगा।
(ग) बनी-बनाई बात विधाता ने बिगाड़ दी — ऐसा सोचकर वह मन में पछताई।
(घ) वह राजसभा के इस भयंकर वातावरण के बीच भी पूरी तरह शांत बनी रही।

उत्तरः
(ग) बनी-बनाई बात विधाता ने बिगाड़ दी — ऐसा सोचकर वह मन में पछताई।

28. "अरध निमेष कलप सम बीता" — यह पंक्ति किसके संदर्भ में कही गई है?
(क) राजकुमार लक्ष्मण के लिए जो परशुराम को लगातार कड़े उत्तर दे रहे थे।
(ख) सीता के लिए जो परशुराम का स्वभाव सुनकर भयभीत हो गई।
(ग) राजा जनक के लिए जो धनुष टूटने के बाद भी अत्यधिक चिंतित दिखाई दे रहे थे।

(घ) परशुराम के लिए जो शिव का धनुष टूटा हुआ देखकर अत्यंत क्रोध में भरे थे।

उत्तरः

(ख) सीता के लिए जो परशुराम का स्वभाव सुनकर भयभीत हो गई।

29. "अरध निमेष कलप सम बीता" — यहाँ 'अरध निमेष' का क्या अर्थ है?
(क) पूरे चौबीस घंटे अर्थात एक दिन
(ख) क्षण भर, एक पल
(ग) आधा क्षण, आधा पल
(घ) प्राचीन समय की गणना के अनुसार एक पूरी घड़ी

उत्तरः

(ग) आधा क्षण, आधा पल

30. "हृदयँ न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु।।" — इस पंक्ति से राम के व्यक्तित्व की किस विशेषता का पता चलता है?
(क) श्री राम परशुराम के अत्यंत भयानक क्रोध को देखकर बहुत डरपोक थे।
(ख) श्री राम परशुराम के कठोर वचनों को सुनकर स्वयं अत्यंत क्रोधी थे।
(ग) राम धीर, गंभीर और भावनात्मक रूप से संतुलित थे।
(घ) श्री राम स्वयंवर सभा की ऐसी विकट परिस्थिति में उदास और निराश थे।

उत्तरः

(ग) राम धीर, गंभीर और भावनात्मक रूप से संतुलित थे।

31. राम ने परशुराम से विनम्रतापूर्वक क्या कहा?
(क) "तात मरम तुम नहिं कछु जाना। कहहु तजहु निज अभिमाना।।"
(ख) "आयसु देहु करब सब माना। रघुकुल तिलक तुमहिं सुजाना।।"
(ग) "नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।"
(घ) "तजि रीस मुनि जाहु परानी। भूपति सब डरपे सुनि बानी।।"

उत्तरः

(ग) "नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।"

32. राम का कथन "होइहि केउ एक दास तुम्हारा" उनके व्यक्तित्व की किस विशेषता को दर्शाता है?
(क) कूटनीति और चतुराई
(ख) विनम्रता और मर्यादा
(ग) त्याग और समर्पण
(घ) दृढ़ता और आत्मविश्वास

उत्तरः

(ख) विनम्रता और मर्यादा

33. **अभिकथन (A):** "हृदयँ न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु।।" — राम के हृदय में न हर्ष था न विषाद।
कारण (R): राम धीर, गंभीर और भावनात्मक संतुलन से युक्त थे जो उन्हें अन्य पात्रों से अलग करता है।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है

उत्तरः

(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है

34. "आयसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।" — राम के विनम्र वचन सुनकर परशुराम ने क्या किया?
(क) वे शांत हो गए और प्रसन्नतापूर्वक बोले
(ख) वे और क्रोधित हो गए तथा कठोर वचन बोले
(ग) वे वहाँ से चले गए
(घ) उन्होंने राम को आशीर्वाद दिया

उत्तरः

(ख) वे और क्रोधित हो गए तथा कठोर वचन बोले

35. "सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई।।" — इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(क) रूपक अलंकार (ख) उपमा अलंकार
(ग) अनुप्रास अलंकार (घ) यमक अलंकार

उत्तरः

(ग) अनुप्रास अलंकार

36. परशुराम ने राम से कहा कि जिसने शिव-धनुष तोड़ा वह उनका कैसा शत्रु है?
(क) सामान्य शत्रु की तरह
(ख) प्रिय मित्र के समान
(ग) अपने पुत्र के समान
(घ) सहसबाहु के समान शत्रु

उत्तरः

(घ) सहसबाहु के समान शत्रु

37. रिक्त स्थान भरिए —
"सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे _______ सब राजा।।"
(क) जैंहिं (ख) जाहिंगे
(ग) जावैंगे (घ) जैहहिं

उत्तरः

(घ) जैहहिं

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

काव्यांश 1

देखत भृगुपति बेषु कराला। उठे सकल भय बिकल भुआला।।
पितु समेत कहि कहि निज नामा। लगे करन सब दंड प्रनामा।।
जेहि सुभायँ चितवहिं हितु जानी। सो जानइ जनु आइ खुटानी।।
जनक बहोरि आइ सिरु नावा। सीय बोलाइ प्रनामु करावी।।
आसिष दीन्हि सखीं हरषानीं। निज समाज लै गईं सयानीं।।

1. 'लगे करन सब दंड प्रनामा' पंक्ति से राजाओं की किस मुख्य भावना का संकेत मिलता है?
   (क) अनन्य राजसी अहंकार (ख) परशुराम के प्रति निष्ठा
   (ग) प्राणों की रक्षा का भय (घ) धार्मिक उत्सव का हर्ष

2. निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए:
   I. परशुराम के भयानक वेष को देखकर सभा में उपस्थित सभी राजा भय से व्याकुल हो उठे।
   II. राजा जनक ने परशुराम का स्वागत करने के लिए अपनी पुत्री सीता को बुलाकर प्रणाम करवाया।
   (क) कथन I सही है, परंतु II गलत है।
   (ख) कथन II सही है, परंतु I गलत है।
   (ग) कथन I और II दोनों सही हैं।
   (घ) कथन I और II दोनों गलत हैं।

3. उपर्युक्त काव्यांश में परशुराम के आगमन पर सभा में मुख्य रूप से किस रस या भाव की सृष्टि हुई है?
   (क) शांत रस (ख) भयानक रस
   (ग) वीर रस (घ) हास्य रस

4. काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'भुआला' का सही अर्थ क्या है?
   (क) पृथ्वी के रक्षक (ख) वन के निवासी
   (ग) सभा के सैनिक (घ) राज्य के राजा

5. परशुराम के देखने के ढंग (चितवहिं) के संदर्भ में राजाओं को क्या प्रतीति हो रही थी?
   (क) अब कल्याण होगा
   (ख) अब मृत्यु आई है
   (ग) अब न्याय होगा
   (घ) अब उत्सव होगा

उत्तरः
1. (ग) प्राणों की रक्षा का भय
2. (ग) कथन I और II दोनों सही हैं।
3. (ख) भयानक रस
4. (घ) राज्य के राजा
5. (ख) अब मृत्यु आई है

काव्यांश 2

बिस्वामित्रु मिले पुनि आई। पद सरोज मेले दोउ भाई।
रामहु लखनु दसरथ के ढोटा। दीन्हि असीस देखि भल जोटा।।
रामहि चितइ रहे थकि लोचन। रूप अपार मार मद मोचन।।
बहुरि बिलोकि बिदेह सन कहहु काह अति भीर।
पूछत जानि अजान जिमि ब्यापेउ कोपु सरीर।।

1. 'पूछत जानि अजान जिमि' अंश से परशुराम के किस व्यवहार या मनोवृत्ति का पता चलता है?
   (क) वास्तविकता जानने की उत्सुकता
   (ख) अपनी अज्ञानता स्वीकार करना
   (ग) जानते हुए भी अनजान बनना
   (घ) राजा जनक से सलाह लेना

2. **अभिकथन (A):** राम और लक्ष्मण का सुंदर जोड़ा देखकर परशुराम ने उन्हें सहर्ष आशीर्वाद दिया।
   कारण (R): श्रीराम का अनुपम रूप कामदेव के भी गर्व को चूर करने वाला था।
   (क) (A) सही है, परंतु (R) गलत है।
   (ख) (A) गलत है, परंतु (R) सही है।
   (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
   (घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. 'रूप अपार मार मद मोचन' पंक्ति में कवि तुलसीदास की शैली की क्या विशेषता दिखाई देती है?
   (क) अत्यधिक दार्शनिक और रुखी शैली
   (ख) अत्यधिक काव्यात्मक और वर्णनात्मक
   (ग) अत्यधिक संवादात्मक और रूढ़िवादी
   (घ) अत्यधिक उपदेशात्मक और कड़े शब्द

4. इस काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'लोचन' का निम्नलिखित में से क्या अर्थ है?
   (क) सुंदर मुख (ख) कोमल हाथ
   (ग) मनुष्य की आँखें (घ) राजा के पैर

5. विश्वामित्र के मिलने के बाद दोनों भाइयों (राम-लक्ष्मण) ने क्या किया?
   (क) उन्होंने धनुष उठाया
   (ख) वे सभा से चले गए
   (ग) उन्होंने चरणों की वंदना की
   (घ) वे सभा में ऊँचे आसन पर बैठे

उत्तरः
1. (ग) जानते हुए भी अनजान बनना
2. (घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
3. (ख) अत्यधिक काव्यात्मक और वर्णनात्मक
4. (ग) मनुष्य की आँखें
5. (ग) उन्होंने चरणों की वंदना की

ने समाज में नीति, स्नेह, शील, विनय और त्याग जैसे उच्च मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करने का सफल प्रयास किया है।

3. तुलसीदास की अवधी और ब्रजभाषा पर पकड़ की क्या विशेषता है? उन्होंने अपनी कौन-सी रचनाएँ किस भाषा में लिखीं?

   उत्तरः
   तुलसीदास का अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं पर समान अधिकार था। उन्होंने अपने सुप्रसिद्ध महाकाव्य 'रामचरितमानस' की रचना अवधी भाषा में की है , जबकि अपनी अन्य प्रमुख रचनाओं जैसे 'विनयपत्रिका' और 'कवितावली' की रचना ब्रजभाषा में की है।

4. शिव-धनुष टूटने का समाचार मिलने पर मुनि परशुराम की क्या प्रतिक्रिया हुई और वे कहाँ पहुँचे?

   उत्तरः
   सीता स्वयंवर में श्रीराम द्वारा शिव-धनुष भंग होने का समाचार जब मुनि परशुराम को मिला, तो वे अत्यंत आक्रोशित हो गए। वे तीव्र रोष से भरे हुए तुरंत सीता स्वयंवर की सभा में पहुँचे और वहाँ उपस्थित राजाओं पर अपना क्रोध प्रकट करने लगे।

5. परशुराम के भयानक रूप को देखकर स्वयंवर सभा में उपस्थित राजाओं की क्या दशा हुई?

   उत्तरः
   भृगुपति परशुराम के अत्यंत भयानक और रौद्र वेश को देखते ही स्वयंवर की सभा में उपस्थित सभी राजा भय के मारे व्याकुल हो उठे। वे अत्यंत डरकर अपने पिता के नाम के साथ अपना परिचय देते हुए परशुराम को दंडवत प्रणाम करने लगे।

6. राजा जनक ने परशुराम के आगमन पर शिष्टाचार का निर्वाह किस प्रकार किया?

   उत्तरः
   परशुराम को क्रोधित देखकर राजा जनक ने आगे बढ़कर उनके सामने अपना सिर नवाया और आदर प्रकट किया। इसके बाद उन्होंने अपनी पुत्री सीता को भी वहाँ बुलाया और परशुराम से उनका सम्मानपूर्वक अभिवादन और प्रणाम करवाया।

7. गुरु विश्वामित्र के साथ दोनों भाइयों (राम-लक्ष्मण) ने परशुराम से मिलने पर क्या किया?

   उत्तरः
   जब गुरु विश्वामित्र परशुराम से मिले, तब उनके साथ उपस्थित दोनों भाई राम और लक्ष्मण आगे बढ़े। उन्होंने अत्यंत आदरपूर्वक मुनि परशुराम के चरण-कमलों में अपना सिर झुकाया और उन्हें सम्मान सहित प्रणाम किया।

8. राजा दशरथ के पुत्रों को देखकर मुनि परशुराम की तात्कालिक प्रतिक्रिया क्या थी?

   उत्तरः
   राजा दशरथ के दोनों बालकों—राम और लक्ष्मण को एक साथ देखकर और उनकी सुंदर जोड़ी को निहारकर परशुराम ने उन्हें उत्तम आशीर्वाद दिया। वे एकटक स्थिर होकर अपार सौंदर्य से युक्त श्रीराम के रूप को थके हुए नेत्रों से देखते रह गए।

9. परशुराम ने राजा जनक से क्रोधित होकर क्या पूछा और धरती पर बिखरे टुकड़ों को देखकर क्या कहा?

   उत्तरः
   श्रीराम के सौंदर्य को देखने के बाद परशुराम का क्रोध पुनः जाग उठा। उन्होंने राजा जनक से पूछा कि यहाँ इतनी भारी भीड़ क्यों है? फिर ज़मीन पर टूटे हुए शिव-धनुष के टुकड़ों को देखकर उन्होंने अत्यंत कठोर वचनों में धनुष तोड़ने वाले का नाम पूछा।

10. परशुराम के अत्यधिक क्रोध को देखकर माता सुनयना (सीता की माता) के मन में क्या विचार आ रहे थे?

    उत्तरः
    परशुराम के भयानक रौद्र रूप और कठोर वचनों को सुनकर माता सुनयना का मन भारी त्रास और चिंता से भर गया। वे मन ही मन पछताते हुए सोचने लगीं कि विधाता ने अचानक बनी-बनाई बात को पूरी तरह से बिगाड़ दिया है।

11. परशुराम के क्रोध के समय सीता जी की क्या स्थिति थी और उनके लिए समय कैसे बीत रहा था?

    उत्तरः
    भृगुपति परशुराम के अत्यंत क्रोधी स्वभाव के बारे में सुनकर जानकी जी बहुत भयभीत हो गईं। उनके मन में इतना अधिक डर था कि उनके लिए स्वयंवर का वह आधा पल भी एक कल्प (युग) के समान अत्यंत लंबा और कष्टदायी प्रतीत हो रहा था।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. तुलसीदास की अन्य प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए तथा उनके काव्य की अंतर्दृष्टि पर प्रकाश डालिए।

   उत्तरः
   तुलसीदास जी ने 'रामचरितमानस' के अतिरिक्त कई कालजयी कृतियों की रचना की है, जिनमें प्रमुख रूप से 'कवितावली', 'गीतावली', 'दोहावली', 'कृष्णगीतावली', 'विनयपत्रिका' और 'हनुमान बाहुक' सम्मिलित हैं। उनके संपूर्ण काव्य में मानव-प्रकृति, लोकजीवन और इस जीवन-जगत से संबंधित बहुत ही गहरी अंतर्दृष्टि स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। उन्होंने समाज को मर्यादित और नैतिक रूप से सुदृढ़ बनाने के लिए अपने काव्यों में विभिन्न आदर्शों को बखूबी पिरोया है।

2. 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' का मुख्य कथानक क्या है? यह अंश रामचरितमानस के किस कांड से लिया गया है?

उत्तरः
यह प्रस्तुत अंश तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के 'बालकांड' से साभार लिया गया है। इसका मुख्य कथानक सीता स्वयंवर की उस घटना पर आधारित है जहाँ श्रीराम द्वारा शिव का प्राचीन धनुष तोड़े जाने पर मुनि परशुराम अत्यंत क्रोधित होकर सभा में आते हैं। वहाँ उनके रोषपूर्ण और तेजस्वी रुप का सामना करते हुए राम की विनम्रता और लक्ष्मण के व्यंग्य वचनों से एक नाटकीय संवाद की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

3. परशुराम ने राजा जनक को डराते हुए क्या चेतावनी दी और इसका सभा में उपस्थित कुटिल राजाओं पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तरः
परशुराम ने अत्यंत क्रोध में आकर राजा जनक से कहा कि वह धनुष तोड़ने वाले को तुरंत सामने लाए, अन्यथा वे आज ही पृथ्वी को पलट देंगे और जहाँ तक जनक का राज्य है, उसे नष्ट कर देंगे। इस भयानक क्रोध को देखकर भय के कारण राजा जनक कोई उत्तर नहीं दे पा रहे थे , परंतु स्वयंवर में आए अन्य कपटी और कुटिल राजा मन ही मन ईर्ष्यावश अत्यंत प्रसन्न हो रहे थे।

4. सभा में व्याप्त भय के वातावरण के बीच श्रीराम ने आगे बढ़कर परशुराम से क्या कहा?

उत्तरः
जब पूरी स्वयंवर सभा, देवता, मुनि, मनुष्य और स्वयं जानकी जी भय से काँप रहे थे, तब श्रीराम ने अपने शांत और धीर-गंभीर स्वभाव का परिचय दिया। श्रीराम ने अपने हृदय में बिना किसी हर्ष या शोक के अत्यंत मधुरता से परशुराम से कहा कि हे नाथ! शिवजी के इस विशाल धनुष को तोड़ने वाला आपका ही कोई एक विनम्र दास होगा। उन्होंने अत्यंत शांत मन से परशुराम का क्रोध शांत करने का प्रयास किया।

5. श्रीराम के शांत वचनों को सुनकर परशुराम ने सेवक और शत्रु की परिभाषा किस प्रकार दी?

उत्तरः
श्रीराम की विनम्र बात सुनकर क्रोधी मुनि परशुराम और अधिक भड़क गए। उन्होंने सेवक और शत्रु के अंतर को स्पष्ट करते हुए कहा कि सेवक तो वह होता है जो वास्तव में सेवा का काम करे। जिसने भी इस शिव-धनुष को तोड़ने का दुस्साहस किया है, उसने शत्रु का काम किया है और शत्रुता का काम करने वाले के साथ केवल लड़ाई ही की जाती है।

6. परशुराम ने धनुष तोड़ने वाले को सहस्त्रबाहु के समान अपना शत्रु बताते हुए राज-समाज को क्या अल्टीमेटम दिया?

उत्तरः
परशुराम ने कड़े शब्दों में घोषणा की कि जिसने भी शिव-धनुष तोड़ा है, वह सहस्त्रबाहु के समान ही मेरा सबसे बड़ा शत्रु है। उन्होंने उपस्थित समाज को चेतावनी दी कि वह पापी तुरंत इस राज-समाज को छोड़कर अलग खड़ा हो जाए , क्योंकि यदि वह ऐसा नहीं करता है, तो उसके चक्कर में यहाँ उपस्थित सभी राजा मेरे हाथों व्यर्थ ही मारे जाएँगे।

7. परशुराम की क्रोधभरी बातें सुनकर लक्ष्मण की क्या प्रतिक्रिया थी और उन्होंने परशुराम का उपहास कैसे उड़ाया?

उत्तरः
परशुराम की अत्यंत उग्र और अहंकारपूर्ण बातें सुनकर लक्ष्मण मन ही मन मुस्कुराने लगे और उन्होंने परशुराम का उपहास करते हुए अपमानजनक वचनों में उत्तर दिया। लक्ष्मण ने कहा कि हमने बचपन (लरिकाईं) में खेल-खेल में ऐसी बहुत-सी छोटी धनुहियाँ तोड़ी हैं, परंतु हे गोसाईं! आपने कभी भी इस प्रकार का भयानक क्रोध नहीं किया। फिर इसी धनुष पर आपकी इतनी विशेष ममता किस कारण से है?

8. लक्ष्मण के व्यंग्य वचनों को सुनकर भृगुकुलकेतु परशुराम ने उन्हें काल के वश में बताते हुए क्या कहा?

उत्तरः
लक्ष्मण की मर्मभेदी व्यंग्योक्तियाँ सुनकर भृगुकुल के केतुस्वरूप परशुराम का क्रोध सातवें आसमान पर पहुँच गया। उन्होंने कड़ककर कहा कि हे राजा के बालक! तू काल के वश में होने के कारण अपने आप को संभालकर नहीं बोल पा रहा है। जिस शिव-धनुष को पूरा संसार जानता है (त्रिपुरारि धनु), उसे तू बचपन में तोड़ी गई साधारण धनुहियों के समान बताकर उनका अपमान कर रहा है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' पाठ के आधार पर प्रतिपादित कीजिए कि संवाद किस प्रकार कविता के कथानक और पात्रों के चरित्र का निर्माण करते हैं?

उत्तरः
तुलसीदास द्वारा रचित यह अंश काव्यात्मक विधा में संवाद-प्रस्तुति का एक अत्यंत अनूठा और उत्कृष्ट उदाहरण है। इस कविता में संवादों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि संवादों के माध्यम से ही पूरी कथा का क्रमिक और नाटकीय विकास होता है। बिना किसी वक्ता के नाम का प्रत्यक्ष उल्लेख किए, उनके कथनों के द्वारा ही पूरी स्थिति स्पष्ट हो जाती है। ये संवाद ही पात्रों के अंतर्निहित चरित्र और उनकी मनःस्थिति को पाठकों के सामने सजीव रूप में लाते हैं। उदाहरण के लिए, परशुराम के रौद्र और अहंकारपूर्ण वचनों से उनका उग्र स्वभाव , लक्ष्मण के तार्किक और तीखे प्रत्युत्तरों से उनकी निडरता व चंचलता , तथा श्रीराम के गिने-चुने शांत वाक्यों से उनकी मर्यादा, धीरज और गहरी विनम्रता का पता चलता है। संवादों के कारण ही कविता में अद्भुत नाटकीयता और रसों की विविधता (रौद्र, वीर, शांत) उत्पन्न होती है।

2. सीता स्वयंवर की सभा में परशुराम के आगमन पर विभिन्न पात्रों (राजा जनक, सीता, सुनयना और अन्य राजाओं) की मानसिक दशा का विस्तृत विश्लेषण कीजिए।

उत्तरः
परशुराम के अचानक आगमन और उनके भयानक, रौद्र रूप को देखकर पूरी सभा में एक गहरा मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ा, जिसके कारण अलग-अलग पात्रों की मनःस्थिति भिन्न-भिन्न रूप में दिखाई देती है:

1. **राजा जनक और उपस्थित राजाः** सभा में उपस्थित समस्त राजा और स्वयं राजा जनक भय के मारे व्याकुल हो उठे। जनक इतने डर गए थे कि परशुराम के तीखे प्रश्नों का विवेकपूर्ण मौन धारण कर कोई उत्तर नहीं दे पा रहे थे।
2. **कुटिल राजाः** सभा में कुछ ऐसे कपटी और कुटिल राजा भी थे जो मन ही मन जनक को संकट में देखकर ईर्ष्या और कुटिलतावश अत्यधिक प्रसन्न हो रहे थे।
3. **माता सुनयना और सीता जीः** सीता की माता सुनयना अपनी पुत्री के भविष्य को लेकर गहरी चिंता और व्यग्रता में डूब गईं और विधाता को कोसने लगीं। वहीं, सीता जी स्वयं परशुराम के क्रोधी स्वभाव को जानकर इतनी अधिक भयभीत थीं कि उनके लिए समय का एक छोटा सा अंश (आधा पल) भी एक युग के समान भारी हो गया था।

3. "तुलसीदास ने एक ही विकट परिस्थिति में राम और लक्ष्मण की दो विपरीत जीवन-शैलियों और प्रतिक्रियाओं को दर्शाया है।" इस कथन की समीक्षा पाठ के संदर्भ में कीजिए।

उत्तरः
तुलसीदास जी ने इस प्रसंग में विपरीत स्वभाव के माध्यम से संतुलन की महत्ता को स्थापित किया है। जब परशुराम का क्रोध चरम पर था और पूरी सभा थर-थर काँप रही थी , तब राम और लक्ष्मण ने दो बिल्कुल अलग मार्ग चुने:

1. **श्रीराम का मार्ग (विनम्रता और संयम):** श्रीराम के हृदय में न तो कोई भय था, न कोई व्याकुलता। उन्होंने भावनात्मक संतुलन का परिचय देते हुए स्वयं को परशुराम का 'एक दास' बताया। राम का यह मार्ग मर्यादा, शील, विनय और विवेक का मार्ग है , जो अंततः परशुराम के अहंकार और उग्रता को शांत करने में पूर्णतः सफल सिद्ध होता है
2. **लक्ष्मण का मार्ग (तर्क और व्यंग्य):** इसके विपरीत, लक्ष्मण ने वीरता, तर्क और तीखे व्यंग्य का मार्ग चुना। वे परशुराम की शक्ति से डरे बिना उनके आत्मश्लाघा से भरे वचनों को चुनौती देते हैं और उनका उपहास उड़ाते हैं। यद्यपि लक्ष्मण का तर्क वीर रस को बढ़ाता है , परंतु वह परशुराम के क्रोध की अग्नि में घी का काम करता है।

4. पाठ के आधार पर श्रीराम के चरित्र की उन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए जो उन्हें एक कुशल, आदर्श और भावनात्मक रूप से संतुलित व्यक्ति के रूप में स्थापित करती हैं।

उत्तरः
इस पूरे प्रसंग में श्रीराम का चरित्र अन्य सभी पात्रों से बिल्कुल अलग, अद्वितीय और बहुत ऊँचा दिखाई देता है। उनके चरित्र की निम्नलिखित मुख्य विशेषताएँ उभरकर सामने आती हैं:

1. **भावनात्मक संतुलन (स्थिरप्रज्ञता):** जब पूरी सभा, राजा, और मुनि भय से व्याकुल थे , तब श्रीराम के हृदय में न तो कोई हर्ष था और न ही कोई विषाद। वे पूरी तरह से शांत और स्थिर थे।
2. **विनम्रता और शील:** वे परशुराम जैसे परम क्रोधी मुनि के सामने भी अपनी मर्यादा नहीं भूलते और स्वयं को उनका एक अदना सा सेवक या दास कहते हैं।
3. **मर्यादा और धीरजः** वे जानते हैं कि किस परिस्थिति में कैसा व्यवहार करना चाहिए। वे लक्ष्मण की तरह उग्र नहीं होते, बल्कि अपने धीर-गंभीर शांत स्वरूप से विपरीत परिस्थितियों को संभालते हैं। अंततः, श्रीराम के इसी विनयपूर्ण व्यवहार, उदात्त चरित्र और उनकी शक्ति के वास्तविक परिचय के कारण ही परशुराम का महाक्रोध पूरी तरह शांत हो जाता है।

5. 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' कविता की प्रमुख साहित्यिक, भाषाई एवं काव्यात्मक विशेषताओं का सोदाहरण विस्तृत विवेचन कीजिए।

उत्तरः
गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित यह काव्यात्मक अंश साहित्यिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है, जिसकी मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. **भाषाई सौंदर्यः** यह कविता मूलतः 'अवधी भाषा' में रचित है, जो खड़ी बोली हिंदी का ही एक प्राचीन और मधुर साहित्यिक स्वरूप है। इसमें 'कोही' (क्रोधी), 'वेषु' (वेष), 'महि' (पृथ्वी), 'बिधि' (विधाता) जैसे विशुद्ध अवधी शब्दों का सुंदर प्रयोग हुआ है।
2. **शैली और छंद विधानः** यह संपूर्ण कविता 'दोहा-चौपाई' के सुंदर और निश्चित क्रम में बंधी हुई है। संवादों में नाटकीयता और मुहावरों का सहज उपयोग इसे जीवंत बनाता है।
3. **अलंकारों का अनूठा प्रयोगः** तुलसीदास जी ने कविता के सौंदर्य को बढ़ाने के लिए उत्कृष्ट अलंकारों का प्रयोग किया है:
    1. **अनुप्रास अलंकारः** "अरि करनी करि करिअ लराई" (क और र वर्ण की आवृत्ति)।
    2. **अतिशयोक्ति अलंकारः** "अरध निमेष कलप सम बीता" (बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहना)।
    3. **रूपक अलंकारः** "पद सरोज मेले दोउ भाई" (चरणों पर कमल का सीधा आरोपण)।

38. "सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने।।" — लक्ष्मण के मुसकुराने का क्या कारण था?
(क) वे सभा में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करना चाहते थे
(ख) उन्हें राम के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करना था
(ग) वे परशुराम की शक्ति से अनभिज्ञ थे
(घ) वे परशुराम को चुनौती देना और अपमानित करना चाहते थे

उत्तरः
(घ) वे परशुराम को चुनौती देना और अपमानित करना चाहते थे

39. "एहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू।।" — यहाँ 'भृगुकुलकेतू' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
(क) राम के लिए (ख) लक्ष्मण के लिए
(ग) जनक के लिए (घ) परशुराम के लिए

उत्तरः
(घ) परशुराम के लिए

40. "तिपुरारि" शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
(क) विष्णु के लिए (ख) इंद्र के लिए
(ग) शिव के लिए (घ) ब्रह्मा के लिए

उत्तरः
(ग) शिव के लिए

41. **अभिकथन (A):** "सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने।।" — लक्ष्मण ने परशुराम का अपमान किया।
कारण (R): लक्ष्मण परशुराम को चुनौती देना चाहते थे और उनके क्रोध से अप्रभावित रहे।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है

उत्तरः
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है

42. निम्नलिखित में से कौन-से कथन इस संवाद के पात्रों के बारे में सही हैं?

I. राम ने विनम्रता से परशुराम को दास कहकर संबोधित किया।

II. लक्ष्मण ने परशुराम को व्यंग्य-वचनों से अपमानित किया।

III. जनक ने परशुराम के क्रोध का कठोर उत्तर दिया।
(क) केवल I और II सही हैं (ख) केवल II और III सही हैं
(ग) केवल I और III सही हैं (घ) तीनों कथन सही हैं

उत्तरः
(क) केवल I और II सही हैं

43. "पद सरोज मेले दोउ भाई" — इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(क) अनुप्रास अलंकार (ख) उपमा अलंकार
(ग) रूपक अलंकार (घ) यमक अलंकार

उत्तरः
(ग) रूपक अलंकार

44. इस काव्य-अंश की भाषा के बारे में कौन-सा कथन सही है?
(क) यह कविता खड़ी बोली हिंदी में लिखी गई है
(ख) यह कविता अवधी भाषा में लिखी गई है
(ग) यह कविता संस्कृत भाषा में लिखी गई है
(घ) यह कविता ब्रजभाषा में लिखी गई है

उत्तरः
(ख) यह कविता अवधी भाषा में लिखी गई है

45. तुलसीदास ने इस संवाद-काव्य में राम और लक्ष्मण के माध्यम से किस बात को दर्शाया है?
(क) राम और लक्ष्मण दोनों ने परशुराम से युद्ध किया और उनका क्रोध शांत किया।
(ख) राम और लक्ष्मण दोनों ने परशुराम का भय खाकर चुप रहना उचित समझा।
(ग) एक ही परिस्थिति के प्रति राम की विनम्रता और लक्ष्मण का तर्कपूर्ण व्यंग्य दो अलग प्रतिक्रियाएँ हैं।
(घ) लक्ष्मण ने राम को परशुराम के क्रोध से बचाने का प्रयास किया।

उत्तरः
(ग) एक ही परिस्थिति के प्रति राम की विनम्रता और लक्ष्मण का तर्कपूर्ण व्यंग्य दो अलग प्रतिक्रियाएँ हैं।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. गोस्वामी तुलसीदास का जीवन-काल क्या माना जाता है और उनके प्रसिद्ध महाकाव्य का नाम क्या है?

उत्तरः
गोस्वामी तुलसीदास का जीवन-काल 16वीं-17वीं शताब्दी (सन् 1532-1623) के मध्य माना गया है। 'रामचरितमानस' उनका सबसे प्रसिद्ध और लोकप्रिय महाकाव्य है, जो उनकी अनन्य रामभक्ति और सृजनात्मक कौशल का मनोरम उदाहरण प्रस्तुत करता है।

2. तुलसीदास ने अपने काव्य में 'राम' को किस रूप में प्रस्तुत किया है और उनके माध्यम से किन मूल्यों की स्थापना की है?

उत्तरः
तुलसीदास के काव्यों में राम मानवीय मर्यादाओं और आदर्शों के अनूठे प्रतीक हैं। राम के चरित्र के माध्यम से तुलसीदास

काव्यांश 3

समाचार कहि जनक सुनाए। जेहि कारन महीप सब आए।
सुनत बचन फिरि अनत निहारे। देखे चापखंड महि डारे।।
अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा।।
बेगि देखाउ मूढ़ न त आजू। उलटउँ महि जहँ लहि तव राजू।।
अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं।।

1. 'कुटिल भूप हरषे मन माहीं' पंक्ति से अन्य राजाओं की किस दुर्भावना का संकेत मिलता है?
(क) परशुराम के प्रति अटूट निष्ठा
(ख) जनक की विपत्ति पर प्रसन्नता
(ग) शिव-धनुष के प्रति सम्मान
(घ) स्वयंवर की सफलता पर गर्व

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. परशुराम ने धरती पर पड़े शिव-धनुष के टुकड़ों को देखकर तीव्र क्रोध व्यक्त किया।
II. राजा जनक ने परशुराम के डर के मारे तुरंत उस राजा का नाम बता दिया जिसने धनुष तोड़ा था।
(क) कथन I सही है, परंतु II गलत है।
(ख) कथन II सही है, परंतु I गलत है।
(ग) कथन I और II दोनों सही हैं।
(घ) कथन I और II दोनों गलत हैं।

3. "उलटउँ महि जहँ लहि तव राजू" पंक्ति में परशुराम का स्वर कैसा है?
(क) अत्यंत विनम्र और याचनापूर्ण
(ख) अहंकारपूर्ण और भयानक धमकीभरा
(ग) अत्यधिक शोकाकुल और दुखी
(घ) धार्मिक और नीतिपरक उपदेशात्मक

4. काव्यांश में प्रयुक्त 'महि' शब्द का सही अर्थ क्या है?
(क) राजा का मुकुट (ख) विशाल महल
(ग) संपूर्ण पृथ्वी (घ) पुराना धनुष

5. जनक से समाचार सुनने के बाद परशुराम ने क्या देखा?
(क) सीता का विवाह मंडप
(ख) राजाओं की बड़ी सेना
(ग) धनुष के टूटे टुकड़े
(घ) विश्वामित्र का ऊँचा आसन

उत्तरः
1. (ख) जनक की विपत्ति पर प्रसन्नता
2. (क) कथन I सही है, परंतु II गलत है।
3. (ख) अहंकारपूर्ण और भयानक धमकीभरा
4. (ग) संपूर्ण पृथ्वी
5. (ग) धनुष के टूटे टुकड़े

काव्यांश 4

सुर मुनि नाग नगर नर नारी। सोचहिं सकल त्रास उर भारी॥
मन पछिताति सीय महतारी। बिधि अब सँवरी बात बिगारी।।
भृगुपति कर सुभाउ सुनि सीता। अरध निमेष कलप सम बीता।।
सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीरु।
हृदयं न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु।।

1. 'बिधि अब सँवरी बात बिगारी' पंक्ति के अनुसार सीता की माता के मन में क्या मुख्य चिंता है?
(क) राजाओं का युद्ध होना
(ख) स्वयंवर का रद्द होना
(ग) परशुराम द्वारा अनिष्ट होना
(घ) विधाता का अनुकूल होना

2. **अभिकथन (A):** सीता जी के लिए समय का एक छोटा-सा अंश भी कल्प (युग) के समान लंबा प्रतीत हो रहा था।
कारण (R): वे परशुराम के अत्यंत क्रोधी और उग्र स्वभाव से भली-भाँति परिचित थीं और भयभीत थीं।
(क) (A) सही है, परंतु (R) गलत है।
(ख) (A) गलत है, परंतु (R) सही है।
(ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. जब पूरी सभा भय से व्याकुल थी, तब श्रीराम का मनोभाव अन्य लोगों से किस प्रकार भिन्न था?
(क) वे अत्यधिक क्रोधित थे
(ख) वे पूर्णतः संतुलित व शांत थे
(ग) वे अत्यंत डरे हुए थे
(घ) वे बहुत अधिक हर्षित थे

4. काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'भीरु' का निम्नलिखित में से क्या अर्थ है?
(क) अत्यधिक साहसी (ख) भयभीत या डरी हुई
(ग) क्रोध से भरी हुई (घ) अत्यंत प्रसन्नचित्त

5. काव्यांश के अनुसार सभा में उपस्थित कौन-कौन से लोग हृदय में भारी डर के कारण सोच में डूबे थे?
(क) केवल जनक और विश्वामित्र
(ख) केवल सभा के सभी राजा
(ग) देवता, मुनि, नाग और नर-नारी
(घ) केवल सीता और उनकी सखियाँ

उत्तरः
1. (ग) परशुराम द्वारा अनिष्ट होना
2. (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
3. (ख) वे पूर्णतः संतुलित व शांत थे
4. (ख) भयभीत या डरी हुई
5. (ग) देवता, मुनि, नाग और नर-नारी

काव्यांश 5

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।
आयसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई॥
सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा।।

1. "होइहि केउ एक दास तुम्हारा" पंक्ति के माध्यम से श्रीराम के चरित्र की किस विशेषता का संकेत मिलता है?
(क) अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना
(ख) परशुराम को युद्ध की चुनौती देना
(ग) अत्यधिक विनम्रता और मर्यादित आचरण
(घ) अपनी गलती को छिपाने का प्रयास

2. निम्नलिखित कथनों को पढ़कर सही विकल्प चुनिए:
I. परशुराम के अनुसार सच्चा सेवक वही है जो सदैव सेवा का कार्य करता है।
II. परशुराम ने शिव-धनुष तोड़ने वाले को अपना परम मित्र स्वीकार किया है।
(क) कथन I सही है, परंतु II गलत है।
(ख) कथन II सही है, परंतु I गलत है।
(ग) कथन I और II दोनों सही हैं।
(घ) कथन I और II दोनों गलत हैं।

3. 'सो बिलगाउ बिहाइ समाजा' पंक्ति में मुनि परशुराम का मुख्य स्वर या टोन कैसा है?
(क) उपदेशात्मक और शांत
(ख) आदेशात्मक और आक्रामक
(ग) संदेहास्पद और दुविधापूर्ण
(घ) क्षमाशील और दयालु

4. काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'कोही' का सटीक अर्थ क्या है?
(क) अत्यंत शांत व्यक्ति (ख) क्रोधी स्वभाव वाला
(ग) वन में रहने वाला (घ) बहुत ज्ञानी पुरुष

5. परशुराम ने शिव-धनुष तोड़ने वाले की तुलना अपने किस शत्रु से की है?
(क) राजा जनक से
(ख) राजा दशरथ से
(ग) सहस्त्रबाहु नामक राजा से
(घ) सभा के सभी कुटिल राजाओं से

उत्तरः
1. (ग) अत्यधिक विनम्रता और मर्यादित आचरण
2. (क) कथन I सही है, परंतु II गलत है।
3. (ख) आदेशात्मक और आक्रामक
4. (ख) क्रोधी स्वभाव वाला
5. (ग) सहस्त्रबाहु नामक राजा से

काव्यांश 6

सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने।।
बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं।।
एहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू॥
रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार।।

1. 'बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं' कहकर लक्ष्मण परशुराम के समक्ष क्या सिद्ध करना चाहते हैं?
(क) परशुराम का क्रोध सर्वथा अनुचित है।
(ख) बचपन में वे बहुत पराक्रमी थे।
(ग) शिव-धनुष कोई विशेष धनुष नहीं था।
(घ) राजा जनक निर्दोष और सच्चे हैं।

2. **अभिकथन (A):** लक्ष्मण के व्यंग्य वचनों को सुनकर मुनि परशुराम का क्रोध और अधिक भड़क उठा।
कारण (R): लक्ष्मण ने शिव-धनुष की तुलना बचपन में तोड़ी गई साधारण धनुहियों से कर दी थी।
(क) (A) सही है, परंतु (R) गलत है।
(ख) (A) गलत है, परंतु (R) सही है।
(ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. 'बोले परसुधरहि अपमाने' पद में लक्ष्मण के बात करने के ढंग में मुख्य रूप से क्या झलकता है?
(क) गहरा आदर और विनय
(ख) निडरता और व्यंग्य का भाव
(ग) अत्यधिक डर और घबराहट
(घ) धार्मिक ज्ञान और दर्शन

4. काव्यांश में प्रयुक्त 'तिपुरारि' शब्द किस देवता के लिए प्रयुक्त हुआ है?
(क) भगवान विष्णु के लिए (ख) भगवान ब्रह्मा के लिए
(ग) भगवान शिव के लिए (घ) भगवान इंद्र के लिए

5. परशुराम के अनुसार लक्ष्मण किस कारणवश संभलकर नहीं बोल पा रहे हैं?
(क) अत्यधिक राजसी वैभव के कारण
(ख) बचपन की नासमझी के कारण
(ग) बड़े भाई राम के बल के कारण
(घ) काल (मृत्यु) के वश में होने के कारण

उत्तरः
1. (क) परशुराम का क्रोध सर्वथा अनुचित है।
2. (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
3. (ख) निडरता और व्यंग्य का भाव
4. (ग) भगवान शिव के लिए
5. (घ) काल (मृत्यु) के वश में होने के कारण

अध्याय 10

भारति, जय, विजयकरे!

1. कवि परिचय

देशप्रेम और राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत राष्ट्र-वंदना 'भारति, जय, विजयकरे!' के रचयिता महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1899 में बंगाल के महिषादल में हुआ था तथा वे मूलतः गढ़ाकोला, उन्नाव, उत्तर प्रदेश के निवासी थे। इनका नाम छायावाद के उदात्त स्तंभ और मुक्त छंद के जन्मदाता के रूप में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। इन्होंने जीवन-भर अपनी तेजस्वी लेखनी के बल पर भारतभूमि को एक सजीव चेतन सत्ता के रूप में पूजते हुए उसके अद्भुत श्रम-सौंदर्य और ज्ञान-परंपरा को गाकर हिंदी साहित्य को अलंकृत किया है। अपनी भव्य, संस्कृतनिष्ठ और गौरवमयी भाषा शैली से इन्होंने हिंदी प्रेमियों को गौरवान्वित किया है। सन् 1961 में इस महान छायावादी कवि का निधन हो गया।

2. कविता-परिचय

'भारति, जय, विजयकरे!' छायावाद के प्रमुख कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की देशप्रेम से ओत-प्रोत एक प्रेरणादायक कविता है। इसमें कवि ने भारतभूमि को एक चेतन देवी के रूप में चित्रित किया है। हिमालय को मुकुट, गंगा को धवल हार और वन-लता को वस्त्राभूषण के रूप में प्रस्तुत कर भारत की प्राकृतिक सुंदरता का अद्भुत चित्र खींचा गया है। 'कनक-शस्य-कमलधरे' कहकर भारत की कृषि-परंपरा और धन-धान्य संपन्नता को भी दर्शाया गया है। कविता की भाषा संस्कृतनिष्ठ एवं समासयुक्त है, जिसमें ओंकार की गूँज और अनेक विचारों की समृद्धि झलकती है।

3. कविता का सार

भारतमाता की विजय और धन-धान्य संपन्नता

कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' अपनी इस देशभक्ति कविता में भारतमाता की जय-विजय की कामना करते हैं। वे भारतभूमि को सोने जैसी फसलों और कमल के फूलों को धारण करने वाली एक समृद्ध देवी के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जो यहाँ की संपन्न कृषि-परंपरा और श्रम के सौंदर्य को दिखाता है।

समुद्र द्वारा चरण-वंदना और प्राकृतिक वस्त्राभूषण

कवि ने भारत की भौगोलिक सुंदरता को एक देवी के रूप में चित्रित किया है। गरजती लहरों वाला विशाल समुद्र भारतमाता के पवित्र चरणों को धोता हुआ उनकी स्तुति करता है। यहाँ के पेड़-पौधे और लताएँ उनके वस्त्र हैं, खिले हुए फूल आभूषण हैं और पवित्र गंगा की धवल धारा उनके गले के सुंदर हार जैसी दिखाई देती है।

हिमालय का मुकुट और चैतन्य वैचारिक गूंज

भारत के उत्तर में स्थित श्वेत बर्फ से ढका हुआ विशाल हिमालय पर्वत भारतमाता के सिर पर सजे एक उज्ज्वल मुकुट के समान है। कवि भारत को एक जीवंत और वैचारिक रूप से समृद्ध सत्ता मानते हैं, जिसकी सभी दिशाओं में पवित्र 'ओंकार' मंत्र और सैकड़ों ज्ञानपूर्ण स्वरों की गूंज सुनाई देती है।

4. कठिन-शब्दार्थ, सप्रसंग व्याख्या

काव्यांश 1

भारति, जय, विजयकरे !
कनक-शस्य-कमलधरे !
लंका पदतल शतदल,
गर्जितोर्मि सागर-जल
धोता शुचि चरण युगल
स्तव कर बहु-अर्थ-भरे !

कठिन-शब्दार्थ

1. भारति/भारती – सरस्वती, वाणी, वाणी की अधिष्ठात्री, भारतमाता।
2. जय – विजय हो।
3. विजयकरे – विजय दिलाने वाली, विजयश्री प्राप्त करने वाली।
4. कनक – सोना, पलाश, चंपा।
5. शस्य – फसल, खेती, अन्न, धान्य, वृक्षों का फल, नई घास कोमल तृण, सद्गुण।
6. कमलधरे – कमल को धारण करने वाली।
7. पदतल – तलवा, पैरों के नीचे।
8. शतदल – कमल।

समस्त पद/सामासिक पद का प्रयोग	"कनक-शस्य-कमलधरे", "तरु-तृण-वन-लता", "ज्योतिर्जल-कण", "शतमुख-शतरव-मुखरे", "हिम-तुषार", "बहु-अर्थ-भरे"
संस्कृतनिष्ठ भाषा प्रयोग	"गर्जितोर्मि सागर-जल", "स्तव कर बहु-अर्थ-भरे", "प्राण प्रणव ओंकार", "शुचि चरण युगल", "शभ्र हिम-तुषार", "ध्वनित दिशाएँ उदार"

विषयों से संवाद

1. स्वतंत्रता-पूर्व लिखी इस कविता में भारत को ज्ञान, कृषि और संस्कृति के प्रतीक/परिचायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वर्तमान संदर्भ में यदि आपको भारत को एक नए रूप में प्रस्तुत करने का अवसर मिले तो आप भारत की किन विशेषताओं और विविधताओं को सम्मिलित करेंगे?

उत्तरः
यदि मुझे वर्तमान संदर्भ में भारत को नए रूप में प्रस्तुत करने का अवसर मिले, तो मैं निम्नलिखित विशेषताओं को सम्मिलित करूँगा/करूँगी:

1. **तकनीकी शक्ति**: भारत आज विश्व का तकनीकी केंद्र है। इसरो, डिजिटल इंडिया, UPI जैसी उपलब्धियाँ नए भारत की पहचान हैं।
2. **युवा शक्ति**: भारत विश्व का सबसे युवा देश है — यह युवा ऊर्जा हमारी सबसे बड़ी संपत्ति है।
3. **विविधता में एकता**: विभिन्न भाषाएँ, धर्म, वेशभूषा, खान-पान — यह विविधता भारत की सबसे बड़ी शक्ति है।
4. **नारी शक्ति**: भारत की महिलाएँ आज हर क्षेत्र में — अंतरिक्ष, सेना, खेल, राजनीति — में अग्रणी हैं।
5. **पर्यावरण-चेतना**: प्राचीन काल से 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का संदेश देने वाला भारत आज भी पर्यावरण-संरक्षण का वैश्विक नेता है।
6. **लोकतंत्र की जननी**: विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में भारत की पहचान।

2. "शतमुख-शतरव-मुखरे!" पंक्ति में भारत के विविध पर्व, उत्सव और रीति-रिवाज किस प्रकार 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की संकल्पना को साकार करते हैं?

उत्तरः
"शतमुख-शतरव-मुखरे!" का अर्थ है — सैकड़ों मुखों से, सैकड़ों ध्वनियों में गूँजने वाला। यह भारत की विविधता का प्रतीक है।
भारत में सैकड़ों पर्व, उत्सव और रीति-रिवाज हैं — दीपावली, ईद, क्रिसमस, गुरुपर्व, होली, ओणम, बिहु, पोंगल, दुर्गापूजा। ये सब मिलकर 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की संकल्पना को साकार करते हैं:

1. **साझा भाव**: हर पर्व में खुशी, मिलन और उत्सव का भाव है — यह सबको जोड़ता है।
2. **परस्पर सम्मान**: हिंदू-मुस्लिम-सिख-ईसाई मिलकर एक-दूसरे के त्योहार मनाते हैं।
3. **सांस्कृतिक आदान-प्रदान**: एक राज्य की संस्कृति दूसरे राज्य को प्रभावित करती है — जैसे बांग्ला दुर्गापूजा, केरल का ओणम, पंजाब का बैसाखी।
4. **एकता का सूत्र**: विविध भाषाओं, वेशभूषाओं और रीति-रिवाजों के बावजूद भारत एक राष्ट्र के रूप में एकजुट है — यही 'शतमुख-शतरव-मुखरे' का भाव है।

3. भारत को सुदृढ़ करने में इसकी प्रकृति, संस्कृति और ज्ञान-परंपरा के महत्व को बताते हुए संक्षिप्त लेख लिखिए।

उत्तरः
भारत की त्रिवेणी: प्रकृति, संस्कृति और ज्ञान-परंपरा
भारत की शक्ति तीन अटूट स्तंभों पर टिकी है — प्रकृति, संस्कृति और ज्ञान-परंपरा।
प्रकृति का महत्वः हिमालय, गंगा, नदियाँ, वन और उपजाऊ भूमि — भारत की समृद्धि का आधार हैं। निराला ने 'तरु-तृण-वन-लता' को वस्त्र और 'गंगा-धार' को हार बताया — यह प्रकृति के प्रति श्रद्धा का भाव है। जब तक प्रकृति सुरक्षित है, भारत समृद्ध रहेगा।
संस्कृति का महत्वः भारत की संस्कृति 'शतमुख-शतरव-मुखरे' है — सैकड़ों भाषाएँ, सैकड़ों परंपराएँ, सैकड़ों पर्व। यह विविधता ही भारत की शक्ति है। भारतीय संस्कृति 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का संदेश देती है।
ज्ञान-परंपरा का महत्वः 'प्राण प्रणव ओंकार' — भारत का ज्ञान वेद से शुरू होकर आधुनिक विज्ञान तक फैला है। नालंदा-तक्षशिला की परंपरा से लेकर आज के IIT-ISRO तक — यह ज्ञान-धारा अविच्छिन्न है।
इन तीनों के समन्वय से ही भारत सुदृढ़ और विश्व-नेता बन सकता है।

4. कविता में गंगा को भारत के स्वच्छ और श्वेत हार एवं हिमालय को मुकुट के रूप में अभिव्यक्त किया गया है। वर्तमान संदर्भ में बताइए कि बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन ने हमारी नदियों और हिमालय को किस प्रकार प्रभावित किया है?

उत्तरः
कवि निराला ने गंगा को 'धवल धार हार' और हिमालय को 'शुभ्र हिम-तुषार मुकुट' कहा था। पर वर्तमान में यह चित्र काफी बदल गया है:
गंगा पर प्रदूषण का प्रभावः

1. औद्योगिक अपशिष्ट, सीवेज और कचरा गंगा में मिलने से जल प्रदूषित हो गया है।
2. गंगा का 'धवल' (श्वेत और पवित्र) जल आज कई स्थानों पर दूषित है।

10. शतरव – सौ की संख्या में ध्वनि, शब्द शोर, गुंजार।
11. मुखरे/मुखर – बजता, शब्द करता हुआ, शोर करने वाला।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'भारति, जय, विजयकरे!' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध छायावादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हैं। इसमें हिमालय को भारतमाता के मुकुट के रूप में दर्शाते हुए देश की चेतना, वैचारिक समृद्धि और आध्यात्मिक ध्वनि का गौरवगान किया गया है।

व्याख्या

कवि निराला जी भारतमाता के भव्य स्वरूप की चर्चा करते हुए कहते हैं कि उत्तर दिशा में अडिग खड़ा ऊँचा हिमालय पर्वत, जो हमेशा चमकीली, उज्ज्वल और श्वेत बर्फ (हिम-तुषार) से ढका रहता है, वह भारतमाता के मस्तक पर सजे हुए एक दिव्य मुकुट के समान सुशोभित है।

कवि आगे भारत को एक जीवंत और चेतन सत्ता मानते हुए कहते हैं कि इस पावन देश के प्राणों में साक्षात् ईश्वर का स्वरूप पवित्र 'ओंकार' (ओम् मंत्र) का नाद समाया हुआ है। इसी आध्यात्मिक चेतना की गूँज के कारण भारत की सभी दिशाएँ अत्यंत उदार, दयालु और ज्ञान से परिपूर्ण हो गई हैं। यहाँ की पावन भूमि अनेक प्रकार के विचारों, मतों, उत्सवों और सैकड़ों मधुर स्वरों (शतमुख-शतरव) से हमेशा गुंजायमान रहती है, जो हमारी महान संस्कृति और अखंडता को पूरी दुनिया के सामने गौरव के साथ प्रकट करती है।

5. पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. "भारति, जय, विजयकरे" कविता में विशेष रूप से—
(क) भारत की भौगोलिक संरचना की प्रशस्ति की गई है।
(ख) भारत की सांस्कृतिक विविधता बताई गई है।
(ग) भारत के ज्ञान, प्रकृति और संपन्नता की प्रशंसा की गई है।
(घ) भारत के खनिज पदार्थों के बारे में बताया गया है।

उत्तरः

(ग) भारत के ज्ञान, प्रकृति और संपन्नता की प्रशंसा की गई है।

यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि कविता में 'कनक-शस्य-कमलधरे' से कृषि-संपन्नता, 'तरु-तृण-वन-लता' से प्रकृति-वैभव, 'प्राण प्रणव ओंकार' से ज्ञान और अध्यात्म-परंपरा और 'गंगा ज्योतिर्जल-कण' से पवित्र नदियों का वर्णन है। ये सब मिलकर भारत के ज्ञान, प्रकृति और संपन्नता की प्रशंसा करते हैं — न केवल भूगोल या संस्कृति।

2. "कनक-शस्य-कमल धरे" पंक्ति का भावार्थ है—
(क) भारत की धन-धान्य संपन्नता
(ख) भारत की नदियों का सौंदर्य
(ग) भारत के लोक-जीवन की सुंदरता
(घ) भारत की सैन्य शक्ति और औद्योगिक विकास

उत्तरः

(क) भारत की धन-धान्य संपन्नता

यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि 'कनक' का अर्थ सोना है, 'शस्य' का अर्थ फसल और 'कमल' भारत का राष्ट्रीय पुष्प है जो संपन्नता और समृद्धि का प्रतीक है। यह पंक्ति भारत को धन-धान्य से परिपूर्ण, सोने जैसी फसलों वाली और कमल-सुंदर भूमि के रूप में प्रस्तुत करती है। यह स्पष्ट रूप से भारत की कृषि और भौतिक-आत्मिक संपन्नता का बोध कराती है।

3. समस्त विश्व में भारत के महत्व का उद्घोष करने वाली पंक्तियाँ हैं—
(क) गंगा ज्योतिर्जल-कण/ धवल धार हार गले
(ख) गर्जितोर्मि सागर-जल/ धोता शुचि चरण युगल
(ग) भारति, जय, विजयकरे/ कनक-शस्य-कमलधरे!
(घ) ध्वनित दिशाएँ उदार/ शतमुख-शतरव-मुखरे!

उत्तरः

(घ) ध्वनित दिशाएँ उदार/ शतमुख-शतरव-मुखरे!

यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि इन पंक्तियों में कहा गया है कि सभी उदार दिशाएँ ध्वनित हो रही हैं और सैकड़ों मुखों से सैकड़ों ध्वनियाँ गूँज रही हैं। यह भारत की ओंकार-ध्वनि का समस्त दिशाओं में, अर्थात् समस्त विश्व में, फैलने का संकेत है। यह भारत के सर्वव्यापी महत्व का उद्घोष है।

4. कविता की भाषा और शैली किस विशेषता से संपन्न है?
(क) सरल, बोल-चाल की भाषा
(ख) संस्कृतनिष्ठ और समासयुक्त
(ग) सरस और हास्य-व्यंग्यपूर्ण
(घ) संवादात्मक और विश्लेषणात्मक

उत्तरः

(ख) संस्कृतनिष्ठ और समासयुक्त

यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि कविता में 'कनक-शस्य-कमलधरे', 'गर्जितोर्मि', 'ज्योतिर्जल-कण', 'शतमुख-शतरव-मुखरे', 'प्रणव ओंकार' जैसे अनेक संस्कृतनिष्ठ शब्द और सामासिक पद हैं। भाषा गंभीर, गरिमापूर्ण और संस्कृत से प्रभावित है — बोलचाल की या संवादात्मक नहीं।

5. भारत के वस्त्रों में 'तरु-तृण-वन-लता' और गले में 'गंगा-धारा' को चित्रित कर कवि किस प्रकार की चेतना का संदेश देते हैं?
(क) पर्यावरणीय और सांस्कृतिक
(ख) राष्ट्रीयता और देशप्रेम

9. गर्जितोर्मि – बादलों का गर्जन, गरजती तरंगों का।
10. शुचि – पवित्र, शुद्ध, निर्मल, साफ, निश्छल, निष्कपट, श्वेत, उजला।
11. चरण युगल – दोनों पैर, पैरों का जोड़ा।
12. स्तव – प्रशंसा, स्तुति और स्तोत्र, एक पदार्थ।
13. बहु-अर्थ-भरे – अनेक गूढ़ और गहरे अर्थों से युक्त।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'भारति, जय, विजयकरे!' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध छायावादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हैं। इसमें भारतमाता के वैभवशाली स्वरूप का मानवीकरण करते हुए उनकी भौगोलिक संपन्नता, विजय की कामना और सागर द्वारा उनके चरण पखारने का मनोरम चित्रण किया गया है।

व्याख्या

कवि निराला जी भारतमाता की वंदना करते हुए कहते हैं कि हे ज्ञान और चेतना की देवी भारतमाता! आपकी सदा ही जय हो और आप संसार में सदैव विजय प्राप्त करें। हमारी यह भारतभूमि सोने जैसी मूल्यवान फसलों (अन्न भंडार) से लहलहाती रहती है और वह अपने हाथों में पवित्र कमल का फूल धारण किए हुए है, जो हमारी महान कृषि-परंपरा और श्रम के सौंदर्य को प्रकट करता है।

कवि ने भारत के मानचित्र का बहुत ही सुंदर सजीव और चित्रात्मक वर्णन किया है। वे कहते हैं कि भारत के दक्षिण में स्थित श्रीलंका मानो भारतमाता के पैरों के नीचे खिला हुआ एक सुंदर कमल का फूल (शतदल) है। गर्जना करती हुई लहरों से भरा हुआ विशाल समुद्र अपने पवित्र जल से भारतमाता के दोनों कोमल चरणों को निरंतर धो रहा है। सागर की लहरों से उठने वाली तीव्र ध्वनि ऐसी प्रतीत होती है मानो समुद्र स्वयं बहुत गहरे और कल्याणकारी अर्थों से युक्त स्तुति-गीत गाकर भारतमाता की निरंतर प्रार्थना कर रहा हो।

काव्यांश 2

तरु-तृण-वन-लता वसन,
अंचल में खचित सुमन;
गंगा ज्योतिर्जल-कण
धवल धार हार गले।

कठिन-शब्दार्थ

1. तरु – वृक्ष, पेड़।
2. तृण – तिनका, घास, खर-पात।
3. वन – जंगल।
4. लता – जमीन या किसी आधार पर फैलने वाला पौधा, वल्लरी, बेल।
5. वसन – वस्त्र, आवरण, निवास, मूर्ति, प्रतिमा।
6. अंचल – देश का प्रांत-भाग, आँचल, कोना, तट, किनारा, वस्त्र का छोर।
7. खचित – चिह्नित, अंकित, जड़ा हुआ, आबद्ध।
8. सुमन – पुष्प, फूल, गेहूँ, मनोहर, सुंदर।
9. ज्योतिर्जल – प्रकाश या रोशनी से चमकता हुआ जल।
10. धवल – सफेद, श्वेत, स्वच्छ, निर्मल, सुंदर।
11. धार – जोर की वर्षा, धारा के रूप में बरसना।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'भारति, जय, विजयकरे!' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध छायावादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हैं। इसमें भारत के हरे-भरे वनों, लताओं और पवित्र गंगा नदी को भारतमाता के सुंदर वस्त्राभूषण के रूप में सजीवता से चित्रित किया गया है।

व्याख्या

इस छंद में कवि निराला जी भारतमाता के अलौकिक श्रृंगार और प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं कि भारत में चारों ओर फैले हुए अनगिनत पेड़-पौधे, हरी-भरी घास, घने जंगल और बेलें (लताएँ) ही भारतमाता के सुंदर वस्त्र (वसन) हैं। इस प्राकृतिक वस्त्र के आँचल में सर्वत्र खिले हुए रंग-बिरंगे सुंदर फूल ऐसे लगते हैं, मानो माँ के आँचल में अनमोल रत्न और सितारे जड़े (खचित) हुए हों।

इसके साथ ही, भारतभूमि की पावन नदी गंगा का सूर्य की किरणों से चमकता हुआ पवित्र जल जब मैदानी इलाकों में बहता है, तो उसकी वह उज्ज्वल और श्वेत (धवल) धारा भारतमाता के गले में सुशोभित होने वाले मोतियों के स्वच्छ हार जैसी दिखाई देती है।

काव्यांश 3

मुकुट शुभ्र हिम-तुषार,
प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाएँ उदार,
शतमुख-शतरव-मुखरे!

कठिन-शब्दार्थ

1. शुभ्र – उज्ज्वल, चमकीला, सफेद, श्वेतवर्ण, सफेद रंग, चाँदी।
2. हिम – शीतल बर्फ, पाला, हिमालय पर्वत, चंदन, चंद्रमा।
3. तुषार – बर्फ, हिम, हवा में मिली भाप जो जमकर श्वेत कणों के रूप में पृथ्वी पर गिरती है।
4. प्राण – वायु, साँस, बल, जीवन।
5. प्रणव – ओंकार, परमेश्वर, ढोल।
6. ओंकार – 'ओम्' मंत्र या इसका उच्चारण, आरंभ।
7. ध्वनित – गूँजती हुई, गुंजायमान।
8. उदार – दानशील, दयालु।
9. शतमुख – सौ मुख।

क्या प्रकृति-संरक्षण देशप्रेम है?
हाँ, प्रकृति का संरक्षण करना भी देशप्रेम का एक महत्वपूर्ण कार्य है, क्योंकि:

1. भारत की पहचान उसके हिमालय, गंगा, वन और नदियों से है। इन्हें नष्ट करना भारत की पहचान नष्ट करना है।
2. जब तक प्रकृति सुरक्षित है, तभी तक देश स्वस्थ और समृद्ध रहेगा। कृषि, जल और वायु — सब प्रकृति पर निर्भर हैं।
3. निराला ने वन-लता को भारत के वस्त्र कहा है — यह संकेत है कि प्रकृति भारत की आत्मा है।

3. "कनक-शस्य-कमलधरे!" पंक्ति भारतभूमि की किन-किन विशेषताओं की ओर संकेत कर रही है?

उत्तरः

"कनक-शस्य-कमलधरे!" पंक्ति भारतभूमि की निम्नलिखित विशेषताओं की ओर संकेत कर रही है:

1. **कृषि-संपन्नता**: 'कनक-शस्य' अर्थात् सोने जैसी फसलें — भारत की उपजाऊ भूमि और कृषि-परंपरा का संकेत है। भारत अनादि काल से कृषि-प्रधान देश रहा है।
2. **भौतिक समृद्धि**: 'कनक' का अर्थ सोना भी है — यह भारत की भौतिक संपन्नता और धन-धान्य की ओर संकेत करता है।
3. **प्राकृतिक सुंदरता**: 'कमलधरे' अर्थात् कमल धारण करने वाली — कमल भारत का राष्ट्रीय पुष्प है और यह भारत की नदियों, जलाशयों और सुंदर प्रकृति का प्रतीक है।
4. **आध्यात्मिक पवित्रता**: कमल को लक्ष्मी और सरस्वती से भी जोड़ा जाता है — यह भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक श्रेष्ठता का संकेत है।
5. **श्रम का सौंदर्य**: कवि भारत की कृषि-परंपरा और किसान के परिश्रम को 'कनक-शस्य' से सम्मान देता है।

4. "मुकुट शुभ्र हिम-तुषार" पंक्ति में हिमालय को भारत का मुकुट बताया गया है, क्यों?

उत्तरः

'मुकुट शुभ्र हिम-तुषार' में हिमालय को भारत का मुकुट बताने के अनेक सार्थक कारण हैं:

1. **भौगोलिक स्थिति**: जिस प्रकार मुकुट सिर के सबसे ऊपर होता है, उसी प्रकार हिमालय भारत के उत्तरी सिरे पर, सबसे ऊँचा स्थान घेरता है। यह स्थिति मुकुट जैसी ही है।
2. **श्वेत-उज्ज्वल रूप**: 'शुभ्र हिम-तुषार' अर्थात् श्वेत, चमकीला हिम-तुषार — मुकुट प्रायः बहुमूल्य रत्नों से जड़ा और चमकीला होता है। हिमालय की बर्फ की श्वेत चमक उसे मुकुट जैसा दिव्य बनाती है।
3. **गरिमा और श्रेष्ठता**: मुकुट गरिमा और महानता का प्रतीक है। हिमालय विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत है — यह भारत की महानता और श्रेष्ठता का प्रतीक है।
4. **रक्षक के रूप में**: मुकुट जैसे राजा के सिर की रक्षा करता है, हिमालय भी भारत को उत्तर से आने वाली ठंडी हवाओं और आक्रमणकारियों से रक्षा करता है।
5. **काव्य-सौंदर्य**: भारत को देवी के रूप में कल्पित करने पर हिमालय को मुकुट बताना कविता के रूपक को पूर्णता देता है।

विधा से संवाद

कविता का सौंदर्य

1. नीचे दी गई पंक्तियों को पढ़िए—

"भारति, जय, विजयकरे!
कनक-शस्य-कमलधरे!"

इन पंक्तियों में कवि ने चित्रात्मक भाषा का प्रयोग करते हुए भारतभूमि का मनोरम चित्र प्रस्तुत किया है। इस कविता की कुछ अन्य विशेषताओं की सूची नीचे दी गई है। कविता में से उन विशेषताओं वाली पंक्तियों को ढूँढ़कर लिखिए—

विशेषताएँ	कविता की पंक्तियाँ
प्रकृति का मानवीकरण	
आलंकारिक प्रयोग	
समस्त पद/सामासिक पद का प्रयोग	
संस्कृतनिष्ठ भाषा प्रयोग	

उत्तरः

विशेषताएँ	कविता की पंक्तियाँ
प्रकृति का मानवीकरण	"गर्जितोर्मि सागर-जल/ धोता शुचि चरण युगल" — सागर को मानवीय क्रिया 'धोना' करते दिखाया गया है; साथ ही "तरु-तृण-वन-लता वसन/ अंचल में खचित सुमन" — प्रकृति को भारत माता के वस्त्र और आभूषण के रूप में मानवीय रूप दिया गया है।
आलंकारिक प्रयोग	"मुकुट शुभ्र हिम-तुषार" — रूपक अलंकार (हिमालय = मुकुट); "शतमुख-शतरव-मुखरे" — अनुप्रास अलंकार ('श' की आवृत्ति); "गंगा ज्योतिर्जल-कण/ धवल धार हार गले" — रूपक अलंकार (गंगा = हार)

पर्वतीय खंड (गंगोत्री से ऋषिकेश) : यहाँ गंगा अत्यंत वेगवती है। देवप्रयाग में अलकनंदा और भागीरथी मिलकर 'गंगा' बनती हैं। ऋषिकेश में योग-आश्रम, लक्ष्मण झूला और हरिद्वार में महाकुंभ — यह भारत का आध्यात्मिक हृदय है।
मैदानी खंड (गंगा के मैदान) : प्रयागराज में गंगा-यमुना-सरस्वती का त्रिवेणी-संगम है — यहाँ की भाषा अवधी और ब्रज का मिश्रण है। वाराणसी — काशी — में गंगा के घाट पर प्रतिदिन दीपारती होती है। यहाँ की सुबह अद्वितीय है।
पूर्वी खंड (बिहार-बंगाल) : बिहार में गंगा के किनारे पाटलिपुत्र जैसी प्राचीन सभ्यता थी। यहाँ भोजपुरी और मैथिली की मिठास सुनाई देती है। छठ पूजा का अनुपम उत्सव।
गंगासागर : अंत में बंगाल की खाड़ी में गंगा सागर से मिलती है — यहाँ मकर संक्रांति पर लाखों श्रद्धालु डुबकी लगाते हैं। 'सब तीरथ बार-बार, गंगासागर एक बार' — यह यात्रा पूर्ण होती है।

इस यात्रा में हिमालय का सौंदर्य, आर्य सभ्यता का इतिहास, विविध भाषाएँ, अनेक संस्कृतियाँ और अपरिमित श्रद्धा — सब समाहित हैं।

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

बहुभाषी देश हमारा

1. भारत की एक विशेषता उसकी बहुभाषिकता है। यदि आपको एक सचेत नागरिक के रूप में भारत से अपनी मातृभाषा में संवाद का अवसर मिले तो आप किन विषयों पर और क्या-क्या संवाद करना चाहेंगे? इन संवादों को अपनी मातृभाषा और हिंदी में लिखिए।
(संकेत– समाज, पर्यावरण, संस्कृति आदि।)

उत्तरः
यदि मुझे भारत से अपनी मातृभाषा में संवाद का अवसर मिले, तो मैं निम्नलिखित विषयों पर बात करना चाहूँगा/चाहूँगी:
पर्यावरण के विषय में : (हिंदी में): "हे मातृभूमि! तेरी नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं, तेरे वन कट रहे हैं। मैं संकल्प करता/करती हूँ कि एक पेड़ लगाऊँगा/लगाऊँगी और जल को बचाऊँगा/बचाऊँगी।"
(राजस्थानी में): "हे माँ! थारी नदियाँ अर वन री रक्षा करणो म्हारो फर्ज है।"
सामाजिक समरसता के विषय में : (हिंदी में): "हे भारत! तेरी 'शतमुख-शतरव' विविधता तेरी शक्ति है। जाति और धर्म के भेद से ऊपर उठकर हम सब एक हैं।"
संस्कृति-संरक्षण के विषय में: (हिंदी में): "हे भारत माता! तेरी लोक-कलाएँ, नृत्य, संगीत और हस्तशिल्प को मैं सहेजूँगा/सहेजूँगी।"

मातृभाषा और भाव

1. "स्तव कर बहु-अर्थ-भरे"
उपर्युक्त पंक्ति में भारत की प्रशंसा विविध अर्थों में की गई है। आप भी अपनी मातृभाषा में भारत की स्तुति के लिए एक कविता की रचना कीजिए और उसका भावार्थ हिंदी में भी लिखिए।

उत्तरः
मातृभाषा (हिंदी) में कविता:
भारत माता की जय हो!
सोने जैसी फसलों वाली,
गंगा-यमुना की माँ प्यारी।
हिमालय तेरा मुकुट सजीला,
सागर चरण पखारे।
वन-वृक्ष-लता तेरे आभूषण,
कोटि-कोटि जन तेरे बच्चे।
'ओम्' की गूँज दिशाओं में,
भारत माता जय हो!
(यदि मातृभाषा राजस्थानी है):
भारत माता री जय होवे!
कनक जैसी फसलाँ वाली,
गंगा-जमना री प्यारी माँ।
हिमाला थारो मुकुट सोहणो,
सागर चरण पखारे।
भावार्थ (हिंदी में):
हे भारत माता! तू सोने जैसी फसलों से समृद्ध है, गंगा-यमुना जैसी पवित्र नदियाँ तेरी संतान हैं। हिमालय तेरा सुंदर मुकुट है और सागर तेरे चरण धोता है। तेरी जय हो!

समास — समस्त पद एवं विग्रह

1. "कनक-शस्य-कमलधरे"
उपर्युक्त पंक्ति में 'कनक-शस्य' का अर्थ है— कनक के समान शस्य (सोने जैसी फसलें) और कमलधरे का अर्थ है— हे कमल को धारण करने वाली! ये शब्द समास शब्द कहलाते हैं। 'कनक-शर्य' और 'कमलधार' समस्त पद/सामासिक पद हैं। कमलधार संबंधन शब्द है।

समास का अर्थ है संक्षेप। समास में दो या अनेक शब्दों के मेल से एक नए शब्द की रचना होती है। समास रचना में प्रायः दो पद (शब्द) होते हैं। पहले पद को पूर्वपद और दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं। समास रचना से बने शब्द को 'समस्त पद' कहते हैं। यदि समास रचना से बने शब्द (समस्त पद) के अंग अलग-अलग करने हों, तो उस प्रक्रिया को समास विग्रह कहते हैं। आपने 'क्या लिखूँ?' निबंध के अध्ययन में समास और सामासिक पदों के बारे में विस्तार से जाना है।

3. जलीय जीव-जंतु संकट में हैं — गंगाई डॉल्फिन जैसी प्रजातियाँ विलुप्त होने के कगार पर हैं।
4. स्वच्छ गंगा मिशन जैसे प्रयास किए जा रहे हैं, पर समस्या बड़ी है।

हिमालय पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव:

1. ग्लोबल वार्मिंग के कारण हिमालय के ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं।
2. 'शुभ्र हिम-तुषार मुकुट' धीरे-धीरे सिकुड़ रहा है।
3. हिमालयी नदियों में जलस्तर बदल रहा है — कहीं बाढ़, कहीं सूखा।
4. हिमालय की जैव-विविधता संकट में है।

निष्कर्ष: यदि हम भारत माता के इस 'हार' और 'मुकुट' की रक्षा नहीं करेंगे, तो देशप्रेम अधूरा रहेगा।

विविध रंग भारत के

1. आप अपने कक्षा-समूह में मिलकर भारत की सांस्कृतिक विविधता पर आधारित एक पावरपॉइंट प्रस्तुति/पोस्टर/चार्ट/कोलाज तैयार कीजिए और इसे अपनी कक्षा में दिखाइए। आप भारत के विभिन्न राज्यों पर केंद्रित पावरपॉइंट प्रस्तुति/पोस्टर/चार्ट/कोलाज भी बना सकते हैं।

उत्तरः

यह एक समूह-गतिविधि है। नीचे कोलाज/पोस्टर के लिए सुझाव दिए गए हैं।

पोस्टर/कोलाज के लिए सुझाव:

शीर्षक: 'भारत — विविधता में एकता'

विषय-क्षेत्र:

1. **उत्तर भारत:** हिमालय, कश्मीर की शिकारा, पंजाब का भांगड़ा, गंगा-यमुना, ताजमहल।
2. **दक्षिण भारत:** कथकली नृत्य, मीनाक्षी मंदिर, केरल की नावें, पोंगल पर्व।
3. **पूर्वोत्तर भारत:** बिहू नृत्य, मेघालय की जीवित पुलें, सिक्किम का प्राकृतिक सौंदर्य।
4. **पश्चिम भारत:** राजस्थान की संस्कृति, गुजरात का गरबा, मुंबई की समृद्धि।
5. **मध्य भारत:** आदिवासी कला, खजुराहो।

केंद्र में: भारत का नक्शा, तिरंगा और 'अनेकता में एकता' का संदेश।

सृजन

1. मान लीजिए आपको भारत को एक मनुष्य के रूप में कल्पित करते हुए सुसज्जित करने का अवसर मिले तो आप अपने राज्य के किन सांस्कृतिक, पारंपरिक वेशभूषा, आभूषण, चिह्नों, पुष्पों आदि का प्रयोग कर उसकी साज-सज्जा करेंगे?

उत्तरः

यदि मुझे भारत को एक भव्य व्यक्तित्व के रूप में सुसज्जित करना हो, तो मैं विभिन्न राज्यों की परंपराओं को मिलाकर यह सज्जा करूँगा/करूँगी:

राजस्थान के संदर्भ में उदाहरण

1. **वेशभूषा:** राजस्थानी रंगीन पोशाक — रंग-बिरंगी साफा (पगड़ी), अंगरखा और धोती।
2. **आभूषण:** कुंदन और मीनाकारी गहने — बाजूबंद, कंठहार, कर्णफूल।
3. **मुकुट में:** हिमालय की बर्फ (श्वेत हिम-तुषार) — जैसा कवि निराला ने कहा।
4. **गले में हार:** गंगा की धवल धारा का प्रतीक — मोतियों का हार।
5. **हाथों में:** कमल का पुष्प (राष्ट्रीय पुष्प) और गेहूँ की बाली (कृषि-संपन्नता का प्रतीक)।
6. **पैरों में:** घुंघरु और मिट्टी — भारत की लोक-संस्कृति और मातृभूमि से जुड़ाव।
7. **चिह्न:** माथे पर तिलक और राष्ट्रीय चिह्न — अशोक स्तंभ।

2. भारत पर आधारित एक डाक टिकट, पोस्टर या पुस्तक के लिए आवरण पृष्ठ बनाइए और बताइए कि आप उसमें किन-किन प्रतीकों को सम्मिलित करेंगे और क्यों?

उत्तरः

डाक टिकट का विषय: 'भारति, जय, विजयकरे!'

डिज़ाइन विवरण: मैं इस डाक टिकट में निम्नलिखित प्रतीकों को सम्मिलित करूँगा/करूँगी:

1. **हिमालय (पृष्ठभूमि में):** श्वेत-उज्ज्वल हिमालय — भारत की महानता और दृढ़ता का प्रतीक। कवि ने इसे मुकुट कहा है।
2. **गंगा नदी:** हिमालय से निकलती गंगा की धारा — पवित्रता, ज्ञान और जीवन का प्रतीक।
3. **सोने जैसी फसलें:** खेतों में लहलहाती गेहूँ की बालियाँ — 'कनक-शस्य' का प्रतीक, कृषि-संपन्नता।
4. **कमल पुष्प:** जल में खिला कमल — राष्ट्रीय पुष्प, पवित्रता और सौंदर्य का प्रतीक।
5. **ओंकार चिह्न:** 'प्राण प्रणव ओंकार' — भारत की आध्यात्मिक और ज्ञान-परंपरा का प्रतीक।
6. 'भारति, जय, विजयकरे!' — शीर्षक पर देवनागरी में।
   मूल्य: ₹5 (और 'भारत' देवनागरी में)

3. नदी की यात्रा

गंगा नदी की अपने उद्गम से लेकर बंगाल की खाड़ी में विलीन होने तक की पूरी यात्रा के बीच में आने वाली प्राकृतिक, सांस्कृतिक, भाषिक आदि विशेषताओं का वर्णन करते हुए एक रोचक यात्रा-वृत्तांत लिखिए।

(संकेत– पर्वतीय सौंदर्य से लेकर गंगासागर तक की संस्कृति इत्यादि)

उत्तरः

गंगा की यात्रा: गोमुख से गंगासागर तक

मेरी यात्रा आरंभ होती है उत्तराखंड के गंगोत्री ग्लेशियर के 'गोमुख' से, जहाँ बर्फ की सफेद चादर से निकलती है एक पतली, निर्मल, ठंडी धारा — यही गंगा का उद्गम है।

भाषा संगम

1. "कनक-शस्य-कमलधरे"
कविता में आए 'शस्य' शब्द का अर्थ 'उपज' भी होता है। नीचे 'उपज' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।
जो उपजा हो, पैदावार, फसल (हिंदी); शस्यम् (संस्कृत); उपज, पैदावार (पंजाबी); पैदावार (उर्दू); पाँदावार (कश्मीरी); उपज, पैदावार (सिंधी); पीक (मराठी); ऊपज, पेदाश (गुजराती); पीक (कोंकणी); उब्जाबाली, उपज (नेपाली); फसल (बांग्ला); शस्य, खेति, फचल, कृषि जात वस्तु (असमिया); महै मरोङ्थाबा पोत्थोक (मणिपुरी); फसल, खेति (ओड़िआ); पंट (तेलुगु); विळैच्चल् (तमिल); विळवुँ (मलयालम); बेळे फसल (कन्नड़)।
- इनके अतिरिक्त यदि आप 'शस्य' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
- उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

उत्तरः
- राजस्थानी में: फसल / उपज / पैदावार
भोजपुरी में: फसल / उपज
अवधी में: फसल / अनाज
मैथिली में: फसल / शस्य
बुंदेली में: उपज / फसल
- हिंदी (मातृभाषा) में: "सोने जैसी फसल (शस्य) और कमल को धारण करने वाली — हे भारत माता!"
पंजाबी (देवनागरी में):
"सोने वरगी पैदावार अते कमल नूं धारण करन वाली — हे भारत माता!"
मराठी (देवनागरी में):
"सोन्यासारखी पीक आणि कमळ धारण करणारी — हे भारतमाते!"
गुजराती (देवनागरी में):
"सोना जेवी उपज अने कमळ धारण करनारी — हे भारत माता!"
राजस्थानी (देवनागरी में):
"सोना जैसी फसल अर कमल धारण करणवाली — हे भारत माँ!"

6. अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'भारति, जय, विजयकरे!' कविता के रचयिता कौन हैं?
(क) मैथिलीशरण गुप्त
(ख) जयशंकर प्रसाद
(ग) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(घ) महादेवी वर्मा

उत्तरः
(ग) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

2. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म किस स्थान पर हुआ था?
(क) इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
(ख) बंगाल के महिषादल में
(ग) वाराणसी, उत्तर प्रदेश
(घ) लखनऊ, उत्तर प्रदेश

उत्तरः
(ख) बंगाल के महिषादल में

3. निराला मूलतः किस स्थान के निवासी थे?
(क) महिषादल, बंगाल
(ख) गढ़ाकोला, उन्नाव, उत्तर प्रदेश
(ग) प्रयागराज, उत्तर प्रदेश
(घ) काशी (वाराणसी), उत्तर प्रदेश

उत्तरः
(ख) गढ़ाकोला, उन्नाव, उत्तर प्रदेश

4. निराला की औपचारिक शिक्षा किस कक्षा तक हुई?
(क) पाँचवीं तक (ख) सातवीं तक
(ग) नौवीं तक (घ) मैट्रिक तक

उत्तरः
(ग) नौवीं तक

5. निराला ने स्वाध्याय से कौन-कौन सी भाषाओं का ज्ञान अर्जित किया?
(क) फ्रेंच, जर्मन और अंग्रेजी
(ख) संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी
(ग) उर्दू, फारसी और संस्कृत
(घ) तमिल, तेलुगु और संस्कृत

उत्तरः
(ख) संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी

6. निराला की प्रमुख काव्य रचनाएँ कौन-सी हैं?
(क) कामायनी, लहर और झरना
(ख) प्रिय प्रवास, साकेत और यशोधरा
(ग) अनामिका, परिमल, गीतिका, कुकुरमुत्ता और नए पत्ते
(घ) यामा, नीहार और रश्मि

उत्तरः
(ग) अनामिका, परिमल, गीतिका, कुकुरमुत्ता और नए पत्ते

7. निराला ने छायावादी रचनाकारों में सबसे पहले किस छंद का प्रयोग किया?
(क) दोहा छंद (ख) सोरठा छंद
(ग) चौपाई छंद (घ) मुक्त छंद

उत्तरः
(घ) मुक्त छंद

कविता में से चुनकर कुछ सामासिक पद (शब्द) नीचे दिए गए हैं। उनके समास-विग्रह अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।

शरतल	ज्योतिजल	शषमुख	सागरजल

उत्तरः

सामासिक पद	समास-विग्रह	समास का भेद
शतदल	सौ दल (पंखुड़ियाँ) हैं जिसके — अर्थात् कमल	बहुव्रीहि समास
ज्योतिर्जल	ज्योति का जल (प्रकाशमय जल)	तत्पुरुष/ कर्मधारय समास
शतमुख	सौ मुख हैं जिसके	बहुव्रीहि समास
सागरजल	सागर का जल	तत्पुरुष समास

अलंकार—समझ और प्रयोग

- “शतमुख-शतरव-मुखरे!”
  उपर्युक्त पंक्ति के ‘शतमुख’ और ‘शतरव’ में ‘श’ वर्ण की पुनरावृत्ति हो रही है, इसलिए यहाँ अनुप्रास अलंकार है।
- “मुकुट शुभ हिम-तुषार”
  उपर्युक्त पंक्ति में हिमालय को भारत का मुकुट कहा गया है। वास्तव में हिमालय मुकुट नहीं है, लेकिन कवि ने कल्पना के बल पर उसे मुकुट का रूप दे दिया। इससे भारत की छवि भव्य और दिव्य बन जाती है। यहाँ गुण की अत्यंत समानता के कारण उपमेय में उपमान का अभेद स्थापित किया गया है, इसलिए यहाँ रूपक अलंकार है।
  ‘रैदास के पद’ पाठ में आपने अलंकार के विषय में विस्तार से जाना-समझा है। अब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) कविता में जहाँ-जहाँ अनुप्रास अलंकार आया है, उन पंक्तियों को खोजकर लिखिए।

उत्तरः
कविता में अनुप्रास अलंकार की पंक्तियाँ:
1. "शतमुख-शतरव-मुखरे!" — 'श' वर्ण की आवृत्ति (शतमुख, शतरव)।
2. "तरु-तृण-वन-लता वसन" — 'व' वर्ण की आवृत्ति (वन, वसन) और 'त' की आवृत्ति (तरु, तृण)।
3. "धवल धार हार गले" — 'ध' की आवृत्ति (धवल, धार) और 'ह' की आवृत्ति (हार)।
4. "गर्जितोर्मि सागर-जल" — 'ज' की आवृत्ति (जल, गर्जित)।
5. "भारति, जय, विजयकरे" — 'ज' की आवृत्ति (जय, विजय)।

(ख) कविता की उन पंक्तियों को खोजिए जहाँ रूपक अलंकार है। साथ ही यह भी बताइए कि कवि ने किस प्राकृतिक दृश्य या वस्तु को भारत का रूप मानकर चित्रित किया है?

उत्तरः
कविता में रूपक अलंकार की पंक्तियाँ:
1. "मुकुट शुभ्र हिम-तुषार"
   रूपक: हिमालय = मुकुट
   प्राकृतिक दृश्य: हिमालय की श्वेत हिमाच्छादित चोटियों को भारत माता के मुकुट का रूप दिया गया है।
2. "गंगा ज्योतिर्जल-कण/ धवल धार हार गले"
   रूपक: गंगा की धवल धारा = गले का हार
   प्राकृतिक दृश्य: गंगा की सफेद, प्रकाशमय धारा को भारत माता के गले का श्वेत हार माना गया है।
3. "तरु-तृण-वन-लता वसन/ अंचल में खचित सुमन"
   रूपक: वन-लता = वस्त्र; पुष्प = आँचल में जड़े रत्न
   प्राकृतिक दृश्य: वन, वृक्ष, लताएँ और फूलों को भारत माता के वस्त्र और आभूषण माना गया है।

गतिविधियाँ

मिलकर लें शपथ

1. "तरु-तृण-वन-लता वसन/ अंचल में खचित सुमन"
   वन, लता, पुष्प आदि भारत के अमूल्य प्राकृतिक संसाधन हैं। इनके संरक्षण के लिए सरकार द्वारा बनाए गए अधिनियमों के बारे में सूचना एकत्रित कीजिए और वन संरक्षण के लिए बनाए नियमों पर विचार कीजिए।

उत्तरः
वन-संरक्षण से संबंधित प्रमुख अधिनियम:
1. **वन संरक्षण अधिनियम, 1980**: इस अधिनियम के अनुसार वन-भूमि का उपयोग गैर-वानिकी कार्यों के लिए केंद्र सरकार की अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता।
2. **भारतीय वन अधिनियम, 1927**: वनों के प्रबंधन और वन-उपज पर सरकार के अधिकार को परिभाषित करता है।
3. **वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972**: वन्य प्राणियों, पक्षियों और पौधों के संरक्षण के लिए।
4. **पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986**: समग्र पर्यावरण-संरक्षण के लिए।

वन-संरक्षण के लिए हमारा संकल्प:
1. प्रत्येक जन्मदिन पर एक पेड़ लगाएँगे।
2. कागज की बर्बादी नहीं करेंगे।
3. जंगल में आग नहीं लगाएँगे।
4. वन-विभाग के नियमों का पालन करेंगे।

(ग) ऐतिहासिक और भौगोलिक
(घ) सामाजिक और राजनीतिक

उत्तरः
(क) पर्यावरणीय और सांस्कृतिक
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि 'तरु-तृण-वन-लता' को वस्त्र बताकर कवि यह संदेश दे रहे हैं कि भारत की प्रकृति — वन, वृक्ष, घास, लता — उसकी पहचान है, उसे संरक्षित करना चाहिए। यह पर्यावरण-चेतना है। गंगा को हार बताना भारत की पवित्र नदी-संस्कृति और सभ्यता का प्रतीक है — यह सांस्कृतिक चेतना है।

अर्थ और भाव

1. नीचे दी गई पंक्तियों का अर्थ समझते हुए इनका भाव स्पष्ट कीजिए—

(क) "लंका पदतल शतदल,
गर्जितोर्मि सागर-जल
धोता शुचि चरण युगल!"

उत्तरः
अर्थः लंका (श्रीलंका) जिसके पैरों के तलवों में शतदल (कमल) है, उसके पवित्र चरण-युगल (दो चरणों) को गर्जन करती लहरों वाला सागर-जल धोता रहता है।
भावः इन पंक्तियों में भारत की भव्य कल्पना एक देवी के रूप में की गई है। जिस प्रकार किसी देवी के चरणों में कमल होते हैं, उसी प्रकार भारत के पादतल में लंका (श्रीलंका) कमल की तरह है। हिंद महासागर की गर्जना करती विशाल लहरें भारत माता के चरणों को प्रक्षालित (धोती) करती रहती हैं। यह भारत की महानता, विशालता और दिव्यता का अपूर्व काव्य-चित्र है। सागर का भारत माता के चरणों को धोना उनकी श्रेष्ठता और पूज्यता का प्रतीक है।

(ख) "प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाएँ उदार,
शतमुख-शतरव-मुखरे!"

उत्तरः
अर्थः भारत के प्राण 'प्रणव' अर्थात् ओंकार के स्वर से गूँज रहे हैं। सभी उदार दिशाएँ इस ध्वनि से ध्वनित हो रही हैं और सैकड़ों मुखों से, सैकड़ों तरह की ध्वनियों में, यह देश मुखर (गुंजायमान) है।
भावः इन पंक्तियों में भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विविधता का चित्रण है। 'प्रणव ओंकार' भारत की ज्ञान-परंपरा और वेद-ध्वनि का प्रतीक है जो यहाँ के जन-जन के प्राणों में बसी है। 'शतमुख-शतरव-मुखरे' से कवि कह रहे हैं कि भारत में सैकड़ों भाषाएँ, सैकड़ों विचार और सैकड़ों स्वर हैं — यह विविधता में एकता का देश है। सभी दिशाएँ ओंकार की उदार ध्वनि से गूँज रही हैं — भारत का ज्ञान विश्व-व्यापी है।

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. कविता में कवि की किस भावना की अभिव्यक्ति मिलती है?

उत्तरः
इस कविता में निराला की निम्नलिखित भावनाओं की अभिव्यक्ति मिलती है:
1. **देशप्रेम और राष्ट्रभक्ति**: कवि का भारत के प्रति गहरा प्रेम और आदर इस पूरी कविता में व्याप्त है। वे भारत को 'भारति' अर्थात् भारत माता के रूप में देखते हैं और उनकी जय-विजय की कामना करते हैं।
2. **भारत को दैवीय सत्ता मानने की भावना**: कवि भारत को एक देवी के रूप में कल्पित करते हैं जिसके चरण सागर धोता है, जिसके वस्त्र वन-लता हैं और जिसके मुकुट पर हिमालय का हिम-तुषार है।
3. **प्रकृति-प्रेम**: भारत के प्राकृतिक वैभव — नदी, वन, हिमालय, सागर — के प्रति कवि की गहरी श्रद्धा और प्रेम प्रकट होता है।
4. **आध्यात्मिक चेतना**: 'प्राण प्रणव ओंकार' में भारत की अध्यात्म-परंपरा के प्रति कवि की गहरी आस्था दिखती है।
5. **विजय की आकांक्षा**: स्वतंत्रता-पूर्व लिखी इस कविता में कवि ने भारत की विजय की कामना की है — यह परतंत्र देश की स्वतंत्रता के लिए आकुलता का प्रतीक है।

2. कविता में भारत के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किस प्रकार किया गया है? क्या आप मानते हैं कि प्रकृति का संरक्षण करना भी देशप्रेम का काम है? क्यों?

उत्तरः
प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन : कवि निराला ने भारत को एक देवी के रूप में कल्पित कर उसके प्राकृतिक सौंदर्य को उसके वस्त्र-आभूषण के रूप में प्रस्तुत किया है:
1. **वन-वृक्ष-लता वस्त्र के रूप में**: "तरु-तृण-वन-लता वसन" — वृक्ष, घास, वन और लताएँ भारत के वस्त्र हैं।
2. **पुष्प आँचल में खचित**: "अंचल में खचित सुमन" — भारत के आँचल में फूल जड़े हैं।
3. **गंगा हार के रूप में**: "गंगा ज्योतिर्जल-कण/ धवल धार हार गले" — गंगा की सफेद, प्रकाशमय धारा भारत के गले का हार है।
4. **हिमालय मुकुट के रूप में**: "मुकुट शुभ्र हिम-तुषार" — हिमाच्छादित हिमालय भारत का श्वेत मुकुट है।
5. **सागर पैर धोता है**: "गर्जितोर्मि सागर-जल/ धोता शुचि चरण युगल" — विशाल महासागर भारत के चरण धोता है।

8. 'निराला रचनावली' कितने खंडों में प्रकाशित है?
(क) चार खंड (ख) छह खंड
(ग) आठ खंड (घ) दस खंड

उत्तरः
(ग) आठ खंड

9. निराला की कविताओं में किनके प्रति गहरी सहानुभूति मिलती है?
(क) राजाओं और सामंतों के प्रति
(ख) उपेक्षितों और पीड़ितों के प्रति
(ग) धनिकों और व्यापारियों के प्रति
(घ) विद्वानों और दार्शनिकों के प्रति

उत्तरः
(ख) उपेक्षितों और पीड़ितों के प्रति

10. निराला का निधन किस वर्ष हुआ?
(क) सन् 1950 में
(ख) सन् 1955 में
(ग) सन् 1961 में
(घ) सन् 1965 में

उत्तरः
(ग) सन् 1961 में

11. कविता 'भारति, जय, विजयकरे!' में 'भारति' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
(क) केवल सरस्वती के लिए
(ख) केवल वाणी के लिए
(ग) भारतमाता और सरस्वती के लिए
(घ) केवल गंगा नदी के लिए

उत्तरः
(ग) भारतमाता और सरस्वती के लिए

12. कवि ने भारतभूमि को "कनक-शस्य-कमलधरे!" कहकर क्या दर्शाया है?
(क) भारत की सैन्य शक्ति और वीरता
(ख) भारत की कृषि-परंपरा और श्रम का सौंदर्य
(ग) भारत के समुद्री व्यापार की समृद्धि
(घ) भारत के खनिज पदार्थों की विपुलता

उत्तरः
(ख) भारत की कृषि-परंपरा और श्रम का सौंदर्य

13. "कनक-शस्य-कमलधरे!" पंक्ति का भावार्थ क्या है?
(क) भारत की नदियों का सौंदर्य
(ख) भारत की धन-धान्य संपन्नता
(ग) भारत की सैन्य शक्ति और औद्योगिक विकास
(घ) भारत के लोक-जीवन की संदुरता

उत्तरः
(ख) भारत की धन-धान्य संपन्नता

14. "कनक-शस्य-कमलधरे" में 'कनक' शब्द का क्या अर्थ है?
(क) चाँदी (ख) हीरा
(ग) सोना (घ) मोती

उत्तरः
(ग) सोना

15. "शस्य" शब्द का मुख्य अर्थ क्या है?
(क) सफेद, नदी (ख) वस्त्र, आभूषण
(ग) पर्वत, भयानक (घ) फसल, खेती, अन्न

उत्तरः
(घ) फसल, खेती, अन्न

16. "लंका पदतल शतदल" — यहाँ 'शतदल' का अर्थ क्या है?
(क) शतरंग (ख) कमल
(ग) सौ पत्तियाँ (घ) समुद्र

उत्तरः
(ख) कमल

17. "लंका पदतल शतदल, गर्जितोर्मि सागर-जल धोता शुचि चरण युगल" — इन पंक्तियों में क्या भाव है?
(क) लंका भारत के चरणों में है और समुद्र भारत के पवित्र चरण धोता है
(ख) गंगा नदी समुद्र में मिलती है
(ग) हिमालय का जल समुद्र में जाता है
(घ) भारत का समुद्री व्यापार बहुत विशाल है

उत्तरः
(क) लंका भारत के चरणों में है और समुद्र भारत के पवित्र चरण धोता है

18. "स्तव कर बहु-अर्थ-भरे!" — यहाँ 'स्तव' शब्द का क्या अर्थ है?
(क) विरोध, आलोचना, निंदा (ख) युद्ध, संघर्ष
(ग) रोना, विलाप (घ) प्रशंसा, स्तुति और स्तोत्र

उत्तरः
(घ) प्रशंसा, स्तुति और स्तोत्र

19. रिक्त स्थान भरिए —
"लंका पदतल शतदल, गर्जितोर्मि सागर-जल धोता शुचि चरण _______ स्तव कर बहु-अर्थ-भरे!"
(क) माता (ख) वंदन
(ग) युगल (घ) पावन

उत्तरः
(ग) युगल

20. "तरु-तृण-वन-लता वसन" — यहाँ 'वसन' शब्द का अर्थ क्या है?
(क) प्रकृति (ख) जंगल
(ग) आभूषण (घ) वस्त्र

उत्तरः
(घ) वस्त्र

43. "तुषार" शब्द का क्या अर्थ है?
(क) अत्यंत तीव्र गति से जलने वाली आग या हर तरफ फैलने वाली विनाशकारी ज्वाला।
(ख) आकाश में चमकने वाले सूर्य की तेज धूप या चारों ओर फैला दिव्य प्रकाश।
(ग) बर्फ, हिम, हवा में मिली भाप जो जमकर श्वेत कणों के रूप में पृथ्वी पर गिरती है।
(घ) सावन के सुहावने महीने में होने वाली तेज वर्षा या रिमझिम गिरने वाली बारिश।

उत्तरः
(ग) बर्फ, हिम, हवा में मिली भाप जो जमकर श्वेत कणों के रूप में पृथ्वी पर गिरती है।

44. कविता की अंतिम पंक्ति में पूरी कविता का केंद्रीय भाव कौन-सी पंक्ति में समाहित है?
(क) "गंगा ज्योतिर्जल-कण धवल धार हार गले"
(ख) "मुकुट शुभ्र हिम-तुषार"
(ग) "तरु-तृण-वन-लता वसन"
(घ) "भारति, जय, विजयकरे!"

उत्तरः
(घ) "भारति, जय, विजयकरे!"

45. 'भारति, जय, विजयकरे!' कविता किस भावना से ओत-प्रोत है?
(क) वीर रस और युद्ध की भावना
(ख) देशप्रेम और प्रेरणा की भावना
(ग) करुण रस और विरह की भावना
(घ) श्रृंगार रस और प्रेम की भावना

उत्तरः
(ख) देशप्रेम और प्रेरणा की भावना

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उत्तरः
महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1899 में बंगाल के महिषादल नामक स्थान पर हुआ था। वे मूल रूप से उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के गढ़ाकोला के निवासी थे।

2. निराला जी की औपचारिक शिक्षा कहाँ तक हुई और उन्होंने अन्य भाषाओं का ज्ञान कैसे प्राप्त किया?

उत्तरः
निराला जी की औपचारिक शिक्षा केवल नौवीं कक्षा तक महिषादल में ही संपन्न हुई थी। इसके बाद उन्होंने किसी विद्यालय में न जाकर पूरी तरह से स्वाध्याय (आत्म-अध्ययन) के बल पर संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी भाषाओं का गहन ज्ञान अर्जित किया।

3. निराला जी की किन्हीं चार प्रमुख काव्य रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तरः
निराला जी की प्रमुख काव्य रचनाएँ निम्नलिखित हैं:
1. अनामिका
2. परिमल
3. गीतिका
4. कुकुरमुत्ता

4. निराला जी का संपूर्ण साहित्य कितने खंडों में और किस नाम से प्रकाशित है?

उत्तरः
निराला जी द्वारा रचित संपूर्ण साहित्य 'निराला रचनावली' के नाम से संकलित किया गया है, जो कुल आठ खंडों में विधिवत रूप से प्रकाशित है।

5. छायावादी कवियों में मुक्त छंद के संदर्भ में निराला जी का क्या विशेष योगदान है?

उत्तरः
छायावादी रचनाकारों में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ही वे पहले क्रांतिकारी कवि थे, जिन्होंने कविता को पारंपरिक बंधनों से मुक्त करते हुए सबसे पहले 'मुक्त छंद' का सफल प्रयोग किया था।

6. निराला जी की कविताओं में समाज के किस वर्ग के प्रति गहरी सहानुभूति दिखाई देती है?

उत्तरः
निराला जी की कविताओं में समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े उपेक्षितों, शोषितों और पीड़ितों के प्रति बहुत ही गहरी मानवीय सहानुभूति और करुणा का भाव देखने को मिलता है।

7. 'भारति, जय, विजयकरे!' कविता के आरंभ में कवि भारतभूमि से क्या कामना करता है?

उत्तरः
कविता के आरंभ में ही कवि अपनी आराध्य भारतभूमि को चेतन देवी मानते हुए 'भारति, जय, विजयकरे!' का उद्घोष करता है और भारत के लिए सर्वत्र विजयश्री प्राप्त करने की मंगलकामना करता है।

8. कवि ने भारतभूमि को 'कनक-शस्य-कमलधरे!' कहकर क्यों संबोधित किया है?

उत्तरः
कवि ने भारतभूमि को यह संबोधन इसलिए दिया है क्योंकि यह हमारे देश की लहलहाती हुई कृषि-परंपरा, अन्न-धान्य की प्रचुरता, किसानों के श्रम के सौंदर्य और सांस्कृतिक पवित्रता को एक साथ दर्शाता है।

(ग) पर्यावरणीय और सांस्कृतिक
(घ) ऐतिहासिक और भौगोलिक

उत्तरः
(ग) पर्यावरणीय और सांस्कृतिक

34. निम्नलिखित में से कौन-से कथन इस कविता के बारे में सही हैं?

I. कविता में भारत की भौगोलिक सुंदरता का मानवीकरण किया गया है।

II. गंगा को भारत के गले का हार और हिमालय को मुकुट बताया गया है।

III. कविता में भारत के खनिज पदार्थों की विशेष प्रशंसा की गई है।

(क) केवल I और II सही हैं
(ख) केवल II और III सही हैं
(ग) केवल I और III सही हैं
(घ) तीनों कथन सही हैं

उत्तरः
(क) केवल I और II सही हैं

35. "भारति, जय, विजयकरे" कविता में विशेष रूप से क्या किया गया है?
(क) भारत की भौगोलिक संरचना की प्रशस्ति
(ख) भारत के खनिज पदार्थों का वर्णन
(ग) भारत की सांस्कृतिक विविधता का विस्तृत वर्णन
(घ) भारत के ज्ञान, प्रकृति और संपन्नता की प्रशंसा

उत्तरः
(घ) भारत के ज्ञान, प्रकृति और संपन्नता की प्रशंसा

36. कविता की भाषा और शैली किस विशेषता से संपन्न है?
(क) सरल बोल-चाल की भाषा
(ख) सरस और हास्य-व्यंग्यपूर्ण
(ग) संस्कृतनिष्ठ और समासयुक्त
(घ) संवादात्मक और विश्लेषणात्मक

उत्तरः
(ग) संस्कृतनिष्ठ और समासयुक्त

37. **अभिकथन (A):** कविता में भारत को एक चेतन सत्ता के रूप में देखा गया है।
कारण (R): कविता में भारत की दिशाओं में ओंकार की गूँज हो रही है और वह अनेक स्वरों और विचारों से समृद्ध है।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है

उत्तरः
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है

38. "युगल" शब्द का क्या अर्थ है?
(क) अकेला, एकाकी
(ख) जोड़ा, युग्म
(ग) समूह, भीड़
(घ) दोहा, छंद

उत्तरः
(ख) जोड़ा, युग्म

39. कविता में "अचलं में खचित सुमन" — यहाँ 'अचलं' का क्या अर्थ है?
(क) धरती पर स्थित एक बहुत विशाल पर्वत।
(ख) निरंतर बहने वाली एक पवित्र नदी।
(ग) देश का प्रांत-भाग, आँचल, कोना, तट।
(घ) ऊपर दिखाई देने वाला नीला आकाश।

उत्तरः
(ग) देश का प्रांत-भाग, आँचल, कोना, तट

40. "खचित" शब्द का क्या अर्थ है?
(क) उड़ाया हुआ, बिखरा हुआ
(ख) चिह्नित, अंकित, जड़ा हुआ
(ग) काटा हुआ, खंडित
(घ) बुना हुआ, सिला हुआ

उत्तरः
(ख) चिह्नित, अंकित, जड़ा हुआ

41. निम्नलिखित में से कौन-से कथन निराला के व्यक्तित्व और रचनाओं के बारे में सही हैं?

I. निराला की रचनाओं में दार्शनिकता, विद्रोह और क्रांति का भाव है।

II. उन्होंने प्रेम की तरलता और प्रकृति का विराट चित्र अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया।

III. निराला ने केवल गद्य रचनाएँ कीं और काव्य में उनकी रुचि नहीं थी।

(क) केवल I और II सही हैं
(ख) केवल II और III सही हैं
(ग) केवल I और III सही हैं
(घ) तीनों कथन सही हैं

उत्तरः
(क) केवल I और II सही हैं

42. "हिम" शब्द का क्या अर्थ है?
(क) अत्यंत गर्म या सदा तपता हुआ।
(ख) शीतल बर्फ, पाला, हिमालय पर्वत।
(ग) तीव्र सूर्य या उसका तेज प्रकाश।
(घ) विशाल समुद्र या अपार जलराशि।

उत्तरः
(ख) शीतल बर्फ, पाला, हिमालय पर्वत

अध्याय 11

झाँसी की रानी

1. कवि परिचय

'झाँसी की रानी' जैसी अमर और ओजपूर्ण गाथा की रचयिता सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म सन् 1904 में निहालपुर, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनका नाम हिंदी साहित्य जगत् में राष्ट्रीय चेतना की प्रखर संवाहिका के रूप में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। इन्होंने आजीवन अपनी ओजस्वी लेखनी और अदम्य साहस के बल पर स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय योगदान देते हुए जनमानस में देशप्रेम, स्त्री-केंद्रित विषयों और स्वाधीनता के प्रति गहन प्रतिबद्धता को जगाकर हिंदी साहित्य को अलंकृत किया है। अपनी इसी सहज, कथात्मक और बेहद लोकप्रिय गेय शैली के द्वारा इन्होंने हिंदी प्रेमियों को सदैव गौरवान्वित किया है। सन् 1948 में एक दुर्भाग्यपूर्ण सड़क दुर्घटना में इस महान राष्ट्रवादी कवयित्री का असमय निधन हो गया।

2. कविता-परिचय

'झाँसी की रानी' सुभद्रा कुमारी चौहान की अत्यंत प्रसिद्ध कथात्मक कविता है। यह कविता 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि पर रचित है। इसमें रानी लक्ष्मीबाई के बचपन से लेकर वीरगति तक की ओजपूर्ण गाथा कही गई है। वीरता, उत्साह और देशप्रेम से ओत-प्रोत यह कविता पाठकों में जोश, साहस और स्वतंत्रता के प्रति समर्पण की भावना जगाती है। कविता की सहज भाषा, कथात्मक शैली और गेयता इसे अत्यंत प्रभावशाली एवं हृदयग्राही बनाती है।

3. कविता का सार

देश में स्वतंत्रता की नई लहर

सन् 1857 में भारत के निराश और गुलाम राजवंशों के भीतर अंग्रेजी शासन के खिलाफ गहरा आक्रोश जाग उठा। गुलामी के कारण जर्जर और बूढ़े हो चुके भारत में आज़ादी की एक नई जवानी और चेतना दौड़ गई थी, और सभी देशवासियों ने मिलकर फिरंगियों को बाहर खदेड़ने का दृढ़ संकल्प ले लिया था।

लक्ष्मीबाई का साहसी बचपन

कानपुर के नाना साहब की मुँहबोली बहन लक्ष्मीबाई अपने पिता की इकलौती संतान थीं, जिन्हें प्यार से 'छबीली' कहा जाता था। वे बचपन से ही नाना साहब के साथ पढ़ती और खेलती थीं। जहाँ अन्य लड़कियाँ गुड़ियों से खेलती थीं, वहीं लक्ष्मीबाई के प्रिय खिलौने बरछी, ढाल, कृपाण और कटारी जैसे अस्त्र-शस्त्र थे।

वीर शिवाजी की शौर्य-गाथाएँ

लक्ष्मीबाई साक्षात् वीरता की अवतार थीं, जिनके हाथों में तलवारों के अनोखे वार देखकर मराठे भी प्रसन्न होते थे। नकली युद्ध करना, चक्रव्यूह की रचना करना, शिकार खेलना और शत्रु के किलों को तोड़ना उनके बचपन के सबसे प्रिय खेल हुआ करते थे। उन्हें वीर शिवाजी के साहस की सारी गाथाएँ ज़बानी याद थीं।

राजसी विवाह और झाँसी आगमन

लक्ष्मीबाई का विवाह झाँसी के राजा गंगाधर राव के साथ बेहद धूमधाम से संपन्न हुआ। विवाह के बाद वे रानी बनकर झाँसी के राजमहल में आईं, जिससे पूरे राज्य में खुशियाँ छा गईं और बधाई के गीत गूंज उठे। उनका झाँसी आना ऐसा था मानो चित्रा को अर्जुन और शिव को माता भवानी मिल गई हों।

राजा का निधन और छाया शोक

अभी सुख के दिन शुरु ही हुए थे कि अचानक समय का क्रूर चक्र चला और राजा गंगाधर राव का असमय निधन हो गया। विधाता को रानी के हाथों में भाग्य की चूड़ियाँ पसंद नहीं आईं और वे विधवा हो गईं। राजा जी के निःसंतान मरने के कारण पूरी झाँसी गहरे शोक में डूब गई और राजमहल की सुख-शांति लुप्त हो गई।

डलहौजी की कुटिलता और दमन नीति

झाँसी का राजा न रहने और दीपक बुझते देखकर गवर्नर जनरल डलहौजी मन ही मन बहुत खुश हुआ, क्योंकि उसे राज्यों को हड़पने का अवसर मिल गया था। उसने तुरंत अपनी सेना भेजकर झाँसी के किले पर ब्रिटिश झंडा फहरा दिया। अंग्रेजों ने अपनी दमनकारी नीतियों से दिल्ली, लखनऊ, बिठूर और नागपुर जैसे कई बड़े राज्यों को भी हड़प लिया।

9. कविता में लंका को भारत माता के चरणों के पास किस रूप में कल्पित किया गया है?

उत्तरः
कविता में भौगोलिक स्थिति को दर्शाते हुए सुदूर दक्षिण में स्थित श्रीलंका या लंका को भारत माता के चरणों के नीचे स्थित एक खिले हुए कमल (शतदल) के रूप में कल्पित किया गया है।

10. सागर का जल भारत माता के संदर्भ में क्या पूजनीय कार्य करता है?

उत्तरः
अपनी ऊँची और गरजती हुई लहरों से युक्त विशाल सागर का जल किसी सच्चे भक्त की भाँति निरंतर भारत माता के दोनों परम पवित्र और निर्मल चरणों (शुचि चरण युगल) को श्रद्धापूर्वक धोता रहता है।

11. कवि ने भारत माता के वस्त्रों (वसन) के रूप में किन प्राकृतिक तत्वों को चित्रित किया है?

उत्तरः
कवि ने भारत की धरती पर फैली अगाध प्राकृतिक सुंदरता जैसे—वृक्षों, तिनकों (घास), सघन वनों और लहलहाती हुई लताओं (तरु-तृण-वन-लता) को भारत माता के सुंदर हरे-भरे वस्त्रों के रूप में चित्रित किया है।

12. भारत माता के आँचल और गले के हार को कवि ने किस प्रकार सुसज्जित किया है?

उत्तरः
कवि के अनुसार भारत माता के विस्तृत आँचल में सुंदर पुष्प (सुमन) जड़े हुए हैं और उनके गले में पहाड़ों से बहने वाली पवित्र गंगा नदी की उज्ज्वल तथा श्वेत धार चमकीले हार की तरह सुशोभित हो रही है।

13. "मुकुट शुभ्र हिम-तुषार" पंक्ति के माध्यम से कवि क्या स्पष्ट करना चाहता है?

उत्तरः
इस पंक्ति के माध्यम से कवि यह स्पष्ट करना चाहता है कि भारत के उत्तर में प्रहरी की तरह सीना ताने खड़ा, अत्यंत पवित्र और सफेद बर्फ की चादर से ढका हिमालय पर्वत भारत माता के मस्तक पर सजे हुए चमकीले मुकुट के समान है।

14. भारत की उदार दिशाएँ किस पावन और शक्तिशाली ध्वनि से गुंजायमान हो रही हैं?

उत्तरः
भारतवर्ष की सभी उदार दिशाएँ इसके प्राणों में बसे साक्षात् 'प्रणव ओंकार' (ईश्वर के पवित्र मूल नाद) की अत्यंत पावन, गंभीर और शक्तिशाली ध्वनि से निरंतर गुंजायमान हो रही हैं।

15. "शतमुख-शतरव-मुखरे!" पंक्ति भारत की किस विशेषता को रेखांकित करती है?

उत्तरः
यह पंक्ति भारत की वैचारिक और सांस्कृतिक समृद्धि को रेखांकित करती है, जिसके अनुसार हमारा देश सैकड़ों मुखों से निकलने वाले विविध विचारों, दर्शनों, भाषाओं और मतों के मधुर स्वरों से हर पल मुखरित रहता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के गद्य और पद्य लेखन के विस्तृत क्षेत्र पर प्रकाश डालिए।

उत्तरः
महाकवि निराला जी का साहित्यिक क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। पद्य के क्षेत्र में उन्होंने 'अनामिका' और 'परिमल' जैसी कालजयी काव्य कृतियों की रचना की है। इसके साथ ही गद्य लेखन में भी उनका योगदान अतुलनीय है। उन्होंने कई उच्च कोटि के उपन्यास, मर्मस्पर्शी कहानियाँ, निबंध और पैनी आलोचनाएँ लिखी हैं, जिसके कारण गद्य विधाओं में भी उनकी ख्याति अविस्मरणीय है।

2. निराला जी की कविताओं में कौन-से दार्शनिक और मानवीय भाव मुख्य रूप से उपस्थित हैं?

उत्तरः
निराला जी की कविताओं में जीवन की गहन दार्शनिकता, सामाजिक रुढ़ियों के प्रति विद्रोह, बदलाव लाने वाली क्रांति, प्रेम की तरलता और प्रकृति का विराट रुप उपस्थित है। उनकी कविताओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे समाज के सबसे निचले पायदान पर जीवन व्यतीत करने वाले उपेक्षितों और पीड़ितों के प्रति हमेशा गहरी सहानुभूति व्यक्त करते हैं।

3. 'भारति, जय, विजयकरे!' कविता के मुख्य प्रतिपाद्य और उसकी मूल भावना का वर्णन कीजिए।

उत्तरः
यह कविता देशप्रेम की भावना से ओत-प्रोत एक अत्यंत प्रेरणादायक रचना है। इसका मुख्य प्रतिपाद्य भारतभूमि को एक जाग्रत और चेतन देवी के रूप में प्रस्तुत करके उसकी महिमा का गान करना है। कविता के माध्यम से कवि अपनी मातृभूमि के लिए हर क्षेत्र में गौरवमयी विजयश्री प्राप्त करने की मंगलकामना करता है।

4. कवि ने भारत माता को 'कनक-शस्य-कमलधरे' कहकर देश की किन विशेषताओं को रेखांकित किया है?

उत्तरः
'कनक-शस्य' का अर्थ है सोने के समान लहलहाती हुई मूल्यवान फसलें, जो देश की प्राचीन कृषि-परंपरा, धन-धान्य की संपन्नता और किसानों के कठोर श्रम को दर्शाती हैं।

इसके साथ ही 'कमलधरे' शब्द भारत की आंतरिक पवित्रता, सात्विकता और ज्ञान की देवी के रूप में उसकी महान सांस्कृतिक पहचान को बहुत ही खूबसूरती से रेखांकित करता है।

5. भौगोलिक दृष्टि से लंका और सागर के जल को भारत माता के चरणों के दास के रूप में कैसे दर्शाया गया है?

उत्तरः
कवि ने भारत की दक्षिण दिशा का सुंदर चित्र खींचा है। वे कहते हैं कि दक्षिण में स्थित लंका माता के चरणों के नीचे एक खिले हुए कमल के समान सुशोभित है। वहीं, विशाल समुद्र अपनी ऊँची और गरजती हुई लहरों के साथ एक सच्चे भक्त की भाँति निरंतर भारत माता के पवित्र चरणों को श्रद्धापूर्वक धोता रहता है।

6. "तरु-तृण-वन-लता वसन, अंचल में खचित सुमन;" पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः
इन पंक्तियों का भाव यह है कि कवि ने संपूर्ण भारत में फैली प्राकृतिक हरियाली को भारत माता के भव्य परिधानों के रूप में कल्पित किया है। देश के वृक्ष, तिनके, वन और लताएँ माता के वस्त्र बन गए हैं। इसके साथ ही, इस धरती पर खिले मनोरम फूल ऐसे दिखाई देते हैं मानो वे माता के आँचल में जड़े हुए कीमती रत्न हों।

7. कविता में गंगा नदी की धवल धार को भारत माता के संदर्भ में किस रूप में कल्पित किया गया है?

उत्तरः
कविता में पावन गंगा नदी को भारत माता के एक अत्यंत सुंदर आभूषण के रूप में कल्पित किया गया है। कवि के अनुसार, गंगा नदी के भीतर चमकते हुए प्रकाशमय जल के कण और उसकी अत्यधिक श्वेत धारा ऐसी प्रतीत होती है मानो वह साक्षात् भारत माता के गले में सुशोभित होने वाला कोई अत्यंत सुंदर धवल हार हो।

8. "मुकुट शुभ्र हिम-तुषार" पंक्ति के आधार पर हिमालय पर्वत के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः
इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने भारत के उत्तर में प्रहरी की तरह अडिग खड़े हिमालय पर्वत की दिव्य छवि को उभारा है। हिमालय की चोटियाँ बारह महीने पवित्र और श्वेत बर्फ से ढकी रहती हैं। इस प्राकृतिक दृश्य को देखकर कवि कल्पना करता है कि यह धवल हिमालय साक्षात् भारत माता के मस्तक का चमकीला मुकुट है।

9. "प्राण प्रणव ओंकार, ध्वनित दिशाएँ उदार" पंक्तियों का वैचारिक और आध्यात्मिक संदेश क्या है?

उत्तरः
इन पंक्तियों के माध्यम से कवि भारतभूमि के भीतर रची-बसी अगाध आध्यात्मिक चेतना का संदेश देते हैं। कवि का मानना है कि भारत माता के भीतर जो प्राण वायु चल रही है, वह स्वयं साक्षात् ईश्वर का पवित्र मूल नाद 'ओंकार' है। इसी पावन ध्वनि से भारत की सभी उदार दिशाएँ निरंतर गुंजायमान रहती हैं।

10. "शतमुख-शतरव-मुखरे!" पंक्ति के द्वारा भारत की वैचारिक विविधता और संपन्नता को कैसे दर्शाया गया है?

उत्तरः
यह पंक्ति भारत की वैचारिक, भाषिक और सांस्कृतिक संपन्नता का उद्घोष करती है। इसके द्वारा कवि यह दर्शाना चाहते हैं कि हमारा देश भारत एक ऐसी चेतन सत्ता है जहाँ सैकड़ों अलग-अलग प्रकार के स्वर, दार्शनिक विचार, मत और संस्कृतियाँ पूरी स्वतंत्रता के साथ एक साथ निवास करती हैं और इस भूमि को हर पल मुखरित रखती हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के जीवन, उनकी औपचारिक शिक्षा तथा उनके द्वारा अर्जित भाषाई ज्ञान का परिचय देते हुए उनकी साहित्यिक ख्याति पर प्रकाश डालिए।

उत्तरः
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1899 में बंगाल के महिषादल में हुआ था, यद्यपि वे मूल रूप से उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के गढ़ाकोला के निवासी थे। उनकी औपचारिक शिक्षा महिषादल में केवल नौवीं कक्षा तक ही संपन्न हो पाई थी। इसके पश्चात उन्होंने किसी विद्यालय में जाए बिना, पूरी तरह से स्वाध्याय (आत्म-अध्ययन) के बल पर संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी जैसी समृद्ध भाषाओं का गहन व व्यावहारिक ज्ञान अर्जित किया। निराला जी की साहित्यिक ख्याति बहुआयामी है; उन्होंने न केवल 'अनामिका', 'परिमल', 'गीतिका', 'कुकुरमुत्ता' और 'नए पत्ते' जैसी महान काव्य रचनाएँ कीं, बल्कि उपन्यास, कहानी, आलोचना और निबंध लेखन जैसी गद्य विधाओं में भी अपनी अमिट व अविस्मरणीय छाप छोड़ी। उनका संपूर्ण विराट साहित्य 'निराला रचनावली' के आठ खंडों में पूरी गरिमा के साथ प्रकाशित है।

2. निराला जी की कविताओं में उपस्थित वैचारिक दर्शन, उनकी छंद-शैली और समाज के किस वर्ग के प्रति उनकी संवेदनाएँ मुखरित हुई हैं? विस्तृत विवेचन कीजिए।

उत्तरः
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के साहित्य में विचारों और संवेदनाओं का एक बहुत ही अद्भुत तथा अनूठा संगम देखने को मिलता है। उनकी रचनाओं में गंभीर दार्शनिकता, समाज की रूढ़ियों के प्रति गहरा विद्रोह, व्यवस्था में बदलाव के लिए क्रांति, मानवीय प्रेम की तरलता और इसके साथ ही

प्रकृति का अत्यंत विराट तथा उदात्त रूप हर जगह उपस्थित रहता है। शिल्प और शैली के स्तर पर, हिंदी कविता को बंधनों से मुक्त करने का श्रेय उन्हीं को जाता है; वे छायावादी रचनाकारों में सबसे पहले 'मुक्त छंद' का सफलतापूर्वक प्रयोग करने वाले क्रांतिकारी कवि बने। इन सबके साथ, निराला जी का हृदय समाज के अंतिम पायदान पर खड़े लोगों के लिए धड़कता था। समाज के उपेक्षितों, शोषितों और पीड़ितों के प्रति उनकी कविताओं में बहुत ही गहरी, सच्ची और मर्मस्पर्शी सहानुभूति देखने को मिलती है।

3. 'भारति, जय, विजयकरे!' कविता के मूल भाव और प्रेरणा को स्पष्ट करते हुए बताइए कि कवि भारतभूमि को 'कनक-शस्य-कमलधरे' कहकर किन विशिष्टताओं को उजागर करता है?

उत्तरः
'भारति, जय, विजयकरे!' कविता महाकवि निराला द्वारा रचित देशप्रेम और राष्ट्रभक्ति की भावना से पूरी तरह ओत-प्रोत एक अत्यंत ओजस्वी और प्रेरणादायक रचना है। कविता के प्रारंभ में ही कवि अपने राष्ट्र के प्रति अगाध श्रद्धा व्यक्त करते हुए 'भारति, जय, विजयकरे!' का जयघोष करता है, जो संपूर्ण भारतवर्ष के लिए हर क्षेत्र में विजयश्री प्राप्त करने की मंगलकामना को प्रदर्शित करता है। इसी क्रम में, जब कवि भारतभूमि को 'कनक-शस्य-कमलधरे!' (सोने जैसी फसलों और कमल को धारण करने वाली) कहकर संबोधित करता है, तो वह देश की दो महान शक्तियों को एक साथ सामने लाता है। यह संबोधन एक ओर जहाँ भारत की प्राचीन कृषि-परंपरा, अन्न-धान्य की अटूट संपन्नता और देशवासियों के श्रम के अद्भुत सौंदर्य को रेखांकित करता है, वहीं दूसरी ओर हाथ में कमल होने की कल्पना भारत की आध्यात्मिक पवित्रता, ज्ञान और ज्ञान-साधना की समृद्ध परंपरा को भी उजागर करती है।

4. कविता में लंका और गरजते हुए सागर के जल को भारत माता के चरणों के संदर्भ में किस प्रकार रूपायित किया गया है और यह दृश्य क्या भाव जगाता है?

उत्तरः
निराला जी ने अपनी अनूठी काव्यात्मक कल्पना के सहारे भारत की भौगोलिक सीमाओं को एक जीवंत और भव्य देवी के रूप में रूपायित किया है। वे कविता में लिखते हैं—"लंका पदतल शतदल, गर्जितोर्मि सागर-जल"। यहाँ कवि ने सुदूर दक्षिण में स्थित लंका को भारत माता के पैरों के नीचे खिले हुए एक सुंदर कमल (शतदल) के रूप में कल्पित किया है। इसके साथ ही, भारत के विशाल समुद्र का वह जल, जो अपनी ऊँची और गरजती हुई लहरों (गर्जितोर्मि) से युक्त है, वह किसी सेवक या भक्त की भाँति निरंतर भारत माता के दोनों परम पवित्र और निर्मल चरणों (शुचि चरण युगल) को पखारता या धोता रहता है। यह पूरा दृश्य अत्यंत श्रद्धा और भक्ति का भाव जगाता है, मानो समुद्र स्वयं बहुत सारे गहरे और गंभीर अर्थों से भरी हुई स्तुति या प्रार्थना (स्तव) गाकर भारत माता की वंदना कर रहा हो।

5. "तरु-तृण-वन-लता वसन, अंचल में खचित सुमन;" पंक्तियों के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि कवि ने भारत की प्राकृतिक संपदा को भारत माता के वस्त्राभूषणों के रूप में किस प्रकार प्रस्तुत किया है?

उत्तरः
इन पंक्तियों में कवि निराला जी का प्रकृति के प्रति अनन्य अनुराग और उनकी उच्च कोटि की चित्रात्मक शैली स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। कवि ने भारत की हरी-भरी और समृद्ध प्राकृतिक संपदा को किसी साधारण भूभाग की तरह नहीं, बल्कि भारत माता के सुंदर परिधानों के रूप में सजाया है। देश के कोने-कोने में फैले हुए विशाल वृक्ष, हरी घास के तिनके, सघन वन और लहलहाती हुई बेलें (तरु-तृण-वन-लता) मिलकर भारत माता के सुंदर और आकर्षक वस्त्र (वसन) बन जाते हैं। इतना ही नहीं, भारतभूमि के इस विशाल अंचल (आँचल या कोने) में जो रंग-बिरंगे, सुंदर और मनोहर फूल (सुमन) खिले हुए हैं, वे ऐसे प्रतीत होते हैं मानो माँ के आँचल में कीमती और चमकीले रत्न जड़े हुए (खचित) हों। इस प्रकार, पूरी प्रकृति ही माँ की साज-सज्जा और सेवा में पूरी तरह समर्पित दिखाई देती है।

6. "गंगा ज्योतिर्जल-कण... शतमुख-शतरव-मुखरे!" पंक्तियों का भाव स्पष्ट करते हुए बताइए कि हिमालय, गंगा और ओंकार की ध्वनि भारत को किस प्रकार एक चेतन और वैचारिक सत्ता के रूप में स्थापित करते हैं?

उत्तरः
इन पंक्तियों में कवि ने भारत को केवल एक भौतिक भूमि न मानकर उसे एक परम चेतन, जाग्रत और वैचारिक सत्ता के रूप में स्थापित किया है। कवि कहते हैं कि पहाड़ों से बहने वाली गंगा नदी के प्रकाशमय जल के कण (ज्योतिर्जल-कण) और उसकी धवल (सफेद) धार माता के गले में सुशोभित होने वाले सुंदर हार की तरह है। उत्तर दिशा में स्थित हिमालय की शुभ्र और चमकीली बर्फ (हिम-तुषार) उनके मस्तक का मुकुट है।

इस दिव्य शरीर के भीतर बहने वाले प्राण स्वयं साक्षात् 'प्रणव ओंकार' (परमेश्वर का पावन नाद) हैं, जिनकी गूंज से भारत की सभी उदार दिशाएँ हर समय गूँजती रहती हैं। 'शतमुख-शतरव-मुखरे' का अर्थ है कि भारत माता अपने सैकड़ों मुखों से निकलने वाले विविध विचारों, दर्शनों, भाषाओं, उत्सवों और ज्ञानमयी ध्वनियों (शतरव) से पूरी तरह समृद्ध और हर पल मुखरित है। यह पूरी अभिव्यक्ति सिद्ध करती है कि भारत का कण-कण आध्यात्मिक चेतना और वैचारिक स्वतंत्रता से ओत-प्रोत है।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

काव्यांश 1

"भारति, जय, विजयकरे !
कनक-शस्य-कमलधरे !
लंका पदतल शतदल,
गर्जितोर्मि सागर-जल
धोता शुचि चरण युगल
स्तव कर बहु-अर्थ-भरे !"

1. "कनक-शस्य-कमलधरे !" विशेषण के प्रयोग द्वारा कवि भारतभूमि की किस अंतर्निहित विशेषता को उभारना चाहते हैं?
(क) समृद्ध कृषि संपदा (ख) प्रचुर स्वर्ण भंडार
(ग) सैन्य शक्ति संपन्नता (घ) औद्योगिक प्रगति

2. **अभिकथन (A):** कवि ने भारतमाता की भौगोलिक संरचना का अत्यंत पवित्र और पूजनीय रूप में चित्रण किया है।
कारण (R): गरजती हुई लहरों से युक्त सागर का जल भारतमाता के दोनों स्वच्छ चरणों को निरंतर धोता रहता है।
(क) (A) सही है, परंतु (R) गलत है।
(ख) (A) गलत है, परंतु (R) सही है।
(ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. 'भारति, जय, विजयकरे !' पंक्ति के माध्यम से कविता के आरंभ में किस प्रकार का मुख्य स्वर या मूड मुखरित हुआ है?
(क) ओज और राष्ट्र-वंदना (ख) वैराग्य और अध्यात्म
(ग) विरह और व्याकुलता (घ) करुणा और दैन्यता

4. काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'शुचि' का निम्नलिखित में से क्या अर्थ है?
(क) बहुत छोटा (ख) अत्यंत पवित्र
(ग) अत्यधिक गहरा (घ) पूर्णतः गीला

5. कवि के अनुसार भारतमाता के पदतल (पैरों के नीचे) शतदल (कमल) के समान कौन स्थित है?
(क) लंका देश (ख) विशाल हिमालय
(ग) गंगा नदी (घ) घने जंगल

उत्तरः
1. (क) समृद्ध कृषि संपदा
2. (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
3. (क) ओज और राष्ट्र-वंदना
4. (ख) अत्यंत पवित्र
5. (क) लंका देश

काव्यांश 2

तरु-तृण-वन-लता वसन,
अंचल में खचित सुमन;
गंगा ज्योतिर्जल-कण
धवल धार हार गले।

1. भारतमाता के अंचल (आँचल) और गले के आभूषणों का वर्णन करके कवि किस अमूर्त भाव को आकार दे रहे हैं?
(क) भारतमाता का पूजनीय देवी-रूप
(ख) प्राचीन भारतीय राजाओं का वैभव
(ग) भारत की तात्कालीन विपन्नावस्था
(घ) केवल वस्त्रों और गहनों का संकलन

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कवि ने भारत की हरी-भरी वनस्पतियों, तरु और लताओं को भारतमाता के सुंदर वस्त्रों (वसन) के रूप में कल्पित किया है।
II. गंगा नदी का उज्ज्वल जल भारतमाता के गले में एक सुंदर श्वेत हार की भाँति सुशोभित हो रहा है।
(क) कथन I सही है, परंतु II गलत है।
(ख) कथन II सही है, परंतु I गलत है।
(ग) कथन I और II दोनों सही हैं।
(घ) कथन I और II दोनों गलत हैं।

3. इस काव्यांश में कवि निराला ने प्रकृति के विविध उपादानों का किस सुंदर काव्य-शैली में चित्रण किया है?
(क) उदासीन दार्शनिक शैली
(ख) मानवीकरण और चित्रात्मक शैली
(ग) उपदेशात्मक और कड़े शब्दों में
(घ) संवादात्मक और विश्लेषणात्मक शैली

4. काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'धवल' का सही पर्यायवाची या अर्थ क्या है?
(क) बहुत गहरा काला (ख) स्वच्छ अथवा श्वेत
(ग) अत्यंत गर्म स्वभाव (घ) अत्यधिक भारी-भरकम

5. काव्यांश के अनुसार भारतमाता के अंचल (आँचल) में क्या जड़े हुए (खचित) हैं?
(क) अनेक मूल्यवान रत्न (ख) गगन के चमकीले तारे
(ग) समुद्र के स्वच्छ मोती (घ) सुंदर और महकते सुमन

उत्तरः
1. (क) भारतमाता का पूजनीय देवी-रूप
2. (ग) कथन I और II दोनों सही हैं।
3. (ख) मानवीकरण और चित्रात्मक शैली
4. (ख) स्वच्छ अथवा श्वेत
5. (घ) सुंदर और महकते सुमन

काव्यांश 3

मुकुट शुभ्र हिम-तुषार,
प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाएँ उदार,
शतमुख-शतरव-मुखरे!

1. 'प्राण प्रणव ओंकार' पंक्ति के माध्यम से कवि भारत की किस अंतर्निहित चेतना को अभिव्यक्त करना चाहते हैं?
(क) केवल राजनैतिक प्रभुत्व को
(ख) आध्यात्मिक और सनातन सत्ता को
(ग) आधुनिक तकनीकी व आधारभूत विकास को
(घ) व्यापारिक समृद्धि के नीति निर्धारण को

2. **अभिकथन (A):** भारत की उदार दिशाएँ सैकड़ों मुखों से निकलने वाली अनेक ध्वनियों से गूँज रही हैं।
कारण (R): भारत की उदार दिशाओं में केवल एक ही निश्चित भाषा और संकुचित विचार गूँज रहे हैं।
(क) (A) सही है, परंतु (R) गलत है।
(ख) (A) गलत है, परंतु (R) सही है।
(ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. "शतमुख-शतरव-मुखरे!" पंक्ति के प्रयोग से कवि ने भारत की किस विशिष्टता का यशोगान किया है?
(क) संकुचित वैचारिक नीति का
(ख) बहुभाषिक सांस्कृतिक विविधता का
(ग) राजनैतिक एकतंत्र व्यवस्था का
(घ) प्राचीन वास्तुकला पद्धति का

4. काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'शुभ्र' का सटीक अर्थ निम्नलिखित में से क्या है?
(क) अंधकार से युक्त गहरा काला
(ख) उज्ज्वल अथवा अत्यंत श्वेत
(ग) बहुत अधिक गर्म और तीखा
(घ) आकार में अत्यधिक विशाल

5. काव्यांश के अनुसार भारतमाता के सिर पर मुकुट के रूप में क्या सुशोभित हो रहा है?
(क) सोने और हीरों से जड़ित मुकुट
(ख) हिमालय की श्वेत हिम-तुषार
(ग) गंगा नदी की पवित्र धारा
(घ) विभिन्न वृक्षों के हरे पत्ते

उत्तरः
1. (ख) आध्यात्मिक और सनातन सत्ता को
2. (क) (A) सही है, परंतु (R) गलत है।
3. (ख) बहुभाषिक सांस्कृतिक विविधता का
4. (ख) उज्ज्वल अथवा अत्यंत श्वेत
5. (ख) हिमालय की श्वेत हिम-तुषार

21. "अंचल में खचित सुमन" — यहाँ 'सुमन' शब्द का अर्थ क्या है?
(क) सोना (ख) तिनका
(ग) पुष्प (घ) नदी
उत्तरः
(ग) पुष्प

22. **अभिकथन (A):** कविता में तरु, तृण, वन और लता को भारत के वस्त्र कहा गया है।
कारण (R): कवि प्रकृति और भारतभूमि को एकाकार करके दिखाते हैं जिससे पर्यावरण और संस्कृति का संदेश मिलता है।
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
(ख) A और R दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सही है परंतु R गलत है
(घ) A गलत है परंतु R सही है
उत्तरः
(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है

23. "गंगा ज्योतिर्जल-कण धवल धार हार गले" — इस पंक्ति में गंगा को भारत के किस अलंकार की तरह चित्रित किया गया है?
(क) सिर का मुकुट (ख) गले का हार
(ग) हाथ का कंगन (घ) कमरबंद
उत्तरः
(ख) गले का हार

24. "धवल धार हार गले" — इस पंक्ति में 'धवल' शब्द का क्या अर्थ है?
(क) काला, अंधकारमय (ख) लाल, रक्तवर्ण
(ग) पीला, सुनहरा (घ) सफेद, स्वच्छ
उत्तरः
(घ) सफेद, स्वच्छ

25. "मुकुट शुभ्र हिम-तुषार" — इस पंक्ति में किसे भारत का मुकुट बताया गया है?
(क) गंगा नदी को (ख) सूर्य को
(ग) हिमालय को (घ) आकाश को
उत्तरः
(ग) हिमालय को

26. "मुकुट शुभ्र हिम-तुषार" — इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(क) उपमा अलंकार (ख) अनुप्रास अलंकार
(ग) अतिशयोक्ति अलंकार (घ) रूपक अलंकार
उत्तरः
(घ) रूपक अलंकार

27. "शुभ्र" शब्द का क्या अर्थ है?
(क) काला, श्यामवर्ण
(ख) उज्ज्वल, चमकीला, सफेद
(ग) लाल, रक्तवर्ण
(घ) गहरा नीला
उत्तरः
(ख) उज्ज्वल, चमकीला, सफेद

28. रिक्त स्थान भरिए —
"मुकुट शुभ्र हिम-तुषार, प्राण प्रणव _______, ध्वनित दिशाएँ उदार, शतमुख-शतरव-मुखरे!"
(क) सुमन (ख) ओंकार
(ग) विस्तार (घ) सँकार
उत्तरः
(ख) ओंकार

29. "प्राण प्रणव ओंकार" — यहाँ 'प्रणव' शब्द का क्या अर्थ है?
(क) प्रकाश, रोशनी (ख) हिमालय, पर्वत
(ग) ओंकार, परमेश्वर, ढोल (घ) नदी का प्रवाह
उत्तरः
(ग) ओंकार, परमेश्वर, ढोल

30. "शतमुख-शतरव-मुखरे!" — यहाँ 'शतरव' का क्या अर्थ है?
(क) मानव शरीर में बने सुंदर सौ मुखों का रूप
(ख) मानव शरीर में बनी सुंदर सौ हाथों की छवि
(ग) सौ की संख्या में ध्वनि, शब्द शोर, गुँजार
(घ) मानव जीवन में बीतने वाले पूरे सौ वर्ष
उत्तरः
(ग) सौ की संख्या में ध्वनि, शब्द शोर, गुँजार

31. "शतमुख-शतरव-मुखरे!" — इस पंक्ति में 'श' वर्ण की पुनरावृत्ति से कौन-सा अलंकार है?
(क) रूपक अलंकार (ख) उपमा अलंकार
(ग) यमक अलंकार (घ) अनुप्रास अलंकार
उत्तरः
(घ) अनुप्रास अलंकार

32. "मुखरे/मुखर" शब्द का क्या अर्थ है?
(क) पूरी तरह से चुप रहना या सदा मौन रहना।
(ख) बजता, शब्द करता हुआ, शोर करने वाला।
(ग) पूरी तरह से शांत रहना या स्थिर रहना।
(घ) पूरी तरह से अंधकारमय या काला होना।
उत्तरः
(ख) बजता, शब्द करता हुआ, शोर करने वाला।

33. कविता में भारत के वस्त्रों में 'तरु-तृण-वन-लता' और गले में 'गंगा-धारा' को चित्रित कर कवि किस प्रकार की चेतना का संदेश देते हैं?
(क) सामाजिक और राजनीतिक
(ख) आर्थिक और औद्योगिक

शाही महलों और रनिवासों का अपमान
अंग्रेजों के क्रूर अत्याचार के कारण झाँसी की रानियाँ अपने रनिवासों में रोती थीं और नवाबों की बेगमें दुख से बेहाल थीं। अंग्रेजों के सैनिक भारतीय राजपरिवारों के बहुमूल्य गहने और शाही कपड़े सरेआम कलकत्ता के बाज़ारों में नीलाम करते थे और इसकी खबरें अपने अखबारों में छापकर देश के सम्मान को ठेस पहुँचाते थे।

स्वतंत्रता महायज्ञ और रानी की वीरगति
इस अपमान के कारण पूरे देश में क्रांति की ज्वाला सुलग उठी और नाना धुंधूपंत व ताँतिया जैसे वीरों के नेतृत्व में स्वतंत्रता का महायज्ञ प्रारंभ हुआ। रानी लक्ष्मीबाई ने युद्ध के मैदान में पुरुषों के बीच मर्द बनकर तलवार खींच ली और लेफ्टिनेंट वॉकर तथा स्मिथ को परास्त किया। अंत में, दुश्मनों से घिर जाने और नाले के सामने नया घोड़ा अड़ जाने के कारण, यह तेईस वर्षीय सिंहनी वीरतापूर्वक लड़ते हुए वीरगति प्राप्त कर अमर हो गई।

4. कठिन-शब्दार्थ, सप्रसंग व्याख्या

काव्यांश 1

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फ़िरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन् सत्तावन में
वह तलवार पुरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

कठिन-शब्दार्थ
1. भृकुटी तानी – भौहें टेढ़ी करना, क्रोधित होना या विद्रोह करना।
2. गुमी – खोई हुई।
3. फ़िरंगी – अंग्रेज, विलायती।
4. मन में ठानी – दृढ़ निश्चय करना।
5. सन् सत्तावन – वर्ष 1857 का समय।
6. हरबोलों – बुंदेलखंड क्षेत्र में रहने वाले लोकगायकों का एक समुदाय।
7. मर्दानी – बहादुर, पुरुषोचित।

प्रसंग
प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'झाँसी की रानी' नामक पाठ से लिया गया है। इसकी रचयिता प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। इसमें सन् 1857 की क्रांति के समय भारत की तत्कालीन राजनैतिक स्थिति, देशवासियों में जागी राष्ट्रीय चेतना और अंग्रेजों को खदेड़ने के दृढ़ संकल्प को दर्शाया गया है।

व्याख्या
कवयित्री कहती हैं कि अंग्रेजों के अत्याचारों के कारण भारत के राजाओं के सिंहासन हिल उठे और देसी राजवंशों ने अंग्रेजों के खिलाफ अपनी भौहें तान लीं अर्थात् वे विद्रोह के लिए तैयार हो गए। गुलामी की बेड़ियों में जकड़े होने के कारण जो भारत निर्जीव और बूढ़ा हो चुका था, उसमें भी 1857 की क्रांति के रूप में देशभक्ति की एक नई जवानी और जोश का संचार हो गया। वर्षों पहले जो आज़ादी खो चुकी थी, अब देश के सभी लोग उसकी असली कीमत पहचान चुके थे। सभी ने मिलकर यह पक्का इरादा कर लिया था कि इन विदेशी फिरंगियों (अंग्रेजों) को अपने देश से खदेड़ देना है।

इसी संकल्प के साथ सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में भारत की वह पुरानी और सुप्त तलवार अचानक बिजली की तरह चमक उठी। कवयित्री कहती हैं कि बुंदेलखंड के लोकगायकों (हरबोलों) के मुख से हमने यह गौरवगाथा सुनी थी कि पुरुषों के इस युद्धक्षेत्र में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई एक वीर मर्द (योद्धा) की तरह पूरी बहादुरी से अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ी थीं।

काव्यांश 2

कानपूर के नाना की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नाना के सँग पढ़ती थी वह, नाना के सँग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी,
वीर शिवाजी की गाथाएँ
उसको याद ज़बानी थीं।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

कठिन-शब्दार्थ
1. नाना – नाना धुंधूपंत पेशवा।
2. छबीली – तेजस्वी, सुंदर, छबिवाली, सजीली।
3. बरछी – छोटा भाला।
4. ढाल – तलवार, भाले आदि के आघात को रोकने का लोहे का बना कछुए की पीठ जैसा एक साधन।
5. कृपाण – छोटी तलवार।
6. कटारी – छोटा खंजर या चाकू।
7. गाथाएँ – कथा, कीर्ति-गाथा, प्रशंसागीत।

प्रसंग
प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'झाँसी की रानी' नामक पाठ से लिया गया है। इसकी रचयिता प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। इसमें रानी लक्ष्मीबाई के बचपन, उनके अनोखे खिलौनों,

आदर को लेकर भारी अपमान की भावना सुलग रही थी। देश के वीर भारतीय सैनिकों के मन में अपने पराक्रमी पूर्वजों (पुरखों) के प्रति गर्व और स्वाभिमान भरा हुआ था, जिसके कारण वे गुलामी को सहने के लिए तैयार नहीं थे। कानपुर के बिठूर में नाना धुंधूपंत पेशवा देशव्यापी क्रांति और युद्ध के लिए आवश्यक अस्त्र-शस्त्र व रसद का सारा सामान जुटा रहे थे।

दूसरी ओर, उनकी साहसी वीर बहन 'छबीली' (लक्ष्मीबाई) ने चुपचाप बैठने के बजाय साक्षात् युद्ध की देवी 'रणचंडी' का रूप धारण करके अंग्रेजों के विरुद्ध खुली जंग का ऐलान (आह्वान) कर दिया। इस प्रकार, देश को स्वतंत्र कराने का जो पवित्र महायज्ञ शुरु हुआ, उसका मुख्य उद्देश्य देशवासियों के दिलों में सोई हुई देशभक्ति और आज़ादी की लौ (ज्योति) को दोबारा जगाना था। बुंदेलखंड के लोकगायकों के मुख से हमने यही वीरगाथा सुनी थी कि वह महातेजस्वी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई युद्धक्षेत्र में साक्षात् मर्द बनकर शत्रुओं का काल बनी थी।

काव्यांश 11

महलों ने दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतंत्रता की चिनगारी अंतरतम से आई थी,
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थीं,
मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी,
जबलपुर, कोल्हापुर में भी
कुछ हलचल उकसानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

कठिन-शब्दार्थ

1. ज्वाला सुलगाई – विद्रोह की तीव्र भावना को भड़काना।
2. अंतरतम – हृदय की गहराइयों से, अंतरात्मा से।
3. चेती – सजग हुई, जागी या सचेत हुई।
4. लपटें छाईं – क्रांति की आग का व्यापक रूप से फैलना।
5. हलचल उकसानी – विद्रोह के लिए लोगों को प्रेरित या जाग्रत करना।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'झाँसी की रानी' नामक पाठ से लिया गया है। इसकी रचयिता प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। इसमें 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की राष्ट्रव्यापी गूँज, समाज के सभी वर्गों की सामूहिक भागीदारी और देश के विभिन्न नगरों में फैली क्रांति की आग का ओजपूर्ण वर्णन है।

व्याख्या

कवयित्री कहती हैं कि देश को स्वतंत्र कराने के लिए महलों में रहने वाले राजाओं-शासकों ने विद्रोह की आग सुलगाई, तो झोपड़ियों में रहने वाले गरीब जनसामान्य ने भी उस आग को और तीव्र (ज्वाला) करने का काम किया। अर्थात् समाज का अमीर-गरीब हर वर्ग इस क्रांति में कूद पड़ा। आज़ादी पाने की यह इच्छा किसी बाहरी दबाव से नहीं, बल्कि सभी भारतीयों के हृदय की गहराइयों (अंतरतम) से उपजी एक सच्ची चिनगारी थी।

देखते ही देखते इस राष्ट्रीय चेतना से झाँसी सजग हो गई, दिल्ली जागी और लखनऊ में भी विद्रोह की भयंकर लपटें छा गईं। मेरठ, कानपुर और पटना जैसे बड़े नगरों ने तो इस संग्राम को आगे बढ़ाने में बहुत भारी धूम मचाई। इसके साथ ही जबलपुर और कोल्हापुर जैसे सुदूर क्षेत्रों में भी देशभक्तों ने सोए हुए लोगों को जाग्रत कर विद्रोह की हलचल पैदा कर दी थी। बुंदेलखंड के लोकगायकों के मुख से हमने यही कहानी सुनी थी कि वह झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई युद्ध के मैदान में साक्षात् मर्द बनकर शत्रुओं से लड़ी थी।

काव्यांश 12

इस स्वतंत्रता-महायज्ञ में कई वीरवर आए काम
नाना धुंधूपंत, ताँतिया, चतुर अज़ीमुल्ला सरनाम,
अहमद शाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास-गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम,
लेकिन आज जुर्म कहलाती
उनकी जो कुरबानी थी।
बुंदेले हरबालों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

कठिन-शब्दार्थ

1. वीरवर – श्रेष्ठ वीर, श्रेष्ठ योद्धा।
2. आए काम – युद्धभूमि में वीरगति प्राप्त करना, शहीद होना।
3. सरनाम – प्रसिद्ध, विख्यात।
4. अभिराम – सुंदर, मनमोहक या अत्यंत आदरणीय।
5. इतिहास-गगन – इतिहास रुपी आकाश।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'झाँसी की रानी' नामक पाठ से लिया गया है। इसकी रचयिता प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। इसमें 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम रुपी महायज्ञ में अपने प्राणों की आहुति देने वाले देश के प्रमुख महान राष्ट्रनायकों और अमर शहीदों का आदरपूर्वक स्मरण किया गया है।

व्याख्या

कवयित्री कहती हैं कि देश को आज़ाद कराने के लिए छिड़े इस स्वतंत्रता रुपी महायज्ञ में देश के कई महान और श्रेष्ठ योद्धा (वीरवर) मातृभूमि की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त

व्याख्या

कवयित्री लक्ष्मीबाई के विवाह का सुंदर वर्णन करते हुए कहती हैं कि साक्षात् वीरता की मूर्ति लक्ष्मीबाई की सगाई झाँसी के वैभवशाली राजा गंगाधर राव के साथ हुई। विवाह संपन्न होने के बाद वे धूमधाम से रानी बनकर झाँसी के राजमहल में आईं। उनके आगमन पर पूरे राजमहल में बधाई के गीत गाए गए और चारों तरफ खुशियों का माहौल छा गया। वे झाँसी में इस प्रकार आईं मानो बुंदेलखंड के वीर योद्धाओं (सुभटों) की यश-कीर्ति का कोई सुंदर गान (विरुदावलि) साकार होकर आ गया हो।

उनका यह विवाह ऐसा अलौकिक था मानो चित्रांगदा ने महान धनुर्धर अर्जुन को पा लिया हो, या फिर साक्षात् भगवान शिव से माता पार्वती (भवानी) का मिलन हो गया हो। बुंदेले गायकों के मुख से हमने यही सुना था कि वह अद्भुत वीरांगना झाँसी की रक्षा के लिए अंत तक मर्दों की तरह वीरता से लड़ती रही।

काव्यांश 5

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजयाली छाई,
किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाईं,
रानी विधवा हुई हाय! विधि को भी नहीं दया आई,
निःसंतान मरे राजाजी रानी शोक-समानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

कठिन-शब्दार्थ

1. उदित – उदय होना, जागी।
2. मुदित – प्रसन्न, आनंदित।
3. कालगति – समय की चाल, मृत्यु की गति।
4. काली घटा – संकट के बादल, विपत्ति।
5. कर – हाथ।
6. विधि – सृष्टि की रचना करने वाला, विधाता, ईश्वर।
7. शोक-समानी – शोक या अत्यधिक दुःख में डूब जाना।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'झाँसी की रानी' नामक पाठ से लिया गया है। इसकी रचयिता प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। इसमें राजा गंगाधर राव की आकस्मिक मृत्यु, रानी के जीवन पर आए वज्रपात और झाँसी पर छाए शोक के घने बादलों का अत्यंत कारुणिक वर्णन किया गया है।

व्याख्या

कवयित्री कहती हैं कि रानी के आने से झाँसी का सौभाग्य जाग उठा था और प्रसन्न महलों में सुख-शांति का प्रकाश फैल गया था। परंतु सुख का यह समय बहुत कम रहा और समय की क्रूर चाल (कालगति) चुपके से झाँसी पर संकट की काली घटा घेर लाई। विधाता को भी यह मंजूर नहीं था कि जो हाथ हमेशा तीर-कमान और हथियार चलाने के लिए बने थे, उनमें सुहाग की चूड़ियाँ लंबे समय तक बनी रहें। अचानक राजा गंगाधर राव की मृत्यु हो गई और रानी बहुत छोटी उम्र में ही विधवा हो गईं; हाय! उस निर्दयी विधाता (ईश्वर) को भी रानी पर ज़रा सी दया नहीं आई।

राजा जी बिना किसी संतान (उत्तराधिकारी) के ही स्वर्ग सिधार गए, जिसके कारण पूरी झाँसी अनाथ हो गई और रानी जी गहरे दुःख और शोक के सागर में डूब गईं। बुंदेलखंड के लोकगायकों के मुख से हमने यही कहानी सुनी थी कि ऐसी अत्यंत कठिन परिस्थितियों में भी वह साहसी रानी घबराई नहीं और झाँसी के स्वाभिमान के लिए मर्दों की तरह युद्ध के मैदान में उतरी।

काव्यांश 6

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौजी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया,
अश्रुपूर्ण रानी ने देखा
झाँसी हुई बिरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

कठिन-शब्दार्थ

1. बुझा दीप – राजा की मृत्यु होने से झाँसी का अनाथ हो जाना।
2. हरषाया – अत्यंत प्रसन्न हुआ।
3. हड़प करने – धोखे से छीनने या कब्ज़ा करने की नीति।
4. फौरन – तुरंत, शीघ्र।
5. लावारिस – जिसका कोई वैधानिक उत्तराधिकारी या वारिस न हो।
6. अश्रुपूर्ण – आँखों में आँसू भरे हुए, दुखी।
7. बिरानी – पराई या उजाड़।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'झाँसी की रानी' नामक पाठ से लिया गया है। इसकी रचयिता प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। इसमें राजा गंगाधर राव के निधन के बाद अंग्रेज गवर्नर जनरल डलहौजी की कुटिल नीति और झाँसी पर जबरन ब्रिटिश अधिकार का अत्यंत सजीव चित्रण है।

व्याख्या

कवियत्री कहती हैं कि जब राजा गंगाधर राव की मृत्यु से झाँसी का राज-दीपक बुझ गया, तब तत्कालीन अंग्रेज

व्याख्या

कवयित्री विदाई के इन अंतिम क्षणों में रानी के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा प्रकट करते हुए कहती हैं कि हे रानी! आप इस संसार से भले ही चली गई हैं, लेकिन हम सभी उपकार मानने वाले (कृतज्ञ) भारतवासी आपके इस महान बलिदान को सदैव अपने हृदयों में याद रखेंगे। देश की वेदी पर दिया गया आपका यह पावन बलिदान भारत में ऐसी आज़ादी (स्वतंत्रता) को जन्म देगा जो कभी नष्ट नहीं हो सकती (अविनाशी)। भविष्य में चाहे यह पक्षपाती इतिहास आपके बारे में चुप हो जाए (कुछ न लिखे), चाहे सच्चाई का गला घोंटकर उसे फाँसी पर लटका दिया जाए, या फिर घमंड में चूर (मदमाती) अंग्रेज अपनी तोपों के गोलों से आपकी इस प्रिय झाँसी का नामोनिशान ही क्यों न मिटा दें, लेकिन आपका गौरव कभी कम नहीं होगा।

हे रानी! आपकी स्मृति को सुरक्षित रखने के लिए पत्थरों के किसी बाहरी स्मारक (स्मृति-स्तंभ) की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आप स्वयं ही अपना सबसे बड़ा और अनमोल स्मारक हैं! आप स्वयं में एक ऐसी अमिट निशानी (पहचान) हैं, जिसे समय की कोई भी आँधी कभी नहीं मिटा सकती। बुंदेलखंड के लोकगायकों के मुख से हमने यही अमर इतिहास सुना था कि वह झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई युद्ध की रणभूमि में साक्षात् वीर पुरुष (मर्दानी) बनकर शत्रुओं से लड़ी थी।

5. पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. 'झाँसी की रानी' कविता की पंक्ति "बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी" में 'नई जवानी' शब्द किस भाव को व्यक्त करता है?

(क) देश का स्वाभिमान
(ख) विद्रोह की चिंगारी
(ग) स्वाधीनता का भय
(घ) भारत की युवावस्था

उत्तरः

(ख) विद्रोह की चिंगारी

यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि 'नई जवानी' यहाँ भारत की युवावस्था का शाब्दिक अर्थ नहीं है, बल्कि यह 1857 की क्रांति के उस नए उत्साह का प्रतीक है जो सदियों की पराधीनता के बाद फिर से जागी। बूढ़े भारत में एक बार फिर विद्रोह की चिंगारी भड़की — यही 'नई जवानी' है। यह विद्रोह का जोश और अंग्रेजों को भगाने का दृढ़ संकल्प था।

2. लक्ष्मीबाई को 'छबीली' कहना उनके व्यक्तित्व की किस विशेषता को दर्शाता है?

(क) विनम्रता
(ख) शोभायुक्त
(ग) सहिष्णुता
(घ) कठोरता

उत्तरः

(ख) शोभायुक्त

यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि 'छबीली' शब्द का अर्थ है — तेजस्वी, सुंदर, छबिवाली, सजीली। यह नाम लक्ष्मीबाई के तेजस्वी, आकर्षक और शोभायुक्त व्यक्तित्व को दर्शाता है। कानपुर के नाना धुंधूपंत ने उन्हें यह नाम उनकी शोभा और तेज के कारण दिया था।

3. "बुझा दीप झाँसी का" पंक्ति का भावार्थ है—

(क) अंग्रेजों का झाँसी पर अधिकार हो जाना
(ख) झाँसी राज्य की उम्मीदों का नष्ट हो जाना
(ग) राजा की आकस्मिक मृत्यु होना
(घ) रानी के जीवन में उदासी होना

उत्तरः

(क) अंग्रेजों का झाँसी पर अधिकार हो जाना

यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि इस पंक्ति में 'बुझा दीप' झाँसी की स्वाधीनता और संप्रभुता के अंत का प्रतीक है। इसके तुरंत बाद कविता में वर्णित है कि डलहौजी ने झाँसी पर अपना झंडा फहराया और ब्रिटिश राज्य झाँसी आया। अर्थात् झाँसी का दीप बुझना = अंग्रेजों का झाँसी पर अधिकार हो जाना।

4. "इस स्वतंत्रता-महायज्ञ में कई वीरवर आए काम" पंक्ति में स्वतंत्रता आंदोलन की किस ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत किया गया है?

(क) असहयोग आंदोलन
(ख) भारत छोड़ो आंदोलन
(ग) 1857 की क्रांति
(घ) सविनय अवज्ञा आंदोलन

उत्तरः

(ग) 1857 की क्रांति

यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि इस पंक्ति के बाद नाना धुंधूपंत, ताँतिया, चतुर अज़ीमुल्ला, अहमद शाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह जैसे वीरों का उल्लेख है जो 1857 की क्रांति के नायक थे। यह पूरी कविता 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि पर लिखी गई है।

5. "व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया" पंक्ति में 'यह' शब्द किसके लिए कहा गया है?

(क) नवाबों के लिए
(ख) जनरल डलहौजी के लिए
(ग) लेफ्टिनेंट वॉकर के लिए
(घ) ब्रिटिश राज के लिए

दिल्ली, लखनऊ और नागपुर जैसे बड़े राज्य न बच सके, तो उदयपुर, तंजौर, सतारा और कर्नाटक जैसे छोटे राज्यों की अंग्रेजों के सामने बिसात (हैसियत) ही क्या थी! इसके अलावा सिंध, पंजाब और म्यांमार (ब्रह्मदेश) पर भी अभी-अभी अंग्रेजों का क्रूर अधिकार रुपी वज्र गिरा था।

देश के अन्य हिस्सों जैसे बंगाल और मद्रास (चेन्नई) आदि प्रांतों की भी यही दुखद कहानी थी कि वे भी धीरे-धीरे अंग्रेजों के गुलाम हो चुके थे। बुंदेलखंड के हरबोलों के मुख से हमने यही गाथा सुनी थी कि जब चारों ओर निराशा थी, तब झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने साक्षात् मर्द बनकर अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए थे।

काव्यांश 9

रानी रोईं रनिवासों में बेगम ग़म से थीं बेजार,
उनके गहने-कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाजार,
सरे-आम नीलाम छापते थे अंग्रेजों के अखबार,
'नागपूर के जेवर ले लो 'लखनऊ के लो नौलख हार',
यों परदे की इज़्ज़त पर-
देशी के हाथ बिकानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

कठिन-शब्दार्थ

1. रनिवासों – महलों के भीतर रानियों के रहने का स्थान (अन्तःपुर)।
2. बेजार – दुखी, अत्यंत ऊबा हुआ या लाचार।
3. सरे-आम – सबके सामने, खुलेआम।
4. नौलख हार – अत्यंत कीमती नौ लाख मूल्य का हार।
5. परदे की इज़्ज़त – राजघरानों की महिलाओं का सम्मान व मर्यादा।
6. पर-देशी – विदेशी, अंग्रेज।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'झाँसी की रानी' नामक पाठ से लिया गया है। इसकी रचयिता प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। इसमें अंग्रेजों द्वारा भारतीय राजघरानों की महिलाओं के शोषण, उनके गहने-कपड़ों की सार्वजनिक नीलामी और देश के स्वाभिमान को लगी ठेस का अत्यंत कारुणिक वर्णन है।

व्याख्या

कवयित्री अंग्रेजों के घिनौने रूप को उजागर करते हुए कहती हैं कि राज्यों को हड़पने के बाद झाँसी की रानी अपने रनिवासों में दुखी होकर रो रही थीं और अवध की बेगम भी अपने अपमान और दुःख (ग़म) से बहुत लाचार व बेहाल थीं। ये अत्याचारी अंग्रेज उन सम्मानित रानियों और बेगमों के कीमती गहने और शाही रेशमी कपड़े तक छीन लेते थे और उन्हें खुलेआम कोलकाता (कलकत्ता) के बाज़ारों में बेचते थे। अंग्रेजों के समाचार पत्र सरेआम इन शाही चीज़ों की नीलामी के विज्ञापन छापते थे —"आओ, नागपुर के राजघराने के पारंपरिक सोने के जेवर ले लो और लखनऊ की बेगमों का प्रसिद्ध बहुमूल्य नौलखा हार खरीद लो"।

इस प्रकार, जिन भारतीय महिलाओं का सम्मान महलों के भीतर परदे में सुरक्षित रहता था, उनकी इज़्ज़त और वैभव को इन विदेशी अंग्रेजों के हाथों सरेबाज़ार नीलाम किया जा रहा था। यह गौरवशाली इतिहास हमने बुंदेलखंड के लोकगायकों से सुना था कि इस महाअपमान का बदला लेने के लिए झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई युद्ध के मैदान में मर्दानों की तरह वीरता से लड़ी थीं।

काव्यांश 10

कुटियों में थी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान,
वीर सैनिकों के मन में था, अपने पुरखों का अभिमान,
नाना धुंधूपंत पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीली ने रण-चंडी का कर दिया प्रकट आह्वान,
हुआ यज्ञ प्रारंभ उन्हें तो
सोई ज्योति जगानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

कठिन-शब्दार्थ

1. विषम वेदना – बहुत गहरा दुःख या अत्यंत कष्ट।
2. आहत – घायल या जिसे गहरी ठेस लगी हो।
3. पुरखों – पूर्वजों।
4. धुंधूपंत – नाना साहब पेशवा का वास्तविक नाम।
5. रण-चंडी – युद्ध की देवी (साक्षात् दुर्गा का रुप)।
6. आह्वान – पुकारना, युद्ध के लिए ललकारना या शुरुआत करना।
7. सोई ज्योति – देशवासियों के भीतर सुप्त (सोया हुआ) देशभक्ति और आज़ादी का भाव।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'झाँसी की रानी' नामक पाठ से लिया गया है। इसकी रचयिता प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। इसमें समाज के सभी वर्गों में अंग्रेजों के खिलाफ पनपते आक्रोश, नाना साहब द्वारा क्रांति की तैयारी और लक्ष्मीबाई द्वारा साक्षात् युद्ध की देवी के रूप में स्वतंत्रता संग्राम का शंखनाद करने का ओजपूर्ण वर्णन है।

व्याख्या

कवयित्री कहती हैं कि अंग्रेजों के कुशासन के कारण देश के गरीब लोगों की कुटियों में गहरा दुःख (विषम वेदना) था और राजाओं के महलों में अपने छीने गए अधिकारों और

गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी मन ही मन बहुत खुश हुआ। उसने झाँसी को लावारिस (बिना उत्तराधिकारी के) मानकर ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाने का इसे बहुत अच्छा मौका समझा। उसने तुरंत अपनी सेनाएँ भेजीं और झाँसी के किले (दुर्ग) पर अंग्रेजी हुकूमत का यूनियन जैक (झंडा) फहरा दिया। इस प्रकार, जिसका कोई वारिस नहीं था, उसका जबरन मालिक (वारिस) बनकर ब्रिटिश शासन झाँसी की धरती पर आ धमका।

दु:ख से भरी और आँखों में आँसू लिए रानी लक्ष्मीबाई ने देखा कि उनकी प्रिय झाँसी अब लूट चुकी है और अपनों के बीच ही पराई (उजाड़) हो चुकी है। बुंदेलखंड के लोकगायकों (हरबोलों) के माध्यम से हमने यही वीरगाथा सुनी थी कि वह महान वीरांगना झाँसी की रक्षा के लिए पुरुषों के समान पूरी वीरता के साथ अंग्रेजों से लड़ी थी।

काव्यांश 7

अनुनय-विनय नहीं सुनता है, विकट फ़िरंगी की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौजी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया,
राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया,
रानी दासी बनी, बनी यह
दासी अब महरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

कठिन-शब्दार्थ

1. अनुनेय-विनय – प्रार्थना या विनती।
2. विकट – भयानक, कठिन या चालाकी से भरी।
3. काया पलट जाना – परिस्थिति पूरी तरह बदल जाना।
4. पैरों ठुकराया – अपमानित करना, सत्ता छीन लेना।
5. दासी – नौकरानी या अधीन (यहाँ अपमानित रानियों के लिए प्रयुक्त है)।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'झाँसी की रानी' नामक पाठ से लिया गया है। इसकी रचयिता प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। इसमें अंग्रेजों की व्यापार के बहाने भारत आने की चालाकी, उनकी क्रूरता और भारतीय शासकों के किए गए भारी अपमान का ऐतिहासिक वर्णन है।

व्याख्या

कवयित्री कहती हैं कि ये क्रूर अंग्रेज (फिरंगी) किसी की भी आदरपूर्वक की गई प्रार्थना या विनती को नहीं सुनते हैं; इनकी बुद्धि और जालसाजी बहुत भयानक है। जब ये ईस्ट इंडिया कंपनी के रूप में भारत आए थे, तब यहाँ के राजाओं के सामने साधारण व्यापारी बनकर दया की भीख माँगते थे। लेकिन जब लॉर्ड डलहौजी आया, तो उसने साम्राज्य विस्तार के लिए अपने पैर पूरी तरह पसार लिए और अब भारत की पूरी स्थिति (काया) ही बदल चुकी थी। जिन राजाओं और नवाबों से कभी इन्होंने दया माँगी थी, अब उन्हीं स्वाभिमानी शासकों को ये अपने पैरों से ठुकराने और अपमानित करने लगे थे।

जो रानियाँ महलों में राज करती थीं, अंग्रेजों के कब्ज़े के बाद वे उनके सामने दासी (दासों के समान लाचार) बन चुकी थीं, और जो विक्टोरिया (महारानी) दूर इंग्लैंड में बैठी दासी की तरह थी, वह अब भारत की असली मालकिन (महारानी) बन बैठी थी। बुंदेलखंड के लोकगायकों के मुख से हमने यही शौर्यगाथा सुनी थी कि वह झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई युद्धभूमि में साक्षात् वीर मर्द बनकर शत्रुओं पर टूट पड़ी थी।

काव्यांश 8

छिनी राजधानी देहली की, लिया लखनऊ बातों-बात,
कैद पेशवा था बिठूर में, हुआ नागपुर का भी घात,
उदैपूर, तंजोर, सतारा, करनाटक की कौन बिसात,
जब कि सिंध, पंजाब, ब्रह्म पर अभी हुआ था वज्र-निपात,
बंगाले, मद्रास आदि की
भी तो यही कहानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

कठिन-शब्दार्थ

1. बातों-बात – बहुत आसानी से, बिना किसी बड़ी कठिनाई के।
2. घात – गुप्त हमला, धोखा या विनाश।
3. बिसात – हैसियत, शक्ति या सामर्थ्य।
4. वज्र-निपात – बिजली गिरना, बहुत भारी विपत्ति या विनाश होना।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'झाँसी की रानी' नामक पाठ से लिया गया है। इसकी रचयिता प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। इसमें अंग्रेजों द्वारा एक-एक करके पूरे भारत के विभिन्न राज्यों और राजधानियों को हड़पने की क्रूर राजनैतिक विजय का उल्लेख किया गया है।

व्याख्या

कवयित्री कहती हैं कि अंग्रेजों ने देश की मुख्य राजधानी दिल्ली को मुगलों से छीन लिया और देखते ही देखते (बातों-बातों में) नवाबों के शहर लखनऊ पर भी अपना अधिकार जमा लिया। अंतिम मराठा पेशवा बाजीराव द्वितीय बिठूर में अंग्रेजों की कैद में थे और नागपुर पर भी उन्होंने कूटनीति से बहुत बड़ा हमला (घात) कर उसे हथिया लिया था। जब

हुए (काम आए)। इन अमर शहीदों में कानपुर के नाना धुंधूपंत पेशवा, कुशल सेनापति ताँत्या तोपे, चतुर और विख्यात अज़ीमुल्ला ख़ान शामिल थे। इनके साथ ही फैजाबाद के अहमद शाह मौलवी और बिहार के वयोवृद्ध पराक्रमी राजा ठाकुर कुँवरसिंह जैसे अत्यंत आदरणीय (अभिराम) सैनिक व योद्धा इस महान संग्राम के प्रमुख स्तंभ थे। भारत के इतिहास रूपी विशाल आकाश में इन महानायकों के नाम सदैव सूरज-चाँद की तरह अमर रहेंगे।

यद्यपि तत्कालीन ब्रिटिश शासन (अंग्रेजों) की दृष्टि में अपने देश के लिए दी गई उनकी वह महान कुर्बानी एक बहुत बड़ा अपराध (जुर्म) कहलाती थी, लेकिन भारतीयों के लिए वे वंदनीय थे। बुंदेलखंड के हरबोलों के मुख से हमने यही शौर्यगाथा सुनी थी कि पुरुषों के उस भयंकर युद्धक्षेत्र में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई साक्षात् मर्द बनकर दुश्मनों का काल बनी थी।

काव्यांश 13

इनकी गाथा छोड़ चलें हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लेफ्टिनेंट वॉकर आ पहुँचा, आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वंद्व असमानों में,
जख्मी होकर वॉकर भागा,
उसे अजब हैरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

कठिन-शब्दार्थ

1. मर्दानों में – पुरुषों के बीच।
2. द्वंद्व – दो योद्धाओं के बीच होने वाला सीधा युद्ध।
3. असमानों में – जो आपस में समान न हों (एक साधारण पुरुष अंग्रेज अधिकारी और दूसरी साक्षात् शक्ति स्वरूपा वीरांगना रानी)।
4. अजब हैरानी – अत्यधिक आश्चर्यचकित हो जाना।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'झाँसी की रानी' नामक पाठ से लिया गया है। इसकी रचयिता प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। इसमें झाँसी की रणभूमि में रानी लक्ष्मीबाई और अंग्रेज अधिकारी लेफ्टिनेंट वॉकर के बीच हुए भयंकर आमने-सामने के युद्ध और रानी द्वारा उसे परास्त करने का ओजस्वी वर्णन है।

व्याख्या

कवयित्री कहती हैं कि बाकी वीरों की वीरगाथाओं को यहीं छोड़कर अब हम सीधे झाँसी के युद्ध के मैदान में चलते हैं, जहाँ रानी लक्ष्मीबाई पुरुषों के उस भयंकर युद्ध के बीच स्वयं साक्षात् वीर मर्द बनकर दृढ़ता से खड़ी हैं। इसी बीच ब्रिटिश सेना का नेतृत्व करते हुए लेफ्टिनेंट वॉकर अपनी सेना की टुकड़ियों (जवानों) के साथ वहाँ आ पहुँचा और आगे बढ़ने लगा। उसे आगे आता देख रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी म्यान से चमचमाती तलवार खींच ली और फिर उन दोनों के बीच भीषण युद्ध (द्वंद्व) शुरू हो गया। वह युद्ध दो असमान योद्धाओं के बीच था, क्योंकि कहाँ एक साधारण पुरुष अंग्रेज अधिकारी और कहाँ रणचंडी बनी अद्भुत वीरांगना रानी!

रानी के तलवार के जोरदार प्रहारों से बुरी तरह घायल होकर वॉकर अपनी जान बचाकर वहाँ से भाग खड़ा हुआ। उसे रानी के इस अदम्य साहस और युद्ध-कौशल पर बहुत बड़ी हैरानी (आश्चर्य) हो रही थी कि एक महिला इतनी वीरता से कैसे लड़ सकती है। बुंदेले लोकगायकों के मुख से हमने यही कहानी सुनी थी कि वह झाँसी की रानी शत्रुओं के सामने मर्दानों की तरह डटकर लड़ी थी।

काव्यांश 14

रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरंतर पार
घोड़ा थक कर गिरा भूमि पर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना-तट पर अंग्रेजों ने फिर खाई रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार,
अंग्रेजों के मित्र सिंधिया
ने छोड़ी रजधानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

कठिन-शब्दार्थ

1. तत्काल सिधार गया – तुरंत मृत्यु को प्राप्त हो जाना।
2. अधिकार किया – कब्ज़ा कर लिया या अपनी जीत दर्ज की।
3. रजधानी – राजधानी।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'झाँसी की रानी' नामक पाठ से लिया गया है। इसकी रचयिता प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। इसमें रानी लक्ष्मीबाई द्वारा लगातार यात्रा कर कालपी और ग्वालियर पर विजय प्राप्त करने तथा उनके प्रिय घोड़े की शहादत का ऐतिहासिक वर्णन है।

व्याख्या

कवयित्री कहती हैं कि वॉकर को हराने के बाद रानी लक्ष्मीबाई बिना रुके लगातार सौ मील का लंबा और कठिन रास्ता पार करके कालपी नगर आ पहुँचीं। इतनी लंबी और तेज दौड़ के कारण उनका प्रिय वफादार घोड़ा अत्यधिक थककर अचानक धरती (भूमि) पर गिर पड़ा और

तुरंत ही स्वर्ग सिधार गया अर्थात् उसकी मृत्यु हो गई। इस भारी व्यक्तिगत दुःख के बावजूद रानी रुकी नहीं; कालपी में यमुना नदी के किनारे अंग्रेजों ने एक बार फिर रानी से भयंकर युद्ध किया और रानी के हाथों करारी हार खाई।

यमुना तट पर विजयी होने के बाद रानी आगे बढ़ती गईं और उन्होंने सिंधिया राजवंश के प्रमुख गढ़ ग्वालियर पर अपना पूर्ण अधिकार कर लिया। अंग्रेजों के परम मित्र ग्वालियर के शासक महाराजा सिंधिया रानी के इस रौद्र रुप और पराक्रम को देखकर अपनी राजधानी छोड़कर वहाँ से भाग खड़े हुए थे। बुंदेलखंड के हरबोलों के मुख से हमने यही वीरगाथा सुनी थी कि झाँसी की वह रानी शत्रुओं के सामने साक्षात् मर्द बनकर लड़ी थी।

काव्यांश 15

विजय मिली, पर अंग्रेजों की फिर सेना घिर आई थी,
अबके जनरल स्मिथ सन्मुख था, उसने मुँह की खाई थी,
काना और मंदरा सखियाँ रानी के सँग आई थीं,
युद्ध क्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी,
पर, पीछे ह्यू रोज आ गया,
हाय! घिरी अब रानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

कठिन-शब्दार्थ

1. सन्मुख (सम्मुख) – सामने खड़ा होना या भिड़ने वाला।
2. मुँह की खाई – बुरी तरह हार जाना।
3. मार मचाई – शत्रुओं का संहार करना, तबाही मचाना।
4. ह्यू रोज – ब्रिटिश सेना का एक क्रूर और मुख्य जनरल (सर ह्यूज़ रोज)।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'झाँसी की रानी' नामक पाठ से लिया गया है। इसकी रचयिता प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। इसमें ग्वालियर के युद्ध में रानी की सखियों—काना और मंदरा के पराक्रम, जनरल स्मिथ की पराजय और अंत में जनरल ह्यूरोज की सेना द्वारा रानी को चारों ओर से घेर लिए जाने का वर्णन है।

व्याख्या

कवयित्री कहती हैं कि ग्वालियर में रानी को विजय तो मिल गई, परंतु अंग्रेजों की एक और नई विशाल सेना ने आकर उन्हें फिर से चारों तरफ से घेर लिया। इस बार ब्रिटिश सेना का नेतृत्व सामने से जनरल स्मिथ कर रहा था, लेकिन रानी के तीखे प्रहारों के आगे वह टिक न सका और उसने भी बुरी तरह हार (मुँह की) खाई। इस भीषण युद्ध में रानी लक्ष्मीबाई के साथ उनकी दो बहादुर सहेलियाँ (सखियाँ)—'काना' और 'मंदरा' भी युद्ध के मैदान में उतरी थीं। रणभूमि में उन दोनों वीरांगनाओं ने भी तलवार चलाकर अंग्रेज सैनिकों के बीच भारी मार-काट मचाई और अपना अद्भुत कौशल दिखाया।

परंतु, तभी एक बहुत बड़ी विपत्ति आई; पीछे की तरफ से ब्रिटिश सेना की एक नई और ताज़ा टुकड़ी लेकर क्रूर जनरल ह्यूरोज आ पहुँचा। अब स्थिति अत्यंत विकट हो गई थी, क्योंकि आगे और पीछे दोनों तरफ से घिर जाने के कारण हमारी वह अकेली रानी शत्रुओं के चक्रव्यूह में घिर चुकी थीं। बुंदेलखंड के लोकगायकों के मुख से हमने यही कहानी सुनी थी कि वह झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई युद्धक्षेत्र में पुरुषों के समान अदम्य साहस से लड़ी थी।

काव्यांश 16

तो भी रानी मार-काटकर चलती बनी सैन्य के पार,
किंतु सामने नाला आया, था यह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गए सवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार पर वार,
घायल होकर गिरी सिंहनी
उसे वीर-गति पानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

कठिन-शब्दार्थ

1. सैन्य – सेना।
2. विषम अपार – बहुत बड़ा और अत्यंत कठिन संकट।
3. घोड़ा अड़ा – घोड़े का रुक जाना या आगे बढ़ने से मना करना।
4. बहुतेरे – बहुत सारे, अनगिनत।
5. वीर-गति – देश की रक्षा करते हुए युद्धभूमि में सम्मानजनक मृत्यु पाना।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'झाँसी की रानी' नामक पाठ से लिया गया है। इसकी रचयिता प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। इसमें चारों ओर से घिर जाने पर भी रानी द्वारा वीरता से सेना को चीरने, रास्ते में आए नाले के कारण नए घोड़े के अड़ जाने और अंततः रानी के घायल होकर वीरगति प्राप्त करने का अत्यंत कारुणिक व ओजस्वी चित्रण है।

व्याख्या

कवयित्री कहती हैं कि दोनों ओर से घिर जाने के बाद भी साहस न खोते हुए रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेज सैनिकों को गाजर-मूली की तरह काटती हुई उनके सैन्य घेरे को चीरकर बाहर निकल गईं। लेकिन जैसे ही वे आगे बढ़ीं, सामने रास्ते में पानी का एक चौड़ा नाला आ गया; यह रानी के लिए बहुत ही कठिन और पार न किया जा सकने वाला संकट (विषम

अपार) था। क्योंकि उनका पुराना वफादार घोड़ा शहीद हो चुका था और यह नया घोड़ा था, इसलिए वह उस नाले को लाँघने के बजाय वहीं अड़कर खड़ा हो गया। इतनी ही देर में पीछे से पीछा करते हुए कई अंग्रेज घुड़सवार वहाँ आ पहुँचे।

अब रणभूमि में साक्षात् काल जैसी स्थिति थी—रानी अकेली थीं और उनके चारों ओर दुष्ट शत्रु अनगिनत (बहुतेरे) थे। दोनों ओर से रानी पर तलवारों के वार पर वार होने लगे। अंततः, साक्षात् शेरनी (सिंहनी) के समान पराक्रमी वह रानी गंभीर रूप से घायल होकर धरती पर गिर पड़ी; मातृभूमि की रक्षा करते हुए अब उन्हें वीरगति प्राप्त करनी थी। बुंदेलखंड के लोकगायकों के मुख से हमने यही गाथा सुनी थी कि वह झाँसी की रानी शत्रुओं के सामने मर्दानों की तरह अंतिम साँस तक लड़ी थी।

काव्यांश 17

रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता नारी थी,
दिखा गई पथ, सिखा गई
हमको जो सीख सिखानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

कठिन-शब्दार्थ

1. सिधार गई – मृत्यु को प्राप्त हो जाना, परलोक चली जाना।
2. दिव्य सवारी – अलौकिक या देवताओं जैसी सवारी (अग्नि की चिता)।
3. तेज से तेज मिला – आत्मा का परमात्मा के परम प्रकाश में लीन हो जाना।
4. मनुज – साधारण मनुष्य, मानव।
5. अवतारी – देवतुल्य, किसी दैवीय शक्ति का रूप।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'झाँसी की रानी' नामक पाठ से लिया गया है। इसकी रचयिता प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। इसमें रानी लक्ष्मीबाई के भौतिक शरीर के अंत (परलोक गमन), उनके ईश्वरीय अवतार जैसे स्वरूप और देशवासियों को आज़ादी का मार्ग दिखाने का बहुत ही मार्मिक गौरवगान किया गया है।

व्याख्या

कवयित्री बहुत ही श्रद्धा के साथ कहती हैं कि हमारी प्रिय रानी लक्ष्मीबाई अब इस संसार को छोड़कर परलोक सिधार गईं। अब अग्नि की पावन चिता ही उनकी अलौकिक (दिव्य) सवारी थी, जिस पर वे सवार हो चुकी थीं। उनका वह भौतिक लौकिक तेज (आत्मा) साक्षात् परमात्मा के परम तेज में विलीन हो गया; वे वास्तव में इसी अमर दिव्य तेज की सच्ची अधिकारी थीं। जब वे शहीद हुईं, तब उनकी उम्र केवल तेईस (23) वर्ष की थी। इतनी कम उम्र में ऐसा अद्भुत पराक्रम देखकर स्पष्ट था कि वे कोई साधारण मानव (मनुज) नहीं, बल्कि साक्षात् ईश्वर का कोई दिव्य रुप (अवतारी) थीं।

वे हम सभी गुलाम भारतीयों को गुलामी की नींद से जगाकर नया जीवन (जीवित करने) देने के लिए साक्षात् 'स्वतंत्रता की देवी' बनकर इस धरती पर आई थीं। वे हमें देश के लिए सर्वस्व न्योछावर करने का मार्ग (पथ) दिखा गईं और स्वाभिमान से जीने की जो सर्वश्रेष्ठ सीख हमें सिखानी थी, वह अपने बलिदान से सिखा गईं। बुंदेलखंड के लोकगायकों के मुख से हमने यही गौरवगाथा सुनी थी कि वह झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई युद्धक्षेत्र में साक्षात् वीर मर्द बनकर लड़ी थी।

काव्यांश 18

जाओ रानी याद रखेंगे हम कृतज्ञ भारत वासी,
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनाशी,
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी,
हो मदमाती विजय मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी,
तेरा स्मारक तू ही होगी,
तू खुद अमिट निशानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

कठिन-शब्दार्थ

1. कृतज्ञ – उपकार मानने वाला, अहसानमंद।
2. अविनाशी – नाशरहित, जो कभी नष्ट न हो, अक्षय या नित्य।
3. होवे चुप इतिहास – चाहे इतिहास में उनके योगदान को दबा दिया जाए या न लिखा जाए।
4. मदमाती – घमंड में चूर, मदमत्त।
5. स्मारक – किसी की याद में बनाया गया भवन, स्तंभ या स्मृति-चिह्न।
6. अमिट निशानी – जिसे कभी मिटाया न जा सके, अमिट पहचान।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'झाँसी की रानी' नामक पाठ से लिया गया है। इसकी रचयिता प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। यह कविता का अंतिम उपसंहार (छंद) है, जिसमें संपूर्ण भारतवासियों की ओर से रानी के प्रति कृतज्ञता, उनके बलिदान की अमरता और उनके कभी न मिटने वाले गौरवशाली व्यक्तित्व को अंजलि दी गई है।

नाना साहब के साथ उनके जुड़ाव और वीर शिवाजी की गाथाओं के प्रति उनके आकर्षण का वर्णन किया गया है।

व्याख्या

कवयित्री कहती हैं कि कानपुर के नाना धुंधूपंत पेशवा लक्ष्मीबाई को अपनी मुँहबोली बहन मानते थे और उन्हें प्यार से 'छबीली' कहकर पुकारते थे क्योंकि वे अत्यंत सुंदर और तेजस्वी थीं। उनका वास्तविक नाम लक्ष्मीबाई था और वे अपने पिता की इकलौती संतान थीं। बचपन में वे लड़कियों वाले खेल खेलने के बजाय नाना साहब के साथ ही पढ़ती थीं और उन्हीं के साथ खेलती थीं। जहाँ सामान्य लड़कियों की सहेलियाँ गुड़िया और बर्तन होते हैं, वहीं लक्ष्मीबाई की सहेलियाँ बरछी, ढाल, तलवार (कृपाण) और कटारी जैसे हथियार थे। वे बचपन से ही युद्ध कला में निपुण थीं।

मराठा साम्राज्य के गौरव वीर छत्रपति शिवाजी महाराज की वीरता की कहानियाँ लक्ष्मीबाई को बचपन से ही ज़बानी याद थीं, जिसने उनके भीतर राष्ट्रप्रेम और साहस का बीजारोपण किया। यह पूरी वीरगाथा हमें बुंदेलखंड के लोकगायकों के माध्यम से सुनने को मिली थी कि झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने रणभूमि में पुरुषों के समान अदम्य साहस का परिचय दिया था।

काव्यांश 3

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उसके प्रिय खिलवार,
महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी
भी आराध्य भवानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

कठिन-शब्दार्थ

1. अवतार – ऊपर से नीचे आना, किसी देवता या ईश्वर का मनुष्यादि के रूप में जन्म लेना।
2. पुलकित – प्रसन्न या आनंदित होना।
3. व्यूह की रचना – युद्ध में सेना को विशेष आकार में खड़ा करने की कला (चक्रव्यूह आदि)।
4. सैन्य – सेना।
5. दुर्ग – गढ़, किला, कठिन या तंग रास्ता।
6. खिलवार – खेल या प्रिय क्रीड़ा।
7. आराध्य भवानी – पूजनीय माता पार्वती (दुर्गा)।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'झाँसी की रानी' नामक पाठ से लिया गया है। इसकी रचयिता प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। इसमें लक्ष्मीबाई की युद्ध-कलाओं, उनके साहसिक अभ्यासों तथा उनके सैन्य कौशल को देखकर मराठों के आनंदित होने का गौरवशाली वर्णन किया गया है।

व्याख्या

कवयित्री कहती हैं कि लक्ष्मीबाई का शौर्य देखकर ऐसा लगता था मानो वे साक्षात् धन की देवी लक्ष्मी हों या फिर दुष्टों का संहार करने वाली स्वयं साक्षात् दुर्गा जी वीरता का रूप धारण करके धरती पर अवतरित हुई हों। जब वे तलवार चलाती थीं, तो उनकी तलवारों के तेज और सटीक वार देखकर मराठा सैनिक गर्व से आनंदित (पुलकित) हो उठते थे। बचपन से ही उनके प्रिय खेल बहुत अनोखे और साहसी थे, जैसे—नकली युद्ध का अभ्यास करना, सेना के चक्रव्यूह बनाना, जंगलों में शिकार खेलना, दुश्मन की सेना को चारों तरफ से घेरना और मिट्टी या पत्थरों के नकली किलों (दुर्गों) को तोड़ना।

छत्रपति शिवाजी महाराज की तरह ही महाराष्ट्र के गौरवशाली राजवंश की कुलदेवी माता भवानी (दुर्गा) ही लक्ष्मीबाई की भी पूजनीय आराध्य देवी थीं, जिनसे उन्हें शक्ति और राष्ट्ररक्षा की प्रेरणा मिलती थी। बुंदेलखंड के हरबोलों के मुख से हमने यही सुना था कि झाँसी की वह रानी शत्रुओं के सामने मर्दानों की तरह डटकर लड़ी थी।

काव्यांश 4

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राजमहल में बजी बधाई खुशियाँ छाईं झाँसी में,
सुभट बुंदेलों की विरुदावलि-सी वह आई झाँसी में,
चित्रा ने अर्जुन को पाया,
शिव से मिली भवानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

कठिन-शब्दार्थ

1. वैभव – ऐश्वर्य, धन-संपत्ति (यहाँ झाँसी के राजा गंगाधर राव के वैभव के लिए आया है)।
2. सुभट – रणकुशल योद्धा।
3. विरुदावलि/विरुद – कविता आदि जिसमें किसी के यश आदि का वर्णन किया गया हो, प्रशंसासूचक पदवी।
4. चित्रा – महाभारत की पात्र चित्रांगदा (अर्जुन की पत्नी)।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'झाँसी की रानी' नामक पाठ से लिया गया है। इसकी रचयिता प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। इसमें लक्ष्मीबाई के झाँसी के राजा गंगाधर राव के साथ विवाह होने और उनके आगमन से झाँसी में फैली अपार खुशियों का आनंदमयी वर्णन है।

उत्तरः
(घ) ब्रिटिश राज के लिए
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि 'यह' शब्द उस शक्ति के लिए है जो पहले व्यापारी (ईस्ट इंडिया कंपनी) बनकर भारत आई और दया की याचना करती रही, फिर धीरे-धीरे पूरे भारत पर अपना शासन स्थापित कर लिया। यह ब्रिटिश राज की समग्र नीति का संकेत है, न केवल किसी एक व्यक्ति का।

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. 'झाँसी की रानी' कविता के आधार पर बताइए कि लक्ष्मीबाई के प्रिय खेल कौन-कौन से थे? उनका बचपन दूसरों से किस प्रकार भिन्न था?

उत्तरः
लक्ष्मीबाई के प्रिय खेल: कविता के अनुसार लक्ष्मीबाई के प्रिय खेल थे:
1. नकली युद्ध — वे बचपन से ही युद्ध का अभ्यास करती थीं।
2. व्यूह की रचना — सैन्य रणनीति बनाने का अभ्यास।
3. शिकार खेलना — "खेलना खूब शिकार"।
4. सैन्य घेरना — सेना को घेरने का अभ्यास।
5. दुर्ग तोड़ना — किले तोड़ने की कला का अभ्यास।

इसके अतिरिक्त बरछी, ढाल, कृपाण और कटारी उनकी सहेलियाँ थीं।
बचपन अन्य बालिकाओं से भिन्न था:
1. सामान्य बालिकाएँ गुड़ियाँ खेलती हैं, पर लक्ष्मीबाई की सहेलियाँ बरछी, ढाल, कृपाण और कटारी थीं।
2. वे कानपुर के नाना धुंधूपंत की मुँहबोली बहन थीं और उन्हीं के साथ पढ़ती और खेलती थीं।
3. उन्हें वीर शिवाजी की गाथाएँ जबानी याद थीं — यह बताता है कि उनकी रुचि बचपन से ही वीरता और इतिहास में थी।
4. वे महाराष्ट्र की कुल-देवी भवानी की उपासक थीं।

2. "किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई" पंक्ति के माध्यम से किस घटना की ओर संकेत किया गया है?

उत्तरः
इस पंक्ति के माध्यम से दो दुःखद घटनाओं की ओर संकेत किया गया है:
1. **पुत्र की मृत्यु**: रानी लक्ष्मीबाई और राजा गंगाधर राव के पुत्र की शैशवावस्था में ही मृत्यु हो गई थी — "निःसंतान मरे राजाजी।"
2. **राजा गंगाधर राव की मृत्यु**: पुत्र की मृत्यु के बाद राजा गंगाधर राव भी बीमार पड़ गए और उनका देहावसान हो गया।

'कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई' — यह काव्य-पंक्ति बताती है कि अच्छे दिन (सौभाग्य का उदय) अचानक बदल गए और मृत्यु रूपी काली घटा छा गई। सुख के बाद दुख का यह आगमन अनपेक्षित था। "तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाईं" — रानी को वैधव्य स्वीकार करना पड़ा।

3. "महलों ने दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी" पंक्ति समाज के विभिन्न वर्गों की एकता को दर्शाती है, इस एकता का स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में क्या महत्व है?

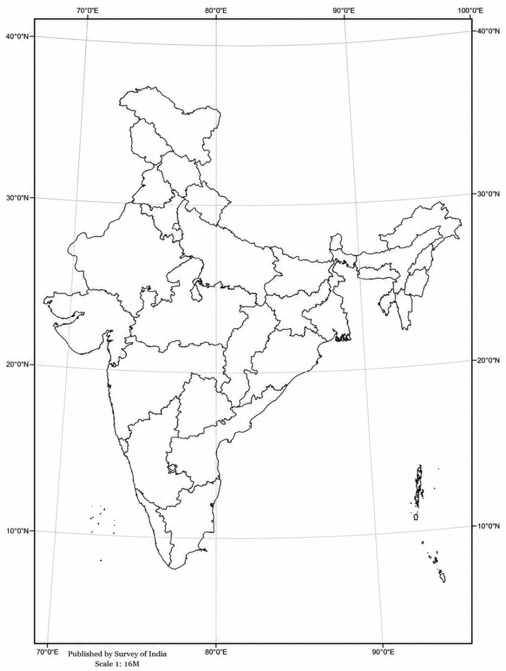
उत्तरः
इस पंक्ति में 'महल' और 'झोंपड़ी' क्रमशः उच्च वर्ग (राजाओं, नवाबों, रानी) और सामान्य जन (किसान, मजदूर, सैनिक) के प्रतीक हैं। दोनों ने मिलकर 1857 की क्रांति में भाग लिया।
स्वतंत्रता संग्राम में इस एकता का महत्वः
1. **शक्ति का गुणन**: जब राजमहल और झोंपड़ी — अमीर और गरीब — दोनों एक ही लक्ष्य के लिए लड़ते हैं, तो आंदोलन कहीं अधिक शक्तिशाली हो जाता है।
2. **व्यापक जन-आधार**: केवल सैनिकों या राजाओं का विद्रोह सीमित होता, पर जब गाँव-गाँव से आम जन जुड़ा तो अंग्रेज घबरा गए।
3. **वर्ग-भेद से ऊपर राष्ट्र**: यह एकता सिद्ध करती है कि राष्ट्रप्रेम जाति, वर्ग और स्थिति से ऊपर होता है।
4. **प्रेरणा का प्रसार**: "यह स्वतंत्रता की चिनगारी अंतरतम से आई थी" — यह बताता है कि विद्रोह हृदय से उठी आवाज थी, जो महलों से झोंपड़ियों तक गूँजी।

4. "सरे-आम नीलाम छापते थे अंग्रेजों के अखबार" पंक्ति में 'नीलाम छापते' शब्द किसकी ओर संकेत करता है? यह भी बताइए कि किसकी नीलामी की जाती थी और क्यों?

उत्तरः
'नीलाम छापते' शब्द अंग्रेजों की उस क्रूर नीति की ओर संकेत करता है जिसके अंतर्गत वे भारतीय राजाओं, नवाबों और रानियों की संपत्ति को जब्त करके उसकी नीलामी के विज्ञापन अपने समाचार-पत्रों में प्रकाशित करते थे।
किसकी नीलामी : कविता में स्पष्ट उल्लेख है — "नागपुर के जेवर ले लो, लखनऊ के लो नौलख हार।" रानियों और बेगमों के गहने और कपड़े कलकत्ते के बाजार में बिकते थे। नागपुर और लखनऊ के नवाबी राज्यों को हड़पने के बाद वहाँ की बेगमों के आभूषण और वस्त्र नीलाम किए गए।
क्यों:
1. अंग्रेजों ने 'व्यपगत नीति' के तहत राज्यों को हड़पा।
2. राज्य हड़पने के बाद वहाँ की संपत्ति को 'सरकारी' घोषित कर दिया गया।
3. यह भारतीय गौरव और परदे की इज्जत का सार्वजनिक अपमान था — "यों परदे की इज्जत परदेशी के हाथ बिकानी थी।"

- रितु करिधाल — ISRO की वरिष्ठ वैज्ञानिक (मंगलयान और चंद्रयान में भूमिका)

4. कविता में 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित अनेक स्थानों के नाम आए हैं। अपने शिक्षक की सहायता से दिए गए मानचित्र में उन स्थानों/नगरों को चिह्नित करके नाम लिखिए।



उत्तरः
यह एक मानचित्र-गतिविधि है। नीचे कविता में उल्लिखित सभी स्थानों की सूची दी गई है जिन्हें मानचित्र में चिह्नित किया जाना है।
कविता में वर्णित 1857 के प्रमुख स्थान:

1. झाँसी — मध्य प्रदेश/उत्तर प्रदेश सीमा, रानी का गढ़
2. कानपुर — उत्तर प्रदेश, नाना धुंधूपंत का केंद्र
3. दिल्ली — राजधानी, जहाँ बहादुर शाह जफर को केंद्र माना गया
4. लखनऊ — उत्तर प्रदेश, बेगम हजरत महल का विद्रोह
5. मेरठ — उत्तर प्रदेश, 1857 की क्रांति का प्रारंभ
6. पटना — बिहार, कँवरसिंह का क्षेत्र
7. नागपुर — महाराष्ट्र, हड़पा गया राज्य
8. बिठूर — उत्तर प्रदेश, पेशवा की निर्वासन स्थली
9. कालपी — उत्तर प्रदेश, रानी का युद्ध-क्षेत्र
10. ग्वालियर — मध्य प्रदेश, रानी की अंतिम विजय और वीरगति
11. जबलपुर — मध्य प्रदेश
12. कोल्हापुर — महाराष्ट्र
13. बंगाल, मद्रास — पूर्वी और दक्षिण भारत

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

शब्द एक अर्थ अनेक

1. "कानपुर के नाना की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी"
उपर्युक्त पंक्ति में रेखांकित शब्द पर ध्यान दीजिए। कविता में 'नाना' शब्द 'नाना धुंधूपंत' के लिए प्रयुक्त हुआ है। लेकिन इस शब्द का प्रयोग संदर्भ के अनुसार अन्य अर्थों में भी होता है। जैसे– माता के पिता के लिए तथा अनेक के अर्थ में। इस प्रकार अनेकार्थी शब्द वह शब्द है जिसके एक से अधिक अर्थ होते हैं। नीचे तालिका में दी गई कविता की पंक्तियों में रेखांकित शब्द अनेकार्थी शब्द हैं। कविता के संदर्भ में उनके सही अर्थ पर घेरा लगाइए।

उत्तरः

	काव्य-पंक्ति	अर्थ
•	तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाईं	नदी का किनारा, बाण, सीसा
•	रानी विधवा हुई हाय! विधि को भी नहीं दया आई	शास्त्र में लिखी व्यवस्था, प्रणाली, विधाता, तरीका
•	रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वंद्व असमानों में	युद्ध, संशय, युग्म
•	हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी	किसी पदार्थ का गोल पिंड, रस्सी/सूत/बर्फ का गोला, तोप से दागने वाले गोले, नारियल
•	मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी	आभा, गति, तेज चाकू (धार)

उत्तरः
स्पष्टीकरण:

1. तीर — कविता में 'तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाईं' — यहाँ 'तीर' का अर्थ बाण है क्योंकि लक्ष्मीबाई तीर (बाण) चलाने में निपुण थीं।
2. विधि — 'विधि को भी नहीं दया आई' — यहाँ विधाता (भाग्य/ब्रह्मा) अर्थ उचित है क्योंकि कवि का तात्पर्य है कि विधाता (भाग्य) को भी रानी पर दया नहीं आई।
3. द्वंद्व — 'हुआ द्वंद्व असमानों में' — यहाँ युद्ध अर्थ उचित है क्योंकि रानी और लेफ्टिनेंट वॉकर के बीच सशस्त्र संघर्ष हुआ।
4. गोलों — 'मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी' — यहाँ तोप से दागने वाले गोले अर्थ उचित है।

विषयों से संवाद

साझा साथ/साझा संघर्ष

1. "लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया", ब्रिटिश राज किस नीति के कारण 'लावारिस का वारिस' बन जाता था? अपने इतिहास के शिक्षक से पता लगाकर उस नीति के विषय में लिखिए।

उत्तरः
ब्रिटिश राज 'व्यपगत नीति' के कारण 'लावारिस का वारिस' बन जाता था।
व्यपगत नीति क्या थी:
यह नीति गवर्नर-जनरल लॉर्ड डलहौजी ने 1848 में लागू की थी। इस नीति के अनुसार:

1. यदि कोई भारतीय राजा निःसंतान मरे — अर्थात् उसका कोई अपना पुत्र न हो — तो उसका राज्य ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया जाएगा।
2. दत्तक पुत्र को उत्तराधिकार का अधिकार नहीं — भारतीय परंपरा में संतानहीन राजा दत्तक पुत्र गोद लेकर उसे उत्तराधिकारी बना सकता था, पर इस नीति ने यह अधिकार छीन लिया।

झाँसी के संदर्भ में : राजा गंगाधर राव निःसंतान मरे। रानी ने दत्तक पुत्र लिया, पर डलहौजी ने उसे स्वीकार नहीं किया। इस नीति के आधार पर झाँसी को 'लावारिस' घोषित कर ब्रिटिश राज ने उस पर अधिकार कर लिया।
इस नीति से प्रभावित अन्य राज्यः सतारा, नागपुर, संबलपुर, झाँसी, उदयपुर, जैतपुर आदि।

2. इस कविता में लक्ष्मीबाई की जीवन-गाथा के साथ-साथ अनेक वीरों के त्याग और बलिदान का भी उल्लेख है। उनकी सूची बनाइए तथा शिक्षक की सहायता से 1857 की क्रांति में उनके योगदान के विषय में लिखिए।

उत्तरः
कविता में उल्लिखित 1857 के वीरः

1. **नाना धुंधूपंत (नाना साहेब)** : कानपुर में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह का नेतृत्व किया। पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र। ब्रिटिश पेंशन बंद होने पर क्रांति में कूद पड़े। कानपुर में सैनिकों का नेतृत्व किया।
2. **ताँतिया टोपे** : नाना साहेब के सेनापति। गुरिल्ला युद्ध के माहिर। झाँसी की रानी और नाना साहेब के साथ मिलकर अंग्रेजों से लड़े। बाद में पकड़े गए और फाँसी दी गई।
3. **चतुर अज़ीमुल्ला** : नाना साहेब के सलाहकार। इंग्लैंड जाकर सैनिकों की शिकायतें प्रस्तुत कीं। क्रांति की योजना बनाने में सहायक।
4. **अहमद शाह मौलवी** : अवध के वीर सेनानी। फैजाबाद से क्रांति का आरंभ किया। अंग्रेजों के विरुद्ध धर्म और देशप्रेम का आह्वान किया।
5. **ठाकुर कँवरसिंह** : बिहार के जगदीशपुर के जमींदार। 80 वर्ष की आयु में भी युद्ध में भाग लिया। आरा, पटना क्षेत्र में अंग्रेजों को कई बार पराजित किया।

3. यह कविता जिस समय और परिवेश में लिखी गई है, उसमें युद्ध और अन्य साहसिक कार्य करना सामान्यतः पुरुषों का क्षेत्र माना जाता था। वर्तमान में लगभग हर क्षेत्र में महिलाएँ कार्य कर रही हैं। नीचे कुछ ऐसे ही कार्यक्षेत्र दिए गए हैं। इन क्षेत्रों में काम करने वाली स्त्रियों के नाम और उनके विषय में लिखिए। आप चाहें तो इसमें अपनी समझ के अनसुार कुछ और कार्यक्षेत्र भी जोड़ सकते हैं।
कार्यक्षेत्र

1. दमकल केंद्र (फायर ब्रिगेड) |
2. रेलगाड़ी चालक |
3. खेल के विभिन्न क्षेत्र |
4. व्यापार और प्रबंधन |
5. विज्ञान और तकनीक |

उत्तरः

1. **दमकल केंद्र (फायर ब्रिगेड)** : भारत में कई राज्यों में महिला दमकल कर्मी कार्यरत हैं। हरियाणा में महिला दमकल दल बनाया गया है। ये महिलाएँ आग बुझाने और बचाव कार्य में पुरुष साथियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करती हैं।
2. **रेलगाड़ी चालक** : सुरेखा यादव — भारत की पहली महिला लोको पायलट जिन्होंने डेक्कन क्वीन चलाई। मुमताज काथवाला — मुंबई की पहली महिला मेट्रो ड्राइवर। आज भारतीय रेलवे में अनेक महिला लोको पायलट कार्यरत हैं।
3. **खेल के विभिन्न क्षेत्रः**
   - पी. वी. सिंधु — बैडमिंटन (ओलंपिक रजत और कांस्य पदक विजेता)
   - मैरी कॉम — मुक्केबाजी (विश्व चैंपियन, ओलंपिक पदक विजेता)
   - मिताली राज — क्रिकेट (भारतीय महिला क्रिकेट टीम की पूर्व कप्तान)
   - नीरज चोपड़ा की प्रेरणा से — महिलाएँ जैवलिन में भी आगे हैं
4. **व्यापार और प्रबंधनः**
   - इंदिरा नूई — पेप्सिको की पूर्व सीईओ
   - किरण मजूमदार-शॉ — बायोकॉन की संस्थापक और सीईओ
   - फाल्गुनी नायर — नायका की संस्थापक
   - रोशनी नादर — एचसीएल टेक्नोलॉजीज की चेयरपर्सन
5. **विज्ञान और तकनीकः**
   - कल्पना चावला — प्रथम भारतीय-अमेरिकी महिला अंतरिक्ष यात्री
   - टेसी थॉमस — 'मिसाइल वुमन ऑफ इंडिया', DRDO की वैज्ञानिक

2. सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म किस वर्ष हुआ था?
(क) 1900 (ख) 1910
(ग) 1904 (घ) 1895

उत्तरः
(ग) 1904

3. सुभद्रा कुमारी चौहान की आरंभिक शिक्षा कहाँ हुई?
(क) लखनऊ (ख) वाराणसी
(ग) दिल्ली (घ) प्रयागराज

उत्तरः
(घ) प्रयागराज

4. सुभद्रा कुमारी चौहान को स्वतंत्रता सेनानी होने के कारण कितनी बार जेल जाना पड़ा?
(क) तीन बार (ख) एक बार
(ग) चार बार (घ) दो बार

उत्तरः
(घ) दो बार

5. सुभद्रा कुमारी चौहान के निम्नलिखित में से कौन से काव्य-संग्रह हैं?
(क) मुकुल और त्रिधारा
(ख) कामायनी और लहर
(ग) बिखरे मोती और उन्मादिनी
(घ) निराला और दीपशिखा

उत्तरः
(क) मुकुल और त्रिधारा

6. सुभद्रा कुमारी चौहान को 'सेकसरिया पुरस्कार' कितनी बार मिला?
(क) तीन बार (ख) दो बार
(ग) एक बार (घ) चार बार

उत्तरः
(ख) दो बार

7. सुभद्रा कुमारी चौहान की मृत्यु किस वर्ष हुई?
(क) 1950 (ख) 1945
(ग) 1955 (घ) 1948

उत्तरः
(घ) 1948

8. 'झाँसी की रानी' कविता किस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखी गई है?
(क) 1942 का आंदोलन
(ख) 1857 का स्वतंत्रता संग्राम
(ग) 1919 का जलियाँवाला कांड
(घ) 1930 का सविनय अवज्ञा

उत्तरः
(ख) 1857 का स्वतंत्रता संग्राम

9. कविता में 'बुढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी' से क्या तात्पर्य है?
(क) देश में बूढ़े लोगों की अपेक्षा युवाओं की संख्या बढ़ी
(ख) भारत के लोगों में नया जोश और विद्रोह जागा
(ग) बूढ़े लोग फिर से जवान हो गए
(घ) देश में नई पीढ़ी का आगमन हुआ

उत्तरः
(ख) भारत के लोगों में नया जोश और विद्रोह जागा

10. कविता में 'चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी' — यहाँ 'वह तलवार पुरानी' किसका प्रतीक है?
(क) एक पुरानी चमकदार लोहे की तलवार
(ख) भारतीय लोगों पर मुगलों के अत्याचार की
(ग) भारतीयों की वीरता और संघर्ष की पुरानी परंपरा
(घ) भारत पर लंबे समय तक शासन करने वाले अंग्रेजों के शस्त्र

उत्तरः
(ग) भारतीयों की वीरता और संघर्ष की पुरानी परंपरा

11. 'बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी' — यहाँ 'हरबोले' कौन हैं?
(क) झाँसी के बहादुर सैनिक
(ख) बुंदेलखंड के लोकगायक
(ग) अंग्रेज अधिकारी
(घ) रानी के मंत्री

उत्तरः
(ख) बुंदेलखंड के लोकगायक

12. लक्ष्मीबाई का बचपन का नाम क्या था?
(क) मनु (ख) लक्ष्मी
(ग) छबीली (घ) सुंदरी

उत्तरः
(ग) छबीली

13. लक्ष्मीबाई किनकी 'मुँहबोली बहन' थीं?
(क) झाँसी के राजा की (ख) कानपुर के नाना की
(ग) पेशवा की (घ) अहमदशाह मौलवी की

उत्तरः
(ख) कानपुर के नाना की

14. लक्ष्मीबाई की सहेलियाँ (खेलने के साधन) कौन सी थीं?
(क) गुड़िया, खिलौने और पुस्तकें
(ख) बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी
(ग) घोड़ा, हाथी और रथ
(घ) फूल, माला और वस्त्र

उत्तरः
(ख) बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी

5. तेज — 'मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी' — यहाँ आभा/प्रकाश अर्थ उचित है — रानी की दिव्य ज्योति परमात्मा की ज्योति में मिल गई।

2. "कानपूर के नाना की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी"
"मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी"
उपर्युक्त पंक्तियों में रेखांकित शब्दों की वर्तनी पर ध्यान दीजिए। दोनों शब्दों की वर्तनी में थोड़ी भिन्नता है। कई बार रचनाकार कविता की लय, अर्थ की लय इत्यादि को ध्यान में रखते हुए भाषा के स्तर पर इस प्रकार का प्रयोग करते रहे हैं। इस कविता में अन्य शब्दों के भी ऐसे प्रयोग मिलते हैं, उन्हें ढूँढ़कर लिखिए और कक्षा में चर्चा कीजिए।
इसी पाठ्यपुस्तक की अन्य कविताओं में भी आपने ऐसा प्रयोग देखा होगा। जहाँ किसी शब्द की मानक वर्तनी से भिन्न वर्तनी का प्रयोग किया गया है। अपने शिक्षक के साथ इस विषय पर चर्चा कीजिए। चर्चा से उभरे बिंदुओं को लिखकर उन पर अपने शिक्षक के साथ पुनः चर्चा कीजिए कि ऐसे प्रयोग क्यों किए गए हैं?

उत्तरः
कविता में मानक वर्तनी से भिन्न प्रयोग:

कविता में प्रयुक्त	मानक वर्तनी	कारण
कानपूर	कानपुर	लय/तुकबंदी के लिए दीर्घ 'ऊ' का प्रयोग
तंजोर	तंजावुर/तंजौर	लय के अनुसार
बिठूर	बिठुर	लय और तुकबंदी
पनु	पुनः	छंद की आवश्यकता
किसिंध	सिंध	काव्य-प्रवाह
बेजार	बेज़ार	उर्दू शब्द का हिंदी रुपांतरण
मदरं ा (मंदरा)	मंदरा	काव्य-लय

चर्चा के बिंदुः

1. **लय और छंद की आवश्यकता**: कवि को पंक्ति की मात्राएँ और लय बनाए रखने के लिए कभी-कभी शब्द की वर्तनी बदलनी पड़ती है।
2. **तुकबंदी**: जब तुक मिलाना हो तो कभी-कभी अ/आ, उ/ऊ में परिवर्तन होता है।
3. **लोकभाषा का प्रभाव**: बुंदेली, अवधी जैसी लोकभाषाओं में कुछ शब्दों का उच्चारण मानक हिंदी से थोड़ा भिन्न होता है।
4. **ऐतिहासिक प्रयोग**: पुरानी हिंदी में कुछ शब्दों की वर्तनी आज से अलग होती थी।

मुहावरे

1. "दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी"
उपर्युक्त पंक्ति में दृढ़ निश्चय करने के अर्थ को व्यक्त करने के लिए 'मन में ठान लेना' वाक्यांश का प्रयोग हुआ है जो एक मुहावरा है। 'मुहावरे' ऐसे वाक्यांश होते हैं जो अपने शाब्दिक अर्थ से भिन्न एक विशेष और लाक्षणिक अर्थ व्यक्त करते हैं। इनके प्रयोग से भाषा में सौंदर्य और प्रभाव उत्पन्न होता है।
पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। उन पंक्तियों में आए मुहावरे ढूँढ़कर लिखिए और उन मुहावरों का प्रयोग करते हुए नए वाक्य भी बनाइए। आपकी सुविधा के लिए एक उदाहरण दिया गया है।

	काव्य पंक्ति	प्रयुक्त मुहावरा	नया वाक्य
1.	अबके जनरल स्मिथ सन्मुख था, उसने मुँह की खाई थी	मुँह की खाना (पराजित होना)	मोहन ने सोचा था कि वह आसानी से जीत जाएगा लेकिन अंत में उसे मुँह की खानी पड़ी।
2.	डलहौजी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया		
3.	राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया		
4.	हुआ यज्ञ प्रारंभ उन्हें तो/ सोई ज्योति जगानी थी		
5.	मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी		

उत्तरः

	काव्य पंक्ति	प्रयुक्त मुहावरा	नया वाक्य
1.	अबके जनरल स्मिथ सन्मुख था, उसने मुँह की खाई थी	मुँह की खाना (पराजित होना)	मोहन ने सोचा था कि वह आसानी से जीत जाएगा लेकिन अंत में उसे मुँह की खानी पड़ी।

2.	डलहौजी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया	पैर पसारना (अधिकार फैलाना)	जब से नया मालिक आया, उसने पूरे व्यवसाय में पैर पसार लिए।
3.	राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया	पैरों ठुकराना (तिरस्कार करना, अपमानित करना)	जिसने सदा मेरी मदद की थी, उसे सफल होते ही पैरों ठुकराना उचित नहीं।
4.	हुआ यज्ञ प्रारंभ उन्हें तो/ सोई ज्योति जगानी थी	सोई ज्योति जगाना (सुप्त चेतना को जागृत करना)	स्वतंत्रता सेनानियों ने देशवासियों की सोई ज्योति जगाई।
5.	मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी	धूम मचाना (हलचल/ उथल-पुथल करना)	1857 की क्रांति ने पूरे भारत में भारी धूम मचाई थी।

सृजन

1. लक्ष्मीबाई की सखियों काना तथा मंदरा की ओर से लक्ष्मीबाई को एक पत्र लिखिए जिसमें काना तथा मंदरा द्वारा ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध युद्ध की रणनीति पर चर्चा की गई हो।

उत्तरः
पत्र: काना और मंदरा की ओर से रानी लक्ष्मीबाई को
झाँसी के रणक्षेत्र से
माह ज्येष्ठ, सन् 1858
परम आदरणीय रानी माँ,
सादर प्रणाम।

हम दोनों — काना और मंदरा — आपकी आज्ञा के अनुसार दक्षिणी मार्ग की निगरानी कर रही थीं। हमने जो समाचार एकत्रित किए हैं, वे इस प्रकार हैं:

अंग्रेज जनरल स्मिथ पूर्व से आ रहा है और उसके साथ लगभग पाँच हजार सैनिक हैं। उनके पास तोपें हैं। हमारा सुझाव है कि हम उत्तरी मार्ग से कालपी की ओर बढ़ें। ताँतिया टोपे वहाँ सेना लेकर प्रतीक्षा कर रहे हैं।

हम दोनों आपके साथ हर कदम पर हैं — चाहे युद्धभूमि हो या विपदा। आपकी तलवार ने एक बार वॉकर को भगाया है, यह अंग्रेजी सेना का मनोबल तोड़ने के लिए पर्याप्त है।

रानी माँ, झाँसी की मिट्टी आपको पुकार रही है। हम वचन देती हैं कि अंतिम साँस तक आपके साथ रहेंगी।

जय झाँसी! जय भारत!
आपकी सेविकाएँ,
काना और मंदरा

2. युद्धपूर्व रात्रि में झाँसी की रानी के मन में अगले दिन की संभावनाओं को लेकर कई तरह के भाव और विचार उठ रहे होंगे। आपके जीवन में भी कई ऐसे क्षण आए होंगे जब आपने मानसिक ऊहापोह का अनुभव किया होगा। ऐसी किसी घटना के विषय में अपनी डायरी में लिखिए, जैसे– परीक्षा के एक दिन पूर्व की स्थिति या नौवीं कक्षा में पहला दिन आदि।

उत्तरः
डायरी — परीक्षा की पूर्व रात्रि
तिथि: [तिथि]
प्रिय डायरी,

कल बोर्ड परीक्षा है। आज रात नींद नहीं आ रही। मन में अजीब ऊहापोह है।

एक ओर सोचता/सोचती हूँ — क्या मैंने पर्याप्त तैयारी की? क्या कोई अध्याय छूट तो नहीं गया? दूसरी ओर मन कहता है — जो पढ़ा है, वह काफी है।

कल के प्रश्नपत्र की कल्पना करता/करती हूँ तो हाथ काँपने लगते हैं। फिर याद आता है — शिक्षक ने कहा था, "जो आता है, पहले वह करो।"

कभी लगता है — अगर अच्छे नंबर न आए तो? माता-पिता को कैसे बताऊँगा/बताऊँगी? फिर सोचता/सोचती हूँ — उन्होंने कभी दबाव नहीं डाला, वे समझेंगे।

तभी मुझे 'झाँसी की रानी' की पंक्तियाँ याद आती हैं — "दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।" रानी ने अकेले इतना बड़ा युद्ध लड़ा। मेरी परीक्षा तो उसके सामने कुछ भी नहीं।

आज रात की ऊहापोह में एक निर्णय हो गया — कल पूरी तैयारी से, शांत मन से और आत्मविश्वास के साथ परीक्षा दूँगा/दूँगी।

बस, मन में ठान लिया!
शुभरात्रि,
[आपका नाम]

गतिविधियाँ

1. शौर्य के समाचार
यह कविता रानी लक्ष्मीबाई के जीवन की घटनाओं, उनकी वीरता और पराक्रम से हमारा साक्षात्कार कराती है। कविता में वर्णित घटनाओं को एक समाचार-वाचक की तरह समाचार के रूप में प्रस्तुत कीजिए।
(संकेत– "आज झाँसी की रणभूमि पर रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी अद्भुत वीरता और शौर्य का परिचय दिया...।")

उत्तरः
[लाइव समाचार प्रसारण]
"नमस्कार! आप देख रहे हैं — झाँसी लाइव समाचार।

आज की बड़ी खबर: झाँसी के मैदान से — रानी लक्ष्मीबाई ने आज अपनी असाधारण वीरता का परिचय दिया है।

ताजा समाचार: लेफ्टिनेंट वॉकर जब अपनी सेना लेकर रानी की ओर बढ़ा, तो रानी ने बिना विचलित हुए अपनी तलवार खींच ली। दोनों के बीच एक असमान द्वंद्व हुआ — एक ओर रानी, दूसरी ओर प्रशिक्षित अंग्रेज अफसर। पर रानी का शौर्य अद्वितीय था। घायल होकर वॉकर युद्धभूमि से भाग निकला।

विशेष रिपोर्ट: रानी लक्ष्मीबाई ने सौ मील की यात्रा कर कालपी पहुँचकर अंग्रेजों को पराजित किया। यमुना-तट पर भी अंग्रेजी सेना को मुँह की खानी पड़ी। अब रानी ग्वालियर की ओर बढ़ चली हैं।

साथियों, यह महज एक युद्ध नहीं है — यह भारत की स्वतंत्रता का महायज्ञ है।

'बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी' — यह कहानी आज इतिहास बन रही है।

यह था आज का शौर्य-समाचार।"

2. 'हरबोलों' और हमारी कहानी

"बुंदेले <u>हरबोलों</u> के मुँह हमने सुनी कहानी थी।"

'हरबोला' बुंदेलखंड क्षेत्र में रहने वाले लोकगायकों का एक समुदाय है जिन्होंने रानी लक्ष्मीबाई की वीरतापूर्ण गाथा को अपने गीतों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का काम किया। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में लोकगायकों की एक लंबी और समृद्ध परंपरा रही है। इनके द्वारा गाए जाने वाले गीत सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक मूल्यों को संरक्षित करने का एक जीवंत माध्यम हैं। आपके क्षेत्र में अथवा आपकी भाषा में भी ऐसे लोकगायक और उनके द्वारा गाए जाने वाले देशभक्तिपूर्ण गीत अवश्य प्रचलित होंगे। ऐसे गीतों का एक संकलन तैयार कीजिए और कक्षा में साझा कीजिए।

उत्तरः

लोकगायकों की परंपरा और देशभक्ति-गीत

हरबोला (बुंदेलखंड): ये लोकगायक ढोलक, मंजीरा और तानपुरे के साथ वीरों की गाथाएँ गाते हैं। इन्होंने रानी लक्ष्मीबाई की कहानी घर-घर पहुँचाई।

विभिन्न क्षेत्रों के लोकगायक और उनके गीत:

1. **राजस्थान के ढोली और भाट**: "केसरिया बालम" जैसे वीरगीत गाते हैं। राणा प्रताप और पृथ्वीराज की गाथाएँ लोकगीतों में जीवित हैं।
2. **पंजाब के ढाढी**: गुरु गोबिंद सिंह और वारिस शाह की वीरगाथाएँ गाते हैं।
3. **महाराष्ट्र के शाहीर**: "पोवाड़ा" गाथाओं में शिवाजी की वीरता का वर्णन।
4. **उत्तर प्रदेश के रसिया और आल्हा**: "आल्हा-ऊदल" की वीर-गाथाएँ बुंदेलखंड की धरती पर आज भी गाई जाती हैं।
5. **झारखंड और छत्तीसगढ़ के आदिवासी लोकगायक**: बिरसा मुंडा की वीरता के गीत।

मेरे क्षेत्र में प्रचलित देशभक्ति-गीत:

(विद्यार्थी अपने क्षेत्र के अनुसार लिखें)

भाषा संगम

1. "कानपुर के नाना की मुँहबोली <u>बहन</u> 'छबीली' थी।"

नीचे 'बहन' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।

बहन (हिंदी); भगिनी, स्वसृः (संस्कृत); भैंण (पंजाबी); बहन, हमशीरा (उर्दू); बैनी (कश्मीरी); भेण (सिंधी); बहीण (मराठी); बहेन (गुजराती); भयण (कोंकणी); बैनी, दीदी (नेपाली); बोन, भगिनी (बांग्ला); भनी, बाइ, बाइदेउ (असमिया); मचन, मनाओ (मणिपुरी); भउणी (ओड़िआ); अक्कॅ, चेल्लेलु (तेलुगू); तंगै, अक्का (तमिल); सहोदरि, पेङ्ङळ् (मलयालम); सोदरि, अक्क, तंगि (कन्नड़)।

- इनके अतिरिक्त यदि आप 'बहन' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
- उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

उत्तरः

- राजस्थानी में: बहन / बाई / दीदी
  भोजपुरी में: बहिनी / दीदी
  अवधी में: बहिनिया / दीदी
  मैथिली में: बहिन / दीदी
  बुंदेली में: बहन / दीदी
  हरियाणवी में: बहन / बैन
- हिंदी (मातृभाषा) में: "कानपुर के नाना की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी।"
  (यदि मातृभाषा पंजाबी है:)
  "कानपुर दे नाना दी मुँह बोली भैण 'छबीली' सी।
  (यदि मातृभाषा मराठी है:)
  "कानपूरच्या नानांची तोंडाने सांगितलेली बहीण 'छबीली' होती।"
  (यदि मातृभाषा गुजराती है:)
  "कानपुरना नानानी मोढे बोली (गृह-उच्चारी) बहेन 'छबीली' हती।"
  (यदि मातृभाषा राजस्थानी है:)
  "कानपुर रा नाना री मुँहबोली बाई 'छबीली' ही।"

6. अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'झाँसी की रानी' कविता की रचयिता कौन हैं?
   (क) महादेवी वर्मा
   (ख) सुभद्रा कुमारी चौहान
   (ग) मीराबाई
   (घ) अमृता प्रीतम

उत्तरः

(ख) सुभद्रा कुमारी चौहान

5. "अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी" पंक्ति में 'अवतारी' शब्द व्यक्ति के विशेष गुणों की ओर इंगित कर रहा है। कविता के आधार पर बताइए कि लक्ष्मीबाई के किन गुणों के कारण उनको 'अवतारी' कहा गया है?

उत्तरः
लक्ष्मीबाई को 'अवतारी' इसलिए कहा गया है क्योंकि उनमें साधारण मनुष्य से परे दैवीय गुण थे:

1. **असाधारण वीरता**: मात्र 23 वर्ष की आयु में अनेक युद्ध लड़ना, लेफ्टिनेंट वॉकर को घायल करके भगाना — यह साधारण मनुष्य के वश की बात नहीं थी।
2. **देवी का अवतार**: "लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार" — वे लक्ष्मी जैसी समृद्धि-दायिनी और दुर्गा जैसी शक्ति-स्वरूपा थीं।
3. **अविचल संकल्प**: पति की मृत्यु, राज्य की हानि, पुत्र वियोग के बाद भी उन्होंने युद्ध का मार्ग नहीं छोड़ा।
4. **राष्ट्र-जागरण**: "हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता नारी थी" — वे भारत को जगाने के लिए आई थीं।
5. **प्रेरणा-स्रोत**: "दिखा गई पथ, सिखा गई/ हमको जो सीख सिखानी थी।" — उन्होंने मार्गदर्शन किया जो केवल अवतारी पुरुष/नारी ही कर सकते हैं।

विधा से संवाद

कविता में कहानी

1. यह कविता लक्ष्मीबाई के जीवन की घटनाओं पर आधारित है और अपनी संरचना में एक कथात्मक कविता है। कथात्मक कविता ऐसी कविता को कहते हैं जिसमें कविता और कहानी के तत्व परस्पर जुड़े होते हैं तथा घटनाओं का एक क्रम होता है। इस कविता में भी लक्ष्मीबाई के बचपन से लेकर वीरगति प्राप्त होने तक की कथा क्रम से देखने को मिलती है। पाठ की संरचना को समझते हुए इसमें वर्णित प्रमुख घटनाओं को समय-रेखा (टाइमलाइन) पर दर्शाएँ। (संकेत– लक्ष्मीबाई का बचपन, विवाह, अन्य घटनाएँ आदि।)

उत्तरः

लक्ष्मीबाई की जीवन-यात्राः समय-रेखा

1828 ई.
↓
जन्म — 'छबीली' (मनुबाई) का जन्म, कानपुर के नाना धुंधूपंत की मुँहबोली बहन
↓
बचपन
↓
नाना के साथ पढ़ना-खेलना, बरछी-ढाल-कृपाण की शिक्षा, वीर शिवाजी की गाथाएँ याद करना
↓
विवाह
↓
झाँसी में 'वीरता का वैभव से' विवाह, झाँसी में आगमन, राजमहल में उत्सव
↓
सौभाग्य का उदय
↓
राजमहल में उजियाली, पुत्र-जन्म
↓
दुर्भाग्य का आगमन
↓
पुत्र की मृत्यु, राजा गंगाधर राव का निधन, वैधव्य, शोक
↓
1853 ई. — डलहौजी की कुनीति
↓
झाँसी का दीप बुझा, अंग्रेजों ने झाँसी पर अधिकार किया, रानी शोकमग्न
↓
1857 ई. — महायज्ञ का आरंभ
↓
नाना धुंधूपंत का आह्वान, लक्ष्मीबाई का रण-चंडी अवतार, महलों और झोंपड़ियों की एकता
↓
युद्ध
↓
झाँसी, दिल्ली, लखनऊ, मेरठ, कानपुर, पटना में विद्रोह की लपटें
↓
झाँसी का युद्ध
↓
लेफ्टिनेंट वॉकर से द्वंद्व, वॉकर घायल होकर भागा
↓
कालपी की ओर
↓
100 मील की यात्रा, घोड़ा भूमि पर गिरा, यमुना-तट पर अंग्रेजों की हार
↓
ग्वालियर पर अधिकार
↓
सिंधिया का पलायन, विजय, पर फिर अंग्रेजी सेना का घेराव
↓
18 जून 1858 — वीरगति
↓
नाले के पास घिरी, घायल होकर गिरीं, 23 वर्ष की आयु में वीरगति प्राप्त
↓
अमर स्मृति
↓
"तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमिट निशानी थी।"

15. लक्ष्मीबाई को बचपन से किस वीर की गाथाएँ याद थीं?
(क) पृथ्वीराज चौहान (ख) महाराणा प्रताप
(ग) वीर शिवाजी (घ) बाजीराव पेशवा

उत्तरः
(ग) वीर शिवाजी

16. कविता में लक्ष्मीबाई की तुलना किन देवियों से की गई है?
(क) सरस्वती और पार्वती (ख) काली और चंडी
(ग) लक्ष्मी और दुर्गा (घ) राधा और सीता

उत्तरः
(ग) लक्ष्मी और दुर्गा

17. निम्नलिखित में से कौन से लक्ष्मीबाई के प्रिय खेल थे?
(क) नृत्य, संगीत और चित्रकला
(ख) नकली युद्ध, व्यूह-रचना और शिकार
(ग) कुश्ती, तैराकी और दौड़
(घ) ग्रंथ पाठ, पूजा और ध्यान

उत्तरः
(ख) नकली युद्ध, व्यूह-रचना और शिकार

18. कविता में 'चित्रा ने अर्जुन को पाया, शिव से मिली भवानी थी' — यह पंक्ति किस प्रसंग की ओर संकेत करती है?
(क) लक्ष्मीबाई के बचपन की
(ख) रानी की मृत्यु की
(ग) लक्ष्मीबाई के विवाह की
(घ) युद्ध में विजय की

उत्तरः
(ग) लक्ष्मीबाई के विवाह की

19. लक्ष्मीबाई का विवाह किस नगर में हुआ?
(क) कानपुर (ख) झाँसी
(ग) ग्वालियर (घ) नागपुर

उत्तरः
(ख) झाँसी

20. कविता में 'किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई' — यह पंक्ति किस घटना की ओर संकेत करती है?
(क) झाँसी पर अंग्रेजों के हमले की
(ख) रानी के विधवा होने की
(ग) युद्ध में हार की
(घ) मानसून के आगमन की

उत्तरः
(ख) रानी के विधवा होने की

21. राजाजी (गंगाधर राव) की मृत्यु के समय रानी की क्या स्थिति थी?
(क) वह युद्ध की तैयारियों में अत्यंत व्यस्त थीं
(ख) वह निःसंतान विधवा होकर शोक में डूबी थीं
(ग) वह किसी अन्य राज्य की यात्रा पर गई थीं
(घ) वह गंभीर बीमारी के कारण बहुत अस्वस्थ थीं

उत्तरः
(ख) वह निःसंतान विधवा होकर शोक में डूबी थीं

22. डलहौजी ने झाँसी पर अधिकार करने का अवसर कब पाया?
(क) जब रानी युद्ध की तैयारियों में अत्यंत व्यस्त थीं
(ख) जब राजाजी निःसंतान मरे और झाँसी का दीप बुझा
(ग) जब रानी ने अंग्रेजों के समक्ष अपना मत रखा
(घ) जब झाँसी में विद्रोह और अशांति का वातावरण बना

उत्तरः
(ख) जब राजाजी निःसंतान मरे और झाँसी का 'दीप बुझा'

23. कविता में 'लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया' — यह किस नीति की ओर संकेत है?
(क) विभाजन नीति (ख) व्यपगत सिद्धांत
(ग) सहायक संधि (घ) स्थायी बंदोबस्त

उत्तरः
(ख) व्यपगत सिद्धांत

24. कविता के अनुसार 'व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया' — यहाँ 'यह' शब्द किसके लिए है?
(क) नाना धुंधूपंत के लिए (ख) जनरल स्मिथ के लिए
(ग) ब्रिटिश राज के लिए (घ) लेफ्टिनेंट वॉकर के लिए

उत्तरः
(ग) ब्रिटिश राज के लिए

25. कविता में अंग्रेजों ने किन-किन स्थानों पर अधिकार किया, इसका उल्लेख है?
(क) दिल्ली, आगरा, कानपुर, झाँसी और इलाहाबाद आदि
(ख) देहली, लखनऊ, नागपुर, उदैपुर, तंजोर, सतारा आदि
(ग) बंगाल, मद्रास, मुंबई, पटना और सूरत आदि
(घ) पंजाब, सिंध, कश्मीर, लाहौर और पेशावर आदि

उत्तरः
(ख) देहली, लखनऊ, नागपुर, उदैपुर, तंजोर, सतारा आदि

26. कविता में रानियों और बेगमों के गहने-कपड़े कहाँ बिकते थे?
(क) दिल्ली के बाजार में (ख) लंदन के बाजार में
(ग) कलकत्ते के बाजार में (घ) झाँसी के बाजार में

उत्तरः
(ग) कलकत्ते के बाजार में

27. **अभिकथन (A):** कविता में 'महलों ने दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी' पंक्ति आई है।
कारण (R): 1857 के संग्राम में समाज के सभी वर्गों ने एकजुट होकर हिस्सा लिया।
(क) A सही है, R गलत है
(ख) A गलत है, R सही है
(ग) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है

(घ) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है

उत्तरः
(ग) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है

28. 1857 के स्वतंत्रता महायज्ञ में कौन-से वीर शामिल थे?
(क) भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, राजगुरु, सुखदेव और बिस्मिल
(ख) नाना धुंधूपंत, ताँतिया, अज़ीमुल्ला, अहमद शाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह
(ग) गाँधीजी, नेहरुजी, राजेंद्र प्रसाद, पटेल और मालवीय
(घ) सुभाषचंद्र बोस, वल्लभभाई पटेल, गोखले, तिलक और लाजपत राय

उत्तरः
(ख) नाना धुंधूपंत, ताँतिया, अज़ीमुल्ला, अहमद शाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह

29. कविता में किस अंग्रेज अधिकारी से रानी ने सीधे युद्ध किया और उसे घायल किया?
(क) जनरल स्मिथ (ख) ह्यू रोज
(ग) लेफ्टिनेंट वॉकर (घ) डलहौजी

उत्तरः
(ग) लेफ्टिनेंट वॉकर

30. कविता में 'जख्मी होकर वॉकर भागा, उसे अजब हैरानी थी' — यह पंक्ति क्या दर्शाती है?
(क) वॉकर कायर था
(ख) रानी की वीरता से अंग्रेज स्तब्ध थे
(ग) वॉकर बीमार पड़ गया था
(घ) युद्ध में दोनों पक्ष हार गए

उत्तरः
(ख) रानी की वीरता से अंग्रेज स्तब्ध थे

31. रानी झाँसी से कालपी पहुँचने के लिए कितने मील की यात्रा लगातार की?
(क) पचास मील (ख) दो सौ मील
(ग) सौ मील (घ) पचहत्तर मील

उत्तरः
(ग) सौ मील

32. यमुना-तट पर अंग्रेजों से युद्ध में क्या परिणाम हुआ?
(क) रानी युद्ध में हार गईं
(ख) दोनों पक्ष बराबर रहे
(ग) अंग्रेजों ने रानी से झाँसी जीत ली
(घ) अंग्रेजों को रानी से हार खानी पड़ी

उत्तरः
(घ) अंग्रेजों को रानी से हार खानी पड़ी

33. ग्वालियर पर अधिकार के समय अंग्रेजों के मित्र सिंधिया ने क्या किया?
(क) रानी का साथ दिया
(ख) रानी से युद्ध किया
(ग) राजधानी छोड़ दी
(घ) शांति संधि की

उत्तरः
(ग) राजधानी छोड़ दी

34. रानी लक्ष्मीबाई की दो सखियों के नाम कविता में क्या बताए गए हैं?
(क) झलकारी और मंदरा
(ख) काना और मंदरा
(ग) सुंदरी और चंदा
(घ) काना और झलकारी

उत्तरः
(ख) काना और मंदरा

35. कविता के अनुसार रानी की मृत्यु के समय उनकी आयु कितनी थी?
(क) पच्चीस वर्ष (ख) अठारह वर्ष
(ग) तेइस वर्ष (घ) तीस वर्ष

उत्तरः
(ग) तेइस वर्ष

36. **अभिकथन (A):** रानी लक्ष्मीबाई को कविता में 'अवतारी' कहा गया है।
कारण (R): वे मात्र तेइस वर्ष की आयु में असाधारण वीरता के साथ लड़ीं और स्वतंत्रता की प्रेरणा बनीं।
(क) A सही है, R गलत है
(ख) A गलत है, R सही है
(ग) A और R दोनों सही हैं, R, A की सही व्याख्या है
(घ) A और R दोनों गलत हैं

उत्तरः
(ग) A और R दोनों सही हैं, R, A की सही व्याख्या है

37. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'झाँसी की रानी' कविता के बारे में सही है?
(क) यह केवल लक्ष्मीबाई के बचपन की घटनाओं का वर्णन करती है
(ख) यह एक कथात्मक कविता है जो लक्ष्मीबाई के जीवन का क्रमबद्ध वर्णन करती है
(ग) यह केवल अंग्रेजों की नीतियों और कार्यों की आलोचना करती है
(घ) यह पूरी कविता गद्य शैली में प्रस्तुत और लिखी गई है

उत्तरः
(ख) यह एक कथात्मक कविता है जो लक्ष्मीबाई के जीवन का क्रमबद्ध वर्णन करती है

38. रिक्त स्थान भरिए:
'रानी बढ़ी कालपी आई, कर __________ मील निरंतर पार।'
(क) पचास (ख) दो सौ
(ग) पचहत्तर (घ) सौ

उत्तरः
(घ) सौ

39. कविता की टेक (refrain) 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' में 'मर्दानी' का क्या अर्थ है?
(क) पुरुषों जैसे व्यवहार और रहन-सहन
(ख) बहादुर और वीरता से भरपूर
(ग) क्रोधी स्वभाव और कठोर व्यवहार रखने वाली
(घ) शांत और धैर्यशील स्वभाव की सरल महिला

उत्तरः
(ख) बहादुर और वीरता से भरपूर

40. कविता में 'बिखरे मोती' किस विधा की रचना है?
(क) कविता संग्रह (ख) उपन्यास
(ग) कहानी संग्रह (घ) नाटक

उत्तरः
(ग) कहानी संग्रह

41. कविता में 'घायल होकर गिरी सिंहनी उसे वीर-गति पानी थी' — यहाँ 'सिंहनी' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
(क) काना के लिए (ख) मंदरा के लिए
(ग) रानी लक्ष्मीबाई के लिए (घ) झलकारी बाई के लिए

उत्तरः
(ग) रानी लक्ष्मीबाई के लिए

42. कविता के अनुसार 'रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी' — इसका भाव क्या है?
(क) रानी घोड़े पर बैठकर अपने गंतव्य की ओर चली गईं
(ख) रानी का वीरगति से निधन हुआ और चिता अंतिम यात्रा बनी
(ग) रानी ने अंग्रेजों के समक्ष जाकर अपना आत्मसमर्पण किया
(घ) रानी को बंदी बनाकर कारागार की ओर भेज दिया गया

उत्तरः
(ख) रानी का वीरगति से निधन हुआ और चिता उनकी अंतिम यात्रा बनी

43. कविता में 'जाओ रानी याद रखेंगे हम कृतज्ञ भारतवासी' — यहाँ 'कृतज्ञ' का अर्थ क्या है?
(क) क्रोधित होने वाले (ख) उपकार मानने वाले
(ग) साहस रखने वाले (घ) शोक मनाने वाले

उत्तरः
(ख) उपकार मानने वाले

44. **अभिकथन (A):** कविता में रानी के बलिदान को 'स्वतंत्रता अविनाशी' जगाने वाला बताया गया है।
कारण (R): कवयित्री का मानना है कि रानी का बलिदान व्यर्थ नहीं गया, वह भावी पीढ़ियों को प्रेरणा देता रहेगा।
(क) A सही है, R गलत है
(ख) A और R दोनों सही हैं, R, A की सही व्याख्या है
(ग) A गलत है, R सही है
(घ) A और R दोनों गलत हैं

उत्तरः
(ख) A और R दोनों सही हैं, R, A की सही व्याख्या है

45. रिक्त स्थान भरिए:
'कानपुर के नाना की __________ बहन छबीली थी।'
(क) प्रिय (ख) धर्म
(ग) मुँहबोली (घ) सगी

उत्तरः
(ग) मुँहबोली

46. निम्नलिखित में से कौन सा कथन सुभद्रा कुमारी चौहान के बारे में सही है?
(क) वे केवल बाल साहित्य की लेखिका थीं
(ख) उनकी भाषा की सहजता ने उन्हें व्यापक लोकप्रियता दिलाई
(ग) उन्होंने कभी जेल नहीं गईं
(घ) उनका जन्म बंगाल में हुआ था

उत्तरः
(ख) उनकी भाषा की सहजता ने उन्हें व्यापक लोकप्रियता दिलाई

47. कविता में 'इस स्वतंत्रता-महायज्ञ में कई वीरवर आए काम' — यहाँ 'महायज्ञ' किसे कहा गया है?
(क) एक धार्मिक अनुष्ठान को
(ख) 1857 के स्वतंत्रता संग्राम को
(ग) रानी के विवाह समारोह को
(घ) झाँसी के किले की रक्षा को

उत्तरः
(ख) 1857 के स्वतंत्रता संग्राम को

48. कविता में 'तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमिट निशानी थी' — इन पंक्तियों में कवयित्री क्या कहना चाहती हैं?
(क) रानी की मूर्ति बनाई जाएगी
(ख) रानी की जीवनी लिखी जाएगी
(ग) रानी का अद्भुत बलिदान ही उनका सबसे बड़ा स्मारक है, वे स्वयं अमर हैं
(घ) झाँसी में एक स्मारक बनेगा

उत्तरः
(ग) रानी का अद्भुत बलिदान ही उनका सबसे बड़ा स्मारक है, वे स्वयं अमर हैं

3. (क) असहाय और अत्यंत आहत
4. (ख) पराई या उजाड़ होना
5. (ख) लावारिस का वारिस बनकर

काव्यांश 5

महलों ने दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतंत्रता की चिनगारी अंतरतम से आई थी,
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थीं,
मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी,
जबलपुर, कोल्हापुर में भी
कुछ हलचल उकसानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

1. "महलों ने दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी" पंक्ति का मुख्य निहितार्थ क्या है?
(क) महलों और झोंपड़ियों में आग लगना
(ख) क्रांति में सभी सामाजिक वर्गों की एकता
(ग) केवल धनी वर्ग का विद्रोह में भाग लेना
(घ) निर्धन वर्ग द्वारा महलों का विरोध करना

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. स्वतंत्रता संग्राम की यह चिनगारी किसी बाहरी दबाव से नहीं बल्कि जनता के अंतरतम (हृदय) से उपजी थी।
II. यह आंदोलन केवल झाँसी और दिल्ली तक ही सीमित था, देश के अन्य हिस्सों में इसका कोई प्रभाव नहीं था।
(क) कथन I सही है, परंतु II गलत है
(ख) कथन II सही है, परंतु I गलत है।
(ग) कथन I और II दोनों सही हैं।
(घ) कथन I और II दोनों गलत हैं

3. इस छंद की लय और गति पाठकों के मन में मुख्य रूप से किस भाव का संचार करती है?
(क) गहरा शोक और अवसाद
(ख) देशभक्ति का जोश और उत्साह
(ग) अत्यधिक भय और व्याकुलता
(घ) हास्य और मनोरंजन की भावना

4. काव्यांश में प्रयुक्त 'अंतरतम' शब्द का निम्नलिखित में से क्या अर्थ है?
(क) बहुत दूर का देश (ख) हृदय की गहराई से
(ग) समाज का पिछड़ा वर्ग (घ) गुप्त नीतियों के द्वारा

5. काव्यांश में किन-किन प्रमुख नगरों में विद्रोह की भारी धूम मचने का उल्लेख है?
(क) केवल कोलकाता और चेन्नई
(ख) जयपुर और उदयपुर नगर
(ग) केवल मुंबई और पुणे
(घ) मेरठ, कानपुर और पटना

उत्तरः
1. (ख) क्रांति में सभी सामाजिक वर्गों की एकता
2. (क) कथन I सही है, परंतु II गलत है।
3. (ख) देशभक्ति का जोश और उत्साह
4. (ख) हृदय की गहराई से
5. (घ) मेरठ, कानपुर और पटना

काव्यांश 6

तो भी रानी मार-काटकर चलती बनी सैन्य के पार,
किंतु सामने नाला आया, था यह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गए सवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार पर वार,
घायल होकर गिरी सिंहनी
उसे वीर-गति पानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

1. 'घायल होकर गिरी सिंहनी' में रानी को 'सिंहनी' कहना उनके किस गुण की ओर संकेत करता है?
(क) उनकी अत्यधिक तीव्र गति
(ख) उनका हिंसक स्वभाव होना
(ग) उनका अदम्य साहस और शौर्य
(घ) उनका राजसी पहनावा होना

2. **अभिकथन (A):** रानी शत्रुओं की सेना को पार कर आगे निकल गईं, परंतु सामने आए एक विषम नाले के कारण संकट में घिर गईं।
कारण (R): रानी का पुराना प्रशिक्षित घोड़ा थका नहीं था, उसने नाले को आसानी से पार कर लिया था।
(क) (A) सही है, परंतु (R) गलत है।
(ख) (A) गलत है, परंतु (R) सही है।
(ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. इस अंतिम संघर्ष के दृश्य का वर्णन करते समय काव्यांश का वातावरण कैसा हो जाता है?
(क) अत्यंत शांत और दार्शनिक
(ख) अत्यंत रोमांचक और कारुणिक
(ग) पूर्णतः हास्यास्पद और व्यंग्यात्मक
(घ) केवल श्रृंगारिक और कोमल

अस्त्र-शस्त्र, रसद और अन्य सभी जरूरी युद्ध सामग्री (सामान) जुटा रहे थे।

12. रणभूमि में लेफ्टिनेंट वॉकर के साथ हुए द्वंद्व का क्या परिणाम हुआ?

उत्तरः
झाँसी के मैदान में जब लेफ्टिनेंट वॉकर सेना लेकर आगे बढ़ा, तो मर्दानी वेश में खड़ी रानी लक्ष्मीबाई ने तलवार खींच ली। इस असमान युद्ध में वॉकर बुरी तरह जख्मी होकर अचरज के साथ भाग खड़ा हुआ।

13. कालपी पहुँचने पर रानी लक्ष्मीबाई को किस भारी क्षति का सामना करना पड़ा?

उत्तरः
निरंतर सौ मील का कठिन रास्ता पार करके जब रानी कालपी पहुँचीं, तो उनका प्रिय घोड़ा अत्यधिक थकान के कारण अचानक भूमि पर गिर पड़ा और तुरंत ही स्वर्ग सिधार गया।

14. ग्वालियर के किस शासक ने अंग्रेजों के डर से अपनी राजधानी छोड़ दी थी?

उत्तरः
ग्वालियर का शासक सिंधिया अंग्रेजों का परम मित्र था। जब विजयी रानी लक्ष्मीबाई ने ग्वालियर पर अधिकार किया, तो सिंधिया अपनी राजधानी छोड़कर भाग खड़ा हुआ।

15. झलकारी बाई का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उत्तरः
महान वीरांगना झलकारी बाई का जन्म 22 नवंबर 1830 को झाँसी के निकट स्थित 'भोजला' नामक एक साधारण गाँव में हुआ था। वह आगे चलकर रानी की विश्वसनीय सलाहकार बनीं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. स्वतंत्रता सेनानी के रूप में सुभद्रा कुमारी चौहान के योगदान पर प्रकाश डालिए।

उत्तरः
सुभद्रा कुमारी चौहान अपने समय की केवल एक सुप्रसिद्ध साहित्यकार ही नहीं थीं, बल्कि स्वाधीनता संग्राम की एक सक्रिय स्वतंत्रता सेनानी भी थीं। देश को आज़ाद कराने के प्रयासों के कारण उन्हें अपने जीवन में दो बार ब्रिटिश जेल भी जाना पड़ा था। उन्होंने अपनी ओजपूर्ण राष्ट्रभक्ति से भरी कविताओं के माध्यम से संपूर्ण भारतीय जनमानस में राष्ट्रीय चेतना और स्वाधीनता के प्रति अटूट अलख जगाने का महान कार्य किया।

2. "बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी" पंक्ति का क्या आशय है?

उत्तरः
इस पंक्ति का आशय यह है कि सन् 1857 से पूर्व भारत सदियों की गुलामी, आपसी फूट और निराशा के कारण उत्साहहीन तथा अशक्त (बूढ़ा) हो चुका था। परंतु 1857 की क्रांति के बिगुल ने देशवासियों में गुलामी की बेड़ियों को काटने का एक नया जोश, अदम्य साहस और चेतना का संचार कर दिया। पूरा देश फिर से अपनी आज़ादी पाने के लिए उठ खड़ा हुआ, जिसे कवि ने 'नई जवानी' कहा है।

3. लक्ष्मीबाई के विवाह के बाद झाँसी के राजमहल के वातावरण में क्या परिवर्तन आया?

उत्तरः
जब वीरता की प्रतिमूर्ति लक्ष्मीबाई का विवाह झाँसी के राजा गंगाधर राव के साथ हुआ, तो झाँसी का भाग्य पूरी तरह उदित हो गया। संपूर्ण राजमहल खुशियों और बधाइयों के गीतों से गूँज उठा। महलों में चारों ओर उजाला छा गया और बुंदेलखंड के शूरवीरों के यशोगान (विरुदावलि) की तरह रानी लक्ष्मीबाई झाँसी के महलों की रौनक बनकर आईं।

4. ब्रिटिश राज द्वारा भारतीय राज्यों को हड़पने के लिए अपनाई गई नीति का वर्णन कीजिए।

उत्तरः
ब्रिटिश शासक (जैसे लॉर्ड डलहौजी) भारतीय राज्यों को हड़पने के लिए 'व्यपगत का सिद्धांत' (डॉकट्रिन ऑफ लैप्स) अपनाते थे। इसके तहत यदि किसी भारतीय राज्य का राजा बिना किसी प्राकृतिक या सगे उत्तराधिकारी (निःसंतान) के मर जाता था, तो अंग्रेज उस राज्य को 'लावारिस' घोषित कर देते थे और जबरन ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लेते थे। इसी नीति के तहत उन्होंने झाँसी पर कब्ज़ा किया।

5. अंग्रेजों द्वारा देश की परदे की इज़्ज़त (शाही महिलाओं) को कैसे ठेस पहुँचाई गई?

उत्तरः
जब अंग्रेजों ने नवाबों और राजाओं के राज्यों पर कब्ज़ा किया, तो वे रनिवासों में रहने वाली रानियों और बेगमों को सताते थे। अंग्रेज सरेआम अपने अखबारों में विज्ञापन छापकर झाँसी, लखनऊ और नागपुर के राजसी जेवर तथा नौलखा हार कलकत्ता के बाज़ारों में नीलाम करते थे। इस प्रकार उन्होंने भारतीय परदे की इज़्ज़त को कौड़ियों के भाव बाज़ारों में नीलाम कर अपमानित किया।

6. "महलों ने दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी" पंक्ति के माध्यम से समाज की किस एकता को दर्शाया गया है?

उत्तरः
इस पंक्ति के माध्यम से 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में अमीर और गरीब, उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के बीच की अभूतपूर्व एकता को दर्शाया गया है। स्वाधीनता की यह चिनगारी किसी एक वर्ग की नहीं, बल्कि सभी भारतीयों के अंतरतम (हृदय) से निकली थी। जहाँ महलों के राजाओं ने विद्रोह का

49. निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं?

I. लक्ष्मीबाई बचपन में नाना के साथ पढ़ती और खेलती थीं।

II. लक्ष्मीबाई की कुल-देवी भवानी थीं।

III. रानी ने कभी तलवार नहीं उठाई।

IV. ह्यू रोज रानी का सेनापति था।

(क) केवल I और IV (ख) केवल I और II

(ग) केवल II और III (घ) केवल III और IV

उत्तरः

(ख) केवल I और II

50. कविता में 'सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी' — 'भृकुटी तानना' मुहावरे का क्या अर्थ है?

(क) प्रसन्न होना (ख) भय दिखाना

(ग) क्रोध प्रकट करना (घ) आश्चर्यचकित होना

उत्तरः

(ग) क्रोध प्रकट करना

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उत्तरः

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म सन् 1904 में उत्तर प्रदेश के प्रयागराज (इलाहाबाद) में हुआ था। उनकी आरंभिक शिक्षा भी प्रयागराज में ही संपन्न हुई थी।

2. सुभद्रा कुमारी चौहान को किस कहानी संग्रह के लिए 'सेकसरिया पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था?

उत्तरः

सुभद्रा कुमारी चौहान को उनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह 'बिखरे मोती' के लिए प्रतिष्ठित 'सेकसरिया पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था। इसके अतिरिक्त उन्हें 'मुकुल' कविता संग्रह के लिए भी यह पुरस्कार मिला।

3. 'झाँसी की रानी' कविता किस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है?

उत्तरः

'झाँसी की रानी' कविता मुख्य रूप से सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखी गई है। यह क्रांति भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक अविस्मरणीय अध्याय है।

4. लक्ष्मीबाई के बचपन की सहेलियाँ किन्हें कहा गया है?

उत्तरः

लक्ष्मीबाई के बचपन का नाम 'छबीली' था। बचपन में साधारण खिलौनों के स्थान पर बरछी, ढाल, कृपाण और कटारी ही उनकी मुख्य सहेलियाँ थीं, जिनके साथ वे खेलती थीं।

5. लक्ष्मीबाई को बचपन में किसकी गाथाएँ ज़बानी याद थीं?

उत्तरः

लक्ष्मीबाई को बचपन से ही वीर मराठा योद्धा छत्रपति शिवाजी महाराज की वीरता और शौर्य की गौरवशाली गाथाएँ पूरी तरह से मुखज़बानी याद थीं।

6. लक्ष्मीबाई के कौन-से प्रिय सैन्य खेल थे जो मराठों को पुलकित करते थे?

उत्तरः

लक्ष्मीबाई द्वारा युद्ध का नकली अभ्यास करना, चक्रव्यूह की रचना करना, जमकर शिकार खेलना, शत्रु की सेना को घेरना और शत्रु के दुर्ग (किले) तोड़ना ही उनके सबसे प्रिय खेल थे।

7. कविता में लक्ष्मीबाई के विवाह की तुलना किन पौराणिक जोड़ों से की गई है?

उत्तरः

कविता में लक्ष्मीबाई और राजा गंगाधर राव के विवाह की तुलना पौराणिक संदर्भों से करते हुए 'चित्रा और अर्जुन' तथा 'शिव और भवानी (पार्वती)' के मिलन से की गई है।

8. राजा गंगाधर राव की मृत्यु के बाद झाँसी की क्या स्थिति हो गई थी?

उत्तरः

राजा गंगाधर राव के निःसंतान मरने के कारण रानी लक्ष्मीबाई गहरे शोक में डूब गईं। झाँसी का राजसी दीपक बुझ गया था और पूरी झाँसी लावारिस व अनाथ सी प्रतीत होने लगी थी।

9. राजा की मृत्यु का समाचार पाकर गवर्नर जनरल डलहौजी ने क्या चाल चली?

उत्तरः

राजा की मृत्यु होते ही डलहौजी मन में बहुत प्रसन्न हुआ। उसने झाँसी को लावारिस मानकर हड़पने का अच्छा अवसर पाया और फौरन अपनी फौजें भेजकर झाँसी के किले पर ब्रिटिश झंडा फहरा दिया।

10. ब्रिटिश शासन भारत में किस रूप में आया था और बाद में उसने क्या किया?

उत्तरः

ब्रिटिश हुकूमत (इस्ट इंडिया कंपनी) प्रारंभ में भारत में एक साधारण व्यापारी बनकर आई थी और यहाँ के राजाओं से दया की भीख चाहती थी। परंतु पैर पसारते ही उसने भारतीय राजाओं और नवाबों को ठुकराना शुरु कर दिया।

11. 1857 की क्रांति में नाना धुंधूपंत पेशवा क्या भूमिका निभा रहे थे?

उत्तरः

नाना धुंधूपंत पेशवा देश को विदेशी दासता से मुक्त कराने के लिए चल रहे इस स्वतंत्रता-महायज्ञ के लिए आवश्यक

राजाओं की मृत्यु के बाद वे उनके राज्यों को लावारिस बताकर जबरन ब्रिटिश झंडा फहरा देते थे और रानियों को अपनी दासी बना लेते थे।

3. "रानी रोईं रनिवासों में, बेगम ग़म से थीं बेजार।" 1857 की क्रांति के समय भारतीय राजघरानों के आंतरिक अपमान, वेदना और उनके जेवरों की नीलामी की घटना का विस्तृत विश्लेषण कीजिए।

उत्तरः
अंग्रेजों की क्रूर राज्य-हड़प नीति ने न केवल राजाओं के राज्यों को छीना, बल्कि भारतीय राजघरानों की महिलाओं को भी असहनीय मानसिक वेदना और घोर सामाजिक अपमान के दलदल में धकेल दिया। झाँसी की रानी जहाँ अपने पति की मृत्यु के बाद महलों में अश्रुपूरित और शोक में डूबी हुई थीं , वहीं अवध की बेगमों का भी सब कुछ छिन जाने के कारण वे गहरे दु:ख (ग़म) से बेज़ार और लाचार थीं। महलों की यह विषम वेदना और आहत सम्मान ही क्रांति की सबसे बड़ी ज्वाला बना।

अंग्रेज शासक इतने क्रूर और निर्लज्ज हो चुके थे कि वे इन सम्मानित शाही महिलाओं के कीमती गहने और वेशकीमती कपड़े सरेआम कलकत्ता के खुले बाज़ारों में बेचते थे। ब्रिटिश सरकार के आधिकारिक अखबारों में बकायदा मुख्य पृष्ठ पर यह अपमानजनक विज्ञापन छापे जाते थे कि 'नागपुर के जेवर ले लो' या 'लखनऊ का प्रसिद्ध नौलखा हार खरीद लो'। इस प्रकार, जो भारतीय महिलाएँ हमेशा परदे की ओट में सम्मानपूर्वक रहती थीं, उनकी इज़्ज़त को अंग्रेजों ने सरेआम विदेशी व्यापारियों के हाथों कौड़ियों के दाम नीलाम कर देश के स्वाभिमान को गहरी चोट पहुँचाई थी।

4. रणभूमि में रानी लक्ष्मीबाई के कालपी से लेकर ग्वालियर और अंततः वीरगति प्राप्त करने तक के शौर्यपूर्ण सफर का क्रमिक और सजीव वर्णन कीजिए।

उत्तरः
झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का रणभूमि में शौर्य का सफर अद्भुत और रोंगटे खड़े कर देने वाला है। झाँसी के मैदान में लेफ्टिनेंट वॉकर को बुरी तरह परास्त और घायल करके भगाने के बाद , रानी अत्यधिक वीरता से आगे बढ़ीं और लगातार सौ मील का सफर तय करके कालपी पहुँहीं। कालपी में अत्यधिक थकान के कारण उनका वफादार घोड़ा धरती पर गिरकर तत्काल मर गया। इसके बाद भी रानी ने हिम्मत नहीं हारी और यमुना के तट पर नए घोड़े के साथ अंग्रेजों को दोबारा धूल चटाई।

वहाँ से विजयी होकर वे आगे बढ़ीं और अंग्रेजों के परम मित्र सिंधिया को हराकर ग्वालियर के अभेद्य किले पर अपना पूर्ण अधिकार कर लिया। परंतु शीघ्र ही जनरल स्मिथ और ह्यू रोज़ की विशाल अंग्रेजी सेना ने उन्हें दोबारा चारों तरफ से घेर लिया। अपनी सखियों काना और मंदरा के साथ मिलकर रानी ने स्मिथ की सेना को तहस-नहस कर दिया , परंतु पीछे से ह्यू रोज़ के आ जाने और सामने एक अप्रत्याशित नाला आ जाने के कारण उनका नया घोड़ा अड़ गया। अकेली घिरी सिंहनी जैसी रानी पर शत्रुओं ने पीछे से ताबड़तोड़ वार किए और वे केवल 23 वर्ष की आयु में अत्यंत वीरता से लड़ती हुई भारतमाता की गोद में सदा के लिए वीरगति को प्राप्त हो गईं।

5. 'झरोखे से' पाठ के आधार पर, 18NT के स्वतंत्रता संग्राम में वीरांगना झलकारी बाई के अदम्य साहस, उनकी रणनीति और उनके अमर बलिदान पर एक विस्तृत लेख लिखिए।

उत्तरः
झलकारी बाई भारतीय इतिहास गगन की एक ऐसी अमर और निष्ठावान योद्धा थीं, जिन्होंने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अपने अदम्य साहस से अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए थे। झाँसी के पास 'भोजला' गाँव के एक अत्यंत साधारण परिवार में जन्मी झलकारी बाई ने बचपन में ही अस्त्र-शस्त्र, कुश्ती और निशानेबाजी की कला सीख ली थी। उनके पति पूरन कोरी राजा गंगाधर राव की सेना में एक वीर सैनिक थे। रानी लक्ष्मीबाई ने जब झलकारी बाई की असाधारण वीरता के बारे में सुना, तो वे उन्हें अपनी महिला सेना 'दुर्गा दल' में शामिल कर अपनी मुख्य सलाहकार बना बैठीं।

1858 में जब जनरल सर ह्यू रोज़ की कमान में विशाल अंग्रेजी सेना ने झाँसी के किले पर हमला कर उसे घेर लिया, तो झलकारी बाई ने अद्भुत युद्ध रणनीति अपनाई। रानी लक्ष्मीबाई का चेहरा उनसे बहुत मिलता था, जिसका लाभ उठाते हुए उन्होंने स्वयं रानी का वेश धारण कर लिया और सेना की मुख्य कमान संभालकर अंग्रेजों से सीधे मोर्चा ले लिया। उनकी इस चतुर चाल के कारण अंग्रेज लंबे समय तक भ्रमित रहे और इसी बीच असली रानी लक्ष्मीबाई अपने छोटे बच्चे को पीठ पर बांधकर सुरक्षित किले से बाहर निकल सकीं। युद्ध में अपने पति पूरन कोरी की शहादत की खबर सुनकर वे साक्षात् रणचंडी बन गईं और दर्जनों अंग्रेज सैनिकों को मौत के घाट उतारकर बुंदेलखंड की लोक-स्मृति में सदा के लिए अमर हो गईं।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

काव्यांश 1

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फ़िरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन् सत्तावन में
वह तलवार पुरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

1. 'बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी' पंक्ति में 'नई जवानी' का क्या निहितार्थ है?
(क) युवाओं का सैन्य संगठन
(ख) खोया राजसी वैभव पाना
(ग) राष्ट्रीय चेतना का पुनरुत्थान
(घ) नवीन शस्त्रों का आगमन

2. नीचे दिए गए कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए:
I. सन् सत्तावन (1857) में राजवंशों ने अंग्रेजों के विरुद्ध रोष प्रकट किया जिससे ब्रिटिश शासन की नींव डगमगा गई।
II. भारतवासी अपनी स्वतंत्रता का मूल्य भूल चुके थे, इसलिए उन्होंने फिरंगियों के साथ व्यापार करना स्वीकार किया।
(क) कथन I सही है, परंतु II गलत है।
(ख) कथन II सही है, परंतु I गलत है।
(ग) कथन I और II दोनों सही हैं।
(घ) कथन I और II दोनों गलत हैं।

3. इस छंद को पढ़ते समय मुख्य रूप से किस काव्य-गुण और रस की अनुभूति होती है?
(क) माधुर्य गुण, श्रृंगार रस
(ख) प्रसाद गुण, शांत रस
(ग) ओज गुण, वीर रस
(घ) लक्षण गुण, करुण रस

4. काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'फ़िरंगी' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
(क) विदेशी अंग्रेज शासक
(ख) मराठा साम्राज्य के सैनिक
(ग) बुंदेलखंड के लोकगायक
(घ) झाँसी के विद्रोही राजा

5. कवयित्री के अनुसार यह शौर्यगाथा उन्होंने किनके माध्यम से सुनी थी?
(क) झाँसी के दरबारियों द्वारा
(ख) बुंदेले हरबोलों के मुँह से
(ग) प्राचीन लिखित ग्रंथों द्वारा
(घ) अपनी सहेली छबीली द्वारा

उत्तरः
1. (ग) राष्ट्रीय चेतना का पुनरुत्थान
2. (क) कथन I सही है, परंतु II गलत है।
3. (ग) ओज गुण, वीर रस
4. (क) विदेशी अंग्रेज शासक
5. (ख) बुंदेले हरबोलों के मुँह से

काव्यांश 2

कानपूर के नाना की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नाना के सँग पढ़ती थी वह, नाना के सँग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी,
वीर शिवाजी की गाथाएँ
उसको याद ज़बानी थीं।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

1. 'बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी' पंक्ति से लक्ष्मीबाई के बचपन की किस विशिष्टता का संकेत मिलता है?
(क) पारंपरिक खिलौनों का अभाव होना
(ख) बचपन से ही युद्धकला में रुचि
(ग) सहेलियों के साथ विवाद होना
(घ) राजसी सुख-सुविधाओं से विमुखता

2. **अभिकथन (A):** लक्ष्मीबाई अपने पिता की एकमात्र संतान थीं और कानपुर के नाना धुंधूपंत की मुँहबोली बहन थीं।
कारण (R): उनका बचपन सामान्य बालिकाओं की तरह गुड़िया और घरेलू खेलों में व्यतीत हुआ था।
(क) (A) सही है, परंतु (R) गलत है।
(ख) (A) गलत है, परंतु (R) सही है।
(ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. इस काव्यांश की शैली मुख्य रूप से किस प्रकार की है?
(क) गूढ़ दार्शनिक शैली
(ख) आख्यानात्मक और गेय
(ग) उपदेशात्मक और रूखी
(घ) केवल गद्यात्मक विवेचन

4. काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'कृपाण' का सही अर्थ क्या है?
(क) छोटा भाला
(ख) एक प्रकार की तलवार
(ग) लोहे का कवच
(घ) पैनी कटार

5. लक्ष्मीबाई को बचपन में ज़बानी (कंठस्थ) किसकी वीर गाथाएँ याद थीं?
(क) मुग़ल शासकों की
(ख) बुंदेलखंड के राजाओं की
(ग) कानपुर के नाना की
(घ) वीर शिवाजी की

उत्तरः
1. (ख) बचपन से ही युद्धकला में रुचि
2. (क) (A) सही है, परंतु (R) गलत है।
3. (ख) आख्यानात्मक और गेय
4. (ख) एक प्रकार की तलवार
5. (घ) वीर शिवाजी की

काव्यांश 3

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजयाली छाई,
किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाईं,
रानी विधवा हुई हाय! विधि को भी नहीं दया आई,
निःसंतान मरे राजाजी रानी शोक-समानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

1. "काली घटा घेर लाई" रूपक के प्रयोग द्वारा कवयित्री किस ओर संकेत कर रही हैं?
   (क) झाँसी में युद्ध होना
   (ख) अत्यधिक वर्षा का होना
   (ग) अचानक घोर संकट आना
   (घ) राजमहल का नष्ट होना

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. रानी लक्ष्मीबाई के झाँसी आने से महलों में अत्यंत प्रसन्नता और सौभाग्य का आगमन हुआ।
   II. राजा गंगाधर राव के जीवित रहते ही झाँसी को अंग्रेजों ने हड़प लिया था।
   (क) कथन I सही है, परंतु II गलत है।
   (ख) कथन II सही है, परंतु I गलत है।
   (ग) कथन I और II दोनों सही हैं।
   (घ) कथन I और II दोनों गलत हैं।

3. "रानी विधवा हुई हाय! विधि को भी नहीं दया आई" पंक्तियों में मुख्य रूप से कौन-सा भाव प्रकट होता है?
   (क) अत्यधिक रौद्र भाव (ख) अत्यंत करुण भाव
   (ग) अद्भुत विस्मय भाव (घ) शांत वैराग्य भाव

4. काव्यांश में प्रयुक्त 'कर' शब्द का क्या अर्थ है?
   (क) राज्य का टैक्स (ख) करने की क्रिया
   (ग) हाथी की सूँड (घ) मनुष्य का हाथ

5. राजाजी की मृत्यु किस स्थिति में हुई थी जिसके कारण रानी गहरे शोक में डूब गईं?
   (क) वे युद्ध में वीरगति पाए (ख) वे निःसंतान ही मर गए
   (ग) वे बंदी बना लिए गए (घ) वे राज्य छोड़कर चले गए

उत्तरः
1. (ग) अचानक घोर संकट आना
2. (क) कथन I सही है, परंतु II गलत है।
3. (ख) अत्यंत करुण भाव
4. (घ) मनुष्य का हाथ
5. (ख) वे निःसंतान ही मर गए

काव्यांश 4

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौजी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया,
अश्रूपूर्ण रानी ने देखा झाँसी हुई बिरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

1. 'बुझा दीप झाँसी का' पंक्ति से क्या तात्पर्य है?
   (क) झाँसी में अंधकार होना (ख) राजा का देहावसान होना
   (ग) अंग्रेजों का दमन चक्र (घ) रानी का महल त्यागना

2. **अभिकथन (A):** राजा की मृत्यु के बाद लॉर्ड डलहौजी मन में अत्यंत प्रसन्न हुआ क्योंकि उसे राज्य हड़पने का अवसर मिल गया।
   कारण (R): डलहौजी ने तुरंत अपनी सेना भेजकर झाँसी के दुर्ग पर ब्रिटिश ध्वज फहरा दिया।
   (क) (A) सही है, परंतु (R) गलत है।
   (ख) (A) गलत है, परंतु (R) सही है।
   (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
   (घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. "अश्रुपूर्ण रानी ने देखा झाँसी हुई बिरानी थी" पंक्ति में कवयित्री ने रानी की किस स्थिति को दर्शाया है?
   (क) असहाय और अत्यंत आहत
   (ख) अत्यंत क्रोधित और आक्रामक
   (ग) उदासीन और उदासीनतापूर्ण
   (घ) पराजय स्वीकार करने वाली

4. काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'बिरानी' का क्या अर्थ है?
   (क) बहुत सुंदर होना
   (ख) पराई या उजाड़ होना
   (ग) अत्यधिक समृद्ध होना
   (घ) नई दुल्हन जैसी होना

5. डलहौजी झाँसी का वारिस (उत्तराधिकारी) किस रूप में बनकर आया?
   (क) संधि के माध्यम से
   (ख) लावारिस का वारिस बनकर
   (ग) रानी के दत्तक पुत्र बनकर
   (घ) प्रजा की सहमति से

उत्तरः
1. (ख) राजा का देहावसान होना
2. (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।

सुभट बुंदेलों की विरुदावलि-सी वह आई झाँसी में,
चित्रा ने अर्जुन को पाया,
शिव से मिली भवानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

1. 'वीरता की वैभव के साथ सगाई' — इस पंक्ति में कवयित्री ने किस बात का प्रतीकात्मक वर्णन किया है?
   (क) झाँसी की समृद्धि और वैभव का विस्तृत वर्णन किया गया है
   (ख) लक्ष्मीबाई की वीरता और राजसी वैभव का विवाह द्वारा मिलन दर्शाया गया है
   (ग) बुंदेलों की सेना की ताकत और धन-संपदा का वर्णन किया गया है
   (घ) लक्ष्मीबाई और गंगाधर राव की शाही सगाई का सीधा वर्णन है

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. 'चित्रा ने अर्जुन को पाया' — यह पुराण की कथा के माध्यम से लक्ष्मीबाई और गंगाधर राव के विवाह की उपमा है।
   II. 'शिव से मिली भवानी' — यह केवल पूजा-पद्धति का वर्णन है, इसका विवाह से कोई संबंध नहीं।
   (क) कथन I सही है, परंतु II गलत है।
   (ख) कथन II सही है, परंतु I गलत है।
   (ग) कथन I और II दोनों सही हैं।
   (घ) कथन I और II दोनों गलत हैं।

3. 'सुभट बुंदेलों की विरुदावलि-सी वह आई झाँसी में' — इस पंक्ति में लक्ष्मीबाई की तुलना किससे की गई है?
   (क) बुंदेलखंड के वीर योद्धाओं की यशस्वी गाथाओं से
   (ख) बुंदेलखंड की प्रसिद्ध लोककथाओं की नायिकाओं से
   (ग) बुंदेलखंड में गाई जाने वाली प्राचीन लोरियों और गीतों से
   (घ) बुंदेलखंड के राजमहलों की भव्यता और शोभा से

4. काव्यांश में प्रयुक्त 'विरुदावलि' शब्द का क्या अर्थ है?
   (क) बंदूकों और तीरों की तेज ध्वनि और गर्जना
   (ख) शादी में गाए जाने वाले मंगल और विवाह-गीत
   (ग) किसी के यश, शौर्य और गुणों का गान करने वाली कविता
   (घ) बुंदेलखंड क्षेत्र में प्रचलित परंपरागत लोकगाथा

5. इस छंद में झाँसी की किस विशेष अवस्था का चित्रण किया गया है?
   (क) शत्रुओं द्वारा झाँसी के घिरने और युद्ध की विभीषिका का
   (ख) लक्ष्मीबाई के आगमन से झाँसी में उत्सव और आनंद के वातावरण का
   (ग) झाँसी में अकाल और दुर्भिक्ष के कारण उत्पन्न संकट का
   (घ) झाँसी के किले के पुनर्निर्माण और विस्तार के कार्य का

उत्तरः
1. (ख) लक्ष्मीबाई की वीरता और राजसी वैभव का विवाह द्वारा मिलन दर्शाया गया है
2. (क) कथन I सही है, परंतु II गलत है।
3. (क) बुंदेलखंड के वीर योद्धाओं की यशस्वी गाथाओं से
4. (ग) किसी के यश, शौर्य और गुणों का गान करने वाली कविता
5. (ख) लक्ष्मीबाई के आगमन से झाँसी में उत्सव और आनंद के वातावरण का

काव्यांश 9

अनुनय-विनय नहीं सुनता है, विकट फ़िरंगी की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौजी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया,
राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया,
रानी दासी बनी, बनी यह
दासी अब महरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

1. 'व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया' — इस पंक्ति में कवयित्री ने अंग्रेजों की किस कुटिल नीति की ओर संकेत किया है?
   (क) वे शुरुआत में व्यापारी बनकर आए और धीरे-धीरे शासक बन गए
   (ख) वे भारत में व्यापार करके यहाँ की जनता की सेवा करना चाहते थे
   (ग) उन्होंने भारत में आकर सबसे पहले किसानों की दयनीय दशा सुधारी
   (घ) वे भारतीय राजाओं से व्यापारिक संधि करके मित्रता चाहते थे

2. **अभिकथन (A):** 'रानी दासी बनी, बनी यह दासी अब महरानी थी' — इस पंक्ति में विरोधाभास और व्यंग्य दोनों हैं।
   कारण (R): रानी को दासी बनाकर जो अंग्रेजी सत्ता आई वही अब 'महरानी' (विक्टोरिया) की तरह राज करने लगी।
   (क) (A) सही है, परंतु (R) गलत है।
   (ख) (A) गलत है, परंतु (R) सही है।
   (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
   (घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

4. काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'विषम' का संदर्भ के अनुसार क्या अर्थ है?
 (क) बहुत आसान रास्ता
 (ख) अत्यंत कठिन या विकट
 (ग) बहुत छोटा सा मार्ग
 (घ) अत्यंत सुंदर दिखने वाला

5. नाले के पास पहुँचने पर रानी के साथ क्या मुख्य प्रतिकूल स्थिति उत्पन्न हुई?
 (क) उनकी तलवार टूट गई थी
 (ख) अंग्रेज सैनिक पीछे हट गए थे
 (ग) उनकी सखियाँ साथ छोड़ गईं
 (घ) नया घोड़ा आगे बढ़ने से अड़ गया

उत्तरः
1. (ग) उनका अदम्य साहस और शौर्य
2. (क) (A) सही है, परंतु (R) गलत है।
3. (ख) अत्यंत रोमांचक और कारुणिक
4. (ख) अत्यंत कठिन या विकट
5. (घ) नया घोड़ा आगे बढ़ने से अड़ गया

काव्यांश 7

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उसके प्रिय खिलवार,
महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी
भी आराध्य भवानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

1. 'देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार' — इस पंक्ति में 'पुलकित' शब्द से क्या भाव व्यक्त होता है?
 (क) मराठे लक्ष्मीबाई की वीरता देखकर रोमांचित और गर्वित होते थे
 (ख) मराठे लक्ष्मीबाई की तलवार देखकर भयभीत और विचलित हो जाते थे
 (ग) मराठे लक्ष्मीबाई की चालाकी देखकर चिंतित और सशंकित हो जाते थे
 (घ) मराठे लक्ष्मीबाई की सुंदरता देखकर मुग्ध और मंत्रमुग्ध हो जाते थे

2. **अभिकथन (A):** कवयित्री ने लक्ष्मीबाई की तुलना लक्ष्मी और दुर्गा दोनों से की है।
 कारण (R): लक्ष्मी और दुर्गा क्रमशः सौंदर्य और शक्ति की देवी हैं तथा रानी में दोनों के गुण थे।
 (क) (A) सही है, परंतु (R) गलत है।
 (ख) (A) गलत है, परंतु (R) सही है।
 (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
 (घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. 'नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार' — इन खेलों से लक्ष्मीबाई के बचपन की किस प्रवृत्ति का पता चलता है?
 (क) वह शांत और एकांतप्रिय स्वभाव की थीं तथा एकल खेल पसंद करती थीं
 (ख) वह बचपन से ही युद्ध-कौशल और सैनिक रणनीति में गहरी रुचि रखती थीं
 (ग) वह मराठा राजाओं की नकल उतारने में विशेष आनंद लेती थीं
 (घ) वह महलों की सुख-सुविधाओं से दूर रहना पसंद करती थीं

4. काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'खिलवार' का संदर्भ के अनुसार सही अर्थ क्या है?
 (क) बच्चों द्वारा खेले जाने वाले साधारण खेल-खिलौने
 (ख) रणभूमि में लड़ी जाने वाली असली और भीषण लड़ाई
 (ग) प्रिय खेल अर्थात् युद्धकला के प्रिय अभ्यास-खेल
 (घ) मित्रों के साथ मिलकर खेली जाने वाली मनोरंजक क्रीड़ा

5. 'महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी' — इस पंक्ति से लक्ष्मीबाई के बारे में क्या तथ्य प्रकट होता है?
 (क) वे हर युद्ध से पहले भवानी देवी के मंदिर में जाकर पूजा करती थीं
 (ख) वे बुंदेलखंड की देवी भवानी की परम भक्त होने के कारण झाँसी आई थीं
 (ग) उन्होंने महाराष्ट्र में भवानी मंदिर का निर्माण करवाया था
 (घ) वे मराठा वंश से थीं और महाराष्ट्र की कुलदेवी भवानी उनकी आराध्य देवी थीं

उत्तरः
1. (क) मराठे लक्ष्मीबाई की वीरता देखकर रोमांचित और गर्वित होते थे
2. (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
3. (ख) वह बचपन से ही युद्ध-कौशल और सैनिक रणनीति में गहरी रुचि रखती थीं
4. (ग) प्रिय खेल अर्थात् युद्धकला के प्रिय अभ्यास-खेल
5. (घ) वे मराठा वंश से थीं और महाराष्ट्र की कुलदेवी भवानी उनकी आराध्य देवी थीं

काव्यांश 8

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राजमहल में बजी बधाई खुशियाँ छाईं झाँसी में,

नेतृत्व (आग) किया, वहीं झोंपड़ियों में रहने वाले साधारण नागरिकों और सैनिकों ने उसमें पूरे प्राण झोंककर उसे एक महासंग्राम (ज्वाला) बना दिया।

7. इस स्वतंत्रता-महायज्ञ में किन-किन प्रमुख वीरवरों ने अपने प्राणों की आहुति दी?

उत्तरः
सन् 1857 के इस महान स्वतंत्रता-महायज्ञ में भारतमाता के अनेक शूरवीरों ने देश की वेदी पर अपने प्राण न्यौछावर किए। इनमें कानपुर के नाना धुंधूपंत पेशवा, महान सेनापति ताँतिया टोपे, चतुर अज़ीमुल्ला खान, देशभक्त अहमद शाह मौलवी और बिहार के वयोवृद्ध वीर ठाकुर कुँवर सिंह जैसे अनेक पराक्रमी सैनिक शामिल थे, जिनके नाम इतिहास के गगन में सदा अमर रहेंगे।

8. युद्धक्षेत्र में रानी लक्ष्मीबाई की सखियों, काना और मंदरा, के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः
काना और मंदरा रानी लक्ष्मीबाई की बचपन की प्रिय सखियाँ थीं, जिन्होंने केवल महलों के सुख ही नहीं साजे, बल्कि युद्ध की कला भी सीखी थी। जब जनरल स्मिथ ने झाँसी की सेना को घेरा, तब ये दोनों सखियाँ रानी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर युद्धक्षेत्र में उतरीं। उन दोनों वीरांगनाओं ने अपनी तलवारों से अंग्रेजों की सेना में भारी मारकाट मचाकर अद्भुत पराक्रम का परिचय दिया था।

9. अंतिम समय में रानी का नया घोड़ा उनके लिए संकट का कारण क्यों बन गया?

उत्तरः
कालपी में पुराना वफादार घोड़ा मरने के बाद रानी को एक नया घोड़ा लेना पड़ा था। जब ह्यू रोज़ की सेना ने रानी को चारों ओर से घेर लिया, तो वे वीरता से मारकाट करती हुई सेना के पार निकल गईं, परंतु अचानक सामने एक गहरा नाला आ गया। वह घोड़ा नया होने के कारण नाला पार करने में अड़ गया। इतने में पीछे से आए अंग्रेज सवारों ने अकेली रानी पर ताबड़तोड़ वार कर उन्हें घायल कर दिया।

10. झलकारी बाई का रूप और गठन रानी लक्ष्मीबाई के लिए किस प्रकार वरदान साबित हुआ?

उत्तरः
झलकारी बाई का शारीरिक गठन और चेहरा हूबहू रानी लक्ष्मीबाई से बहुत मिलता-जुलता था। जब 1858 में जनरल ह्यू रोज़ की ब्रिटिश सेना ने झाँसी के किले को चारों तरफ से घेर लिया , तब झलकारी बाई ने रानी लक्ष्मीबाई का वेश धारण कर सेना की कमान अपने हाथों में ले ली। उनके इस सद्रूप (समान चेहरे) ने अंग्रेजों को लंबे समय तक भ्रम में रखा , जिससे रानी सुरक्षित अपने बच्चे के साथ किले से बाहर भाग सकीं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'झाँसी की रानी' कविता के आधार पर लक्ष्मीबाई के बचपन, उनकी रुचि और उनके असाधारण व्यक्तित्व की उन विशेषताओं का विस्तृत वर्णन कीजिए जो उन्हें अन्य बालिकाओं से भिन्न बनाती हैं।

उत्तरः
सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता में रानी लक्ष्मीबाई के बचपन का एक बहुत ही ओजपूर्ण चित्र प्रस्तुत किया गया है जो उन्हें सामान्य बालिकाओं से बिल्कुल अलग स्थापित करता है। लक्ष्मीबाई अपने पिता की इकलौती संतान थीं और कानपुर के नाना धुंधूपंत की मुँहबोली बहन थीं। बचपन में जहाँ अन्य बालिकाएँ गुड़िया-घरों और पारंपरिक खिलौनों से खेलती थीं, वहीं लक्ष्मीबाई का बचपन अस्त्र-शस्त्रों के बीच बीता। उनकी प्रिय सहेलियाँ कोई सखियाँ नहीं, बल्कि बरछी, ढाल, कृपाण और कटारी जैसे घातक हथियार थे।

वे नाना के साथ ही पढ़ती थीं और उन्हीं के साथ युद्ध कला सीखती थीं। उन्हें केवल 23 वर्ष की अल्पायु में ही 'अवतारी नारी' के रूप में देखा गया। बचपन से ही नकली युद्ध करना, सैन्य व्यूह की रचना करना, शिकार खेलना, दुश्मन के किलों (दुर्ग) को तोड़ना और सेना को घेरना उनके सबसे प्रिय खेल थे। वे महाराष्ट्र के कुल की देवी माता भवानी की परम भक्त थीं और उनमें कूट-कूटकर वीरता भरी थी, जिसे देखकर मराठे भी गर्व से पुलकित हो उठते थे।

2. "व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया।" इस पंक्ति के आलोक में स्पष्ट कीजिए कि ब्रिटिश हुकूमत ने भारत में किस प्रकार पैर पसारे और भारत के राजाओं, नवाबों तथा राज्यों की क्या दुर्दशा की?

उत्तरः
यह कविता ब्रिटिश साम्राज्य की कुटिल व्यापारिक और राजनीतिक चालों का पूरी तरह पर्दाफ़ाश करती है। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी प्रारंभ में भारत में केवल एक शांतिप्रिय और असहाय व्यापारी बनकर आई थी, जो तत्कालीन भारतीय राजाओं और नवाबों के सामने हाथ जोड़कर अपने व्यापार के लिए दया की भीख माँगती थी। परंतु धीरे-धीरे भारतीय शासकों की आपसी फूट का लाभ उठाकर गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी जैसे अधिकारियों ने अपने दमनकारी पैर पूरे देश में पसार लिए। उन्होंने भारत की राजनैतिक काया ही पलट दी और जिन राजाओं-नवाबों ने उन्हें शरण दी थी, उन्हें ही अपने पैरों तले बेरहमी से ठुकरा दिया।

अंग्रेजों ने एक-एक करके देश की सभी रियासतों को निगलना शुरु किया; उन्होंने देश की मुख्य राजधानी दिल्ली छीन ली, लखनऊ को बातों ही बातों में हड़प लिया, बिठूर के पेशवा को कैद कर लिया और नागपुर पर घातक हमला किया। इसके बाद उदयपुर, तंजौर, सतारा, कर्नाटक, सिंध, पंजाब, असम (ब्रह्म), बंगाल और मद्रास जैसी बड़ी व समृद्ध रियासतों का भी समूल विनाश (वज्र-निपात) कर दिया।

3. 'डलहौजी ने पैर पसारे' मुहावरे का प्रयोग यहाँ किस अर्थ में हुआ है?
   (क) डलहौजी ने भारत में अपना साम्राज्य तेजी से फैलाया और विस्तार किया
   (ख) डलहौजी ने भारत में आकर थककर विश्राम करने का निर्णय किया
   (ग) डलहौजी ने भारतीय राजाओं से संधि करके अपनी सेना बढ़ाई
   (घ) डलहौजी ने भारतीय जनता के साथ दयालुता से व्यवहार करना शुरू किया

4. काव्यांश में प्रयुक्त 'अनुनय-विनय' का सही अर्थ क्या है?
   (क) सशस्त्र विद्रोह और हिंसक प्रतिरोध करने की कठोर नीति
   (ख) नम्रतापूर्वक प्रार्थना और विनती करना
   (ग) कूटनीतिक समझौता और पारस्परिक संधि करना
   (घ) न्यायालय में याचिका और अपील दायर करना

5. इस छंद में 'विकट फ़िरंगी की माया' — यहाँ 'माया' शब्द किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है?
   (क) अंग्रेजों की आर्थिक समृद्धि और उनकी अपार धन-संपदा
   (ख) अंग्रेजों की जादुई शक्ति और उनके द्वारा किए जादू-टोने
   (ग) अंग्रेजों की उन्नत सैनिक तकनीक और शस्त्र-सामग्री
   (घ) अंग्रेजों का छल-कपट, धोखेबाजी और कुटिल षड्यंत्र

1. (क) वे शुरुआत में व्यापारी बनकर आए और धीरे-धीरे शासक बन गए
2. (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
3. (क) डलहौजी ने भारत में अपना साम्राज्य तेजी से फैलाया और विस्तार किया
4. (ख) नम्रतापूर्वक प्रार्थना और विनती करना
5. (घ) अंग्रेजों का छल-कपट, धोखेबाजी और कुटिल षड्यंत्र

काव्यांश 10

रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता नारी थी,
दिखा गई पथ, सिखा गई
हमको जो सीख सिखानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

1. 'मिला तेज से तेज' — इस पंक्ति में कवयित्री ने क्या भाव व्यक्त किया है?
   (क) रानी के तेजस्वी व्यक्तित्व का तेज दिव्य तेज में विलीन हो गया
   (ख) रानी की तलवार के तेज ने शत्रुओं के हथियारों को काट डाला
   (ग) रानी की गति अत्यंत तीव्र थी और वह तेज दौड़ सकती थीं
   (घ) रानी का तेज धूप जितना प्रखर और आग जितना जलाने वाला था

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. 'अभी उम्र कुल तेइस की थी' — यह पंक्ति बताती है कि रानी ने केवल 23 वर्ष की आयु में वीरगति प्राप्त की।
   II. 'मनुज नहीं अवतारी थी' — इससे संकेत मिलता है कि कवयित्री उन्हें साधारण मनुष्य नहीं बल्कि अवतारी मानती हैं।
   (क) कथन I सही है, परंतु II गलत है।
   (ख) कथन II सही है, परंतु I गलत है।
   (ग) कथन I और II दोनों गलत हैं।
   (घ) कथन I और II दोनों सही हैं।

3. 'हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता नारी थी' — इस पंक्ति में 'जीवित करने' का गहरा निहितार्थ क्या है?
   (क) रानी ने घायल सैनिकों का उपचार करके उन्हें जीवनदान दिया था
   (ख) रानी ने मृतप्राय राष्ट्रीय चेतना और स्वाभिमान को पुनर्जीवित किया
   (ग) रानी ने भूख से मर रहे झाँसी के लोगों को भोजन उपलब्ध कराया
   (घ) रानी ने अंग्रेजों की कैद से कई भारतीय कैदियों को मुक्त कराया

4. काव्यांश में प्रयुक्त 'अवतारी' शब्द किस भाव को व्यक्त करता है?
   (क) रानी एक कुशल अभिनेत्री थीं जो अलग-अलग वेश धारण करती थीं
   (ख) रानी ने अनेक अवतारों की कथाएँ पढ़ी और उनसे प्रेरणा ली थीं
   (ग) रानी ईश्वरीय शक्ति-संपन्न, असाधारण और दिव्य व्यक्तित्व की थीं
   (घ) रानी अपने राज्य की रक्षा के लिए अनेक प्रकार के अवतार लेती थीं

5. 'दिखा गई पथ, सिखा गई हमको जो सीख सिखानी थी' — इस अंतिम पंक्ति में रानी का कौन-सा स्थायी योगदान रेखांकित किया गया है?
   (क) रानी ने भावी पीढ़ियों को स्वतंत्रता, त्याग और वीरता का मार्ग दिखाया
   (ख) रानी ने सैनिकों को युद्ध-कौशल और रणनीति की शिक्षा दी थी

एक बार भी अपना सिर रख लिया जाए, तो उसके बाद जीवन का बड़े से बड़ा दुःख और मानसिक संताप भी पल भर में पूरी तरह गायब हो जाता है। फिर किसी बात की कोई चिंता नहीं रह जाती।

मेरी माँ का प्रेम इतना असीम और व्यापक है कि उनके वात्सल्य की स्नेह-धारा का फैलाव मुझे इस सुदूर जेल की सूनी कोठरी में भी पूरी तरह महसूस हो रहा है। दूरी भी माँ के प्रेम को मुझसे अलग नहीं कर पाई है। कवि एक दर्द के साथ कहते हैं कि मेरी माँ को लिखना नहीं आता है, नहीं तो वे अपने इस लाडले बेटे को सांत्वना देने के लिए अपने हाथों से पत्र ज़रूर लिखतीं, और आज मुझे उनका वह ममता भरा पत्र यहाँ मिल जाता जिसे पढ़कर मेरा मन शांत हो जाता।

काव्यांश 6

और पानी गिर रहा है,
घर चतुर्दिक् घिर रहा है,
पिताजी भोले बहादुर,
वज्र-भुज नवनीत-सा उर,
पिताजी जिनको बुढ़ापा,
एक क्षण भी नहीं व्यापा,
जो अभी दौड़ जाएँ,
जो अभी भी खिल-खिलाएँ,

कठिन-शब्दार्थ

1. चतुर्दिक् – चारों ओर, चारों दिशाओं में।
2. वज्र-भुज – लोहे या वज्र के समान अत्यंत कठोर और शक्तिशाली भुजाएँ।
3. नवनीत-सा उर – ताजे मक्खन के समान कोमल और संवेदनशील हृदय।
4. व्यापा – असर करना, प्रभाव डालना या व्याप्त होना।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। इसमें लगातार बढ़ती हुई वर्षा के बीच कवि ने अपने पिता के साहसी, निडर, ऊर्जावान तथा कोमल व्यक्तित्व का सुंदर वर्णन किया है।

व्याख्या

कवि कहते हैं कि बाहर बादलों से मूसलाधार पानी गिर रहा है और वर्षा रुकने का नाम नहीं ले रही है। इस बरसते पानी के बीच मेरा घर मेरी यादों में चारों ओर से मुझे घेरे हुए खड़ा है। इसके बाद कवि अपने आदरणीय पिता जी को याद करते हुए कहते हैं कि मेरे पिता जी स्वभाव से अत्यंत सीधे और भोले हैं, लेकिन वे बहुत बहादुर हैं। उनकी भुजाएँ वज्र के समान शक्तिशाली और सुदृढ़ हैं, परंतु उनका हृदय ताजे मक्खन के समान बेहद कोमल और संवेदनशील है।

मेरे पिता जी उम्र से भले ही वृद्ध हो चुके हैं, लेकिन उनके शरीर और मन पर बुढ़ापे का थोड़ा सा भी असर एक क्षण के लिए भी दिखाई नहीं देता। वे आज भी युवाओं की तरह तेज़ी से दौड़ लगा सकते हैं और बच्चों की तरह खुलकर खिलखिलाकर हँस सकते हैं। उनके भीतर जीवन जीने का अद्भुत उत्साह है।

काव्यांश 7

मौत के आगे न हिचकें,
शेर के आगे न बिचकें,
बोल में बादल गरजता,
काम में झंझा लरजता,
आज गीता पाठ करके,
दंड दो सौ साठ करके,
ख़ूब मुगदर हिला लेकर,
मूठ उनकी मिला लेकर,

कठिन-शब्दार्थ

1. हिचकें – डरना या कदम पीछे हटाना।
2. बिचकें – घबराना, डरकर पीछे हटना।
3. झंझा – तेज़ आँधी-तूफ़ान या चक्रवात।
4. लरजता – काँपना, काँप उठता है।
5. मुगदर – कसरत करने के लिए लकड़ी का बना भारी सोंटा।
6. मूठ – मुट्ठी, कब्जा या दस्ता।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। इसमें पिता जी की अद्भुत निडरता, ओजस्वी स्वर, कार्य-कुशलता और उनकी नियमित कड़े व्यायाम करने की दिनचर्या का सजीव चित्रण किया गया है।

व्याख्या

कवि अपने पिता जी के पराक्रमी स्वभाव का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वे इतने साहसी हैं कि साक्षात् मौत के सामने आने पर भी कभी नहीं डरते और न ही अपने कदम पीछे हटाते हैं। यदि उनके सामने अचानक शेर भी आ जाए, तो वे घबराकर पीछे नहीं हटते। उनकी आवाज़ में आज भी वैसी ही कड़क है मानो बादलों की भयंकर गर्जना हो। जब वे कोई कार्य करने पर आते हैं, तो उनके काम करने की तीव्र गति और ऊर्जा के सामने भयंकर आँधी-तूफान भी थर-थर काँपने लगता है।

कवि उनकी रोज़ की अनुशासित कसरत के बारे में बताते हैं कि आज भी रोज़ की तरह उन्होंने सुबह उठकर सबसे पहले पवित्र श्रीमद्भगवद्गीता का पाठ किया होगा। उसके बाद उन्होंने पूरे दो सौ साठ दंड-बैठकें लगाकर कड़ा व्यायाम किया होगा। फिर व्यायाम के अंत में लकड़ी के बने भारी-भारी मुगदरों को अपने दोनों हाथों में लेकर खूब घुमाया होगा तथा उनकी मुट्ठियों को आपस में मिलाकर अपनी शारीरिक शक्ति का अभ्यास किया होगा।

अध्याय 12

घर की याद

1. कवि परिचय

कारावास की एकांत रातों में रचे गए मर्मस्पर्शी पाठ 'घर की याद' के शिल्पी भवानीप्रसाद मिश्र का जन्म सन् 1913 में टिगरिया, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश में हुआ था। इनकी पहचान स्वाधीनता आंदोलन के एक सजग सेनानी और सहज कविता के अप्रतिम साधक के रूप में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। इन्होंने अपनी संवेदना से भरी लेखनी के माध्यम से जेल के कष्टों के बीच संयुक्त परिवार के अटूट आपसी संबंधों, स्मृतियों के ताने-बाने और परिजनों के प्रति उमड़ती स्नेहमयी भावनाओं को उकेरकर हिंदी साहित्य को अलंकृत किया है। अपनी इस लयात्मक, लोकभाषा की सहजता और अत्यंत प्रभावी व नादमयी अभिव्यक्ति से इन्होंने हिंदी प्रेमियों को गौरवान्वित किया है। सन् 1985 में इस महान स्वतंत्रता सेनानी एवं कवि का निधन हो गया।

2. कविता-परिचय

'घर की याद' भवानीप्रसाद मिश्र की एक अत्यंत मार्मिक और भावपूर्ण कविता है, जो उन्होंने सन् 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' के दौरान कारावास में लिखी थी। परिवार की स्मृति इस कविता की केंद्रीय संवेदना है। सावन की बरसात में कवि को माँ, पिता, भाई-बहन सभी याद आते हैं। कवि सावन के बादल को दूत बनाकर परिवार तक संदेश भेजता है और आग्रह करता है कि उन्हें उसके कष्टों की जानकारी न दी जाए, बल्कि सांत्वना दी जाए।

3. कविता का सार

सावन की झड़ी और घर की याद

जेल में बंद कवि देख रहे हैं कि रात भर से लगातार तेज़ बारिश हो रही है। पानी के इस निरंतर बरसने के कारण कवि का मन अपने परिवार की यादों से घिर जाता है और उनकी आँखों के सामने उनका पूरा सुदूर घर तैरने लगता है, जो कभी खुशियों का भंडार हुआ करता था।

परिजनों का संताप और माँ की ममता

सावन में कवि की बहन बड़े चाव से मायके आई है, लेकिन भाई के जेल में होने के कारण उसे पिता का घर दुखों का घर लग रहा है। कवि की माँ अनपढ़ और स्नेहमयी हैं, जिनकी गोद में सिर रखते ही कवि के सारे कष्ट मिट जाते हैं और जिनकी ममता का प्रसार जेल तक महसूस हो रहा है।

पिता का साहसी व्यक्तित्व और भावुकता

कवि के पिता बुढ़ापे से कोसों दूर, बेहद साहसी और कर्मठ हैं। वे नियमित रूप से सुबह गीता-पाठ, दंड-बैठक और मुगदर से व्यायाम करते हैं। परंतु व्यायाम के बाद जब वे नीचे आते हैं, तो अपने चारों बेटों-बहनों के बीच पाँचवें लाडले बेटे (कवि) को न पाकर उनकी आँखें आंसुओं से भर जाती हैं।

माँ द्वारा ढाँढस बंधाना

पिता को रोता देखकर देशप्रेमी माँ अपने दुखों को छिपाकर उन्हें सांत्वना देती हैं। वे कहती हैं कि भवानी वहाँ ठीक होगा और देश के स्वाधीनता आंदोलन के लिए जेल जाना तो उनके परिवार की गौरवशाली परंपरा ही है। वे पिता से धीरज न खोने का आग्रह करती हैं।

सावन को संदेशवाहक बनाना

कवि जेल की कोठरी से सावन के पवित्र और सजीले बादलों को संबोधित करते हुए उन्हें अपना दूत बनाते हैं। वे सावन से आग्रह करते हैं कि तुम चाहे जितना बरस लो, लेकिन मेरे माता-पिता की आँखों से अपने पाँचवें बेटे की याद में आँसू नहीं बरसने चाहिए।

जेल की असली पीड़ा को छिपाना

कवि सावन को सख्त हिदायत देते हैं कि वे घर जाकर परिजनों को केवल यह बताएं कि भवानी यहाँ पढ़ने-लिखने और गांधी जी के सूत कातने में व्यस्त व मस्त है। वे सावन से प्रार्थना करते हैं कि घर वालों से उनके अवसाद, अकेलेपन और रात भर जागने जैसी जेल की कड़वी सच्चाई को पूरी तरह गुप्त रखें ताकि उन्हें कोई शक न हो।

4. कठिन-शब्दार्थ, सप्रसंग व्याख्या

काव्यांश 1

आज पानी गिर रहा है,
बहुत पानी गिर रहा है,
रात-भर गिरता रहा है,
प्राण मन घिरता रहा है,
अब सवेरा हो गया है,

कब सवेरा हो गया है,
ठीक से मैंने न जाना,
बहुत सोकर सिर्फ़ माना—

कठिन-शब्दार्थ

1. प्राण मन घिरता रहा है – हृदय और मन में अपनों की यादों का छा जाना और व्याकुल होना।
2. सवेरा – सुबह।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। इसमें रात भर होने वाली मूसलाधार बारिश और कारावास में बंद कवि के मन में उमड़ने वाली घर की व्याकुल यादों का सजीव चित्रण किया गया है।

व्याख्या

कवि जेल की कोठरी से बाहर के वातावरण का वर्णन करते हुए कहते हैं कि आज बाहर बहुत तेज और मूसलाधार बारिश हो रही है। यह पानी केवल अभी नहीं, बल्कि पूरी रात लगातार बिना रुके गिरता रहा है। जैसे-जैसे बाहर पानी बरस रहा था, वैसे-वैसे मेरे प्राण और मेरा मन अपने प्यारे परिवार की यादों से घिरते जा रहे थे।

इस मानसिक संताप और अकेलेपन के कारण मुझे ठीक से पता ही नहीं चला कि रात कब बीत गई और कब सुबह हो गई। मैंने तो केवल बहुत देर तक लेटे रहने या सोने के बाद अपने मन में यह मान लिया कि अब सबेरा हो चुका है।

काव्यांश 2

क्योंकि बादल की अँधेरी,
है अभी तक भी घनेरी,
अभी तक चुपचाप है सब,
रातवाली छाप है सब,
गिर रहा पानी झरा-झर,
हिल रहे पत्ते हरा-हर,
बह रही है हवा सर-सर,
काँपते हैं प्राण थर-थर,

कठिन-शब्दार्थ

1. घनेरी – गाढ़ा, गुंजान, जिसके अवयव पास-पास सटे हों।
2. रातवाली छाप – रात के अंधकार और अकेलेपन का गहरा प्रभाव।
3. झरा-झर – लगातार तेज़ गति से पानी गिरने की ध्वनि।
4. हरा-हर – हवा के वेग से पत्तों के हिलने से उत्पन्न होने वाली आवाज़।
5. सर-सर – ठंडी हवा के चलने की सरसराहट।
6. थर-थर – अत्यधिक ठंड या मानसिक संताप के कारण होने वाली कँपकँपी।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। इसमें कवि ने सुबह के समय भी छाए बादलों के अंधकार, मूसलाधार बारिश और उस सीलन भरे माहौल में अपने प्राणों में होने वाली व्याकुलता का सजीव चित्रण किया है।

व्याख्या

कवि कारावास के एकांत वातावरण का वर्णन करते हुए कहते हैं कि सुबह होने के बावजूद आकाश में सावन के बादलों का जो अंधेरा है, वह अभी तक बहुत अधिक गाढ़ा और घना छाया हुआ है। जेल के भीतर और बाहर चारों ओर एक गहरी ख़ामोशी पसरी हुई है और हर चीज़ पर अभी भी रात के सूनेपन व अकेलेपन का गहरा प्रभाव जमा हुआ है।

वातावरण की ध्वन्यात्मकता को प्रकट करते हुए कवि आगे कहते हैं कि बाहर पानी लगातार तेज़ गति से झरा-झर बरस रहा है। तेज़ हवा के झोंकों के कारण पेड़ों के पत्ते आपस में टकराकर हरा-हर की आवाज़ करते हुए हिल रहे हैं और ठंडी हवा सर-सर की सरसराहट करती हुई बह रही है। इस अत्यधिक ठंडे, गीले और अपनों से दूर सूने माहौल में कवि के प्राण विरह की गहरी पीड़ा और संताप के कारण थर-थर काँप रहे हैं।

काव्यांश 3

बहुत पानी गिर रहा है,
घर नज़र में तिर रहा है,
घर कि मुझसे दूर है जो,
घर ख़ुशी का पूर है जो,
घर कि घर में चार भाई,
मायके में बहिन आई,
बहिन आई बाप के घर,
हाय रे परिताप के घर!

कठिन-शब्दार्थ

1. तिर रहा है – तैरना, उतराना, आँखों के सामने सजीव होकर घूमना।
2. पूर – पूर्ण, प्रचुरता, पूरी तरह भरा हुआ।
3. मायके – विवाहित स्त्री के माता-पिता का घर।
4. परिताप – अत्यधिक दुख, शोक, संताप।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। इसमें मूसलाधार बारिश के बीच कवि की आँखों के सामने साकार होने वाले उनके सुखी संयुक्त परिवार और जेल जाने के कारण बहन के लिए उस घर के 'दुःख का घर' बन जाने का मर्मस्पर्शी अंकन है।

व्याख्या

कवि कारावास की कोठरी से बाहर बरसते पानी को देखकर अत्यंत भावुक उठते हैं। वे कहते हैं कि बाहर बहुत तेज़ी से लगातार पानी गिर रहा है। इस मूसलाधार वर्षा के बीच मेरा प्यारा घर और उसके सदस्य मेरी आँखों के सामने तैरते हुए दिखाई दे रहे हैं। वह घर जो दुर्भाग्यवश आज मेरी राजनैतिक विवशता के कारण मुझसे बहुत दूर है, वह वास्तव में खुशियों से पूरी तरह भरा हुआ एक पावन केंद्र है।

कवि अपने भाई-बहनों को याद करते हुए आगे कहते हैं कि मेरे उस प्यारे घर में मेरे चार कर्मठ भाई एक साथ रहते हैं। सावन के इस पवित्र महीने में मेरी विवाहित बहन भी त्योहार मनाने और अपनों से मिलने मायके आई होगी। वह बहन अपने पिता के घर बहुत चाव, उमंग और खुशियाँ मनाने आई होगी। परंतु, जैसे ही उसे घर आकर यह पता चला होगा कि उसका पाँचवां भाई देश की आज़ादी के लिए जेल में बंद है, तो खुशियों का वह घर पल भर में उसके लिए अत्यधिक दु:ख, शोक और संताप का घर बन गया होगा।

काव्यांश 4

आज का दिन दिन नहीं है,
क्योंकि इसका छिन नहीं है,
एक छिन सौ बरस है रे,
हाय कैसा तरस है रे,
घर कि घर में सब जुड़े हैं,
सब कि इतने तब जुड़े हैं,
चार भाई चार बहिनें,
भुजा भाई प्यार बहिनें,

कठिन-शब्दार्थ

1. छिन – क्षण, पल का समय।
2. तरस – बेचैनी, तड़प या कष्ट पाना।
3. जुड़े हैं – आपस में गहरे प्रेम और स्नेह के संबंध से बंधे होना।
4. भुजा भाई – भाई कर्मठता, शक्ति और सहायता के प्रतीक (बाँहों के समान)।
5. प्यार बहिनें – बहनें स्नेह, वात्सल्य और निश्छल प्रेम का साक्षात् रूप हैं।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। इसमें कवि ने कारावास के सूनेपन में समय काटने की अत्यंत धीमी व कष्टदायी गति तथा अपने भाई-बहनों के अटूट और गहरे आपसी स्नेह का बहुत ही भावुक चित्रण किया है।

व्याख्या

कवि अपनी मानसिक व्याकुलता को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि जेल में एकांत और उदासी के कारण मेरे लिए आज का यह दिन एक सामान्य दिन की तरह नहीं बीत रहा है, क्योंकि यहाँ समय मानो पूरी तरह ठहर गया है और इसका एक-एक पल काटे नहीं कट रहा है। परिवार के वियोग के कारण यहाँ बिताया जाने वाला एक छोटा सा पल भी मेरे लिए सौ वर्षों के लंबे और कभी न खत्म होने वाले समय जैसा कष्टदायी लग रहा है। हाय! अपनों से मिलने और स्वतंत्र होने के लिए मेरा यह मन अंदर तक कितनी गहरी बेचैनी और तड़प का अनुभव कर रहा है।

कवि आगे अपने आदर्श संयुक्त परिवार को याद करते हुए कहते हैं कि मेरा घर भावनाओं का केंद्र है जहाँ सभी सदस्य आपस में गहरे स्नेह की डोर से पूरी तरह जुड़े हुए हैं। आज के इस स्वार्थी और बिखरते संसार में आपस में इतना गहरा जुड़ाव और निश्छल प्यार भला कहाँ देखने को मिलता है! मेरे घर में हम चार भाई और चार बहनें हैं। मेरे चारों भाई मेरे लिए मज़बूत भुजाओं के समान हैं, जो हमेशा रक्षा, सहयोग और कर्मठता के लिए तत्पर रहते हैं, और मेरी चारों बहनें साक्षात् प्रेम, स्नेह और सहृदयता की प्रतिमूर्ति हैं।

काव्यांश 5

और माँ बिन-पढ़ी मेरी,
दु:ख में वह गढ़ी मेरी,
माँ कि जिसकी गोद में सिर,
रख लिया तो दुख नहीं फिर,
माँ कि जिसकी स्नेह-धारा
का यहाँ तक भी पसारा,
उसे लिखना नहीं आता,
जो कि उसका पत्र पाता।

कठिन-शब्दार्थ

1. बिन-पढ़ी – अनपढ़, निरक्षर।
2. गढ़ी – डूबी हुई, समाई हुई।
3. स्नेह-धारा – प्रेम और वात्सल्य की निरंतर बहती हुई नदी।
4. पसारा – फैलाव, विस्तार।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। इसमें कवि ने अपनी ममतामयी, अनपढ़ माँ के अपार वात्सल्य तथा जेल में उनके पत्र न मिल पाने की मानसिक टीस का मर्मस्पर्शी वर्णन किया है।

व्याख्या

कवि अपनी माँ को याद करते हुए अत्यंत भावुक होकर कहते हैं कि मेरी माँ पढ़ी-लिखी नहीं है, वह निरक्षर है। लेकिन वह अपने इस पाँचवें बेटे के जेल चले जाने के कारण घर पर दिन-रात रोती हुई गहरे दु:ख में डूबी हुई होगी। मेरी माँ साक्षात् ममता की मूरत है, जिनकी कोमल गोद में यदि

इसी बीच, अब बाहर का पानी कुछ पल के लिए थम गया है, लेकिन अपनों से दूर रहने के इस अकेलेपन के कारण जेल के भीतर मेरा यह मन अत्यधिक भावुक और नम हो चुका है। बाहर का पानी तो रुक गया, पर मेरे मन के आँसू नहीं थमे। आकाश में एक समान काले-काले बादल पूरी तरह जमे हुए हैं और वे पूरे आकाश में इस प्रकार फैलकर रमे हुए हैं कि सूर्य की किरणें भी गायब हो गई हैं।

काव्यांश 16

ढेर है उनका, न फाँकें,
जो कि किरने झुकें-झाँकें,
लग रहे हैं वे मुझे यों,
माँ कि आँगन लीप दे ज्यों,
गगन-आँगन की लुनाई,
दिशा के मन से समाई,
दश-दिशा चुपचार है रे,
स्वस्थ की छाप है रे,

कठिन-शब्दार्थ

1. फाँकें – खाली जगह या दरारें।
2. लुनाई – सुंदरता, सलोनापन।
3. दश-दिशा – दसों दिशाएँ।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। इसमें बादलों से घिरे आकाश की सुंदरता की तुलना माँ द्वारा लीपे गए आँगन से करने और पूरे वातावरण पर छाई गहरी खामोशी का अत्यंत सूक्ष्म व कलात्मक अंकन है।

व्याख्या

कवि कहते हैं कि पूरे आकाश में बादलों का ऐसा विशाल ढेर फैला और जमा हुआ है कि उनमें कोई खाली जगह नहीं बची है जहाँ से सूर्य की किरणें नीचे की ओर झुककर झाँक सकें। आकाश में छाए वे मटमैले और घने बादल मुझे ऐसे लग रहे हैं, मानो मेरी प्यारी माँ ने पूरे आँगन को मिट्टी और गोबर से बहुत ही सुंदर तरीके से लीप दिया हो।

आकाश रूपी आँगन की वह सावन की सुंदरता दुःख के कारण दसों दिशाओं के मन में समा गई होगी, जिससे चारों तरफ उदासी फैल गई। प्रकृति और दसों दिशाएँ पूरी तरह चुपचाप और मौन हो गई थीं, जिन पर जेल की नीरस शांति की गहरी छाप दिखाई दे रही थी।

काव्यांश 17

झाड़ आँखें बंद करके,
साँस सुस्थिर मंद करके,
हिले बिन चुपके खड़े हैं,
क्षितिज पर जैसे जड़े हैं,
एक पंछी बोलता है,
घाव उर के खोलता है,
आदमी के उर बिचारे,
किस लिए इतनी तृषा रे,

कठिन-शब्दार्थ

1. झाड़ – आँखों को पोंछकर या साफ करके।
2. सुस्थिर – पूरी तरह स्थिर, शांत।
3. जड़े हैं – स्थिर या मूर्तिवत खड़े होना।
4. उर – हृदय, मन।
5. तृषा – तीव्र इच्छा, अभिलाषा, सांसारिक मोह या प्यास।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। इसमें जेल के एकांत वातावरण में पिता जी की शांत स्थिति की कल्पना और एक पक्षी की आवाज़ से कवि के हृदय में उठने वाली दार्शनिक वेदना का वर्णन है।

व्याख्या

पिता जी अपनी आँखों को पोंछकर और आँखें बंद करके, अपनी साँसों को सुस्थिर और मंद करके बिलकुल शांत खड़े हो गए होंगे। वे बिना हिले-डुले मानो क्षितिज पर किसी मूर्ति की तरह जड़ होकर खड़े होंगे। इसी बीच जेल की कालकोठरी में जब अचानक बाहर कोई पक्षी बोलता है, तो उसकी वह कूक मेरे हृदय के पुराने ज़ख्मों और यादों के घाव को फिर से हरा देती है।

कवि मनुष्य के जीवन पर चिंतन करते हुए कहते हैं कि इस बेचारे मानव के हृदय में न जाने किसलिए इतनी तीव्र इच्छाएँ, अभिलाषाएँ और सांसारिक मोह की प्यास भरी हुई है! इंसान इस छोटे से जीवन में थोड़े से सुख के लिए न जाने कितना सारा दुःख सहता रहता है और इच्छाओं के जाल में फंसा रहता है।

काव्यांश 18

तू ज़रा-सा दुःख कितना,
सह सकेगा क्या कि इतना,
और इस पर बस नहीं है,
बस बिना कुछ रस नहीं है,
हवा आई उड़ चला तू,
लहर आई मुड़ चला तू,
लगा झटका टूट बैठा,
गिरा नीचे फूट बैठा,

कठिन-शब्दार्थ

1. बस – विवशता, लाचारी या वश न चलना।
2. रस – आनंद, जीवन का सुख।

काव्यांश 8

जब कि नीचे आए होंगे
नैन जल से छाए होंगे,
हाय, पानी गिर रहा है,
घर नज़र में तिर रहा है,
चार भाई चार बहिनें,
भुजा भाई प्यार बहिनें,
खेलते या खड़े होंगे,
नज़र उनकी पड़े होंगे।

कठिन-शब्दार्थ

1. नैन जल – आँखों में आँसू, नेत्रों का पानी।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। इसमें कसरत के बाद नीचे आए पिता जी द्वारा अपने लाडले पाँचवें बेटे को न पाकर अत्यंत भावुक होकर रो पड़ने और भाई-बहनों के आपसी प्रेम का मर्मस्पर्शी वर्णन है।

व्याख्या

कवि अत्यंत भावुक होकर कहते हैं कि छत पर कसरत पूरी करने के बाद जब मेरे वे बहादुर पिता जी नीचे घर के आँगन में आए होंगे, तो अपने बाकी बच्चों के बीच अपने पाँचवें लाडले बेटे को वहाँ न पाकर उनकी आँखें निश्चित ही आँसुओं से पूरी तरह भर गई होंगी। कवि जेल में दुखी होकर कहते हैं कि बाहर लगातार मूसलाधार पानी बरस रहा है और यहाँ मेरी आँखों के सामने मेरा पूरा घर बार-बार तैर रहा है।

वहाँ आँगन में मेरे चार भाई और चार बहनें खड़े होंगे। मेरे चारों भाई मेरे लिए मज़बूत भुजाओं के समान हैं और मेरी चारों बहनें साक्षात् प्रेम की प्रतिमूर्ति हैं। वे सब आँगन में खेल रहे होंगे या आपस में बातचीत करते हुए खड़े होंगे और पिता जी की नजरें जैसे ही उन पर पड़ी होंगी, उन्हें मेरी अनुपस्थिति बहुत गहराई से महसूस हुई होगी।

काव्यांश 9

पिताजी जिनको बुढ़ापा,
एक क्षण भी नहीं व्यापा,
रो पड़े होंगे बराबर,
पाँचवें का नाम लेकर,
पाँचवाँ मैं हूँ अभागा,
जिसे सोने पर सुहागा,
पिताजी कहते रहे हैं,
प्यार में बहते रहे हैं,

कठिन-शब्दार्थ

1. अभागा – भाग्यहीन, जिसका भाग्य साथ न दे।
2. सोने पर सुहागा – सब भाइयों में सबसे अधिक प्रिय, श्रेष्ठ या उत्तम होना।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। इसमें पिता जी द्वारा अपने पाँचवें बेटे को याद करके रो पड़ने और उनके प्रति पिता जी के अगाध स्नेह का कारुणिक अंकन है।

व्याख्या

कवि कहते हैं कि मेरे वे पिता जी जिन पर बुढ़ापे का कोई असर नहीं था, जो हमेशा युवाओं की तरह ऊर्जावान रहते थे, वे भी आज अपनी भावनाओं पर नियंत्रण नहीं रख पाए होंगे। वे अपने बाकी बच्चों के बीच अपने पाँचवें बेटे का नाम लेकर फूट-फूटकर रो पड़े होंगे।

कवि अत्यंत दुखी होकर स्वयं को कोसते हुए कहते हैं कि वह पाँचवाँ बेटा मैं ही हूँ, जो कितना भाग्यहीन हूँ कि आज इस संकट के समय उनसे दूर इस जेल की कोठरी में बंद बैठा हूँ। मेरे पिता जी मुझे अपने सब बच्चों में सबसे अधिक प्यार करते थे और मुझे हमेशा 'सोने पर सुहागा' यानी सबसे श्रेष्ठ और प्रिय कहते थे। वे मुझे याद करके हमेशा अत्यधिक भावुक हो जाते थे और उनके हृदय से मेरे लिए प्यार की नदी बहने लगती थी।

काव्यांश 10

आज उनके स्वर्ण बेटे,
लगे होंगे उन्हें हेटे,
क्योंकि मैं उन पर सुहागा
बँधा बैठा हूँ अभागा,
और माँ ने कहा होगा,
दुःख कितना बहा होगा
आँख में किस लिए पानी,
वहाँ अच्छा है भवानी,

कठिन-शब्दार्थ

1. स्वर्ण बेटे – सोने के समान मूल्यवान और गुणी पुत्र।
2. हेटे – हीन, छोटे, कम मूल्यवान या गौण।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। इसमें कवि के जेल में बंद होने के कारण पिता जी के दुःख और उन्हें धीरज बँधाने के लिए माँ के आगे आने का कारुणिक वर्णन है।

व्याख्या

कवि कहते हैं कि आज घर पर उपस्थित उनके बाकी चारों गुणी और सोने के समान मूल्यवान बेटे भी पिता जी को मेरी अनुपस्थिति में कम मूल्यवान या तुच्छ लगे होंगे। क्योंकि उनका वह लाडला बेटा, जिसे वे सोने पर सुहागा मानते थे, आज यहाँ जेल की बेड़ियों में अभागा बनकर बंधा बैठा है।

(ग) रानी ने झाँसी में विद्यालय खोलकर नारी-शिक्षा का प्रसार किया था

(घ) रानी ने अंग्रेजों को यह सिखाया कि भारत पर शासन करना कठिन है

उत्तरः

1. (क) रानी के तेजस्वी व्यक्तित्व का तेज दिव्य तेज में विलीन हो गया
2. (घ) कथन I और II दोनों सही हैं।
3. (ख) रानी ने मृतप्राय राष्ट्रीय चेतना और स्वाभिमान को पुनर्जीवित किया
4. (ग) रानी ईश्वरीय शक्ति-संपन्न, असाधारण और दिव्य व्यक्तित्व की थीं
5. (क) रानी ने भावी पीढ़ियों को स्वतंत्रता, त्याग और वीरता का मार्ग दिखाया

कठिन-शब्दार्थ

1. बाड़े – घर का घेरदार अहाता या खेतों का हिस्सा।
2. बेला – मोगरा का फूल।
3. फलानी – अमुक, कोई निश्चित वस्तु या पौधा।
4. झेला – धारण किया या खिला।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। इसमें कवि ने सावन की इस वर्षा में अपने पिता जी के प्रकृति-प्रेमी स्वभाव, उनकी कृषि-गतिविधियों और माँ के साथ उनके संवाद की पुरानी मधुर स्मृतियों को याद किया है।

व्याख्या

कवि अतीत की स्मृतियों में डूबकर कहते हैं कि पिता जी को याद आ रहा होगा कि कैसे भवानी बरसात के मौसम में खुले सिर और नंगे बदन खेतों व आँगन में अपनी ही मस्ती में मग्न होकर घूमता फिरता था। वह घर के बड़े से बाड़े में जाता था और बड़े चाव से वहाँ मिट्टी में लौकी के बीज लगाया करता था।

वे पौधों से कितना प्यार करते थे। पिता जी माँ को याद दिलाते होंगे कि कैसे भवानी पौधों को देखकर कहता था कि 'देखो माँ, आज इस अमुक बेला की लता पर कितना सुंदर फूल खिला है'। पिता जी माँ से भावुक होकर कहते होंगे कि 'हे भवानी की माँ! यदि आज वह जेल न गया होता, तो तू भी उसके साथ इसी आँगन में टहलती और वह तुझे ये फूल दिखाता।' आज घर से दूर इस जेल में मुझे पिता जी का वही रूप और उनकी बातें बहुत याद आ रही हैं।

काव्यांश 14

मैं न रोऊँगा,—कहा होगा,
और फिर पानी बहा होगा,
दृश्य उसके बाद का रे,
पाँचवे की याद का रे,
भाई पागल, बहिन पागल,
और अम्मा ठीक बादल,
और भौजी और सरला,,
सहज पानी, सहज तरला,

कठिन-शब्दार्थ

1. पागल – वियोग के दुःख में अत्यधिक व्याकुल या बेहाल हो जाना।
2. सहज तरला – अत्यंत सरल, शांत और कोमल स्वभाव वाली।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। इसमें अपने पाँचवें बेटे की याद में पिता जी की आँखों से बहने वाले आंसुओं और घर के बाकी सदस्यों—भाइयों, बहनों, माँ और भाभियों के भीतर उठने वाली गहरी छटपटाहट का अंकन है।

व्याख्या

कवि कहते हैं कि पिता जी ने भले ही मुँह से मजबूत बनकर कह दिया हो कि 'मैं अपने बेटे के लिए कभी नहीं रोऊँगा', परंतु ऐसा कहते ही उनकी आँखों से आंसुओं का पानी फिर उमड़कर बह निकला होगा। वे अपने आंसुओं को रोक नहीं पाए होंगे। उसके बाद का जो दृश्य रहा होगा, वह अपने इस पाँचवें बेटे के गहरे वियोग और याद से भरा हुआ अत्यंत कारुणिक दृश्य था।

मेरे वियोग में मेरे चारों भाई और चारों बहनें दुःख से बेहाल हो रहे होंगे। मेरी माँ का हृदय तो आकाश में बरसते बादलों की तरह ही आंसुओं की निरंतर वर्षा कर रहा होगा। घर में मेरी भाभियाँ और मेरी छोटी बहन 'सरला', जो बहुत ही कोमल और सरल स्वभाव की हैं, वे सब भी बहुत रोई होंगी और व्याकुल हुई होंगी।

काव्यांश 15

शर्म से रो भी न पाएँ,
ख़ूब भीतर छटपटाएँ,
आज ऐसा कुछ हुआ होगा,
आज सबका मन चुआ होगा।
अभी पानी थम गया है,
मन निहायत नम गया है,
एक-से बादल जमे हैं,
गगन-भर फैले रमे हैं,

कठिन-शब्दार्थ

1. चुआ होगा – आँखों से आँसू टपकना या पिघलना।
2. निहायत – बहुत ज्यादा, अत्यधिक।
3. नम गया है – भावुक हो जाना, आर्द्र होना।
4. रमे हैं – पूरी तरह फैले या लीन होना।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। इसमें परिवार के सदस्यों के रोने की विकट स्थिति और जेल के बाहर बारिश थमने पर कवि के मन के अत्यधिक भावुक होने का सुंदर चित्रण है।

व्याख्या

कवि कहते हैं कि घर के बड़ों और पिता जी के सामने मेरी भाभियाँ और बहनें लोक-लाज व शर्म के कारण खुलकर रो भी नहीं पा रही होंगी, लेकिन अपने इस भाई की याद में उनके भीतर का मन बुरी तरह छटपटा रहा होगा। कवि कहते हैं कि आज मेरे घर में ऐसा ही दुःखद माहौल रहा होगा और आज सबका मन पिघलकर आँखों के रास्ते बह निकला होगा।

अपने पति को इस तरह व्याकुल देखकर मेरी स्नेहमयी माँ का हृदय भी दुःख से भर गया होगा और उनका दर्द आँसुओं के रूप में बह निकला होगा। फिर भी उन्होंने अपने कष्ट को दबाकर पिता जी को सांत्वना दी होगी और उनके आँसू पोंछते हुए कहा होगा कि आपकी आँख में किसलिए पानी आ रहा है? हमारा भवानी वहाँ जेल में बहुत अच्छे से और सुरक्षित होगा, आप चिंता मत कीजिए।

काव्यांश 11

वह तुम्हारा मन समझ कर,
और अपनापन समझ कर,
गया है सो ठीक ही है,
यह तुम्हारी लीक ही है,
पाँव जो पीछे हटाता,
कोख को मेरी लजाता,
इस तरह होओ न कच्चे,
रो पड़ेंगे और बच्चे,

कठिन-शब्दार्थ

1. लीक – परंपरा, कुल की मर्यादा या सही रास्ता।
2. कोख को लजाता – अपनी जन्म देने वाली माँ का नाम बदनाम करना।
3. होओ न कच्चे – मन को कमज़ोर न करना, भावुक होकर धैर्य न खोना।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। इसमें माँ द्वारा पिता जी को यह समझाकर कुल की वीर परंपरा का स्मरण कराने का ओजपूर्ण अंकन है कि भवानी ने जेल जाकर सच्चे देशप्रेम का ही परिचय दिया है।

व्याख्या

माँ पिता जी को समझाते हुए कहती हैं कि भवानी कोई गलत काम करके जेल नहीं गया है; वह तो आपके ही देशभक्ति के विचारों को समझकर और आपके दिए गए उच्च संस्कारों व अपनापन की सच्ची भावना को स्वीकार करके ही तो जेल गया है। इसलिए उसका यह कदम बिल्कुल सही और ठीक ही है। देश की रक्षा के लिए कारावास जाना तो हमारे परिवार और आपके कुल की महान परंपरा ही है।

यदि वह आज संघर्ष से डरकर अपने कदम पीछे हटा लेता, तो वह एक कायर की तरह व्यवहार करता और मेरी कोख को कलंकित देता। उसने एक वीर पुत्र की तरह काम किया है। इसलिए आप इस तरह अपने मन को कमज़ोर मत कीजिए, क्योंकि अगर घर के मुखिया होकर आप ही इस तरह रो पड़ेंगे, तो आपको देखकर घर के बाकी बच्चे भी रोने लगेंगे और सबका हौसला टूट जाएगा।

काव्यांश 12

पिताजी ने कहा होगा,
हाय कितना saha होगा,
कहाँ, मैं रोता कहाँ हूँ,
धीर मैं खोता, कहाँ हूँ,
गिर रहा है आज पानी,
याद आता है भवानी,
उसे थी बरसात प्यारी,
रात-दिन की झड़ी झारी,

कठिन-शब्दार्थ

1. धीर – धैर्य, गंभीर मन।
2. झड़ी झारी – लगातार बिना रुके होने वाली वर्षा का सिलसिला।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। इसमें माँ की सीख पर पिता जी द्वारा अपने भारी कष्ट को दबाते हुए स्वयं को न रोने की बात कहने और कवि को पुरानी बरसातों की याद आने का वर्णन है।

व्याख्या

कवि भावुक होकर कहते हैं कि माँ की यह बात सुनकर मेरे वीर पिता जी ने अंदर से तड़पते हुए मुँह से कुछ कहा होगा। हाय! उस क्षण अपनी आँखों के आँसू रोकने और स्वयं को मजबूत दिखाने में मेरे पिता जी ने अपने दिल पर कितना भारी पत्थर रखा होगा और कितना असहनीय दर्द सहा होगा! उन्होंने अपनी भर्राई हुई आवाज़ को सँभालते हुए माँ से कहा होगा—"अरे, तुम ऐसा क्यों कहती हो? मैं कहाँ रो रहा हूँ! मैं अपना धैर्य भला कहाँ खो रहा हूँ, मैं तो बिल्कुल ठीक हूँ।"

जेल में बैठे कवि कहते हैं कि बाहर आज बहुत पानी गिर रहा है और इस सुहावने मौसम में मुझे मेरे पिता जी और घर की याद सता रही है। मुझे याद आ रहा है कि भवानी (कवि स्वयं) को यह बरसात का मौसम कितना प्यारा लगता था, जब रात-दिन लगातार वर्षा की झड़ी लगी रहती थी, तब हमारा पूरा घर खुशियों से भर जाता था।

काव्यांश 13

खुले सिर नंगे बदन वह,
घूमता फिरता मगन वह,
बड़े बाड़े में कि जाता,
बीज लौकी का लगाता,
तुझे बतलाता कि बेला
ने फलानी फूल झेला,
तू कि उसके साथ जाती,
आज इससे याद आती,

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। इसमें कवि अपने चंचल मन की दशा की तुलना हवा के झोंकों और लहरों से करते हुए जीवन की विवशताओं और आंतरिक टूटन का सुंदर अंकन कर रहे हैं।

व्याख्या

कवि अपने मन से पूछते हैं कि तू इस ज़रा से जीवन में अपनों से दूर होने का इतना बड़ा दुःख भला कैसे सह सकेगा? सबसे बड़ी विडंबना तो यह है कि मनुष्य का इन परिस्थितियों और समय के चक्र पर कोई नियंत्रण नहीं है। अपनों से दूर रहने की इस लाचारी के कारण जीवन में कोई आनंद और रस बाकी नहीं रह गया है, जिसके कारण जेल का सारा जीवन नीरस हो चुका है।

जैसे ही स्मृतियों की हवा आती है, तू कल्पनाओं में उड़ जाता है और जैसे ही कोई भावों की लहर आती है, तू उसी ओर मुड़ जाता है। जब जेल की कड़वी सच्चाई का झटका लगता है, तो तू अंदर से पूरी तरह टूट जाता है और निराशा में डूबकर नीचे गिरकर फूट-फूटकर रोने लगता है।

काव्यांश 19

तू कि प्रिय से दूर होकर,
बह चला रे पूर होकर
दुःख भर क्या पास तेरे,
अश्रु सिंचित हास तेरे!
पिताजी का वेश मुझको,
दे रहा है क्लेश मुझको,
देह एक पहाड़ जैसे,
मन कि बड़ का झाड़ जैसे

कठिन-शब्दार्थ

1. पूर होकर – उमड़कर, आंसुओं से सराबोर होकर।
2. अश्रु सिंचित – आँसुओं से भीगा हुआ।
3. क्लेश – दुख, पीड़ा।
4. बड़ का झाड़ – बरगद, वट का विशाल वृक्ष।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। इसमें कवि अपने वियोग के कारण पिता जी के गंभीर रूप को याद कर दुखी हो रहे हैं और उनके पहाड़ जैसे मज़बूत शरीर व बरगद जैसे विशाल हृदय का स्मरण कर रहे हैं।

व्याख्या

कवि अपने मन की व्यथा को कहते हैं कि तू अपने प्रिय परिवार से दूर होकर दुःख की इस नदी में पूरी तरह उमड़कर (पूर होकर) बह रहा है। आज मेरी हँसी भी आंतरिक पीड़ा और आंसुओं से पूरी तरह भीगी हुई प्रतीत हो रही है। जेल में बैठे-बैठे मुझे पिता जी का वह रूप बार-बार याद आ रहा है, जो मुझे अपनों से दूर होने की बहुत गहरी मानसिक पीड़ा और दुःख दे रहा है।

मेरे पिता जी का शरीर बाहर से किसी ऊंचे और सुदृढ़ पहाड़ जैसा मज़बूत दिखाई देता है, लेकिन उनका मन अंदर से बरगद के विशाल पेड़ जैसा है, जो अपनी घनी छाँव में पूरे परिवार को हमेशा समेटे रखता है और सबको सुरक्षा प्रदान करता है।

काव्यांश 20

एक पत्ता टूट जाए,
बस कि धारा फूट जाए,
एक हल्की चोट लग ले,
दूध की नद्दी उमग ले,
एक टहनी कम न होले,
कम कहाँ कि ख़म न होले,
ध्यान कितना फ़िक्र कितनी,
डाल जितनी जड़ें उतनी!

कठिन-शब्दार्थ

1. उमग – उल्लास, मौज, जोश, आकांक्षा।
2. ख़म – झुका हुआ, टेढ़ा, वक्र।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। इसमें कवि ने बरगद के वृक्ष के प्रतीक से पिता जी की बच्चों के प्रति गहरी फिक्र, उनके वात्सल्य और सुरक्षा की भावना को बहुत ही मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है।

व्याख्या

कवि बरगद के प्रतीक को आगे बढ़ाते हुए कहते हैं कि जैसे बरगद के पेड़ से एक भी पत्ता टूट जाए या उसकी टहनी पर हल्की सी चोट लग जाए, तो उसमें से सफ़ेद दूध की धारा फूट पड़ती है; ठीक उसी प्रकार यदि परिवार के किसी भी बच्चे पर कोई हल्की सी विपत्ति आ जाए, तो मेरे पिता जी के कोमल हृदय से ममता और आंसुओं की नदी उमड़ पड़ती है।

पिता जी को हमेशा यही फिक्र रहती थी कि उनके परिवार रूपी वृक्ष की कोई भी टहनी कम न हो जाए, या वह दुःख से झुक न जाए। उन्हें अपने सभी बच्चों का कितना अधिक ध्यान और फिक्र रहती थी। हमारा परिवार ऐसा है कि इसकी शाखाएँ जितनी फैली हुई हैं, पिता जी के संस्कारों की जड़ें भी उतनी ही गहरी और मज़बूत हैं।

5. **माँ की छवि**: बादलों को देखकर कवि को ऐसा लगता है — "माँ कि आँगन लीप दे ज्यों" — बादल माँ की ममता का प्रतीक बन जाते हैं।

4. कविता से उन पंक्तियों को चुनकर लिखिए और भाव स्पष्ट कीजिए जिनसे माँ की भावनात्मक मजबूती का परिचय मिलता है।

उत्तरः
माँ की भावनात्मक मजबूती को प्रकट करने वाली पंक्तियाँ और उनके भाव:

"और माँ ने कहा होगा, दुख कितना बहा होगा
आँख में किसलिए पानी, वहाँ अच्छा है भवानी,
वह तुम्हारा मन समझकर, और अपनापन समझकर,
गया है सो ठीक ही है, यह तुम्हारी लीक ही है,
पाँव जो पीछे हटाता, कोख को मेरी लजाता,
इस तरह होओ न कच्चे, रो पड़ेंगे और बच्चे।"

भाव: माँ भीतर से टूटी हुई है — "दुख कितना बहा होगा" — परन्तु वह अपने आँसू पोंछकर परिवार को धैर्य देती है। वह कहती है कि भवानी ने जो किया वह उसकी प्रकृति के अनुरुप है। यदि वह पीछे हटता तो उसकी माँ की कोख लज्जित होती। माँ का यह कहना उसकी असाधारण भावनात्मक दृढ़ता का परिचायक है — वह व्यक्तिगत दुख से ऊपर उठकर राष्ट्रीय कर्तव्य को महत्त्व देती है।

5. कविता का कौन-सा अंश आपको सबसे अधिक भावनात्मक और प्रभावी लगता है और क्यों?

उत्तरः
कविता का वह अंश जो सबसे अधिक भावनात्मक और प्रभावी लगता है, वह है माँ के विषय में कवि की ये पंक्तियाँ:

"और माँ बिन-पढ़ी मेरी, दुख में वह गढ़ी मेरी,
माँ कि जिसकी गोद में सिर, रख लिया तो दुख नहीं फिर,
माँ कि जिसकी स्नेह-धारा, का यहाँ तक भी पसारा,
उसे लिखना नहीं आता, जो कि उसका पत्र पाता।"

यह अंश इसलिए सबसे अधिक प्रभावी है क्योंकि इसमें एक साथ कई मार्मिक भाव हैं — माँ की अशिक्षा, उसका दुख में गढ़ा जाना, उसकी ममता का असीम विस्तार और यह करुण तथ्य कि वह चाहकर भी अपने बेटे को पत्र नहीं लिख सकती। यह माँ और पुत्र के बीच की दूरी को और अधिक पीड़ादायक बना देता है।

विधा से संवाद

कविता का सौंदर्य

1. " गिर रहा पानी झरा-झर, हिल रहे पत्ते हरा-हर,
बह रही है हवा सर-सर, काँपते हैं प्राण थर-थर"

उपर्युक्त पंक्तियों में रेखांकित शब्दों को ध्यानपूर्वक पढ़िए। यहाँ शब्दों का चयन और संयोजन इस प्रकार किया गया है कि कविता में ध्वन्यात्मकता और नाद सौंदर्य की सृष्टि हुई है। शब्दों के ऐसे प्रयोग से कविता आकर्षक बनती है। कविता में ऐसी अनेक विशेषताएँ हैं जो इसे जीवंत और प्रभावपूर्ण बनाती हैं। ऐसी कुछ विशेषताओं की सूची नीचे दी गई है। कविता से ऐसी विशेषताओं वाली पंक्तियों को ढूँढ़कर लिखिए।

विशेषताएँ
- स्मृति और दृश्य बिंब
- लोकभाषा की सहजता
- पंक्तियों का दोहराव
- अलंकारिक प्रयोग
- प्राकृतिक दृश्यों और भावों का संयोग
- संबोधनात्मकता

उत्तरः

	से पंक्तियाँ
स्मृति और दृश्य बिंब	"खुले सिर नंगे बदन वह, घूमता फिरता मगन वह, बड़े बाड़े में कि जाता, बीज लौकी का लगाता" — पिताजी की बाग में काम करने की स्मृति का सजीव दृश्य।
लोकभाषा की सहजता	"एक छिन सौ बरस है रे", "हाय कैसा तरस है रे", "भुजा भाई प्यार बहिनें" — बोलचाल के सहज शब्दों का प्रयोग।
पंक्तियों का दोहराव	"बहुत पानी गिर रहा है, घर नजर में तिर रहा है" — यह पंक्ति कविता में बार-बार आती है और विरह-भाव को गहरा करती है।
आलंकारिक प्रयोग	"वज्र-भुज नवनीत-सा उर" — उपमा अलंकार; "देह एक पहाड़ जैसे, मन कि बड़ का झाड़ जैसे" — उपमा।
प्राकृतिक दृश्यों और भावों का संयोजन	"गिर रहा पानी झरा-झर, हिल रहे पत्ते हरा-हर, बह रही है हवा सर-सर, काँपते हैं प्राण थर-थर" — प्रकृति के दृश्य और कवि के काँपते प्राण एक साथ।
संबोधनात्मकता	"हे सजीले हरे सावन, हे कि मेरे पुण्य पावन" — सावन को सीधे संबोधित करना।

कविता की संरचना

1. 'घर की याद' कवि के भीतर उठते भावों की यात्रा है। कविता में प्रकृति के माध्यम से व्यक्त इस यात्रा के प्रमुख चरणों का वर्णन करें।
(संकेत– पानी का गिरना, सबेरा होना)

व्याख्या
कवि संदेशवाहक से कहते हैं कि तुम मेरे पिता जी से जाकर कहना कि मैं जेल में भी लगातार काम करता हूँ और यहाँ रहकर भी अपने देश व परिवार का नाम रोशन कर रहा हूँ। यहाँ जेल के सभी लोग मुझे बहुत चाहते हैं और मेरा आदर करते हैं, इसलिए आप मेरी चिंता में कोई दुःख मत कीजिए।

तुम उनसे यह भी कहना कि मैं यहाँ पूरी तरह मस्त और आनंद में हूँ। मैं पूज्य गांधी जी के मार्ग पर चलते हुए रोज़ चरखे पर सूत कातने के काम में पूरी तरह व्यस्त रहता हूँ। मेरा स्वास्थ्य यहाँ बहुत अच्छा है, मेरा वजन बढ़कर पूरे सत्तर सेर हो गया है और मैं यहाँ रोज़ ढेर सारा भोजन मजे से खाता हूँ, इसलिए आप मेरी तरफ से पूरी तरह निश्चिंत रहिए।

काव्यांश 24
कूदता हूँ, खेलता हूँ,
दुःख डट कर ठेलता हूँ,
और कहना मस्त हूँ मैं,
यों न कहना अस्त हूँ मैं,
हाय रे, ऐसा न कहना,
है कि जो वैसा न कहना,
कह न देना जागता हूँ,
आदमी से भागता हूँ,

कठिन-शब्दार्थ
1. ठेलता हूँ – दूर भगाना, डटकर मुकाबला करना।
2. अस्त हूँ – निराश होना, पूरी तरह टूट जाना या तेजहीन होना।

प्रसंग
प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। इसमें कवि सावन के माध्यम से अपने माता-पिता को सांत्वना देने के लिए अपनी कृत्रिम प्रसन्नता का संदेश भेज रहे हैं और वास्तविक मानसिक पीड़ा को छिपाने का कड़ा आग्रह कर रहे हैं।

व्याख्या
कवि सावन से कहते हैं कि तुम मेरे माता-पिता से जाकर कहना कि मैं जेल में खूब खेलता-कूदता हूँ और अपने जीवन में आने वाले सभी दुखों का डटकर मुकाबला करते हुए उन्हें दूर भगा देता हूँ। तुम उनसे यही कहना कि मैं यहाँ पूरी तरह मस्ती और मजे में जी रहा हूँ, उनसे यह बिल्कुल मत कहना कि मैं यहाँ निराशा के गहरे अंधकार में डूबकर पूरी तरह टूट चुका हूँ और कमज़ोर हो गया हूँ।

कवि भावुक होकर सावन को चेतावनी देते हुए कहते हैं कि हाय रे सावन! तुम घर जाकर मेरे कष्टों की जो वास्तविक और कड़वी सच्चाई है, वैसा कुछ भी मत कह देना। उन्हें गलती से भी यह मत बता देना कि मुझे रात-रात भर नींद नहीं आती और मैं जागता रहता हूँ, तथा अत्यधिक मानसिक अवसाद के कारण अब मैं इंसानों को देखकर दूर भागता हूँ।

काव्यांश 25
कह न देना मौन हूँ मैं,
ख़ुद न समझूँ कौन हूँ मैं,
देखना कुछ बक न देना,
उन्हें कोई शक न देना,
हे सजीले हरे सावन,
हे कि मेरे पुण्य पावन,
तुम बरस लो वे न बरसें,
पाँचवें को वे न तरसें।

कठिन-शब्दार्थ
1. मौन – खामोश, उदास या खिन्न रहना।
2. बक न देना – बिना सोचे-समझे मुँह से कोई सच बात निकाल देना।

प्रसंग
प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। यह कविता की अंतिम आठ पंक्तियाँ (उपसंहार) हैं, जिसमें कवि सावन को पूरी सावधानी बरतने की कसम देते हुए अपने माता-पिता के आँसुओं को रोकने की मर्मस्पर्शी प्रार्थना करते हैं।

व्याख्या
कवि सावन को अंतिम हिदायत देते हुए कहते हैं कि तुम मेरे माता-पिता से भूलकर भी यह मत कह देना कि मैं यहाँ अत्यधिक उदासी के कारण चुपचाप और खामोश (मौन) रहता हूँ, और मेरी मानसिक स्थिति ऐसी हो गई है कि मैं खुद भी नहीं समझ पाता कि मैं कौन हूँ। तुम वहाँ पूरी सावधानी रखना और देखना कि भावुकता में आकर अपनी जुबान से कोई ऐसी-वैसी बात मत बक देना जिससे मेरे वृद्ध माता-पिता को मेरे दुखों पर थोड़ा सा भी शक या संदेह हो जाए।

अंत में कवि अपनी मर्मस्पर्शी विनती को दोहराते हैं कि हे हरियाली से सजे सुंदर और आकर्षक सावन! हे जगत का कल्याण करने वाले मेरे अत्यंत पवित्र और पावन मित्र! तुम्हारा प्राकृतिक स्वभाव ही बरसने का है, इसलिए तुम आसमान से धरती पर चाहे जितना पानी बरसा लो, मुझे उससे कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन मेरी केवल इतनी सी प्रार्थना स्वीकार करना कि मेरे वियोग के दुःख में मेरे माता-पिता की आँखों से आंसुओं की वर्षा नहीं होनी चाहिए। वे अपने इस लाडले पाँचवें बेटे की याद में तड़पकर तरसने नहीं चाहिए।

परिवार-वृक्ष का नमूना:

दादा-दादी
|
पिताजी – माताजी
|
बड़ा भाई – मैं – छोटी बहन

परिवार के सदस्यों का व्यक्तित्व:

- दादाजी: धैर्यवान और अनुभवी। उनकी बातों में जीवन का सार होता है। वे कहानियों के माध्यम से बड़ी-बड़ी बातें सिखाते हैं।
- दादीजी: स्नेहमयी और ममतामयी। उनके हाथ का खाना अमृत के समान लगता है। उनकी गोद में सिर रखने से सारी थकान दूर हो जाती है।
- पिताजी: परिश्रमी और दृढ़निश्चयी। परिवार के स्तंभ हैं। हर कठिनाई में शांत रहकर मार्ग निकालते हैं।
- माताजी: करुणामयी और सशक्त। घर को स्वर्ग बनाने वाली। उनका प्रेम असीम और निःस्वार्थ है।
- बड़े भाई: मित्र और मार्गदर्शक दोनों। हर परेशानी में साथ खड़े रहते हैं।
- छोटी बहन: घर की खुशी और चहल-पहल। उसकी हँसी से पूरा घर गूँज उठता है।

2. कविता में प्रयुक्त ध्वनि आधारित शब्द (जैसे– झरा-झर, थर-थर, सर-सर) को पढ़कर एक छोटी-सी ऑडियो रिकॉर्डिंग या मौखिक पाठ तैयार कीजिए। बताइए कि ये शब्द कविता में कैसे वातावरण का निर्माण करते हैं?

उत्तरः
मौखिक पाठ का नमूना:
(धीमी, भावपूर्ण आवाज़ में पढ़ें)
"गिर रहा पानी झरा-झर,
हिल रहे पत्ते हरा-हर,
बह रही है हवा सर-सर,
काँपते हैं प्राण थर-थर।"
ये ध्वनि-शब्द जो वातावरण निर्मित करते हैं:

1. झरा-झर — यह शब्द पानी के लगातार और तेज़ी से गिरने की ध्वनि को व्यक्त करता है। इसे पढ़ते ही मन में झरने या तेज़ बारिश की छवि बन जाती है।
2. हरा-हर — पत्तों के हिलने की मृदु, सरसराहट भरी आवाज़ को यह शब्द जीवंत कर देता है। यह वर्षा के बीच हरियाली का दृश्य प्रस्तुत करता है।
3. सर-सर — हवा के धीमे और सतत बहने की आवाज़ का यह सटीक चित्रण है। यह शब्द पढ़ते ही ठंडी हवा का अनुभव होता है।
4. थर-थर — यह शब्द कवि के प्राणों की कँपकँपी को व्यक्त करता है। ठंड में काँपने की भावना और भीतरी बेचैनी दोनों को एक साथ प्रकट करता है।

इन चारों शब्दों के एक साथ प्रयोग से कविता में एक ऐसा वातावरण बनता है जहाँ बाहर की वर्षा और भीतर की पीड़ा — दोनों एक लय में एक साथ चलते हैं। यह ध्वन्यात्मकता कविता को केवल पढ़ने की नहीं, बल्कि अनुभव करने की रचना बना देती है।

भाषा संगम

1. "घर कि घर में सब जुड़े हैं"
नीचे 'घर' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।
मकान, गृह, निवास (हिंदी); गृहम् (संस्कृत); घर (पंजाबी); घर (उर्दू); गॅरु (कश्मीरी); घरु (सिंधी); घर (मराठी); घर (गुजराती); घर (कोंकणी); घर, आवास (नेपाली); घर, बाड़ी (बांग्ला); घर (असमिया); युम (मणिपुरी); घर, गृह, आलय, आबास (ओड़िआ); इल्लु (तेलुगु); वीडु, इल्लम् (तमिल); वीडु, इल्लम (मलयालम); गृह, मने (कन्नड़)।
   - इनके अतिरिक्त यदि आप 'घर' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
   - उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

उत्तरः

- कुछ अन्य भाषाओं में 'घर' शब्द:
भोजपुरी में — घर
राजस्थानी में — घर / घरो
अंग्रेज़ी में — Home / House
अरबी में — बैत
- हिंदी में: "घर कि घर में सब जुड़े हैं"
राजस्थानी में: "घर में सगळा जुड़्या हैं"
भोजपुरी में: "घर में सब जुड़ल बाड़ें"

(विद्यार्थी अपनी मातृभाषा के अनुसार इस वाक्य को लिखें।)

खोजबीन

1. शिक्षक की सहायता से ऐसी किसी अन्य कविता अथवा कहानी के बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए जिसमें घर, परिवार की याद जैसी भावनाएँ चित्रित हों। साथ ही पुस्तकालय अथवा इंटरनेट की सहायता से उस रचना को कक्षा में पढ़कर एक संक्षिप्त प्रस्तुति दीजिए।

उत्तरः
रचना का नामः 'यह दीप अकेला' — सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'
संक्षिप्त परिचयः इस कविता में कवि ने एक अकेले दीपक के माध्यम से उस व्यक्ति की भावना को व्यक्त किया है जो अपनों से दूर है परन्तु अपने भीतर की रोशनी बुझने नहीं देता। यह भावना 'घर की याद' के कवि की भावना से मिलती-जुलती है।

7. "और कहना मस्त हूँ मैं" पंक्ति में कवि का ऐसा कहना किस बात की ओर संकेत करता है?
(क) कवि अपने जीवन में बहुत खुश है।
(ख) अपने दुख को परिजनों से छिपाना चाहता है।
(ग) घर के लोगों के प्रति उदासीन है।
(घ) कवि प्राकृतिक सौंदर्य से अभिभूत है।

उत्तरः
(ख) अपने दुख को परिजनों से छिपाना चाहता है।
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि कवि जेल में है और उसके मन में घर की गहरी याद और पीड़ा है। परन्तु वह बादल से आग्रह करता है कि परिवार को उसकी तकलीफ न बताए, बल्कि कहे कि वह मस्त है, खाना खा रहा है, खेल रहा है। यह उसकी परिजनों के प्रति गहरी प्रेमपूर्ण चिंता और उनकी रक्षा की भावना है।

8. इस कविता में किस बात को प्रमुखता से वर्णित किया गया है?
(क) घर की शांति और सुरक्षा
(ख) घर के सदस्यों के बीच का संबंध
(ग) घर के निर्माण की प्रक्रिया
(घ) घर की याद और अकेलेपन की पीड़ा

उत्तरः
(घ) घर की याद और अकेलेपन की पीड़ा
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि पूरी कविता में कवि जेल में अकेला बैठा बारिश देखते हुए घर, माँ, पिता, भाई, बहिन — सभी को याद करता है। "घर नजर में तिर रहा है" — यह पंक्ति बार-बार आती है और कवि के अकेलेपन की गहरी पीड़ा को मुखर करती है।

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. कविता में वर्णित पिता के व्यक्तित्व की उन विशेषताओं का वर्णन कीजिए जिनसे उनका बहुआयामी रूप सामने आता है।

उत्तरः
कविता में पिताजी का चरित्र अत्यंत बहुआयामी और प्रभावशाली रूप में उभरा है:
1. **शारीरिक दृढ़ता और बल**: "वज्र-भुज नवनीत-सा उर" — उनकी भुजाएँ वज्र की तरह कठोर और शक्तिशाली हैं। वे बूढ़े होने पर भी दौड़ सकते हैं।
2. **असाधारण स्फूर्ति**: "पिताजी जिनको बुढ़ापा, एक क्षण भी नहीं व्यापा, जो अभी भी दौड़ जाएँ, जो अभी भी खिलखिलाएँ" — बुढ़ापा उन्हें छू नहीं पाया।
3. **निर्भीकता**: "मौत के आगे न हिचकें, शेर के आगे न बिचकें" — वे निर्भय और साहसी हैं।
4. **धार्मिक और अनुशासित जीवन**: वे प्रतिदिन गीता-पाठ करते हैं, दंड लगाते हैं, मुगदर हिलाते हैं।
5. **कोमल हृदय**: "मन कि बड़ का झाड़ जैसे, एक पत्ता टूट जाए, बस कि धारा फूट जाए" — बाहर से कठोर परन्तु भीतर से अत्यंत भावुक और संवेदनशील।
6. **गहरा वात्सल्य**: वे अपने पाँचवें बेटे की याद में रो पड़ते हैं और उसे "सोने पर सुहागा" कहते थे।

2. "दुख डटकर ठेलता हूँ" यह कथन मनुष्य के संघर्षशील स्वभाव को उजागर करता है। कविता के आधार पर बताइए कि कठिन परिस्थितियों में कवि किस प्रकार धैर्य, साहस और त्याग का परिचय देता है?

उत्तरः
कवि जेल की कठिन परिस्थितियों में धैर्य, साहस और त्याग का अद्भुत परिचय देता है:
1. **धैर्य**: कवि जेल में रहते हुए भी मन को स्थिर रखता है। वह बादल से कहता है — "मैं मजे में हूँ सही है, घर नहीं हूँ बस यही है।" वह अपने दुख को बहुत बड़ा नहीं मानता, बल्कि "दुख डटकर ठेलता हूँ" कहकर उससे मुकाबला करता है।
2. **साहस**: वह स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के परिणामस्वरुप जेल गया है — यह स्वयं ही असाधारण साहस का प्रमाण है। परिजनों की याद में आँसू आते हैं, परन्तु वह टूटता नहीं।
3. **त्याग**: कवि जानता है कि घर पर माँ-पिता और भाई-बहिन उसकी चिंता में व्याकुल हैं, फिर भी वह देश-सेवा के मार्ग से नहीं हटता। माँ के शब्दों में — "पाँव जो पीछे हटाता, कोख को मेरी लजाता" — इस त्याग को स्वयं उसकी माँ ने स्वीकृति दी है।

3. कविता में बार-बार वर्षा का वर्णन कवि के भावों को किस प्रकार व्यक्त करता है?

उत्तरः
'घर की याद' कविता में वर्षा केवल एक प्राकृतिक घटना नहीं, बल्कि कवि के आंतरिक भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम है:
1. **घर की स्मृति का जागरण**: "बहुत पानी गिर रहा है, घर नजर में तिर रहा है" — बारिश देखते ही कवि को घर की याद आती है। पानी का गिरना और घर का आँखों के सामने तैरना साथ-साथ चलता है।
2. **मन की बेचैनी**: "काँपते हैं प्राण थर-थर" — बारिश की ठंड और एकांत मिलकर कवि के मन में कंपकंपी पैदा करते हैं।
3. **संचार का माध्यम**: कवि सावन के बादल को दूत बनाता है — "हे सजीले हरे सावन, हे कि मेरे पुण्य पावन, तुम बरस लो वे न बरसें।" यहाँ बारिश परिवार तक संदेश पहुँचाने का साधन बन जाती है।
4. **मन की नमी**: "मन निहायत नम गया है" — बारिश थमने के बाद भी मन की उदासी और भावुकता बनी रहती है।

4. भवानीप्रसाद मिश्र ने यह कविता स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कारावास में लिखी थी। अपने शिक्षक और पुस्तकालय की सहायता से 'भारत का स्वतंत्रता संग्राम' विषय पर लेख लिखिए।

उत्तरः

भारत का स्वतंत्रता संग्राम

भारत का स्वतंत्रता संग्राम विश्व के इतिहास में अपनी तरह का अनूठा और प्रेरणादायक संघर्ष था। यह केवल एक राजनीतिक आंदोलन नहीं, बल्कि लाखों लोगों के बलिदान, त्याग और संकल्प की महागाथा थी।

प्रारंभिक चरण (1857–1900): 1857 का विद्रोह भारत की पहली सशस्त्र क्रांति थी जिसे अंग्रेजों ने दबा दिया, परन्तु इसने स्वतंत्रता की चिंगारी जलाई। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई।

गाँधी युग (1920–1947): महात्मा गाँधी के नेतृत्व में अहिंसक सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन (1920), सविनय अवज्ञा (1930), और भारत छोड़ो आंदोलन (1942) जैसे महान आंदोलन हुए।

1942 का भारत छोड़ो आंदोलन: इसी आंदोलन में भवानीप्रसाद मिश्र ने भाग लिया और जेल गए। "करो या मरो" का नारा देते हुए लाखों भारतीयों ने अंग्रेजों को भारत छोड़ने को कहा।

स्वतंत्रता प्राप्तिः अनगिनत बलिदानों के बाद 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद जैसे क्रांतिकारियों और असंख्य कवियों, लेखकों ने इस संग्राम में अपना योगदान दिया।

सृजन

1. कल्पना कीजिए कि कवि की माँ को पत्र लिखना आता है। कविता में वर्णित उनकी छवि और अनुमान के आधार पर लिखिए कि वे कवि के लिए पत्र में क्या-क्या लिखतीं?

उत्तरः

माँ का पत्र

मेरे प्यारे भवानी,

राम-राम!

तू जानता है कि तेरी माँ ने कभी पत्र नहीं लिखा, पर आज मन भर आया तो लिखने बैठ गई। बाहर सावन की झड़ी लगी है और मेरी आँखों में भी। पर रोना नहीं हूँ — तू भी मत रोना।

तू जो गया, सो ठीक गया। यह तेरी लीक है, तेरा धर्म है। मैंने जन्म दिया था, पर देश ने तुझे बनाया। बेटा, तेरे पिता आज भी उसी तरह दौड़ते हैं, गीता पढ़ते हैं — पर जब पाँचवें का नाम आता है तो आँख भर आती है।

घर में सब ठीक हैं। भाई-बहिन सब तुझे याद करते हैं। बाड़े में बेला फूल चुकी। लौकी की बेल बढ़ गई। तू होता तो बड़ा खुश होता।

बस एक बात — मस्त रह, खाना खा, किसी से लड़ाई मत कर। घर आएगा तो माँ की गोद तैयार है।

तेरी माँ

2. कविता में माँ और पिताजी के बीच कवि के विषय में की जाने वाली बातचीत का वर्णन है। उनकी इस बातचीत को संवाद-लेखन के रूप में प्रस्तुत कीजिए।

उत्तरः

सावन की एक रात। बाहर बारिश हो रही है। माँ आँगन में बैठी हैं। पिताजी गीता-पाठ करके आए हैं।

पिताजी: (आसमान की ओर देखते हुए) आज खूब पानी गिर रहा है। भवानी को बरसात बहुत पसंद थी।

माँ: (चुपके से आँखें पोंछते हुए) हाँ। याद है? खुले सिर, नंगे बदन, बाड़े में दौड़ता था। बेला के फूल देखकर कितना खुश होता था।

पिताजी: (गला भारी होते हुए) आज उसकी बहुत याद आ रही है। मेरा पाँचवाँ... सोने पर सुहागा था।

माँ: (दृढ़ स्वर में) रोइए मत। उसने जो किया, वह उसकी लीक है। हमारी कोख का फल देश के काम आया — यह गर्व की बात है।

पिताजी: (रुंधे स्वर में) गर्व तो है, पर कलेजा भी तो है। कहाँ होगा अभी? ठीक से खाता-पीता होगा?

माँ: वहाँ अच्छा है भवानी। वह मजबूत है। हमने ही तो उसे बनाया है। अब रोने से उसका हौसला टूटेगा।

पिताजी: (माँ की बात सुनकर सँभलते हुए) ठीक कहती हो। कहाँ मैं रोता कहाँ हूँ, धीर मैं खोता कहाँ हूँ।

(दोनों चुप हो जाते हैं। बाहर बारिश जारी रहती है।)

3. इस कविता में कवि ने सावन के बादल को संदेशवाहक बनाया है। अगर आपको किसी प्राकृतिक उपादान के माध्यम से अपने घर, मित्र या किसी संबंधी व्यक्ति को कोई संदेश भेजना हो तो आप किसे चुनेंगे और क्यों?

उत्तरः

यदि मुझे किसी प्राकृतिक उपादान के माध्यम से संदेश भेजना हो, तो मैं हवा को चुनूँगा/चुनूँगी।

कारण : हवा सर्वव्यापी है — वह पहाड़, नदी, समुद्र, मैदान — सभी स्थानों पर पहुँचती है। कोई दरवाजा, कोई दीवार उसे नहीं रोक सकती। जेल की सलाखें भी हवा को नहीं रोक पातीं।

हवा निरंतर गतिमान रहती है और क्षण भर में दूर-दूर तक पहुँच सकती है। वह सुखद स्पर्श के साथ आती है — जैसे किसी प्रिय का स्नेह भरा हाथ।

मैं हवा से कहता/कहती — "हे मीठी बयार, मेरे घर जाना, माँ के आँचल को छूना और उन्हें बताना कि मैं ठीक हूँ और जल्दी आऊँगा/आऊँगी।"

उत्तरः

'घर की याद' कविता में कवि के भावों की यात्रा निम्नलिखित प्रमुख चरणों में आगे बढ़ती है:

1. **पानी का गिरना — घर की याद का जागरण**: रात भर से बारिश हो रही है। कवि को ठीक से पता नहीं कि सबेरा कब हुआ। बादलों की अँधेरी, पत्तों का हिलना, हवा का सर-सर बहना — इस सबसे कवि के मन में घर की छवि उभरती है।
2. **स्मृतियों का विस्तार — परिजनों का स्मरण**: घर के चार भाई, बहिन का मायके आना, अनपढ़ माँ का स्नेह, पिताजी का बहुआयामी व्यक्तित्व — एक-एक करके सभी याद आते हैं।
3. **परिजनों की कल्पित प्रतिक्रिया**: कवि कल्पना करता है कि घर में सब उसे याद करके रो रहे होंगे। पिता पाँचवें का नाम लेकर रो रहे होंगे, माँ धैर्य देते हुए भीतर टूट रही होगी।
4. **पानी का थमना — मन का नम होना**: बारिश रुकती है, बादल फैले हैं, पक्षी बोल रहा है — "घाव उर के खोलता है।" मन भावनाओं से भरा और नम हो गया है।
5. **बादल से आग्रह — संदेश भेजना**: कवि सावन के बादल से विनती करता है कि परिवार को उसके दुख की खबर न दे, बल्कि यही कहे कि वह मस्त है, ठीक है, काम-नाम कर रहा है।

विषयों से संवाद

1. कविता में चित्रित 'घर' एक भौतिक स्थान से बढ़कर भावनाओं और संबंधों के केंद्र के रूप में चित्रित हुआ है। वर्तमान में एकल परिवारों के बढ़ते चलन के संदर्भ में संयुक्त परिवार और एकल परिवार की तुलना कीजिए और कारण सहित लिखिए कि दोनों की कौन-कौन-सी बातें आपको पसंद हैं और कौन-कौन-सी नापसंद?

उत्तरः

संयुक्त परिवार की पसंदीदा बातें : संयुक्त परिवार में माँ, पिता, दादा-दादी, भाई-बहिन सभी एक साथ रहते हैं। इसमें बच्चों को बड़े-बुजुर्गों का मार्गदर्शन मिलता है। मुसीबत में सभी साथ होते हैं। 'घर की याद' में कवि ने इसी संयुक्त परिवार की गर्मजोशी और प्रेम को याद किया है। त्योहार, खुशियाँ और दुख सभी मिलकर बाँटे जाते हैं।

संयुक्त परिवार की नापसंद बातें : कभी-कभी मतभेद और आपसी खींचतान होती है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता सीमित हो जाती है।

एकल परिवार की पसंदीदा बातें : एकल परिवार में व्यक्तिगत स्वतंत्रता अधिक होती है। निर्णय लेना सरल होता है। जीवनशैली अधिक व्यवस्थित रह सकती है।

एकल परिवार की नापसंद बातें : एकल परिवार में अकेलापन अधिक होता है। बच्चों को बड़े-बुजुर्गों का सान्निध्य नहीं मिलता। कठिन समय में कोई सहारा नहीं होता। 'घर की याद' कविता यह बताती है कि घर केवल दीवारें नहीं, बल्कि अपनों का साथ है — यह अनुभव एकल परिवार में कम मिलता है।

2. कविता में बार-बार पानी गिरने का वर्णन है। लगातार बारिश होती रहे तो ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में किस प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं?

उत्तरः

ग्रामीण क्षेत्र में समस्याएँ:

1. खेतों में जलजमाव से फसलें नष्ट हो जाती हैं।
2. कच्चे मकान और झोपड़ियाँ ढह सकते हैं।
3. नदियों में बाढ़ आने से गाँव जलमग्न हो जाते हैं।
4. पशुओं को चारा मिलना कठिन हो जाता है।
5. कच्चे रास्ते टूट जाते हैं, आवागमन बंद हो जाता है।

शहरी क्षेत्र में समस्याएँ:

1. सड़कों पर जलभराव से यातायात अवरुद्ध हो जाता है।
2. निचले इलाकों में घरों में पानी घुस जाता है।
3. बिजली के खंभों और तारों में खतरा उत्पन्न होता है।
4. गंदा पानी पीने के पानी में मिलने से महामारी फैल सकती है।
5. दुकानें और कार्यालय बंद हो जाते हैं, आर्थिक नुकसान होता है।

3. कविता में सावन के बादल का प्रयोग एक संचार माध्यम के रूप में किया गया है जिसके द्वारा कवि अपने परिवार तक संदेश भेज रहा है। कक्षा में संचार के नए-पुराने माध्यमों में अंतर बताते हुए चर्चा कीजिए और लिखिए।

उत्तरः

पुराने संचार माध्यम	**नए संचार माध्यम**
पत्र (डाक द्वारा)	मोबाइल फोन, SMS
तार (टेलीग्राम)	इंटरनेट, ई-मेल
दूत (व्यक्ति द्वारा संदेश)	व्हाट्सएप, वीडियो कॉल
कबूतर या प्राकृतिक उपादान	सोशल मीडिया (फेसबुक, इंस्टाग्राम)
ढोल-नगाड़े द्वारा संकेत	रेडियो, टेलीविजन

अंतर: पुराने माध्यम धीमे थे परन्तु उनमें भावनात्मक गहराई अधिक थी। हस्तलिखित पत्र में लिखने वाले का स्पर्श होता था। नए माध्यम तत्काल और सुविधाजनक हैं परन्तु उनमें व्यक्तिगत भावनात्मकता कम है।

कविता में कवि ने सावन के बादल को दूत बनाया — यह उस युग की सीमा भी थी और एक काव्य-सौंदर्य भी। आज के युग में कवि तुरंत वीडियो कॉल कर सकता था, परन्तु तब वह संभव नहीं था।

5. पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. भवानीप्रसाद मिश्र ने यह कविता कहाँ और क्यों लिखी?
(क) विदेश से मित्र के लिए
(ख) युद्धभूमि से जनता के लिए
(ग) जेल से परिवार के लिए
(घ) यात्रा से किसी संबंधी के लिए

उत्तरः
(ग) जेल से परिवार के लिए
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि भवानीप्रसाद मिश्र ने सन् 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में भाग लेने के कारण जेल में रहते हुए यह कविता लिखी थी। कविता में उन्होंने जेल की परिस्थितियों में घर और परिवार के प्रति अपनी गहरी भावनाएँ व्यक्त की हैं तथा सावन के बादल के माध्यम से परिवार को संदेश भेजने का आग्रह किया है।

2. लगातार बरसता पानी कवि के मन की किस भावना का परिचायक है?
(क) उत्साह और आवेग
(ख) भय और क्रोध
(ग) साहस और उमंग
(घ) चिंता और बेचैनी

उत्तरः
(घ) चिंता और बेचैनी
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि लगातार बरसता पानी देखकर कवि का मन घर की ओर खिंचता है। "काँपते हैं प्राण थर-थर" और "घर नजर में तिर रहा है" जैसी पंक्तियाँ यह दर्शाती हैं कि बारिश का यह दृश्य कवि में घर की याद और परिजनों के प्रति चिंता व बेचैनी उत्पन्न करता है, न कि उत्साह या साहस।

3. कविता में माँ की कैसी छवि उभरती है?
(क) कमजोर और निष्क्रिय
(ख) स्नेहमयी और दृढ़
(ग) शिक्षित और अनुशासनप्रिय
(घ) सरल और उदासीन

उत्तरः
(ख) स्नेहमयी और दृढ़
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि कविता में माँ एक ओर अत्यंत स्नेहमयी है — "माँ कि जिसकी गोद में सिर, रख लिया तो दुख नहीं फिर" — और दूसरी ओर वह अपने पुत्र के देश के लिए जेल जाने को सही ठहराती है। वह रोते हुए भी कहती है — "वहाँ अच्छा है भवानी... यह तुम्हारी लीक ही है।" यह उसकी भावनात्मक दृढ़ता का प्रमाण है।

4. "वज्र-भुज नवनीत-सा उर" पंक्ति के माध्यम से पिता के व्यक्तित्व की कैसी छवि प्रस्तुत की गई है?
(क) कर्मठ और सृजनशील
(ख) साहसी और पराक्रमी
(ग) दृढ़ और संवेदनशील
(घ) प्रसन्नचित्त और सक्रिय

उत्तरः
(ग) दृढ़ और संवेदनशील
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि "वज्र-भुज" से पिता की शारीरिक और मानसिक दृढ़ता का बोध होता है, और "नवनीत-सा उर" (ताजे मक्खन जैसा कोमल हृदय) से उनकी भावनात्मक संवेदनशीलता प्रकट होती है। यह पंक्ति पिता के दोनों पक्षों — बाहरी मजबूती और भीतरी कोमलता — को एक साथ व्यक्त करती है।

5. "एक पत्ता टूट जाए, बस कि धारा फूट जाए" पंक्ति किस ओर संकेत करती है?
(क) पिता की कठोरता
(ख) पिता की भावुकता
(ग) वर्षा की तीव्रता
(घ) पिता की निर्बलता

उत्तरः
(ख) पिता की भावुकता
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि यहाँ पिता की तुलना बड़ (बरगद) के विशाल वृक्ष से की गई है — देह पहाड़ जैसी और मन बड़ के झाड़ जैसा। जैसे बड़ की एक टहनी टूटे तो उससे दूधिया धारा बह निकलती है, उसी प्रकार पिता बाहर से कठोर दिखते हुए भी भीतर से इतने भावुक हैं कि अपने पाँचवें बेटे की याद में एक छोटी-सी बात पर भी रो पड़ते हैं।

6. "बहिन आई बाप के घर, हाय रे परिताप के घर" पंक्ति में 'परिताप' शब्द से क्या संकेत मिलता है?
(क) घर का समृद्ध होना
(ख) घर की सजावट
(ग) घर में दुख का वातावरण
(घ) घर की शांति

उत्तरः
(ग) घर में दुख का वातावरण
यह उत्तर उपयुक्त है क्योंकि 'परिताप' का अर्थ है अत्यधिक दुख और शोक। कवि का एक पुत्र जेल में है — इसी कारण जब बहिन मायके आती है, तो वह घर जो खुशियों का केंद्र होना चाहिए था, वह 'परिताप का घर' बन गया है। परिवार में गहरी उदासी और दर्द का वातावरण है।

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

1. "आज सबका मन चुआ होगा।"
उपर्युक्त पंक्ति में रेखांकित शब्द कवि की क्षेत्रीय/स्थानीय भाषा का शब्द है। कविता में स्थानीय भाषा के शब्दों का सहज प्रयोग हुआ है। कविता से कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। उनमें रेखांकित शब्दों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनसे नए वाक्य बनाइए।
   - एक छिन सौ बस है रे
   - तुजे बतलाता कि बेला/ने फलानी फूल झैला
   - और भौजी और सरला, सहज पानी सहज तरला
   - मन कि बड़ का झाड़ जैसे

   उत्तरः
   एक छिन सौ बरस है रे
   छिन का अर्थः क्षण, पल, बहुत थोड़ा समय
   नया वाक्यः परीक्षा के समय एक-एक छिन भारी लगता है।
   तुझे बतलाता कि बेला/ने फलानी फूल झेला
   फलानी का अर्थः किसी विशेष (अमुक) बेल या लता को; किसी आदिष्ट वस्तु का बोधक शब्द
   नया वाक्यः उसने कहा कि फलानी दुकान पर जाओ, वहाँ मिल जाएगा।
   और भौजी और सरला, सहज पानी सहज तरला
   तरला का अर्थः तरल, द्रवित, बहने वाली (यहाँ सहजता से आँसू बहाने वाली)
   नया वाक्यः उसका मन इतना तरला था कि दूसरों का दुख देखकर आँखें भर आती थीं।
   मन कि बड़ का झाड़ जैसे
   बड़ का अर्थः बरगद का वृक्ष, विशाल और फैला हुआ वट वृक्ष
   नया वाक्यः गाँव के चौराहे पर एक पुराना बड़ का पेड़ था जिसकी छाया में सभी बैठते थे।

2. नीचे दी गई कविता की पंक्तियों में आए शब्दों की व्याकरणिक पहचान लिखिए। आपकी सहायता के लिए एक उदाहरण नीचे दिया गया है।
   (क) "बहुत पानी गिर रहा है"
   - 'पानी' शब्द है — संज्ञा
   - 'बहुत' शब्द है — विशेषण
   - 'गिर रहा है' है — क्रिया

   (ख) "पिताजी जिनको बुढ़ापा, एक क्षण भी नहीं व्यापा"
   - 'बुढ़ापा' शब्द है —
   - 'व्यापा' शब्द है —
   - 'जिनको' शब्द है —

   (ग) "खुले सिर नंगे बदन वह, घूमता फिरता मगन वह"
   - 'खुले' शब्द है —
   - 'वह' शब्द है —
   - 'बदन' शब्द है —
   - 'फिरता' शब्द है —

   (घ) "एक पत्ता टूट जाए, बस कि धारा फूट जाए"
   - 'एक' शब्द है —
   - 'फूट जाए' है —
   - 'पत्ता' शब्द है —

   (ङ) "हे सजीले हरे सावन, हे कि मेरे पुण्य पावन"
   - 'सजीले' शब्द है —
   - 'मेरे' शब्द है —
   - 'सावन' शब्द है —

   उत्तरः
   (ख) "पिताजी जिनको बुढ़ापा, एक क्षण भी नहीं व्यापा"
   - 'बुढ़ापा' शब्द है — भाववाचक संज्ञा (बूढ़े होने की अवस्था)
   - 'व्यापा' शब्द है — क्रिया (व्यापना = छाना, लगना)
   - 'जिनको' शब्द है — सर्वनाम (संबंधवाचक सर्वनाम)

   (ग) "खुले सिर नंगे बदन वह, घूमता फिरता मगन वह"
   - 'खुले' शब्द है — विशेषण (सिर की विशेषता बताता है)
   - 'वह' शब्द है — सर्वनाम (पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष)
   - 'बदन' शब्द है — जातिवाचक संज्ञा (शरीर)
   - 'फिरता' शब्द है — क्रिया (घूमने की क्रिया)

   (घ) "एक पत्ता टूट जाए, बस कि धारा फूट जाए"
   - 'एक' शब्द है — संख्यावाचक विशेषण
   - 'फूट जाए' है — क्रिया (बह निकलने की क्रिया)
   - 'पत्ता' शब्द है — जातिवाचक संज्ञा

   (ङ) "हे सजीले हरे सावन, हे कि मेरे पुण्य पावन"
   - 'सजीले' शब्द है — गुणवाचक विशेषण (सजा-सँवरा, सुंदर)
   - 'मेरे' शब्द है — सर्वनाम (उत्तम पुरुष, संबंधकारक)
   - 'सावन' शब्द है — व्यक्तिवाचक संज्ञा (सावन महीने का नाम)

गतिविधियाँ

1. कवि ने कविता में अपने परिवार का उल्लेख किया है। आप भी अपना एक परिवार-वृक्ष तैयार कीजिए और प्रत्येक सदस्य के व्यक्तित्व के बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखिए।
   उत्तरः
   यह एक व्यक्तिगत गतिविधि है। नीचे एक नमूना प्रस्तुत किया गया है जिसे आप अपने परिवार के अनुसार बदल सकते हैं।

काव्यांश 21

इस तरह का हाल उनका,
इस तरह का ख़याल उनका,
हवा, उनको धीर देना,
यह नहीं जी चीर देना,
हे सजीले हरे सावन,
हे कि मेरे पुण्य पावन,
तुम बरस लो वे न बरसें,
पाँचवें को वे न तरसें,

कठिन-शब्दार्थ

1. धीर – धैर्य, धीरज या सांत्वना।
2. जी चीर देना – हृदय को अत्यधिक कष्ट या असहनीय दुःख पहुँचाना।
3. सजीले – सुंदर, हरियाली से सजे हुए।
4. पुण्य पावन – अत्यंत पवित्र और दूसरों का कल्याण करने वाले।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। यहाँ से कवि सावन के सजीले बादलों और हवा को अपना संदेशवाहक बनाते हैं और उनसे अपने माता-पिता के आंसुओं को रोकने की भावुक प्रार्थना करते हैं।

व्याख्या

आज जेल में मुझे पिता जी का वही रूप और उनका ख्याल बार-बार आ रहा है। कवि सावन की हवा से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि हे हवा! तुम मेरे घर जाना और मेरे पिता जी को धैर्य देना। तुम वहाँ जाकर शांति से बहना, कोई ऐसा संदेश मत दे देना जो उनके वृद्ध हृदय को पूरी तरह चीर दे।

कवि आगे सावन को संबोधित करते हुए कहते हैं कि हे हरियाली से सजे सुंदर सावन! हे जगत का कल्याण करने वाले मेरे पवित्र और पावन दूत! तुम बरस लो, लेकिन ध्यान रखना कि मेरे माता-पिता की आँखों से दुःख के आँसू नहीं बरसने चाहिए। वे अपने इस लाडले पाँचवें बेटे की याद में तड़पकर तरसने नहीं चाहिए।

काव्यांश 22

मैं मज़े में हूँ सही है,
घर नहीं हूँ बस यही है,
किंतु यह बस बड़ा बस है,
इसी बस से सब विरस है,
किंतु उनसे यह न कहना,
उन्हें देते धीर रहना,
उन्हें कहना लिख रहा हूँ,
उन्हें कहना पढ़ रहा हूँ,

कठिन-शब्दार्थ

1. बस – विवशता, लाचारी।
2. विरस – नीरस, अप्रिय या कष्टकर जीवन।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। इसमें कवि अपने घर न हो पाने की विवशता को अपने जीवन का सबसे बड़ा दुःख बताते हुए सावन को अपनी व्यस्तता का संदेश देने की सीख दे रहे हैं।

व्याख्या

कवि बादल को सिखाते हुए कहते हैं कि तुम मेरे घर जाकर मेरे माता-पिता से कहना कि मैं यहाँ जेल में बहुत मजे और आनंद में हूँ, यह बिल्कुल सच है। मेरे साथ बस केवल छोटी सी समस्या यही है कि मैं अपने घर पर आपके पास नहीं हूँ।

लेकिन कवि अपने मन में सोचते हैं कि अपनों से दूर रहने का यह छोटा सा 'बस' ही वास्तव में मेरे जीवन का सबसे बड़ा और भयानक 'बस' है। इसी विवशता के कारण जेल का यह सारा सुखी जीवन मेरे लिए पूरी तरह नीरस और कड़वा हो गया है। लेकिन तुम मेरे माता-पिता के सामने मेरे इस असली दुःख को भूलकर भी मत बताना, बल्कि उन्हें हमेशा धैर्य बँधाते रहना। उनसे कहना कि मैं यहाँ निरंतर साहित्य-लेखन कर रहा हूँ और रोज़ नई-नई पुस्तकें पढ़ने में व्यस्त हूँ।

काव्यांश 23

काम करता हूँ कि कहना,
नाम करता हूँ कि कहना,
चाहते हैं लोग, कहना
मत करो कुछ शोक, कहना,
और कहना मस्त हूँ मैं,
कातने में व्यस्त हूँ मैं,
वज़न सत्तर सेर मेरा,
और भोजन ढेर मेरा,

कठिन-शब्दार्थ

1. शोक – दुःख या विलाप करना।
2. कातने – चरखे पर रुई से सूत (धागा) निकालना।
3. सत्तर सेर – अत्यधिक स्वस्थ होना (लगभग 65 किलो वजन)।

प्रसंग

प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खंड' में संकलित 'घर की याद' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र हैं। इसमें कवि अपने माता-पिता को सांत्वना देने के लिए अपनी अच्छी सेहत, खान-पान और गांधीवादी कार्यों की व्यस्तता का झूठा किंतु संबल देने वाला संदेश भेज रहे हैं।

'घर की याद' से समानता: दोनों कविताओं में अकेलेपन की पीड़ा है, परिजनों के प्रति प्रेम है और कठिन परिस्थितियों में भी टूटने से इनकार है।

एक अन्य रचना: सुभद्राकुमारी चौहान की कविता 'वीरों का कैसा हो वसंत' में भी स्वतंत्रता संग्राम के दौरान घर-परिवार को छोड़कर देश के लिए निकलने की भावना मिलती है।

2. 'घर की याद' कविता में कवि सावन के बादलों को दूत बनाकर अपने परिवार के पास संदेश ले जाने का आग्रह करता है। प्रकृति के उपादानों की कल्पना संदेशवाहक के रूप में करने के अनेक उदाहरण साहित्य में मिलते हैं। शिक्षक, पुस्तकालय और इंटरनेट की सहायता से ऐसी कुछ रचनाओं के बारे में पता लगाइए और बताइए कि इनमें प्रकृति के किन उपादानों को संदेशवाहक बनाया गया है?

उत्तरः

हिंदी और संस्कृत साहित्य में प्रकृति के उपादानों को संदेशवाहक बनाने की एक समृद्ध परंपरा रही है। कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं:

1. **मेघदूतम् (कालिदास)**: संस्कृत साहित्य की यह सर्वप्रसिद्ध रचना है जिसमें यक्ष अपनी प्रिया को संदेश भेजने के लिए बादल (मेघ) को दूत बनाता है। यह प्रकृति को संदेशवाहक बनाने का सबसे प्राचीन और प्रसिद्ध उदाहरण है।
2. **मीराबाई के पद**: मीराबाई ने अपने कई पदों में पवन (हवा) को अपने प्रियतम कृष्ण तक संदेश पहुँचाने का माध्यम बनाया है।
3. **विरहिणी नायिका की कविताएँ (रीतिकाल)**: रीतिकालीन कविताओं में कोयल, पपीहा और चातक को प्रेम-संदेश के वाहक के रूप में चित्रित किया गया है।
4. **लोकगीत**: राजस्थानी और अवधी लोकगीतों में नदी, पक्षी और बादल को प्रिय तक संदेश पहुँचाने वाला बताया जाता है।

इन सभी रचनाओं में प्रकृति केवल पृष्ठभूमि नहीं रहती, बल्कि वह मानवीय भावनाओं का सेतु बन जाती है — यही इनकी साहित्यिक विशेषता है।

6. अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'घर की याद' कविता के रचयिता कौन हैं?
(क) सुमित्रानंदन पंत (ख) भवानीप्रसाद मिश्र
(ग) हरिवंशराय बच्चन (घ) रामधारी सिंह दिनकर

उत्तरः
(ख) भवानीप्रसाद मिश्र

2. भवानीप्रसाद मिश्र का जन्म किस राज्य में हुआ था?
(क) उत्तर प्रदेश (ख) राजस्थान
(ग) मध्य प्रदेश (घ) महाराष्ट्र

उत्तरः
(ग) मध्य प्रदेश

3. भवानीप्रसाद मिश्र का जन्म किस वर्ष हुआ था?
(क) 1910 (ख) 1920
(ग) 1913 (घ) 1905

उत्तरः
(ग) 1913

4. भवानीप्रसाद मिश्र को साहित्य अकादमी पुरस्कार किस रचना पर मिला?
(क) गीत-फ़रोश (ख) शतदल
(ग) चकित है दुख (घ) बुनी हुई रस्सी

उत्तरः
(घ) बुनी हुई रस्सी

5. भवानीप्रसाद मिश्र ने किस पत्रिका का संपादन किया?
(क) सरस्वती (ख) कल्पना
(ग) धर्मयुग (घ) हंस

उत्तरः
(ख) कल्पना

6. 'घर की याद' कविता किस आंदोलन के दौरान लिखी गई?
(क) असहयोग आंदोलन (ख) सविनय अवज्ञा आंदोलन
(ग) भारत छोड़ो आंदोलन (घ) खिलाफत आंदोलन

उत्तरः
(ग) भारत छोड़ो आंदोलन

7. भवानीप्रसाद मिश्र को ब्रिटिश सरकार ने कितने वर्ष के लिए कारावास का दंड दिया?
(क) दो वर्ष (ख) पाँच वर्ष
(ग) एक वर्ष (घ) तीन वर्ष

उत्तरः
(घ) तीन वर्ष

8. 'घर की याद' कविता की केंद्रीय संवेदना क्या है?
(क) स्वतंत्रता की चाह (ख) प्रकृति का सौंदर्य
(ग) परिवार की स्मृति (घ) देशभक्ति का जोश

उत्तरः
(ग) परिवार की स्मृति

9. कविता के आरंभ में कवि किस मौसम का वर्णन करता है?
(क) शीत ऋतु (ख) ग्रीष्म ऋतु
(ग) वर्षा ऋतु (घ) वसंत ऋतु

उत्तरः
(ग) वर्षा ऋतु

काव्यांश 2

बहुत पानी गिर रहा है,
और पानी गिर रहा है,
घर नजर में तिर रहा है,
घर चतुर्दिक् घिर रहा है,
घर कि मुझसे दूर है जो,
घर खुशी का पूर है जो,

1. 'घर नजर में तिर रहा है' पंक्ति में 'तिर रहा है' का क्या गहरा निहितार्थ है?
(क) घर का पानी में डूबना
(ख) आँखों के सामने तैरना
(ग) नजरों से दूर हो जाना
(घ) मन में भ्रम उत्पन्न होना

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कवि का घर उनसे बहुत दूर है, परंतु वह उनके लिए खुशियों का संपूर्ण भंडार है।
II. कारावास की दीवारों के कारण कवि को अपने घर की दिशाओं का ज्ञान नहीं हो पा रहा है।
(क) कथन I सही है, परंतु II गलत है।
(ख) कथन II सही है, परंतु I गलत है।
(ग) कथन I और II दोनों सही हैं।
(घ) कथन I और II दोनों गलत हैं।

3. इस छंद की काव्यात्मक शैली में किस तत्व की प्रधानता दिखाई देती है?
(क) दार्शनिक और क्लिष्ट शब्दावली
(ख) सहज प्रवाहमयी और बिंबात्मक
(ग) अत्यंत उपदेशात्मक और कड़वी
(घ) केवल तार्किक और शुष्क संवाद

4. काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'चतुर्दिक्' का सही अर्थ क्या है?
(क) बहुत सुंदर दिशा (ख) आसमान की ओर
(ग) केवल एक तरफ (घ) चारों ओर व्याप्त

5. कवि के अनुसार उनका घर किस चीज़ से पूरी तरह परिपूर्ण है?
(क) अत्यधिक भौतिक वैभव से
(ख) केवल शांत वातावरण से
(ग) असीम सुख और खुशियों से
(घ) सुंदर प्राकृतिक दृश्यों से

उत्तरः
1. (ख) आँखों के सामने तैरना
2. (क) कथन I सही है, परंतु II गलत है।
3. (ख) सहज प्रवाहमयी और बिंबात्मक
4. (घ) चारों ओर व्याप्त
5. (ग) असीम सुख और खुशियों से

काव्यांश 3

और माँ बिन-पढ़ी मेरी,
दुख में वह गढ़ी मेरी,
माँ कि जिसकी गोद में सिर,
रख लिया तो दुख नहीं फिर,
माँ कि जिसकी स्नेह-धारा
का यहाँ तक भी पसारा,
उसे लिखना नहीं आता,
जो कि उसका पत्र पाता।

1. 'स्नेह-धारा का यहाँ तक भी पसारा' पंक्ति से कवि का क्या तात्पर्य है?
(क) माँ का पत्र जेल तक पहुँचना
(ख) माँ के प्रेम का असीमित होना
(ग) माँ का रोते हुए दुखी होना
(घ) माँ का जेल में मिलने आना

2. नीचे दिए गए दो कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए:
I. कवि की माँ निरक्षर हैं, जिसके कारण वे कवि को पत्र लिखने में असमर्थ हैं।
II. माँ की ममता इतनी सामर्थ्यवान है कि उसकी गोद में सिर रखते ही सारे कष्ट समाप्त हो जाते हैं।
(क) कथन I सही है, परंतु II गलत है।
(ख) कथन II सही है, परंतु I गलत है।
(ग) कथन I और II दोनों सही हैं।
(घ) कथन I और II दोनों गलत हैं।

3. इस छंद में माँ के प्रति कवि का कैसा भाव मुख्य रूप से व्यक्त हुआ है?
(क) अत्यंत आदर और अगाध श्रद्धा
(ख) केवल करुणा और गहरी दया
(ग) दार्शनिक दूरी और उदासीनता
(घ) तात्कालिक रोष और असंतोष

4. काव्यांश में प्रयुक्त 'गढ़ी' शब्द का संदर्भ के अनुसार क्या अर्थ है?
(क) मिट्टी में दबी हुई
(ख) अत्यधिक डूबी हुई
(ग) बहुत मजबूत बनी हुई
(घ) छिपी हुई स्थिति में

5. कवि को किस बात का मलाल या दुख है जो माँ के संदर्भ में व्यक्त हुआ है?
(क) माँ का अस्वस्थ होना
(ख) माँ का पढ़ा-लिखा न होना
(ग) माँ का उनसे नाराज होना
(घ) माँ का बहुत बूढ़ा होना

22. माँ ने कवि के जेल जाने के बारे में क्या कहा होगा?
(क) यह तुम्हारे जीवन का बिल्कुल गलत और अनुचित निर्णय था
(ख) वह तुम्हारी लीक ही है, यह ठीक ही है मेरे बेटे
(ग) तुम्हें शीघ्र घर वापस आकर परिवार के साथ रहना चाहिए
(घ) तुम्हें अंग्रेजों से माफी माँगकर घर वापस आ जाना चाहिए

उत्तरः
(ख) वह तुम्हारी लीक ही है, यह ठीक ही है

23. माँ ने कहा 'पाँव जो पीछे हटाता, कोख को मेरी लजाता' — इस पंक्ति में माँ का क्या भाव है?
(क) वह चाहती हैं कि कवि संघर्ष छोड़कर घर वापस आ जाए
(ख) वह कवि की वीरता पर गर्वित हैं और पीछे हटना अपमान मानती हैं
(ग) वह भविष्य की परिस्थितियों को लेकर अत्यंत डरी हुई हैं
(घ) वह कवि के निर्णय से बहुत नाराज और दुखी दिखाई देती हैं

उत्तरः
(ख) वह कवि की वीरता पर गर्वित हैं और पीछे हटना अपमान मानती हैं

24. पिताजी ने (कवि की कल्पना में) क्या कहा होगा?
(क) मैं रोता कहाँ हूँ, धीर मैं खोता कहाँ हूँ मेरे बेटे
(ख) भवानी को तुरंत रिहा करवाकर घर वापस लाने का प्रयास करो
(ग) मुझे तुम्हारे भविष्य और जीवन की बहुत अधिक चिंता है
(घ) मैं स्वयं अंग्रेजों से लड़ने के लिए अभी आगे बढ़ूँगा

उत्तरः
(क) मैं रोता कहाँ हूँ, धीर मैं खोता कहाँ हूँ

25. पिताजी को बरसात का मौसम कवि की याद क्यों दिलाता था?
(क) कवि बरसात के दिनों में घर बैठकर पढ़ाई किया करता था
(ख) कवि को बरसात प्यारी थी और वह खुले सिर नंगे बदन घूमता था
(ग) कवि बरसात के मौसम में घर से दूर यात्रा पर जाता था
(घ) बरसात के दिनों में कवि और पिताजी साथ कार्य करते थे

उत्तरः
(ख) कवि को बरसात प्यारी थी और वह खुले सिर नंगे बदन घूमता था

26. कविता में कवि अपने पिताजी की किस आदत का वर्णन करता है?
(क) वे बड़े बाड़े में जाकर लौकी के बीज लगाया करते थे
(ख) वे प्रतिदिन बाजार जाकर आवश्यक वस्तुएँ लाया करते थे
(ग) वे केवल पूजा-पाठ और धार्मिक कार्यों में लगे रहते थे
(घ) वे खाली समय में पुस्तकें पढ़ने का कार्य किया करते थे

उत्तरः
(क) वे बड़े बाड़े में जाकर लौकी के बीज लगाया करते थे

27. 'और अम्मा ठीक बादल' — यहाँ अम्मा की तुलना बादल से क्यों की गई है?
(क) वे हर समय अत्यंत क्रोधित और गुस्से से भरी रहती थीं
(ख) वे भीतर से दुख से भरी थीं पर रो नहीं पा रही थीं
(ग) वे स्वभाव से बहुत शांत और गंभीर दिखाई देती थीं
(घ) वे घर से बाहर कहीं दूर जाने की इच्छा रखती थीं

उत्तरः
(ख) वे भीतर से दुख से भरी थीं पर रो नहीं पा रही थीं

28. कविता में 'शर्म से रो भी न पाएँ, खूब भीतर छटपटाएँ' — यह किनके लिए कहा गया है?
(क) कवि के मित्रों और विद्यालय के साथियों के लिए कहा गया
(ख) भाई, बहन और परिवार के अन्य सदस्यों के लिए कहा गया
(ग) अंग्रेज अधिकारियों और उनके कर्मचारियों के लिए कहा गया
(घ) पड़ोसियों और आसपास रहने वाले लोगों के लिए कहा गया

उत्तरः
(ख) भाई, बहन और परिवार के अन्य सदस्यों के लिए कहा गया

29. 'अभी पानी थम गया है, मन निहायत नम गया है' — यहाँ 'निहायत नम' का क्या भाव है?
(क) मन पूरी तरह भावुक और भीतर से अत्यंत भीगा हुआ है
(ख) मन प्रसन्न होकर खुशी और उत्साह से भर गया है
(ग) मन शांत होकर अब पूरी तरह स्थिर और सहज हो गया
(घ) मन ने कठिन परिस्थिति के बाद राहत अनुभव करना शुरु किया

उत्तरः
(क) मन पूरी तरह भावुक और भीतर से अत्यंत भीगा हुआ है

30. **अभिकथन (A):** कविता में बादलों की तुलना माँ के आँगन लीपने से की गई है।
कारण (R): बादल आकाश में इस तरह फैल गए हैं जैसे माँ आँगन को लीप कर साफ और सुंदर कर देती हैं।
(क) A सही है, R गलत है
(ख) A गलत है, R सही है

10. 'बहुत पानी गिर रहा है, घर नजर में तिर रहा है' — यहाँ 'तिर रहा है' का क्या अर्थ है?
(क) घर धीरे-धीरे पानी के भीतर डूबता हुआ दिखाई दे रहा है
(ख) घर आँखों के सामने तैरता हुआ-सा दिखाई दे रहा है
(ग) घर आग की लपटों में जलता हुआ दिखाई दे रहा है
(घ) घर पानी के तेज बहाव के साथ बहता हुआ दिख रहा है
उत्तरः
(ख) घर आँखों के सामने तैरता हुआ-सा दिखाई दे रहा है

11. कविता में 'घर खुशी का पूर है जो' — यहाँ 'पूर' का क्या अर्थ है?
(क) पूर्ण रूप से खाली (ख) भरा हुआ, परिपूर्ण
(ग) दूर का स्थान (घ) छोटा घर
उत्तरः
(ख) भरा हुआ, परिपूर्ण

12. कवि के घर में कितने भाई थे?
(क) तीन (ख) पाँच
(ग) दो (घ) चार
उत्तरः
(घ) चार

13. कविता में कवि की माँ के बारे में क्या कहा गया है?
(क) वह बहुत पढ़ी-लिखी थीं
(ख) वह बिन-पढ़ी थीं
(ग) वह बहुत कठोर थीं
(घ) वह शहर में रहती थीं
उत्तरः
(ख) वह बिन-पढ़ी थीं

14. 'माँ कि जिसकी गोद में सिर, रख लिया तो दुख नहीं फिर' — इन पंक्तियों में माँ की कैसी छवि उभरती है?
(क) अनुशासनप्रिय और कठोर
(ख) स्नेहमयी और सुख देने वाली
(ग) उदासीन और दूर रहने वाली
(घ) शिक्षित और व्यवहारकुशल
उत्तरः
(ख) स्नेहमयी और सुख देने वाली

15. कविता में पिताजी के व्यक्तित्व को 'वज्र-भुज नवनीत-सा उर' कहा गया है। इसका क्या अर्थ है?
(क) शरीर से अत्यंत दुर्बल और मन से भी कमजोर व्यक्ति थे
(ख) भुजाएँ वज्र जैसी कठोर और हृदय मक्खन जैसा कोमल
(ग) शरीर और मन दोनों से अत्यंत कठोर स्वभाव वाले थे
(घ) बाहर से कोमल और भीतर से कठोर स्वभाव वाले थे
उत्तरः
(ख) भुजाएँ वज्र जैसी कठोर और हृदय मक्खन जैसा कोमल

16. पिताजी के बारे में कविता में कहा गया है कि उन्हें बुढ़ापा एक क्षण भी नहीं व्यापा। इसका क्या तात्पर्य है?
(क) वे बहुत बूढ़े और बीमार हो गए थे
(ख) वे हमेशा युवा जोश से भरे रहते थे
(ग) वे बुढ़ापे से परेशान हो गए थे
(घ) वे बहुत बीमार रहने लगे थे
उत्तरः
(ख) वे हमेशा युवा जोश से भरे रहते थे

17. पिताजी के दिनचर्या में कविता के अनुसार क्या शामिल था?
(क) केवल पूजा-पाठ और शयन
(ख) गीता-पाठ, दंड और मुगदर हिलाना
(ग) खेती करना और पारिवारिक व्यापार संभालना
(घ) केवल धार्मिक पुस्तके पढ़ना
उत्तरः
(ख) गीता-पाठ, दंड और मुगदर हिलाना

18. रिक्त स्थान भरिए:
'पिताजी जिनको बुढ़ापा, एक क्षण भी नहीं ________।'
(क) भाया (ख) आया
(ग) व्यापा (घ) छाया
उत्तरः
(ग) व्यापा

19. कविता में पाँचवाँ कौन है?
(क) कवि का छोटा भाई (ख) कवि स्वयं
(ग) कवि का मित्र (घ) कवि का बड़ा भाई
उत्तरः
(ख) कवि स्वयं

20. 'जिसे सोने पर सुहागा, पिताजी कहते रहे हैं' — यह पंक्ति किसके बारे में कही गई है?
(क) कवि के बड़े भाई के व्यक्तित्व और स्वभाव के बारे में
(ख) कवि के बारे में, जिन्हें पिताजी अत्यंत प्रिय मानते थे
(ग) घर की बहन के स्वभाव और गुणों के बारे में कही गई
(घ) कवि के घनिष्ठ मित्र के व्यवहार और गुणों के बारे में
उत्तरः
(ख) कवि के बारे में, जिन्हें पिताजी अत्यंत प्रिय मानते थे

21. कवि की माँ ने (कवि की कल्पना में) अपने आँसुओं के बारे में क्या कहा होगा?
(क) मैं अपने जीवन के दुखों से अत्यंत परेशान और दुखी हूँ
(ख) आँख में किसलिए पानी, वहाँ अच्छा है भवानी मेरे लाल
(ग) भवानी को जल्दी जेल से छुड़ाकर घर वापस ले आओ
(घ) मुझे हर समय भवानी की चिंता और व्याकुलता रहती है
उत्तरः
(ख) आँख में किसलिए पानी, वहाँ अच्छा है भवानी मेरे लाल

(ग) यह न कहना कि कवि जेल में रहकर जीवन व्यतीत कर रहा है
(घ) यह न कहना कि कवि अब पढ़ाई और कार्य नहीं करता

उत्तरः
(ख) यह न कहना कि मैं जागता हूँ, आदमी से भागता हूँ, मौन हूँ, अस्त हूँ

42. रिक्त स्थान भरिए:
'और कहना मस्त हूँ मैं, कातने में __________ हूँ मैं।'
(क) मस्त (ख) व्यस्त
(ग) रत (घ) लीन

उत्तरः
(ख) व्यस्त

43. कविता में 'काँपते हैं प्राण थर-थर' — यह पंक्ति किस भाव को व्यक्त करती है?
(क) अत्यधिक सर्दी के कारण शरीर के काँपने की स्थिति को दर्शाती है
(ख) बरसात के मौसम में आनंद और उत्साह के भाव को प्रकट करती है
(ग) मन की बेचैनी और घर की याद से उत्पन्न व्याकुलता को व्यक्त करती है
(घ) वर्षा और प्राकृतिक परिस्थितियों से उत्पन्न भय को व्यक्त करती है

उत्तरः
(ग) मन की बेचैनी और घर की याद से उत्पन्न व्याकुलता को व्यक्त करती है

44. 'बोल में बादल गरजता, काम में झंझा लरजता' — यह पंक्ति किनके बारे में है?
(क) माँ के बारे में (ख) पिताजी के बारे में
(ग) भाइयों के बारे में (घ) कवि के बारे में

उत्तरः
(ख) पिताजी के बारे में

45. **अभिकथन (A):** कविता में कवि की माँ को 'बिन-पढ़ी' कहा गया है।
कारण (R): माँ अनपढ़ थीं इसलिए कवि का पत्र जो उन्हें पाता वह उसे नहीं पढ़ सकती थीं।
(क) A सही है, R गलत है
(ख) A गलत है, R सही है
(ग) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
(घ) A और R दोनों गलत हैं

उत्तरः
(ग) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है

46. निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं?
I. कवि के घर में चार भाई और चार बहनें थीं।
II. कवि परिवार में पाँचवाँ संतान था।
III. कवि की माँ पत्र लिखना जानती थीं।
IV. कवि ने 'घर की याद' विदेश में लिखी।
(क) केवल I और IV
(ख) केवल I और II
(ग) केवल II और III
(घ) केवल III और IV

उत्तरः
(ख) केवल I और II

47. 'बहिन आई बाप के घर, हाय रे परिताप के घर' — यहाँ 'परिताप' का क्या अर्थ है?
(क) खुशी और उत्सव
(ख) अत्यधिक दुख और पीड़ा
(ग) घर की सुंदरता
(घ) घर की शांति

उत्तरः
(ख) अत्यधिक दुख और पीड़ा

48. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'घर की याद' कविता के बारे में सही है?
(क) यह कविता केवल प्रकृति और मौसम के दृश्यों का वर्णन करती है
(ख) यह कविता जेल में बंद कवि की पारिवारिक स्मृतियों और प्रेम को व्यक्त करती है
(ग) यह कविता युद्ध की घटनाओं और संघर्षों की पृष्ठभूमि पर आधारित है
(घ) इस कविता में किसी प्रकार का भावनात्मक पक्ष प्रस्तुत नहीं किया गया

उत्तरः
(ख) यह कविता जेल में बंद कवि की पारिवारिक स्मृतियों और उनसे प्रेम को व्यक्त करती है

49. 'गिर रहा पानी झरा-झर, हिल रहे पत्ते हरा-हर, बह रही है हवा सर-सर, काँपते हैं प्राण थर-थर' — इन पंक्तियों में कौन सी काव्य-विशेषता है?
(क) अनुप्रास और ध्वन्यात्मकता
(ख) उपमा और रूपक
(ग) यमक और श्लेष
(घ) मानवीकरण और प्रतीक

उत्तरः
(क) अनुप्रास और ध्वन्यात्मकता

8. माँ ने रोते हुए पिता को ढाँढस बंधाने के लिए उनके आँसू पोंछते हुए क्या तार्किक बातें कहीं?

उत्तरः
जब पिता अपने पाँचवें पुत्र भवानी की याद में रो पड़े होंगे, तब माँ ने अपने स्वयं के आँसुओं को दबाकर पिता को धीरज बंधाया होगा। माँ ने कहा होगा कि तुम आँख में पानी क्यों लाते हो? हमारा भवानी वहाँ जेल में बहुत अच्छा है। वह आपकी दिखाई देशप्रेम की सही राह (लीक) पर ही तो आगे बढ़ा है।

9. "पाँचवें की याद का रे" कहकर कवि स्वयं को अभागा क्यों मानता है?

उत्तरः
कवि अपने संयुक्त परिवार का पाँचवाँ लाडला पुत्र है। परिवार के बाकी चार भाई और चार बहनें इस समय घर पर एक साथ जुड़े हुए हैं। परंतु कवि स्वतंत्रता महासंग्राम के कारण घर से दूर जेल के अकेलेपन में बंद है। परिवार के इस महासुख में शामिल न हो पाने के कारण ही कवि स्वयं को 'अभागा' कहता है।

10. "दुख डटकर ठेलता हूँ" पंक्ति के आधार पर कवि के स्वाभिमानी और जुझारू व्यक्तित्व की समीक्षा कीजिए।

उत्तरः
जेल की अमानवीय यातनाओं और अकेलेपन के बीच भी कवि भवानीप्रसाद मिश्र का हौसला अटूट है। वे विपरीत और कठिन परिस्थितियों के सामने घुटने टेकने के बजाय उनका डटकर (वीरता से) सामना करते हैं और दुखों को दूर ढकेल देते हैं। वे जेल में सूत कातने, पढ़ने और खेलने में व्यस्त रहकर अपने मानसिक साहस को बनाए रखते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'घर की याद' कविता के आधार पर कवि भवानीप्रसाद मिश्र के संयुक्त परिवार की उन विशेषताओं का विस्तृत वर्णन कीजिए जो इसे आपसी प्रेम और सुदृढ़ संबंधों का आदर्श केंद्र बनाती हैं।

उत्तरः
'घर की याद' कविता एक आदर्श और सुखी भारतीय संयुक्त परिवार का सजीव दस्तावेज़ है। कवि का परिवार प्रेम, सौहार्द और अटूट सामाजिक जुड़ाव का एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करता है। परिवार में चार भाई और चार बहनें हैं, जो आपस में अत्यधिक गहरे स्नेह के धागे से बंधे हुए हैं। भाई जहाँ एक-दूसरे के लिए कर्मठ, रक्षक और मजबूत 'भुजा' के समान चौबीस घंटे तत्पर रहते हैं, वहीं बहनें निश्छल और पवित्र 'प्यार' का साक्षात् स्वरूप हैं।

घर का पूरा वातावरण खुशियों से इस कदर सराबोर (पूर) रहता है कि वहाँ किसी भी प्रकार के वैचारिक मतभेद या अलगाव की कोई जगह नहीं है। विपत्ति के समय पूरा परिवार एक चट्टान की तरह एक साथ खड़ा हो जाता है, जिसका प्रमाण माता-पिता द्वारा एक-दूसरे के दुखों को बांटना और धीरज बंधाना है। ऐसा संगठित और स्नेहमयी परिवार ही मनुष्य को जेल जैसी कठिन परिस्थितियों में भी आंतरिक संबल और जीने की अदम्य ऊर्जा प्रदान करता है।

2. "वज्र-भुज नवनीत-सा उर।" 'घर की याद' कविता में वर्णित कवि के पिता के बहुआयामी और प्रभावशाली चरित्र की विस्तृत समीक्षा कीजिए।

उत्तरः
कविता में कवि भवानीप्रसाद मिश्र ने अपने पिता के चरित्र को एक अत्यंत भव्य, प्रेरणादायक और बहुआयामी रूप में उकेरा है। उनके पिता शारीरिक और मानसिक दोनों स्तरों पर असाधारण व्यक्तित्व के स्वामी हैं। 60 से अधिक की उम्र होने के बावजूद उनके भीतर युवाओं जैसा अदम्य उत्साह है; बुढ़ापा उन्हें छू तक नहीं पाया है। वे रोज सुबह दो सौ साठ दंड लगाते हैं और भारी मुगदर घुमाते हैं। उनकी भुजाएँ वज्र के समान कठोर और शक्तिशाली हैं।

इसके साथ ही, उनकी निर्भीकता ऐसी है कि वे शेर या मौत के सामने भी कभी नहीं डगमगाते और उनकी कड़कती वाणी में बादलों जैसी गर्जना है। इस कठोर बाहरी आवरण के भीतर नवनीत (मक्खन) जैसा कोमल, दयालु और बेहद संवेदनशील हृदय धड़कता है। अपने लाडले पाँचवें बेटे को घर में न पाकर उनकी आँखें बच्चों की तरह नम हो जाती हैं। वे देशप्रेमी भी हैं, जिन्होंने अपने बेटे के जेल जाने के फैसले को सहर्ष स्वीकार किया।

3. कारावास की अमानवीय यातनाओं के बीच कवि की माता की भावनात्मक सुदृढ़ता और उनके वात्सल्य का सजीव चित्रण कविता के संदर्भ में विस्तृत रूप से कीजिए।

उत्तरः
कविता में माँ की छवि भले ही एक बिन-पढ़ी (अनपढ़) और घरेलू महिला की है, परंतु उनका वात्सल्य और भावनात्मक सुदृढ़ता किसी भी शिक्षित समाज के लिए एक महान आदर्श है। माँ का हृदय अगाध ममता का सागर है, जिसकी स्नेह-धारा का विस्तार जेल की कालकोठरी तक महसूस होता है। जब पूरा परिवार कवि की अनुपस्थिति में आँसू बहा रहा होता है और स्वयं पिता का धैर्य टूट जाता है, तब माँ एक मार्गदर्शक की भूमिका में सामने आती हैं।

वे अपने स्वयं के असीम दुख को अपने भीतर पूरी तरह गपचाकर (छिपाकर) पिता को बेहद तार्किक रूप से संभालती हैं। वे पिता को याद दिलाती हैं कि भवानी ने देश की आज़ादी के लिए जेल जाकर उनकी ही गौरवशाली परंपरा (लीक) का मान रखा है। यदि वह पीछे हटता, तो मातृभूमि के सामने उनकी कोख लज्जित हो जाती। माँ का यह रूप उनके भीतर छिपे अदम्य साहस, देशभक्ति और असीम नैतिक बल को पूरी तरह प्रकट करता है।

13. "पाँव जो पीछे हटाता, कोख को मेरी लजाता" कथन के पीछे माँ का क्या संदेश है?

उत्तरः
माँ अपने पति को ढाँढस बंधाते हुए कहती हैं कि यदि हमारा बेटा देश के स्वाधीनता आंदोलन से डरकर कदम पीछे हटा लेता, तो वह मेरी कोख को कलंकित (लजाता) करता। उसने जेल जाकर देश का मान बढ़ाया है।

14. कवि सावन के बादलों से जेल की कौन-सी बातें छिपाने का आग्रह करता है?

उत्तरः
कवि सावन से कहता है कि वह घर जाकर यह बिल्कुल न बताए कि मैं जेल में रात-भर जागता रहता हूँ , अवसाद के कारण मनुष्यों से दूर भागता हूँ और गुमसुम (मौन) होकर अपनी सुध-बुध खो बैठा हूँ।

15. "यो न कहना अस्त हूँ मैं" कहकर कवि परिजनों को किस स्थिति से बचाना चाहता है?

उत्तरः
कवि सावन को समझाता है कि परिजनों से यह मत कहना कि मैं जेल में पूरी तरह हताश, निराश या अस्त (समाप्त) हो चुका हूँ। ऐसा सत्य जानने पर घर के लोग गहरे मानसिक दुख में डूब जाएँगे।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भवानीप्रसाद मिश्र के साहित्यिक और प्रशासनिक जीवन के विविध आयामों पर प्रकाश डालिए।

उत्तरः
कवि भवानीप्रसाद मिश्र का जीवन बहुआयामी रहा है। उन्होंने राष्ट्रभाषा प्रचार समिति में निष्ठापूर्वक कार्य करने के साथ-साथ प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका 'कल्पना' का सफल संपादन भी किया। इसके अतिरिक्त, वे सन् 1955-58 के मध्य आकाशवाणी के हिंदी कार्यक्रमों से गहरे जुड़े रहे और उन्होंने संपूर्ण 'गांधी वाङ्मय' का संपादन करके अपनी उत्कृष्ट साहित्यिक और प्रशासनिक योग्यता का परिचय दिया।

2. 'घर की याद' कविता में कवि के प्राण और मन के थिरकने तथा व्याकुल होने का क्या कारण है?

उत्तरः
जेल की कोठरी में बंद कवि भवानीप्रसाद मिश्र जब देखते हैं कि बाहर रात-भर से मूसलाधार पानी गिर रहा है, तो प्राकृतिक वातावरण की इस नमी से उनका प्राण और मन व्याकुल हो उठता है। वर्षा की यह झड़ी उनके मन में स्मृतियों का सैलाब लाती है, जिससे उनका पूरा संयुक्त परिवार और घर उनकी आँखों के सामने तैरने (तिरने) लगता है।

3. "घर खुशी का पूर है जो, घर कि मुझसे दूर है जो" पंक्ति का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः
इस पंक्ति का भाव यह है कि कवि का घर स्नेह, शांति और परस्पर आपसी प्रेम के कारण हमेशा खुशियों से पूरी तरह भरा-पूरा (पूर) रहता था। परंतु आज स्वतंत्रता आंदोलन के कारण कवि देश की आज़ादी के लिए जेल में बंद हैं। अतः खुशियों का वह केंद्र आज उनसे बहुत दूर हो चुका है, जिसका अकेलापन उन्हें अत्यधिक कष्ट दे रहा है।

4. कवि की माता के स्नेह का विस्तार कहाँ तक फैला हुआ है और कवि को उसकी कमी कैसे खलती है?

उत्तरः
कवि की माँ ममता की साक्षात् प्रतिमूर्ति हैं। उनका असीम वात्सल्य और स्नेह की पावन धारा केवल घर तक ही सीमित नहीं है, बल्कि उसका पसार (विस्तार) जेल की ऊँची दीवारों को लांघकर कवि तक पहुँच रहा है। कवि को माँ की बिन-पढ़ी होने की कमी खलती है, क्योंकि अनपढ़ होने के कारण वे पत्र नहीं लिख पातीं।

5. "पिताजी जिनको बुढ़ापा, एक क्षण भी नहीं व्यापा" पंक्ति के आधार पर पिता के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की विशेषता लिखिए।

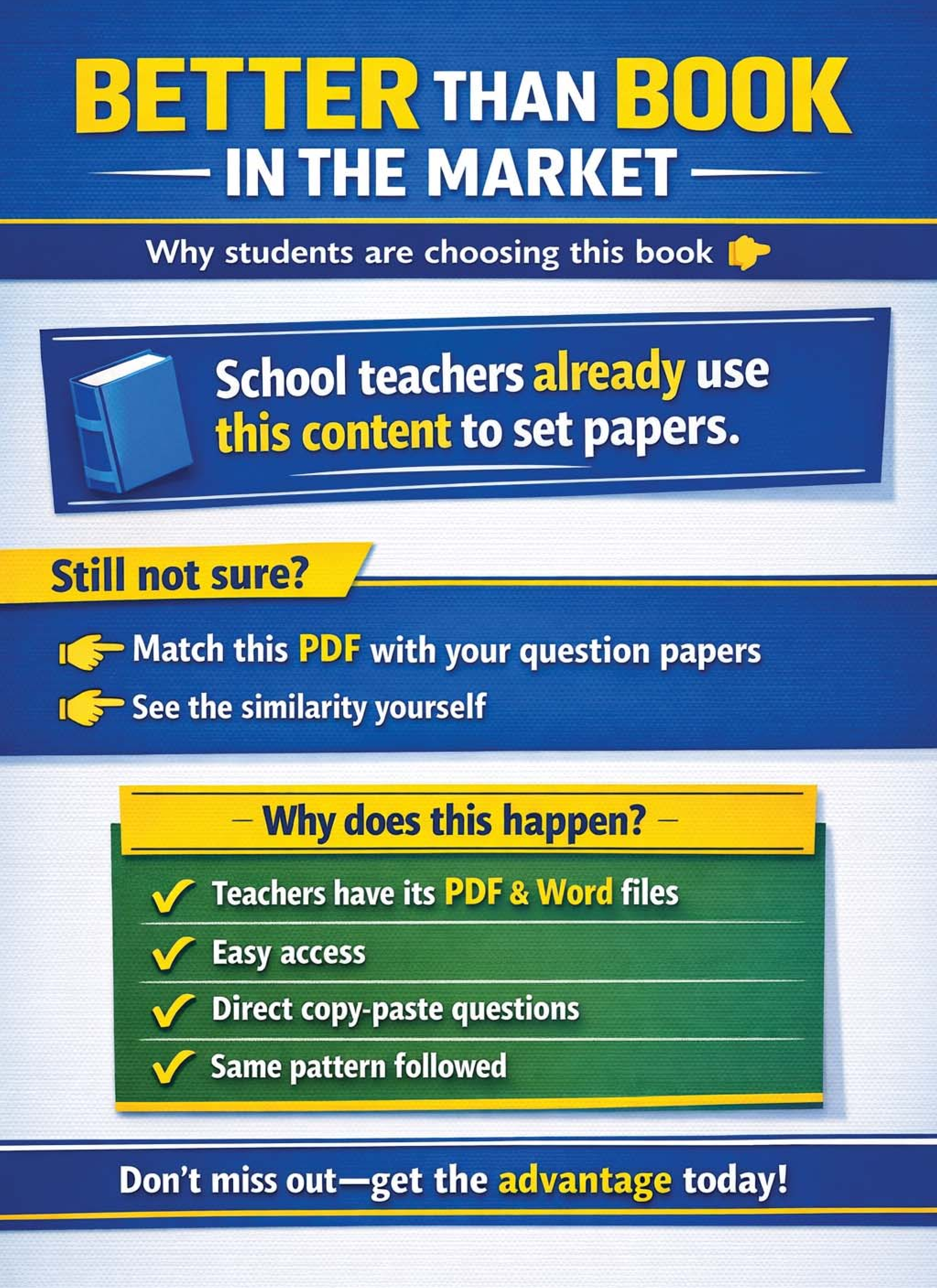
उत्तरः
कवि के पिता यद्यपि आयु से वृद्ध हो चुके हैं, परंतु उनके शरीर और मन पर बुढ़ापे का लेशमात्र (एक क्षण) भी असर नहीं दिखाई देता। वे आज भी युवाओं की भाँति तेजी से दौड़ सकते हैं और बच्चों की तरह खिलखिलाकर हँस सकते हैं। उनका अद्भुत मानसिक उत्साह बुढ़ापे को उनके पास फटकने नहीं देता।

6. पिता के पराक्रम और निर्भीकता को कवि ने किन शब्दों में महिमामंडित किया है?

उत्तरः
कवि के अनुसार उनके पिता भोले होने के साथ-साथ अत्यंत बहादुर और पराक्रमी हैं। वे इतने साहसी हैं कि मौत के सामने भी कभी नहीं हिचकिचाते और साक्षात् शेर को सामने देखकर भी विचलित नहीं होते। जब वे बोलते हैं, तो उनकी वाणी में बादलों जैसी गर्जना होती है और काम करते समय तूफ़ान (झंझा) भी उनके वेग से शर्मा जाता है।

7. पिता की नियमित दिनचर्या का उल्लेख करते हुए बताइए कि वे किस प्रकार का व्यायाम करते हैं?

उत्तरः
कवि के पिता की दिनचर्या अत्यंत अनुशासित और कड़े शारीरिक श्रम से युक्त है। वे रोज सुबह उठकर नियमित रूप से 'गीता-पाठ' करते हैं। इसके बाद, वे पूरे दो सौ साठ (260) दंड-बैठक लगाते हैं और फिर भारी-भरकम मुगदर की मूठों को आपस में मिलाते हुए उसे चारों ओर खूब घुमाकर हिलाते हैं।



BETTER THAN BOOK
IN THE MARKET
Why students are choosing this book
School teachers already use this content to set papers.
Still not sure?
Match this PDF with your question papers
See the similarity yourself
Why does this happen?
Teachers have its PDF & Word files
Easy access
Direct copy-paste questions
Same pattern followed
Don't miss out—get the advantage today!

(ग) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
(घ) A और R दोनों गलत हैं

उत्तरः
(ग) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है

31. 'एक पंछी बोलता है, घाव उर के खोलता है' — यहाँ 'उर' का क्या अर्थ है?
(क) आकाश (ख) हृदय
(ग) पेड़ (घ) घर

उत्तरः
(ख) हृदय

32. 'पिताजी का वेश मुझको, दे रहा है क्लेश मुझको' — पिताजी के वेश का स्मरण कवि को क्लेश क्यों देता है?
(क) पिताजी का वेश बहुत साधारण था
(ख) पिताजी की याद सताती है और उनसे दूर होने का दर्द होता है
(ग) पिताजी के वेश में कोई कमी थी
(घ) कवि पिताजी से नाराज था

उत्तरः
(ख) पिताजी की याद सताती है और उनसे दूर होने का दर्द होता है

33. 'देह एक पहाड़ जैसे, मन कि बड़ का झाड़ जैसे' — यह किनके लिए कहा गया है?
(क) कवि के भाई के लिए (ख) कवि के मित्र के लिए
(ग) कवि की माँ के लिए (घ) कवि के पिताजी के लिए

उत्तरः
(घ) कवि के पिताजी के लिए

34. 'एक पत्ता टूट जाए, बस कि धारा फूट जाए' — यह पंक्ति पिताजी के बारे में क्या बताती है?
(क) वे बहुत कठोर और निर्दयी हृदय के थे
(ख) वे अत्यंत भावुक और संवेदनशील थे
(ग) वे कमजोर शरीर के थे
(घ) वे बहुत क्रोधी और हठीले थे

उत्तरः
(ख) वे अत्यंत भावुक और संवेदनशील थे

35. कवि ने सावन के बादल से क्या आग्रह किया?
(क) तुम बरसो, पर परिवार को मेरे दुख मत बताना
(ख) परिवार को मुझसे मिलने जेल आने के लिए कहो
(ग) मेरे परिवार वालों को कहो कि मुझे जेल से छुड़ा ले
(घ) परिवार को मेरे बारे में कुछ मत बताना

उत्तरः
(क) तुम बरसो, पर परिवार को मेरे दुख मत बताना

36. कवि ने सावन को क्या कहकर संबोधित किया है?
(क) हे मेघ, हे घन
(ख) हे सजीले हरे सावन, हे कि मेरे पुण्य पावन
(ग) हे काले बादल, हे घनघोर सावन
(घ) हे वर्षा, हे जल

उत्तरः
(ख) हे सजीले हरे सावन, हे कि मेरे पुण्य पावन

37. कवि ने सावन के बादल से परिवार को क्या-क्या बताने को कहा?
(क) मैं बीमार हूँ और दुखी हूँ
(ख) मैं मजे में हूँ, लिख-पढ़ रहा हूँ, काम-नाम कर रहा हूँ, मस्त हूँ
(ग) मैं परेशान हूँ मुझे घर की याद आ रही है मुझे यहाँ से घर जाना है
(घ) मुझे जल्द छोड़ दिया जाएगा

उत्तरः
(ख) मैं मजे में हूँ, लिख-पढ़ रहा हूँ, काम-नाम कर रहा हूँ, मस्त हूँ

38. रिक्त स्थान भरिए:
'मैं मजे में हूँ सही है, घर नहीं हूँ __________ यही है।'
(क) पर (ख) बस
(ग) तो (घ) हाँ

उत्तरः
(ख) बस

39. 'किंतु यह बस बड़ा बस है, इसी बस से सब विरस है' — यहाँ 'विरस' का क्या अर्थ है?
(क) सरस और आनंदमय (ख) नीरस और कष्टकर
(ग) शांत और सुखद (घ) उत्साहपूर्ण

उत्तरः
(ख) नीरस और कष्टकर

40. **अभिकथन (A):** कवि बादल से कहता है कि परिवार को बताओ कि वह मस्त है और वजन सत्तर सेर है।
कारण (R): कवि नहीं चाहता कि परिवार उसकी जेल की वास्तविक तकलीफ जानकर दुखी हो।
(क) A सही है, R गलत है
(ख) A गलत है, R सही है
(ग) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
(घ) A और R दोनों गलत हैं

उत्तरः
(ग) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है

41. कवि ने बादल से क्या न बताने का आग्रह किया?
(क) परिवार के लोगों को मेरी कोई भी बात बिल्कुल न बताना
(ख) यह न कहना कि मैं जागता हूँ, आदमी से भागता हूँ, मौन हूँ, अस्त हूँ

4. कवि भवानीप्रसाद मिश्र ने सावन के बादलों को किस प्रकार एक चतुर 'संदेशवाहक' के रूप में कल्पित किया है? वे अपने परिवार को क्या संदेश देना चाहते हैं और क्यों?

उत्तरः
कालिदास के 'मेघदूत' की प्राचीन साहित्यिक परंपरा का निर्वाह करते हुए कवि भवानीप्रसाद मिश्र ने सजीले और पवित्र सावन के बादलों को एक अत्यंत संवेदनशील संदेशवाहक (दूत) के रूप में चुना है। कवि बादलों के माध्यम से अपने माता-पिता तक अपनी कुशलता का संदेश भेजना चाहते हैं, परंतु वे नहीं चाहते कि उनके वास्तविक कष्टों को जानकर परिवार दुखी हो। इसलिए वे सावन से बड़ी चतुराई से कहते हैं कि तुम वहाँ जाकर खूब बरस लेना, परंतु मेरे माता-पिता की आँखों को मत बरसने देना।

उन्हें कहना कि मैं जेल में बहुत मजे में हूँ, सूत कातने में व्यस्त हूँ, डटकर ढेर सारा खाना खाता हूँ और दुखों को खेल-कूद में उड़ा देता हूँ। कवि सावन को कड़ा निर्देश देते हैं कि भूलकर भी उन्हें सच मत बता देना कि मैं यहाँ अकेलापन के कारण रात-भर जागता हूँ और अवसाद में हूँ। कवि का यह प्रयास उनके अपने परिवार के प्रति अगाध प्रेम, सांत्वना देने की इच्छा और उनके त्याग को दर्शाता है।

5. 'घर की याद' कविता के भाषाई शिल्प, प्रकृति के उपादानों (वर्षा) के प्रतीकात्मक प्रयोग तथा इसके ध्वन्यात्मक एवं नाद सौंदर्य का सोदाहरण विस्तृत विवेचन कीजिए।

उत्तरः
'घर की याद' कविता भाषाई शिल्प और काव्यात्मक सौंदर्य की दृष्टि से हिंदी साहित्य की एक अनूठी और जीवंत कृति है। कवि ने इस कविता में अत्यंत सरल, सहज और आम बोलचाल की लोकभाषा का प्रयोग किया है, जिसमें 'छिन' और 'चुआ' जैसे स्थानीय क्षेत्रीय शब्दों का बहुत ही सुंदर समावेश है। कविता में 'वर्षा' या लगातार पानी का गिरना केवल एक प्राकृतिक घटना नहीं है, बल्कि वह कवि के भीतर उमड़ते दुखों, स्मृतियों और अकेलेपन की पीड़ा का एक बहुत ही सशक्त प्रतीकात्मक माध्यम है।

कवि ने कविता में शब्दों का चयन इस प्रकार किया है कि पढ़ते समय कानों में एक नाद सौंदर्य (ध्वन्यात्मकता) गूँजने लगता है। उदाहरण के लिए:
"गिर रहा पानी झरा-झर, हिल रहे पत्ते हरा-हर,
बह रही है हवा सर-सर, काँपते हैं प्राण थर-थर।"
इन पंक्तियों में 'झरा-झर', 'हरा-हर', 'सर-सर' और 'थर-थर' जैसे अनुकरणात्मक शब्दों के प्रयोग से सावन की मूसलाधार झड़ी का एक अत्यंत सजीव दृश्य और नाद बिंब पाठकों के हृदय पटल पर पूरी तरह अंकित हो जाता है।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

काव्यांश 1

आज पानी गिर रहा है,
बहुत पानी गिर रहा है,
रात-भर गिरता रहा
प्राण मन घिरता रहा

1. 'प्राण मन घिरता रहा' वाक्यांश कवि की किस आंतरिक मनःस्थिति की ओर संकेत करता है?
(क) अत्यधिक शारीरिक थकान
(ख) स्मृतियों का गहरा दबाव
(ग) वर्षा का प्राकृतिक आनंद
(घ) कारावास का तीव्र डर

2. **अभिकथन (A):** बाहर निरंतर हो रही भारी वर्षा कवि के हृदय में घर की याद को तीव्रता से जगा रही है।
कारण (R): रात-भर गिरते पानी के कारण कवि का मन और प्राण अपने परिजनों की यादों से घिर गए हैं।
(क) (A) सही है, परंतु (R) गलत है।
(ख) (A) गलत है, परंतु (R) सही है।
(ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. इस प्रारंभिक छंद में प्रकृति और कवि के मनोभावों के बीच किस प्रकार का मुख्य मूड स्थापित हुआ है?
(क) अत्यंत कारुणिक और उदास
(ख) अत्यधिक विद्रोही और उग्र
(ग) पूर्णतः शांत और दार्शनिक
(घ) ओजपूर्ण और ओजस्वी

4. काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'प्राण' का संदर्भ के अनुसार क्या अर्थ है?
(क) जीवन की वायु (ख) हृदय की धड़कन
(ग) आंतरिक अंतरात्मा (घ) सोचने की शक्ति

5. काव्यांश के अनुसार पानी कब से और किस मात्रा में निरंतर गिर रहा है?
(क) सुबह से थोड़ी मात्रा में (ख) दोपहर से रुक-रुक कर
(ग) शाम से तेज हवा संग (घ) रात-भर से बहुत अधिक

उत्तरः
1. (ख) स्मृतियों का गहरा दबाव
2. (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
3. (क) अत्यंत कारुणिक और उदास
4. (ग) आंतरिक अंतरात्मा
5. (घ) रात-भर से बहुत अधिक

50. भवानीप्रसाद मिश्र का निधन किस वर्ष हुआ?
(क) 1990 (ख) 1975
(ग) 1980 (घ) 1985
उत्तरः
(घ) 1985

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भवानीप्रसाद मिश्र का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
उत्तरः
कवि भवानीप्रसाद मिश्र का जन्म सन् 1913 में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद (जिसका वर्तमान नाम अब नर्मदापुरम है) में हुआ था। वे स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय रहने वाले प्रमुख कवियों में से एक थे।

2. कवि भवानीप्रसाद मिश्र को किस रचना पर 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था?
उत्तरः
भवानीप्रसाद मिश्र को उनके सुप्रसिद्ध कविता संग्रह 'बुनी हुई रस्सी' पर प्रतिष्ठित 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' प्रदान कर सम्मानित किया गया था।

3. कवि मिश्र ने किस लोकप्रिय साहित्यिक पत्रिका का संपादन किया और कब किया?
उत्तरः
भवानीप्रसाद मिश्र ने सन् 1952 से 1955 तक हैदराबाद से प्रकाशित होने वाली हिंदी की अत्यंत लोकप्रिय साहित्यिक पत्रिका 'कल्पना' का कुशलतापूर्वक संपादन किया था।

4. 'घर की याद' कविता किस आंदोलन की पृष्ठभूमि में और कहाँ लिखी गई थी?
उत्तरः
यह कविता सन् 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' के दौरान लिखी गई थी। आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के कारण ब्रिटिश सरकार द्वारा जेल में तीन वर्ष के कारावास के दौरान कवि ने इसे लिखा था।

5. 'घर की याद' कविता की केंद्रीय संवेदना या मुख्य विषय क्या है?
उत्तरः
परिवार की मधुर स्मृति ही इस पूरी कविता की केंद्रीय संवेदना है। कारावास की एकांत रातों में घर को याद करते हुए कवि के मन में अपने परिजनों की यादें एक-एक करके उभरती हैं।

6. "प्राण मन घिरता रहा" पंक्ति से कवि का क्या तात्पर्य है?
उत्तरः
जेल में रात-भर लगातार तेज पानी बरसने के कारण कवि का मन अपने परिवार की पुरानी और सुखद यादों से पूरी तरह घिर गया। घर की अत्यधिक याद आने से उनका हृदय भावुक और व्याकुल हो उठा।

7. कारावास में कवि के लिए एक-एक क्षण का समय कैसे व्यतीत हो रहा है?
उत्तरः
परिजनों से दूर जेल के कष्टप्रद और एकाकी वातावरण में कवि के लिए समय का एक-एक छोटा क्षण (छिन) भी सौ वर्षों के समान अत्यंत लंबा, धीमा और कष्टदायी प्रतीत हो रहा है।

8. कवि ने अपने भाइयों और बहनों के लिए किन सुंदर उपमानों का प्रयोग किया है?
उत्तरः
कवि ने अपने चार भाइयों को कर्म और सुरक्षा के प्रतीक "भुजा" के समान तथा अपनी चार बहनों को असीम स्नेह और आत्मीयता के प्रतीक "प्यार" के समान कहकर संबोधित किया है।

9. मायके आई हुई बहन के लिए पिता का घर 'परिताप का घर' क्यों बन गया?
उत्तरः
बहन मायके में अपने पिता के घर असीम खुशियाँ समेटने आई थी। परंतु वहाँ अपने पाँचवें भाई (कवि भवानीप्रसाद) को जेल में होने के कारण अनुपस्थित पाकर उसका हृदय अत्यधिक दुख (परिताप) से भर गया।

10. कवि की माता के अनपढ़ होने का क्या नुकसान कवि को जेल में खल रहा है?
उत्तरः
कवि की माँ बेचारी अनपढ़ (बिन-पढ़ी) हैं, इसलिए उन्हें लिखना नहीं आता है। यदि वे पढ़ी-लिखी होतीं, तो जेल में बंद कवि को उनका स्नेह से भरा पत्र प्राप्त होता, जो इस समय उन्हें नहीं मिल पा रहा है।

11. "वज्र-भुज नवनीत-सा उर" पंक्ति पिता के चरित्र की किस विशेषता को उजागर करती है?
उत्तरः
यह पंक्ति दर्शाती है कि पिता का शरीर और भुजाएँ किसी वज्र के समान अत्यंत सुदृढ़, मजबूत और साहसी हैं। परंतु उनका हृदय नवनीत (ताजे मक्खन) के समान अत्यंत कोमल, दयालु और संवेदनशील है।

12. नीचे उतरने पर पिता की आँखों में आँसू आने का क्या कारण रहा होगा?
उत्तरः
जब पिता छत पर नियमित व्यायाम और पाठ करके नीचे आँगन में आए होंगे, तो उन्हें अपने चारों बेटे-बेटियाँ तो दिखे होंगे। परंतु अपने लाडले पाँचवें पुत्र को न पाकर उनकी आँखें भर आई होंगी।

उत्तरः
1. (ख) माँ के प्रेम का असीमित होना
2. (ग) कथन I और II दोनों सही हैं।
3. (क) अत्यंत आदर और अगाध श्रद्धा
4. (ख) अत्यधिक डूबी हुई
5. (ख) माँ का पढ़ा-लिखा न होना

काव्यांश 4

पिताजी जिनको बुढ़ापा,
एक क्षण भी नहीं व्यापा,
जो अभी भी दौड़ जाएँ,
जो अभी भी खिलखिलाएँ,
मौत के आगे न हिचकें,
शेर के आगे न बिचकें,
बोल में बादल गरजता,
काम में झंझा लरजता,

1. 'काम में झंझा लरजता' पंक्ति से पिताजी के किस गुण का बोध होता है?
(क) अत्यधिक क्रोधित होना (ख) अत्यंत तीव्र कार्यक्षमता
(ग) काम से डरकर काँपना (घ) बुढ़ापे के कारण थकना

2. **अभिकथन (A):** कवि के पिताजी वृद्ध होते हुए भी पूरी तरह ऊर्जावान और नवयुवक जैसे सक्रिय हैं।
कारण (R): उनके जीवन में बुढ़ापे की शारीरिक और मानसिक कमजोरी एक क्षण के लिए भी दिखाई नहीं देती।
(क) (A) सही है, परंतु (R) गलत है।
(ख) (A) गलत है, परंतु (R) सही है।
(ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. पिताजी के व्यक्तित्व का वर्णन करने के लिए कवि ने किस प्रकार की शैली और शब्दावली चुनी है?
(क) अत्यंत ओजपूर्ण और प्रभावशाली
(ख) बहुत कोमल और विरहपूर्ण
(ग) गूढ़ आध्यात्मिक और कठिन
(घ) उदासीन और सामान्य गद्यात्मक

4. काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'बिचकें' का क्या अर्थ है?
(क) बहुत खुश होना (ख) डरकर पीछे हटना
(ग) तेजी से आगे बढ़ना (घ) शांत होकर बैठना

5. काव्यांश के अनुसार पिताजी की वाणी (बोल) में किसकी जैसी गर्जना सुनाई देती है?
(क) गरजते हुए शेर जैसी
(ख) कड़कती हुई बिजली जैसी
(ग) उमड़ते हुए बादलों जैसी
(घ) तेज बहती हुई हवा जैसी

उत्तरः
1. (ख) अत्यंत तीव्र कार्यक्षमता
2. (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
3. (क) अत्यंत ओजपूर्ण और प्रभावशाली
4. (ख) डरकर पीछे हटना
5. (ग) उमड़ते हुए बादलों जैसी

काव्यांश 5

और माँ ने कहा होगा,
दुख कितना बहा होगा
आँख में किसलिए पानी,
वहाँ अच्छा है भवानी,
वह तुम्हारा मन समझकर,
और अपनापन समझकर,
गया है सो ठीक ही है
यह तुम्हारी लीक ही है,

1. 'यह तुम्हारी लीक ही है' कहकर माँ ने किस परंपरा या सत्य की ओर संकेत किया है?
(क) परिवार से अलग रहने की रीति
(ख) देश-हित के लिए त्याग की राह
(ग) कारावास भुगतने की विवशता
(घ) संन्यास मार्ग को अपनाना

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. माँ स्वयं भीतर से अत्यंत दुखी हैं, परंतु वे पिताजी को सांत्वना देकर उनका धैर्य बढ़ा रही हैं।
II. माँ के अनुसार भवानी (कवि) का देश आंदोलन में जाना उनके कुल की मर्यादा के सर्वथा विरुद्ध था।
(क) कथन I सही है, परंतु II गलत है।
(ख) कथन II सही है, परंतु I गलत है।
(ग) कथन I और II दोनों सही हैं।
(घ) कथन I और II दोनों गलत हैं।

3. इस छंद में माँ के वचनों के पीछे उनकी किस आंतरिक शक्ति का परिचय मिलता है?
(क) राजनैतिक चतुराई का
(ख) मानसिक और चारित्रिक दृढ़ता का
(ग) अत्यधिक भावुक कमजोरी का
(घ) सांसारिक विरक्ति की भावना का

4. काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'लीक' का सही अर्थ क्या है?
(क) कोई लंबी रेखा (ख) स्थापित परंपरा या रास्ता
(ग) प्राचीन लिखित ग्रंथ (घ) मन का कोई भ्रम

5. माँ के अनुसार भवानी (कवि) किसके कारण और क्या समझकर आंदोलन की राह पर गया है?
(क) मित्रों के दबाव में आकर
(ख) राजा की आज्ञा का पालन करने

9. आत्मनिर्भर भारत: संकल्प से सिद्धि

संकेत-बिंदुः • आत्मनिर्भरता की अवधारणा • 'लोकल फॉर वोकल' का महत्व • स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा • वैश्विक पटल पर स्थान।

उत्तरः

आत्मनिर्भर भारतः संकल्प से सिद्धि

आत्मनिर्भर भारत केवल एक सरकारी योजना या नारा नहीं है, बल्कि यह देश के आत्मसम्मान और आर्थिक स्वतंत्रता को पुनः प्राप्त करने का एक महा-संकल्प है। इसका मूल उद्देश्य विदेशी वस्तुओं पर अपनी निर्भरता को न्यूनतम करके देश के भीतर ही उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों का निर्माण करना है। जब देश का प्रत्येक नागरिक 'लोकल फॉर वोकल' के मंत्र को आत्मसात करेगा, तभी हमारे पारंपरिक कुटीर उद्योगों और स्थानीय कारीगरों को नई संजीवनी मिलेगी। स्वदेशी तकनीक, अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देकर हम न केवल अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं, बल्कि वैश्विक स्तर पर एक बड़े निर्यातक बनकर उभर सकते हैं। युवाओं का कौशल विकास और लघु उद्योगों की मजबूती ही भारत को विश्व गुरु और आर्थिक महाशक्ति बनाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी।

10. स्टार्टअप इंडिया: युवाओं की नई उड़ान

संकेत-बिंदुः • योजना का उद्देश्य • नौकरी प्रदाता बनना • नवाचार को बढ़ावा • आर्थिक विकास में योगदान।

उत्तरः

स्टार्टअप इंडियाः युवाओं की नई उड़ान

'स्टार्टअप इंडिया' अभियान ने देश के युवाओं की सोच और कार्यशैली में एक क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया है। इस दूरदर्शी योजना का मुख्य उद्देश्य देश के भीतर नए विचारों, नवाचार और उद्यमशीलता को बढ़ावा देना है। अब भारत का युवा पारंपरिक नौकरियों के पीछे भागने के बजाय अपनी प्रतिभा के बल पर नए उद्योग स्थापित कर रहा है। वे 'नौकरी ढूंढने वाले' के स्थान पर 'नौकरी देने वाले' बनकर समाज के सामने उभर रहे हैं। आज विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय स्टार्टअप्स अपनी अनूठी तकनीकों से वैश्विक स्तर पर पहचान बना रहे हैं, जिससे देश में बड़े पैमाने पर नए रोजगार पैदा हो रहे हैं। सरकार द्वारा दी जाने वाली वित्तीय सहायता और करों में छूट ने युवाओं के सपनों को नई उड़ान दी है, जिससे देश का आर्थिक ढांचा मजबूत हो रहा है।

11. ऐसे हों पड़ोसी

संकेत-बिंदुः • सुख-दुख के साथी • अच्छे पड़ोसी के लक्षण • बढ़ता एकाकीपन • सामाजिक महत्व।

उत्तरः

ऐसे हों पड़ोसी

मानव एक सामाजिक प्राणी है और समाज में परिवार के बाद यदि कोई सबसे निकट होता है, तो वह हमारा पड़ोसी है। सगा संबंधी तो दूर किसी दूसरे शहर में रहता है, परंतु सुख हो या कोई अचानक आई विपत्ति, पड़ोसी ही सबसे पहले हमारे द्वार पर आकर खड़ा होता है। एक अच्छे पड़ोसी के मुख्य लक्षण हैं—आपसी सहयोग, सहिष्णुता, सुख-दुख में भागीदारी और एक-दूसरे की निजता का सम्मान करना। आज के महानगरीय जीवन में स्वार्थ और अविश्वास के कारण लोग फ्लैटों में बंद होकर एकाकी जीवन जी रहे हैं, जहाँ बगल के घर में रहने वाले का नाम तक किसी को ज्ञात नहीं होता। यह प्रवृत्ति सामाजिक ताने-बाने के लिए अत्यंत घातक है। हमें अपनी संकीर्ण सोच का परित्याग कर पड़ोसियों के साथ मधुर, सौहार्दपूर्ण और जीवंत संबंध बनाए रखने चाहिए।

12. जीवन में संघर्ष का महत्त्व

संकेत-बिंदुः • संघर्ष ही जीवन है • व्यक्तित्व का निखार • कायरता बनाम वीरता • सफलता की कुंजी।

उत्तरः

जीवन में संघर्ष का महत्त्व

संघर्ष जीवन का शाश्वत सत्य और इसकी वास्तविक कसौटी है। जिस प्रकार सोने को अपनी शुद्धता और चमक साबित करने के लिए आग में तपना पड़ता है, ठीक उसी प्रकार मनुष्य का व्यक्तित्व भी विपरीत परिस्थितियों के संघर्ष में तपकर ही निखरता है। कठिनाइयाँ हमें तोड़ने के लिए नहीं, बल्कि हमारे भीतर छिपी आंतरिक शक्ति और साहस को जगाने के लिए आती हैं। जो व्यक्ति बाधाओं से डरकर पीछे हट जाते हैं, वे कायर कहलाते हैं और जीवन की दौड़ में पिछड़ जाते हैं। इसके विपरीत, वीर पुरुष प्रत्येक चुनौती को एक सुअवसर मानकर उसका डटकर मुकाबला करते हैं। बिना संघर्ष के प्राप्त हुई सफलता का कोई गौरव और मूल्य नहीं होता। जीवन-पथ पर निरंतर आगे बढ़ते रहने और विपरीत लहरों को चीरने का नाम ही वास्तविक पुरुषार्थ है।

13. परीक्षा के दिनों में विद्यार्थियों की मनोदशा

संकेत-बिंदुः • परीक्षा का भय और तनाव • अभिभावकों की अपेक्षाएँ • समय-नियोजन • सकारात्मक दृष्टिकोण।

उत्तरः

परीक्षा के दिनों में विद्यार्थियों की मनोदशा

परीक्षा का नाम सुनते ही अधिकांश विद्यार्थियों के मन में भय, व्याकुलता और एक अज्ञात मानसिक तनाव का संचार होने लगता है। इस परीक्षा मनोदशा का मुख्य कारण पाठ्यक्रम को समय पर पूरा न कर पाना और परीक्षा में सर्वोच्च अंक लाने का अत्यधिक दबाव है। अक्सर अभिभावकों की ऊँची अपेक्षाएँ और सहपाठियों के साथ तुलना इस मानसिक तनाव

(ग) ध्यान करने की मुद्रा
(घ) मिट्टी का पात्र

5. इस छंद में 'गीता-पाठ' के उल्लेख से किस भाव का संकेत मिलता है?
(क) पिताजी की धार्मिक आस्था और आत्मिक शक्ति
(ख) पिताजी की विद्वत्ता और अहंकार
(ग) घर में मंदिर होने की जानकारी
(घ) कवि के लिए धर्म-उपदेश देने की भावना

उत्तरः
1. (ख) पाँचवें पुत्र की याद में आँखें भर आने की
2. (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
3. (घ) स्फूर्ति और अनुशासन
4. (ख) मुट्ठी / मुट्ठी-भर चीज
5. (क) पिताजी की धार्मिक आस्था और आत्मिक शक्ति

काव्यांश 8

पाँचवाँ मैं हूँ अभागा,
जिसे सोने पर सुहागा,
पिताजी कहते रहे हैं,
प्यार में बहते रहे हैं,
आज उनके स्वर्ण बेटे,
लगे होंगे उन्हें हेटे,
क्योंकि मैं उन पर सुहागा
बँधा बैठा हूँ अभागा,

1. 'सोने पर सुहागा' मुहावरे का प्रयोग यहाँ किस संदर्भ में हुआ है?
(क) पिताजी को कवि पर गर्व था, वे उसे सर्वोत्तम मानते थे
(ख) कवि सोना और सुहागा लेकर आया था
(ग) घर में स्वर्ण आभूषण बनाने का कार्य होता था
(घ) पिताजी धन-दौलत को सर्वोच्च मानते थे

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कवि स्वयं को 'अभागा' इसलिए कहता है क्योंकि वह जेल में बंद है और पिताजी को दुख दे रहा है।
II. पिताजी के लिए 'स्वर्ण बेटा' अब 'हेटा' (हेय/तुच्छ) लगने लगा है क्योंकि उसने गलत काम किया।
(क) कथन I सही है, परंतु II गलत है।
(ख) कथन II सही है, परंतु I गलत है।
(ग) कथन I और II दोनों सही हैं।
(घ) कथन I और II दोनों गलत हैं।

3. 'प्यार में बहते रहे हैं' पंक्ति से पिताजी के स्वभाव के बारे में क्या पता चलता है?
(क) वे अत्यधिक कठोर और अनुशासनप्रिय हैं
(ख) वे पुत्र के प्रति भावनात्मक रूप से गहरे जुड़े हैं
(ग) वे हमेशा रोते-बिलखते रहते हैं
(घ) वे कवि के निर्णयों से असहमत रहते हैं

4. 'हेटे' शब्द का संदर्भ के अनुसार सही अर्थ क्या है?
(क) अत्यंत प्रिय और चहेते
(ख) हीन, छोटे, तुच्छ लगने वाले
(ग) घर से दूर जाने वाले
(घ) साहसी और वीर

5. इस छंद में कवि अपने को 'अभागा' क्यों कह रहा है?
(क) क्योंकि उसे जेल का भोजन और वहाँ का जीवन पसंद नहीं था
(ख) क्योंकि उसके भाई-बहन उसे भूलकर उससे दूर हो गए थे
(ग) क्योंकि वह अपने जीवन में देश की आजादी नहीं देख सका
(घ) क्योंकि उसके कारण पिताजी का गर्व और प्रेम दुख में बदल गया है

उत्तरः
1. (क) पिताजी को कवि पर गर्व था, वे उसे सर्वोत्तम मानते थे
2. (क) कथन I सही है, परंतु II गलत है।
3. (ख) वे पुत्र के प्रति भावनात्मक रूप से गहरे जुड़े हैं
4. (ख) हीन, छोटे, तुच्छ लगने वाले
5. (घ) क्योंकि उसके कारण पिताजी का गर्व और प्रेम दुख में बदल गया है

काव्यांश 9

पिताजी ने कहा होगा,
हाय, कितना सहा होगा,
कहाँ, मैं रोता कहाँ हूँ,
धीर मैं खोता, कहाँ हूँ,
गिर रहा है आज पानी,
याद आता है भवानी,
उसे थी बरसात प्यारी,
रात दिन की झड़ी झारी,

1. 'कहाँ, मैं रोता कहाँ हूँ' पंक्ति पिताजी के व्यक्तित्व की किस विशेषता को उजागर करती है?
(क) वे सार्वजनिक रूप से रोना कमजोरी मानते हैं और धीरज रखने की कोशिश करते हैं
(ख) वे पुत्र से बिल्कुल प्रेम नहीं करते
(ग) उन्हें पुत्र की जेल-यात्रा की सूचना नहीं है
(घ) वे खुश हैं क्योंकि पुत्र स्वतंत्रता आंदोलन में है

2. **अभिकथन (A):** पिताजी पुत्र के साथ बरसात में बिताई बचपन की यादों को याद कर रहे हैं।
कारण (R): वर्षा का दृश्य कवि की उपस्थिति और उसकी आदतों की स्मृति जगा देता है।
(क) (A) सही है, परंतु (R) गलत है।
(ख) (A) गलत है, परंतु (R) सही है।

(ग) पिताजी का मन और अपनापन समझकर
(घ) केवल अपनी व्यक्तिगत प्रसिद्धि के लिए

उत्तरः
1. (ख) देश-हित के लिए त्याग की राह
2. (क) कथन I सही है, परंतु II गलत है।
3. (ख) मानसिक और चारित्रिक दृढ़ता का
4. (ख) स्थापित परंपरा या रास्ता
5. (ग) पिताजी का मन और अपनापन समझकर

काव्यांश 6

हे सजीले हरे सावन,
हे कि मेरे पुण्य पावन,
तुम बरस लो वे न बरसें,
पाँचवें को वे न तरसें।
मैं मजे में हूँ सही है,
घर नहीं हूँ बस यही है,
किंतु यह बस बड़ा बस है,
इसी बस से सब विरस है,

1. 'किंतु यह बस बड़ा बस है' पंक्ति में 'बस' शब्द के दोहराव से कवि किस केंद्रीय पीड़ा को अभिव्यक्त कर रहे हैं?
(क) केवल समय का समाप्त होना
(ख) घर से दूर रहने की बड़ी विवशता
(ग) सावन की वर्षा का रुक जाना
(घ) जेल के नियमों का कड़ा होना

2. **अभिकथन (A):** कवि सावन से आग्रह करते हैं कि वह उनके परिजनों के सामने उनके दुखों का बखान न करे।
कारण (R): कवि नहीं चाहते कि उनके माता-पिता उनके वियोग में दुखी हों और पाँचवें पुत्र (कवि) के लिए तरसें।
(क) (A) सही है, परंतु (R) गलत है।
(ख) (A) गलत है, परंतु (R) सही है।
(ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. इस छंद में सावन को 'सजीले हरे' और 'पुण्य पावन' कहकर कवि ने किस शैली का प्रयोग किया है?
(क) रूखी दार्शनिक शैली
(ख) आत्मीय संबोधात्मक शैली
(ग) केवल गद्यात्मक आलोचना
(घ) उपदेशात्मक धार्मिक शैली

4. काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'विरस' का सटीक विलोम या अर्थ क्या है?
(क) नीरस या आनंदहीन (ख) अत्यंत आनंददायी
(ग) बहुत अधिक मीठा (घ) अत्यधिक रंगीन

5. कवि के अनुसार उनके जीवन में सब कुछ नीरस (विरस) क्यों हो गया है?
(क) जेल का भोजन अच्छा नहीं है
(ख) उनके पास पढ़ने को पुस्तकें नहीं हैं
(ग) सावन की वर्षा बहुत तेज है
(घ) वे अपने घर पर उपस्थित नहीं हैं

उत्तरः
1. (ख) घर से दूर रहने की बड़ी विवशता
2. (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
3. (ख) आत्मीय संबोधात्मक शैली
4. (क) नीरस या आनंदहीन
5. (घ) वे अपने घर पर उपस्थित नहीं हैं

काव्यांश 7

आज गीता-पाठ करके,
दंड दो सौ साठ करके,
खूब मुगदर हिला लेकर,
मूठ उनकी मिला लेकर,
जब कि नीचे आए होंगे,
नैन जल से छाए होंगे,

1. 'नैन जल से छाए होंगे' पंक्ति में पिताजी की किस मनोदशा का चित्रण है?
(क) गीता-पाठ के आनंद से भरे होने की
(ख) पाँचवें पुत्र की याद में आँखें भर आने की
(ग) कठोर व्यायाम से थकान अनुभव करने की
(घ) वर्षा देखकर प्रसन्न होने की

2. **अभिकथन (A):** कविता के इस भाग में पिताजी के प्रतिदिन के अनुशासित जीवन का वर्णन है।
कारण (R): गीता-पाठ, दंड-मुगदर जैसी क्रियाएँ उनकी नियमित दिनचर्या को दर्शाती हैं।
(क) (A) सही है, परंतु (R) गलत है।
(ख) (A) गलत है, परंतु (R) सही है।
(ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. 'दंड दो सौ साठ करके' पंक्ति से पिताजी के व्यक्तित्व की कौन-सी विशेषता उभरती है?
(क) आलस और शिथिलता
(ख) अत्यधिक बुढ़ापे की विवशता
(ग) धार्मिक रुढ़िवादिता
(घ) स्फूर्ति और अनुशासन

4. काव्यांश में प्रयुक्त 'मूठ' शब्द का सही अर्थ क्या है?
(क) एक प्रकार का अनाज
(ख) मुट्ठी / मुट्ठी-भर चीज

अध्याय 1

अनुच्छेद लेखन

1. परिचय

अनुच्छेद-लेखन से तात्पर्य एक विषय से संबद्ध विचारों अथवा भावों को सीमित शब्दों में प्रस्तुत करने से है। अनुच्छेद-लेखन निबंध का सार नहीं है। यह अपने-आप में पूर्ण होता है। निबंध लेखन में भूमिका बाँधने और निष्कर्ष देने की आवश्यकता होती है जबकि अनुच्छेद लिखते समय ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं होती। तात्पर्य यह है कि इसे लिखते समय किसी निश्चित ढाँचे में बाँधने की अपेक्षा नहीं होती। दिए गए विषय को केंद्र में रखकर पूरे अनुच्छेद में उसी का विस्तार किया जाता है।

अनुच्छेद-लेखन की परिभाषा
किसी घटना, दृश्य अथवा विषय को संक्षिप्त किंतु सारगर्भित ढंग से जिस लेखन-शैली में प्रस्तुत किया जाता है, उसे अनुच्छेद-लेखन कहते हैं।

2. अनुच्छेद और निबंध में अंतर

अक्सर छात्र अनुच्छेद को छोटा निबंध समझ लेते हैं, जो कि गलत है। इन दोनों में मुख्य अंतर निम्नलिखित हैं:

आधार	अनुच्छेद-लेखन	निबंध-लेखन
विस्तार/ आकार	यह छोटा (लगभग 120 शब्द) और केवल एक ही पैराग्राफ का होता है।	यह विस्तृत (250-300 शब्द या अधिक) और कई पैराग्राफ्स में बंटा होता है।
भूमिका व उपसंहार	इसमें अलग से भूमिका या उपसंहार की आवश्यकता नहीं होती। प्रथम वाक्य से ही मुख्य विषय शुरु हो जाता है।	इसमें प्रस्तावना, मध्य भाग (विस्तार) और उपसंहार का होना अनिवार्य है।
विषय का विश्लेषण	इसमें विषय के केवल एक मुख्य बिंदु या पहलू पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।	इसमें विषय के सभी पक्षों (गुण-दोष, कारण-निवारण) का व्यापक विश्लेषण होता है।
सूत्र रूप	यह गागर में सागर भरने के समान है—कम शब्दों में ठोस बात।	इसमें उदाहरणों, उद्धरणों और तर्कों के साथ बात को फैलाने की छूट होती है।

3. आदर्श अनुच्छेद की विशेषताएँ

एक उत्कृष्ट और अंक-दायी अनुच्छेद की रचना के लिए उसमें कुछ विशिष्ट गुणों का होना अनिवार्य है। एक आदर्श अनुच्छेद की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. **पूर्णता:** कम शब्दों में भी विषय का कोई महत्वपूर्ण बिंदु छूटना नहीं चाहिए।
2. **क्रमबद्धता और सुसंबद्धता:** सभी वाक्य एक-दूसरे से जुड़े होने चाहिए। विचारों में भटकाव नहीं होना चाहिए।
3. **प्रभावशाली भाषा:** भाषा सरल, सुबोध, सटीक और प्रभावशाली होनी चाहिए। जटिल शब्दों से बचना चाहिए।
4. **शब्द-सीमा का पालन:** परीक्षा के दृष्टिकोण से 120 शब्दों की सीमा के आसपास ही लिखना चाहिए।
5. **एक ही पैराग्राफ:** पूरे अनुच्छेद को एक ही पैराग्राफ में लिखना अनिवार्य है। पैराग्राफ बदलना वर्जित है।

4. अनुच्छेद लेखन के महत्त्वपूर्ण बिंदु

एक सुगठित, सारगर्भित और प्रभावशाली अनुच्छेद लिखने के लिए विद्यार्थियों को निम्नलिखित महत्वपूर्ण बिंदुओं को विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए:

1. **भावों की पुनरावृत्ति का निषेध:** एक ही बात या भाव को बार-बार अलग-अलग वाक्यों में नहीं दोहराया जाना चाहिए।

2. **सूक्तियों का तारतम्य:** अन्य विद्वानों के कथनों या सूक्तियों का प्रयोग विषय के साथ पूरी तरह सुसंगत और घुला-मिला होना चाहिए।
3. **सुगठित वाक्य-संरचना:** वाक्यों को ऐसे रूप में ढालना चाहिए कि यदि उनमें से एक भी शब्द हटा दिया जाए, तो वाक्य लड़खड़ाता हुआ प्रतीत हो। क्रमबद्धता ही इसकी जीवन-शक्ति है।
4. **अप्रासंगिक बातों का त्याग:** अनुच्छेद में कोई भी ऐसी बात नहीं होनी चाहिए जो मूल विषय से हटकर या अप्रासंगिक हो।
5. **पूर्णता का भाव:** अनुच्छेद को पढ़कर अधूरापन नहीं लगना चाहिए। ऐसा प्रतीत न हो कि शब्द-सीमा के डर से विद्यार्थी ने विचारों को अंत में अकस्मात काट-छाँट कर सीमित कर दिया है।
6. **अमूर्त बिंबों का निषेध:** उत्कृष्ट अनुच्छेद के लिए अत्यधिक प्रतीकात्मक या अमूर्त भाषा पूरी तरह अनुपयुक्त है। भाषा स्पष्ट और व्यावहारिक होनी चाहिए।
7. **उच्च भाषाई स्तर:** शब्द-चयन ऐसा हो जो दी गई सूक्ति या विषय के साथ पूर्ण न्याय करता हो।

5. कुछ महत्त्वपूर्ण उदाहरण

1. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: भविष्य की राह

संकेत-बिंदु: • AI क्या है • दैनिक जीवन में उपयोग • लाभ और हानियाँ • निष्कर्ष।

उत्तरः

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: भविष्य की राह

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) आधुनिक विज्ञान का एक ऐसा चमत्कार है, जिसने मानव जीवन की दिशा बदल दी है। यह कंप्यूटर विज्ञान की वह शाखा है जो मशीनों को इंसानों की तरह सोचने, समझने और निर्णय लेने के योग्य बनाती है। आज हमारे दैनिक-जीवन में वॉयस असिस्टेंट, रोबोटिक्स और स्मार्ट डिवाइसेस के रूप में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पूरी तरह घुल चुका है। चिकित्सा, शिक्षा और उद्योगों में इसके उपयोग से जटिल कार्य चुटकियों में शुद्धता के साथ पूरे हो रहे हैं। जहाँ एक ओर यह समय की बचत और उत्पादकता बढ़ाने में वरदान साबित हो रहा है, वहीं दूसरी ओर इसके कारण भविष्य में बड़े पैमाने पर रोजगार छिनने का संकट भी मंडरा रहा है। अत्यधिक निर्भरता इंसानी मेधा को पंगु बना रही है। अतः हमें इसके विवेकपूर्ण उपयोग पर बल देना होगा।

2. साइबर अपराध: एक गंभीर चुनौती

संकेत-बिंदु: • बढ़ती इंटरनेट निर्भरता • अपराध के विभिन्न रूप • सुरक्षा के उपाय • निष्कर्ष।

उत्तरः

साइबर अपराध: एक गंभीर चुनौती

तकनीक के इस दौर में इंटरनेट हमारे जीवन का अनिवार्य हिस्सा बन चुका है, परंतु इसके बढ़ते कदम अपने साथ साइबर अपराध जैसी गंभीर वैश्विक चुनौती भी लेकर आए हैं। आज डिजिटल दुनिया में डेटा चोरी, ऑनलाइन वित्तीय ठगी, हैकिंग और सोशल मीडिया पर पहचान चुराने जैसे अपराध तेजी से बढ़ रहे हैं। अपराधी कंप्यूटर और नेटवर्क का सहारा लेकर मासूम लोगों को अपनी ठगी का शिकार बना रहे हैं। इस अदृश्य संकट से बचने के लिए समाज में डिजिटल साक्षरता और व्यापक जागरुकता का होना अत्यंत आवश्यक है। हमें अपने निजी पासवर्ड और वित्तीय जानकारी को पूरी तरह गोपनीय रखना चाहिए। मजबूत एंटी-वायरस का प्रयोग और कड़े साइबर कानूनों का पालन ही इस समस्या का एकमात्र स्थाई समाधान है। सतर्कता ही डिजिटल सुरक्षा की सबसे मजबूत ढाल है।

3. ऑनलाइन शिक्षा: वरदान या अभिशाप

संकेत-बिंदु: • बढ़ता चलन • समय व स्थान की बचत • शारीरिक-मानसिक दुष्प्रभाव • संतुलित उपयोग।

उत्तरः

ऑनलाइन शिक्षा: वरदान या अभिशाप

आज के समय में इंटरनेट और सूचना तकनीक के विकास ने शिक्षा के पारंपरिक स्वरुप को बदलते हुए ऑनलाइन शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया है। घर बैठे देश-विदेश के कुशल शिक्षकों से ज्ञान प्राप्त करना इसका सबसे बड़ा गुण है, जिससे विद्यार्थियों के समय और धन की भारी बचत होती है। डिजिटल टूल्स के माध्यम से कठिन विषयों को समझना अब बेहद सरल और रोचक हो गया है। इसके विपरीत, लगातार कई घंटों तक कंप्यूटर स्क्रीन के सामने बैठने से बच्चों की आँखों, शारीरिक मुद्रा और मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। विद्यालय की जीवंत कक्षा का सामाजिक परिवेश और अनुशासन ऑनलाइन माध्यम में पूरी तरह लुप्त हो जाता है। अतः ऑनलाइन शिक्षा को केवल एक सहायक पूरक साधन मानकर इसका बेहद संतुलित उपयोग करना चाहिए।

4. गहराता जल संकट और हमारा दायित्व

संकेत-बिंदु: • जल का महत्व • संकट के कारण • भविष्य की भयावहता • संरक्षण के उपाय।

उत्तरः

गहराता जल संकट और हमारा दायित्व

'जल ही जीवन है' यह केवल एक साधारण नारा नहीं, बल्कि पृथ्वी पर जीवन की निरंतरता का शाश्वत सत्य है। आज तीव्र औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और पानी के अंधाधुंध दुरुपयोग के कारण संपूर्ण विश्व में जल संकट

गहराता जा रहा है। भूमिगत जल का स्तर लगातार नीचे गिर रहा है, जिससे भविष्य में भीषण अकाल और विनाश की भयावह तस्वीर दिखाई दे रही है। यदि हमने आज अपनी आदतों में सुधार नहीं किया, तो आने वाली पीढ़ियाँ बूँद-बूँद पानी के लिए तरसेंगी। जल संरक्षण हमारा परम राष्ट्रीय और व्यक्तिगत दायित्व है। हमें वर्षा जल संचयन (रेन वॉटर हार्वेस्टिंग) को अनिवार्य रूप से अपनाना होगा। दैनिक जीवन में पानी की बर्बादी रोककर तथा नदियों को प्रदूषित होने से बचाकर ही हम इस जीवनदायिनी संपदा को सुरक्षित रख सकते हैं।

5. सोशल मीडिया: जुड़ते हाथ, टूटते दिल

संकेत-बिंदु: • अभिव्यक्ति का माध्यम • आभासी दुनिया की लत • सामाजिक व मानसिक प्रभाव • विवेकपूर्ण उपयोग।

उत्तरः

सोशल मीडिया: जुड़ते हाथ, टूटते दिल

सोशल मीडिया ने वर्तमान युग में संचार व्यवस्था को एक नई परिभाषा देकर पूरी दुनिया को एक वैश्विक गाँव में बदल दिया है। यह आम नागरिक को अपनी बात खुलकर रखने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करता है, जिससे लोग एक-दूसरे से तुरंत जुड़ जाते हैं। परंतु, इस आभासी दुनिया की चमक-दमक ने इंसानी रिश्तों की वास्तविक गर्माहट को छीन लिया है। लोग लाइक और कमेंट्स की दुनिया में इतने खो गए हैं कि वे अपने वास्तविक परिवार से दूर होकर मानसिक तनाव और अकेलेपन के शिकार हो रहे हैं। युवा पीढ़ी रील्स और पोस्ट की लत में अपना बहुमूल्य समय नष्ट कर रही है। हमें समझना होगा कि सोशल मीडिया केवल मनोरंजन और सूचना का एक सीमित जरिया है। इसका विवेकपूर्ण और अनुशासित उपयोग ही मानवीय संवेदनाओं को बचा सकता है।

6. प्लास्टिक प्रदूषण: धरती पर संकट

संकेत-बिंदु: • प्लास्टिक का अंधाधुंध उपयोग • पर्यावरण को नुकसान • प्रतिबंध की आवश्यकता • हमारे विकल्प।

उत्तरः

प्लास्टिक प्रदूषण: धरती पर संकट

सस्ती और टिकाऊ होने के कारण प्लास्टिक आज हमारे जीवन के हर क्षेत्र में समा गई है, लेकिन यही प्लास्टिक अब धरती के अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा संकट बन चुकी है। यह एक ऐसा 'नॉन-बायोडिग्रेडेबल' पदार्थ है जो सैकड़ों सालों तक मिट्टी में सड़ता नहीं है, जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति नष्ट हो रही है। प्लास्टिक कचरा नालियों को अवरुद्ध कर देता है और इसे खाने से अनगिनत मूक पशु-पक्षी असमय काल के गाल में समा जाते हैं। समुद्र में बढ़ता प्लास्टिक प्रदूषण जलीय जीवों के जीवन को समाप्त कर रहा है। सरकार द्वारा 'सिंगल यूज़ प्लास्टिक' पर प्रतिबंध लगाना एक सराहनीय कदम है, परंतु इसे पूर्णतः सफल बनाने के लिए हमें स्वयं जागरूक होना होगा। खरीदारी के लिए कपड़े या जूट के थैलों का उपयोग करना ही एकमात्र सुरक्षित विकल्प है।

7. मानसिक स्वास्थ्य: आज की महती आवश्यकता

संकेत-बिंदु: • आधुनिक जीवन का तनाव • रुढ़िवादिता का अंत • खुलकर बात करने का महत्व • योग और ध्यान।

उत्तरः

मानसिक स्वास्थ्य: आज की महती आवश्यकता

आधुनिक जीवन की अंधी दौड़, अत्यधिक प्रतिस्पर्धा और भौतिक सुखों की चाह ने इंसान को शारीरिक रूप से भले ही समृद्ध कर दिया हो, परंतु मानसिक रूप से खोखला कर दिया है। आज तनाव, अवसाद और चिंता जैसी मानसिक बीमारियाँ महामारी की तरह फैल रही हैं। हमारे समाज में मानसिक अस्वस्थता को एक सामाजिक कलंक माना जाता है, जिसके कारण लोग अपनी पीड़ा खुलकर व्यक्त करने से हिचकिचाते हैं। हमें इस रुढ़िवादी सोच को बदलकर मानसिक स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशीलता बढ़ानी होगी। मन की समस्याओं पर खुलकर बात करना और विशेषज्ञ की सलाह लेना बेहद सामान्य और जरूरी प्रक्रिया है। नियमित योग, ध्यान और परिवार के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताकर हम अपने मन को शांत और संतुलित रख सकते हैं। स्वस्थ मन ही सुखी जीवन का आधार है।

8. महिला सशक्तिकरण: बदलते भारत की तस्वीर

संकेत-बिंदु: • सशक्तिकरण का अर्थ • शिक्षा और आत्मनिर्भरता • विभिन्न क्षेत्रों में भागीदारी • दृष्टिकोण में बदलाव।

उत्तरः

महिला सशक्तिकरण: बदलते भारत की तस्वीर

महिला सशक्तिकरण का वास्तविक अर्थ महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से अपने निर्णय स्वयं लेने के लिए स्वतंत्र और सामर्थ्यवान बनाना है। किसी भी प्रगतिशील समाज की कल्पना आधी आबादी को सशक्त किए बिना असंभव है। आधुनिक दौर में शिक्षा के व्यापक प्रसार ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के नए पंख दिए हैं। आज भारत की बेटियाँ सेना, अंतरिक्ष विज्ञान, खेल, राजनीति और व्यापार जैसे हर कठिन क्षेत्र में अपनी मेधा का लोहा मनवा रही हैं। यह बदलते और सशक्त होते भारत की एक अत्यंत गौरवशाली तस्वीर है। हालाँकि, इस बदलाव को पूर्ण बनाने के लिए हमें आज भी ग्रामीण स्तर पर रुढ़िवादी पुरुष प्रधान मानसिकता को जड़ से बदलना होगा। महिलाओं को सुरक्षा, सम्मान और समान अवसर प्रदान करना हर नागरिक का परम धर्म है।

18. स्वच्छ भारत अभियान: हमारी जिम्मेदारी

संकेत-बिंदुः • स्वच्छता का महत्व • सरकारी पहल व जन-भागीदारी • गंदगी के दुष्परिणाम • संकल्प।

उत्तरः

स्वच्छ भारत अभियानः हमारी जिम्मेदारी

स्वच्छता हमारे सुखी, स्वस्थ और मर्यादित जीवन का मूल आधार है। जहाँ स्वच्छता होती है, वहीं ईश्वर का वास और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। इसी उद्देश्य को लेकर पूरे देश में 'स्वच्छ भारत अभियान' की शुरुआत एक महा-आंदोलन के रूप में की गई थी। गंदगी न केवल हमारे आसपास के वातावरण को बदसूरत बनाती है, बल्कि यह मलेरिया, डेंगू और हैजा जैसी जानलेवा बीमारियों का मुख्य कारण भी बनती है। सरकार केवल नीतियां बना सकती है, परंतु देश को वास्तव में स्वच्छ बनाने का असली जिम्मा हम नागरिकों का है। हमें सार्वजनिक स्थानों पर कचरा न फेंकने और प्लास्टिक का उपयोग बंद करने का कड़ा संकल्प लेना होगा। जब देश का प्रत्येक नागरिक स्वच्छता को अपने दैनिक स्वभाव का हिस्सा बनाएगा, तभी 'स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत' का सपना सच होगा।

19. श्रम का गौरव

संकेत-बिंदुः • श्रम का अर्थ • सफलता का एकमात्र साधन • अकर्मण्यता का नाश • सामाजिक सम्मान।

उत्तरः

श्रम का गौरव

श्रम को मानव जीवन का गौरव और विधाता का सबसे बड़ा वरदान माना गया है। 'श्रम ही पूजा है' का सिद्धांत हमें सिखाता है कि बिना कठिन परिश्रम और पसीना बहाए इस संसार में कुछ भी हासिल करना असंभव है। शारीरिक अथवा मानसिक श्रम ही वह चाबी है जो मनुष्य के भाग्य के बंद तालों को खोल देती है। इतिहास गवाह है कि जिन देशों और व्यक्तियों ने श्रम के गौरव को समझा, वे आज दुनिया के विकास के सर्वोच्च शिखर पर विराजमान हैं। आलस्य और अकर्मण्यता मनुष्य के सबसे बड़े शत्रु हैं जो चलते हुए जीवन को भी जड़ बना देते हैं। एक श्रमिक समाज के निर्माण में अपनी मेहनत से जो अमूल्य योगदान देता है, वह अतुलनीय है। हमें हर प्रकार के वैध श्रम का सम्मान करना चाहिए, क्योंकि मेहनत से अर्जित सफलता ही सच्ची मानसिक शांति देती है।

20. बढ़ती महँगाई: आम आदमी की कमर

संकेत-बिंदुः • महँगाई की मार • मुख्य कारण • मध्यम व निम्न वर्ग पर असर • नियंत्रण के उपाय।

उत्तरः

बढ़ती महँगाईः आम आदमी की कमर

वर्तमान समय में लगातार बढ़ती महँगाई देश की एक अत्यंत विकराल और चिंताजनक आर्थिक समस्या बन चुकी है, जिसने आम आदमी की कमर तोड़कर रख दी है। दैनिक उपभोग की आवश्यक वस्तुएँ—जैसे दालें, तेल, सब्जियां, रसोई गैस और दवाइयाँ—बाजार में आम नागरिकों की क्रय-शक्ति से पूरी तरह बाहर होती जा रही हैं। इस अनियंत्रित महँगाई के मुख्य कारणों में देश की तेजी से बढ़ती जनसंख्या, जमाखोरी, कालाबाजारी और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ईंधन की बढ़ती कीमतें शामिल हैं। इसका सबसे घातक और प्रत्यक्ष प्रभाव मध्यम तथा निम्न आय वर्ग के परिवारों पर पड़ रहा है, जिनका मासिक बजट पूरी तरह बिगड़ चुका है और वे अपनी बुनियादी जरूरतें पूरी करने के लिए भी संघर्ष कर रहे हैं। सरकार को जमाखोरों के खिलाफ कड़े कदम उठाने चाहिए और वितरण प्रणाली को पारदर्शी बनाना चाहिए।

21. प्रदूषण: एक विकराल समस्या

संकेत-बिंदुः • प्रदूषण के विविध रूप • औद्योगिकरण का प्रभाव • स्वास्थ्य पर घातक असर • समाधान।

उत्तरः

प्रदूषणः एक विकराल समस्या

आधुनिक युग में विज्ञान और अंधाधुंध औद्योगिकरण की प्रगति के साथ ही प्रदूषण एक ऐसी विकराल वैश्विक समस्या बनकर उभरा है, जो मानव के अस्तित्व को निगलने के लिए तैयार है। आज हमारे चारों ओर वायु, जल और ध्वनि प्रदूषण का जाल फैला हुआ है। फैक्ट्रियों से निकलने वाला जहरीला रसायन हमारी पवित्र नदियों को दूषित कर रहा है, तो वहीं वाहनों का काला धुआँ हवा को विषैला बना रहा है जिससे लोगों को साँस की गंभीर बीमारियाँ और कैंसर जैसी घातक बीमारियाँ हो रही हैं। ध्वनि प्रदूषण इंसानों में बहरेपन और मानसिक तनाव को जन्म दे रहा है। यदि हमने इस बढ़ते विनाश को रोकने के लिए तुरंत कड़े कदम नहीं उठाए, तो यह सुंदर पृथ्वी रहने योग्य नहीं बचेगी। बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण और पर्यावरण नियमों का कड़ाई से पालन ही इसका एकमात्र उपाय है।

22. व्यायाम और स्वास्थ्य

संकेत-बिंदुः • पहला सुख निरोगी काया • व्यायाम के शारीरिक-मानसिक लाभ • आलस्य का त्याग • नियमितता।

उत्तरः

व्यायाम और स्वास्थ्य

हमारे शास्त्रों में 'पहला सुख निरोगी काया' कहकर स्वास्थ्य को जीवन का सबसे बड़ा और अनमोल धन माना गया है। इस अमूल्य धन की रक्षा करने का सबसे सरल और अचूक

को और अधिक बढ़ा देती है, जिससे बच्चों की स्वाभाविक प्रतिभा कुंठित होने लगती है। इस समस्या से उबरने के लिए विद्यार्थियों को सत्र की शुरुआत से ही उचित समय-नियोजन और नियमित अध्ययन की आदत डालनी चाहिए। परीक्षा मात्र एक शैक्षणिक मूल्यांकन है, यह संपूर्ण जीवन की अंतिम कसौटी नहीं है। सकारात्मक दृष्टिकोण, पर्याप्त नींद और संतुलित आहार अपनाकर विद्यार्थी परीक्षा के दिनों में भी शांत और मानसिक रूप से सुदृढ़ रह सकते हैं।

14. ग्लोबल वार्मिंग

संकेत-बिंदुः • पृथ्वी का बढ़ता तापमान • मुख्य कारण • विनाशकारी दुष्परिणाम • बचाव के उपाय।

उत्तरः

ग्लोबल वार्मिंग

ग्लोबल वार्मिंग यानी वैश्विक ताप वृद्धि आज संपूर्ण मानव सभ्यता और पृथ्वी के पर्यावरण के लिए सबसे गंभीर और विनाशकारी चेतावनी बन चुकी है। मानवीय गतिविधियों, जैसे—वनों की अंधाधुंध कटाई, फैक्ट्रियों और वाहनों से निकलने वाले जहरीले धुएँ के कारण वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा खतरनाक स्तर तक बढ़ गई है। इसके परिणामस्वरूप पृथ्वी का औसत तापमान लगातार बढ़ रहा है। इस ताप वृद्धि के कारण ध्रुवों पर जमी बर्फ और ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं, जिससे समुद्र का जलस्तर बढ़ने से तटीय शहरों के डूबने का खतरा पैदा हो गया है। मौसम का चक्र पूरी तरह बिगड़ चुका है, कहीं सूखा तो कहीं असमय भीषण बाढ़ आ रही है। इस आसन्न प्रलय से बचने के लिए हमें बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण करना होगा और पर्यावरण-अनुकूल ऊर्जा स्रोतों को अपनाना होगा।

15. समय का सदुपयोग

संकेत-बिंदुः • समय की अमूल्यता • बीता समय वापस न आना • विद्यार्थियों के लिए महत्व • जीवन में सफलता।

उत्तरः

समय का सदुपयोग

समय इस संसार की सबसे मूल्यवान, शक्तिशाली और अपरिवर्तनीय संपदा है। खोया हुआ धन, वैभव और स्वास्थ्य कठिन परिश्रम से पुनः प्राप्त किया जा सकता है, परंतु बीता हुआ एक भी क्षण संसार की संपूर्ण दौलत खर्च करके भी वापस नहीं लाया जा सकता। समय निरंतर गतिमान है, यह किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। जो व्यक्ति समय की कद्र नहीं करते, समय उन्हें नष्ट कर देता है। विशेषकर विद्यार्थियों के जीवन में समय का मोल सबसे अधिक होता है। छात्र जीवन में समय का सही नियोजन और सदुपयोग करने वाले विद्यार्थी ही भविष्य में सफलता के सर्वोच्च शिखर को छूते हैं। आलस्य को त्याग कर अपने दैनिक कार्यों को नियत समय पर पूरा करना ही समय की वास्तविक पूजा है। समय का सम्मान करना ही सुखी जीवन का मूल मंत्र है।

16. जंक फूड और हमारा स्वास्थ्य

संकेत-बिंदुः • जंक फूड के प्रति आकर्षण • पोषक तत्वों का अभाव • शारीरिक बीमारियाँ • स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता।

उत्तरः

जंक फूड और हमारा स्वास्थ्य

आज की आधुनिक और भागदौड़ भरी जीवनशैली में युवा पीढ़ी और बच्चों के बीच जंक फूड जैसे—पिज्जा, बर्गर, नूडल्स और चिप्स का आकर्षण बहुत तेजी से बढ़ा है। यह भोजन दिखने में जितना आकर्षक और जीभ के लिए स्वादिष्ट होता है, हमारे स्वास्थ्य के लिए उतना ही घातक और विषैला होता है। जंक फूड को अत्यधिक तेल, मैदे और कृत्रिम रसायनों से तैयार किया जाता है, जिसके कारण इसमें शरीर के लिए आवश्यक विटामिन और पोषक तत्वों का पूर्ण अभाव होता है। इसके नियमित सेवन से मोटापा, मधुमेह, हृदय रोग और कम उम्र में सुस्ती जैसी गंभीर बीमारियाँ शरीर को घेर लेती हैं। हमें इस धीमे जहर के प्रति जागरूक होना होगा। उत्तम और निरोगी स्वास्थ्य के लिए हमें जंक फूड का पूरी तरह त्याग करके घर के बने ताजे, संतुलित और पौष्टिक भोजन को प्राथमिकता देनी चाहिए।

17. समाज में महिला सुरक्षा: एक अनिवार्य प्रश्न

संकेत-बिंदुः • वर्तमान चिंताजनक स्थिति • बढ़ते अपराध • कड़े कानूनों की आवश्यकता • सामाजिक मानसिक बदलाव।

उत्तरः

समाज में महिला सुरक्षाः एक अनिवार्य प्रश्न

जिस देश में महिलाओं को देवी का रूप मानकर पूजने की प्राचीन परंपरा रही हो, वहाँ आज महिला सुरक्षा एक अत्यंत गंभीर, संवेदनशील और अनिवार्य प्रश्न बन चुकी है। वर्तमान समय में समाचार पत्र और टीवी चैनल महिलाओं के खिलाफ होने वाले जघन्य अपराधों और उत्पीड़न की खबरों से भरे रहते हैं, जो हमारे सभ्य समाज के माथे पर एक गहरा कलंक है। कड़े कानूनों और पुलिस प्रशासन की मुस्तैदी के बावजूद अपराधी बेखौफ हैं। इस भयावह स्थिति को बदलने के लिए केवल कानूनी कड़ाई पर्याप्त नहीं है, बल्कि समाज के स्तर पर पुरुषों की संकीर्ण मानसिकता में आमूलचूल बदलाव लाना होगा। हमें बचपन से ही लड़कों को महिलाओं के प्रति आदर, सम्मान और नैतिक मूल्यों की शिक्षा देनी होगी। भयमुक्त वातावरण में ही आधी आबादी का वास्तविक विकास संभव है।

(ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(घ) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. पिताजी के संस्मरण में कवि की बरसात-प्रेम की जो छवि उभरती है, उससे कवि के बचपन का कैसा स्वभाव पता चलता है?
(क) डरपोक और घर में बंद रहने वाला
(ख) मुक्त, उल्लासपूर्ण और प्रकृति से जुड़ा हुआ
(ग) गंभीर और पुस्तक-प्रेमी
(घ) आज्ञाकारी और शांत स्वभाव का

4. 'धीर' शब्द का इस काव्यांश में क्या अर्थ है?
(क) तेज चलने की गति
(ख) शारीरिक शक्ति
(ग) दिशा-ज्ञान
(घ) मानसिक संतुलन और धैर्य

5. 'रात दिन की झड़ी झारी' से बालक भवानी की किस आदत का पता चलता है?
(क) रात-दिन पढ़ाई करने की
(ख) रात-दिन बारिश में खुशी से भीगते रहने की
(ग) खेत में काम करने की
(घ) रात को जागकर लिखने की

उत्तरः
1. (क) वे सार्वजनिक रूप से रोना कमजोरी मानते हैं और धैर्य रखने की कोशिश करते हैं
2. (ग) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
3. (ख) मुक्त, उल्लासपूर्ण और प्रकृति से जुड़ा हुआ
4. (घ) मानसिक संतुलन और धैर्य
5. (ख) रात-दिन बारिश में खुशी से भीगते रहने की

काव्यांश 10

किंतु उनसे यह न कहना,
उन्हें देते धीर रहना,
उन्हें कहना लिख रहा हूँ,
उन्हें कहना पढ़ रहा हूँ,
काम करता हूँ कि कहना,
नाम करता हूँ कि कहना,
चाहते हैं लोग, कहना
मत करो कुछ शोक, कहना,
और कहना मस्त हूँ मैं,
कातने में व्यस्त हूँ मैं,

1. 'उन्हें कहना लिख रहा हूँ, उन्हें कहना पढ़ रहा हूँ' — इन पंक्तियों में कवि सावन से क्यों यह कहलवाना चाहता है?
(क) ताकि परिजन जान सकें कि जेल में पढ़ाई होती है
(ख) ताकि परिजन निश्चिंत रहें और चिंता न करें
(ग) ताकि सरकार को जेल की रिपोर्ट मिले
(घ) ताकि उसकी प्रतिभा का प्रचार हो

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कवि सावन को परिजनों से उसकी वास्तविक दशा छिपाने का आग्रह करता है।
II. 'कातने में व्यस्त हूँ मैं' पंक्ति गांधीवादी आत्मनिर्भरता और स्वदेशी भावना का प्रतीक है।
(क) कथन I सही है, परंतु II गलत है।
(ख) कथन II सही है, परंतु I गलत है।
(ग) कथन I और II दोनों सही हैं।
(घ) कथन I और II दोनों गलत हैं।

3. 'मत करो कुछ शोक, कहना' — यह कथन किस भाव को व्यक्त करता है?
(क)कवि अपने परिजनों और परिवार के सदस्यों से नाराज दिखाई देता है
(ख) कवि अपने परिजनों के दुख को कम करने की गहरी चिंता करता है
(ग) कवि स्वयं को किसी प्रकार के कष्ट में नहीं मानता है
(घ) कवि चाहता है कि परिवार खुशी से उत्सव मनाता रहे

4. 'कातने में व्यस्त हूँ मैं' — यहाँ 'कातने' का क्या तात्पर्य है और यह किस वैचारिक प्रतीक से जुड़ा है?
(क) काँटों से बचने की कोशिश; कारावास की पीड़ा का प्रतीक
(ख) चरखे पर सूत कातना; गांधीजी के स्वदेशी आंदोलन का प्रतीक
(ग) गीत गाने की क्रिया; कवि की काव्य-साधना का प्रतीक
(घ) बागवानी करना; प्रकृति-प्रेम का प्रतीक

5. इस काव्यांश में सावन का प्रयोग किस रूप में किया गया है?
(क) एक विरोधी शत्रु बनकर कवि की पीड़ा को बढ़ाने वाले रूप में
(ख) केवल एक प्राकृतिक घटना और ऋतु-परिवर्तन के रूप में किया गया है
(ग) कवि की मनोदशा का दर्पण बनकर रोने वाले के रूप में
(घ) परिजनों तक सांत्वना और झूठी खुशखबरी पहुँचाने वाले दूत के रूप में

उत्तरः
1. (ख) ताकि परिजन निश्चिंत रहें और चिंता न करें
2. (ग) कथन I और II दोनों सही हैं।
3. (ख) कवि अपने परिजनों के दुख को कम करने की गहरी चिंता करता है
4. (ख) चरखे पर सूत कातना; गांधीजी के स्वदेशी आंदोलन का प्रतीक
5. (घ) परिजनों तक सांत्वना और झूठी खुशखबरी पहुँचाने वाले दूत के रूप में

साधन नियमित व्यायाम है। आज की गतिहीन और सुख-सुविधाओं से युक्त जीवनशैली ने मनुष्य को शारीरिक रूप से बेहद कमजोर और आलसी बना दिया है। प्रतिदिन मात्र आधा घंटा किया गया व्यायाम—जैसे दौड़ना, तैरना, योगासन या जिम जाना—हमारे शरीर में रक्त के संचार को सुचारू रखता है और मांसपेशियों को मजबूत बनाता है। यह शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है जिससे हम मौसमी बीमारियों से बचे रहते हैं। व्यायाम न केवल हमारे शरीर को सुडौल और स्फूर्तिमय रखता है, बल्कि हमारे मानसिक तनाव को दूर कर मन को भी प्रसन्न रखता है। स्वस्थ जीवन के लिए आलस्य छोड़ना अनिवार्य है।

23. मेरा प्यारा भारत देश

संकेत-बिंदु: • भौगोलिक व प्राकृतिक सौंदर्य • विविधता में एकता • गौरवशाली संस्कृति • नागरिकों का कर्तव्य।

उत्तरः

मेरा प्यारा भारत देश

विश्व के मानचित्र पर भारतवर्ष एक ऐसा अनूठा और महान देश है, जिसकी पावन भूमि पर प्रकृति ने अपना संपूर्ण सौंदर्य और वैभव दिल खोलकर लुटाया है। उत्तर में मुकुट की तरह सुशोभित विशाल हिमालय और दक्षिण में हिलोरे मारता अगाध हिंद महासागर इसकी भौगोलिक भव्यता को बढ़ाते हैं। हमारे देश की सबसे बड़ी विशेषता 'विविधता में एकता' है। यहाँ विभिन्न धर्मों, जातियों, भाषाओं और संस्कृतियों के लोग सदियों से आपसी प्रेम, सौहार्द और भाईचारे के साथ निवास करते हैं। इसकी प्राचीन और गौरवशाली ज्ञान-परंपरा ने पूरी दुनिया को 'वसुधैव कुटुंबकम' का अमर संदेश दिया है। अपनी कला, अध्यात्म और विज्ञान के बल पर भारत आज वैश्विक पटल पर एक महाशक्ति बनकर आगे बढ़ रहा है। देश के प्रति निष्ठा रखना और इसकी अखंडता की रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है।

24. विद्यालय का वार्षिकोत्सव

संकेत-बिंदु: • उत्सव की तैयारी • सांस्कृतिक कार्यक्रम • पुरस्कार वितरण • विद्यार्थी जीवन की मधुर स्मृतियाँ।

उत्तरः

विद्यालय का वार्षिकोत्सव

विद्यालय का वार्षिकोत्सव विद्यार्थी जीवन का एक अत्यंत रोमांचक, रंगारंग और बहुप्रतीक्षित आयोजन होता है, जिसका इंतजार सभी को पूरे वर्ष रहता है। इस विशेष उत्सव की तैयारियाँ कई सप्ताह पूर्व ही अत्यंत उत्साह और जोर-शोर के साथ प्रारंभ हो जाती हैं। उत्सव के दिन संपूर्ण विद्यालय परिसर को फूलों, रंग-बिरंगी लाइटों और कलाकृतियों से किसी वधू की तरह सजाया जाता है। मुख्य समारोह में विद्यार्थियों द्वारा नाटक, देशभक्ति गीत, शास्त्रीय नृत्य और समसामयिक विषयों पर आधारित बेहद मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं जो दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। इसके पश्चात शिक्षा और खेलकूद के क्षेत्र में वर्षभर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले मेधावी छात्रों को मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। यह उत्सव विद्यार्थियों में नई ऊर्जा का संचार करता है और अमिट मधुर स्मृतियाँ दे जाता है।

25. मित्र की परख

संकेत-बिंदु: • मित्रता का जीवन में स्थान • सच्चे मित्र के लक्षण • स्वार्थी मित्रों से दूरी • नीति वचन।

उत्तरः

मित्र की परख

मानव जीवन के सभी रिश्तों में मित्रता एक ऐसा अनूठा और पावन रिश्ता है, जिसे मनुष्य अपनी मर्जी और पसंद से स्वयं चुनता है। एक सच्चा और निष्कपट मित्र ईश्वर के सबसे बड़े वरदान के समान होता है। परंतु, आज की मतलबी और स्वार्थी दुनिया में सच्चे मित्र की पहचान करना बेहद कठिन कार्य है। सच्चे मित्र की वास्तविक परख सुख के दिनों में नहीं, बल्कि विपत्ति, बीमारी और संकट के समय होती है। सच्चा मित्र वह है जो हमारे अवगुणों को अकेले में सुधारता है और समाज में हमारे गुणों की प्रशंसा करता है। नीति वचन भी कहते हैं कि संकट काल में ही धीरज, धर्म और मित्र की परीक्षा होती है। हमें केवल चापलूसी करने वाले और धन देखकर पास आने वाले स्वार्थी मित्रों से सदैव कोसों दूर रहना चाहिए।

26. कंप्यूटरः आधुनिक युग का जादूगर

संकेत-बिंदु: • विज्ञान का अद्भुत आविष्कार • कार्यक्षेत्र में तीव्र गति • इंटरनेट का संजाल • अत्यधिक निर्भरता।

उत्तरः

कंप्यूटरः आधुनिक युग का जादूगर

कंप्यूटर विज्ञान जगत का एक ऐसा जादुई और युगांतरकारी आविष्कार है, जिसने संपूर्ण मानव सभ्यता के काम करने के ढंग को पूरी तरह बदल दिया है। आज जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है—चाहे वह बैंक हो, रेलवे स्टेशन, रक्षा विभाग, शिक्षा या अंतरिक्ष विज्ञान—जहाँ कंप्यूटर अपनी सेवाएं न दे रहा हो। इसकी गणना करने की तीव्र गति और शत-प्रतिशत शुद्धता इंसानी दिमाग को भी हैरत में डाल देती है। इंटरनेट के वैश्विक संजाल से जुड़कर कंप्यूटर ने पूरी दुनिया की असीमित जानकारी को हमारी उंगलियों के पोरों पर लाकर रख दिया है। इसके माध्यम से हफ्तों में होने वाले जटिल कार्य अब चंद सेकेंडों में पूरे हो जाते हैं। परंतु, इसकी अत्यधिक लत और निर्भरता ने मनुष्य को शारीरिक रूप से निष्क्रिय और साइबर अपराधों के प्रति बेहद संवेदनशील भी बना दिया है।

दिनांक : 19 जुलाई 20xx
प्रिय हरीश,
सप्रेम नमस्ते!
मैं यहाँ सकुशल हूँ और आशा करता हूँ कि तुम भी सकुशल होगे। कुछ ही देर पहले मुझे सूचना मिली कि अगले ओलंपिक खेलों में तैराकी के लिए तुम्हारा चयन हो गया है तो मैं खुशी से उछल पड़ा। इसके लिए मैं तुम्हें बधाई देता हूँ।

मित्र, अंतर्राष्ट्रीय स्तर की इस खेल प्रतियोगिता में चुना जाना कोई आसान काम नहीं है। यह तुम्हारे निरंतर कठिन परिश्रम का फल है। तुम्हारी यह सफलता तुम्हारे छोटे भाई-बहनों के अलावा हम मित्रों के लिए प्रेरणा स्रोत का कार्य करेगी। अब वह दिन दूर नहीं जब तुम मेडल जीतकर देश और माता-पिता का नाम रोशन करोगे। ऐसी शानदार सफलता के लिए एक बार पुनः बधाई स्वीकार करो।

अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना।
तुम्हारा प्रिय मित्र,
आदित्य

7. आपकी बड़ी बहन को चिकित्सा महाविद्यालय में प्रवेश प्राप्त हो गया है। इस सफलता के लिए बधाई-पत्र लिखिए।

उत्तरः
सचिन
39, कमला नगर,
शाहदरा, नई दिल्ली।
दिनांक : 4 मई, 20xx
प्रिय बहन गीता,
नमस्कार।
मैं यहाँ सकुशल हूँ और आशा करता हूँ कि आप स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त होंगी। कल ही आपका पत्र मिला। यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि आपने राष्ट्रीय पात्रता एवं प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है और आपको चिकित्सा महाविद्यालय में प्रवेश प्राप्त हो गया है।

अब लगता है कि आपका डॉक्टर बनने का सपना साकार हो जाएगा। इसके लिए आपने दिन-रात कड़ी मेहनत की है। घर में सभी यह खुशखबरी सुनकर बहुत खुश हैं। माता जी ने पड़ोस में सबको मिठाई भी खिलाई। हम सबकी ओर से आपको बहुत-बहुत बधाई हो।
आपका भाई,
सचिन

8. वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आने पर अपनी छोटी बहन को बधाई देते हुए पत्र लिखिए।

उत्तरः
दिव्या
एफ 38, गौतम बुद्ध नगर,
रोहिणी, नई दिल्ली।
दिनांक : 13 मार्च, 20xx
प्रिय नेहा,
स्नेह!
बहुत-बहुत बधाई हो मेरी प्यारी नेहा! मुझे पता चला है कि तुमने अपने नगर में आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता जीत ली है। नेहा! तुमने सचमुच कमाल कर दिया है।

वैसे तो तुम इस जीत के योग्य हो। तुममें इतनी प्रतिभा और योग्यता है कि तुम कोई भी भाषण प्रतियोगिता जीत सकती हो। तुम पर माँ सरस्वती की कृपा है। मेरी ओर से बहुत-बहुत बधाई! तुम्हारे लिए मैंने और ज्ञानवर्धक पुस्तकें खरीद रखी हैं। आने पर भेंट करूँगी।

ईश्वर करे, तुम आगे भी इसी प्रकार की सफलता पाती रहो।
तुम्हारी बहन,
दिव्या

9. आपके मित्र का चयन आई. आई. टी. की परीक्षा में हो गया है। उसे बधाई देते हुए पत्र लिखिए।

उत्तरः
सत्यम
45, मोहन गार्डन,
उत्तम नगर, नई दिल्ली।
दिनांक : 10 जुलाई 20xx
प्रिय मित्र अर्पित,
सप्रेम नमस्ते!
मैं यहाँ सकुशल हूँ और आशा करता हूँ कि तुम भी सकुशल होगे। कुछ ही देर पहले मुझे सूचना मिली कि तुम्हारा चयन आई. आई. टी. की परीक्षा में हो गया है तो मैं खुशी से उछल पड़ा। इसके लिए मैं तुम्हें बार-बार बधाई देता हूँ। मित्र, राष्ट्रीय स्तर की इस परीक्षा में चुना जाना कोई आसान काम नहीं है। यह तुम्हारे निरंतर कठिन परिश्रम का फल है।

तुम्हारी यह सफलता तुम्हारे छोटे भाई-बहनों के अलावा हम मित्रों के लिए प्रेरणा स्रोत का कार्य करेगी। अब वह दिन दूर नहीं जब तुम इंजीनियर बनकर माता-पिता का नाम रोशन करोगे तथा देश की उन्नति में अपना योगदान दोगे। ऐसी शानदार सफलता के लिए एक बार पुनः बधाई स्वीकार करो।

अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना।
तुम्हारा मित्र,
सत्यम

10. राष्ट्रपति द्वारा 'वीर बालक पुरस्कार' से सम्मानित अपने छोटे भाई को बधाई-पत्र लिखिए।

उत्तरः
शैफाली शर्मा
4/120, नया बाजार,
रोहतक, हरियाणा।
दिनांक : 22 नवंबर, 20xx
प्रिय आशीष,
शुभाशीर्वाद!

अध्याय 2

पत्र-लेखन

1. परिचय

पत्र-लेखन समाज से संबंधित व्यावहारिक एवं उपयोगी कला है। अपने विचार सीधे किसी दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाने का विशेष साधन पत्र है। पत्र हमारे विचारों, भावनाओं और सूचनाओं के आदान-प्रदान करने का सबसे सरल, उपयोगी और सर्वसुलभ साधन है। पत्र के द्वारा हम घर-परिवार से संबंधित व्यवसायिक कार्यों में अधिकारियों से संपर्क बनाए रख सकते हैं। साहित्यिकता का गुण आने के कारण अनेक बड़े व्यक्तियों के पत्र भी साहित्य में स्थान पा जाते हैं। प्रेमचंद, महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, बीजे श्याम शर्मा आचार्य तथा अनेक लेखकों, नेताओं के पत्र साहित्य की भाँति एकत्रित किए गए हैं। अतः प्रत्येक व्यक्ति के लिए पत्र-लेखन कला आत्मसात करना अनिवार्य हो जाता है।

पत्र-लेखन की परिभाषा
जब हम अपने मन के विचारों, भावनाओं एवं सूचनाओं को लिखित रूप में किसी दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाते हैं, तो उसे पत्र कहते हैं। इस प्रकार के लिखित संवाद को ही पत्र-लेखन कहते हैं।

2. पत्र के प्रकार

शैली-शिल्प की दृष्टि से पत्रों को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है —

(1) औपचारिक
(2) अनौपचारिक

औपचारिक पत्र

सरकारी, अर्द्धसरकारी और गैर-सरकारी संदर्भों में सरकारी स्तर पर भेजे जाने वाले पत्र औपचारिक पत्र कहलाते हैं। सामान्य शब्दों में, जिन लोगों के साथ औपचारिक संबंध होते हैं उन्हें औपचारिक पत्र लिखे जाते हैं। इन पत्रों में व्यक्तिगत और आत्मीय विचार प्रकट नहीं किए जाते। इनमें अपनेपन का भाव पूरी तरह गायब रहता है। इनमें अपने विचारों का भली-भाँति सोच-विचार कर प्रकट किया जाता है। इसका प्रयोग प्रायः औपचारिक और सरकारी तथा गैर-सरकारी कार्यालयों के अधिकारियों, निजी संस्थानों, पत्र-पत्रिकाओं के संपादकों, अध्यापकों, प्रधानाचार्यों, व्यापारियों आदि को लिखे जाते हैं।

अनौपचारिक पत्र

जिनसे हमारा व्यक्तिगत संबंध होता है, उनके साथ अनौपचारिक पत्र-व्यवहार किया जाता है। इन पत्रों में व्यक्तिगत सुख-दुःख का वर्णन होता है। ये पत्र आत्मीय जनों, परिवार के लोगों तथा निकट संबंधियों को लिखे जाते हैं। इन पत्रों की विषय-वस्तु निजी और घरेलू होती है, इन्हें पारिवारिक या निजी पत्र अथवा व्यक्तिगत पत्र भी कहते हैं।

नोट: नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुसार परीक्षा में केवल अनौपचारिक (व्यक्तिगत) पत्र ही पूछे जाएँगे, अतः इस अध्याय में इसी का अभ्यास कराया गया है।

3. पत्र-लेखन के महत्त्वपूर्ण बिन्दु

पत्र-लेखन के समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए —

1. पत्र की भाषा सरल और बोधगम्य होनी चाहिए जिससे पत्र पढ़ने वाला उसे समझ सके।
2. पत्र में विषय वस्तु संक्षेप में व्यक्त कर देनी चाहिए।
3. पत्र लिखते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि सभी बातें या विचार एक क्रम में लिखे जाएं।
4. पत्र में विनम्र एवं शिष्ट शब्दावली का प्रयोग करना चाहिए जिससे पत्र पाने वाले के समक्ष आपकी विनम्रता प्रदर्शित हो।
5. पत्र साफ-सुथरा एवं स्पष्ट हो तथा लिखावट भी सुंदर एवं आकर्षक होनी चाहिए। उचित स्थान पर पैराग्राफ परिवर्तन तथा पंक्तियों के बीच पर्याप्त स्थान रखना चाहिए।
6. पत्र के प्रेषक एवं पत्र पाने वाले के नाम एवं पते का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया जाना चाहिए।
7. पत्र लिखने के पश्चात् उसे एक बार अवश्य पढ़ लेना चाहिए।
8. परीक्षा के दृष्टिकोण से पत्र लिखते समय शब्द-सीमा (लगभग 100 शब्द) का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

4. अनौपचारिक पत्र का प्रारूप

प्रेषक का नाम
प्रेषक का पता
दिनांक : __ , 20xx

संबोधन (जैसे: प्रिय मित्र, / पूज्य माता जी, / आदरणीय गुरुजी,)
अभिवादन (जैसे: सप्रेम नमस्ते! / सादर प्रणाम! / स्नेह!)

पत्र का मुख्य विषय ....
(लगभग 100 शब्दों में)

विदाई शब्द (जैसे: अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना।)

समापन (जैसे: तुम्हारा मित्र, / आपका पुत्र, / तुम्हारी बहन,)
हस्ताक्षर (नाम)

महत्त्वपूर्ण: अनौपचारिक पत्र में पता बाईं ओर लिखा जाता है। पत्र के बाईं ओर संबोधन और अंत में नाम लिखा जाता है।

5. अनौपचारिक पत्र के प्रकार

अनौपचारिक या व्यक्तिगत पत्र हमारे पारिवारिक और सामाजिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। अलग-अलग अवसरों और भावों के आधार पर अनौपचारिक पत्रों को मुख्य रूप से निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

1. **धन्यवाद पत्र:** जब हमें किसी व्यक्ति द्वारा की गई सहायता, दिए गए उपहार, कृतज्ञता, आभार या किसी उपकार के प्रति अपनी आंतरिक प्रसन्नता और शुक्रिया व्यक्त करना हो, तब इस प्रकार के पत्र लिखे जाते हैं।
2. **बधाई व शुभकामना पत्र:** परिवार के किसी सदस्य, मित्र या संबंधी को उनकी किसी विशेष उपलब्धि, परीक्षा में सफलता, जन्मदिन, विवाह अथवा किसी अन्य शुभ अवसर पर बधाई और उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ देने के लिए ये पत्र लिखे जाते हैं।
3. **संवेदना पत्र:** किसी प्रियजन के जीवन में आए दु:ख, किसी बड़ी हानि, आकस्मिक दुर्घटना या अन्य किसी कठिन परिस्थिति में अपनी सहानुभूति, ढाँढस और मानसिक संबल व्यक्त करने के लिए अत्यंत संवेदनशील भाषा में ये पत्र लिखे जाते हैं।
4. **सलाह व परामर्श पत्र:** छोटे भाई-बहन, मित्रों या किसी संबंधी को उनके जीवन, करियर या पढ़ाई के प्रति उचित मार्गदर्शन देने, किसी गलत आदत से बचाने या सही राह समझाने के उद्देश्य से यह पत्र लिखे जाते हैं।
5. **अन्य विविध पत्र:** इसके अंतर्गत अन्य सभी व्यक्तिगत संदेश आते हैं; जैसे—किसी शुभ कार्य के लिए सगे-संबंधियों को भेजा जाने वाला निमंत्रण पत्र, अपनी कुशलता बताने या दूसरों का कुशल-क्षेम पूछने के लिए सामान्य हाल-चाल पत्र, अथवा किसी विशेष कारण से अपनों से मांगी जाने वाली क्षमा याचना पत्र आदि।

6. कुछ महत्त्वपूर्ण उदाहरण

धन्यवाद पत्र

1. आपका एक मित्र शिमला में रहता है। आप उसके आमंत्रण पर ग्रीष्मावकाश में वहाँ गए थे और प्राकृतिक सौंदर्य का खूब आनंद उठाया था। घर वापस लौटने पर कृतज्ञता व्यक्त करते हुए मित्र को पत्र लिखिए।

उत्तर:
सुनील
26-बी, वैशाली नगर,
नई दिल्ली।
दिनांक : 15 जून, 20xx
प्रिय मित्र,
सप्रेम नमस्ते!
मैं यहाँ कुशलतापूर्वक पहुँच गया हूँ। तुम्हारे साथ बिताया गया यह ग्रीष्मावकाश सदैव मेरी स्मृतियों में यों ही मधुर बना रहेगा। मित्र, तुमने मुझे अपने पर्वतीय क्षेत्र मसूरी आमंत्रित करके वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य को देखने का जो अवसर प्रदान किया, उसके लिए मैं सदैव तुम्हारा ऋणी रहूँगा।

मैं अभी तक स्वयं को वहाँ के दर्शनीय स्थलों के आकर्षण से मुक्त नहीं कर पाया हूँ। वहाँ का प्राकृतिक स्थल 'गन हिल' तो जैसे संपूर्ण प्रकृति को ही अपने अंदर समाए हुए है। वहाँ से माल रोड पर सुबह-शाम की सैर भी एक अद्भुत ताज़गी ला देती है।

इस आनंददायक एवं रोमांचक प्रवास के लिए मैं तुम्हारा हार्दिक धन्यवाद करता हूँ।

अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना।
तुम्हारा मित्र,
सुनील

2. अपने प्रिय मित्र को पत्र लिखकर धन्यवाद दीजिए कि आड़े वक्त में किस तरह आपका साथ दिया था।

उत्तर:
अनिल
18, खड़गसिंह मार्ग,
नई दिल्ली।
दिनांक : 13 फरवरी 20xx
प्रिय मित्र,
सप्रेम नमस्ते!

मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ तथा तुम्हारी कुशलता की कामना ईश्वर से करता रहता हूँ। इस पत्र के माध्यम से मैं तुम्हारी दयालुता और सहयोग के लिए धन्यवाद प्रकट करना चाहता हूँ।

जब मैं बहुत परेशान था, तब तुमने पैसे और सहयोग देकर मेरी सहायता की। मैं तुम्हारे द्वारा की गई इस सहायता को कभी भी भूल नहीं सकता। मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूँ।

मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ कि यदि भविष्य में कभी भी तुम्हें सहायता की जरुरत होगी तो मैं सदैव तुम्हारी सहायता के लिए तत्पर रहूँगा।

भगवान तुम्हारे जैसे मित्र सबको दे।

तुम्हारा मित्र,
अनिल

3. अनुराधा के मामाजी ने उसे जन्मदिन पर एक पुस्तक उपहार में भेजी है। धन्यवाद व्यक्त करते हुए उन्हें एक पत्र लिखिए।

उत्तरः
अनुराधा
75, लाजपत नगर,
नई दिल्ली।
दिनांक : 23 नवंबर, 20xx
आदरणीय मामाजी,
सादर नमस्कार!
आशा है, आप सकुशल होंगे। मामीजी तथा सुरम्या भी प्रसन्न होंगी। आपने मेरे जन्मदिन पर मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित उपन्यास 'निर्मला' भेजा है। यह उपन्यास मैंने पढ़ा है। यह मुझे बहुत पसंद आया है।

इसे पढ़कर मुझे लगा कि मैं निर्मला की बहुत ही गहरी सहेली और प्रशंसक हो गई हूँ। मुझे उसकी मृत्यु पर गहरा दुःख है। यह उपन्यास जीती-जागती दुनिया से भी अधिक प्रभावशाली और मार्मिक है।

आपके प्रति बहुत-बहुत धन्यवाद! आपने मुझे अच्छा साहित्य पढ़ने का अवसर दिया। आपने मेरे जन्मदिन पर मुझे याद रखा। इसके लिए धन्यवाद!

आपकी प्रिय भांजी,
अनुराधा

4. अपने सेवानिवृत्त पूर्व प्रधानाध्यापक को उनकी उपलब्धियों की सराहना करते हुए धन्यवाद ज्ञापन का पत्र लिखिए।

उत्तरः
विजय
45, आदर्श नगर,
नई दिल्ली।
दिनांक : 4 जुलाई, 20xx
आदरणीय गुरुजी,
सादर प्रणाम!
आशा है आप सकुशल होंगे। मुझे पता चला कि आप गत वर्ष सेवानिवृत्त हो गए हैं। सुनकर झटका लगा। मैं आपको विद्यालय से अलग करके देख ही नहीं सकता।

जब भी विद्यालय की चर्चा आती है तो आपका यशस्वी व्यक्तित्व मेरी आँखों के सामने साकार हो जाता है। आपका कर्मठ व्यक्तित्व, आपका सब बच्चों को अनुशासन में रखना और अध्ययन के प्रति गहरा लगाव देखकर मुझे किसी सिद्ध आचार्य की याद आ जाती है।

आदरणीय गुरुजी, आपके नेतृत्व और मार्गदर्शन में हमारे विद्यालय ने चहुँमुखी उन्नति की है। इस नगर के लोग आपका लोहा मानते हैं। मैं आपके उज्ज्वल, स्वस्थ और शांत भविष्य की कामना करता हूँ और आपकी समर्पित सेवाओं के लिए आपके प्रति धन्यवाद प्रकट करता हूँ।

आपका प्रिय शिष्य,
विजय

5. विद्यालय में प्रथम आने पर इसकी सूचना देते हुए अपनी माताजी को पत्र लिखिए और धन्यवाद दीजिए कि आपके साथ वे भी रातों में जागती रहीं, इसलिए यह संभव हुआ।

उत्तरः
मनीष
62-63, गुरुकुल विद्यालय,
लाजपत नगर, नई दिल्ली।
दिनांक : 15 जून, 20xx
पूज्य माता जी,
सादर चरण-स्पर्श!
आपको जानकर खुशी होगी कि आपकी मेहनत रंग लाई है। आपका बेटा मनीष पूरी कक्षा में प्रथम आया है। जब प्राचार्य महोदय ने प्रार्थना-सभा में मेरा नाम घोषित किया तो मैं गर्व और प्रसन्नता से भर गया।

माता जी! उस समय मैंने आपको याद किया। यह आपकी तपस्या का ही फल था जिसका स्वाद मैं चख रहा हूँ। यदि आप रात-रात भर मेरे साथ न जागती रहती, तो मैं आलसी कब का सो गया होता और मुझे यह सफलता कदापि न मिलती। इसलिए इस सफलता का पहला अधिकार आपका है। आपको इस सफलता पर बधाई!

मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि छात्रावास में रहते हुए मैं आपकी दी हुई सीख को कभी नहीं भूलूँगा।

अपना आशीष इसी प्रकार देती रहें।

आपका पुत्र,
मनीष

बधाई / शुभकामना पत्र

6. आपके मित्र का तैराकी के लिए अगले ओलंपिक खेलों के लिए चयन हो गया है। उसे प्रोत्साहन देते हुए एक पत्र लिखिए।

उत्तरः
आदित्य
19-ए, गली नं. 7,
चकरौता रोड, नई दिल्ली।

27. राष्ट्रीय एकता और अखंडता

संकेत-बिंदुः • राष्ट्रीय एकता का अर्थ • विकास के लिए अनिवार्यता • बाधक तत्व • हमारा संकल्प।

उत्तरः

राष्ट्रीय एकता और अखंडता

राष्ट्रीय एकता का सीधा अर्थ देश के समस्त नागरिकों के मन में भौगोलिक, धार्मिक और भाषाई विविधताओं के बावजूद राष्ट्र के प्रति सर्वोपरि प्रेम और एक होने की भावना का होना है। किसी भी राष्ट्र की संप्रभुता, सुरक्षा और सर्वांगीण विकास के लिए उसकी आंतरिक एकता और अखंडता का अक्षुण्ण रहना पहली अनिवार्य शर्त है। इतिहास गवाह है कि जब-जब हमारी आपसी एकता कमजोर हुई है, तब-तब विदेशी ताकतों ने हमें अपना गुलाम बनाकर लूटा है। वर्तमान समय में जातिवाद, क्षेत्रवाद, सांप्रदायिकता और भाषावाद जैसी संकीर्ण प्रवृत्तियां हमारी राष्ट्रीय एकता के मार्ग में सबसे बड़ी और घातक बाधाएं हैं। देश के विकास के लिए इन आंतरिक दीवारों को ढहाना होगा। प्रत्येक नागरिक को संकुचित स्वार्थों से ऊपर उठकर सदैव 'राष्ट्रहित सर्वोपरि' के संकल्प को आत्मसात करना होगा।

28. भारतीय लोकतंत्र: स्वरुप और चुनौतियाँ

संकेत-बिंदुः • लोकतंत्र की परिभाषा • मतदान का अधिकार • वर्तमान आंतरिक चुनौतियाँ • जागरूक नागरिक।

उत्तरः

भारतीय लोकतंत्रः स्वरूप और चुनौतियाँ

भारत पूरे विश्व का सबसे बड़ा, जीवंत और गौरवशाली लोकतांत्रिक देश है। लोकतंत्र का मूल स्वरुप 'जनता का, जनता के लिए और जनता द्वारा शासन' की उदात्त भावना पर आधारित होता है। हमारे देश में प्रत्येक वयस्क नागरिक को बिना किसी भेदभाव के मिला पवित्र मतदान का अधिकार ही इस व्यवस्था की सबसे बड़ी शक्ति है, जिसके माध्यम से जनता अपनी मर्जी की सरकार चुनती है। हालाँकि, वर्तमान समय में हमारे इस महान लोकतंत्र के समक्ष भ्रष्टाचार, जातिवाद, बाहुबल, धनबल और राजनीतिक शुचिता की कमी जैसी कई आंतरिक और गंभीर चुनौतियाँ सिर उठाए खड़ी हैं। इन बुराइयों को दूर करने और लोकतंत्र की जड़ों को पावन बनाए रखने के लिए नागरिकों का जागरूक और शिक्षित होना परम आवश्यक है। जब लोग जाति-धर्म से ऊपर उठकर मतदान करेंगे, तभी लोकतंत्र सफल होगा।

29. देशप्रेम

संकेत-बिंदुः • जन्मभूमि का ऋण • देशप्रेम की वास्तविक भावना • नागरिक कर्तव्य • देशहित सर्वोपरि।

उत्तरः

देशप्रेम

जिस पावन मिट्टी में जन्म लेकर, जिसका अन्न-जल ग्रहण कर और जिसकी शुद्ध हवा में सांस लेकर हमारा यह शरीर पोषित हुआ है, उस मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम और निष्ठा रखना ही **देशप्रेम** है। देशप्रेम की भावना का अर्थ केवल सीमा पर जाकर बंदूक उठाना या युद्ध लड़ना ही नहीं है, बल्कि अपने दैनिक जीवन में पूरी ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का निर्वाह करना भी सच्ची राष्ट्रभक्ति है। एक जागरूक नागरिक के रूप में देश के कानूनों का कड़ाई से पालन करना, करों का समय पर भुगतान करना, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना और पर्यावरण को स्वच्छ रखना भी देशप्रेम का ही रूप है। व्यक्तिगत और संकीर्ण स्वार्थों का परित्याग कर समाज और देश के हित को सदैव सर्वोपरि रखना ही एक सच्चे राष्ट्रभक्त की वास्तविक पहचान होती है।

30. भाग्य और कर्म

संकेत-बिंदुः • कर्म प्रधान विश्व • भाग्यवादी सोच के दोष • पुरुषार्थ से भाग्य बदलना • निष्कर्ष।

उत्तरः

भाग्य और कर्म

तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में लिखा है—'कर्म प्रधान विश्व करि राखा, जो जस करइ सो तस फलु चाखा।' यह संपूर्ण सृष्टि कर्म के अटल सिद्धांत पर गतिमान है। जो लोग कर्म को छोड़कर केवल भाग्य के भरोसे बैठे रहते हैं, वे आलसी और अकर्मण्य बनकर समाज पर बोझ बन जाते हैं। भाग्य कोई पहले से लिखी हुई ऐसी लकीर नहीं है जिसे बदला न जा सके; बल्कि हमारे द्वारा किए गए कठिन परिश्रम, दृढ़ इच्छाशक्ति और सतत पुरुषार्थ से ही हमारे सोए हुए भाग्य का निर्माण होता है। हाथ पर हाथ धरकर बैठने वाले का भाग्य भी सो जाता है और आगे बढ़ने वाले का भाग्य भी निरंतर आगे चलता है। कर्म ही वह अचूक हथियार है जिससे मनुष्य अपनी विपरीत परिस्थितियों को भी अनुकूल बना लेता है। अतः कर्म ही जीवन का वास्तविक सत्य है।

आज के समाचार-पत्र में तुम्हारा चित्र देखकर तथा यह पढ़कर हृदय असीम प्रसन्नता से भर गया कि तुम्हें राष्ट्रपति द्वारा 'वीर बालक पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। मैं तुम्हें इस पुरस्कार प्राप्ति के लिए हार्दिक बधाई देती हूँ।

तुमने यह पुरस्कार प्राप्त कर हमारे परिवार के गौरव को बढ़ाया है। हम सबका मस्तिष्क ऊँचा उठाया है। तुमने जिस बहादुरी से नन्हें-नन्हें बच्चों की जान बचाई थी, वह घटना निश्चय ही अदम्य वीरता व साहस का परिचायक है।

मैं आशा करती हूँ कि ईश्वर तुम्हें हर कार्य में सफलता दे। पुनः एक बार बधाई व शुभाशीष।

घर पर सभी को यथायोग्य कहना।

तुम्हारी बहन,
शैफाली

11. अर्धवार्षिक परीक्षा में अपने भाई के उत्तीर्ण होने पर उसे बधाई देते हुए तथा अगली बोर्ड कक्षा के लिए योजनाबद्ध ढंग से तैयारी की सलाह देते हुए एक पत्र लिखिए।

उत्तरः

कमलेश वर्मा
462-63, सरस्वती छात्रावास,
नेहरू पब्लिक स्कूल,
जयपुर, राजस्थान।
दिनांक : 28 अक्टूबर, 20xx

प्रिय भाई रमेश,
सस्नेह आशीर्वाद!

तुम्हारा पत्र मुझे कल ही प्राप्त हुआ। पता चला कि तुमने नवीं कक्षा की अर्धवार्षिक परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। अनुज, हम अपनी मेहनत और बड़ों के आशीर्वाद से सफलता प्राप्त करते चले जाते हैं। तुम्हें हमारी तरफ से इस सफलता पर हार्दिक बधाई।

अगले वर्ष तुम्हारी दसवीं की परीक्षा है। आशा है कि उसमें भी तुम इसी प्रकार सफलता प्राप्त करोगे, लेकिन इसके लिए परिश्रम के साथ योजना बनाकर अध्ययन करना होगा। समय सारणी बनाकर कार्य करना, प्रातःकाल व्यायाम, शुद्ध और उचित मात्रा में भोजन आदि का ध्यान रखना होगा। शिक्षकों के संपर्क में रहकर अपनी कमियों एवं न जानने वाले तथ्यों को सीखना होगा, तभी तुम वार्षिक परीक्षा में अव्वल आ सकोगे। हमारी शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं।

माताजी-पिताजी तुम्हें आशीर्वाद दे रहे हैं।

तुम्हारा बड़ा भाई,
कमलेश

12. हास्य-विनोद का महत्त्व बताते हुए मित्र को एक पत्र लिखिए।

उत्तरः

कमल कुमार
34, उद्योग विहार,
द्वारका, नई दिल्ली।
दिनांक : 10 अक्टूबर, 20xx

प्रिय मित्र अभिनंदन,
सप्रेम नमस्कार!

मित्र, कितने दिनों बाद तुम्हें पत्र लिखने का समय निकाल पाया हूँ। वास्तव में आजकल हर इंसान का जीवन भाग-दौड़, उलझनों और तनावों से भरा है। ऐसे में केवल आपसी हास्य-विनोद ही जिंदगी को कुछ तरोताजा कर पाता है। हास्य-विनोद से हम फुरसत के अपने उन थोड़े से पलों को इस तरह से जी पाते हैं कि सब उलझनें और तनाव लुप्त हो जाते हैं।

यदि हम लोगों से हल्के-फुलके तरीके से तनाव रहित बातचीत करें तो भी कई प्रकार की समस्याओं का समाधान हो जाता है। आज की परिस्थितियों में हास्य-विनोद का महत्त्व और भी बढ़ गया है। मेरी शुभकामना है कि तुम सदैव मुस्कुराते रहो और जीवन का भरपूर आनंद उठाओ।

चाचा जी एवं चाची जी को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा मित्र,
कमल

संवेदना / सांत्वना पत्र

13. आपके मित्र के पिता के सीमा पर शहीद हो जाने का समाचार प्राप्त होने पर अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हुए मित्र को संवेदना पत्र लिखिए।

उत्तरः

नवीन अजमेरा
56, शहीद भगत सिंह मार्ग,
जालंधर, पंजाब।
दिनांक : 16 अगस्त, 20xx

प्रिय मित्र महेंद्र,
सप्रेम नमस्कार!

मुझे पूज्य पिता जी के शहीद होने का समाचार मिला। समझ नहीं आता कि गर्व प्रकट करूँ या संवेदना। प्रिय महेंद्र! मुझे तुम्हारे पिता जी श्री युद्धवीर सिंह जी की शहादत पर बहुत गर्व है। उन्होंने देश के शत्रुओं के साथ लड़ते हुए अपने प्राण दिए हैं। वे अब तुम्हारे पिता जी नहीं रहे, अपितु पूरे देश के नायक हो गए हैं। मैं उनके बलिदान को प्रणाम करता हूँ।

पिता के न होने का दुःख क्या होता है, यह तो तुम्हीं समझ सकते हो। इस दुःख की घड़ी में मैं तुम्हारे साथ हूँ। यह बलिदान तुम्हारी गौरवमयी थाती है। इसे सँभालो तथा अपनी माता और बहन को सांत्वना दो।

ईश्वर सदा तुम पर अपना आशीर्वाद का हाथ रखेगा।

तुम्हारा मित्र,
नवीन

14. आपके मित्र के घर लाखों रुपयों की चोरी हो गई है, जिससे उसे भारी नुकसान हुआ है, उसे पत्र लिखकर दुःख व्यक्त करें तथा बताएँ कि इस दुःखद घड़ी में आप उनके साथ हैं।

बहुत ध्यान देती हो। अपने आपको सजाना और सुंदर बनाना एक गुण है। परंतु यदि उसका महत्त्व बहुत अधिक बढ़ जाए तो वह हमारी उन्नति में बाधक बन जाता है।

फैशन जीवन में पहली चीज नहीं है। पहली चीज है हमारा व्यक्तित्व, हमारे गुण, हमारा स्वभाव। यदि यह अच्छा हो तो हम किसी के भी मन में समा जाते हैं। लोग हमारे गुणों के कारण हमें चाहते हैं, बाहरी रूप-सुंदरता के कारण नहीं।

आजकल रेडियो, दूरदर्शन और फिल्मों में इतनी चकाचौंध है कि हम उसी को सच मान बैठते हैं। अतः मैं तुम्हें सलाह देती हूँ कि फैशन पर ध्यान कम ही देना। अपनी मर्यादा को पहले स्थान पर रखना।

छुट्टियों में घर जरूर आना।

तुम्हारी बहन,
मधुरिमा

22. नित्य प्रातःकाल उठकर खुली हवा में घूमने और व्यायाम करने की सलाह देते हुए अपने छोटे भाई/बहन को एक पत्र लिखिए।

उत्तरः

सोनिया गोदारा
17/3-बी, विजय नगर,
हुबली, नई दिल्ली।
दिनांक : 8 मई, 20xx
प्रिय खुशबू,
स्नेह!
कैसी हो? आजकल तो पढ़ाई में व्यस्त होगी। तुम्हारी पढ़ाई और परीक्षा-परिणाम के बारे में मैं निश्चिंत रहती हूँ। परंतु तुम जरूरत से अधिक पढ़ती हो। सुखी जीवन के लिए पढ़ाई जरूरी है, किंतु अधिकता किसी भी चीज की अच्छी नहीं होती।

तुम्हारा बिल्कुल व्यायाम न करना और देर रात तक पढ़ना मुझे अच्छा नहीं लगता। मुझे डर है कि इससे तुम्हारे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। यदि स्वास्थ्य ठीक न रहा तो पढ़ाई भी जाती रहेगी।

मेरा तुमसे आग्रह है कि तुम सुबह-सुबह उठकर पार्क में आधा घंटा सैर जरूर किया करो। बाबा रामदेव ने जो शारीरिक व्यायाम बताए हैं, उनमें से कुछ व्यायाम अपना लो। इससे तुम्हारा अवश्य भला होगा। आशा है, तुम मेरी सलाह पर विचार अवश्य करोगी।

तुम्हारी बहन,
सोनिया

23. विद्यालय में नियमित उपस्थित रहने और परीक्षा की तैयारी भलीभाँति करते रहने की सलाह देते हुए छोटे भाई को पत्र लिखिए।

उत्तरः

नरेंद्र शर्मा
142, राम नगर,
आगरा।
दिनांक : 4 फरवरी, 20xx
प्रिय सुनील,
स्नेह!
आशा है, तुम छात्रावास में रहकर खूब आनंद में होगे। तुम्हारा मन लग गया होगा। मैं यह पत्र इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि आजकल सभी स्कूलों में यह रीत बनती जा रही है कि बच्चे कक्षा में पढ़ने की बजाय ट्यूशन या कोचिंग सेंटर में पढ़ने को महत्त्व देने लगे हैं। यह रीत ठीक नहीं है।

योग्य अध्यापक स्कूलों में चयनित हो जाते हैं और बहुत अच्छा पढ़ाते हैं। इसलिए उन्हें हल्के में नहीं लेना चाहिए। कक्षा में पाठ्यक्रम विधिवत और क्रम से पढ़ाया जाता है। इसलिए कक्षा की पढ़ाई को नियमित करना चाहिए तथा उसी के आधार पर परीक्षा की तैयारी करनी चाहिए।

मैं तुम्हें यही सलाह देना चाहता हूँ कि तुम नियमित रूप से अपनी कक्षाएँ लो और कोई भी परेशानी आने पर अपने अध्यापकों की सहायता लेकर अपनी समस्याओं का समाधान करो। परीक्षा की तैयारी का सबसे बेहतर तरीका यही है। ईश्वर तुम्हें यशस्वी बनाए।

तुम्हारा भाई,
नरेंद्र

24. अपने छोटे भाई को पत्र लिखकर बताइए कि पढ़ाई के साथ-साथ चलने वाली अतिरिक्त गतिविधियों में भाग लेने के क्या लाभ हैं।

उत्तरः

विष्णु सैनी
35, प्रताप नगर,
जनकपुरी, नई दिल्ली।
दिनांक : 13 फरवरी 20xx
प्रिय नीतेश,
स्नेह!
मैं यहाँ सकुशल हूँ और आशा है तुम भी छात्रावास में आनंद से होगे। पढ़ाई ठीक चल रही होगी। तुम्हारी पढ़ाई के बारे में मैं हमेशा निश्चिंत रहता हूँ। तुम्हें पढ़ाई में गहरी रुचि है। मुझे रोज-रोज यह बात कचोटती है कि तुम विद्यालय में पढ़ाई को छोड़कर अन्य किसी भी गतिविधि में भाग नहीं लेते हो। न खेल में, न नृत्य-गायन में, न भाषण-कविता में, न सेवा-कार्यों में। मुझे लगता है, इससे तुम्हारे व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास नहीं हो सकेगा।

मैं तुमसे अपेक्षा करता हूँ कि तुम अतिरिक्त गतिविधियों की ओर भी ध्यान दो। उनमें भी रुचि लो। यह तुम्हारे लिए लाभकारी रहेगा। आशा है, अगली बार मिलने पर मुझे किसी गतिविधि में भाग लेने का समाचार दोगे। मुझे विश्वास है कि तुम उसमें भी यशस्वी रहोगे।

तुम्हारा भाई,
विष्णु

18. आपके छोटे भाई अनुराग परीक्षा में नकल करते पकड़े गए, जिसके लिए उन्हें दंडित किया गया। उसे समझाते हुए एक पत्र लिखिए।

उत्तरः
अक्षय कुमार
सी 5/105, सी सी कॉलोनी,
राणा प्रताप बाग, नई दिल्ली।
दिनांक : 10 सितंबर, 20xx
प्रिय अनुराग,
यहाँ हम सब सकुशल हैं और आशा करता हूँ कि तुम भी सकुशल होगे। तुम्हारे प्रधानाचार्य का पत्र मिला। यह पढ़कर हैरानी हुई कि तुम परीक्षा में नकल करते पकड़े गए हो। इसके लिए तुम्हें दंडित भी किया गया। यह सुनकर माताजी और पिताजी बहुत परेशान हो गए हैं। उन्हें यकीन नहीं हो रहा कि तुमने ऐसा किया।

इस तरह नकल करके तुम अपना ही नुकसान कर रहे हो। गलत रास्ता कभी भी आपको सही मंजिल पर नहीं ले जाता। अतः मैं तुम्हें यही सलाह देता हूँ कि मन लगाकर पढ़ाई करो और दोबारा ऐसी गलती कभी मत करना। तुम्हें अपने भविष्य के बारे में सोचना चाहिए। माताजी और पिताजी को तुमसे काफी उम्मीदें हैं। मुझे विश्वास है कि तुम्हें अवश्य सफलता मिलेगी।
तुम्हारा भाई,
अक्षय

19. आपके छोटे भाई ने बोर्ड की परीक्षा में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। पुरस्कार में वह पिताजी से एक मोटर साइकिल चाहता है। उसे पत्र लिखकर समझाइए कि वयस्क होने से पहले वाहन चलाना ठीक नहीं है।

उत्तरः
रजनीश पात्रा
21, गली नं. 1,
चकरौता रोड, नई दिल्ली।
दिनांक : 22 मार्च 20xx
प्रिय कमलेश,
स्नेह!
आजकल तुम बहुत खुश होगे। मुझे घर से समाचार मिला कि तुमने इस बार दसवीं की परीक्षा में 95% अंक पाए हैं तथा पूरे विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। तुम्हें बहुत बधाई! पिताजी बता रहे थे कि वे तुम्हारे लिए नई मोटर साइकिल खरीदने की योजना बना रहे हैं। तुमने पुरस्कार में मोटर साइकिल माँगी होगी। मैं चाहता हूँ कि तुम मोटर साइकिल की जगह और चीज ले लो।

मोटर साइकिल लेने में दो परेशानियाँ हैं। पहली यह कि अभी तुम 18 साल के नहीं हुए हो। जब भी गाड़ी चलाओगे, पुलिस द्वारा पकड़े जाने का डर रहेगा। दूसरे, अगर तुमने नई मोटर साइकिल ले ली तो इस पर सवारी करने का मन भी करेगा। तब तुम्हारा ध्यान पढ़ाई से हटकर सैर-सपाटे में लगेगा। आगे 11-12 कक्षा की पढ़ाई है। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा ध्यान इधर-उधर न भटके। इसलिए मोटर साइकिल लेने का विचार कुछ समय के लिए टाल कर अपना सारा ध्यान पढ़ाई पर लगाओ।

आशा है, तुम मेरे सुझाव का सम्मान करोगे।
तुम्हारा भाई,
रजनीश

20. पटाखों से होने वाले प्रदूषण के प्रति ध्यान आकर्षित करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।

उत्तरः
सुधांशु अधिकारी
27 बी, पंखा रोड,
जनकपुरी, नई दिल्ली।
दिनांक : 09 नवंबर, 20xx
प्रिय मित्र,
रोहन,
सस्नेह अभिवादन!
आशा है कुशलतापूर्वक अपने दिन व्यतीत कर रहे होगे और आने वाले त्योहारों की तैयारी भी। यहाँ भी हम सभी आगामी त्योहारों की तैयारी में लग चुके हैं। इस बार हम सभी 'बाल-क्लब' के सदस्यों ने एक सकारात्मक कदम उठाया है।

हमने पटाखों से होने वाले प्रदूषण को ध्यान में रखते हुए, उससे होने वाले नुकसान से सबको जागरूक करने के लिए नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया। इससे सभी बच्चे और सोसायटी वाले अत्यंत ही प्रभावित हुए और उन्होंने इस प्रयास में हमारे कदम से कदम मिलाते हुए पटाखे न चलाने का संकल्प लिया है।

मित्र, तुम तो जानते ही हो कि दिल्ली किस तरह प्रदूषण के कारण विषाक्त होती जा रही है। तुम भी अपने शहर में इसी प्रकार का प्रयास करो और इस मुहिम को आगे बढ़ाओ।

अपने माता-पिता को मेरा सादर प्रणाम निवेदित करना।
तुम्हारा मित्र,
सुधांशु।

21. बनाव-श्रृंगार में अधिक समय नष्ट न करने की सलाह देते हुए बड़ी बहन की ओर से छोटी बहन को एक पत्र लिखिए।

उत्तरः
मधुरिमा माथुर
45 बी, महावीर इन्क्लेव,
मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली।
दिनांक : 15 मार्च, 20xx
प्रिय कल्पना!
स्नेह!
कैसी हो? आशा है, अपने स्वभाव के अनुसार प्रसन्न होगी। छात्रावास में तुम्हारा समय अच्छा बीत रहा होगा। तुम मन लगाकर पढ़ाई कर रही होगी। बड़ी बहन होने के नाते मैं तुमसे एक बात कहना चाहती हूँ। मैंने देखा है, तुम फैशन पर

उत्तरः
प्रदीप शर्मा
127, चौधरी कॉलोनी,
बख्तावरपुर, नई दिल्ली।
दिनांक : 3 अगस्त, 20xx
प्रिय महेश,
नमस्कार!
आशा है, तुम कुशल होगे। मुझे कल ही पता चला कि तुम्हारे घर में लाखों रुपयों की चोरी हो गई है। यह तुम्हारे लिए बहुत बड़ा नुकसान है। कष्ट की इस दशा में संयम बनाए रखना। अधिक निराश न होना। आशा है, चोर पकड़े जाएँगे।

सामान वापस मिल जाएगा। कुछ हानि हो भी गई तो वह धन की ही हानि है। यदि जीवन सुरक्षित रहा और मन में उत्साह बना रहा तो पैसा फिर-से वापस लौट आया करता है। दुःख की इस घड़ी में मैं तुम्हारे साथ हूँ। खुद को कभी अकेला न समझना।
तुम्हारा मित्र,
प्रदीप

15. पंजाब में रहने वाली आपकी ममेरी बहन दुर्घटनाग्रस्त हो गई है, जिसके कारण वह अपनी बोर्ड की परीक्षा नहीं दे पाएगी, उसे सांत्वना देते हुए स्थिति को स्वीकार करने की प्रेरणा दें।

उत्तरः
स्मृति श्रीवास्तव
22, निराला नगर,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
दिनांक : 28 अक्टूबर, 20xx
प्रिय स्मिता,
स्नेह!
आशा है, तुम्हारा स्वास्थ्य धीरे-धीरे ठीक हो रहा होगा। शरीर में दर्द कम हो रहा होगा। अभी बिस्तर से उठने की अनुमति तो नहीं होगी, परंतु मन स्वस्थ होगा।

स्मिता! तुम्हारे नाम का अर्थ है — मुस्कुराने वाली। तुममें हर परिस्थिति में मुस्कुराने की आदत होनी चाहिए। मुझे पता है कि तुम पढ़ाई और कैरियर को बहुत महत्त्व देती हो। परंतु इस दुर्घटना के कारण तुम्हारा यह वर्ष बेकार जाएगा। तुम इस बार परीक्षा नहीं दे पाओगी। तुम्हारी सारी तैयारी भी व्यर्थ जाएगी। परंतु यह तुम्हारे नाम की परीक्षा है। जैसी भी स्थिति है, उसे सहर्ष स्वीकार करना।

मामाजी और मामीजी को मेरा प्रणाम कहना।
तुम्हारी बहन,
स्मृति

सलाह पत्र

16. छात्रावास में रहने वाले अपने छोटे भाई को एक पत्र लिखकर प्रातःकाल नियमित रूप से योग एवं प्राणायाम का अभ्यास करने के लिए प्रेरित कीजिए।

उत्तरः
जितेंद्र कुमार
मदन मोहन मालवीय छात्रावास,
मालवीय नगर, नई दिल्ली।
दिनांक : 14 फरवरी, 20xx
प्रिय भुवनेश,
मैं यहाँ सकुशल हूँ और आशा है कि तुम भी स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त होगे। पिताजी ने बताया कि अगले महीने से तुम्हारी परीक्षाएँ शुरु होने वाली हैं जिसके लिए तुम दिन-रात पढ़ाई कर रहे हो।

लेकिन मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि पढ़ाई के साथ-साथ तुम्हें अपने स्वास्थ्य पर भी ध्यान देना चाहिए। तुम्हें प्रातःकाल नियमित रूप से योग और प्राणायाम का अभ्यास अवश्य करना चाहिए। इससे तुम दिन भर चुस्ती-फुर्ती और ताजगी महसूस करोगे तथा अनेक प्रकार के रोगों से भी बचोगे।

प्रातःकाल नियमित रूप से किया गया योग एवं प्राणायाम तुम्हारी स्मरण शक्ति को बेहतर करेगा। साथ ही इससे तुम्हें एकाग्रचित्त होकर पढ़ाई करने में भी सहायता मिलेगी। आशा करता हूँ कि तुम मेरी बातों पर गौर करोगे।
तुम्हारा भाई,
जितेंद्र

17. आपके छोटे भाई/बहन ने एक आवासीय विद्यालय में एक माह पूर्व ही प्रवेश लिया है। उसको मित्रों के चुनाव में सावधानी बरतने के लिए समझाते हुए एक पत्र लिखिए।

उत्तरः
अनुराग अग्रवाल
4/126, मालवीय नगर,
जयपुर।
दिनांक : 02 अगस्त, 20xx
प्रिय सचिन,
हम सभी यहाँ सकुशल हैं और आशा करता हूँ कि तुम भी सकुशल होगे। तुम्हें सेंट जोसफ स्कूल गए हुए एक महीना हो गया है। अब तो वहाँ तुम्हारा मन लग गया होगा। बड़े भाई के नाते मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूँ कि मित्र बनाते समय तुम्हें बहुत सावधानी बरतनी होगी। क्योंकि अच्छी संगत वाले मित्रों के साथ रहोगे तो अच्छे इंसान बनोगे और बुरी संगत वाले मित्रों के साथ रहोगे तो बुरे इंसान बनोगे।

सच्चा मित्र वही होता है जो हर मुसीबत में तुम्हारी मदद करे। विद्वानों ने भी कहा है — 'जीवन में अच्छी संगति का बहुत महत्त्व होता है।' एक अच्छा मित्र हो तो वह सही मार्गदर्शन कर हमें सफलता के शिखर पर ले जाता है। अतः तुम्हें मित्र बनाते समय इन बातों का विशेष ध्यान रखना होगा।
तुम्हारा भाई,
अनुराग

25. अपने मित्र के झगड़े के बारे में जानकर आपको लगता है कि गलती आपके मित्र की ही थी। अतः उसका मार्गदर्शन करते हुए उसे पत्र लिखकर उचित सलाह दीजिए।

उत्तरः
अभिषेक बनर्जी
281, आनंदपुर,
पटना, बिहार।
दिनांक : 17 अप्रैल 20xx
प्रिय राहुल,
स्नेह!
आशा है, तुम स्वस्थ और प्रसन्न होगे। कल जब मैं तुम्हारे छात्रावास में आया था तो तुम्हारा अपने एक सहपाठी से झगड़ा हो गया था। आशा है, वह झगड़ा शांत हो गया होगा। तुम फिर-से पढ़ाई में मग्न हो गए होगे। कल उस झगड़े के वक्त मैंने देखा कि तुममें गुस्सा बहुत अधिक है।

यदि तुमने खाने की मेज पर कुछ नियंत्रण रखा होता तो तुम्हारी अपने सहपाठियों से तकरार न बढ़ती। मैं मानता हूँ कि तुम्हारे सहपाठी रोटी लाने के लिए जल्दी मचा रहे थे, किंतु उनकी नालायकी पर तुम्हारा उन्हें भला-बुरा कहना और झगड़ा मोल लेना उचित नहीं था। ऐसे तो हमारा हर राह चलने वाले से झगड़ा हो सकता है।

हमें दुनिया में रहते हुए सहनशीलता सीखनी चाहिए। ध्यान रखना, ठंडा लोहा ही गर्म लोहे को पीटता है। इसलिए ठंडे बने रहने का गुण सीखो।
तुम्हारा मित्र,
अभिषेक

26. 'लक्ष्य को निशाना बनाओ, भटको नहीं' कथन का आशय समझाते हुए छोटे भाई को एक पत्र लिखिए।

उत्तरः
कैलाश वर्मा
986, काका नगर,
हाथरस, उत्तर प्रदेश।
दिनांक : 3 सितंबर, 20xx
प्रिय रवि,
स्नेह!
आशा है, तुम आनंदपूर्वक होगे। घर पर भी सब कुशल हैं। सब तुम्हें याद करते हैं। पिछली बार तुमने मुझे कहा था कि तुम डॉक्टर बनना चाहते हो। फिर कहा कि नहीं, अध्यापक बनोगे। आजकल तुम खिलाड़ी बनने की राह पर हो। हो सकता है, कल तुम्हारा मन फिल्मी हीरो बनने का हो जाए। मेरी सलाह है कि इस भटकन पर विजय पाओ।

एक दिन बैठकर तय करो कि तुम्हें किस ओर जाना है। मेरा अनुभव है कि सभी लक्ष्य अच्छे परिणाम ला सकते हैं। तुम्हें सब जगह संतुष्टि मिल सकती है। आवश्यकता है एक लक्ष्य की ओर सधी हुई नजरों से बढ़ने की। आज इधर, कल उधर होने से तुम तीर तो चलाओगे, परंतु वह चिड़िया की आँख पर नहीं लगेगा। आशा है, तुम मेरा आशय समझ गए होगे।
तुम्हारा भाई,
कैलाश

27. अपनी बहन को पत्र लिखकर बताइए कि दसवीं कक्षा में होने के कारण विषयों पर विशेष ध्यान देना क्यों जरूरी है तथा शिक्षा के प्रति अनुशासित व सचेत रहने की सलाह दीजिए।

उत्तरः
कमल कुमारी
बी 31, उत्तम नगर,
चंडीगढ़, पंजाब।
दिनांक : 12 सितंबर, 20xx
प्रिय अनुजा शारदा,
सस्नेह आशीर्वाद!
मुझे ज्ञात हुआ है कि तुम कुछ उद्दंड और अशिष्ट होती जा रही हो। गुरुजन के प्रति भी तुम्हारा व्यवहार अच्छा नहीं है। यह सुनकर मुझे बड़ा दुःख हुआ। मैं तुम्हारे लिए अनुशासित जीवन की उपयोगिता पर अपना सुझाव लिख रहा हूँ।

अनुशासन जीवन का मुख्य आधार है। यह सदाचार की नींव है। यह बड़प्पन और गौरव की वृद्धि करने वाला है। यह जीवन की प्राणवायु है। इसके बिना मानव और समाज का अस्तित्व असंभव है। अनुशासन का अभ्यास विद्यार्थी जीवन में ही सुचारू रूप से हो सकता है। विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्त्व सबसे अधिक है। अशिष्ट और अनुशासनहीन छात्र कभी भी अच्छा नागरिक नहीं बन सकता।

विद्यार्थी ही हमारी आशा और स्वतंत्र भारत के आधार स्तंभ हैं। देश का भार वहन करने के लिए उन्हें अनुशासित जीवन व्यतीत करते हुए अपनी शारीरिक एवं मानसिक शक्ति का विकास करना चाहिए। तभी वे अपने माता-पिता, गुरुजन तथा देश का गौरव बढ़ा सकते हैं।

आशा है, तुम आज से ही अनुशासित जीवन व्यतीत करने का संकल्प लोगी और गुरुजन का आदर करोगी।
तुम्हारा शुभचिंतक,
कमल

अन्य विविध पत्र

28. अपने मित्र को एक पत्र लिखकर बताइए कि महानगरीय जीवन दुःखद भी है तथा सुखद भी।

उत्तरः
राहुल वशिष्ठ
ए-128, राणा प्रताप बाग,
नई दिल्ली।
दिनांक : 20 मार्च, 20xx
प्रिय मित्र राजेश,
सप्रेम नमस्कार!

सोहन : सचमुच? तुम्हारा बहुत धन्यवाद! मुझे कुछ सूत्रों को समझने में भी कठिनाई हो रही थी।
राहुल : कोई बात नहीं। हम एक-एक सूत्र को लिखकर याद करेंगे और संक्षिप्त नोट्स भी बना लेंगे।
सोहन : तुम सच्चे मित्र हो राहुल! तुम्हारे साथ अभ्यास करने से मेरा आत्मविश्वास बढ़ गया है।
राहुल : हम दोनों मिलकर परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करेंगे — यही हमारा लक्ष्य है।
सोहन : बिल्कुल मित्र! मैं शाम को समय पर तुम्हारे घर पहुँच जाऊँगा।

2. दो सहपाठियों के बीच विद्यालय के वार्षिकोत्सव की तैयारी को लेकर संवाद लिखिए।

उत्तरः
प्रिया : सुमन! इस वर्ष हमारे विद्यालय के वार्षिकोत्सव में तुम किस प्रतियोगिता में भाग ले रही हो?
सुमन : प्रिया, मैंने शास्त्रीय नृत्य के लिए नाम दिया है। और तुमने क्या तय किया है?
प्रिया : मुझे इस बार नाटक में मुख्य पात्र की भूमिका निभाने का अवसर मिला है। मैं अत्यंत उत्साहित हूँ।
सुमन : वाह! यह तो बहुत गौरव की बात है। तुम्हारा अभिनय अभ्यास कब से प्रारंभ हो रहा है?
प्रिया : कल से प्रतिदिन विद्यालय की छुट्टी के पश्चात एक-एक घंटे का विशेष अभ्यास सत्र होगा।
सुमन : मेरी नृत्य कक्षा का समय भी वही है। इस प्रकार हम अभ्यास के बाद साथ ही घर लौट सकेंगे।
प्रिया : बिल्कुल ठीक! हम दोनों मार्ग में एक-दूसरे का उत्साहवर्धन भी करते रहेंगे।
सुमन : यह वार्षिकोत्सव सचमुच यादगार रहेगा। हम दोनों अपनी प्रस्तुति के लिए कठिन परिश्रम करेंगे।

3. दो मित्रों के बीच मोबाइल फोन के अत्यधिक उपयोग को लेकर संवाद लिखिए।

उत्तरः
अमित : आदित्य! मैं देख रहा हूँ कि तुम हर समय मोबाइल फोन का उपयोग करते हो, यह आदत उचित नहीं है।
आदित्य : मित्र, मैं मनोरंजन नहीं कर रहा था, बल्कि इंटरनेट पर अपनी पढ़ाई से संबंधित वीडियो देख रहा था।
अमित : भले ही तुम पढ़ाई कर रहे हो, परंतु घंटों स्क्रीन देखने से आँखें कमजोर होती हैं और ध्यान भटकता है।
आदित्य : तुम्हारी बात सत्य है। कई बार एक शैक्षणिक वीडियो देखते-देखते मैं अन्य व्यर्थ के वीडियो देखने लगता हूँ।
अमित : इसका एक ही उपाय है — अध्ययन करते समय मोबाइल फोन को दूसरे कमरे में रख दिया करो।
आदित्य : यह अत्यंत उपयोगी सुझाव है। परंतु यदि कोई महत्वपूर्ण जानकारी देखनी हो, तब क्या करूँ?
अमित : पहले अपनी पाठ्यपुस्तक से नोट्स बना लो, तत्पश्चात एक निश्चित समय तय करके ही मोबाइल का उपयोग करो।
आदित्य : बिल्कुल सही। आज से ही मैं इस नियम का पालन करूँगा। इस बहुमूल्य सलाह के लिए धन्यवाद।

4. परीक्षा में कम अंक आने पर दो मित्रों के बीच संवाद लिखिए।

उत्तरः
विकास : रोहन, आज तुम इतने उदास क्यों दिखाई दे रहे हो? क्या परीक्षा-परिणाम को लेकर चिंतित हो?
रोहन : हाँ विकास, इस बार गणित की परीक्षा में मुझे बहुत कम अंक मिले हैं। मुझे स्वयं से अत्यंत निराशा हो रही है।
विकास : मित्र, एक बार की असफलता से निराश नहीं होना चाहिए। तुम्हें अपनी कमियों का विश्लेषण करना होगा।
रोहन : मुझसे अभ्यास में चूक हुई थी। मैं समय रहते सूत्रों का ठीक से पुनराभ्यास नहीं कर पाया था।
विकास : घबराओ मत, अभी यह सत्र का अंत नहीं है। यदि तुम आज से ही दृढ़ संकल्प से लग जाओ, तो सुधार संभव है।
रोहन : परंतु अकेले अभ्यास करते समय मेरा मन भटक जाता है। काश, कोई मार्गदर्शन करने वाला होता।
विकास : निराश क्यों होते हो, मैं हूँ ना! हम प्रतिदिन शाम को एक घंटा साथ बैठकर गणित का अभ्यास करेंगे।
रोहन : तुम बहुत परोपकारी हो। मैं तुमसे प्रतिज्ञा करता हूँ कि अगली परीक्षा में सर्वश्रेष्ठ अंक लाकर दिखाऊँगा।

5. दो छात्रों के बीच भविष्य में करियर चुनाव को लेकर संवाद लिखिए।

उत्तरः
नेहा : तान्या, तुमने कक्षा दसवीं उत्तीर्ण करने के पश्चात अपने भविष्य और करियर के विषय में कुछ विचार किया है?
तान्या : हाँ नेहा, मेरी इच्छा एक कुशल डॉक्टर बनने की है, इसलिए मैं ग्यारहवीं में विज्ञान वर्ग चुनूँगी। तुमने क्या सोचा है?
नेहा : मेरी रुचि कंप्यूटर इंजीनियरिंग में है। इसीलिए मैं अभी से विज्ञान और गणित विषयों पर विशेष ध्यान दे रही हूँ।
तान्या : दोनों ही क्षेत्र अत्यंत प्रतिष्ठित हैं। परंतु अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हमें निरंतर परिश्रम करना होगा।
नेहा : बिल्कुल सही! हमें विद्यालय की पढ़ाई के साथ-साथ प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी भी अभी से प्रारंभ करनी होगी।
तान्या : मैं भी इस विषय में अपनी माताजी से परामर्श कर रही हूँ। यदि हम दोनों साथ मिलकर पढ़ेंगे, तो राह आसान हो जाएगी।
नेहा : हाँ तान्या, यह विचार उत्तम है। हम एक-दूसरे की शंकाओं को दूर करके अपने लक्ष्य की ओर बढ़ सकते हैं।
तान्या : बहुत बढ़िया! कल से ही हम पुस्तकालय में बैठकर आगे की रूपरेखा तैयार करते हैं।

अध्याय 3

संवाद-लेखन

1. परिचय

संवाद-लेखन एक ऐसी विधा है जिसमें दो या अधिक पात्रों के बीच किसी विषय या परिस्थिति पर स्वाभाविक वार्तालाप प्रस्तुत किया जाता है। यह दैनिक जीवन, सामाजिक परिस्थितियों तथा भावनाओं को जीवंत रूप में व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। नाटक, एकांकी, फिल्म, रेडियो नाटक — सभी में संवाद की केंद्रीय भूमिका होती है।

संवाद-लेखन की परिभाषा
दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच होने वाले वार्तालाप को संवाद कहते हैं। जब इस वार्तालाप को लिखित रूप दिया जाता है, तो उसे संवाद-लेखन कहते हैं।

2. संवाद के आवश्यक तत्त्व

एक अच्छे संवाद में निम्नलिखित तत्त्व होने चाहिए —

1. **स्वाभाविकता:** संवाद बोलचाल की भाषा में होना चाहिए। कृत्रिमता नहीं होनी चाहिए।
2. **संक्षिप्तता:** प्रत्येक पात्र की बात छोटी और स्पष्ट होनी चाहिए।
3. **प्रवाह:** संवाद में निरंतरता होनी चाहिए — एक बात दूसरी से जुड़नी चाहिए।
4. **पात्रानुकूलता:** भाषा और विचार पात्र की आयु, स्थिति और संबंध के अनुसार हों।
5. **विषय-केंद्रितता:** संवाद मुख्य विषय से भटकना नहीं चाहिए।
6. **समानता:** दोनों पात्रों को लगभग समान अवसर मिलना चाहिए बोलने का।

3. संवाद-लेखन के महत्त्वपूर्ण बिन्दु

संवाद लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें —

1. संवाद की भाषा सरल, स्वाभाविक और बोलचाल की होनी चाहिए।
2. प्रत्येक पात्र का नाम लिखकर उसके बाद कोलन (:) लगाएँ, फिर संवाद लिखें।
3. एक पात्र की बात बहुत लंबी नहीं होनी चाहिए — 1-2 वाक्य पर्याप्त हैं।
4. संवाद में विषय या परिस्थिति का स्पष्ट संकेत होना चाहिए।
5. शब्द सीमा लगभग 80 शब्द — न अधिक, न बहुत कम।
6. संवाद का आरंभ और अंत स्वाभाविक हो — अचानक न शुरू हो और न ही अधूरा छूटे।
7. विराम चिह्नों का उचित प्रयोग करें।

4. संवाद का प्रारूप

[संवाद का शीर्षक / विषय — यदि दिया गया हो]

पात्र 1 : पहली बात (1-2 वाक्य)।
पात्र 2 : उत्तर या प्रतिक्रिया (1-2 वाक्य)।
पात्र 1 : आगे की बात।
पात्र 2 : आगे की प्रतिक्रिया।

...इसी प्रकार प्रत्येक पात्र 3-4 बार बोले...

(कुल लगभग 80 शब्द)

नोट: परीक्षा में दो विषय/परिस्थितियाँ दी जाती हैं—किसी एक पर लगभग 80 शब्दों में संवाद लिखना होता है।

5. कुछ महत्त्वपूर्ण उदाहरण

विषय आधारित संवाद

1. दो मित्रों के बीच परीक्षा की तैयारी को लेकर संवाद लिखिए।

उत्तरः

राहुल : सोहन! कल से हमारी वार्षिक परीक्षाएँ शुरु हो रही हैं। तुम्हारी तैयारी कैसी है?
सोहन : राहुल, हिंदी और विज्ञान तो ठीक हैं, पर गणित में बीजगणित का अभ्यास अभी बाकी है।
राहुल : तुम चिंता मत करो। आज शाम तुम मेरे घर आ जाओ, हम दोनों मिलकर कठिन अध्यायों को दोहराएँगे।

दुकानदार : आपकी बात बिल्कुल सही है। हम सुधार करेंगे। असुविधा के लिए क्षमा करें।

11. एक पुस्तकालयाध्यक्ष और छात्र के बीच पुस्तक उपलब्धता को लेकर संवाद लिखिए।

उत्तरः

छात्र : नमस्ते महोदय! क्या आपके पास प्रेमचंद की 'गोदान' उपलब्ध है?
पुस्तकालयाध्यक्ष : नमस्ते! यह उपन्यास अभी किसी और के पास जारी है, तीन दिन में आएगा।
छात्र : महोदय, मुझे हिंदी प्रोजेक्ट के लिए जल्दी चाहिए। क्या कोई विकल्प है?
पुस्तकालयाध्यक्ष : मैं तुम्हारा नाम प्रतीक्षा सूची में लिख देता हूँ। जैसे ही आएगी, बताऊँगा।
छात्र : ठीक है महोदय। तब तक 'निर्मला' से काम चल सकता है क्या?
पुस्तकालयाध्यक्ष : बिल्कुल! 'निर्मला' भी प्रेमचंद की उत्कृष्ट रचना है।
छात्र : महोदय, कितने दिन के लिए मिलेगी? मुझे सप्ताह भर चाहिए।
पुस्तकालयाध्यक्ष : सात दिन की अवधि है। ध्यान से पढ़ना और समय पर लौटाना।

12. एक डॉक्टर और मरीज के बीच स्वास्थ्य संबंधी संवाद लिखिए।

उत्तरः

मरीज : नमस्ते डॉक्टर साहब! कल से बुखार है, सिर में दर्द और शरीर में थकान है।
डॉक्टर : नमस्ते! कितना बुखार है? कोई और लक्षण जैसे खाँसी या जुकाम भी है?
मरीज : हाँ, जुकाम भी है। कल रात बारिश में भीग गया था।
डॉक्टर : समझ आया। थर्मामीटर लगाते हैं। जरा मुँह खोलिए — गला भी लाल है।
मरीज : डॉक्टर साहब, कुछ गंभीर तो नहीं है? दवाई कितने दिन लेनी होगी?
डॉक्टर : यह सामान्य वायरल है। तीन दिन की दवाई पर्याप्त है। आराम बहुत जरूरी है।
मरीज : खान-पान में क्या सावधानी रखूँ?
डॉक्टर : गर्म पानी पिएँ, हल्का भोजन करें, ठंडे पेय और तले भोजन से बचें।

13. दो मित्रों के बीच पर्यावरण प्रदूषण की समस्या पर संवाद लिखिए।

उत्तरः

अर्जुन : रोहित, आजकल दिल्ली की हवा इतनी खराब हो गई है कि साँस लेना भी मुश्किल हो रहा है।
रोहित : हाँ मित्र, ए. क्यू. आई. 300 से ऊपर जा रहा है। वाहनों का धुआँ और पराली जलाना — दोनों जिम्मेदार हैं।
अर्जुन : हम छात्र इस समस्या को कम करने में क्या योगदान दे सकते हैं?
रोहित : हम पटाखे न जलाएँ, साइकिल का उपयोग करें और घर में पौधे लगाएँ।
अर्जुन : विद्यालय में भी जागरूकता अभियान चला सकते हैं। पोस्टर बनाएँ, नुक्कड़ नाटक करें।
रोहित : बिल्कुल! अगर हर छात्र एक पेड़ लगाए तो शहर की तस्वीर बदल सकती है।
अर्जुन : और प्लास्टिक का उपयोग भी बंद करना होगा। यह भी प्रदूषण बढ़ाता है।
रोहित : सही कहा। छोटे-छोटे कदम मिलकर बड़ा बदलाव लाते हैं — आज से शुरु करते हैं।

14. दो सहपाठियों के बीच सोशल मीडिया के फायदे और नुकसान पर संवाद लिखिए।

उत्तरः

काव्या : दिव्या, तुम हमेशा इंस्टाग्राम पर लगी रहती हो। क्या यह सच में इतना जरूरी है?
दिव्या : काव्या, सोशल मीडिया सिर्फ मनोरंजन नहीं — इससे जागरूकता और ज्ञान भी मिलता है।
काव्या : लेकिन घंटों स्क्रीन देखने से नींद खराब होती है और पढ़ाई भी बाधित होती है।
दिव्या : यह तो सच है। लेकिन अगर सीमित उपयोग करें तो नुकसान नहीं होगा।
काव्या : समस्या यही है कि एक बार शुरु करो तो रुकना मुश्किल हो जाता है।
दिव्या : इसलिए मैंने स्क्रीन टाइम सेट किया है — एक दिन में सिर्फ 30 मिनट।
काव्या : यह अच्छा उपाय है। मैं भी यही करूँगी। फर्जी खबरें शेयर करना भी बंद करना होगा।
दिव्या : बिल्कुल! सोशल मीडिया विज्ञान का एक वरदान है, बशर्ते हम इसका उपयोग विवेकपूर्ण और अनुशासित तरीके से करें।

15. दो मित्रों के बीच स्वस्थ जीवनशैली अपनाने को लेकर संवाद लिखिए।

उत्तरः

सार्थक : मानव, तुम इतने थके हुए क्यों रहते हो? चेहरे पर भी रौनक नहीं है।
मानव : सार्थक, देर रात तक पढ़ता हूँ। सुबह व्यायाम का समय नहीं निकल पाता।
सार्थक : यही समस्या है। बिना व्यायाम और पर्याप्त नींद के शरीर कमजोर पड़ जाता है।
मानव : लेकिन परीक्षाएँ नजदीक हैं — समय कहाँ है? पढ़ाई पहले जरूरी है।
सार्थक : मित्र, स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन रहता है। सुबह सिर्फ 20 मिनट टहलो।
मानव : क्या इतने से भी फर्क पड़ेगा?

6. माँ और बेटे के बीच स्कूल में लगी चोट को लेकर संवाद लिखिए।

उत्तरः
माँ : बेटा अनुज! आज तुम विद्यालय से इतनी देर से क्यों आए हो? और तुम्हारा चेहरा इतना उतरा हुआ क्यों है?
अनुज : माँ, आज खेल के मैदान में फुटबॉल खेलते समय अचानक मेरा पैर फिसल गया और घुटने में चोट लग गई।
माँ : अरे! तनिक मुझे दिखाओ। क्या विद्यालय में तुम्हें प्राथमिक चिकित्सा नहीं दी गई थी?
अनुज : हाँ माँ, हमारे खेल शिक्षक ने तुरंत घाव साफ करके दवाई लगा दी थी। अब दर्द बहुत कम है।
माँ : फिर भी हमें एक बार डॉक्टर के पास जाकर इसकी जाँच करानी चाहिए। चोट को कभी भी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।
अनुज : ठीक है माँ, जैसी आपकी इच्छा। मैं आगे से खेलते समय पूरी सावधानी बरतूँगा।
माँ : मैं समझती हूँ बेटा। खेलते समय उचित जूते पहनना और सजग रहना अत्यंत आवश्यक है।
अनुज : जी माँ, मैं आपकी इस सीख को हमेशा याद रखूँगा और अपना पूरा ध्यान रखूँगा।

7. बेटी और पिता के बीच उच्च शिक्षा के विषय में संवाद लिखिए।

उत्तरः
पिता : आरती, दसवीं के बाद तुम कौन-सा विषय वर्ग लेना चाहती हो?
आरती : पिताजी, मैं विज्ञान वर्ग लेना चाहती हूँ। डॉक्टर बनने की इच्छा है।
पिता : बहुत अच्छा सोचा है। इसके लिए जीव विज्ञान और रसायन पर विशेष ध्यान देना होगा।
आरती : मैं जानती हूँ पिताजी। नीट की तैयारी भी स्कूल के साथ शुरु करना चाहती हूँ।
पिता : यह समझदारी की बात है। क्या कोई कोचिंग देखी है?
आरती : हाँ, पास में एक अच्छी कोचिंग है। सहेली भी वहीं जाती है।
पिता : ठीक है, कल उनसे मिलकर जानकारी लेंगे। मैं हर संभव सहयोग करूँगा।
आरती : धन्यवाद पिताजी! आपके सहयोग से मैं अपना लक्ष्य जरुर प्राप्त करूँगी।

8. माँ और बेटे के बीच अनावश्यक जेब-खर्च को लेकर संवाद लिखिए।

उत्तरः
माँ : रोहित बेटा! यह महीने का जेब-खर्च इतनी जल्दी खत्म कैसे हो गया?
रोहित : माँ, दोस्तों के साथ बाहर खाना खाया और एक किताब भी खरीदी।
माँ : किताब जरूरी थी, लेकिन बाहर खाना हर बार जरूरी नहीं होता।
रोहित : माँ, दोस्त जाते हैं तो मना करना अच्छा नहीं लगता।
माँ : दोस्ती में हर बार पैसे खर्च करना जरूरी नहीं। घर का खाना साथ ले जाओ।
रोहित : आप सही कह रही हैं। लेकिन इस बार थोड़ा और दे दें।
माँ : ठीक है, थोड़ा और दे देती हूँ। लेकिन अब खर्च का हिसाब डायरी में लिखो।
रोहित : जरूर माँ। आज से ही लिखना शुरु करूँगा। आगे से ऐसा नहीं होगा।

9. माँ और बेटी के बीच ऑनलाइन पढ़ाई के फायदे-नुकसान को लेकर संवाद लिखिए।

उत्तरः
बेटी : माँ, कल से स्कूल की कक्षाएँ ऑनलाइन हो रही हैं। मुझे टैबलेट चाहिए।
माँ : ठीक है, लेकिन ऑनलाइन पढ़ाई में ध्यान बहुत जल्दी भटकता है।
बेटी : माँ, मैं केवल पढ़ाई के लिए उपयोग करूँगी, वादा करती हूँ।
माँ : और आँखों का क्या? घंटों स्क्रीन देखने से नुकसान होता है।
बेटी : मैं हर 45 मिनट पर पाँच मिनट का विराम लूँगी और दूर से देखूँगी।
माँ : यह अच्छा है। लेकिन पढ़ाई के समय सोशल मीडिया बिल्कुल नहीं।
बेटी : बिल्कुल माँ! स्क्रीन टाइम सीमित रखूँगी। पढ़ाई पहले, बाकी सब बाद में।
माँ : शाबाश! तुम समझदार हो। टैबलेट दे देती हूँ, नियमों का पालन करना।

10. एक दुकानदार और ग्राहक के बीच खराब सामान की वापसी को लेकर संवाद लिखिए।

उत्तरः
ग्राहक : भाईसाहब, कल यह स्वेटर खरीदा था। आज ही इसमें से धागे निकलने लगे हैं।
दुकानदार : जी, दिखाइए। ओह! यह तो फैक्ट्री में ही हुई खराबी लग रही है।
ग्राहक : मुझे या तो नया स्वेटर चाहिए या पूरे पैसे वापस। यह स्वीकार नहीं।
दुकानदार : आप बिल्कुल सही हैं। क्या आप नया लेना चाहेंगे या पैसे वापस?
ग्राहक : नया स्वेटर दे दीजिए, पर अच्छी तरह जाँचकर देना।
दुकानदार : जी जरुर, अच्छी तरह जाँचकर दे रहा हूँ। यह रहा नया स्वेटर।
ग्राहक : धन्यवाद। आगे से ग्राहकों को खराब माल न दें — इससे विश्वास टूटता है।

स्वयं : अंकलजी, कृपया धैर्य रखें। वह कब से नहीं मिल रहा? क्या बस में चढ़ते समय आपके पास था?
यात्री : हाँ, बस में चढ़ते समय तो था। संभवतः भीड़ में कहीं गिर गया। अब क्या करूँ?
स्वयं : सर्वप्रथम हम चालक से बस रोकने का अनुरोध करते हैं, तत्पश्चात सीटों के नीचे खोजते हैं।
यात्री : इस अत्यधिक भीड़ में कैसे प्राप्त होगा? अवश्य ही किसी ने उठा लिया होगा।
स्वयं : मैं सभी यात्रियों से इस विषय में निवेदन करता हूँ—संसार में ईमानदार लोग भी होते हैं।
यात्री : यह तुम्हारा मुझ पर बहुत बड़ा उपकार होगा बेटा।
स्वयं : लीजिए अंकलजी—पीछे की सीट वाले सज्जन को यह मिल गया था। यह रहा आपका पर्स।

21. पड़ोस में अचानक आग लगने की घटना के समय दो पड़ोसियों के बीच संवाद लिखिए।

उत्तरः
पहला पड़ोसी : अरे! तनिक देखिए, सामने वाले मकान की छत से धुआँ उठ रहा है। वहाँ आग लग गई है!
दूसरा पड़ोसी : हाँ, स्थिति गंभीर है! आप तुरंत दमकल विभाग को 101 नंबर पर सूचित कीजिए। मैं सबको सचेत करता हूँ।
पहला पड़ोसी : मैं अभी दूरभाष करता हूँ। तुम जाकर देखो कि घर के भीतर कोई फंसा तो नहीं है।
दूसरा पड़ोसी : मुख्य द्वार बंद है। मैं ऊँचे स्वर में पुकारता हूँ—अंदर कोई है? शीघ्र बाहर आइए!
पहला पड़ोसी : देखिए, दमकल की गाड़ी आती दिखाई दे रही है। उन्हें भीतर आने का मार्ग बताओ।
दूसरा पड़ोसी : वे आ गए! इधर आइए भाई साहब शीघ्र! जल की पाइप इस ओर लगाइए।
पहला पड़ोसी : ईश्वर की कृपा से सहायता समय पर पहुँच गई, जिससे जान-माल की क्षति कम हुई।
दूसरा पड़ोसी : हाँ, सजगता आवश्यक थी। अब स्थानीय पुलिस को भी सूचित कर देते हैं और प्रभावित परिवार की सहायता करते हैं।

22. एक छात्र और उसके माता-पिता के बीच परीक्षा में अच्छे अंक आने पर उपहार के रूप में स्मार्टफोन की माँग को लेकर संवाद लिखिए।

उत्तरः
छात्र : पिताजी! इस बार परीक्षा में मुझे 93 प्रतिशत अंक प्राप्त हुए हैं। आपने स्मार्टफोन दिलाने का वचन दिया था।
पिता : वाह बेटा! यह तो अत्यंत हर्ष का विषय है। अपनी माताजी को भी यह शुभ समाचार सुनाओ।
छात्र : माताजी इस विषय में पूर्व से ही जानती हैं। वे अत्यंत प्रसन्न हैं। तो क्या अब मुझे फोन मिलेगा?
पिता : अवश्य मिलेगा, परंतु मेरी एक शर्त है—इस फोन का उपयोग केवल शिक्षा और आवश्यक कार्यों के लिए ही होगा।
छात्र : पिताजी, मैं इसका अत्यंत विवेकपूर्ण उपयोग करूँगा। खेल और सोशल मीडिया से दूरी बनाए रखूँगा।
पिता : और तुम्हारा स्क्रीन टाइम प्रतिदिन एक-दो घंटे से अधिक नहीं होना चाहिए। रात्रि में फोन बंद रहेगा।
छात्र : मुझे आपकी सभी शर्तें पूर्णतः स्वीकार हैं। आप मुझ पर पूर्ण विश्वास रख सकते हैं।
पिता : शाबाश! कल हम साथ चलकर एक अच्छा स्मार्टफोन खरीदेंगे। हमें तुम पर गर्व है।

23. विद्यालय में 'प्लास्टिक मुक्त अभियान' के दौरान एक छात्र और प्रधानाचार्य के बीच संवाद लिखिए।

उत्तरः
छात्र : नमस्ते मैम! विद्यालय के प्लास्टिक मुक्त अभियान के बारे में जानना था।
प्रधानाचार्य : नमस्ते! यह बहुत जरूरी अभियान है। अब विद्यालय में प्लास्टिक पूर्णतः प्रतिबंधित है।
छात्र : मैम, हम छात्र इस अभियान में किस प्रकार योगदान दे सकते हैं?
प्रधानाचार्य : कपड़े का थैला लाओ, स्टील की बोतल रखो और अपने दोस्तों को भी प्रेरित करो।
छात्र : मैम, क्या हम जागरूकता रैली और नुक्कड़ नाटक भी कर सकते हैं?
प्रधानाचार्य : यह तो बहुत उत्तम सुझाव है! शुक्रवार को आयोजन तय करते हैं।
छात्र : मैम, आसपास की कॉलोनियों में भी जागरूकता फैलाएँ क्या?
प्रधानाचार्य : बिल्कुल! तुम्हारा उत्साह सराहनीय है। पूरी योजना कल कागज पर लाओ।

24. आप बाजार में हैं और देखते हैं कि एक छोटा बच्चा रो रहा है और अपने माता-पिता से बिछड़ा हुआ है। आप उसकी मदद करते हैं। इस परिस्थिति पर आधारित संवाद लिखिए।

उत्तरः
स्वयं : अरे बच्चे, तुम क्यों रो रहे हो? क्या बात हुई? तुम्हारी माताजी कहाँ हैं?
बच्चा : मुझे नहीं पता। मैं उनके साथ ही चल रहा था, परंतु इस भीड़ में वे अचानक ओझल हो गईं।
स्वयं : धैर्य रखो, घबराओ मत। मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। मुझे अपना और अपनी माताजी का नाम बताओ।
बच्चा : मेरा नाम आयुष है और माताजी का नाम श्रीमती सुनीता है। हम उस कपड़े की दुकान में थे।
स्वयं : ठीक है आयुष, तुम यहीं खड़े रहो। मैं इस दुकानदार से लाउडस्पीकर पर उद्घोषणा करवाता हूँ।
बच्चा : परंतु यदि माताजी नहीं मिलीं तो? मुझे अत्यधिक भय लग रहा है।

सार्थक : जरूर! एकाग्रता बढ़ेगी, याददाश्त तेज होगी और थकान कम लगेगी।
मानव : ठीक है, कल से सुबह 6 बजे साथ चलेंगे। तुम आओगे ना?

परिस्थिति आधारित संवाद

16. आपके मित्र का परीक्षा से पहले मन बहुत घबराया हुआ है और वह आत्मविश्वास खो रहा है। इस परिस्थिति में आप और आपके मित्र के बीच का संवाद लिखिए।

उत्तरः
स्वयं : विनय, आज तुम बहुत शांत हो। कल हिंदी की परीक्षा है—क्या इसी कारण चिंतित हो?
विनय : हाँ! मुझे कुछ भी याद नहीं हो रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि कल परीक्षा भवन में सब भूल जाऊँगा।
स्वयं : ऐसा सोचना अनुचित है। तुमने संपूर्ण वर्ष कठिन परिश्रम किया है—बस स्वयं पर विश्वास रखो।
विनय : परंतु पिछली बार भी मैंने ऐसा ही सोचा था और घबराहट के कारण परीक्षा बिगड़ गई थी।
स्वयं : बीती बातों को भूल जाओ। आओ, अभी हम मिलकर मुख्य बिंदु और कविताओं का एक बार पुनराभ्यास करते हैं।
विनय : क्या सचमुच एक घंटे में यह संभव हो पाएगा? यदि कोई अपरिचित प्रश्न आ गया तो?
स्वयं : अपरिचित प्रश्न देखकर भी धैर्य बनाए रखना—जो उत्तर पहले आता हो, उसे लिखो, शेष के विषय में बाद में सोचना।
विनय : तुम्हारा साथ है तो भय कैसा। चलिए, अभी अध्ययन प्रारंभ करते हैं।।

17. बाज़ार में अचानक भारी बारिश हो गई और आप दुकान के नीचे खड़े हैं, वहाँ एक बुजुर्ग व्यक्ति भी हैं जिनके पास छाता नहीं है। इस परिस्थिति पर आधारित संवाद लिखिए।

उत्तरः
बुजुर्ग : बेटा, यह बारिश तो रुकने का नाम ही नहीं ले रही। अब मैं घर कैसे जाऊँगा?
स्वयं : चाचाजी, आप चिंता न करें। क्या आप घर पर किसी सदस्य को फोन कर सकते हैं?
बुजुर्ग : बेटा, दूरभाष तो है परंतु मेरा पुत्र बाहर गया हुआ है। इस समय मेरे पास छाता भी नहीं है।
स्वयं : मेरे पास छाता है। आप इसे लेकर प्रस्थान कीजिए, मेरा निवास स्थान समीप ही है।
बुजुर्ग : नहीं बेटा, इस प्रकार तो तुम भी भीग जाओगे। तुम्हें भी तो इसकी आवश्यकता है।
स्वयं : दुकान के निकट कुछ ऑटो चालक खड़े हैं, मैं उन्हें बुलाता हूँ। आप सुरक्षित घर पहुँच जाएँगे।
बुजुर्ग : बेटा, तुम जैसे समझदार और परोपकारी युवाओं को देखकर मन अत्यंत प्रसन्न हो जाता है।
स्वयं : यह तो मेरा कर्तव्य है चाचाजी। ऑटो आ गया है, आइए बैठिए।

18. आपने देखा कि एक सहपाठी परीक्षा में नकल करने की कोशिश कर रहा है। आप उसे समझाते हैं। इस परिस्थिति पर आधारित संवाद लिखिए।

उत्तरः
स्वयं : मोहन, परीक्षा में यह पर्चियाँ क्यों निकाल रहे हो? यह अनुचित साधन (नकल) का प्रयोग है।
मोहन : मित्र, मुझे गणित के सूत्र स्मरण नहीं हो रहे थे। बस एक बार देख रहा हूँ, कोई नहीं देख पाएगा।
स्वयं : ऐसी भूल कदापि मत करो! यदि निरीक्षक ने देख लिया, तो तुम्हारी परीक्षा रद्द हो जाएगी।
मोहन : परंतु यदि उत्तरपुस्तिका रिक्त छोड़ दी, तो अनुत्तीर्ण हो जाऊँगा। तब माता-पिता क्या सोचेंगे?
स्वयं : ईमानदारी से अनुत्तीर्ण होना बेहतर है। नकल करके उत्तीर्ण होना बेईमानी है—इससे तुम कुछ सीख नहीं पाओगे।
मोहन : पर इतनी एकाग्रता के बाद भी यदि मुझे कुछ याद न आए तो मैं क्या करूँ?
स्वयं : जो तुम्हें स्मरण है, उसे लिखो। अपने ज्ञान और याददाश्त पर भरोसा रखो।
मोहन : तुम सत्य कह रहे हो। मैं इन पर्चियों को रख देता हूँ। अब पूरी ईमानदारी से परीक्षा दूँगा।

19. विद्यालय में वृक्षारोपण कार्यक्रम के दौरान एक छात्र और उसके शिक्षक के बीच संवाद लिखिए।

उत्तरः
छात्र : महोदय, आज वृक्षारोपण कार्यक्रम के अंतर्गत हम कौन-से पौधे लगाएँगे?
शिक्षक : आज हम नीम, पीपल, अशोक और तुलसी के पौधे लगाएँगे। ये पर्यावरण के लिए अत्यंत उपयोगी हैं।
छात्र : महोदय, क्या केवल पौधा लगाना ही पर्याप्त है अथवा उनकी देखभाल भी आवश्यक है?
शिक्षक : अत्यंत सराहनीय प्रश्न! पौधा लगाना तो मात्र एक शुरुआत है, उसकी निरंतर देखभाल और सुरक्षा ही वास्तविक कार्य है।
छात्र : महोदय, मैं इस नीम के पौधे की जिम्मेदारी लेना चाहता हूँ। मैं इसे प्रतिदिन जल दूँगा।
शिक्षक : शाबाश! यही सजग सोच हमारे पर्यावरण की रक्षा करेगी। हम तुम्हारा नाम इस पौधे की पट्टिका पर लिखेंगे।
छात्र : महोदय, क्या अन्य छात्र भी इस प्रकार का उत्तरदायित्व ले सकते हैं?
शिक्षक : अवश्य! यह विचार अत्यंत उत्तम है। कल हम सभी कक्षाओं में इसकी घोषणा करेंगे।

20. बस में सफर करते समय एक यात्री ने अपना पर्स खो दिया है। आप उसकी मदद करते हैं। इस परिस्थिति पर आधारित संवाद लिखिए।

उत्तरः
यात्री : हे ईश्वर! मेरा पर्स नहीं मिल रहा है। उसमें मेरे अत्यंत महत्वपूर्ण दस्तावेज और धन था!

रजत : मित्र, मुझे ज्ञात है। मैंने माताजी से कहा था, परंतु वे मेरी बात नहीं मानतीं।
स्वयं : गंदगी से बीमारियाँ और मच्छर पनपते हैं। यह हम सबके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।
रजत : तुम सत्य कह रहे हो। परंतु हमारे घर के पास कोई कूड़ेदान नहीं है—इसीलिए सब बाहर फेंकते हैं।
स्वयं : हम नगर पालिका को आवेदन पत्र दे सकते हैं। मैं भी साथ दूँगा। तब तक तुम घर में डस्टबिन रख सकते हो।
रजत : यह तो उत्तम विचार है। कल ही मिलकर आवेदन पत्र लिखते हैं।
स्वयं : तब तक कचरे को एक थैली में एकत्रित करो और कूड़ागाड़ी आने पर ही उसे सौंपो।
रजत : ठीक है, आज ही घर पर बात करूँगा। हमें एक जिम्मेदार नागरिक बनना चाहिए।

30. आपके मित्र को पता चला है कि उसका एक करीबी दोस्त उससे झूठ बोल रहा था और पीठ पीछे बुराई कर रहा था। आपका मित्र बहुत दुखी है। आप उसे सांत्वना देते हैं। इस परिस्थिति पर आधारित संवाद लिखिए।

उत्तरः
मित्र : मित्र, मुझे ज्ञात हुआ है कि करण मेरे बारे में असत्य बोलता था और पीठ पीछे मेरी निंदा करता था।
स्वयं : क्या यह सच है? यह अत्यंत दुखद है। तुम तो उसे अपना सबसे प्रिय मित्र मानते थे।
मित्र : हाँ, इसीलिए बहुत कष्ट हो रहा है। मित्रता में विश्वासघात अत्यंत पीड़ादायक होता है।
स्वयं : मैं तुम्हारी इस मानसिक वेदना को समझ सकता हूँ। परंतु इस कारण स्वयं को दुर्बल मत होने दो।
मित्र : अब मेरी समझ में नहीं आ रहा कि मैं उससे बात करूँ या पूर्णतः दूरी बना लूँ?
स्वयं : तुम शांत मन से एक बार उससे बात करो। संभव है कि कोई गलतफहमी हो—सत्य जानकर ही निर्णय लो।
मित्र : और यदि यह सूचना पूर्णतः सत्य निकली तो?
स्वयं : तो ऐसे कपटी मित्र से दूरी बनाना ही उचित है। सच्चे मित्र दुर्लभ होते हैं—जो हैं, उन्हें सँभालो।

स्वयं : मैं तुम्हारे साथ हूँ, भयभीत न हो। देखो, उद्घोषणा की जा रही है—वे अवश्य आती होंगी।
बच्चा : वह देखिए, माताजी आ रही हैं! भैया, सहायता के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

25. आप विद्यालय के रास्ते में देखते हैं कि एक वृद्ध व्यक्ति सड़क पार नहीं कर पा रहे और वाहनों की भीड़ है। आप उनकी सहायता करते हैं। इस परिस्थिति पर आधारित संवाद लिखिए।

उत्तरः
स्वयं : सादर प्रणाम दादाजी! आप काफी समय से यहाँ खड़े हैं। क्या मैं आपकी कुछ सहायता कर सकता हूँ?
वृद्ध : जीता रहो बेटा, मुझसे यह सड़क पार नहीं हो पा रही है। वाहनों की गति बहुत तीव्र है और कोई रुकता ही नहीं।
स्वयं : आप मेरा हाथ पकड़ लीजिए। जैसे ही यातायात का संकेत लाल होगा, मैं आपको मार्ग पार करवा दूँगा।
वृद्ध : परंतु बेटा, इस कार्य में कहीं तुम्हें विलंब तो नहीं हो जाएगा? तुम्हें विद्यालय भी तो जाना होगा?
स्वयं : कोई बात नहीं दादाजी, यह तो मात्र कुछ मिनटों का कार्य है। आपकी सहायता करना मेरा प्राथमिक कर्तव्य है।
वृद्ध : ईश्वर तुम्हें दीर्घायु और उन्नति प्रदान करे। आज के समय में बच्चे इतने संस्कारी कम ही दिखते हैं।
स्वयं : लीजिए दादाजी, संकेत लाल हो गया है। अब हम धीरे-धीरे मार्ग पार करते हैं, मैं आपके साथ हूँ।
वृद्ध : बहुत धन्यवाद बेटा! तुम्हारे जैसे संस्कारी बच्चों को देखकर मन अत्यंत प्रफुल्लित हो जाता है।

26. आप पार्क में बैठे हैं और देखते हैं कि कुछ बच्चे पेड़ों की डालियाँ तोड़ रहे हैं। आप उन्हें समझाते हैं। इस परिस्थिति पर आधारित संवाद लिखिए।

उत्तरः
स्वयं : सुनिए बच्चों! आप इन वृक्षों की डालियाँ क्यों तोड़ रहे हैं? यह अत्यंत अनुचित कृत्य है।
बच्चा : हम तो यहाँ मात्र खेल रहे थे। इसमें ऐसी क्या बुराई है?
स्वयं : वृक्ष हमें ऑक्सीजन और शीतल छाया प्रदान करते हैं। डालियाँ तोड़ने से पेड़ दुर्बल हो जाते हैं।
बच्चा : परंतु केवल एक-दो डालियाँ तोड़ने से पर्यावरण को क्या क्षति पहुँचेगी?
स्वयं : यदि प्रत्येक बालक यही सोचेगा, तो विचार करो कितने वृक्ष नष्ट हो जाएँगे। पर्यावरण का संरक्षण हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है।
बच्चा : हमें इस बात का ज्ञान नहीं था कि हमारे खेल से प्रकृति को इतना नुकसान हो सकता है।
स्वयं : कोई बात नहीं। अब जब तुम इस सत्य को जान गए हो, तो वृक्षों की रक्षा करो। संभव हो तो नए पौधे लगाओ।
बच्चा : ठीक है भैया! हम वचन देते हैं कि भविष्य में कभी वृक्षों को क्षति नहीं पहुँचाएँगे, अपितु नए पौधे लगाएँगे।

27. परीक्षा की उत्तरपुस्तिका जाँचते समय शिक्षक को लगता है कि एक होनहार छात्र ने अचानक बहुत कम अंक प्राप्त किए हैं। शिक्षक उस छात्र से बात करते हैं। इस परिस्थिति पर आधारित संवाद लिखिए।

उत्तरः
शिक्षक : समर्थ, इस बार गणित में तुम्हारे मात्र 48 अंक हैं, जबकि पिछली बार 87 थे। इस गिरावट का क्या कारण है?
समर्थ : महोदय, इस बार मैं पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पाया। कुछ पारिवारिक समस्याएँ थीं।
शिक्षक : बेटा, यदि कोई समस्या है तो निसंकोच बताओ, हम मिलकर समाधान खोजेंगे।
समर्थ : महोदय, पिताजी अस्वस्थ थे। रात में उनकी देखभाल के कारण मैं अध्ययन नहीं कर पाया।
शिक्षक : ओह! यह कठिन समय था। अब उनके स्वास्थ्य में कैसा सुधार है?
समर्थ : अब वे ठीक हैं, महोदय। परंतु खराब प्रदर्शन के कारण मैं बहुत दुखी हूँ।
शिक्षक : निराश मत हो, परिस्थितियाँ आती-जाती रहती हैं। अब आगामी परीक्षा के लिए प्रयास करो।
समर्थ : अवश्य महोदय। आपके मार्गदर्शन से मैं पुनः श्रेष्ठ अंक लाऊँगा—यह मेरा वचन है।

28. दो मित्र रेलवे स्टेशन पर हैं। उनमें से एक मित्र की ट्रेन छूट गई है और अगली ट्रेन चार घंटे बाद है। इस परिस्थिति पर आधारित संवाद लिखिए।

उत्तरः
पहला मित्र : मित्र, मेरी ट्रेन छूट गई! मैं मात्र पाँच मिनट देर से पहुँचा। अब मैं क्या करूँ?
दूसरा मित्र : घबराओ मत, धैर्य रखो। पहले टिकट काउंटर पर चलकर अगली ट्रेन की सूचना लेते हैं।
पहला मित्र : मैंने पता किया है, अगली ट्रेन चार घंटे बाद है। घर पर माताजी प्रतीक्षा कर रही होंगी।
दूसरा मित्र : तुम तुरंत फोन करके माताजी को सूचित कर दो ताकि वे चिंतित न हों।
पहला मित्र : हाँ, वह जरूरी है। परंतु हम यहाँ चार घंटे का समय कैसे बिताएँगे?
दूसरा मित्र : हम प्रतीक्षालय में बैठते हैं। मैं भी तुम्हारे साथ रुकूँगा, वहाँ पढ़ाई कर लेंगे।
पहला मित्र : नहीं मित्र, तुम्हें घर पहुँचने में विलंब हो जाएगा। तुम जाओ, मैं संभाल लूँगा।
दूसरा मित्र : संकट में मित्र को अकेला नहीं छोड़ते। चार घंटे जल्दी बीत जाएँगे—चलो कुछ खाते हैं।

29. आपके पड़ोस में एक परिवार है जो कचरा सड़क पर फेंकता है। आप उनके बच्चे से इस विषय में बात करते हैं। इस परिस्थिति पर आधारित संवाद लिखिए।

उत्तरः
स्वयं : रजत, कल तुम्हारे घर वालों ने कचरा मुख्य मार्ग पर फेंका था। इससे गंदगी फैलती है।

तुम्हारा पत्र मिले काफी दिन हो गए। मन में चिंता हो रही थी तो मैंने तुम्हें पत्र लिखने का निश्चय किया। पहले तुमने दिल्ली में रहने की उत्सुकता दिखाई थी। आज मैं तुम्हें दिल्ली के जीवन से अवगत कराना चाहता हूँ।

यह नगर भारत की राजधानी है। इसका पुराना इतिहास है। यह नगर अनेक बार उजड़ा और बसा। यहाँ पर भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के लोग आए और गए। यहाँ माया भी है तथा तप भी है। यहाँ की चौड़ी सड़कें, गगनचुंबी इमारतें, ऐतिहासिक इमारतें आदि एक अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करती हैं। यहाँ संसार की सब सुविधाएँ उपलब्ध हैं। अनेक शिक्षण संस्थाएँ, नौकरी के लिए हजारों क्षेत्र विद्यमान हैं।

महानगर का दूसरा रूप अत्यंत बुरा है। यहाँ घंटों यातायात जाम रहता है। दूसरे, यहाँ आवास की समस्या है। मकान मिलना तो लॉटरी खुलने के समान है। यहाँ पारस्परिक सद्भाव का अभाव है। सारा जीवन यंत्रवत् चलता रहता है। आशा है कि तुम महानगरीय जीवन से कुछ परिचित हो गए होगे।

छोटों को प्यार व बड़ों को प्रणाम कहना।

तुम्हारा मित्र,
राहुल

29. अपनी गलत आदतों का पश्चाताप करते हुए अपनी माताजी को पत्र लिखिए और उन्हें आश्वासन दिलाइए कि फिर ऐसा न होगा।

उत्तरः

कुलदीप सिंह
68, किला रोड,
ग्वालियर, मध्य प्रदेश।
दिनांक : 11 जनवरी, 20xx
आदरणीय माता जी,
सादर चरण-स्पर्श!

आशा है आप स्वस्थ और कुशल होंगी। मैं भी यहाँ छात्रावास में ठीक हूँ। मुझे इस बात का एहसास है कि आप मेरी गलत आदतों के कारण परेशान हैं। पिछले दिनों मुझसे एक नहीं अनेक बार कई गलतियाँ हो गई हैं। मैं अपने आप पर नियंत्रण नहीं रख पाया। दोस्तों के साथ पार्टी में आता-जाता रहा।

माता जी, मुझे अपनी गलती का एहसास है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आगे-से आपको मेरी ओर से किसी ऐसी गलती का समाचार नहीं मिलेगा। मेरे दोस्त मुझे निमंत्रण भी देंगे तो मैं आपका स्मरण करके उस ओर नहीं जाऊँगा।

आप मेरे लिए प्रभु से प्रार्थना करें और अपना आशीष दें कि मैं स्वयं पर नियंत्रण रख सकूँ।

आपका प्रिय पुत्र,
कुलदीप

30. अपने पिताजी को एक पत्र लिखकर उन्हें अपनी पढ़ाई की प्रगति से अवगत कीजिए।

उत्तरः

मोहित सैनी
65, हिंद कॉलोनी,
अजमेर।
दिनांक : 22 अगस्त, 20xx
पूज्य पिता जी,
सादर चरण-स्पर्श!

मैं यहाँ सकुशल हूँ और आशा करता हूँ कि आप भी सकुशल होंगे। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मेरी पढ़ाई बहुत ही अच्छी तरह से चल रही है। मैं अपनी विद्यालयी परीक्षा में 95 प्रतिशत अंक प्राप्त कर इस वर्ष अव्वल रहा हूँ। इस सफलता में आपके मार्गदर्शन का अहम योगदान है।

मैं प्रतिदिन सुबह 6 से 8 बजे तक तथा शाम को 6 से 9 बजे तक पढ़ता हूँ। मैं अपने दोस्तों के साथ पढ़े गए विषय पर चर्चा करता हूँ जिसका मुझे बहुत लाभ मिला है। आगे भी मैं निरंतर यही कार्य जारी रखूँगा और सफल होऊँगा। शेष मिलने पर बातें करूँगा।

माताजी को प्रणाम तथा छोटी बहन अंशु एवं प्यारे भाई प्रवीण को प्यार।

आपका पुत्र,
मोहित

अध्याय 4

सूचना-लेखन

1. परिचय

आधुनिक युग में किसी संदेश या निर्देश को कम से कम समय में एक बड़े जनसमूह तक पहुँचाने के लिए 'सूचना-लेखन' एक अत्यंत प्रभावी और औपचारिक माध्यम है। जब किसी विद्यालय, संस्था, कार्यालय या समाज द्वारा कोई महत्वपूर्ण निर्णय, परिवर्तन या आगामी कार्यक्रम की घोषणा करनी होती है, तो उसे लिखित रूप में सार्वजनिक किया जाता है। इसे ही 'सूचना' कहते हैं। सामान्यतः ये सूचनाएँ एक निश्चित और विशेष स्थान पर लगाई जाती हैं, जैसे—विद्यालयों या कार्यालयों का 'सूचनापट्ट'।

सूचना की परिभाषा
सूचना वह माध्यम है, जो संबंधित लोगों को अपेक्षित जानकारी देने के लिए प्रयुक्त होता है। किसी संस्था, समूह या समाज विशेष को विशेष जानकारी देने के लिए सूचना लिखना सूचना-लेखन कहलाता है।

सूचनाओं के प्रमुख प्रकार एवं विषय
दैनिक जीवन और प्रशासनिक कार्यों के आधार पर ये सूचनाएँ कई प्रकार की हो सकती हैं:

- **शैक्षणिक एवं विद्यालयी गतिविधियाँ:** विद्यालय में अवकाश, परीक्षाओं का आयोजन, पिकनिक, खेल दिवस, या किसी सांस्कृतिक कार्यक्रम की जानकारी।
- **सार्वजनिक एवं सामाजिक संदेश:** स्वास्थ्य संबंधी निर्देश, जनता को सचेत या सावधान करने वाले संदेश, अथवा किसी नए नियम या परिवर्तन की घोषणा।
- **नियुक्ति एवं निमंत्रण:** संस्था में किसी नए सदस्य के आगमन की सूचना या किसी आयोजन में सहभागिता के लिए आमंत्रण।
- **विविध विषय:** किसी खोई हुई या पाई गई वस्तु के विषय में सर्वसाधारण को सूचित करना।

2. सूचना-लेखन के महत्त्वपूर्ण बिन्दु

सूचना-लेखन के समय ध्यान रखने योग्य कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दु निम्नलिखित हैं —

1. सूचना की भाषा अत्यंत सरल, स्पष्ट और औपचारिक होनी चाहिए।
2. सूचना बहुत लंबी नहीं होनी चाहिए। पाठ्यक्रम के अनुसार यह लगभग 80 शब्द की होनी चाहिए।
3. सूचना को हमेशा एक बॉक्स (चौकोर घेरे) के भीतर ही लिखा जाना चाहिए।
4. सबसे ऊपर संस्था/विद्यालय/संगठन का नाम और उसके नीचे ठीक मध्य में स्पष्ट रूप से 'सूचना' शब्द लिखा होना अनिवार्य है।
5. सूचना का विषय संक्षिप्त और प्रभावी होना चाहिए ताकि पाठक का ध्यान तुरंत आकर्षित हो सके।
6. बाईं ओर स्पष्ट रूप से दिनांक लिखी जानी चाहिए ताकि सूचना की प्रासंगिकता का पता चल सके।
7. सूचना हमेशा अन्य पुरुष में लिखी जानी चाहिए, जैसे — "सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है..."। इसमें 'मैं' या 'तुम' जैसे शब्दों का प्रयोग वर्जित है।
8. सूचना की मुख्य विषय-वस्तु में कार्यक्रम का नाम, तिथि, समय, स्थान और संपर्क करने वाले व्यक्ति का विवरण स्पष्ट रूप से शामिल होना चाहिए।
9. अंत में सूचना जारी करने वाले व्यक्ति के हस्ताक्षर, नाम और उसकी पदवी का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए।

3. सूचना का प्रारूप

सूचना-लेखन हेतु सूचना का मानक प्रारूप नीचे दिया गया है:

[संस्था / विद्यालय / संगठन का नाम]

सूचना

दिनांक : ____ , 20xx

[सूचना का शीर्षक —रेखांकित]

[सूचना का मुख्य विषय — लगभग 80 शब्दों में, अन्य पुरुष में]

हस्ताक्षर
[हस्ताक्षरकर्ता का नाम]
[पद / पदवी]

4. कुछ महत्त्वपूर्ण उदाहरण

1. आपके विद्यालय परिसर में छात्रों के स्वास्थ्य कल्याण हेतु एक निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस संबंध में सभी छात्रों को सूचित करते हुए लगभग 80 शब्दों में एक आधिकारिक सूचना तैयार कीजिए।

उत्तरः

श्री महावीर शिक्षण संस्थान, दिल्ली

सूचना

दिनांक : 28 अक्टूबर, 20xx

नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन

दिनांक 2 नवंबर, 20xx को विद्यालय में नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जाएगा। इसमें वरदान नेत्र चिकित्सालय के अनुभवी चिकित्सक विद्यार्थियों की आँखों का निःशुल्क परीक्षण करेंगे तथा आँखों को स्वस्थ रखने हेतु आवश्यक जानकारी प्रदान करेंगे। इच्छुक छात्र-छात्राएँ कमरा नं. 17 में सुबह 8:00 बजे से पर्चा बनवाकर अपनी आँखों का निःशुल्क परीक्षण करा सकते हैं। सभी विद्यार्थियों से अनुरोध है कि इस सुविधा का भरपूर लाभ उठाएँ और अपने परिवारजनों को भी प्रेरित करें।

कार्तिक शर्मा
प्रधानाचार्य

2. आप एन. के. विद्यालय के प्रधानाचार्य हैं। दिल्ली में लगे ट्रेड फेयर देखने के इच्छुक छात्रों को वहाँ ले जाने की सूचना लगभग 80 शब्दों में जारी करें।

उत्तरः

एन. के. विद्यालय, मथुरा

सूचना

दिनांक : 16 नवंबर, 20xx

दिल्ली व्यावसायिक प्रदर्शनी देखने जाने के संदर्भ में

दिल्ली में आयोजित व्यावसायिक प्रदर्शनी (ट्रेड फेयर) देखने के लिए विद्यालय की ओर से एक टूर 12 नवंबर को प्रातः 6:00 बजे बस से दिल्ली रवाना होगा। इस टूर में कक्षा ix एवं x के छात्र-छात्राएँ सम्मिलित हो सकते हैं। टूर में आने हेतु इच्छुक छात्र-छात्राएँ अपने कक्षा अध्यापक से तुरंत संपर्क करें। यह प्रदर्शनी विभिन्न व्यवसायों और करियर के बारे में बहुमूल्य जानकारी देगी। सभी इच्छुक विद्यार्थी शीघ्र अपना नाम दर्ज करवाएँ।

करण सैनी
प्रधानाचार्य

3. आप डी.एन.सी. पब्लिक स्कूल, भरतपुर (राजस्थान) के प्रधानाचार्य केसर शर्मा हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में आई भीषण बाढ़ से प्रभावित बाढ़ पीड़ितों को सहायता देने के लिए सूचना पट पर सूचना लगभग 80 शब्दों में लिखिए।

उत्तरः

डी.एन.सी. पब्लिक स्कूल, भरतपुर (राजस्थान)

सूचना

दिनांक : 10 अगस्त, 20xx

बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ सहयोग

पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में आई भीषण बाढ़ से पीड़ितों के पुनर्वास हेतु विद्यालय राहत सामग्री और सहयोग राशि भेज रहा है। इच्छुक शिक्षक, शिक्षणेतर कर्मचारी एवं छात्र-छात्राएँ दिनांक 14 अगस्त, 20xx सायं 4:00 बजे तक उपप्रधानाचार्या डॉ. सीमा सिंह को सहयोग सामग्री एवं धनराशि सौंपकर रसीद प्राप्त कर लें। यह मानवसेवा का एक सुनहरा अवसर है। आइए, मिलकर बाढ़ पीड़ितों की मदद करें और उनके जीवन में उम्मीद की किरण जगाएँ।

केसर शर्मा
प्रधानाचार्य

4. आप एस.एस.एम. पब्लिक स्कूल (दिल्ली) के प्रधानाचार्य कमल सिंह हैं। विद्यालय परिसर और कक्षाओं में छात्रों द्वारा मोबाइल फोन लाने के कारण अनुशासन प्रभावित हो रहा है। कक्षाओं में मोबाइल फोन के उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध की घोषणा करते हुए छात्रों और अभिभावकों के लिए लगभग 80 शब्दों में एक आधिकारिक सूचना तैयार कीजिए।

उत्तरः

एस.एस.एम. पब्लिक स्कूल, दिल्ली

सूचना

दिनांक : 16 अप्रैल, 20xx

विद्यालय में मोबाइल फोन लाने पर प्रतिबंध

ज्ञात हुआ है कि कुछ बच्चे कक्षा में मोबाइल फोन लाते हैं, जो कि विद्यालय के नियमों का स्पष्ट उल्लंघन है। विद्यालय में मोबाइल फोन लाना पूर्णतः प्रतिबंधित है। मोबाइल फोन से बच्चों का ध्यान पढ़ाई से भटकता है और अनुशासन भी बाधित होता है। यदि किसी बच्चे के पास मोबाइल फोन पाया गया तो उसके विरुद्ध कठोर अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी। अभिभावकों से भी अनुरोध है कि इस नियम का पालन सुनिश्चित करें।

कमल सिंह
प्रधानाचार्य

5. आप विकास पब्लिक स्कूल, नोएडा के स्वास्थ्य संगठन के सचिव आर. एस. भाकर हैं। विद्यालय द्वारा छात्रों के लिए एक वार्षिक चिकित्सा जाँच शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस संबंध में सभी विद्यार्थियों को सूचित करते हुए लगभग 80 शब्दों में एक सूचना तैयार कीजिए।

उत्तरः

विकास पब्लिक स्कूल, नोएडा

सूचना

दिनांक : 16 अप्रैल, 20xx

विद्यालय द्वारा चिकित्सा जाँच शिविर का आयोजन

विद्यालय द्वारा कक्षा छठी से बारहवीं तक के सभी छात्रों के लिए निःशुल्क चिकित्सा जाँच शिविर का आयोजन 20 अप्रैल, 20xx से 30 अप्रैल, 20xx तक किया जा रहा है। इसमें अनुभवी डॉक्टर व दंत चिकित्सक उपस्थित रहेंगे जो विद्यार्थियों का सामान्य एवं दंत स्वास्थ्य परीक्षण करेंगे। जाँच के संपूर्ण विवरण की प्रति अभिभावकों को दी जाएगी। सभी विद्यार्थियों से अनुरोध है कि वे इस अवसर का भरपूर लाभ उठाएँ।

आर. एस. भाकर
सचिव, स्वास्थ्य संगठन

6. आप ए.जी.बी. विद्यालय, रतनपुर के अनुशासन अधिकारी महेश सैनी हैं। विद्यालय परिसर में एक विद्यार्थी को रुपयों और चाबियों से युक्त एक लावारिस पर्स मिला है। इसके वास्तविक स्वामी को सूचित करने के लिए लगभग 80 शब्दों में एक सूचना तैयार कीजिए।

उत्तरः

ए.जी.बी. विद्यालय, रतनपुर

सूचना

दिनांक : 24 नवंबर, 20xx

पर्स मिला है

विद्यालय परिसर में एक पर्स मिला है। इसमें कुछ रुपये, एक चाबी एवं अन्य महत्त्वपूर्ण सामान है। जिसका भी यह पर्स हो, वह कार्यालय समय में आवश्यक एवं उचित प्रमाण देकर अनुशासन अधिकारी कार्यालय से इसे प्राप्त कर सकता है। पर्स प्राप्त करने के लिए अपनी पहचान सिद्ध करना अनिवार्य होगा। सभी विद्यार्थियों से अनुरोध है कि यदि यह पर्स उनका हो तो शीघ्र संपर्क करें।

महेश सैनी
अनुशासन अधिकारी

7. आप विद्यालय की पत्रिका समिति की अध्यक्षा हैं। पत्रिका छपने का समय निकट है। छात्रों से विद्यालय की पत्रिका के लिए लेख-कविताएँ आदि आमंत्रित करने हेतु सूचना लगभग 80 शब्दों में जारी करें।

उत्तरः

पी.आर. हायर सेकेंडरी विद्यालय, राजघाट, उत्तर प्रदेश

सूचना

दिनांक : 16 जनवरी, 20xx

विद्यालय की पत्रिका में छपने हेतु लेख-कविताएँ आदि का आमंत्रण

विद्यालय की पत्रिका का प्रकाशन शीघ्र होने जा रहा है। इच्छुक विद्यार्थी अपने स्वरचित लेख, निबंध, कहानी, कविताएँ आदि 30 जनवरी, 20xx तक सुमन कौशिक मैडम के पास जमा करा दें। रचनाएँ स्पष्ट एवं सुपाठ्य हस्तलेख में लिखी हुई होनी चाहिए। प्रकाशित रचना लिखने वाले विद्यार्थियों को विशेष रुप से पुरस्कृत किया जाएगा। अधिक जानकारी के लिए समिति अध्यक्षा से संपर्क करें।

सुशीला शर्मा
अध्यक्षा, पत्रिका समिति

8. आप क्वीन मेरीज स्कूल (दिल्ली) के साहित्य संगठन की अध्यक्षा प्रीति मलिक हैं। विद्यालय द्वारा छात्राओं के लिए एक अंतर्विद्यालयी कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इस संबंध में सभी छात्राओं को सूचित करते हुए लगभग 80 शब्दों में एक आधिकारिक सूचना तैयार कीजिए।

उत्तरः

क्वीन मेरीज स्कूल, दिल्ली

सूचना

दिनांक : 1 अप्रैल, 20xx

कविता प्रतियोगिता का आयोजन

विद्यालय के साहित्य संगठन द्वारा विद्यालय सभागार में 30 अप्रैल, 20xx को कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। इस प्रतियोगिता में कक्षा आठवीं से दसवीं तक के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। इच्छुक विद्यार्थी नामांकन हेतु हस्ताक्षरकर्ता से 15 अप्रैल तक संपर्क करें। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को आकर्षक पुरस्कार दिए जाएँगे। सभी प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं का उत्साहपूर्वक स्वागत है।

प्रीति मलिक
अध्यक्षा

17. आप 'मेलजोल' सोसायटी के सचिव हैं। सोसायटी में मरम्मत का काम होने जा रहा है। सभी सदस्यों को इसकी जानकारी देने व काम में सहयोग देने का अनुरोध करते हुए लगभग 80 शब्दों में सूचना जारी करें।

उत्तरः

मेलजोल सोसायटी, रोहिणी, दिल्ली

सूचना

दिनांक : 31 अगस्त, 20xx

मरम्मत के कार्य में सहयोग की अपील

सोसायटी के सभी माननीय सदस्यों को सूचित किया जाता है कि कॉलोनी में व्यापक मरम्मत कार्य प्रारंभ हो गया है जो लगभग एक माह तक जारी रहेगा। इस दौरान पार्किंग, जल आपूर्ति और विद्युत से संबंधित कुछ असुविधाएँ हो सकती हैं। कार्य को शांतिपूर्वक तथा समय पर संपन्न होने देने में आपका सक्रिय सहयोग अपेक्षित है। असुविधा के लिए हार्दिक खेद है।

सुशील कुमार
सोसायटी सचिव

18. आप 'अमृत रेजीडेंसी' सोसायटी, पटपड़गंज (नई दिल्ली) के सचिव हितेन तेजवानी हैं। सोसायटी परिसर में पिछले कुछ दिनों से बढ़ रही गंदगी को ध्यान में रखते हुए, सभी निवासियों से स्वच्छता बनाए रखने की अपील करते हुए तथा नियमों का उल्लंघन करने वालों पर आर्थिक दंड की चेतावनी देते हुए लगभग 80 शब्दों में एक आधिकारिक सूचना तैयार कीजिए।

उत्तरः

अमृत सोसायटी, पटपड़गंज, नई दिल्ली

सूचना

दिनांक : 25 मई, 20xx

स्वच्छ रहें, स्वस्थ रहें

सोसायटी के सभी सदस्यों से अनुरोध है कि अपने क्षेत्र में स्वच्छता बनाए रखने में सहयोग करें। कूड़ा केवल निर्धारित डस्टबिन में ही डालें तथा सोसायटी के किसी भी हिस्से में गंदगी न फैलाएँ। वातावरण को स्वच्छ रखना हम सबकी साझी जिम्मेदारी है। यदि सोसायटी में कोई सदस्य गंदगी फैलाता हुआ नजर आया तो भारी जुर्माने के रूप में दंड भुगतना पड़ेगा। मिलकर अपनी सोसायटी को स्वच्छ और सुंदर बनाएँ।

हितेन तेजवानी
सोसायटी सचिव

NODIA

19. आप 'लक्ष्मी' सोसायटी के सचिव कमल शर्मा हैं। होली के अवसर पर आपकी सोसायटी में हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन हो रहा है। सभी सदस्यों को लगभग 80 शब्दों में सूचना जारी करें।

उत्तरः

लक्ष्मी सोसायटी, वसंत कुंज, नई दिल्ली

सूचना

दिनांक : 2 मार्च, 20xx

हँसो-हँसाओ, होली का पर्व रंग-बिरंगा बनाओ

सोसायटी के सभी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि 05 मार्च सायं 5 बजे से रात 10 बजे तक होली के अवसर पर सोसायटी हॉल में एक रंगारंग हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। देश के प्रसिद्ध हास्य कवि इस कार्यक्रम में भाग लेंगे। चाय-पानी व अल्पाहार की पर्याप्त व्यवस्था है। अधिक-से-अधिक मात्रा में पधारकर इस आनंदमय कार्यक्रम का भरपूर आनंद उठाएँ।

कमल शर्मा
सोसायटी सचिव

20. आप 'महाराजा' विद्यालय, लाजपत नगर (दिल्ली) के प्रधानाचार्य राजेश वर्मा हैं। वर्तमान में विद्यालय परिसर की दूसरी मंजिल पर भवन निर्माण का कार्य चल रहा है। सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए छात्रों को उस क्षेत्र में न जाने की सख्त हिदायत देते हुए लगभग 80 शब्दों में एक सूचना तैयार कीजिए।

उत्तरः

महाराजा विद्यालय, लाजपत नगर, दिल्ली

सूचना

दिनांक: 11 अगस्त, 20xx

विद्यालय की दूसरी मंजिल पर जाने पर पूर्ण प्रतिबंध

सभी छात्रों को सूचित किया जाता है कि विद्यालय भवन की दूसरी मंजिल पर निर्माण कार्य चल रहा है। वर्तमान में वहाँ जाना छात्रों की सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत असुरक्षित एवं खतरनाक है। अतः सभी विद्यार्थियों को कड़े निर्देश दिए जाते हैं कि वे दूसरी मंजिल की ओर प्रस्थान न करें। यदि कोई भी छात्र इस प्रतिबंधित क्षेत्र में पाया गया, तो उसके विरुद्ध दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी। आप सभी से अनुशासन और सहयोग की अपेक्षा है।

राजेश वर्मा
प्रधानाचार्य

13. आप डॉन बॉस्को स्कूल, गुवाहाटी के 'इको क्लब' के अध्यक्ष रमेश हैं। विद्यालय में पर्यावरण संबंधी आगामी योजनाओं और गतिविधियों पर चर्चा करने हेतु क्लब के सभी सदस्यों की एक अनिवार्य वार्षिक सभा का आयोजन किया जा रहा है। इस संबंध में सभी सदस्यों को सूचित करते हुए लगभग 80 शब्दों में एक आधिकारिक सूचना तैयार कीजिए।

उत्तरः

डॉन बॉस्को स्कूल, गुवाहाटी

सूचना

दिनांक : 10 नवंबर, 20xx

सदस्यों की सभा का आयोजन

इको क्लब के सभी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि 20 नवंबर, 20xx को प्रातः 10:00 बजे विद्यालय सभागार में वार्षिक सभा का आयोजन किया जाएगा। सभा में वर्षभर की पर्यावरण गतिविधियों की समीक्षा, आगामी वृक्षारोपण अभियान की योजना तथा नए सदस्यों के नामांकन पर चर्चा होगी। सभा में सभी सदस्यों की उपस्थिति अनिवार्य है। अनुपस्थित सदस्यों को लिखित स्पष्टीकरण देना होगा।

रमेश
अध्यक्ष

14. आप 'सनराइज' सोसायटी के सचिव अनिल कुमार हैं। सोसायटी में दीपावली मिलन समारोह का आयोजन किया जा रहा है। सभी सदस्यों को सूचित करने के लिए लगभग 80 शब्दों में सूचना जारी करें।

उत्तरः

सनराइज सोसायटी, द्वारका, नई दिल्ली

सूचना

दिनांक : 20 अक्टूबर, 20xx

दीपावली मिलन समारोह का आयोजन

सोसायटी के सभी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि इस वर्ष दिनांक 01 नवंबर को सायं 6:00 बजे सोसायटी के मुख्य प्रांगण में दीपावली मिलन समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम, बच्चों की प्रतियोगिता तथा पारंपरिक खेलों का भी आयोजन होगा। मिठाई व अल्पाहार की उचित व्यवस्था है। सभी सदस्य परिवार सहित अवश्य पधारें और इस उत्सव को यादगार बनाएँ।

अनिल कुमार
सचिव, सनराइज सोसायटी

15. आप आकांक्षा सोसायटी, जनकपुरी (नई दिल्ली) के सचिव पी. के. अग्रवाल हैं। ग्रीष्म ऋतु में पानी की अत्यधिक कमी के कारण सोसायटी में गंभीर जल संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई है। सभी निवासियों से जल संरक्षण और विवेकपूर्ण उपयोग की अपील करते हुए लगभग 80 शब्दों में एक सूचना तैयार कीजिए।

उत्तरः

आकांक्षा सोसायटी, जनकपुरी, नई दिल्ली

सूचना

दिनांक : 5 अगस्त, 20xx

जल संकट — मितव्ययिता की अपील

हर बार की तरह इस गर्मी के मौसम में जल आपूर्ति की कमी की स्थिति उत्पन्न हो गई है। अतः सभी 'आकांक्षा' वासियों से अनुरोध है कि पानी को व्यर्थ न जाने दें और न्यूनतम मात्रा में जल का उपयोग करें। किसी भी नल को खुला न छोड़ें। वाहनों की धुलाई एवं बागवानी के लिए जल के अनावश्यक उपयोग से बचें। मिल-जुलकर इस जल संकट से निपटने में सक्रिय सहयोग करें।

पी. के. अग्रवाल
सचिव, आकांक्षा सोसायटी

16. आप 'हर्ष' सोसायटी, वसुंधरा (गाजियाबाद) के सचिव विवेक गुप्ता हैं। सोसायटी में गणेश चतुर्थी के पावन अवसर पर बच्चों के लिए एक नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इस संबंध में सोसायटी के सभी सदस्यों को सूचित करते हुए लगभग 80 शब्दों में एक सूचना तैयार कीजिए।

उत्तरः

हर्ष सोसायटी, वसुंधरा, गाजियाबाद

सूचना

दिनांक : 15 अगस्त, 20xx

गणेश चतुर्थी के अवसर पर नृत्य प्रतियोगिता

सभी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि 02 सितंबर को सायं 4 बजे से रात 9 बजे तक गणेश चतुर्थी के अवसर पर एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है, जिसमें 5 से 15 साल तक के बच्चों की नृत्य प्रतियोगिता भी होगी। विजेता बच्चों को आकर्षक पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र दिए जाएँगे। अपने बच्चों का नाम हस्ताक्षरकर्ता को 20 अगस्त तक अवश्य दें।

विवेक गुप्ता
सोसायटी सचिव

Nodia Editions LLP
125, Sector 6, Vidhyadhar Nagar, Jaipur 302039

MRP ₹ 430.00

21. कल्पना कीजिए कि आप सार्वजनिक पुस्तकालय के अध्यक्ष हैं। पुस्तकालय का समय बढ़ाया गया है तथा रविवार को अवकाश रखने का निर्णय लिया गया है। इसकी सूचना लगभग 80 शब्दों में जारी कीजिए।

उत्तरः

शास्त्री सार्वजनिक पुस्तकालय, नई दिल्ली

सूचना

दिनांक : 15 नवंबर, 20xx

पुस्तकालय के समय में बढ़ोतरी तथा रविवार को अवकाश

आप सभी पाठकों को सूचित किया जाता है कि दिनांक 24 नवंबर, 20xx से पुस्तकालय प्रत्येक रविवार को बंद रहेगा। पाठकों की बढ़ती माँग को देखते हुए पुस्तकालय का कार्य समय एक घंटा बढ़ाकर प्रातः 9:00 बजे से सायं 6:00 बजे तक कर दिया गया है। सभी सदस्यगण इस परिवर्तन का ध्यान रखें तथा अपनी पुस्तकें नए निर्धारित समय के अनुसार जमा करें एवं प्राप्त करें।

आर.एस. भाकर
पुस्तकालय अध्यक्ष

22. बाल विकास विद्यालय, नोएडा की कक्षा नवीं की छात्रा अनीता की हिंदी व्याकरण की पुस्तक विद्यालय में गुम हो गई है। वह विद्यालय के सूचना-पट्ट पर सूचना-पत्र लगाना चाहती है। उसके लिए सूचना लगभग 80 शब्दों में तैयार कीजिए।

उत्तरः

बाल विकास विद्यालय, नोएडा

सूचना

दिनांक : 1 नवंबर, 20xx

पुस्तक गुम हो गई है

आप सभी को सूचित किया जाता है कि मेरी हिंदी व्याकरण की पुस्तक 'अनमोल हिंदी व्याकरण भाग-1' विद्यालय में कहीं गुम हो गई है। पुस्तक के आवरण पर 'अनीता, कक्षा नवीं-ब' लिखा हुआ है। यह पुस्तक मुझे परीक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है। यदि किसी विद्यार्थी को यह पुस्तक मिली हो तो कृपया कक्षा नवीं-ब में आकर मुझे अवश्य लौटा दें। आपकी सहायता के लिए मैं हृदय से आभारी रहूँगी।

अनीता
कक्षा - नवीं-ब

23. मुखर्जी कॉलेज, दिल्ली में छात्र संघ के अध्यक्ष, सचिव व खजांची के पद का चुनाव होगा। सलाहकार होने के नाते छात्राओं से नामांकन पत्र जमा करवाने के लिए सूचना-पत्र लगभग 80 शब्दों में तैयार कीजिए।

उत्तरः

मुखर्जी कॉलेज, दिल्ली

सूचना

दिनांक : 16 अगस्त, 20xx

छात्र संघ चुनाव के नामांकन पत्र जमा करवाने हेतु

सभी छात्राओं को सूचित किया जाता है कि छात्र संघ के अध्यक्ष, सचिव एवं खजांची के पद के लिए दिनांक 14 सितंबर, 20xx को चुनाव का आयोजन किया जाएगा। इच्छुक छात्राएँ नामांकन पत्र में सभी आवश्यक जानकारी सही एवं पूर्ण रूप से भरकर 25 अगस्त, 20xx तक सलाहकार कार्यालय में जमा करें। अपूर्ण एवं अंतिम तिथि के बाद प्राप्त आवेदन अमान्य घोषित किए जाएँगे।

निवेदिता
सलाहकार

24. आप सरस्वती उच्च विद्यालय, जयपुर की बाल कल्याण परिषद् के सचिव हैं। आपने पास की झुग्गी-झोपड़ी के बच्चों की सहायता के लिए कक्षाएँ लगाने का निर्णय किया है। जो विद्यार्थी इस पुण्य कार्य में अपना सहयोग देना चाहते हैं, उनके नाम 6 जून तक जमा करवाने के लिए लगभग 80 शब्दों में सूचना जारी करें।

उत्तरः

सरस्वती उच्च विद्यालय, जयपुर, बाल कल्याण परिषद्

सूचना

दिनांक : 1 जून, 20xx

गरीब बच्चों की सहायता के लिए कक्षाओं का आयोजन

प्रिय साथियो, हमारे विद्यालय की बाल कल्याण परिषद् पास की झुग्गी-झोपड़ी के गरीब बच्चों की सहायता के लिए अतिरिक्त कक्षाएँ लगाने जा रही है। ये कक्षाएँ एक माह तक हर रोज शाम 5 से 7 बजे तक चलेंगी। इनमें बच्चों की पढ़ाई संबंधी समस्याओं का समाधान किया जाएगा। इस पुण्य कार्य में सहयोग देने के इच्छुक छात्र-छात्राएँ अपने नाम 6 जून तक बाल कल्याण परिषद् कार्यालय में जमा करवाएँ।

दुर्गेश माथुर
सचिव, बाल कल्याण परिषद्

9. आप सी.एस.ए. हायर सेकेंडरी स्कूल के प्रधानाचार्य हैं। विद्यालय में लेखन प्रतियोगिता होने जा रही है। छात्रों हेतु सूचना लगभग 80 शब्दों में जारी कीजिए।

उत्तरः

सी.एस.ए. हायर सेकेंडरी स्कूल, कालकाजी, दिल्ली

सूचना

दिनांक : 1 नवंबर, 20xx

लेखन प्रतियोगिता हेतु रचनाओं का आमंत्रण

आगामी माह में विद्यालय में लेखन प्रतियोगिता का आयोजन होने जा रहा है। विद्यार्थी अपनी रचनाएँ दिनांक 5 नवंबर, 20xx तक हिंदी अध्यापिका डॉ. रेखा गर्ग को उपलब्ध करा दें। रचनाएँ फुलस्केप साइज के कागज पर एक ओर साफ शब्दों में लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए। श्रेष्ठ रचनाओं को विद्यालय की वार्षिक पत्रिका में भी स्थान दिया जाएगा। सभी प्रतिभाशाली विद्यार्थियों से सक्रिय भागीदारी की अपेक्षा है।

डॉ. वेदप्रकाश शर्मा
प्रधानाचार्य

10. आप राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, भोपाल के सांस्कृतिक सचिव विवेक स्वामी हैं। इस वर्ष दशहरे के पावन अवसर पर विद्यालय परिसर में एक भव्य मेले का आयोजन किया जा रहा है। इस संबंध में सभी छात्र-छात्राओं को आमंत्रित करते हुए लगभग 80 शब्दों में एक आधिकारिक सूचना तैयार कीजिए।

उत्तरः

राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, भोपाल

सूचना

दिनांक : 25 सितंबर, 20xx

मेले का आयोजन

सभी छात्र-छात्राओं को सूचित किया जाता है कि दशहरे के अवसर पर इस वर्ष विद्यालय के प्रांगण में मेले का आयोजन किया जा रहा है। दो दिवसीय मेला दिनांक 02.10.20xx से 04.10.20xx तक प्रातः 11:00 बजे से सायं 8:00 बजे तक चलेगा। मेले में विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल-कूद प्रतियोगिताएँ और खान-पान की व्यवस्था होगी। इसमें भाग लेने के लिए सभी विद्यार्थी एवं उनके परिवारजन सादर आमंत्रित हैं।

विवेक स्वामी
सांस्कृतिक सचिव

11. आप महाराणा प्रताप पब्लिक स्कूल, ग्वालियर के प्रधानाचार्य रविंद्र भट्टाचार्य हैं। विद्यालय के स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर एक भव्य अंतर्विद्यालयी खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। विद्यालय की विभिन्न टीमों में चयन हेतु इच्छुक छात्रों को आमंत्रित करते हुए लगभग 80 शब्दों में एक आधिकारिक सूचना तैयार कीजिए।

उत्तरः

महाराणा प्रताप पब्लिक स्कूल, ग्वालियर

सूचना

दिनांक : 5 अप्रैल, 20xx

खेल प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु

विद्यालय के स्थापना दिवस के अवसर पर दिनांक 20 अप्रैल, 20xx को अंतर्विद्यालयी खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। इसमें अनेक विद्यालयों से क्रिकेट, वॉलीबॉल, कबड्डी और खो-खो की टीमें भाग लेंगी। हमारे विद्यालय की टीमों का चयन किया जाना है। खेल में रुचि रखने वाले इच्छुक छात्र तुरंत खेल अध्यापक श्री नरेंद्र मोहन से संपर्क करें और अपना नाम दर्ज करवाएँ।

रविंद्र भट्टाचार्य
प्रधानाचार्य

12. आप जयपुर पब्लिक स्कूल के सांस्कृतिक सचिव हैं। विद्यालय में होने वाली 'वाद-विवाद प्रतियोगिता' में भाग लेने के लिए आमंत्रण हेतु लगभग 80 शब्दों में एक सूचना जारी करें।

उत्तरः

केंद्रीय विद्यालय, दिल्ली

सूचना

दिनांक : 10 फरवरी, 20xx

वाद-विवाद प्रतियोगिता

आप सभी को सूचित किया जाता है कि 25 फरवरी, 20xx को विद्यालय में 'वाद-विवाद प्रतियोगिता' का आयोजन किया जा रहा है। यह प्रतियोगिता दो समसामयिक विषयों पर होगी और छात्र अपनी पसंद का विषय चुन सकते हैं। जो विद्यार्थी इस कार्यक्रम में भाग लेना चाहते हैं, वे दिनांक 22 फरवरी, 20xx तक अपनी कक्षाध्यापिका को अपना नाम लिखवा दें। विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार व प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएँगे।

आर. पी. रॉय
सांस्कृतिक सचिव

29. आप दिल्ली स्थित 'खेलो इंडिया' संस्था के सूचना प्रभारी पी. के. गोयल हैं। संस्था द्वारा आगामी 15 अगस्त से आयोजित होने वाले क्रिकेट मैच के संबंध में इच्छुक खिलाड़ियों को आमंत्रित करते हुए लगभग 80 शब्दों में एक सूचना तैयार कीजिए।

उत्तरः

खेलो इंडिया संस्था, दिल्ली

सूचना

दिनांक : 20 जुलाई, 20xx

क्रिकेट मैच का आयोजन

दिल्ली के सभी क्रिकेट प्रेमियों और खिलाड़ियों को सूचित किया जाता है कि 'खेलो इंडिया' संस्था द्वारा आगामी 15 अगस्त से 20 अगस्त, 20xx तक संस्था के मैदान में एक क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इसमें प्रत्येक आयु वर्ग के खिलाड़ी भाग ले सकते हैं। विजेता टीम को आकर्षक ट्रॉफी एवं नकद पुरस्कार दिया जाएगा। इच्छुक खिलाड़ी या टीमें दिनांक 5 अगस्त, 20xx तक सूचना प्रभारी के पास अपना नामांकन अवश्य करवा लें।

पी. के. गोयल
सूचना प्रभारी

30. आप आदर्श विद्यालय, वजीराबाद (दिल्ली) के प्रधानाचार्य अमित गोयल हैं। विद्यालय के मुख्य द्वार के बाहर खड़े रेहड़ी-पटरी या खोमचे वालों से अस्वच्छ खाद्य पदार्थ खरीदने के कारण छात्रों का स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है। छात्रों को वहाँ से कुछ भी न खरीदने की सख्त हिदायत देते हुए लगभग 80 शब्दों में एक सूचना तैयार कीजिए।

उत्तरः

आदर्श विद्यालय, वजीराबाद, दिल्ली

सूचना

दिनांक : 20 अगस्त, 20xx

छात्रों की सुरक्षा हेतु आवश्यक निर्देश

विद्यालय के सभी छात्रों की स्वास्थ्य सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सभी छात्रों को सख्त निर्देश दिए जाते हैं कि छुट्टी होने पर विद्यालय के बाहर खड़े खोमचे वालों से कुछ न खरीदें। ऐसे खोमचे वालों का खाद्य-पदार्थ अस्वच्छ होता है और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। छुट्टी होने पर बाहर बिना रुके सीधे घर जाएँ। नियमों का उल्लंघन करने वाले छात्रों के खिलाफ सख्त अनुशासनात्मक कदम उठाए जाएँगे।

श्रीमान् अमित गोयल
प्रधानाचार्य

25. केंद्रीय विद्यालय, अजमेर की पुस्तकालय अधिकारी की ओर से सूचना पट्ट के लिए लगभग 80 शब्दों में एक सूचना बनाइए कि सभी विद्यार्थी 10 मार्च तक पुस्तकालय की पुस्तकें लौटा दें, तभी उन्हें वार्षिक परीक्षा के लिए अनुक्रमांक व प्रवेश पत्र मिलेगा।

उत्तरः

केंद्रीय विद्यालय, अजमेर

सूचना

दिनांक : 1 मार्च, 20xx

पुस्तकें लौटाने हेतु

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि वे 10 मार्च तक पुस्तकालय की सभी पुस्तकें अवश्य लौटा दें, ताकि उन्हें वार्षिक परीक्षा के लिए अनुक्रमांक और प्रवेश पत्र समय पर प्राप्त हो सके। अनुक्रमांक और प्रवेश पत्र प्राप्त करने से पूर्व पुस्तकें लौटाना अनिवार्य है। जो विद्यार्थी समय पर पुस्तकें नहीं लौटाएँगे, उन्हें परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

राजेंद्र वर्मा
पुस्तकालय अधिकारी

26. आप बाल विद्यालय, दिल्ली के सांस्कृतिक संघ के अध्यक्ष विनय हैं। विद्यालय द्वारा शीतकालीन अवकाश के दौरान छात्रों के लिए 'उत्तराखंड की एक सप्ताह की यात्रा' का आयोजन किया जा रहा है। इस संबंध में संपूर्ण विवरण देते हुए इच्छुक छात्रों के लिए लगभग 80 शब्दों में एक सूचना तैयार कीजिए।

उत्तरः

बाल विद्यालय, दिल्ली

सूचना

दिनांक : 1 दिसंबर, 20xx

उत्तराखंड की एक सप्ताह की यात्रा का आयोजन

सांस्कृतिक संघ द्वारा कक्षा छठी से ग्यारहवीं तक के छात्रों के लिए नवंबर 3 से 10 तक एक सप्ताह की उत्तराखंड यात्रा का आयोजन किया गया है। इस यात्रा में नैनीताल, देहरादून आदि दर्शनीय स्थलों को सम्मिलित किया गया है। उत्तम भोजन व उचित आवास की पूरी व्यवस्था होगी। कुल शुल्क मात्र ₹8,000 प्रति छात्र है। इच्छुक विद्यार्थी अभिभावक की लिखित मंजूरी व राशि 30 दिसंबर, 20xx तक जमा करवाएँ।

विनय
अध्यक्ष

27. आप न्याय संगठन, न्याय खंड (गाज़ियाबाद) के सचिव सुरेश शर्मा हैं। कॉलोनी के मुख्य ट्रांसफॉर्मर की आवश्यक मरम्मत के कार्य के कारण बिजली की कटौती की जानी है। इस संबंध में कॉलोनी वासियों को समय पर सूचित करने और सहयोग की अपील करने हेतु लगभग 80 शब्दों में एक आधिकारिक सूचना तैयार कीजिए।

उत्तरः

न्याय संगठन, गाजियाबाद

सूचना

दिनांक : 15 अप्रैल, 20xx

ट्रांसफॉर्मर की मरम्मत के कारण विद्युत कटौती

कॉलोनी के सभी निवासियों को सूचित किया जाता है कि ट्रांसफॉर्मर की आवश्यक मरम्मत के कारण दिनांक 17 अप्रैल, 20xx को विद्युत की आपूर्ति प्रातः 10:00 बजे से सायं 5:00 बजे तक बंद रहेगी। निवासियों से अनुरोध है कि आवश्यक घरेलू कार्यों के लिए पहले से तैयारी रखें। मरम्मत के बाद विद्युत आपूर्ति यथासमय बहाल की जाएगी। असुविधा के लिए खेद है।

सुरेश शर्मा
सचिव

28. आपने घर बनाने के लिए वैशाली एनक्लेव (दिल्ली) में एक भूखंड खरीदा है, जहाँ खाली जगह देखकर लोग कचरा फेंक देते हैं। इस संबंध में अपनी प्रबंधकीय संस्था 'गुप्ता एसोसिएट्स' की ओर से लोगों को सचेत करते हुए लगभग 80 शब्दों में एक सूचना तैयार कीजिए।

उत्तरः

गुप्ता एसोसिएट्स, वैशाली एनक्लेव, दिल्ली

सूचना

दिनांक: 1 नवंबर, 20xx

निजी भूखंड पर कूड़ा-कचरा फेंकने पर पूर्ण प्रतिबंध

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि वैशाली एनक्लेव स्थित यह रिक्त भूखंड (प्लॉट संख्या-42) 'गुप्ता एसोसिएट्स' की निजी संपत्ति है। पिछले कुछ समय से यहाँ लोगों द्वारा अनधिकृत रूप से कचरा फेंका जा रहा है, जिससे गंदगी बढ़ रही है। अतः सभी को सख्त हिदायत दी जाती है कि यहाँ कचरा फेंकना या अतिक्रमण करना पूर्णतः वर्जित है। नियमों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध सीसीटीवी फुटेज के आधार पर पुलिस में शिकायत दर्ज कराकर कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

विकास गुप्ता
प्रबंधक, गुप्ता एसोसिएट्स